निबंधमाला

द्वितीय खण्ड

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निबंधमाला

द्वितीय खण्ड

सन् १६३५ में रेमँ बुनिये द्वारा लिये गये छायाचित्र की प्रतिलिपि

—विश्वभारती के सौजन्य से।

निबंधमाला

द्वितीय खण्ड

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लिप्यन्तर
द्विजराम यादव

साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Nibandhamala.: Vol II. Devanagari transliteration of Select Essays of Rabindranath Tagore by Dwijaram Yadav, with an introduction by Buddhadeva Bose. Sahitya Akademi, New Delhi, 1969.

Price : Cloth Rs. 18 : Paper Rs. 15

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, ३५ फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-१
रवीन्द्र स्टेडियम, कलकत्ता-२९
१५, कैथड्रल गार्डेन्स रोड, मद्रास-३४

मुद्रक : डि. पि. मित्र, एलेम प्रेस, ६३, विडन स्ट्रीट,
कलकत्ता-६

मूल्य
विशेष संस्करण १८ रुपया
साधारण संस्करण १५ रुपया

रवीन्द्रनाथ के प्रबन्ध और गद्यशिल्प

रवीन्द्रनाथ ने गद्य लिखा है कवि के समान; उनके गद्य का गुण कविता का ही गुण है; कविता जो कुछ हमें दे सकती है वही उनके गद्य की भी देन है। यदि किसी खण्ड-प्रलय में उनकी सब कविता की पुस्तकें लुप्त हो जायँ और केवल नाटक, उपन्यास, प्रबन्ध बच रहें तो उन प्रबन्ध-नाटक-उपन्यासों से ही भविष्य का पाठक समझ जायगा कि रवीन्द्रनाथ एक महाकवि का नाम है।

हाँ, प्रबन्ध से भी समझ जायगा। प्रबन्ध, जिसमें कोई स्पष्ट विषय होना चाहिए, कोई विशेष पद्धति होनी चाहिए, जिसमें तर्क की सीढ़ियाँ पार करते हुए मीमांसा की ओर पहुँचना पड़ता है—कम-से-कम हमारी ऐसी ही कुछ धारणा है—उसमें भी यह अद्‌भुत कवि स्तर-स्तर में घुसा बैठा है; किसी भी विषय की किसी भी आलोचना में उनका स्वर, द्युति, स्पन्दन, वेग, तरंग—एक शब्द में उनका व्यक्तित्व—विषय को छा लेता है। अर्थात् हमारी समझ में प्रबन्ध को जैसा न होना चाहिए—कम-से-कम पाठशालाओं में यही सिखाया जाता है—उनका प्रबन्ध ठीक वैसा ही है।

जो लोग रवीन्द्रनाथ के प्रबन्ध के समर्थक नहीं हैं या जो समझते हैं कि आलोचना-धर्मी रचना में कविता का गुण—दोष गिना जाता है, इसलिए वर्जनीय है, उनकी बात मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ। यहाँ तक कि कभी-कभी मुझे उनकी बात से सहमत होने का भी लोभ हुआ है। सच तो है—रवीन्द्रनाथ के प्रबन्ध में कितनी पुनरुक्ति होती है, कितना अवांतर अंश, बहुत-सा कहने पर भी मीमांसा जैसे अस्पष्ट रह जाती है, मास्टर साहब की तरह 'समझाकर' बात कहना जैसे उन्हें आता ही न हो। तर्क के बदले वे देते हैं उपमा, तथ्य के बदले विम्ब; जहाँ पाठक को अपने मत की ओर खींच लाना उनका प्रकट अभिप्राय है वहाँ वे उसकी इन्द्रियों को तीक्ष्ण कर देते है, जहाँ बुद्धि के निकट प्रमाण देना होगा वहाँ वे नियम-कायदे से कोई मतलब न रखकर हमारे हृदय को आर्द्र बनाने में लग जाते हैं। समाज, राजनीति, शिक्षा, इतिहास—इन सब विषयों में तो खैर पूर्वोक्त दुर्बलता के होते हुए, वक्तव्य को शब्दालंकार से अलग करके पहचाना भी जा सकता है। लेकिन अपने प्रियतम और अंतरतम विषय साहित्य की आलोचना करते समय उनकी बात में से कोई 'सारांश'

निकालना दुर्लभ हो उठता ह ; उसमें न तो कोई परिष्कृत परिभाषा रहती है न कोई विधान ; ऐसा लगता है कि जैसे वे किसी सुस्पष्ट सूत्र की घोषणा करने में अक्षम हों या अनिच्छुक हों, या कभी अगर उन्होंने ऐसा किया भी तो खुद ही उसका खण्डन कर देते हैं——शायद अगले ही क्षण। मानना ही पड़ेगा कि जिस अर्थ में अरस्तू, आनन्दवर्धन, या मल्लिनाथ समालोचक हैं उस अर्थ में रवीन्द्रनाथ साहित्य के समालोचक भी नहीं हैं।

नहीं भी हैं तो क्या ; वह पदवी उनको मिलनी चाहिए या नहीं मिलनी चाहिए इस बात को लेकर हम बहस नहीं करेंगे। इतना ही कहूँगा : क्या एक ही साथ सोफोक्लीज और अरस्तू या कालिदास और मल्लिनाथ हुआ जा सकता है——यह क्या स्वाभाविक होगा या वांछनीय होगा या सम्भव या मर्त्य-लोक के लिए सहनीय ? और एक बात : होमर और सोफोक्लीज का जन्म अगर पहले न हो गया होता तो अरस्तू कहाँ रहते ; वाल्मीकि, कालिदास आदि कवियों को सामने रखे बिना क्या हम किसी आनन्दवर्धन की कल्पना कर सकते हैं ? साहित्य के मामले में सृष्टि-कर्म ही प्रधान और प्राथमिक होता है, समालोचना केवल उसकी अनुगामिनी होती है ; और जब कोई बड़ी सृजन-शील प्रतिभा समालोचना में हाथ डालती है तब उसके लिए केवल यही सम्भव होता है कि वह 'समालोचना को ही सृष्टि-कर्म बना दे।' यह बात रवीन्द्रनाथ ने ही कही थी ; उनके प्रबन्ध की आलोचना करते समय इसको ध्यान में रखना होगा। मान लेना होगा कि पद्य और गद्य-रचना को मिलाकर उनके व्यक्तित्व की जो अखण्डता प्रकट होती वही वे है ; किसी पाठक-गोष्ठी को खुश करने के लिए वे और कुछ नहीं हो सकते ; हम ग्रहण करें या न करें, वे अपने अखण्ड रूप में बने ही रहेंगे। उनका गद्य अतिभाषी है ? उनकी कविता भी वैसी ही है। अलंकारबहुल है ? अस्पष्ट है ? उच्छ्वासप्रवण है ? इनमें से एक-एक बात उनकी किसी-न-किसी काल की कविता के विषय में भी सच है। जिस प्रकार 'वसंत यापन' जैसी गद्य-रचना में उन्होंने प्रबन्ध के आकार में कविता लिखी है उसी प्रकार 'एबार फिराओ मोरे' या 'वसुन्धरा' में उन्होंने कविता के आकार में प्रबन्ध लिखा है। हम साहित्य में वर्ण-संकरता ले आने के लिए उन्हें दोष दे सकते हैं ; गद्य में कविता की रीति और कविता में गद्य के विषय का संचार करके उन्होंने दोनों की ही क्षति की है, यह भी माना जा सकता है ; लेकिन सब-कुछ कह चुकने के बाद सबसे जरूरी जो सवाल उठ खड़ा होता है वह है : क्या हम उन्हें छोड़ सकते हैं ? रवीन्द्रनाथ के दोष बच्चों-जैसे सरल हैं, उनका उन्हें भान भी नहीं, आत्मगोपन की कोई चेष्टा भी नहीं है, अपने घर के आँगन

में बैठकर वे बड़े सहज भाव से खेलते हैं, दर्शक के हाथों पकड़े जाने का भय उन्हें नहीं रहता, और पकड़े भी गये तो कोई चिन्ता नहीं। वे एक विराट् प्रतिभा की छाया में खा-पीकर बड़े हो रहे हैं; जैसे उनमें ह्रास का कोई लक्षण नहीं है वैसे ही उनका उत्सस्थल वह प्रतिभा भी शक्तिशाली है; जरूरत पड़ने पर वह अविश्वासी को वज्रपात के समान विदीर्ण कर सकती है। रवीन्द्रनाथ ऐसे ही लेखक थे जिनके दोष हममें से कोई भी किसी भी दिन पकड़ सकता है और जिसके बिना हममें से किसी का एक क्षण भी काम नहीं चल सकता। और यहीं पर उनकी चरम विजय है, इसी अपरिहार्यता में; उनके दोषों को छोड़ने के पीछे उनको ही छोड़ देना पड़ेगा, इसीलिए उसके सब दोषों के होते हुए—जबकि मन-ही-मन उनके विरुद्ध तर्क कर रहा हूँ ठीक उस समय भी उनके सब दोषों के समेत हमें उनका वरण करना ही होगा; उत्कर्ष के ढेरों दूसरे उदाहरण उनको म्लान नहीं कर सकते. उसी प्रकार जैसे बहुत-से तीर्थों की स्मृति गृहदेवता को अपने स्थान से नहीं हटा सकती।

लेकिन किस अर्थ में अपरिहार्य, किस अर्थ में गृहदेवता? क्या इसलिए कि अगर उन्होंने 'कथा ओ कहानी' न लिखी होती तो माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने योग्य बंगला कविता की कोई अच्छी पुस्तक न मिलती? या इसलिए कि अगर उन्होंने 'जन गण मन' की रचना न की होती तो सारे भारत में पूरी तरह ग्रहण किये जाने योग्य कोई राष्ट्रीय गान हमको न मिलता? या इसलिए कि अगर उन्होंने 'गीत वितान' न लिखा होता तो उत्सवों में, अन्न-प्राशन में, श्राद्ध के दिन या चलचित्रों में नायिका के गाने योग्य गीत हमें न मिलते? या इसलिए कि उनके प्रबन्धों के भांडार से हमें अपने भाषणों और समाचार पत्रों की रचनाओं में उद्धृत करने योग्य वाक्य अनवरत मिलते जा रहे हैं? बंगाल में और सारे भारतवर्ष में उनकी जो प्रातिष्ठानिक मूर्ति स्थापित हुई है—जिसको देवमूर्ति कहना भी गलत न होगा—मैं उस पर जोर नहीं देना चाहता; जहाँ पर हम उठते-बैठते उसका नाम लेते हैं, कोई भी अनुष्ठान उनके स्मरण से आरम्भ करते हैं, किसी भी मतवाद के समर्थक के रूप में उनको खड़ा करते हैं, वहाँ पर वे सब लोगों के स्वतःप्राप्त आश्रय ह, हमारे आत्मसम्मान के लिए आवश्यक, महिमा के एक प्रतीक के रूप में सारे भारतवर्ष के लिए अपरिहार्य। लेकिन उस तरह बिना कुछ खर्च किये कोई पाठक उन्हें पा ही नहीं सकता: क्योंकि पाठक होने के लिए अपने ऊपर दायित्व लेने की शक्ति चाहिए: उनकी रचना में प्रवेश करने के लिए हमें उनको उपार्जित करना होगा; वे एक बड़े कवि हैं

या अच्छे कवि हैं यह मोटी बात भी हमारे अपने आविष्कार की अपेक्षा रखती है। और, मैं एक साधारण पाठक के रूप में ही कहना चाहता हूँ कि उनमें दोष चाहे कितने ही दिखाई दें, उनके बिना एक पल हमारा काम नहीं चल सकता।

लेकिन क्या यह सम्भव नहीं है कि हम रवीन्द्रनाथ की रचनाओं में से छटाई करके अपना रवीन्द्रनाथ खड़ा कर लें? हम क्या बाहुल्य को अलग करके उनकी वाणी को नहीं पा सकते, उच्छ्वास को छोड़कर उन्हें उपलब्ध नहीं कर सकते या उनकी 'श्रेष्ठ' रचनाओं का समाहार नहीं कर सकते? ऐसा करना सम्भव नहीं है, यह मैं नहीं कह सकता बल्कि हम यह मानने के लिए बाध्य हैं कि उनके-जैसे रचनाबहुल लेखक के पक्ष में संकलन एक उपयोगी चिकित्सा होगी। उस ओर उनका अपना और अनुरागी संपादकों का प्रयास देखा गया है, साहित्य अकादेमी के इस ग्रंथ में भी वही चेष्टा दिखाई पड़ती है। भविष्य में भी, ऐसा लगता है, उनकी रचनाओं में से चयन करने की आवश्यकता निरन्तर अनुभव होगी; क्योंकि हम उनको विभिन्न दिशाओं से देखने के अभ्यस्त हो गए हैं; किसी विदेशी अथवा नये पाठक के आगे उनको उपस्थित करते समय सबसे पहले हम उनकी बहुमुखिता और वैविध्य का परिचय देना चाहते हैं--"आप तो जानते ही हैं उन्होंने सब तरह की रचनाएँ की हैं और शायद ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर उन्होंने न लिखा हो।" आगे चलकर कोई यह न सोचे कि उन्होंने केवल कोमलकांत पदावली लिखी है इसलिए हम उनके समाज-विषयक प्रबन्धों को सामने लाने की चेष्टा करते हैं; बाद को किसी की कहीं ऐसी धारणा न हो कि ईश्वर से प्रेम करने के फलस्वरूप वे संसार को नहीं देख सके इसलिए हम 'गल्पगुच्छ' में से चुन-चुनकर उनके वास्तवबोध के उदाहरण निकालते हैं। ये सभी सत्कर्म उनको लेकर की गई आलोचना के लिए प्रासंगिक हैं; लेकिन जब हम उनकी प्रदक्षिणा करने के बाद उनके विभिन्न अंशों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उद्यत होते हैं तभी यह बात समझ में आती है कि वे गंभीरतम अर्थ में कवि हैं, कवि को छोड़ और कुछ भी नहीं हैं। एक ही उत्स से, एक ही उत्साह की प्रेरणा से उनकी विख्यात भिन्न-भिन्न दिशाएँ फैली हुई हैं--ठीक जिस तरह 'निर्झरेर स्वप्न भंग' कविता में कहा गया है--उनका मन खानों में बँटा हुआ नहीं है, सामयिक भाव से जोड़े हुए लेकिन असल में एक-दूसरे से सम्पर्करहित गाड़ी के डिब्बों को वह इंजन के समान नहीं खींचे लिये जा रहा है; उनका सब वैविध्य जल-स्रोत की 'अविराम गति के समान' है जिसे रोका नहीं जा सकता। 'कवि रवीन्द्रनाथ',

'औपन्यासिक रवीन्द्रनाथ', 'प्रबन्धकार रवीन्द्रनाथ' इन विभागों को इसलिए अस्वीकार न करने पर भी अन्ततः स्वीकार नहीं किया जा सकता ; वे एक-दूसरे में प्रविष्ट हैं, एक-दूसरे के उद्दीपक और परिपूरक हैं और एक अखण्ड सत्ता के प्रतिरूप हैं। जिस मौलिक उपादान से रवीन्द्रनाथ का गठन हुआ है वह है कवित्व-शक्ति, उसीने उनकी गद्य-रचना को सप्राण और सार्थक बनाया है ; जिस प्रकार अग्नि किसी भी ईंधन में प्रज्वलित हो उठती है उसी प्रकार उनकी कवि-प्रतिभा भी सभी रूपों में सभी विधाओं में प्रदीप्त है। दीप्ति में अन्तर अवश्य है, निश्चय ही 'सोनारतरी' का काव्य-ग्रन्थ और 'आत्मशक्ति' प्रबन्धमाला में कवित्व एक-जैसा घनत्व नहीं है, लेकिन कविता का संस्पर्श दोनों में है इसीलिए उनके प्रायः सभी संदर्भों में यौवन की रक्तिम आभा दिखाई पड़ती है—उसका प्रसंग चाहे पुराना हो वक्तव्य सुपरिचित और उपदेश आज के दिन अवान्तर। जो व्यक्ति अपने पोर-पोर में कवि नहीं है वह क्या 'छेलेभुलानो छड़ा'-जैसी समालोचना या 'बाँगला भाषा परिचय' की प्रस्तावना या 'सहज पाठ'-जैसी वर्ण-परिचय की पुस्तक लिख सकता था ? "भाषा में सर्वत्र कविता है—छंद होगा तो कविता होगी—सर्वत्र है, नहीं है तो केवल विज्ञापनों और समाचार-पत्रों में। साहित्य के जिस विभाग को हमने 'गद्य' का नाम दिया है उसमें भी कविता है—जहाँ-तहाँ खूब अच्छी कविता—भाँति-भाँति के छन्दों में रचित। सच पूछो तो गद्य नाम की चीज़ कोई नहीं है ; है वर्णमाला और नाना प्रकार की कविता, कोई शिथिल, कोई संहत और कोई जरा ज्यादा बिखरी हुई। जहाँ पर स्टाइल की दिशा में प्रयत्न है वहीं पर पद-विन्यास है।" स्तिफान मलार्मे की इस उक्ति के प्रमाणस्वरूप किसी एक, सारे संसार में किसी एक कवि को यदि खड़ा करना हो तो वह कवि मलार्मे नहीं है, उसका शिष्य पाल वालेरी भी नहीं है—निस्संदेह वह कवि रवीन्द्रनाथ है। क्योंकि मलार्मे और वालेरी का गद्य उनकी कविता के समान ही सांकेतिक है, गद्य-रचना के विषय भी 'विशुद्ध' और निर्भार हैं—कह सकते हैं उनके विषय कविता से अलग नहीं हैं और कविता के विषय पर कवि के समान लिखने में अंततोगत्वा कम ही व्यावहारिक प्रतिबंध रहता है। लेकिन रवीन्द्रनाथ ने साधारण भाषा में गद्य लिखा है, बहुत बार निरुत्साहजनक सांसारिक विषयों को लेकर लिखा है (सहकारिता पर भी उनका प्रबंध है), हम उन्हें गद्य को कविता के स्तर पर उठाने की सचेतन चेष्टा करते वार्धक्य से पहले नहीं देखते। तो भी, चूंकि स्टाइल उनके लिए स्वाभाविक है, छंद उनकी मज्जा में भिदा हुआ है, इसलिए उनके समग्र गद्य में ऐसी रचनाएँ अपेक्षाकृत कम ही हैं (बिलकुल न हों ऐसी

बात नहीं) जिनसे कोई गूँज नहीं उठती, कोई भीड़ नहीं निकलती, जो स्मृति में स्पंदित नहीं होतीं या हमें वह अलौकिक अनुभूति नहीं देतीं जिसे हमने आनंद का नाम दिया है। इसी तरह हमें उनके गद्य में कविता मिलती है--'बीच-बीच में खब अच्छी कविता, कोई शिथिल, कोई संहत, कोई जरा ज्यादा बिखरी हुई।'

२

'निबन्धमाला' के इस खण्ड के प्रबन्धों को मुख्यतः पाँच अंशों में विभाजित किया गया है : 'आत्म-परिचय', 'पत्रधारा', 'भ्रमण' (भाषा और साहित्य) और 'विचित्र'। प्रत्येक अंश के शीर्षक से ही उसकी अंतर्भुक्त रचनाओं की प्रकृति का अनुमान किया जा सकता है, केवल 'विचित्र' अंश के सम्बन्ध में कुछ कहना जरूरी है। इस विशेषण का प्रयोग रवीन्द्रनाथ ने स्वयं ही किया था--उनका 'विचित्र प्रबंध' १३१४ बंगाब्द में प्रकाशित हुआ, उनके दृष्टांत को सामने रखकर हमने उन सब रचनाओं को 'विचित्र' की संज्ञा दी है जिन्हें दूसरे किसी विभाग में ठीक-ठीक नहीं डाला जा सकता। हम कहना चाहते हैं कि इस अंश की रचनाओं में रचना ही प्रधान है, विषय तो केवल उपलक्ष है, किसी भी एक प्रसंग का सहारा लेकर लेखक ने अपनी भावना और कल्पना अपने मूल्यबोध और पक्षपातको विस्तार दे दिया है! इस प्रकार की रचनाओं के लिए आधुनिक बंगला भाषा में एक नया नाम निकला है—'रम्य रचना'। यह फ्रांसीसी बेल लेत्र का अनुकरण है ; कुछ लोग अब भी कहते हैं--और पहले भी कहते थे--व्यक्तिगत प्रबंध। नये नामकरण में इस बात का भय होता है कि वह अयोग्य को अपनी ओर खींचता है, 'रम्य रचना' को भी--बंगला भाषा में उसके साम्प्रतिक प्रादुर्भाव को देखकर--अक्षम का आश्रयस्थल कहने की इच्छा होना अनुचित नहीं कहा जा सकता। जो लोग कविता, प्रबंध, उपन्यास कुछ भी नहीं लिख सकते और जो ठीक अर्थों में पत्रकार भी नहीं हैं, जिनके पास न तो तथ्य है न ज्ञान, न उद्भावना-शक्ति न कला-नैपुण्य, जो सुसंगत भाव से किसी विषय पर एक क्षण विचार भी नहीं कर सकते और जो परस्पर सम्बद्ध दो वाक्यों की रचना करने में भी स्वभावतः असमर्थ हैं उनकी विश्रृंखल प्रगल्भता उद्धत होकर छापे के अक्षरों में दिखाई न पड़ती यदि 'रम्य रचना' शब्द की सृष्टि न हुई होती। लेकिन केवल इसीलिए कि बहुत-सी निकृष्ट रचनाएँ उससे प्रश्रय पा रही हैं हम यह नहीं कह सकते कि वह

शब्द ही त्याज्य है या कि गद्य-रचना के उस विशेष रूप का अस्तित्व ही नहीं है। यदि हम यह मान सकते हैं कि 'कविता' के नाम से प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ कविता नहीं होती तो अधिकाँश 'रम्य रचनाएँ' यदि रम्य न हों और रचनाएँ भी न हों तो उसको लेकर बहुत अधिक विचलित होने से कैसे काम चलेगा। नये नामकरण के पारिभाषिक औचित्य को लेकर तर्क उठ सकता है लेकिन यह ठीक न होगा कि नये नामकरण का कोई प्रयोजन नहीं है। यूरोपीय भाषा में कहने से एक विशेष प्रकार के साहित्यगुण से युक्त रचना का ही बोध होता है लेकिन हमारे 'प्रबन्ध' (संस्कृत में जिसका अर्थ था पद्य या गद्य की कोई भी रचना) शब्द का अर्थ इतना अधिक व्यापक है कि कभी-कभी उसको सीमित किये बिना ठीक से काम नहीं चल सकता। 'छोटी साहित्यगुण संपन्न गद्य रचना' के अर्थ में essay शब्द का व्यवहार सबसे पहले मिशैल माँतेन ने किया---साहित्य का यह रूप भी उन्हींका आविष्कार है। बाद के चार सौ वर्षों में उत्पन्न अन्य बहुत-से उदाहरणों से परिचय होने के फल स्वरूप आज के पश्चिमी पाठक essay शब्द देखते ही समझ जाते हैं कि कैसी रचना उनके सम्मुख रखी जा रही है। यदि कोई जीव-विज्ञानी सर्वभक्षी प्राणियों की पाकस्थली के विषय में कोई गवेषणा प्रकाशित करे या कोई धर्मविद् ईसाई धर्मतत्त्व की एक नई व्याख्या का प्रणयन करे या कोई इतिहास के अध्यापक रूस की क्रांति में लेनिन और ट्राट्स्की की भूमिकाओं की तुलनात्मक विवेचना करें तो इनमें से किसी को कोई पश्चिमी पाठक essay नहीं कहेगा; उन सब ज्ञानगर्भ, विधिबद्ध और उद्देश्य-निर्भर रचनाओं के लिए 'monograph', 'dissertation', 'tract', 'treatise' आदि बहुत-से अन्य शब्द प्रचलित हैं। किंतु हमारी भाषा में रवीन्द्रनाथ का 'पंचभूत' भी प्रबंध की पुस्तक है, स्वामी विवेकानंद का 'भक्तियोग' भी प्रबन्ध की पुस्तक है और विद्यासागर महाशय के 'विधवा विवाह विषयक प्रस्ताव' को भी दूसरे किसी नाम के अभाव में 'प्रबन्ध' ही कहना पड़ेगा। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अगर और भी दो-एक व्यवहार-योग्य शब्द होते तो ज्यादा अच्छा होता।

जो देखने-सुनने में प्रबन्ध के समान है ऐसी गद्य-रचना के दो स्पष्ट विभाजन दिखाई पड़ते हैं। उनमें से एक में विषय ही सर्वस्व या मुख्य होता है, वहाँ पर लेखक नया कोई ज्ञान देना चाहता है या नये किसी मत का प्रचार करना चाहता है। इन सब रचनाओं की सूचना, मध्यभाग और समाप्ति का एकांत निर्देशक होता है वक्तव्य; प्रतिपाद्य विषय को प्रमाणित करने के लिए जिन युक्तियों और उदाहरणों की आवश्यकता है लेखक ने पहले से ही उन्हें इकट्ठा

कर लिया है--लेखक के रूप में उसकी समस्या उन उपादानों को भाषा में बाँधने भर की होती है--भाषा उसके लिए केवल एक वाहन है, एक अपरिहार्य यंत्र--कह सकते हैं कि उन उपादानों को एक शृंखला में बाँधना ही उनकी रचना है। और दूसरे में विषय गौण होता है; लेखक रचना-कर्म शुरू करने के पहले--अपने जीने अपने मेल-जोल या साधारण पढ़ी-सुनी बातों के बाहर--कोई गवेषणा नहीं करता; वह कोई पूर्वनिर्दिष्ट भावना या कोई समाज-हितकारी उद्देश्य लेकर लिखने नहीं बैठता; लिखते-लिखते उसके भीतर भावना का संचार होता है और वह अपना ही अनुसरण करते हुए प्रसंगांतर पर चला जाता है; उसकी सूचना, मध्य भाग और समाप्ति पीछे छूट जाती है--'वक्तव्य' को उपस्थित करने का कोई प्रयोजन नहीं, वही अमोघ और अलक्ष्य विधान उसको भी नियंत्रित करते हैं जो किसी कविता, नाटक या उपन्यास को। उसकी भाषा में रूप, छंद और स्वादुता होती है, पाठक के साथ उनके व्यवहार में सौजन्य, आसक्ति और हास्यरस-बोध होता है और जगत् के साथ उनके व्यवहार में होता है संराग और दूरकल्पना। शीर्षक में जिस विषय का उल्लेख रहता है उसको लेकर वे जितना कुछ कहते हैं संभवतः उतनी ही उनकी अपनी बात भी रहती है; हम जान पाते हैं कि यह जगत् उनकी चेतना में किस प्रकार प्रवेश कर रहा है, उनका प्रेम कहाँ है, किस संशय का कीड़ा उन्हें कुतर रहा है, किस गुप्त वेदना का पारिपाक उन्होंने रचना में किया है। अर्थात् विषय चाहे जो हो, वे अपने-आपको व्यक्त करते हैं (यह सूत्र भी मान्तेन का ही है) और इस अर्थ में उनकी रचना व्यक्तिगत या व्यक्तिनिर्भर होती है, उनके व्यक्तित्व का दर्पण भी उसे कह सकते हैं। मान्तेन ने बेधड़क 'मैं' शब्द का व्यवहार किया है, रवीन्द्रनाथ का 'हम' भी 'मैं' का ही एक चतुर और विनयी रूप है; और यह 'मैं'--गीतिकाव्य के वक्ता के समान ही--देश-काल के विशेष लक्षण द्वारा चिन्हित होने पर भी विश्वमानव का प्रतिभू है। जीव-विज्ञानी जब सर्वभक्षी प्राणी की पाकस्थली के सम्बंध में 'प्रबन्ध' लिखता है तब उसके कवित्व में एक ही अंग को उद्योग करना पड़ता है, किन्तु अन्य जिस प्रकार के प्रबंधों की हम चर्चा कर रहे हैं, वे लेखक की समस्त सत्ता के भीतर से निकलते हैं; वह केवल बुद्धि या चित्र का ही नहीं समस्त प्राण का भी अन्तःकरण का काम होता है; जो आदमी अपनी नहीं बिटिया के विनोद के लिए फर्श पर घुटनियों चलता है, सर्दी के भय से जाड़े-भर स्नान नहीं करता, अवसर पाते ही महाभारत पढ़ता है, अलकतरे को पसंद करता है--वह इंद्रिय-बद्ध असंगतिपूर्ण मनुष्य भी उससे संसरित और प्रतिफलित हो रहा है। जिस

को हम वैज्ञानिक दृष्टि कहते हैं वह इस विराट् जगत् की एक विच्छिन्न कणिका के ऊपर ठहरी रहती है, अन्य सब चीजों का अस्तित्व वहाँ पर लुप्त हो जाता है; निरंजन ज्ञान उसी दृष्टि से पकड़ में आता है। हम जिनको प्रबंधकार कहते हैं वे इस विच्छेद-प्रवण ऐकान्तिक दृष्टि से वंचित होते हैं। जगत् अपने विविध उपादान लेकर उनकी चेतना के ऊपर अनवरत आघात कर रहा है; सुख से, दुःख से, आकांक्षा से स्पन्दित रक्त-मांस के मनुष्य को वे कभी नहीं भूलते--और वही उनकी रचना का रूप ले लेती है--सत्य नहीं, जीवन्त, शिक्षणीय नहीं, आनंददायक; उसमें कोई अमोघ युक्ति नहीं होती, कोई ध्रुव मीमांसा नहीं होती, निश्चित रूप से वे कुछ भी नहीं कहते लेकिन ऐसे कितने ही इंगित बिखेर देते हैं जो सहृदय पाठक के मन में बीज के समान उड़कर पहुँच जाते हैं--जो संभव हुआ तो जड़ पकड़ लेता है और कभी किसी दिन एक नई भावना का फल भी लगा देता है। विज्ञानी के समान वे कोई प्रस्तुत सत्य लाकर हमारे हाथ में नहीं दे देते--दे सकते भी नहीं; वे पाठक को अपना सहयोगी बना लेते हैं, जिस बात को वे आभास में कहते हैं, उपमाओं में कहते हैं, गुंजरन और वर्णहिल्लोल में कहते हैं उसका 'अर्थ' पूर्णता पाता है पाठक के मन में--यदि पाठक अयोग्य नहीं है।

मैं क्या अतिरंजना कर रहा हूँ ? क्या मैं कोई बहुत बड़ा दावा कर रहा हूँ ? लेकिन मैं कोई आदर्श तो स्थापित नहीं कर रहा हूँ, रवीन्द्रनाथ के ही वैशिष्ट्य की चर्चा कर रहा हूँ। यह प्रबंध--या प्रबंध का यह विशेष प्रकार यूरोप में मान्तेन जिसका स्रष्टा है--हमारे साहित्य में उसके महाशिल्पी रवीन्द्र-नाथ हैं। इसमें सिद्धिलाभ की दृष्टि से जो सब गुण आवश्यक या वांछनीय जान पड़ सकते हैं, उन सबका रवीन्द्रनाथ की प्रतिभा में एकत्र संयोग घटित हुआ था। केवल 'विचित्र' नामधारी अंश नहीं, इस ग्रन्थ की सब रचनाएँ पूर्वोक्त गुण-सम्पन्न हैं; सभी सृजनशील साहित्य हैं; उनका मूल्य रचना में ही है उत्पाद्य वस्तु में नहीं;--यहाँ तक कि उनके सामाजिक, राजनैतिक, ऐति-हासिक प्रबन्धों में भी जो प्रबंध कालप्रभाव से मलिन नहीं हो गए, उनमें भी यही एक ही लक्षण विद्यमान है। क्योंकि रवीन्द्रनाथ ऐसे ही लेखक हैं जिनके लिए किसी भी समय शिल्पी न होना दुस्साध्य था जिनके किसी-किसी प्रबन्ध ग्रन्थ में (जैसे छंद, बाँगला भाषा परिचय) हमको गवेषणा और रसात्मकता का समन्वय मिलता है, विश्लेषणदक्षता के साथ ही कविता की उद्बोधिनी शक्ति मिलती है। साहित्य के नियम और परिभाषाओं को वे अनायास अति-क्रमण कर जाते हैं; उनकी आत्म-कथा भ्रमणपंजिका और चिट्ठी-पत्री में

हमको आशानुरूप तथ्य नहीं मिलते ; समालोचना में यथायोग्य तत्त्वकथा नहीं मिलती। दूसरी ओर उन्हें समालोचना में आत्मकथा की आवतारणा कर देने में कोई बाधा नहीं होती, भ्रमणपंजिका में भ्रमण को भूलकर जीवन-मृत्यु और शिल्पकला के विषय में दूर-कल्पना को प्रश्रय देते हैं--जिससे कोई पाठक भूलकर भी यह न सोचे कि उनकी 'समालोचना'--चिन्हित पुस्तकों में साहित्य के विषय में उनके सब वक्तव्य आ गए हैं या उनकी 'जीवनस्मृति' और 'बचपन' के बाहर और कहीं भी उनकी आत्मकथा नहीं है। साहित्य के विषय में उन्होंने क्या सोचा है यह अगर पूरी तरह जानना हो तो उनकी 'चिट्ठी-पत्री', 'आत्मकथा' और 'भ्रमणपंजिका' भी पढ़नी होगी और साथ ही उनके जीवन के विषय में हम यथेष्ट न जान सकेंगे यदि उनकी समालोचना को न देखें। इस ग्रन्थ का विभाजन सुविधा के लिए या नियमरक्षा की खातिर किया गया है ; असल में यह सब प्रबन्ध परस्पर-सम्पृक्त हैं।

३

और उनकी कविता के साथ भी इनका बहुत गहरा सम्बन्ध है। यह बात सभी कवियों के विषय में साधारणतः सत्य है, लेकिन सब कवियों की कविता और गद्यरचना एक ही रूप में अन्वित नहीं होती। जिस प्रकार रिलके के संबंध में उसी प्रकार रवीन्द्रनाथ के संबंध में हम यह नहीं कह सकते कि उनकी कविता हृदयंगम करने के लिए उनकी पत्रावली के साथ परिचय होना अत्यावश्यक है। वे मालार्मे या वालेरी के समान नहीं ह ; घुमाकर, फिराकर, आड़े-तिरछे, चोरी-छिपे, छल से, कौशल से, संकेत से, जाल बिछाकर--वे शिल्पकला की ऐसी कोई भावमूर्ति गढ़कर नहीं खड़ी कर देते जो उनकी अपनी कविता के साथ अविकल रूप से मेल खा जाय। वे येट्स के समान हमें अपनी कविता के अंतःपुर में नहीं ले जाते। कवि जीवन की विवृति के रूप में 'जीवनस्मृति' निस्संदेह निराशाजनक है। रवीन्द्रनाथने की थी पुनःरुक्ति ; एक ही बात उन्होंने पद्य और गद्य में कही थी ; उनकी कविता और गद्य परस्पर परिपूरक ही नहीं हैं, जहाँ-तहाँ उनकी अदला-बदली भी की जा सकती है। जो लोग आधुनिक कविता में दीक्षित हैं, यह बात सुनकर बाद को रवीन्द्रनाथ के प्रति उनकी श्रद्धा कम न हो जाय इसलिए यहीं पर मैं इस बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि शार्ल बोदलेयर--जो आधुनिक कविता के आदि उत्स हैं--के गद्य में भी उनकी कविता की प्रतिध्वनि विरल नहीं है ;

वे प्रबन्ध में कविता का स्तबक तक रच डालते हैं, कविता के भण्डार से उठाये गए चित्र कल्प, शब्द, और अलंकार बिखेर देते हैं, कभी-कभी एक ही उपकरण से अपनी कविता और समालोचना की रचना करते हैं। दोनों कवियों में अंतर इसी स्थान पर है—और यह अंतर महत्त्वपूर्ण है—कि रवीन्द्रनाथ ने वही बात अपने गद्य में कम शब्दों में कही है और कविता में उच्छ्वास के साथ कही है और बोदलेयर ने गद्य विस्तार के साथ लिखा है और कविता में बहुत अधिक संयम से काम लिया है । 'जीवनस्मृति' के 'मृत्युशोक' अध्याय में जो बात रवीन्द्रनाथ ने केवल दो अनुच्छेदों में कही थी, 'बलाका' काव्यग्रन्थ का श्रेष्ठ अंश उसीकी व्याख्या और विस्तार है ; किन्तु बोदलेयर की शिल्पविषयक प्रचुर समालोचना का निचोड़ उनकी 'आलोकस्तम्भ' कविता की ग्यारह चतुष्पदियों में आ गया है । बोदलेयर का गद्य जैसे उनकी छुट्टी का घण्टा हो—हमको ऐसा ही लगता है ; छन्द, तुक और स्तबकविन्यास की निर्मम शर्तों को पूरा करने के बाद, चतुर्दशपदी के व्यूह में आदर्श को समेटने के मर्मान्तिक प्रयास के बाद वे गद्य में मानो अपने को निष्कृति देते हों ; वह उनके विनोद और विचरण का क्षेत्र है, कौतुक का मण्डप और विचारबुद्धि की मृगया भूमि ; अर्थात् उनके व्यक्तित्व का जो अंश सामाजिक, रसिक और तत्त्वदर्शी है, जिसने उनकी कविता में प्रच्छन्न रहते हुए मेघलिप्त सूर्य के समान उनकी कविता को रंग दिया है। उसकी स्वाधीन क्रीड़ा गद्यप्रबंध में उन्हें अभीष्ट थी। बोदलेयर का गद्य चाहे कितना अच्छा हो, वह उनकी कविता का विकल्प या समकक्ष होने का दावा नहीं कर सकता ; लेकिन रवीन्द्रनाथ ने अपनी कविता को ढँकने की चेष्टा नहीं की इसीलिए कभी-कभी उनकी कविता और गद्य का अंतर केवल पद्यछंद के प्रयोग या पंक्तिविन्यास की असममात्रिक पद्धति से ही पता चलता है। 'पुरवी' से लेकर 'जन्मदिन' तक हमको बहुत-सी कविताएँ मिलती हैं जिन्हें रवीन्द्रनाथ गद्य में इसी प्रकार या इससे भी मनोरम बनाकर लिख सकते थे या लिख भी गये हैं ; 'पश्चिम यात्री की डायरी' के अनेक अंशों को प्रायः साथ-साथ ही उन्होंने छंद और तुक में रूपायित किया है, 'शेषेर कविता' का गद्यशिल्प अनेक स्थलों पर कविता का रंग फीका कर देता है ; गद्यकविता 'बासा' एक पत्र का परिष्कृत रूप है ; और परवर्ती पत्रावली में ऐसे कई अनूठे वाक्य हमको मिलते हैं या भागते हुए क्षणों की भावछाया मिलती है जिसको काव्यरूप देने के लिए उनको कष्टकल्पना का आश्रय लेना पड़ा है। रवीन्द्रनाथ की समग्र कविता और समस्त गद्य को पास-पास रखकर विचार करने पर हम देखते हैं कि

उनकी कविता और गद्य का विवर्तन समानान्तर नहीं है ; उनके हाथ में गद्य जिस प्रकार बार-बार परिवर्तित हुआ है, कविता नहीं हुई ; कविता में वे जैसे प्रकृति के हाथों अभिषिक्त एक सम्राट् हों, पद्य के आकार में जो कुछ लिखेंगे वही कविता होगी या अगर कविता न भी हो तो कम-से-कम उपादेय होगी, इस प्रकार का एक विधान उन्होंने स्वयं भी प्रायः मान लिया था ; लेकिन गद्य में वे कहीं अधिक सचेत शिल्पी हैं, खुद ही अपने को पीछे छोड़ जाने के लिए निरन्तर सचेष्ट ।

इस प्रकार बंगला साहित्य में यह अनोखी घटना घटी कि जो हमारी भाषा के कविगुरु हैं और जिनका समकक्ष कवि आज भारत में दूसरा नहीं है, वही हमारी गद्यरीति के भी स्रष्टा हैं। स्रष्टा की बात को लेकर इतिहासकार की ओर से आपत्ति हो सकती है ; कहने की जरूरत नहीं कि मैं विद्यासागर और बंकिमचंद्र को भूल नहीं रहा हूँ ; मैं कहना चाहता हूँ कि बंकिम से लेकर आज तक बंगला गद्य जिस प्रकार विवर्तित और रूपान्तरित हुआ है और आज के दिन आधुनिक बंगला भाषा कहने से जिसका बोध होता है, उसके साक्ष्य, प्रमाण और उदाहरण के प्रधान भण्डार रवीन्द्रनाथ हैं । 'बउ ठाकुराणी-रहाट' से लेकर 'शेषेर कविता' तक या 'विचित्र प्रबन्ध' से लेकर 'छेले बेला' तक ; यह ग्रन्थ-श्रृंखला बंगला गद्य के इतिहास को धारण किये हुए है बंकिमी और बीरबली गद्य 'साधु' भाषा और 'चलतू' भाषा, घरेलू, बैठकी और दरबारी रीति, प्राचीन, आधुनिक और आधुनिकतर शैली ; उनके पचास वर्षों के इस कृतित्व को हम बंगला गद्य का अणुविश्व कह सकते हैं, शायद महाविश्व कहना भी गलत न होगा। इसमें सब-कुछ है : भारी, हल्का, गंभीर, चपल, संस्कृत और देशज, समतल और ऊँचा-नीचा अत्युक्ति, वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति ; बहुत-सी मिली-जुली रागनियाँ हैं ; सात्विक मिताचार के सन्निकट विलासी का उच्छ्वास, सामाजिक सौजन्य के सन्निकट ऐश्वर्य का आत्मविकरण। 'जीवनस्मृति' का परिमित, यथोचित, प्रांजल और प्रसन्न गद्य जिनकी रचना है उनको हम अठारहवीं शती के अंग्रेजी अर्थ में 'भद्रलोक' कह सकते हैं ; किन्तु उसके बाद हठात् 'घरे बाइरे' खोलने पर अलंकरण का अतिरेक देखकर हमारा दम घुटने लगता है, ऐसा लगता है कि यदि कालिदास की भाषा बंगला गद्य होती तो वे जो काव्य लिखते, वह यही है। और फिर 'लिपिका' में हमको जादूगर का एक उल्टा खेल देखने को मिलता है ; 'घरे बाइरे' के प्रायः समकालीन इस गद्य को अच्छे अर्थ में 'जनाना' कहने को जी चाहता है ; कि जैसे कुलनारी की मौखिक भाषा का ग्राम्य दोष निकालकर

रवीन्द्रनाथ ने उसकी ऋजुता, लावण्य और सरलता ले ली हो; जो नितांत प्राकृत है उसीके उन्नयन से उत्पन्न यह सम्मोहन उन्होंने पूर्ववर्ती 'डाकघर' में भी दिखाया था। केवल उनके साहित्य को पढ़कर हम बंगला गद्य की सम्पूर्ण धारा को जान सकते हैं और यह बात ऐतिहासिक और अन्यान्य कारणों से दूसरे किसी बंगाली लेखक के संबंध में नहीं कही जा सकती। हमें उनको अपने गद्य के अछूते दर्पण के रूप में स्वीकार करना ही पड़ता है।

यौवन में रवीन्द्रनाथ ने बंकिम का अनुकरण किया है, मध्य वयस में प्रमथ चौधरी के प्रभाव ने उनका स्पर्श किया और इन दो लोगों को छोड़कर उनके समकालीन या पूर्ववर्ती लेखकों में दूसरा कोई नहीं है जिसके साथ गद्यशिल्प की दृष्टि से उनकी तुलना की जा सके। इसीलिए यदि हम इस बात का अन्वेषण करें कि उनका 'बंकिमी' गद्य कहाँ पर बंकिम से आगे बढ़ आया है और उनकी 'सबुजपत्र' युग की रचना भी किधर से अप्रामथिक है तो हम शायद समझ सकें कि उनको बंगला गद्य का स्रष्टा कहने का संयत कारण है या नहीं। वह अंतर, मेरी समझ में, यह है। बंगला गद्य में जो रमणीयता है वह बंकिम की देन है, उनके पहले यह गुण नहीं दिखाई पड़ता, और उनके उपन्यास और 'कमलाकांत' आदि प्रबन्ध रमणीय गद्य में रचे गए हैं इसीलिए आज तक उनकी आभा मंद नहीं पड़ी। लेकिन यह रमणीयता गद्य पद्य की ऋणी है। अर्थात् बंकिम के गद्य में बीच-बीच में पद्यछंद के बोल सुनाई पड़ते हैं, पद्य के ध्रुपद के समान ही उनमें अनुलापी अंश अविरल है, उनके कोई-कोई वाक्य लगभग पयार की पंक्ति हो सकते हैं—कम-से-कम मध्य खंडन में उनकी उन्मुखता स्पष्ट है और अठारहवीं शती के अंग्रेजी के दश मात्राओं वाले पद्य के समान उक्ति और प्रत्युक्ति की द्विधा के बीच उनकी स्थिति है। उनके वाक्य ऋजु हैं, शिक्षित सैन्यदल के समान वे काल पर पैर मिलाकर चलते हैं, उनकी श्रृंखला और धारावाहिकता युक्तिनिर्भर है, वे अभिप्राय की एकता के द्वारा सम्बद्ध हैं। और समग्र रूप से देखने पर प्रमथ चौधरी का चरित्रलक्षण भी यही है: वाक्यबन्ध की यही ऋजुता, यह युक्तिनिर्भर वागनुक्रम। 'साधु' और 'चलतू' भाषा को लेकर चलने वाले वाद-विवाद के कारण यह सादृश्य हम बहुत दिनों तक लक्ष्य नहीं कर सके लेकिन आज के दिन जब यह गृहयुद्ध शांत हो गया तब 'लोकरहस्य' या 'विविध प्रबन्ध' के बाद 'हालखाता' या 'नाना चर्चा' पढ़ने पर यह बात सहज ही हमारी समझ में आ जाती है कि इन दोनों व्यक्तियों के गद्य का चलन एक ही प्रकार का है और उनके गठन में भी कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है।

लेकिन इनके बाद रवीन्द्रनाथ को खोलने पर फौरन एक दूसरा सुर ध्वनित हो उठता है। हम अनुभव करते हैं कि उसमें और भी एक गुण है जिसको दीप्ति या शृंखला या रमणीयता कहना काफी नहीं है, जिसको प्रवाह या प्रवहमानता कहना पड़ता है--जो रवीन्द्रनाथ के पहले के गद्य में नहीं है और परवर्ती सब गद्यों में भी लक्षणीय नहीं है।

बंकिम में, या उसके पहले विद्यासागर में भी, गति है लेकिन जिसको हम रवीन्द्रनाथ का प्रवाह कह रहे हैं उसकी प्रकृति और है और यह अंतर आकार में चाहे बहुत बड़ा न भी हो पर सन्दर्भ में दूरस्पर्शी है। रवीन्द्रनाथ के गद्य का कल्प या यूनिट वाक्य नहीं अनुच्छेद होता है; वे एक साथ एक-एक अनुच्छेद में सोचते हैं और उनकी समग्र रचना उन अनुच्छेदों के योगफल से बड़ी जान पड़ती है। वाक्य के संग वाक्य के या अनूच्छेद के संग अनुच्छेद के संबंध के लिए व्याकरण का या युक्ति का योग ही यथेष्ट होता है और उसके द्वारा भी उत्कृष्ट गद्य सम्भव होता है; लेकिन रवीन्द्रनाथ में वह योगसूत्र ऐसा एक रहस्यमय प्राणस्पंदन है जिसको हम अंततः भाषा का ध्वनिस्पंदन कहकर ही पहचान सकते है। शृंखला में बँधे हुए उनके वाक्य केवल अपने सान्निध्य गुण में पड़ोसी नहीं होते, वे एक अखण्ड धारावाहिकता में परस्पर-संयुक्त होते हैं; वे केवल एक-दूसरे का अनुसरण नहीं करते बल्कि जैसे रह-रहकर एक-दूसरे को छूते चलते हैं, जीव के अंग-प्रत्यंग के समान लचीले होते हैं, वे खेल जानते हैं, व्यतिक्रम करने में उन्हें भय नहीं लगता, मानसाम्य को तोड़कर वे आशातीत को संभव कर देते हैं। उनकी एक ही रचना में क्षुद्र और सरल एवं जटिल और दीर्घायित वाक्य-विन्यास निःसंकोच स्थान पा लेते हैं,; उनके दो लगे-लगे वाक्य एक ही तरह से आरम्भ या समाप्त नहीं होते; स्वरांत और हलन्त शब्दों के सन्निवेश में वे जैसे अचेतन भाव से व्यवधान को बचाते हुए चलते हैं, एक ही स्वर की आवृत्ति सहन नहीं करते; द्रुति वैचित्र्य और ऐश्वर्य की साधना में अंग्रेजी ढंग का अन्वय स्वीकार कर लेते हैं--जो उनके पहले बंकिम विद्यासागर ने भी किया है; लेकिन पार्श्वोक्ति, सर्वनाम और क्रम-विपर्यय के प्रयोग के कारण जिसका पूर्ण रूप रवीन्द्रनाथ के पहले दिखाई नहीं पड़ा था, यद्यपि समालोचक उनको भूलकर कभी-कभी यह भी कहते हैं कि कुछ अयोग्य आधुनिक लेखक ही बंगला गद्य में अंग्रेजी रीति के प्रवर्त्तक हैं। किन्तु अंग्रेजी तो अब नहीं है, वही विशुद्ध बंगला हो गई है या शायद उस ढंग को अंग्रेजी कहना ही भूल है; क्योंकि जिस दिन बंगला गद्य ने कामा, सेमीकोलन आदि विराम चिन्हों को स्वीकार कर लिया उसी दिन कहा जा

सकता था कि अपनी प्रतिभा के आग्रह से वह बहुलांश रूपकरण में अन्यान्य आधुनिक भाषाओं की प्रतियोगी हो उठेगी। कम-से-कम रवीन्द्रनाथ के बाद यह बात नितांत अग्राह्य है कि एक-मात्र-दो-मात्रा पर निर्भर कृत्तिवासी पयार के साथ बंगला गद्य का कोई संबंध है या कि 'विशुद्ध बंगला अन्वय' नाम का दूसरा कोई पदार्थ सम्भव है। वरन् हमको तो यह बात तर्क से परे जान पड़ती है कि रवीन्द्रनाथ की इस समस्त नवीनता का उत्स और आश्रय बंगाली के मुँह की बोली का अपना और मौलिक छंद है; जिस सुर में हम लोग स्वाभाविक रूप से अपनी बात कहते हैं, जिस प्रकार हमारे कंठस्वर का आरोह-अवरोह होता है--हमारा आवेग और नैराश्य, संशय, उत्तेजना और दीर्घश्वास, इन सबके एक आदर्श ध्वनिरूप का दूसरा नाम है रवीन्द्रनाथ का गद्य। और यही चीज जिसको हम छंद कह रहे हैं वह पद्य का नहीं, गद्य का ही छंद है, पारिभाषिक यथार्थता की खातिर हम उसको छन्दस्पंद कह सकते हैं; उसमें पद्य या गान के समान ताल नहीं है पर राग-संगीत के अलाप के समान लय है; रवीन्द्रनाथ का असाधारण कृतित्व इसी बात में है कि आजीवन कवि के समान गद्य लिखने पर भी गद्य में--यहाँ तक कि गद्य कविता में भी--उन्होंने पद्यछन्द की प्रतिध्वनि को स्थान नहीं दिया। श्रीयुत् अतुल चन्द्र गुप्त ने बहुत ठीक कहा है कि "उनका गद्य महाकवि का गद्य है, तो भी कहीं पर भी पद्यगंधी नहीं है।" यह 'तो भी' ही अर्थपूर्ण है।

४

इसी छन्दोसिद्धि के कारण रवीन्द्रनाथ का तर्क दुर्बल होते हुए भी प्रबंध ढह नहीं पड़ता, घटनागत यथार्थता का अभाव होते हुए भी उपन्यास स्मरणीय रहता है और नाटक अन्यान्य कारणों से दुस्सह जान पड़ने पर भी उल्लेखनीयता की मर्यादा पाता है। व्यतिक्रम उसमें न हो ऐसी बात नहीं; 'नवीन' 'बांशरी' और अंशतः 'तिन संगी' के गद्य को कृत्रिमता की पराकाष्ठा कहने में मुझको संकोच न होगा; बंगला भाषा के स्वाभाविक छन्द पर जिनका स्वाभाविक प्रभुत्व था वे कैसे उन सब ग्रन्थों की रचना कर सके यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समस्या रहेगी। रवीन्द्रनाथ का एक लक्षण जो हमारे अनंत विस्मय का कारण है वह है उनकी दैवी स्वतः स्फूर्ति; क्लांत क्षणों में उन्होंने अपना अनुकरण भले किया हो पर चेष्टा करके नवीनता नहीं पैदा करनी चाही; और इसीलिए 'बांशरी' या 'तिनसंगी' इतने अधिक चरित्रच्युत

जान पड़ते हैं, उनके एक-एक पद में पाठक को चौंकाने का जो प्रयास है वह इतना क्लिष्ट और क्लेशकर है कि उसे गंभीरतम अर्थ में अ-राविन्द्रक कहना पड़ता है। मगर इसके साथ-ही-साथ प्रायः उसी समय रचित 'विश्व-परिचय' और 'छलेबेला' में गद्य-शैली की वैसी ही नवीनता होते हुए कष्ट देने वाली कृत्रिमता नहीं है; उसका कारण मेरी समझ में यही है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जब रवीन्द्रनाथ की सद्यतन भाषा का व्यवहार करते हैं तो वह भली मालूम होती है पर गल्प और नाटक के पात्र-पात्रियों के मुख में वही भाषा अविश्वसनीय हो जाती है। काल्पनिक चरित्रों के मुख में उन चरित्रों के उपयुक्त भाषा डालने की चेष्टा में रवीन्द्रनाथ बहुत बार असफल हुए हैं, नाटक-रचना में यही उनकी कठिनाई थी 'डाकघर' के छोटे आकार-प्रकार में वह प्रकट नहीं हुई किन्तु 'राजा' से लेकर 'रक्तकरबी' तक जहाँ भी जनता या प्राकृतजन हैं वहीं उनकी बात सुनकर हमको संदेह होता है कि इनकी अपनी कोई सत्ता नहीं है, ये केवल अपने कर्ता के हाथ के खिलौने हैं। वस्तुतः रवीन्द्रनाथ का गद्य सबसे अधिक प्रामाणिक और स्वच्छन्द उस समय हो उठता है जब वे अपनी जबानी बात कह सकते हैं; इसीलिए उनकी श्रेष्ठ रचनाओं में उनके 'गल्पगुच्छ' का निश्चित स्थान है और स्थान है उनके उपन्यासों के वर्णनात्मक अंशों का, उनके प्रबन्धों का, चिट्ठी-पत्री और आत्मकथात्मक रचनाओं का। अंततः इन्हींमें से छाँटने पर हमको गद्यशिल्पी रवीन्द्रनाथ का उत्कृष्ट परिचय मिल सकता है।

प्रबन्ध-रचना की एक गतानुगतिक पद्धति से हम परिचित है। मास्टर साहब छात्र से कहते हैं अमुक-अमुक पुस्तकें पढ़कर इस विषय पर एक प्रबन्ध लिख लाओ और छात्र यदि प्रमाणित कर सके कि उल्लिखित पुस्तकों में कितनी उसने पढ़ी हैं, पढ़कर अंततः थोड़ा-बहुत समझा है और उतने को अपनी भाषा में प्रकट करने में असफल नहीं हुआ तो इतने से ही उसकी गिनती पहले नम्बर के छात्रों में हो जाती है। हम मान ले सकते हैं कि बाद को स्वयं अध्यापक होने पर वह इसी पद्धति का और भी व्यापक व्यवहार करेगा, शताधिक पुस्तकों का अध्ययन करके नये ग्रन्थ की रचना करेगा, उसके अध्यवसाय के फल से किसी एक सीमित विषय में हमारा ज्ञान बढ़ेगा सम्भवतः वह विषय असामान्य होगा अर्थात् साधारण साहित्यरसिक के लिए मनोज्ञ न होगा, लेकिन विशेषज्ञ के लिए आदरणीय होगा। इस प्रकार की पुस्तक अपने क्षेत्र में मूल्यवान होगी लेकिन तब तक ही जब तक उस विशेष विषय में और भी अधिक ज्ञान संकलित नहीं होता। लेकिन प्रबन्ध-रचना का और भी एक उपाय है वह

प्रतिभावानों का उपाय है। किसी एक शुभ मुहूर्त्त में लेखक अपनी अन्तर्चेतना द्वारा अकस्मात् एक सत्य को अनुभव करता है—वह सत्य भी है या नहीं, यह भी ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता, केवल इतना कहा जा सकता है कि लेखक की अनुभूति सत्य है। उसको व्यक्त करने के लिए जिन सब तथ्यों, युक्तियों और उदाहरणों को वह उपस्थित करता है वे भी निर्धारित या सुचिन्तित रूप में संकलित नहीं होते, अपने उत्साह की गर्मी में जो कुछ मन में आता है प्रायः उसीको वह बिना सोचे-समझे ग्रहण कर लता है। इस प्रकार के प्रबन्धों का वैशिष्टय यही है कि युक्त अथवा तथ्य में भ्रांति पकड़ी जाने पर भी रचना को क्षति नहीं पहुँचती क्योंकि उसकी मौलिक अनुभूति प्रमाणनिर्भर नहीं होती, संक्रामक होती है, अतएव उसका मूल्य चिरकालिक होता है। उदाहरण के रूप में मैं रवीन्द्रनाथ के 'भारतवर्षीय इतिहासेर धारा' नामक प्रबंध का उल्लेख कर सकता हूँ; आज उसके प्रत्येक तथ्य को भी यदि पंडित लोग गलत साबित कर दें तो भी हम उसको छोड़ न सकेंगे, भारतवर्षीय सभ्यता के विषय में लेखक की दृष्टि हमको मुग्ध करती रहेगी। और यह दृष्टि इस अर्थ में सत्य होगी कि कभी किसी समय किसी एक पुरुष ने उसके प्रभाव में भारत के समग्र रूप की उपलब्धि की थी। जहाँ पर उपलब्धि है वहाँ हम तर्क करना भूल जाते हैं।

इस प्रकार की समालोचना को विम्बधर्मी या इम्प्रेशनिस्टक कहकर बहुत-से लोग इसकी मर्यादा को कम करने की चेष्टा करते रहते हैं। लेकिन यहाँ पर यह प्रश्न उठाना उचित होगा कि बिम्ब किसके मन में उदित हो रहा है? वह यदि किसी समकालीन साप्ताहिक के लेखक हों जो पाठक के साथ पाँच मिनट की गप-शप करके प्रसंगतः यह बतलाना नहीं भूलते कि कोई पुस्तक पढ़कर उनको 'कैसी लगी' तो इस विषय की आलोचना करने का मैं कोई प्रयोजन नहीं देखता। किन्तु वह यदि कोई आलापचारी सैमुअल जान्सन हों या वृद्ध गेटे या नवयुवक जान कीट्स या बौदलेयर अथवा टामस मान या रवीन्द्रनाथ ठाकुर, तो इस तथाकथित बिम्ब की अश्रद्धा नहीं की जा सकती; हम देख सकते हैं कि कोई एक भाव उनके मन में बिम्बित हुआ है इसीलिए वह व्यंजना में गहरा हो उठा है; एक असतर्क मुहुर्त में इनके मुँह से निकली हुई बात या जल्दी में लिखे गए पत्र की कोई उक्ति——कभी-कभी वह भी जैसे अर्थ में और इंगित में अपना महत्त्व रखती है। और फिर हमको अपनी अनिच्छा के बाव-जूद मानना ही पड़ता है कि भगवान् के राज्य में सुविचार नाम की कोई चीज नहीं है; तभी तो प्रतिभा नामक रहस्यमय वस्तु अन्यान्यपूर्वक हमारे ऊपर जीत

जाती है—निर्दिष्ट शास्त्रसमूह न पढ़कर भी वयस में प्रायः नाबालिग होते हुए भी, यहाँ तक कि आलोच्य विषय में बहुत ही कम ज्ञान लेकर भी वह हमारे ऊपर अनायास विजयी हो जाती है। जो स्वयं सृजनशील प्रतिभावान लेखक हैं, साहित्य या आनुषंगिक विषय में उनकी बात के मूल्य को स्वतः सिद्ध कहना गलत न होगा, क्योंकि हम देखते हैं कि पंडित लोग युग-युग में उनकी उक्ति के भाष्य लिखते हैं लेकिन पंडितों की गवेषणा के साथ परिचय स्थापित करना कवियों के लिए आवश्यक नहीं होता।

कवि-समालोचक का मन किस तरह काम करता है, हमारी भाषा में रवीन्द्रनाथ इसके अनुपम उदाहरण हैं। उनके प्रबंध में उपमा का प्राचुर्य देखकर कुछ लोग कहते हैं कि वे स्थान हो न हो अकारण 'कवित्व' करते रहते हैं। यह बात ठीक नहीं; हमें याद रखना चाहिए कि उपमा से अलग होकर दर्शनशास्त्र अचल हो जाता है, उपनिषद् और प्लेटो से आरम्भ करके इसके अनेकानेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। बल्कि यही बात लक्ष्य करने की है कि रवीन्द्रनाथ के यौवनकालीन सामाजिक और राजनैतिक प्रबन्ध एकदम तथ्यपूर्ण भाषा में लिखे गए हैं, जिसको गद्यतम गद्य कहा जाता है वह भी उन्होंने बहुत लिखा है; वस्तुतः 'सबुज पत्र' के पहले तक प्रबन्ध में या कथासाहित्य में उनकी कविसत्ता को पूरी निष्क्रति नहीं मिली है। तो भी उनके जिस किसी भी काल की रचना में एक कवि की उपस्थिति अनुभव होती है; उसका कारण उनके मन की विद्युत्धर्मिता है। बिजली कौंधने की तरह वे एक क्षण में अपने मूल विचार को हमारे मन के सामने उपस्थित कर देते हैं; आलोच्य विषय चाहे जो हो, राजनीति या धर्म, शिक्षा या इतिहास, वे तुरन्त विषय के ठीक मर्मस्थल में पहुँच जाते हैं; पाठकों में जो विशेषज्ञ हैं वे नया कोई तथ्य न पाने पर भी एक नई दृष्टि पाते हैं; और जो लोग उनसे एकमत नहीं हो पाते उनको दिखाई देता है कि उनके अपने मत के पक्ष में नई युक्ति उसी रचना में से निकालना सम्भव है। रवीन्द्रनाथ उन्हीं द्रष्टाओं में अन्यतम हैं जो हमें समझा देते हैं कि हम लोग जिसको 'मतामत' कहते हैं वह सबसे महत्त्वहीन वस्तु है, असल चीज अन्तर्दृष्टि है—वही 'बिम्ब' या बिम्बग्रहण की सहज क्षमता जो विषय और विषयी दोनों को एक साथ उद्घाटित करती है। रवीन्द्रनाथ एक अत्यंन्त औत्सुक्यजनक व्यक्ति हैं इसीलिए वे जिस भी विषय में जो कुछ भी कहते हैं उस सबमें हमारा औत्सुक्य अनिवार्य हो जाता है।

यहाँ पर यह कहना जरूरी है कि उनके साहित्य और रसतत्त्व की आलोचना में हम शुरू से ही एक भिन्न स्वर देखते हैं; यहाँ पर उनकी कविसत्ता का

काम ज्यादा है, उपमाएँ और भी प्रचुर हैं, मीमांसा और भी अनिश्चित है, और उपस्थापना–शास्त्रीय आदर्श के अनुसार देखने पर सबसे कम सन्तोष देने वाली है। उनके प्रथम उल्लेखनीय समालोचना-ग्रन्थ 'पंचभूत' के संबंध में हम निश्चित नहीं हो पाते कि उसे 'समालोचना' के अंतर्गत लेना चाहिए या 'विचित्र' के अंतर्गत; इधर 'विचित्र प्रबन्ध' के नाम में ही 'विचित्र' है तो भी उसको अनेक अंशों में रसतत्त्व की विवेचना कहना गलत न होगा––विख्यात 'केकाध्वनि' प्रबन्ध तो सौन्दर्यतत्त्व का अनुशीलन है। परवर्ती ग्रन्थों को 'प्राचीन साहित्य', 'आधुनिक साहित्य', 'साहित्य', 'साहित्येर पथे' इस प्रकार के सुस्पष्ट नाम देकर उन्होंने पाठकों, सम्पादकों, छात्रों और अध्यापकों के लिए सुभीता कर दिया है लेकिन यहाँ पर भी उनके लिखने के ढंग में 'सुनो, मैं कह रहा हूँ' का भाव नहीं है, अपने को सत्य और ज्ञान का भण्डार समझकर पाठक को शिक्षित करने की मुद्रा उनकी नहीं है; जिस प्रकार उन्होंने 'पंचभूत' में भिन्न-भिन्न चरित्रों की सहायता से भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण उपस्थित किये थे, उसी प्रकार यहाँ पर भी जैसे अपने ही साथ तर्क करते-करते उनकी यात्रा होती है; जरा-सा आगे जाकर, फिर जरा-सा पीछे जाकर, बीच-बीच में कलैया खाकर, कभी किसी आकस्मिक और उज्ज्वल भावना के पीछे दौड़कर या कभी दूरकल्पना के उत्साह में आलोच्य विषय को भूलकर––इस प्रकार लिखते हैं कि जैसे वह सब-कुछ उनकी आत्मपरीक्षा और स्वगतोक्ति हो। जिस प्रकार कविता में उसी प्रकार प्रबन्ध-रचना में बहुत बार आच्छादन का व्यवहार उपयोगी होता है; साहित्य के विषय में कुछ कहना हो तो उसका एक प्रशस्य उपाय विशेष किसी कवि या ग्रन्थ की समीक्षा करना होता है, उसीके सहारे चलते हुए लेखक का चिन्तन उद्घाटित हो सकता है––और कवि लोग साधारणतः इसी प्रकार समालोचना लिखा करते हैं। रवीन्द्रनाथ में भी इसके उदाहरणों का अभाव नहीं है लेकिन 'साहित्य', 'साहित्येर पथे' और सबके बाद 'साहित्येर स्वरूप'—इन तीन ग्रन्थों में हम विशुद्ध तात्विक या दार्शनिक आलोचना की ओर उनकी प्रवृत्ति देखते हैं, 'साहित्येर तात्पर्य', 'साहित्येर सामग्री', 'सौन्दर्यबोध', साहित्य विचार', 'साहित्य धर्म', 'तथ्य और सत्य'—ये सब शीर्षक, मानना ही होगा, प्रथम दर्शन में उतने उत्साहजनक नहीं हैं; हमें ऐसा लग सकता है कि जो व्यक्ति साहित्य, सत्य या सौन्दर्य के विषय में अपनी धारणा खूब स्पष्ट ढंग से बतला सकता हो वह और जो हो कवि नहीं है और रवीन्द्रनाथ ने कैसे इस विमूर्त वायुमार्ग में विचरण किया था उसकी बात सोचकर हमारा विस्मित होना भी स्वाभाविक है। थोड़ी-सी पीड़ा के

साथ हमें याद आ जाता है कि उन दिनों यह कवि अपने देश के प्रधान पुरुष के रूप में अधिष्ठित हुआ था; जिस प्रकार लोगों को उनके सामने कोई भी प्रश्न उपस्थित करने में अब संकोच नहीं होता उसी प्रकार उनके संतोष-साधन की चेष्टा भी कवि के कर्तव्य का अंग हो गई है यहाँ तक कि 'कविता किसको कहते हैं' इस तरह का असंभव प्रश्न उठने पर भी वे मौन नहीं रह सकते। दूसरी ओर यह संभावना भी स्वीकार करने योग्य है कि जीवन के प्रधान सृजनशील अध्याय में पहुँचने पर और अपने विरुद्ध अर्वाचीनों के एक दल का कलरव सुनने पर वे अपने अचेतन साहित्य-धर्म को सचेतन स्तर पर व्यक्त करने की चेष्टा कर रहे थे; हो सकता है कि अपने साहित्य के आदर्श और विश्वास के संबंध में अपने ही सामने एक आखिरी बयान देने की इच्छा उनकी हुई थी। यह चेष्टा विपद्जनक है, क्योंकि कवि किसी तात्विक व्याख्या में अपनी कविता को बाँध नहीं सकता; तत्त्व को बहुत कसने पर बोरा फट जाता है और धान के पूले बाहर निकल आते हैं और उदार होने पर वह सब साहित्य का निर्विशेष आधार हो जाता है। ऐसी स्थिति में कवि लोग एक-मात्र जो कर सकते हैं वही रवीन्द्रनाथ ने किया है; अरस्तू या आलंकारिकों के समान विषय पर सीधे-सीधे हमला न करके उन्होंने घुमा-फिराकर अपनी बात कही है; उनकी रचना में संशय, कौतुक, पुनरुक्ति, अस्थिरता आ गई है; कोई एक बात कहकर उन्होंने उसी दम उसको सीमित, खण्डित या विस्तारित कर दिया है; किसी प्रबंध को समाप्त करते ही वह उन्हें अधूरा लगने लगता है—और फिर उसीको आगे बढ़ाकर उन्हें उसके प्रतिवाद में और समर्थन में और भी लिखना पड़ता है। इसीलिए उनकी तत्त्वालोचना इतनी सप्राण और लहरदार है, उसको हम एक आंदोलन भी कह सकते हैं: 'अलि बार-बार फिरे जाय, अलि बार-बार फिर आशे'—लेखक के साथ विषय का संबंध कुछ इसी प्रकार का है और इसके बिना फूल जैसे खिल ही नहीं पाता। ये 'फूल' हैं रवीन्द्रनाथ की दो-एक तीव्र और सहजात अनुभूतियाँ, उनके हृदय में अनि-र्वचनीय की झलक; वह कोई प्रमाणसापेक्ष तथ्य नहीं है इसीलिए उपमा, रूपक और अलिधर्मी हिल्लोर के अलावा उसके संग व्यवहार का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए उनका सब तर्क गान हो उठता है—'घरे बाइरे' की विमला की बात चुराकर कह रहा हूँ; या अगर इससे भी अधिक ठीक परि-चय देना चाहूँ तो वह भी रवीन्द्रनाथ की भाषा में ही मिलेगा। 'छन्द' ग्रन्थ के आरम्भ में 'सइ, केवा शनाइलो श्याम नाम' यह पंक्ति उद्धृत करके वे कहते हैं कि इस साधारण समाचार को छन्द में इस प्रकार झूले की पेंग दे दी गई है

कि पाठक के मन में लहरें उठने लगीं। इन्हीं दो-एक बातों के...अंतर का स्पंदन अब कभी शांत न होगा। वे अस्थिर हो गए हैं और अस्थिर करना ही उनका काम है। 'पद्य छन्द के इस इन्द्रजाल से हममें से कोई अपरिचित नहीं है ; लेकिन आश्चर्य की बात है कि रवीन्द्रनाथ के गद्य की चोट से कभी-कभी हमें इतना अभिभूत हो जाना पड़ता है कि हमारे मन में बस 'लहरें उठने लगती हैं', बात खत्म हो जाने पर भी स्पन्दन नहीं थमता। और भी आश्चर्य की बात यह है कि उनका यह किन्नरकण्ठ हमें वहाँ पर भी सुनने को मिलता है जहाँ विषय वैज्ञानिक है ; बल्कि यों कहें कि वहीं पर सबसे ज्यादा सुनने को मिलता है ; उनकी छन्द और शब्दतत्त्व की आलोचना केवल हमारी बुद्धि के निकट कोई वार्ता नहीं पहुँचाती, हमारी समग्र सत्ता को पुलकित कर देती है। शायद यह ठीक है कि वे हमको किसी मीमांसा के किनारे नहीं पहुँचाते, कभी कोई तैयार सत्य उठाकर हमारे हाथ में नहीं दे देते ; लेकिन हमारे मन में एक वेग का संचार करते हैं जिनके फलस्वरूप हमारी अपनी भ्रष्ट स्मृति, स्पप्न का भग्नांश, चिन्तन की रश्मि, इन्द्रिय की कोई नई सिहरन अंधकार से बाहर निकल आती है। हम चंचल हो उठते हैं, डोंगी लेकर समुद्र में कूद पड़ते हैं, वे हमको स्वाधीन ढंग से सत्य के अनुसरण की यात्रा करा देते हैं—हमारे साथ वे ऐसा ही करते हैं—यदि हम अपनी अक्षमतावश बीच समुद्र में डूब मरें तो यह दायित्व उनका नहीं है और अगर हो भी तो भी यह मानना होगा कि बाहर निकलने मात्र से हम सार्थक हो गए हैं। 'वे अस्थिर हो गए हैं और अस्थिर करना ही उनका काम है' ; यह बात उनके प्रबन्ध संग्रह के मुखपृष्ठ पर उद्धृत करने योग्य है।

५

रवीन्द्रनाथ की गद्यरचना को और भी एक तरह से विभाजित किया जा सकता है ; एक ओर सरकारी या औपचारिक, दूसरी ओर घरेलू या निजू। यह विभाजन उनके प्रबन्धों के लिए भी अर्थहीन नहीं है लेकिन पत्रावली और भ्रमण-वृत्तान्त के संबंध में तो अक्षरशः सत्य है। पत्रावली को अलग करके उनके गद्य-साहित्य के विषय में नहीं सोचा जा सकता, क्योंकि वह केवल परिमाण में अजस्र नहीं है, कभी-कभी साहित्यगुण से भी भरपूर है। किन्तु जो उनकी सचमुच की चिट्ठियाँ हैं, और साथ ही स्मरणीय साहित्य हैं, वे सब उनके यौवन की रचना हैं ; जिस दिन से शांतिनिकेतन के गुरुदेव और जगत् के गुरुस्थानीय

होने का दुर्भाग्य उनके लिए घटित हुआ, उस दिन से वे चिट्ठी लिखने का सुयोग खो बैठे ; अपने जीवन के अंतिम बीस-पच्चीस वर्षों में उन्होंने पत्र के रूप में जो कुछ लिखा है उसका श्रेष्ठ अंश पत्र के वेश में प्रबन्ध हैं या कम-से-कम प्रकाशन के लिए ही लिखा गया है ; अन्य सब पत्र अनुरोध की रक्षा के लिए या कर्तव्य के बोध से लिखे गए हैं, उनमें कहीं वे किसी महिला को सान्त्वना या उपदेश दे रहे हैं या कहीं किसी समकालीन पुस्तक या घटना के विषय में उनको कुछ अनिच्छापूर्वक अपना अभिमत देना पड़ रहा है। अंत में उनकी प्रत्येक चिट्ठी, प्रतिलिपि रखकर, डाक में भेजी जाती थी ; चिट्ठी की स्वच्छन्दता की दृष्टि से इससे बड़ा कोई दूसरा विघ्न नहीं हो सकता ; उनकी इस काल की चिट्ठी-पत्री साधारणतः इतनी निर्वैयक्तिक है कि प्रायः कोई भी चिट्ठी किसी भी व्यक्ति को भेज देने में कोई बुराई न होती। मगर इस स्थिति में भी वे नितान्त रवीन्द्रनाथ है इसलिए अनेक पत्रों में उन्होंने कम या अधिक सरसता का संचार किया है, उनके हाथ के गुण से फुटकर खबरों का चिरकुट भी सुस्वादु हो गया है, काम की बात भी प्रयोजन के भीतर ही घुटकर नहीं रह गई है। जिस चीज को कारीगरी या दक्षता कहते हैं वह जैसे उनके नयनाभिराम हस्ताक्षर के समान ही पूरी तरह उनका अभ्यास बन गई थीं ; उसको देखकर जहाँ उनको धन्य कहे बिना नहीं रहा जाता वहाँ उस सुवर्ण युग को याद करके हमारे मुँह से गहरी साँस निकल जाती है जब पत्र लिखने वाले और पाने वाले के बीच मुद्रक की छाया नहीं पड़ी थी। उसी युग की एक श्रेष्ठ फसल 'छिन्नपत्र' है——अमर काव्य 'सोनार तरी' और 'गल्पगुच्छ' को ध्यान में रखकर ही मैं यह बात कह रहा हूँ : ऐसी सप्राण, एक साथ ही इतनी व्यक्तिगत और इतनी सार्वजनीन, इतनी चिरनीन और सदा पढ़ने योग्य चिट्ठियाँ रवीन्द्रनाथ ने फिर कभी नहीं लिखीं। कल्पना, हास्यरस, मनस्विता ; अनुचिन्तन का आविष्कार और बहिर्जगत् का वास्तव तथ्य ; आँख से देखना और मन-ही-मन सोचना ;——'छिन्नपत्र' में यह सब-कुछ है और उसके साथ ही है एक व्याप्त सत्ता, जिसको मैं बंगाल छोड़कर और कोई नाम नहीं दे सकता। ऋतु, नदी और तृण-तरु समेत बंगाल की ग्राम-प्रकृति उसकी कांति, गन्ध और आर्द्रता लेकर, इस प्रकार इस पुस्तक के अक्षरों से निकलकर हमारी इंद्रियों के ऊपर छा जाता है कि 'छिन्नपत्र' नाम का उच्चारण करते ही बंगाल की एक मानस-मूर्ति हमारी आँखों के समाने खड़ी हो जाती है और ये सब विशुद्ध चिट्ठियाँ हैं जो सचमुच किसी बन्धु या आत्मीय को कुछ खबर भेजने के लिए लिखी गई थीं, इनमें सचेतन कलात्मकता की कोई चेष्टा न थी,

रवीन्द्रनाथ इन्हें लिखकर भूल भी गये थे। उनकी स्वतः स्फूर्ति यहाँ पूरी तरह विजयी हुई है।

अपरिचित या अल्पपरिचित भक्त के निकट आत्म-उद्घाटन रिल्के के लिए जितना सहज था, रवीन्द्रनाथ के स्वभाव के उतना ही विरुद्ध। हम देखते हैं कि उनकी किसी भी काल की कोई भी अच्छी चिट्ठी किसी निकट आत्मीय या घनिष्ठ बन्धु को लिखी गई थी। सत्रह वर्ष की अवस्था में पहली बार विलायत जाने पर उन्होंने जो भ्रमण-वृत्तांत लिखा था उसको गद्यसाहित्य में उनकी प्रतिभा का पहला स्वाक्षर कहा जाता है, 'यूरोपप्रवासी के पत्र' तत्काल सामयिक पत्रों में छपने पर भी, प्रकाशन के लिए नहीं लिखे गए थे। जोड़ासाँको में रहने वाले आत्मीय जनों के लिए ही ये चिट्ठियाँ सचमुच लिखी गई थीं; इसीलिए उनमें वह अंतरंगता ध्वनित हुई है जो बाद में हमको 'छिन्नपत्र' और 'यूरोप यात्री की डायरी' में मिलती है, लेकिन बाद के भ्रमणग्रन्थों और पत्रावली में लुप्त हैं। ये तीन पुस्तकें प्रमाणित करती हैं कि जिस समय रवीन्द्रनाथ अपना 'सरकारी' साहित्य 'साधु' भाषा में लिख रहे थे उसी समय, प्रमथ चौधुरी के बहुत पहले, उनके 'घरेलू' साहित्य में 'चलतू' भाषा की स्रोतस्विनी वह चली थी, इतना सहज नैपुण्य होते हुए भी वे क्यों 'सबुजपत्र' के पहले चलतू भाषा का प्रकट व्यवहार करने की ओर से कुंठित थे यह सोचकर मैं अवाक् हो जाता हूँ।

यौवन के उत्तरार्ध में रवीन्द्रनाथ का कोई घनिष्ठ बन्धु न था, था एक विराट् भक्त-सम्प्रदाय, जो बहुत-से सौरकेंद्रिक मण्डलों में विभक्त था। तब तक उनके व्यक्तिजीवन में बहुत-से परिवर्तन हो चुके थे; पत्नी और दो पुत्र-कन्या का देहावसान हो चुका था; यौवन के मित्र या परिवार से जुड़े हुए घनिष्ठ लोग मर चुके थे या बिखर गए थे; बंगाल में कोई नहीं था जिसे वे अपना समकक्ष या प्रतिद्वन्द्वी समझ सकते; वे बंगला साहित्य के सम्राट् थे—संसार की आँखों में एक ऊँचे प्राचीर के समान थे, अंग्रेजशासित संपूर्ण भारत की मर्यादा के प्रतीक थे और पूर्व में पश्चिम में निरन्तर घूमते रहते थे तत्कालीन पत्रों और प्रबन्धों में यह सभी प्रतिफलित हुआ है। अलावा इसके हम उन्हें इसी समय गद्यशैली को लेकर अथक परीक्षा में लगा हुआ देखते हैं उनके जीवन के अंतिम बीस वर्षों के गद्य में जितनी नवीन से भी नवीन भंगिमा दिखाई पड़ती है उसकी तुलना में उसके पहले के चालीस वर्षों की रचना में प्रायः कुछ भी नहीं है; यों तो उन्होंने चलतू भाषा को मन-ही-मन पहले ही स्वीकार कर लिया था पर गद्यशिल्प में उसकी सचेतन परीक्षा का आरम्भ

'लिपिका' से ही हुआ। जो किसी प्रकार पद्य नहीं है, गद्य और पद्य के बीच की लस्टम-पस्टम स्थिति भी जिसकी नहीं है, जो नितांत गद्य है और निश्चय-पूर्वक छन्द से स्पर्धित है, इस प्रकार की रचनाएँ उनके शेष जीवन की प्रधान देन हैं। 'लिपिका' से जी नहीं भरा तो उन्होंने 'पुनश्च' लिखा; उसके बाद तीन नृत्यनाटकों में गद्यकविता का नया रूपकल्प दिया; 'शेषेर कविता' से लेकर 'मालंच' तक उपन्यास लिखे; और सबके अंत में 'छेलेबेला', 'सहज पाठ', 'गल्प सल्प' लिखे। ये सब समान मूल्य की रचनाएँ नहीं हैं, और न मैं यही कहना चहता हूँ कि समग्र विचार से रचनाओं की यह श्रृँखला पहले की रचनाओं से उत्कृष्ट है; किन्तु इसमें संदेह नहीं कि इस रचनाधारा में से गद्य-शिल्प का एक उत्तरोत्तर आगे बढ़ता हुआ चित्र-विचित्र विकास सम्भव हुआ है; विशेष अर्थ में जिसको हम आधुनिक कह सकते हैं ऐसे बंगला गद्य के ये प्रवर्त्तक और विवर्त्तक हैं। गद्य के प्रति वृद्ध कवि के इस गहरे मनोयोग का एक कारण निश्चय ही यह है कि साधु भाषा की तुलना में चलतू भाषा कहीं ज्यादा लचीली होती है, उसमें खेल-खिलवाड़ और शैली के वैविध्य का जो अवकाश है उसको रवीन्द्रनाथ के कान और मन ने अचूक ढंग से पकड़ा था; और जिस प्रकार उन्होंने यौवन में बंगला पद्य के प्रत्येक संभव छंद को प्रतिष्ठित किया था उसी प्रकार प्रौढ़ जीवन में गद्य की ध्वनि-माधुरी को नाना रूपों में उद्‌भावित किये बिना वे नहीं रह सके। दूसरा कारण संभवतः यह है कि वे भीतर-ही-भीतर क्लांत हो गए थे; कहने के लिए अब और कुछ न था इसलिए स्टाइल ही उनका अवलम्ब हो उठा। तीन नृत्यनाटकों में दो की कहानी के अंश उनकी अपनी पहले की रचनाओं से लिये गए हैं; 'छेलेबेला' का नया कोई उपादान नहीं है; 'राजा औ रानी' का रूपान्तर हुआ 'तपती'; 'राजा' का रूपान्तर हुआ 'शापमोचन'; 'एकटि आषाढ़े गल्प' का रूपान्तर हुआ 'ताशेर देश' और 'पुजारिनी' कविता का रूपान्तर हुआ 'नटीर पूजा'। नृत्य, संगीत और अभिनय के चित्ताकर्षण से अलग करके देखने पर भी, केवल पठनीय पुस्तक के रूप में, इस सब पुनर्लेखन के महत्त्व को जो अस्वीकार नहीं किया जा सकता उसका कारण इनकी गद्यशैली की कारीगरी ही है।

इस काल के भ्रमण-ग्रन्थों क लक्षण यह है कि रवीन्द्रनाथ कभी भूल नहीं पाते कि वे रवीन्द्रनाथ हैं, 'काले लोगों' का भार उठाये हुए दुनिया में निकले हैं। जिस प्रकार एक समय उन्होंने सारी इंद्रियों से बंगाल और इंगलैण्ड को हृदयंगम किया था, जापान, रूस या दक्षिण अमेरिका के साथ उनका व्यवहार अब वैसा नहीं है; उनकी आँखें अब तथ्य नहीं देखतीं, घ्राणेन्द्रिय केवल पूर्व

परिचित जुही के फूल से आंदोलित होती है ; नये देश के किसी दृश्य या वातावरण की सृष्टि अब वे हमारे लिए नहीं करते। वे स्वदेश के साथ अन्य देशों की तुलना में लगे हुए हैं ; स्वदेश की श्रीवृद्धि की चिन्ता से उनका मन आच्छन्न है ; विचार, वितर्क और विश्लेषण में वे यहाँ तक लगे हुए हैं कि 'राशियार चिठि' प्रायः एक राजनैतिक निबन्ध हो उठा है। तो भी प्रत्येक पुस्तक में गद्य इतना वेगवान और दीप्तिपूर्ण है कि उसका प्रभाव तत्त्व के मूल्य को छा लेता है ; सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक कारणों से जो पठनीय है वह शिल्पगुण से स्मरणीय हो उठता है। मेरी इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण 'यात्री' है ; उसकी भावगंभीर स्वगतोक्ति में ज्ञान की जो बात है वह दूसरा लेखक भी सुना सकता था किन्तु सुन्दर के सामीप्य से जो आनंद मिलता है वह रवीन्द्रनाथ की ही अपनी देन है। और विषय को अलग करके केवल भाषा के ऊपर अधिकार से कितनी दूर तक रमणीय रचना की जा सकती है इसका दृष्टांत 'भानुसिंहेर पत्रावली' है ; पत्र पाने वाली बालिका से कहने के लिए रवीन्द्रनाथ के पास कुछ नहीं है, बस खिलवाड़ के बहाने वे उस लड़की के उपयोग का एक ताना-बाना बुनते चले जा रहे हैं और फलतः जो चीज सामने आती है वह सबके लिए उपभोग्य होती है। इसको एक प्रकार का विशुद्ध साहित्य कहना गलत न होगा।

मृत्यु के पहले रवीन्द्रनाथ अपनी रचनाओं के स्थायित्व के विषय में संशयालु हो उठे थे। रोग और जरा ने उनके मन को उस समय दुर्बल कर दिया था, उनकी भाषा के तरुण लेखक अ-रावीन्द्रिक पथ पर अग्रसर हो रहे थे, सद्यःजात मार्क्सवाद के प्रभाव में उन्हें ऐसे कई अपवाद सुनने पड़ रहे थे जो बिलकुल असाहित्यिक और अवान्तर थे। यह सोचकर पीड़ा होती है कि वे, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, इस सबसे दुखी थे ; विरुद्ध मत का उत्तर देने का सुयोग उन्होंने खोया नहीं था, यहाँ तक कि तरुण लेखकों के प्रति व्यंगोक्ति भी उनके परिहास का अंग बन गई थी। विशेषतः अपनी आयु के अंतिम वर्ष में उन्होंने अपनी रचना के विषय में निरन्तर कुछ-न-कुछ कहा है—जैसा कि इसके पहले कभी नहीं कहा था ; उसके अनेक अंश श्रुतिलिखित प्रबन्धों के रूप में या विभिन्न लेखकों की स्मृति-कथा में आ गए हैं। उन्होंने बार-बार अपनी छोटी कहानियों की बात कही है—जिनको किसी समालोचक ने 'गीतिधर्मी' कह दिया तो उनको पीड़ा हुई ; अपने चित्रों के विषय में रह-रहकर मुखर हो उठे हैं ; उन्होंने लंदन में रोथेन्सटाइन के घर की उस संध्या को याद किया है जब येट्स ने उनकी अंग्रेजी 'गीतांजलि' की पाण्डुलिपि पढ़ी थी। वे 'चौदह अक्षर

मिला सकते हैं, यह उन्होंने हँसते-हँसते हमें याद दिला दिया है ; और अंत में कहा है, 'बंगाल के लोगों को मेरे गीत गाने ही होंगे ; और कुछ न भी रहे तो भी मेरे गीत रहेंगे।' लेकिन बहुत-कुछ कहने पर भी उन्होंने अपने गद्य के विषय में कुछ नहीं कहा ; क्या ऐसा हो सकता है कि उनके अपने मन में भी यह बात नहीं आई कि उनके प्रसंग में वह भी आलोच्य है ? सच है जिन्होंने कवि की संज्ञा को अपने प्राप्य रूप में जाना है उनके लिए चाहने को फिर और कुछ नहीं रह जाता, उसी एक बात में सब बात हो जाती है ; लेकिन उनके गद्य के स्वतंत्र अधिकार की उपेक्षा करना असंभव है। आज के दिन, उनकी मृत्यु के बीस बरस बाद यह बात सहज ही कही जा सकती है कि अपने गीतों के विषय में उनकी भविष्यवाणी सफल हुई है शायद आशा से भी अधिक ; रेकार्ड, रेडियो और सिनेमा के विपुल प्रचार के फलस्वरूप बंगाल में आज प्रायः कोई ऐसा नहीं है जो उनके गीतों की दो-चार कड़ियाँ नहीं जानता, लेकिन अनेक हैं जो उनको उसके अलावा और किसी रूप में नहीं जानते। शिक्षित तरुण भी उनके गीतों से जितने मोहित हैं, उनकी पठनीय रचनाओं से उतने परिचित नहीं हैं ; ऐसे युवक आज बहुत कम हैं जिन्होंने उनका प्रत्येक काव्यग्रन्थ पढ़ा हो ; और इस बात को लेकर आक्षेप करना भी व्यर्थ है, क्योंकि युगधर्म के आगे हार माननी ही पड़ती है, अतः रवीन्द्रनाथ के 'प्रत्यावर्तन' की प्रतीक्षा करने के अलावा दूसरी गति नहीं है। उसी दिन को ध्यान में रखकर मैं कह देना चाहता हूँ कि जब कोई भावी पाठक यत्नपूर्वक रवीन्द्रनाथ की समग्र गद्यरचना को पढ़ेगा तब उसकी यह निश्चित धारणा होगी कि वे गद्यशिल्प में बंगला भाषा के श्रेष्ठ पुरुष हैं और विश्व-साहित्य में भी उनका ऊँचा स्थान है। हम किसी-किसी विदेशी लेखक की बात सोच सकते हैं जिसने उनसे अच्छे नाटक, उनसे अच्छे उपन्यास या प्रबन्ध लिखे हैं या जिनका गद्य और भी तीव्र या गहरा है ; किन्तु गद्यशिल्प का ऐसा ऐश्वर्य, ऐसा विचित्र वैभव और किसी की रचना में प्रकट हुआ है या नहीं, इसमें संदेह है। एक कवि के विषय में यह बात सुनने में बहुत अनोखी लगती है पर रवीन्द्रनाथ अगर अपरिमेय रूप में प्रतिभावान थे तो यह उनका अपराध तो नहीं है।

बुद्धदेव बसु

सूची-पत्र

चतुर्थ खण्ड : भाषा ओ साहित्य

पञ्चम खण्ड : साहित्येर पथे

षष्ठ खण्ड : साहित्येर स्वरूप

सप्तम खण्ड : प्राचीन साहित्य

अष्टम खण्ड : लोक साहित्य

नवम खण्ड : आधुनिक साहित्य

दशम खण्ड : विचित्र प्रबन्ध

एकादश खण्ड : पंचभूत

अवतरणिका

य संसारे प्रथम चोख मेलेछिलुम से छिल अति निभृत। शहरेर बाइरे शहरतलिर मतो, चारिदिके प्रतिवेशीर घरबाड़िते कलरवे आकाशटाके आँट करे बाँधेनि।

आमादेर परिवार आमार जन्मेर पूर्वेइ समाजेर नोङर तुले दूरे बाँधा-घाटेर बाइरे एसे भिड़ेछिल। आचार-अनुशासन क्रियाकर्म सेखाने समस्तइ विरल।

आमादेर छिल मस्त एकटा साबेक कालेर बाड़ि, तार छिल गोटाकतक भाङा ढाल बर्शा ओ मरचे-पाड़ा तलोयार-खाटानो देउड़ि, ठाकुरदालान, तिन-चारटे उठोन, सदर-अन्दरेर बागान, संवत्सरेर गङ्गाजल धरे राखबार मोटा मोटा जाला-साजानो अन्धकार घर। पूर्वयुगेर नाना पालपार्वणेर पर्याय नाना कलरवे साजे सज्जाय तार मध्य दिये एकदिन चलाचल करेछिल, आमि तार स्मृतिरओ बाइरे पड़े गेछि। आमि एसेछि यखन, ए बासाय तखन पुरातन काल सद्य बिदाय नियेछे, नतुन काल सबे एसे नामल, तार आसबाबपत्र तखनओ एसे पौंछयनि।

ए बाड़ि थेके ए-देशीय सामाजिक जीवनेर स्रोत येमन सरे गेछे तेमनि पूर्वतन धनेर स्रोतेओ पड़ेछे भाँटा। पितामहेर ऐश्वर्यदीपावली नाना शिखाय एकदा एखाने दीप्यमान-छिल, सेदिन बाकि छिल दहन-शेषेर कालो दागगुलो, आर छाइ, आर एकटिमात्र कम्पमान क्षीण शिखा। प्रचुर उपकरणसमाकीर्ण पूर्वकालेर आमोद-प्रमोद-विलाससमारोहेर सरञ्जाम कोणे कोणे धूलिमलिन जीर्ण अवस्थाय किछु-किछु बाकि यदि बा थाके तादेर कोनो अर्थ नेइ। आमि धनेर मध्ये जन्माइनि, धनेर स्मृतिर मध्येओ ना।

निरालाय एइ परिवारे ये स्वातन्त्र्य जेगे उठेछिल से स्वाभाविक, महादेश थेके दूरविच्छिन्न द्वीपेर गाछपाला जीवजन्तुरइ स्वातन्त्र्येर मतो। ताइ आमादेर भाषाय एकटा किछु भङ्गी छिल कलकातार लोक याके इशारा करे बलत ठाकुरबाड़िर भाषा। पुरुष ओ मेयेदेर वेशभूषातेओ ताइ, चालचलनेओ।

बांला भाषाटाके तखन शिक्षितसमाज अन्दरे मेयेमहले ठेले रेखेछिलेन, सदरे व्यवहार हत इंरेजि, चिठिपत्रे लेखापड़ाय एमन कि मुखेर कथाय। आमादेर बाड़िते एइ विकृति घटते पारेनि। सेखाने बांला भाषार प्रति अनुराग छिल सुगभीर, तार व्यवहार छिल सकल काजेइ।

आमादेर बाड़िते आर एकटि समावेश हयेछिल सेटि उल्लेखयोग। उप-निषदेर भितर दिये प्राक्पौराणिक युगेर भारतेर सङ्गे एइ परिवारे छिल घनिष्ट सम्बन्ध। अति बाल्यकालेइ प्राय प्रतिदिनइ विशुद्ध उच्चारणे अनर्गल आवृत्ति करेछि उपनिषदेर श्लोक। एर थेके बुझते पारा याबे साधारणत बांलादेशे धर्मसाधनाय ये उद्वेलता आछे आमादेर बाड़िते ता प्रवेश करेनि। पितृदेवेर प्रवर्तित उपासना छिल शान्त समाहित।

एइ येमन एकदिके तेमनि अन्यदिके आमार गुरुजनदेर मध्ये इंरेजि साहित्येर आनन्द छिल निविड़। तखन बाड़िर हाओया शेक्स्पीयरेर नाट्यरस-सम्भोगे आन्दोलित, सार ओअल्टार स्कटेर प्रभावओ प्रबल। देशप्रीतिर उन्मादना तखन देशे कोथाओ नेइ। रङ्गलालेर "स्वाधीनताहीनताय के बाँचिते चाय रे" आर तार परे हेमचन्द्रेर "विंशति कोटि मानवेर बास" कविताय देशमुक्ति-कामनार सुर भोरेर पाखिर काकलिर मतो शोना याय। हिन्दुमेलार परामर्श ओ आयोजने आमादेर बाड़िर सकले तखन उत्साहित, तार प्रधान कर्मकर्ता छिलेन नवगोपाल मित्र। एइ मेलार गान छिल मजेदादार लेखा "जय भारतेर जय", गणदादार लेखा "लज्जाय भारत-यश गाइब की करे", बड़दादार "मलिन मुखचन्द्रमा भारत तोमारि।" ज्योतिदादा एक गुप्तसभा स्थापन करेछेन, एकटि पोड़ो बाड़िते तार अधिवेशन, ऋग्वेदेर पुंथि, मड़ार माथार खुलि आर खोला तलोयार निये तार अनुष्ठान, राजनारायण बसु तार पुरोहित ; सेखाने आमरा भारत-उद्धारेर दीक्षा पेलेम।

एइ सकल आकांक्षा उत्साह उद्योग एर किछुइ ठेलाठेलि भिड़ेर मध्ये नय। शान्त अवकाशेर भितर दिये धीरे-धीरे एर प्रभाव आमादेर अन्तरे प्रवेश करेछिल। राज-सरकारेर कोतोयाल हय तखन सतर्क छिल ना, नय उदासीन छिल, तारा सभार सभ्यदेर माथार खुलि भङ्ग बा रसभङ्ग करते आसेनि।

कलकाता शहरेर वक्ष तखन पाथरे बाँधानो हयनि, अनेकखानि कांचा छिल। तेल-कलेर धोंयाय आकाशेर मुखे तखनओ कालि पड़ेनि। इमारत-अरण्येर फांकाय-फाँकाय पुकुरेर जलेर उपर सूर्येर आलो झिकिये येत, विकेलबेलाय अशथेर छाया दीर्घतर हये पड़त, हाओयाय दुलत नारकेल गाछेर पत्र-झालर, बाँधा नाला बेये गङ्गार जल झरनार मतो झरे पड़त आमादेर दक्षिण बागानेर पुकुरे, माझेमाझे गलि थेके पालकि-बेहारार हाँइहुँइ शब्द आसत काने, आर बड़ो रास्ता थेके सहिसेर हेइओ हाँक। सन्ध्याबेलाय ज्वलत तेलेर प्रदीप, तारइ क्षीण आलोय मादुर पेते बुड़ी दासीर काछे शुनतुम रूपकथा। एइ निस्तब्धप्राय जगतेर मध्ये आमि छिलुम एक कोणेर मानुष, लाजुक, नीरव, निश्चञ्चल।

आरओ एकटा कारणे आमाके खापछाड़ा करेछिल। आमि इस्कुलपालानो छेले, परीक्षा दिइनि, पास करिनि, मास्टर आमार भावी कालेर सम्बन्धे हताश्वास। इस्कुलघरेर बाइरे ये अवकाशटा बाधाहीन, सेइखाने आमार मन हाघरेदेर मतो बेरिये पड़ेछिल।

इतिपूर्वेइ कोन् एकटा भरसा पेये हठात् आविष्कार करेछिलुम, लोक याके बले कविता सेइ छन्द-मेलानो मिल-करा छड़ागुलो साधारण कलम दियेइ साधारण लोके लिखे थाके। तखन दिनओ एमन छिल, छड़ा यारा बानाते पारत तादेर देखे लोक विस्मित हत। एखन यारा ना पारे ताराइ असाधारण बले गण्य। पयार त्रिपदी महले आपन अबाध अधिकारबोधेर अक्लान्त उत्साहे लेखाय मातलुम। आट अक्षर दश अक्षरेर चौको-चौको कत रकम शब्दभाग निये चलल घरेर कोणे आमार छन्द-भाङागड़ार खेला। क्रमे प्रकाश पेल दशजनेर सामने।

एइ लेखागुलि येमनि होक एर पिछने एकटि भूमिका आछे—से हच्छे एकटि बालक, से कुनो, से एकला, से एकघरे, तार खेला निजेर मने। से छिल समाजेर शासनेर अतीत, इस्कुलेर शासनेर बाइरे। बाड़िर शासनओ तार हालका। पितृदेव छिलेन हिमालये, बाड़िते दादारा छिलेन कर्तृपक्ष। ज्योतिदादा, याँके आमि सकलेर चेये मानतुम, बाइरे थेके तिनि आमाके कोनो बाँधन परानिन। ताँर सङ्गे तर्क करेछि, नाना विषये आलोचना करेछि वयस्येर मतो। तिनि बालककेओ श्रद्धा करते जानतेन। आमार आपन मनेर स्वाधीनतार द्वाराइ तिनि आमार चित्तविकाशेर सहायता करेछेन। तिनि आमार 'परे कर्तृत्व करबार औत्सुक्ये यदि दौरात्म्य करतेन ताइले भेङे-चुरे तेड़े-बेंके या-हय एकटा किछु हतुम, सेटा हयतो भद्रसमाजेर सन्तोषजनकओ हत, किन्तु आमार मतो एके-बारेइ हत ना।

शुरु हल आमार भाङाछन्दे टुकरो काव्येर पाला, उल्कावृष्टिर मतो; बालकेर या-ता भावेर एलोमेलो काँचा गाँथुनि। एइ रीतिभङ्गेर झोंकटा छिल सेइ एकघरे छेलेर मज्जागत। एते यथेष्ट विपदेर शङ्का छिल। किन्तु एखानेओ अपघात थेके रक्षा पेये गेछि। तार कारण आमार भाग्यक्रमे सेकाले बांला साहित्ये ख्यातिर हाटे भिड़ छिल अति सामान्य—प्रतियोगितार उत्तेजना उत्तप्त हये ओठेनि। विचारकेर दण्ड थेके अप्रशंसार अप्रिय आघात नामत, किन्तु कटूक्ति ओ कुत्सार उत्तेजना तखनओ साहित्ये झाँझिये ओठेनि।

सेदिनकार अल्पसंख्यक साहित्यिकेर मध्ये आमि छिलेम वयसे सबचेये छोटो, शिक्षाय सब-चेये काँचा। आमार छन्दगुलि लागाम-छेंड़ा, लेखबार विषय छिल अस्फुट उक्तिते झापसा, भाषार ओ भावेर अपरिणति पदे पदे। तखनकार साहि-त्यिकेरा मुखेर कथाय बा लेखाय प्रायइ आमाके प्रश्रय देननि—आधो-आधो

बाधो-बाधो कथा निये बेश एकटु हेसेछिलेन। से हासि विदूषकेर नय, सेटा विदूषण-व्यवसायेर अङ्ग छिल ना। ताँदेर लेखाय शासन छिल, असौजन्य छिल ना लेशमात्र। विमुखता येखाने प्रकाश पेयेछे सेखानेओ विद्वेष देखा देयनि। ताइ प्रश्रयेर अभाव सत्त्वेओ विरुद्ध रीतिर मध्य दियेओ आपन लेखा आपन मते गड़े तुलेछिलाम।

सेदिनकार ख्यातिहीनतार स्निग्ध प्रथम प्रहर केटे गेल। प्रकृतिर शुश्रषा ओ आत्मीयदेर स्नेहेर घनच्छायाय छिलेम बसे। कखनो काटियेछि तेतालार छादेर प्रान्ते कर्महीन अवकाशे मने मने आकाशकुसुमेर माया गेंथे, कखनो गाजिपुरेर वृद्ध निमगाछेर तलाय बसे इंदारार जले बागान सेंच देबार करुणध्वनि शुनते-शुनते अदूर गङ्गार स्रोते कल्पनाके अहेतुक वेदनाय बोझाइ करे दूरे भासिये दिये। निजेर मनेर आलो——आँधारेर मध्ये थेके हठात् परेर मनेर कनुइयेर धाक्का खाबार जन्ये बड़ो रास्ताय बेरिये पड़ते हबे, एमन कथा सेदिन भाबिओनि। अवशेषे एकदिन ख्याति एसे अनावृत मध्याह्नरौद्रे टेने बेर करले। ताप क्रमेइ बेड़े उठल, आमार कोणेर आश्रय एकेबारे भेङे गेल। ख्यातिर सङ्गे सङ्गे ये ग्लानि एसे पड़े आमार भाग्ये अन्यदेर चेये ता अनेक बेशि आबिल हये उठेछिल। एमन अनवरत एमन अकुण्ठित, एमन अकरुण, एमन अप्रतिहत असम्मानना आमार मतो आर, कोनो साहित्यिककेइ सइते हयनि। एओ आमार ख्याति परिमापेर बृहत् माप-काठि। ए-कथा बलबार सुयोग पेयेछि ये, प्रतिकूल परीक्षाय भाग्य आमाके लाञ्छित करेछे, किन्तु पराभवेर अगौरवे लज्जित करेनि। ए छाड़ा आमार दुर्ग्रह कालो वर्णेर एइ ये पटटि झुलियेछेन एरइ उपरे आमार बन्धुदेर सुप्रसन्न मुख समुज्ज्वल हये उठेछे। ताँदेर संख्या अल्प नय, से-कथा बुझते पारि आजकेर एइ अनुष्ठानेइ। बन्धुदेर काउके जानि, अनेककेइ जानिने, ताँराइ केउ काछे थेके केउ दूरे थेके एइ उत्सवे मिलित हयेछेन, सेइ उत्साहे आमार मन आनन्दित। आज आमार मने हच्छे ताँरा आमाके जाहाजे तुल दिते घाटे एसे दाँड़ियेछेन—आमार खेयातरी पाड़ि देब दिवालोकेर परपारे ताँदेर मङ्गलध्वनि काने निये।

आमार कर्मपथेर यात्रा सत्तर बछरेर गोधूलिबेलाय एकटा उपसंहारे एसे पौंछल। आलो म्लान हबार शेष मुहूर्ते एइ जयन्ती अनुष्ठानेर द्वारा देश आमार दीर्घजीवनेर मूल्य स्वीकार करबेन।

फसल यतदिन माठे ततदिन संशय थेके याय। बुद्धिमान महाजन खेतेर दिके ताकियेइ आगाम दादन दिते द्विधा करे, अनेकटा हाते रेखे देय। यखन गोलाय उठल तखनइ ओजन बुझे दामेर कथा पाका हते पारे। आज आमार बुझि सेइ फ़लन-शेषेर हिसाब चुकिये देबार दिन।

ये-मानुष अनेक काल बेंचे आछे से अतीतेरइ शामिल। बुझते पारछि आमार साबेक वर्तमान एइ हाल वर्तमान थेके बेश खानिकटा तफाते। ये-सब कवि पाला शेष करे लोकान्तरे, ताँदेरइ आङिनार काछटाय आमि एसे दाँड़ियेछि तिरोभावेर ठिक पूर्व-सीमानाय। वर्तमाने चलति रथेर वेगेर मुखे काउके देखे नेबार ये अस्पष्टता सेटा आमार बेला एतदिन केटे याबार कथा। यतखानि दूरे एले कल्पनार क्यामेराय मानुषेर जीवनटाके समग्रलक्ष्यवद्ध करा याय आधुनिकेर पुरोभाग थेके आमि ततटा दूरेइ एसेछि।

पञ्चाशेर परे वानप्रस्थेर प्रस्ताव मनु करेछेन। तार कारण मनुर हिसाब-मतो पञ्चाशेर परे मानुष वर्तमानेर थेके पिछिये पड़े। तखन कोमर बेंधे धावमान कालेर सङ्गे समान झोंके पा फेले चलार वेगे यतटा क्लान्ति ततटा सफलता थाके ना, यतटा क्षय ततटा पूरण हय ना। अतएव तखन थेके स्वतःप्रवृत्त हये ताके सेइ सर्वकालेर मोहानार दिके यात्रा करते हबे येखाने काल स्तब्ध। गतिर साधना शेष करे तखन स्थितिर साधना।

मनु ये मेयाद ठिक करे दियेछेन एखन सेटाके घड़ि धरे खाटानो प्राय असाध्य। मनुर युगे निश्चयइ जीवने एत दाय छिल ना, तार ग्रन्थि छिल कम। एखन शिक्षा बल, कर्म बल, एमन कि आमोदप्रमोद खेलाधुला, समस्तइ बहुव्यापक। तखन-कार सम्राटेरओ रथ यत बड़ो यत जमकालो होक, एखनकार रेलगाड़िर मतो ताते बहु गाड़िर एमन द्वन्द्वसमास छिल ना। एइ गाड़िर माल खलास करते बेश एकटु समय लागे। पाँचटाय आपिसे छुटि शास्त्रनिर्दिष्ट बटे, किन्तु खातापत्र बन्ध करे दीर्घनिश्वास फेले बाड़िमुखो हबार आगेइ बाति ज्वालते हय। आमादेर सेइ दशा। ताइ पञ्चाशेर मेयाद बाड़िये ना निले छुटि मञ्जुर असम्भव। किन्तु सत्तरेर कोठाय पड़ले आर ओजर चले ना। बाइरेर लक्षणे बुझते पारछि आमार समय चलल आमाके छाड़िये—कम करे धरलेओ अन्तत दश बछर आगेकार तारिखे आमि बसे आछि। दूरेर नक्षत्रेर आलोर मतो, अर्थात् से यखनकार से तखनकार नय।

तबु एकेबारे थामबार आगे चलार झोंके अतीत कालेर खानिकटा धाक्का एसे पड़े वर्तमानेर उपरे। गान समस्तटाइ शमे एसे पौंछले तार समाप्ति; तबु आरओ किछुक्षण फरमाश चले पालटिये गाबार जन्ये। सेटा अतीतेरइ पुनरावृत्ति। एर परे बड़ोजोर दुटो-एकटा तान लागानो चले, किन्तु चुप करे गेलेओ लोकसान नेइ। पुनरावृत्तिके दीर्घकाल ताजा राखबार चेष्टाओ या आर कइमाछटाके डाङाय तुले मासखनेक बाँचिये राखबार चेष्टाओ ताइ।

एइ माछटार सङ्गे कविर तुलना आरओ एकटु एगिये नेओया याक। माछ

यतक्षण जले आछे ओके किछु किछु खोराक जोगानो सत्कर्म, सेटा माछेर निजेर प्रयोजने। परे यखन ताके डाङाय तोला हल तखन प्रयोजनटा तार नय, अपर कोनो जीवेर। तेमनि कवि यतदिन ना एकटा स्पष्ट परिणतिते पौंछय ततदिन ताके किछु किछु उत्साह दिते पारले भलोइ––सेटा कविर निजेरइ प्रयोजन। तार परे तार पूर्णताय यखन एकटा समाप्तिर यति आसे तखन तार सम्बन्धे यदि कोनो प्रयोजन थाके सेटा तार निजेर नय, प्रयोजन तार देशेर।

देश मानुषेर सृष्टि। देश मृण्मय नय, से चिन्मय। मानुष यदि प्रकाशमान हय तबेइ देश प्रकाशित। सुजला सुफला मलयजशीतला भूमिर कथा यतइ उच्चकण्ठे रटाव ततइ जबावदिहिर दाय बाड़बे। प्रश्न उठबे प्राकृतिक दान ता उपादान मात्र, ता निये मानविक सम्पद कतटा गड़े तोला हल। मानुषेर हाते देशेर जल यदि याय शुकिये, फल यदि याय मरे, मलयज यदि विषिये ओठे मारी बीजे, शस्येर जमि यदि हय बन्ध्या, तबे काव्यकथाय देशेर लज्जा चापा पड़बे ना। देश माटिते तैरि नय, देश मानुषे तरि।

ताइ देश निजेर सत्ता प्रमाणेरइ खातिरे अहरह ताकिये आछे तादेरइ जन्ये यारा कोनो साधनाय सार्थक। तारा ना थाकलेओ गाछपाला जीवजन्तु जन्माय, वृष्टि पड़े, नदी चले किन्तु देश आच्छन्न थाके मरुबालुतले भूमिर मतो।

एइ कारणेइ देश यार मध्ये आपन भाषावान प्रकाश अनुभव करे ताके सर्वजन-समक्षे निजेर ब'ले चिन्हित करबार उपलक्ष रचना करते चाय। येदिन ताइ करे, से दिन कोनो मानुषके आनन्देर सङ्गे से अङ्गीकार करे, सेदिनइ माटिर कोल थेके देशेर कोले सेइ मानुषेर जन्म।

आमार जीवनेर समाप्तिदशाय एइ जयन्ती अनुष्ठानेर यदि कोनो सत्य थाके तबे ता एइ तात्पर्य निये। आमाके ग्रहण करार द्वारा देश यदि कोनो भावे निजेके लाभ ना करे थाके तबे आजकेर एइ उत्सव अर्थहीन। यदि केउ ए-कथाय अहंकारेर आशङ्का क'रे आमार जन्य उद्विग्न हन तबे ताँदेर उद्वेग अनावश्यक। ये ख्यातिर सम्बल अल्प तार समारोह यतइ बेशि हय, ततइ तार देउले हओया द्रुत घटे। भुल मस्त हयेइ देखा याय, चुके याय अति क्षुद्र हये। आतशबाजिर अभ्रविदारक आलोटाइ तार निर्वाणेर उज्ज्वल तर्जनी—सङ्केत।

ए-कथाय सन्देह नेइ ये, पुरस्कारेर पात्र निर्वाचने देश भुल करते पारे। साहित्येर इतिहासे क्षणमुखरा ख्याति मौनसाधना बार-बार देखा गेछे। ताइ आजकेर दिनेर आयोजने आजइ अतिशय उल्लास येन ना करि, एइ उपदेशेर विरुद्धे युक्ति चलेना। तेमनि ता निये एखनइ ताड़ाताड़ि विमर्ष हबारओ आशु कारण देखि ना। काले काले साहित्यविचारेर राय एकबार उलटिये आबार पालटियेओ

थाके। अव्यवस्थितचित मन्दगति कालेरे सबशेष विचारे आमार भाग्ये यदि निःशेषे फाँकिइ थाके तबे एखनइ आगाम शोचना करते बसा किछु नय। एखनकार मतो एइ उपस्थित अनुष्ठानटाइ नगद लाभ। तार परे चरम जबाबदिहिरजन्ये प्रपौत्रेरा रइलेन। आपातत बन्धुदेर निये आश्वस्तचित्ते आनन्द करा याक, अपर पक्षे याँदेर अभिरुचि हय, ताँरा फुत्कारे बुद्बुद विदीर्ण करार उत्साहे आनन्द करते पारेन। एइ दुइ विपरीत भावेर कालोय सादाय संसारे आनन्द धाराय यमेर भग्नी यमुना ओ शिवजटानिःसृता गङ्गा मिले थाके। मयूर आपन पुच्छ-गर्बे नृत्य करे खुशि, आबार शिकारि आपन लक्ष्यवेधगर्बे ताके गुलि करे महा आनन्दित।

आधुनिक काले पाश्चात्य देशे साहित्ये कलासृष्टिते लोकचित्तेर सम्मति अति घन घन बदल हय, एटा देखा याच्छे। वेग बेड़े चलेछे मानुषेर याने-वाहने, वेग अविश्राम ठेला दिच्छे मानुषेर मनप्राणके।

येखाने वैषयिक प्रतियोगिता उग्र सेखाने एइ वेगेर मूल्य बेशि। भाग्यर छविर लुट निये हाटेर भिड़ धुलार 'परे येखाने सकले मिले काड़ाकाड़ि, सेखान ये-मानुष वेगे जेते सालेओ तार जित। तृप्तिहीन लोभेर वाहन विरामहीन वेग। समस्त पश्चिम मातालेर मतो टलमल करछे सेइ लोभे। सेखाने वेगवृद्धि क्रमे लाभेर उपलक्ष्य ना हये स्वयं लक्ष्य हये उठेछे। वेगेरइ लोभ आज जले स्थले आकाशे हिष्टिरियार चीत्कार करते करते छुटे बेरोल।

किन्तु प्राणपदार्थ तो वाष्प-विद्युतेर भूते ताड़ा करा लोहार एञ्जिन नय। तार एकटि आपन छन्द आछे। सेइ छन्दे दुइ-एक मात्रा टान सय, तार बेशि नय। मिनिट कयेक डिगबाजि खेये चला साध्य हते पारे किन्तु दश मिनिट येते-ना-येते प्रमाण हबे ये मानुष बाइसिकेलेर चाका नय, तार पदातिकेर चाल पदावलीर छन्दे। गानेर लय मिष्टि लागे यखन से कानेर सजीव छन्द मेने चले। ताके दुनु थेके चौदुने चड़ाले से कलादेह छेड़े कौशलदेह नेबार जन्यइ हाँसफाँस करते थाके। तागिद यदि आरओ बाड़ाओ ता हले रागिणीटा पागला-गारदेर सदर-गेटेर उपर माथा ठुके मारा याबे। सजीव चोख तो क्यामेरा नय, भालो करे देखे निते से समय नेय। घण्टाय बिश-पँचिश माइल दौड़ेर देखा तार पक्षे कुयाशा देखा। एकदा तीर्थयात्रा बले एकटा सजीव पदार्थ आमादेर देशे छिल। भ्रमणेर पूर्णस्वाद निये सेटा सम्पन्न हत। कलेर गाड़िर आमले तीर्थ रइल यात्रा रइल ना, भ्रमण नेइ पौंछनो आछे, शिक्षाटा बाद दिये परीक्षाटा पास करा याके बले। रेल-कोम्पानिर कारखानाय कले ठासा तीर्थयात्रार भिन्न-भिन्न दामेर वटिका साजानो, गिले फेल-लेइ हल—किन्तु हलइ ना ये से-कथा बोझबारओ फुरसत नेइ। कालिदासेर यक्ष

यदि मेघदूतके बरखास्त करे दिये एरोप्लेन-दूतके अलकाय पाठातेन ता हले अमन दुइ-सर्गभरा मन्दाक्रान्ता छन्द दु-चारटे श्लोक पार ना हइते अपघाते मरत। कलेठासा विरह तो आज पर्यन्त बाजारे नामेनि।

मेघदूतेर सेइ शोकावह परिणामे शोक करबे ना एमनतरो बलवान पुरुष आजकाल देखते पाओया याच्छे। केउ केउ बलछेन, एखन कवितार ये आओयाजटा शोना याच्छे से नाभिश्वासेर आओयाज। ओर समय हये एल। यदि ता सत्य हय तबे सेटा कवितार दोषे नय समयेर दोषे। मानुषेर प्राणटा चिरदिनइ छन्दे-बाँधा, किन्तु तार कालटा कलेर ताड़ाय सम्प्रति छन्द-भाङा।

आंङुरेर खेते चाषि काठि पुंते देय, तारइ उपर आङुर लतिये उठे आश्रय पाय, फल धराय। तेमनि जीवनयात्राके सबल ओ सफल करबार जन्ये कतकगुलि रीतिनीति बेंधे दिते हय। एइ रीतिनीति अनेकगुलिइ निर्जीव नीरस, उपदेश-अनुशासनेर खुंटि। किन्तु बेड़ाय लागानो जियलकाठेर खुंटि येमन रस पेलेइ बेंचे ओठे तेमनि जीवनयात्रा यखन प्राणेर छन्दे शान्तगमने चले तखन शुकनो खुँटिगुलो अन्तरेर गभीरे पौंछबार अवकाश पेये क्रमेइ प्राण पेते थाके। सेइ गभीरेइ सञ्जीवनरस। सेइ रसे तत्त्व ओ नीतिर मतो पदार्थओ हृदयेर आपन सामग्रीरूपे सजीव ओ सज्जित हये ओठे, मानुषेर आनन्देर रं ताते लागे। एइ आनन्देर प्रकाशेर मध्येइ चिरन्तनता। एकदिनेर नीतिके आर-एकदिन आमरा ग्रहण नाओ करते पारि, किन्तु सेइ नीति ये प्रीतिके, ये सौन्दर्यके, आनन्देर सत्य भाषाय प्रकाश करेछे से आमादेर काछे नूतन थाकबे। आजओ नूतन आछे मोगल साम्राज्येर शिल्प--सेइ साम्रज्यके, तार साम्राज्यनीतिके आमरा पछन्द करि आर ना करि।

किन्तु ये युगे दले दले गरजेर ताड़ाय अवकाश ठासा हये निरेट हये याय से-युग प्रयोजनेर, से-युग प्रीतिर नय। प्रीति समय नेय गभीर हते। आधुनिक एइ त्वरा-ताड़ित युगे प्रयोजनेर तागिद कचुरिपानार मतोइ साहित्यधारार मध्येओ भूरि भूरि ढुके पड़ेछे। तारा बास करते आसे ना, समस्यासमाधानेर दरखास्त हाते धन्ना दिये पड़े। से दरखास्त यतइ अलंकृत होक तबु से खाँटि साहित्य नय, से दरखास्तइ। दाबि मिटलेइ तार अन्तर्धान।

एमन अवस्थाय साहित्येर हाओयाबदल हय ए-बेला ओ-बेला। कोथाओ आपन दरद रेखे याय ना। पिछनटाके लाथि मेरेइ चले, याके उँचु करे गड़ेछिल ताके धूलिसात् करे तार परे अट्टहासि। आमादेर मेयेदेर पाड़ओआला शाड़ि, तादेर नीलाम्बरी, तादेर बेनारसि चेलि मोटेर उपर दीर्घकाल बदल हयनि--केनना ओरा आमादेर अन्तरेर अनुरागके आँकड़े आछे। देखे आमादेर चोखेर क्लान्ति हय ना। हत क्लान्ति, मनटा यदि रसिये देखबार उपयुक्त

समय ना पेये बे-दरदि ओ आश्रद्धापरायण हये उठत। हृदयहीन अगभीर विलासेर आयोजने अकारणे अनायासे घन घन फ्याशनेर बदल। एखनकार साहित्ये तेमनि रीतिर बदल। हृदयटा दौड़ते दौड़ते प्रीतिसम्बन्धेर राखि गाँथते ओ पराते पारे ना। यदि समय पेत सुन्दर करे विनिये विनिये गाँथत। एखन ओके व्यस्त लोकेरा धमक दिये बले, रेखे दाओ तोमादेर सुन्दर। सुन्दर पुरोनो, सुन्दर सेकेले। आनो एकटा येमन-तेमन करे पाक-देओया शणेर दड़ि—सेटाके बलब रियालिजम। एखानकार दुद्दाड़ दौड़ओआला लोकेर ओइटेइ पछन्द। स्वल्पायु फ्याशन हठात्-नबाबेर मतो उद्धत—तार प्रधान अहंकार एइ ये, से अधुनातन, अर्थात् तार बड़ाइ गुण निये नय, काल निये।

वेगेर एइ मोटर-कलटा पश्चिमदेशेर मर्मस्थाने। ओटा एखनओ पाका दलिले आमादेर निजस्व हयनि। तबु आमादेरओ दौड़ आरम्भ हल। ओदेरइ हाओया-गाड़िर पायदानेर उपर लाफ दिये आमरा उठे पड़ेछि। आमाराओ खर्वकेशिनी खर्ववेशिनी साहित्यकीर्तिर टेकनिकेर हाल फ्याशन निये गभीरभावे आलोचना करि, आमराओ अधुनातनेर स्पर्धा निये पुरातनेर मानहानि करते अत्यन्त खुशि हइ।

एइ सब चिन्ता करेइ बलेछिलुम आमार ए-वयसे ख्यातिके आमि विश्वास करिने। एइ मायामृगीर शिकारे वने-बादाड़े छुटे बोड़ानो यौवनेइ साजे। केनना से-वयसे मृग यदि बा नाओ मेले मृगयाटाइ यथेष्ट। फुल थेके फल हतेओ पारे, ना हतेओ पारे, तबु आपन स्वभावकेइ चाञ्चल्ये सार्थक करते हय फुलके। से अशान्त, बाइरेर दिकेइ तार वर्णगन्धेर नित्य उद्यम। फलेर काज अन्तरे, तार स्वभावेर प्रयोजन अप्रगल्भ शान्ति। शाखा थेके मुक्तिर जन्येइ तार साधना—सेइ मुक्ति निजेर आन्तरिक परिणतिर योगे।

आमार जीवने आज सेइ फलेरइ ऋतु एसेछे, ये-फल आशु वृन्तच्युतिर अपेक्षा करे। सेइ ऋतुटिर सुयोग सम्पूर्ण ग्रहण करते हले बाहिरेर सङ्गे अन्तरेर शान्ति स्थापन चाइ। सेइ शान्ति ख्याति-अख्यातिर द्वन्द्वेर मध्ये विध्वस्त हय।

ख्यातिर कथा थाक्। ओटार अनेकखानिइ अवास्तवेर वाष्पे परिस्फीत। तार संकोचन-प्रसारण निये ये-मानुष अतिमात्र क्षुब्ध हये थाके से अभिशप्त। भाग्येर परम दान प्रीति, कविर पक्षे श्रेष्ठ पुरष्कार ताइ। ये मानुष काज दिये थाके ख्याति दिये तार वेतन शोध चले, आनन्द देओयाइ यार काज प्रीति ना हले तार प्राप्य शोध हयना।

अनेक कीर्ति आछे या मानुषकेइ उपकरण करे गड़े तोला, येमन राष्ट्र। कर्मेर बल सेखाने जनसंख्याय—ताइ सेखाने मानुषके दले टाना निये केवल द्वन्द्व

चले। विस्तारित ख्यातिर बेड़ाजाल फेले मानुष धरा निये व्यापार। मनेकर लयेड्जर्ज। ताँर बुद्धिके ताँर शक्तिके अनेक लोके यखन माने तखनइ ताँर काज चले। विश्वास आलगा हले बेड़ाजाल गेल छिँड़े, मानुष-उपकरण पुरोपुरि जोटे ना।

अपर पक्षे कविर सृष्टि यदि सत्य हये थाके सेइ सत्येर गौरव सेइ सृष्टिर निजेरइ मध्ये, दशजनेर सम्मतिर मध्ये नय। दशजने ताके स्वीकार करेनि एमन प्रायइ घटे थाके। ताते बाजारदरेर क्षति हय, किन्तु सत्य मूल्येर कमति हय ना।

फुल फुटेछे एइटेइ फुलेर चरम कथा। यार भालो लागल सेइ जितल, फुलेर जित तार आपन आविर्भावेइ। सुन्दरेर अन्तरे आछे एकटि रसमय रहस्यमय आयत्तेर अतीत सत्य, आमादेर अन्तरेरइ सङ्गे तार अनिर्वचनीय सम्बन्ध। तार सम्पर्के आमादेर आत्मचेतना हय मधुर, गभीर, उज्ज्वल। आमादेर भितरेर मानुष बेड़े ओठे, रङिये ओठे, रसिये ओठे। आमादेर सत्ता येन तार सङ्गे रङे रसे मिले याय--एकेइ बले अनुराग।

कविर काज एइ अनुरागे मानुषेर चैतन्यके उद्दीप्त करा, औदासीन्य थेके उद्बोधित करा। सेइ कविकेइ मानुष बड़ो बले, ये एमन सकल विषये मानुषेर चित्तके आश्लिष्ट करेछे यार मध्ये नित्यता आछे, महिमा आछे, मुक्ति आछे, या व्यापक एवं गभीर। कला ओ साहित्येर भाण्डारे देश देशे काले काले मानुषेर अनुरागेर सम्पद रचित ओ सञ्चित हये उठछे। एइ विशाल भवन विशेष देशेर मानुष विशेष काके भालोबेसेछे से तार साहित्य देखलेइ बुझते पारि। एइ भालोबासार द्वाराइ तो मानुषके विचार करा।

वीणापाणिर वीणाय तार अनेक। कोनोटा सोनार, कोनोटा तामार, कोनटा इस्पातेर। संसारेर कण्ठे हालका ओ भारी, आनन्देर ओ प्रमोदेर यत रकमेर सुर आछे सबइ ताँर वीणाय बाजे। कविर काव्येओ सुरेर असंख्य वैचित्र्य। सबइ ये उदात्त ध्वनि हओया चाइ एमन कथा बलिने। किन्तु समस्तेर सङ्गे सङ्गेइ एमन किछु थाका चाइ, यार इङ्गित ध्रुवेर दिके, सेइ वैराग्येर दिके या अनुरागकेइ वीर्यवान ओ विशुद्ध करे। भर्तृहरिर काव्ये देखि भोगेर मानुष आपन सुर पेयेछे, किन्तु सेइ सङ्गेइ काव्येर गभीरेर मध्ये बसे आछे त्यागेर मानुष आपन एकतारा निये--एइ दुइ सुरेर समवायेइ रसेर ओजन ठिक थाके, काव्येओ मानव-जीवनेओ। दूरकाल ओ बहुजनके य सम्पद दान करार द्वारा साहित्य स्थायीभावे सार्थक हय, कागजेर नौकोय वा माटिर गमलाय तो तार बोझाइ सइबे ना। आधुनिक-काल-विलासीरा अवज्ञार सङ्ग बलते पारेन ए-सब कथा आधुनिक कालेर बुलिर सङ्गे मिलछे ना--ता यदि हय ता हले सेइ आधुनिक कालटारइ जन्ये परिताप

करते हबे। आश्वासेर कथा एइ ये, से चिरकालइ आधुनिक थाकबे एत आयु तार नय।

कवि यदि क्लान्तमने एमन कथा मने करे ये, कवित्वेर चिरकालेर विषयगुलि आधुनिक काले पुरोनो हये गेछे ताहले बुझब आधुनिक कालटाइ हयेछे वृद्ध ओ रसहीन। चिरपरिचित जगते तार सहज अनुरागेर रस पौंछच्चे ना, ताइ जगत्टाके आपनार मध्ये निते पारल ना। ये कल्पना निजेर चारिदिके आर रस पाय ना, से ये कोनो चेष्टाकृत रचनाकेइ दीर्घकाल सरस राखते पारबे एमनआशा करा विड़म्बना। रसनाय यार रुचि मरेछे चिरदिनेर अन्ने से तृप्ति पाय ना, सेइ एकइ कारणे कोनो एकटा आजगबि अन्नेओ से चिरदिन रस पाबे एमन सम्भावना नेइ।

आज सत्तर बछर वयसे साधारणेर काछे आमार परिचय एकटा परिणामे एसेछे। ताइ आशा करि, याँरा आमाके जानबर किछुमात्र चेष्टा करेछेन एतदिन अन्तर तारा ए-कथा जेनेछेन ये, आमि जीर्ण जगते जन्मग्रहण करिनि। आमि चोख मेले या देखलुम चोख आमार कखनो ताते क्लान्त हल ना। विस्मयेर अन्त पाइनि। चराचरके वेष्टन करे अनादिकालेर ये अनाहत वाणी अनन्तकालेर अभिमुखे ध्वनित ताके आमार मनप्राण साड़ा दियेछे, मने हयेछे युगे युगे एइ विश्ववाणी शुने एलुम। सौरमण्डलीर प्रान्ते एइ आमादेर श्यामला पृथिवीके ऋतुर आकाशदूतगुलि विचित्र रसेर वर्णसज्जाय साजिये दिये याय, एइ आदरेर अनुष्ठाने आमार हृदयेर अभिशेक-वारि निये योग दिते कोनोदिन आलस्य करिनि। प्रतिदिन उषाकाल अन्धकार रात्रिर प्रान्ते स्तब्ध हये दाँड़ियेछि एइ कथाटि उपलब्धि करवार जन्ये ये, यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि। आमिसेइ विराट सत्ताके आमार अनुभवे स्पर्श करते चेयेछि यिनि सकल सत्तार आत्मीय-सम्बन्धेर ऐक्यतत्त्व, याँर खुशितेइ निरन्तर असंख्यरूपेर प्रकाशे विचित्रभावे आमार प्राण खुशी हये उठछे, बले उठछे—कोह्येवान्यात् कः प्राण्यात् यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्; याते कोनो प्रयोजन नेइ ताओ आनन्देर टाने टानबे, एइ अत्याश्चर्य व्यापारे चरम अर्थ याँर मध्ये; यिनि अन्तरे अन्तरे मानुषके परिपूर्ण करे विद्यमान बलेइ प्राणपण कठोर आत्मत्यागके आमरा आत्मघाती पागलेर पागलामि बले हेसे उठलुम ना।

ईशोपनिषदेर प्रथम ये - मन्त्रे पितृदेव दीक्षा पेयेछिलेन, सेइ मन्त्रटि बार बार नतुन नतुन अर्थ निये आमार मने आन्दोलित हयेछे, बार बार निजेके बलेछि—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः; आनन्द करो ताइ निये या तोमार काछे सहजे ऐसेछे, या रयेछे तोमार चार दिके, तारइ मध्ये चिरन्तन, लोभ कोरो ना। काव्य-साधनाय एइ मन्त्र महामूल्य आसवित याके माकड़सार मतो जाले जड़ाय ताके जीर्ण

करे देय, ताते ग्लानि आसे क्लान्ति आने। केनना आसक्ति ताके समग्र थेके उत्पाटन करे निजेर सीमार मध्ये बाँधे--तार परे-तोला फुलेर मतो अल्पक्षणेइ से म्लान हय। महत् साहित्य भोगके लोभ थेके उद्धार करे, सौन्दर्यके आसक्ति थेके, चित्तके उपस्थित गरजेर दण्डधारीदेर काछ थेके। रावणेर घरे सीता लोभेर द्वारा बन्दी ; रामेर घरे सीता प्रेमेर द्वारा मुक्त सेइखानेइ ताँर सत्य प्रकाश। प्रेमेर काछे देहेर अपरुप रूप प्रकाश पाय, लोभेर काछे तार स्थुल मांस।

अनेकदिन थेकेइ लिखे आसछि, जीवनेर नाना पर्वे नाना अवस्थाय। शुरू करेछि काँचा वयसे--तखनओ निजेके बुझिनि। ताइ आमार लेखार मध्ये बहुमूल्य एवं वर्जनीय जिनिस भूरि भूरि आछे ताते सन्देह नेइ। ए समस्त आवर्जना बाद दिये बाकि या थाके आशा करि तार मध्ये एइ घोषणाटि स्पष्ट ये, आमि भालोबेसेछि एइ जगत्के, आमि प्रणाम करेछि महत्के, आमि कामना करेछि मुक्तिके ये मुक्ति परमपुरुषेर काछे आत्मनिवेदने, आमि विश्वास करेछि मानुषेर सत्य सेइ महामानवेर मध्ये यिनि सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः। आमि आबाल्य-अभ्यस्त ऐकान्तिक साहित्यसाधनार गण्डीके अतिक्रम करे एकदा सेइ महामानवेर उद्देशे यथासाध्य आमार मर्मेर अर्ध्य आमार त्यागेर नैवेद्य आहरण करेछि--ताते बाइरेर थेके यदि बाधा पेये थाकि अन्तरेर थेके पेयेछि प्रसाद। आमि एसेछि एइ धरणीर महातीर्थे--एखाने सर्वदेश सर्वजाति ओ सर्वकालेर इतिहासेर महाकेन्द्रे आछेन नरदेवता--ताँरइ वेदीमूले निभृते बसे आमार अहंकार आमार भेदबुद्धि क्षालन करबार दुःसाध्य चेष्टाय आजओ प्रवृत्त अछि।

आमार या किछु अकिञ्चित्कर ताके अतिक्रम करेओ यदि आमार चरित्रेर अन्तरतम प्रकृति ओ साधना लेखाय प्रकाश पेये थाके, आनन्द दिये थाके, तबे तार परिवर्ते आमि प्रीति कामना करि, आर किछु नय। ए-कथा येन जेने याइ, अकृत्रिम सौहार्द्य पेयेछि सेइ ताँदेर काछे याँरा आमार समस्त त्रुटि सत्त्वेओ जेनेछेन समस्त जीवन आमि की चेयेछि, की पेयेछि, की दियेछि, आमार अपूर्ण जीवने असमाप्त साधनाय की इङ्गित आछे।

साहित्ये मानुषेर अनुराग-सम्पद सृष्टि कराइ यदि कविर यथार्थ काज हय, तबे एइ दान ग्रहण करते गेले प्रीतिरइ प्रयोजन। केनना प्रीतिइ समग्र करे देखे। आज पर्यन्त साहित्ये याँरा सम्मान पेयेछेन ताँदेर रचनाके समग्रभावे देखेइ श्रद्धा अनुभव करि। ताके टुकरो टुकरो छिड़े छिंड़े छिद्र सन्धान वा छिद्र खनन करते स्वभावत प्रवृत्ति हय ना। जागते आज पर्यन्त अतिबड़ो साहित्यिक एमन केउ जन्माननि, अनुरागबञ्चित परुष चित्त निये याँर श्रेष्ठ रचनाकेओ विद्रूप करा, तार कदर्थ करा, तार प्रति अशोभन मुखविकृति करा ; ये-कोनो मानुष ना

पारे। प्रीतिर प्रसन्नताइ सेइ सजह भूमिका, यार उपरे कविर सृष्टि समग्र हये सुस्पष्ट हये प्रकाशमान हय ।

मर्त्यलोकेर श्रेष्ठ दान एइ प्रीति आमि पेयेछि ए-कथा प्रणामेर सङ्गे बलि। पेयेछि पृथिवीर अनेक वरणीयदेर हात थेके--ताँदेर काछे कृतज्ञता नय, आमार हृदय निवेदन करे दिये गेलेम। ताँदेर दक्षिण हातेर स्पर्श विराट मानवेरइ स्पर्श लेगेछे आमार ललाटे--आमार या किछु श्रेष्ठ ता ताँदेर ग्रहणेर योग्य होक।

आर आमार स्वदेशेर लोक याँरा अतिनिकटेर अतिपरिचयेर अस्पष्टता भेद करेओ आमाके भालोबासते पेरेछेन आज एइ अनुष्ठाने ताँदेरइ बहुयत्न-रचित अर्घ्य सज्जित। ताँदेर सेइ भालोबासा हृदयेर सङ्गे ग्रहण करि।

भूमिका

विश्वभारती ग्रन्थप्रकाश-समितिर अध्यक्षेरा आमार गद्य पद्य समस्त लेखा एकसङ्गे जड़ो करे विशेषभावे साजिये छापाबार संकल्प करेछेन। काजटि परिमाणे बृहत् एवं सम्पादनाय दुःखसाध्य; ए रकम अनुष्ठान आमादेर देशेर सकल श्रेणीर साहित्यविचारकदेर सम्पूर्ण मनेर मतो करे तोला कारओ शक्तिते नेइ ए कथा निश्चित जेने निजे एर दायित्व थेके निष्कृति नियेछि। याँरा साहस करे एर भार वहन करते प्रस्तुत ताँदेर जन्ये उद्विग्न रइलुम।

अति अल्प वयस थेके स्वभावतइ आमार लेखार धारा आमार जीवनेर धारार सङ्गे सङ्गेइ अविच्छिन्न एगिये चलेछे। चारि दिकेर अवस्था ओ आवहाओयार परिवर्तने एवं अभिज्ञतार नूतन आमदानि ओ वैचित्र्ये रचनार परिणति नाना बाँक नियेछे ओ रूप नियेछे; एकटा कोनो ऐक्येर स्वाक्षर तादेर सकलेर मध्ये अङ्कित हये निश्चयइ परस्परेर आत्मीयतार प्रमाण दिते थाके। याँरा बाइरे थेके सन्धान ओ चर्चा करेन ताँदेर विचारबुद्धिर काछे सेटा धरा पड़े। किन्तु लेखकेर काछे सेटा स्पष्ट गोचर हय ना। मनेर भिन्न भिन्न ऋतुते यखन फुल फोटाय फल फलाय तखन सेइटेर आवेग ओ वास्तवताइ कविर काछे हय एकान्त प्रत्यक्ष। तार माझे माझे समय आसे यखन फलन याय कमे, यखन हाओयार मध्ये प्राणशक्तिर प्रेरणा हय क्षीण। तखन इतस्तत ये फसलेर चिन्ह देखा देय से आगेकार काटा शस्येर पोड़ो बीजेर अङ्कुर। एइ अफला समयगुलो भोलबार योग्य। एटा हले उंच्छवृत्तिर क्षेत्र ताँदेरइ काछे याँरा ऐतिहासिक संग्रहकर्ता। किन्तु इतिहासेर सम्बल आर काव्येर सम्पत्ति एक जातेर नय।

इतिहास सबइ मने राखते चाय किन्तु साहित्य अनेक भोले। छपाखाना ऐतिहासिकेर सहाय। साहित्येर मध्ये आछे बाछाइ करार धर्म, छापाखाना तार प्रबल बाधा। कविर रचनाक्षेत्रके तुलना करा येते पारे नीहारिकार सङ्गे। तार विस्तीर्ण झापसा आलोर माझे माझे फुटे उठेछे संहत ओ समाप्त सृष्टि। सेइगुलिइ काव्य। आमार रचनार आमि तादेरइ स्वीकार करते चाइ। बाकि यत क्षीण वाष्पीय फाँकगुलि यथार्थ साहित्येर शामिल नय।

ऐतिहासिक ज्योतिर्विज्ञानी, वाष्प, नक्षत्र फाँक कोनोटाकेइ से बाद दिते चाय ना।

आमार आयु एखन परिणामेर दिके एसेछे। आमार मते आमार शेष कर्तव्य हच्छे, ये लेखागुलिके मने करि साहित्येर लक्ष्ये एसे पौंछेछे तादेर रक्षा करे बाकिगुलोके वर्जन करा। केनना रससृष्टिर सत्य परिचयेर सेइ एकमात्र उपाय। सब-किछुके निर्विचारे राशीकृत करले समग्रके चेना याय ना। साहित्यरचयितारूपे आमार चित्तेर ये एकटि चेहारा आछे सेइटेके स्पष्ट करे प्रकाश करा येते पारलेइ आमार-सार्थकता। अरण्यके चेनाते गेले जङ्गलके साफ करा चाइ, कुठारेर दरकार।

एकेबारे श्रेष्ठ लेखागुलिके नियेइ आँट करे तोड़ा बाँधते हबे ए कथा आमि बलिने। एकटा आदर्श आछे सेटा निछक पयला श्रेणीर आदर्श नय, सेटा साधारण चलति श्रेणीर आदर्श। तार मध्ये परस्परेर मूल्येर कमबेशि आछे। रेलगाड़िते येमन प्रथम द्वितीय तृतीय श्रेणीर कामरा। तादेर रूपेर ओ व्यवहारेर आदर्श ठिक एक नय किन्तु चाकाय चाकाय मिल आछे। एकटा साधारण समाप्तिर आदर्श तारा सकलेइ रक्षा करेछे। यारा असम्पूर्ण, कारखाना घरेर बाइरे तादेर आना उचित हय ना। किन्तु तारा ये अनेक एसे पड़ेछे ता एइ बइयेर गोड़ार दिकेर कवितागुलि देखले धरा पड़बे। कुयाशा येमन वृष्टि नय एराओ तेमनि कविता नय। याँरा पड़बेन ताँरा एइसब काँचा वयसेर अकालजात अङ्गहीनतार नमुना देखे यदि हासते हय तो हासबेन तबु एकटुखानि दया राखबेन मने एइ भेबे ये, भाग्यक्रमे एइ आरम्भइ शेष नय। एइ प्रसङ्गे एकटा कथा जानिये राखि, एइ बइये ये गीतिनाट्य छापानो हयेछे तार गानगुलिके केउ येन कविता बले सन्देह ना करेन।

साहित्यरचनार मध्ये जीवधर्म आछे। नाना कारणे तारा सबाइ एकइ पूणताय देखा देय ना। तादेर सबाइके एकत्रे एलोमेलो बाड़ते दिले सबारइ क्षति हय। मने आछे एकसमये विजया पत्रे विपिनचन्द्र पाल आमार रचित गानेर समालोचना करेछिलेन। से समालोचना अनुकूल हयनि। तिनि आमार ये-सब गानेके तलब दिये विचारकक्षे दाँड़ करियाछिलेन तादेर मध्ये विस्तर छेलेमानुषि छिल। तादेर साक्ष्य संशय एनेछिल समस्त रचनार परे। तारा सेइ परिणति पायनि यार जोरे गीतसाहित्यसभाय तारा आपनादेर लज्जा निवारण करते पारे। इतिहासेर रसद जोगाबार काजे छापाखानार आड़-काठिर हाते साहित्यमहले तादेर चालान देओया हयछे। तादेर सरिये आनते गेले इतिहास आपन पुरातन दाबिर दोहाइ पेड़े आपत्ति पेश करे।

आज यदि आमार समस्त रचनार समग्र परिचय देबार समय उपस्थित हये थाके तबे तादेर मध्ये भालो मन्द माझारि आपन आपन स्थान पाबे ए कथा माना यते पारे। तारा सबाइ मिलेइ समष्टिर स्वाभाविकता रक्षा करे। केवल यादेर मध्य परिणति घटनि तारा कोनो एक समय देखा दियेछिल बलेइ ये इतिहासेर खातिरे तादेर अधिकार स्वीकार करते हबे ए कथा श्रद्धेय नय। सेगुलोके चोखेर आड़ाल करे राखते पारलेइ समस्तगुलोर सम्मान थाके।

अतएव आमार समस्त लेखा संग्रह करार माने हच्छे एइ ये, ये-सब लेखा अन्तत आमारइ रचनार आदर्श अनुसारे लेखाय प्रस्फुट हये दाँड़ियेछे तादेर एकत्र करा। विधातार हातेर काजे असम्पूर्ण सृष्टि माझे माझे देखा देय, किन्तु देखा दियेछे बलेइ ये टिके याय ता नय, सम्पूर्ण सृष्टिर सङ्गे सामञ्जस्य हय ना बलेइ तादेर जबाब देओया हय। सेइरकम जबाब-देओया लाञ्छनधारी रचना अनेकगुलिइ पाओया याबे एइ ग्रन्थेर शुरू थेकेइ, तादेर भिड़ ठेले पाठकेरा आपन चेष्टाय यदि पथ करे चले· यान तबे तादेर प्रति सद्व्यवहार करा हबे। प्रथम बुनोनिर समय ये माटि वृष्टि पायनि, तार तृषार्त पीड़ित वीज थेके कुञ्चित हये ये अङ्कुर बेरोय से येमन किछु एकटा प्रकाश करते चाय किन्तु तार पूर्वेइ व्यर्थ हये याय मरे, सान्ध्यसंगीतेर कविता सेइ जातेर। एके संग्रह करे राखबार मूल्य नेइ। एर केवल एकटा दाम आछे, से हच्छे चित्तचाञ्चल्ययेर आवेगे बाँधा छन्देर शिकल भाङा।

अनेक दिनेर रचनागुलो यखन एकत्र जमा करा याय तखन एइ भावनाटा मने आसे। तारा नाना वयसेर ओ मनेर नाना अवस्थार सामग्री। शुधु निजेर मनेर नय चारि दिकेर मनेर। इतिहासेर एइ अनिवार्य वैचित्र्येर भितर दियेइ साहित्येर तरी चले आपन तीर्थे। सकलेर चेये भेद घटाय रचनाशक्तिर कमबेशिते। एक समये विशेष रसेर आयोजन मनके या टेनेछिल, आर-एकसमये ता टाने ना, किंवा अन्य रकम करे टाने। ताते कोनो क्षति हय ना यदि तार तत्कालीन प्रकाशटा हय सम्पूर्ण जोरेर सङ्गे अनेक समये सेइटेइ हय ना। आमरा याके बलि छेलेमानुषी, काव्येर विषय हिसाबे सेटा उत्तम, रचनार रीति हिसाबे सेटा उपेक्षार योग्य। वयसेर एक पर्वे या लिखेछि अन्य पर्वे ता लिखिने किंवा हयतो अन्य रकम करे लिखि। सेइ तार रूप ओ रसेर परिवर्तन यदि यथासमये आपन, प्रकाशरीतिर योग्य वाहन पेये थाके ता हले कोनो नालिश थाके ना। युगपरिवर्तन इतिहासेर अङ्ग, किन्तु साहित्येर एकटा मूलनीति सकल परिवर्तनेर भितर

दिये मानुषेर मनके आनन्देर योगान दिये थाके, सेटा हच्छे आमादेर अलं-कारशास्त्रे याके बले रसतत्त्व। एइ रस आधुनिकी बा सनातनी कोनो विशेष मालमसलार फरमाशे तैरि हय ना। कखनो कखनो कोनो अर्थनैतिक राष्ट्रनैतिक समाजनैतिक गोंड़ामि जेगे उठे रससृष्टिशालाय डिक्टेटरि करते आसे, बाइरे थेके दण्ड हाते तादेर शासन चालाय, मने करे चिरकालेर मतो अप्रतिहत तादेर प्रभाव। तादेर तकमा चोख भोलाय यादेर तारा रसराज्येर बाइरेर, लोक, तारा रवाहूत; एक-एकटा विशेष रव शुने अभिभूत हय, भिड़ करे। रसेर प्रकृति हच्छे याके बला याय गुहाहित, अभावनीय, से कोनो विशेष उत्तेजित सामयिकतार आइनकानुनेर अधीन नय। तार प्रकाश एवं लुप्ति मानव-प्रकृतिर ये निगूढ़ विशेषत्वेर सङ्गे जड़ित ता केउ स्पष्ट निर्णय करते पारे ना। स्वभावेर गहन सृष्टिशालार गभीर प्रेरणाय मानुष आपन खेलना गड़े आबार खेलना भाङे आमरा कारिगररा तार सेइ भाङागड़ार लीलाय उप-करण जुगिये आसछि। किन्तु सेगुलो नितान्त खेलना नय, सेगुलो कीर्ति, प्रत्येकबार मानुष एइ आशा करे, नइले तार हात चलेना। अथच सेइ सङ्गेइ एकटा निरासक्त वैराग्यके रक्षा करते पारलेइ भालो।

आमार आशि बछर वयसेर साहित्यिक प्रयासके सम्पूर्ण आकारे पुञ्जित करबार एइ ये चेष्टा आज देखछि, एर मध्ये निश्चित अनुमान करछि अनेक गाथुनि आछे, यार उपरे आगामी कालेर विस्मरणेर दूत प्रत्यह अदृश्य कालिते आसन्न लुप्तिर चिन्ह अङ्कित करे चलेछे। ए सम्बन्धे आमार मने कोनो मोह नेइ, एवं क्षोभ कराओ वृथा बले मने करि।

एइ यदि सत्य हय, तबे ये सुहृदरा आमार रचनागुलि रक्षणीय बले गण्य करछेन ताँदेर इच्छाके की बले सम्मान करा याय। ए उपलक्षे पृथिवीते जीववंश-धारार इतिहास स्मरणेर योग्य। कालेर परिवर्तित गतिर सङ्गे अनेक जीव ताल रेखे चलते पारेनि, प्राणरङ्गशाला थेके सेइ बेतालादेर सरिये देओया हयेछे। किन्तु सबाइ तो सरेनि। अनेक आछे कालेर सङ्गे तादेर मिल भाङेनि। आज नूतनओ तादेर दाबि करे, पुरातनओ तादेर त्याग करेनि। कि शिल्पकलाय, कि साहित्ये यदि तार यथेष्ट प्रमाण ना थाकत ता हले बलते हत, सृष्टिकर्ता मानुषेर मन आपन पिछनेर रास्ता क्रमागत पुड़िये फेलते फेलतेइ चलेछे। कथाटा तो सत्य नय। मानुष सामनेर दिके येमन अग्रसरण करे तेमनि अनुसरण करे पिछनेर, नइले तार चलाइ हय ना। पिछनहारा साहित्य बले यदि किछु थाके से कवन्ध, से अस्वा-भाविक।

ताइ बलछि, आज यारा आमार रचनाके स्थायी सम्मानेर रूप दिते प्रवृत्त

हयेछेन ताँरा आपन रुचि ओ संस्कृति अनुसारे तार स्थायित्व उपलब्धि करेछेन। मानुष आपनार एइ उपलब्धिके विश्वास करेइ पाका इमारतेर काज फाँदे—भुल हते पारे किन्तु भुल ना हओयार सम्भावना के मानुष ये आस्था करे सेइ आस्थारइ मूल्य बेशि। वर्तमान अनुष्ठानकर्तादिर सम्बन्धे एइ हच्छे बलबार कथा। आर आमार कथा यदि बल, आमि मनुर उपदेश मानब, नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्। ये याय याक, ये थाके थाक। सेइ सङ्गे मिथ्या विनयेर भान करब ना। बन्धुरा आमार एतकालेर अध्यवसायके ये निश्चित श्रद्धार मूल्य दिते प्रवृत्त हयेछेन आमिओ ताके श्रद्धाकरे सेइ दानेर मध्ये आमार शेष पुरस्कार ग्रहण करब। काल ताँदिर फाँकि देबे ना एवं विड़म्बना करबे ना कविकेओ, एइ कथाय संशय करार चेये विश्वास करते उपस्थित लाभ, केनना कालेर दरबारे एर शेष मीमांसार सम्भावना दूरे आछे।

सबशेषे एइ कथा जानिये राखछि, याँरा एइ ग्रन्थप्रकाशेर भार नियेछेन ताँदेर दुःसाध्य काजे आमि यथासाध्य दृष्टि राखब एवं ताँरा आमार समर्थनेर अनुसरण करबेन।

३०-६-३९ रवीन्द्रनाथ ठाकुर
श्रीनिकेतन

आत्मपरिचय

आत्मपरिचय

आमार सुदीर्घकालेर कविता लेखारधाराटाके पश्चात् फिरिया यखन देखि तखन इहा स्पष्ट देखिते पाइ—ए एकटा व्यापार, याहारउपरे आमार कोनो कर्तृत्व छिल ना। यखन लिखितेछिलाम तखन मने करियाछि, आमिइ लिखितेछि बटे, किन्तु आज जानि कथाटा सत्य नहे। कारण, सेइ खण्डकवितागुलिते आमार समग्र काव्यग्रन्थेर तात्पर्य सम्पूर्ण हय नाइ—सेइ तात्पर्यटि की ताहाओ आमि पूर्वे जानिताम ना। एइरूपे परिणाम ना जानिया आमि एकटिर सहित एकटि कविता योजना करिया आसियाछि—ताहादेर प्रत्येकेर ये क्षुद्र अर्थ कल्पना करियाछिलाम, आजसमग्रेर साहाय्ये निश्चय बुझियाछि, से अर्थ अतिक्रम करिया एकटि अविच्छिन्न तात्पर्य ताहादेर प्रत्येकेर मध्य दियाप्रवाहित हइया आसियाछिल। ताइ दीर्घकाल परे एकदिन लिखियाछिलाम—

ए की कौतुक नित्यनूतन
ओगो कौतुकमयी!
आमि याहा-किछु चाहि बलिबारे
बलिते दितेछ कइ।
अन्तरमाझे बसि अहरह
मुख हते तुमि भाषा केड़े लह,
मोर कथा लये तुमि कथा कह
मिशाये आपन सुरे।
की बलिते चाइ सब भुले याइ,
तुमि या बलाओ आमि बलि ताइ,
संगीतस्रोते कूल नाहि पाइ—
कोथा भेसे याइ दूरे।

विश्वविधिर एकटा नियम एइ देखितेछि ये, येटा आसन्न, येटा उपस्थित, ताहाके से खर्व करिते देय ना। ताहाके ए कथा जानिते देय ना ये, से एकटा सोपानपरम्परार अङ्ग। ताहाके बुझाइया देय ये, से आपनाते आपनि पर्याप्त। फुल यखनफुटिया ओठेतखन मने हय, फुलइ येन गाछेर एकमात्र लक्ष्य—एमनि

ताहार सौन्दर्य, एमनि ताहार सुगन्ध ये, मने हय येन से वनलक्ष्मीर साधनार चरमधन। किन्तु से ये फल फलाइबार उपलक्षमात्र से कथा गोपने थाके—वर्तमानेर गौरवेइ से प्रफुल्ल, भविष्यत् ताहाके अभिभूत करिया देय ना। आबार फलके देखिले मने हय, सेइ येन सफलतार चूड़ान्त; किन्तु भावी तरुर जन्य से ये बीजके गर्भेर मध्ये परिणत करिया तुलितेछे, ए कथा अन्तरालेइ थाकिया याय। एमनि करिया प्रकृति फुलेर मध्ये फुलेर चरमता, फलेर मध्ये फलेर चरमता रक्षा करियाओ ताहादेर अतीत एकटि परिणामके अलक्ष्ये अग्रसर करिया दितेछे।

काव्यरचनासम्बन्धेओ सेइ विश्वविधानइ देखिते पाइ—अन्तत आमार निजेर मध्ये ताहा उपलब्धि करियाछि। यखन येटा लिखितेछिलाम तखन सेइटेकेइ परिणाम बलिया मने करियाछिलाम। एइजन्य सेइटुकु समाधा करार काजेइ अनेक यत्न ओ अनेक आनन्द आकर्षण करियाछि। आमिइ ये ताहा लिखितेछि एवं एकटा-कोनो विशेष भाव अवलम्बन करिया लिखितेछि, ए सम्बन्धेओ सन्देह घटे नाइ। किन्तु आज जानियाछि, से-सकल लेखा उपलक्षमात्र—ताहारा ये अनागतके गड़िया तुलितेछे सेइ अनागतके ताहारा चेनेओ ना। ताहादेर रचयितार मध्ये आर-एकजन के रचनाकारी आछेन, याँहार सम्मुखे सेइ भावी तात्पर्य प्रत्यक्ष वर्तमान। फुत्कार बाँशिर एक-एकटा छिद्रेर मध्य दिया एक-एकटा सुर जागाइया तुलितेछे एवं निजेर कर्तृत्व उच्चस्वरे प्रचार करितेछे, किन्तु के सेइ विच्छिन्न सुरगुलिके रागिणीते बाँधिया तुलितेछे? फुँ सुर जागाइतेछे बटे, किन्तु फुँ तो बाँशि बाजाइतेछे ना। सेइ बाँशि ये बाजाइतेछे ताहार काछे समस्त रागरागिणी वर्तमान आछे, ताहार अगोचरे किछुइ नाइ।

बलितेछिलाम बसि एक धारे
आपनार कथा आपन जनारे,
शुनातेछिलाम घरेर दुयारे
घरेर काहिनी यत;
तुमि से भाषारे दहिया अनले
डुबाये भासाये नयनेर जले
नवीन प्रतिमा नव कौशले
गड़िले मनेर मतो।

एइ श्लोकटार माने बोध करि एइ ये, येटा लिखिते याइतेछिलाम सेटा सादा कथा, सेटा बेशि किछु नहे—किन्तु सेइ सोजा कथा, सेइ आमार निजेर कथार

मध्ये एमन एकटा सुर आसिया पड़े, याहाते ताहा बड़ो हइया ओठे, व्यक्तिगत ना हइया विश्वेर हइया ओठे। सेइ-ये सुरटा, सेटा तो आमार अभिप्रायेर मध्ये छिल ना। आमार पटे एकटा छबि दागियाछिलाम बटे, किन्तु सेइसङ्गे-सङ्गे ये एकटा रङ फलिया उठिल, सेइ रङ ओ से रङेर तुलि तो आमार हाते छिल ना।

नूतन छन्द अन्धेर प्राय
भरा आनन्दे छुटे चले याय,
नूतन वेदना बेजे उठे ताय
नूतन रागिणीभरे।
ये कथा भावि नि बलि सेइ कथा,
ये व्यथा बुझि ना जागे सेइ व्यथा,
जानि ना एनेछि काहार बारता
कारे शुनावार तरे।

आमि क्षुद्र व्यक्ति यखन आमार एकटा क्षुद्र कथा बलिबार जन्य चञ्चल हइया उठियाछिलाम तखन के एकजन उत्साह दिया कहिलेन, 'बलो बलो, तोमार कथाटाइ बलो। ऐ कथाटार जन्यइ सकले हाँ करिया ताकाइया आछे।' एइ बलिया तिनि श्रोतृवर्गेर दिके चाहिया चोख टिपिलेन; स्निग्ध कौतुकेर सङ्गे एकटुखानि हासिलेन एवं आमारइ कथार भितर दिया की सब निजेरकथा बलिया लइलेन।

के केमन बोझे अर्थ ताहार,
केह एक बले, केह बले आर,
आमारे शुधाय बृथा बार बार—
देखे तुमि हास बुझि।
के गो तुमि, कोथा रयेछे गोपने
आमि मरितेछि खुँजि।

शुधु कि कविता-लेखार एकजन कर्ता कविके अतिक्रम करिया ताहार लेखनी चालना करियाछेन? ताहा नहे। सेइसङ्गे इहाओ देखियाछि ये, जीवनटा ये गठित हइया उठितेछे, ताहार समस्त सुखदुःख, ताहार समस्त योगवियोगेर विच्छिन्नताके के एकजन एकटि अखण्ड तात्पर्येर मध्ये गाँथिया तुलितेछेन। सकल समये आमि ताँहार आनुकूल्य करितेछि कि ना जानि ना, किन्तु आमार

समस्त बाधा-विपत्तिकेओ, आमार समस्त भाङाचोराकेओ तिनि नियतइ गाँथिया जुड़िया दाँड़ कराइतेछेन। केवल ताइ नय, आमार स्वार्थ, आमार प्रवृत्ति, आमार जीवनके ये अर्थेर मध्ये सीमाबद्ध करितेछे तिनि बारे बारे से सीमा छिन्न करिया दितेछेन––तिनि सुगभीर वेदनार द्वारा, विच्छेदेर द्वारा, विपुलेर सहित, विराटेर सहित ताहाके युक्त करिया दितेछेन। से यखन एकदिन हाट करिते बाहिर हइयाछिल तखन विश्वमानवेर मध्ये से आपनार सफलता चाय नाइ–– से आपनार घरेर सुख घरेर सम्पदेर जन्यइ कड़ि संग्रह करियाछिल। किन्तु सेइ मेठो पथ, सेइ घोरो सुखदुःखेर दिक हइते के ताहाके जोर करिया पाहाड़-पर्वत अधित्यका-उपत्यकार दुर्गमतार मध्य दिया टानिया लइया याइतेछे

ए की कौतुक नित्य-नूतन
ओगो कौतुकमयी!
ये दिके पान्थ चाहे चलिबारे
चलिते दितेछ कइ?
ग्रामेर ये पथ धाय गृहपाने,
चाषिगण फिरे दिवा-अवसाने,
गोठे धाय गोरु, वधू जल आने
शतबार यातायाते––
एकदा प्रथम प्रभातवेलाय
से पथे बाहिर हइनु हेलाय,
मने छिल दिन काजे ओ खेलाय
काटाये फिरिब राते।
पदे पदे तुमि भुलाइले दिक,
कोथा याब आजि नाहि पाइ ठिक,
क्लान्तहृदय भ्रान्त पथिक
एसेछि नूतन देशे।
कखनो उदार गिरिर शिखरे
कभु वेदनार तमोगह्वरे
चिनि ना ये पथ से पथेर 'परे
चलेछि पागलवेशे।

एइ ये कवि, यिनि आमार समस्त भालोमन्द, आमार समस्त अनुकूल ओ प्रतिकूल उपकरण लइया आमार जीवनके रचना करिया चलियाछेन, ताँहाकेइ

आमार काव्ये आमि 'जीवनदेवता' नाम दियाछि। तिनि ये केवल आमार एइ इहजीवनेर समस्त खण्डताके ऐक्यदान करिया विश्वेर सहित ताहार सामाञ्जस्य-स्थापन करितेछेन, आमि ताहा मने करि ना। आमि जानि, अनादिकाल हइते विचित्र विस्मृत अवस्थार मध्य दिया तिनि आगाके आमार एइ वर्तमान प्रकाशेर मध्ये उपनीत करियाछेन—सेइ विश्वेर मध्य दिया प्रवाहित अस्तित्वधारार बृहत् स्मृति ताँहाके अवलम्बन करिया आमर अगोचरे आमार मध्ये रहियाछे। सेइजन्य एइ जगतेर तरुलता-पशुपक्षीर सङ्गे एमन एकटा पुरातन ऐक्य अनुभव करिते पारि, सेइजन्य एतवड़ो रहस्यमय प्रकाण्ड जगत्के अनात्मीय ओ भीषण बलिया मने हय ना।

आज मने हय सकलेरि माझे
तोमारेइ भालोबेसेछि;
जनता वाहिया चिरदिन धरे
शुधु तुमि आमि एसेछि।
चेये चारि दिक पाने
की ये जेगे ओठे प्राणे—
तोमार-आमार असीम मिलन
येन गो सकलखाने।
कत युग एइ आकाशे यापिनु
से कथा अनेक भुलेछि,
ताराय ताराय ये आलो काँपिछे
से आलोके दोँहे दुलेछि।

तृणरोमाञ्च धरणीर पाने
आश्विने नव-आलोके
चेये देखि यबे आपनार मने
प्राण भरि उठे पुलके।
मने हय येन जानि
एइ अकथित वाणी—
मूक मेदिनीर मर्मेर माझे
जागिछे ये भावखानि।
एइ प्राणे-भरा माटिर भितरे
कत यग मोरा येपेछि

कत शरतेर सोनार आलोके
कत तृणे दों'हे के'पेछि।...

लक्ष बरष आगे ये प्रभात
उठेछिल एइ भुवने
ताहार अरुणकिरणकणिका
गाँथे नि कि मोर जीवने ?
से प्रभाते कोन्‌खाने
जेगेछिनु के वा जाने ?
की मुरति-माझे फुटाले आमारे
सेदिन लुकाये प्राणे ?
हे चिर-पुरानो, चिरकाल मोरे
गड़िछ नूतन करिया।
चिरदिन तुमि साथे छिले मोर,
रबे चिरदिन धरिया।

तत्वविद्याय आमार कोनो अधिकार नाइ। द्वैतवाद-अद्वैतवादेर कोनो तर्क उठिले आमि निरुत्तर हइया थाकिब। आमि केवल अनुभवेर दिक दिया बलितेछि, आमार मध्ये आमार अन्तर्देवतार एकटि प्रकाशेर आनन्द रहियाछे--सेइ आनन्द सेइ प्रेम आमार समस्त अङ्गप्रत्यङ्ग, आमार बुद्धिमन, आमार निकट प्रत्यक्ष एइ विश्वजगत्, आमार अनादि अतीत ओ अनन्त भविष्यत् परिप्लुत करिया आछे। ए लीला तो आमि किछुइ बुझि ना, किन्तु आमार मध्येइ नियत एइ एक प्रेमेर लीला। आमार चोखे ये आलो भालो लागितेछे, प्रभात-सन्ध्यार ये मेघेर छटा भालो लागितेछे, तृणतरुलतार ये श्यामलता भालो लागितेछे, प्रियजनेर ये मुखच्छबि भालो लागितेछे--समस्तइ सेइ प्रेमलीलार उद्वेल तरङ्गमाला। ताहातेइ जीवनेर समस्त सुखदुःखेर समस्त आलो-अन्धकारेर छाया खेलितेछे।

आमार मध्ये एइ याहा गड़िया उठितेछे एवं यिनि गड़ितेछेन, एइ उभयेर मध्ये ये-एकटि आनन्देर सम्बन्ध, ये एकटि नित्यप्रेमेर बन्धन आछे, ताहा जीवनेर समस्त घटनार मध्य दिया उपलब्धि करिले सुखदुःखेर मध्ये एकटि शान्ति आसे। यखन बुझिते पारि, आमार प्रत्येक आनन्देर उच्छ्वास तिनि आकर्षण करिया लइयाछेन, आमार प्रत्येक दुःखवेदना तिनि निजे ग्रहण करियाछेन, तखन जानि ये, किछुइ व्यर्थ हय नाइ, समस्तइ एकटा जगदव्यापी सम्पूर्णतार दिके धन्य हइया उठितेछे।

[आत्म-जीवनी लिखने का यह पहला प्रयत्न रवीन्द्रनाथ ने 'वंग-भाषार लेखक' के सम्पादक के आग्रह पर सन् १९०४ में किया था। यह 'बंगवासी' में बँगला संवत् १३११ में प्रकाशित हुआ। आत्म-चरित के बजाय इसने उनकी कविताओं की व्याख्या का रूप ले लिया। इसमें रवीन्द्रनाथ ने प्रेरणा से कविता लिखने की बात कही थी जो कुछ साहित्यिक अंचलों में तीव्र आलोचना का विषय बन गई।]

छेलेबेला

आमि जन्म नियेछिलुम सेकेले कलकाताय। शहरे श्याकरागाड़ि छुटछे तखन छड़् छड़् करे धुलो उड़िये, दड़िर चाबुक पड़छे हाड़-बेर-करा घोड़ार पिठे। ना छिल ट्राम, ना छिल बास, ना छिल मोटरगाड़ि। तखन काजेर एत बेशि हाँस-फाँसानि छिल ना, रये बसे दिन चलत। बाबुरा आपिसे येतेन कषे तामाक टेने निये पान चिबते चिबते, केउ वा पालकि च'ड़े, केउ वा भागेर गाड़िते। याँरा छिलेन टाकाओयाला ताँदेर गाड़ि छिल तकमा-आँका, चामड़ार आध-घोमटा-ओयाला, कोचबाक्से कोचमान बसत माथाय पागड़ि हेलिये, दुइ दुइ सइस थाकत पिछने, कोमरे चामर बाँधा, हेंइयो शब्दे चमक लागिये दित पाये-चलति मानुषके। मेयेदेर बाइरे याओया-आसा छिल दरजाबन्ध पालकिर हाँपधरानो अन्धकारे, गाड़ि चड़ते छिल भारि लज्जा। रोदवृष्टिते माथाय छाता उठत ना। कोनो मेयेर गाये सेमिज, पाये जुतो, देखले सेटाके बलत मेमसाहेबि, तार माने, लज्जा-शरमेर माथा खाओया। कोनो मेये यदि हठात् पड़त परपुरुषेर सामने, फस् करे तार घोमटा नामत नाकेर डगा पेरिये, जिभ केटे चट् करे दाँड़ात से पिठ फिरिये। घरे येमन तादेर दरजा बन्ध, तेमनि बाइरे बेरबार पालकितेओ; बड़ोमानुषेर झिबउदेर पालकिर उपरे आरओ एकटा ढाका चापा थाकत मोटा घटाटोपेर। देखते हत येन चलति गोरस्थान। पाशे पाशे चलत पितले-बाँधानो लाठि हाते दारोयानजि। ओदेर काज छिल देउड़िते बसे बाड़ि आगलानो, दाड़ि चोमरानो, व्याङ्के टाका आर कुटुमबाड़िते मेयेदेर पौंछिये देओया, आर पार्वणेर दिने गिन्निके बन्ध पालकि-सुद्ध गङ्गाय डुबिये आना। दरजाय फेरिओयाला आसत बाक्स साजिये, ताते शिउनन्दनेरओ किछु मुनफा थाकत। आर छिल भाड़ाटे गाड़िर गाड़ोयान, बखरा निये बनिये थाकते ये नाराज होत से देउड़िर सामने बाधिये दित विषम झगड़ा। आमादेर पालोयान जमादार सोभाराम थेके थेके बाँओ कषत, मुद्गुर भाँजत मस्त ओजनेर, बसे बसे सिद्धि घुंटत, कखनो वा काँचा शाक-सुद्ध मुलो खेत आरामे आर आमरा तार कानेर काछे चीत्कार करे उठतुम 'राधाकृष्ण'; से यतइ हाँ-हाँ करे दु हात तुलत आमादेर जेद ततइ बेड़े उठत। इष्टदेवतार नाम शोनबार जन्ये ऐ छिल तार फन्दि।

तखन शहरे ना छिल ग्यास, ना छिल बिजलि बाति; केरोसिनेर आलो परे

यखन एल तार तेज देखे आमरा अवाक। सन्ध्याबेलाय घरे घरे फरास एसे ज्वालिये येत रेड़िर तेलेर आलो। आमादेर पड़बार घरे ज्वलत दुइ-सलतेर एकटा सेज।

मास्टरमशाय मिटमिटे आलोय पड़ातेन प्यारी सरकारेर फार्स्टबुक। प्रथमे उठते हाइ, तार पर आसत घुम, तार पर चलत चोख-रगड़ानि। बारबार शुनते होत, मास्टरमशायेर अन्य छात्र सतीन सोनार टुकरो छेले, पड़ाय आश्चर्य मन, घुम पेले चोखे नस्यि घषे। आर आमि? से कथा ब'ले काज नेइ। सब छेलेर मध्ये एकला मुर्खु हये थाकबार मतो बिश्री भावनातेओ आमाके चेतिये राखते पारत ना। रात्रि न'टा बाजले घुमेर घोरे ढुलु ढुलु चोखे छुटि पेतुम। बाहिरमहल थेके बाड़िर भितर याबार सरु पथ छिल खड़्खड़िर आब्रु-देओया, उपर थेके झुलत मिटमिटे आलोर लण्ठन। चलतुम आर मन बलत की जानि किसे बुझि पिछु धरेछे। पिठ उठत शिउरे। तखन भूत प्रेत छिल गल्पे-गुजबे, छिल मानुषेर मनेर आनाचे कानाचे। कोन् दासी कखन हठात् शुनते पेत शाँकचुन्निर नाकि सुर, दड़ाम करे पड़त आछाड़ खेये। ऐ मेये-भूतटा सब-चेये छिल बदमेजाजि, तार लोभ छिल माछेर 'परे। बाड़िर पश्चिम कोणे घन-पाता-ओयाला बादामगाछ, तारइ डाले एक पा, आर अन्य पा'टा तेतालार कार्निसेर 'परे तुले दाँड़िये थाके एकटा कोन् मूर्ति—ताके देखेछे बलबार लोक तखन विस्तर छिल, मेने नेबार लोकओ कम छिल ना। दादार एक बन्धु यखन गल्पटा हेसे उड़िये दितेन तखन चाकररा मने करत लोकटार धर्मज्ञान एकटुओ नेइ, देबे एकदिन घाड़ मटकिये, तखन विद्ये याबे बेरिये। से समयटाते हाओयाय हाओयाय आतङ्क एमनि जाल फेले छिल ये, टेबिलेर निचे पा राखले पा सुड़सुड़ करे उठत।

तखन जलेर कल बसे नि। बेहारा बाँखे क'रे कलसि भ'रे माघ-फागुनेर गङ्गार जल तुले आनत। एकतलार अन्धकार घरे सारि सारि भरा थाकत बड़ो बड़ो जालाय सारा बछरेर खाबार जल। नीचेर तलाय सेइ-सब स्याँत्सेते एँधो कुटुरिते गा ढाका दिये यारा बासा करेछिल के ना जाने तादेर मस्त हाँ, चोख दुटो बुके, कान दुटो कुलोर मतो, पा दुटो उलटो दिके। सेइ भुतुड़े छायार सामने दिये एखन बाड़िभितरेर बागाने येतुम, तोलपाड़ करत बुकेर भितरटा, पाये लागात ताड़ा।

तखन रास्तार धारे धारे बाँधानो नाला दिये जोयारेर समय गङ्गार जल आसत। ठाकुरदार आमल थेके सेइ नालार जलेर बराद्द छिल आमादेर पुकुरे। यखन कपाट टेने देओया हत झरझर कलकल करे झरनार मतो जल फेनिये पड़त।

माछगुलो उलटो दिके साँतार काटबार कसरत देखाते चाइत। दक्षिणेर बारान्दाय रेलिङ धरे अवाक हये ताकिये थाकतुम। शेषकाले एल सेइ पुकुरेर काल घनिये, पड़ल तार मध्ये गाड़ि-गाड़ि राबिश। पुकुरटा बुजे येतेइ पाड़ागाँयेर सबुज-छाया-पड़ा आयनाटा येन गेल सरे। सेइ बादामगाछटा एखनो दाँड़िये आछे, किन्तु अमन पा फाँक करे दाँड़ाबार सुविधे थाकतेओ सेइ ब्रह्मदत्यिर ठिकाना आर पाओया याय ना।

भितरे बाइरे आलो बेड़े गेछे।

(२)

छादेर राज्ये नतुन हाओया बइल, नामल नतुन ऋतु।

तखन पितृदेव जोड़ासाँकोय बास छेड़ेछिलेन। ज्योतिदादा एसे बसलेन बाइरेर तेतलार घरे। आमि एकटु जायगा निलुम तारइ एकटि कोणे।

अन्दर महलेर पर्दा रइल ना। आज ए कथा नतुन ठेकबे ना, किन्तु तखन एत नतुन छिल ये मेपे देखले तार थइ पाओया याय ना। तारओ अनेक काल आगे, आमि तखन शिशु, मेजदादा सिभिलियन हये देशे फिरेछेन। बोम्बाइये प्रथम ताँर काजे योग दिते याबार समय बाइरेर लोकदेर अवाक करे दिये तादेर चोखेर सामने दिये बौठाकरुनके सङ्गे निये गेलेन। बाड़िर बौके परिवारेर मध्ये ना रेखे दूर विदेशे निये याओया एइ तो छिल यथेष्ट, तार उपरे याबार पथे ढाकाढाकि नेइ—ए ये होलो विषम बेदस्तुर। आपन लोकदेर माथाय आकाश भेङे पडल।

बाइरे बेरबार मतो कापड़ तखनो मेयेदेर मध्ये चलति हय नि। एखन शाड़ि जामा दिये ये साजेर चलन हयेछे तारइ प्रथम शुरू करेछिलेन बौठाकरुन।

वेणी दुलिये तखनो फ्रक धरे नि छोटो मेयेरा। अन्तत आमादेर बाड़िते। छोटोदेर मध्ये चलन छिल पेशोयाजेर। बेथुन इस्कुल यखन प्रथम खोला हल आमार बड़दिदिर छिल अल्प वयस। सेखाने मेयेदेर पड़ाशोनार पथ सहज करबार प्रथम दलेर छिलेन तिनि। धबधबे ताँर रङ। ए देशे तार तुलना पाओया येत ना। शुनेछि पालकिते करे स्कुले याबार समय पेशोयाज-परा ताँके चुरि-करा इंरेज मेये मने करे पुलिसे एकबार धरेछिल।

आगेइ बलेछि सेकाले बड़ोछोटोर मध्ये चलाचलेर साँकोटा छिल ना। किन्तु एइ-सकल पुरोनो कायदार भिड़ेर मध्ये ज्योतिदादा एसेछिलेन निर्जला

नतुन मन निये। आमि छिलुम ताँर चेये बारो बछरेर छोटो। वयसेर एत दूर थेके आमि ये ताँर चोखे पड़तुम एइ आश्चर्य। आरो आश्चर्य एइ ये, ताँर सङ्गे आलापे ज्याठामि ब'ले कखनो आमार मुखचापा देन नि। ताइ कोनो कथा भावते आमार साहसे अकुलोन हय नि। आज छेलेदेर मध्येइ आमार वास। पाँचरकम कथा पाड़ि, देखि तादेर मुख बोजा। जिज्ञेसा करते एदेर बाधे। बुझते पारि, एरा सब सेइ बुड़ोदेर कालेर छेले ये काले बड़ोरा कइत कथा आर छोटोरा थाकत बोबा। जिज्ञासा करबार साहस नतुन कालेर छेलेदेर; आर बुड़ोकालेर छेलेरा सब-किछु मेने नेय घाड़ गुँजे।

छादेर घरे एल पियानो। आर एल एकालेर वार्निशकरा बौबाजारेर आसबाब। बुकेर छाति उठल फुले। गरिबेर चोखे देखा दिल हाल-आमलेर सस्ता आमिरि।

एइबार छुटल आमार गानेर फोयारा। ज्योतिदादा पियानोर उपर हात चालिये नतुन नतुन भङ्गिते झमाझम सुर तैरि करे येतेन, आमाके राखतेन पाशे। तखनि सेइ छुटे-चला सुरे कथा बसिये बँधे राखबार काज छिल आमार।

दिनेर शेषे छादेर उपर पड़त मादुर आर ताकिया। एकटा रुपार रेकाबिते बेलफुलेर गोड़े माला भिजे रुमाल, पिरिचे एकग्लास बरफ-देओया जल आर बाटाते छाँचिपान।

बौठाकरुन गा धुये चुल बँधे तैरि हये बसतेन। गाये एकखाना पातला चादर उड़िये आसतेन ज्योतिदादा, बेहालाते लागातेन छड़ि, आमि धरतुम चड़ा सुरेर गान। गलाय येटुकु सुर दियेछिलेन विधाता तखनओ ता फिरिये नेन नि। सूर्य-डोबा आकाशे छादे छादे छड़िय येत आमार गान। हु हु करे दक्षिणे वातास उठत दूर समुद्र थेके, ताराय ताराय येत आकाश भ'रे।

छादटाके बौठाकरुन एकेबारे बागान बानिये तुलेछिलेन। पिल्पेर उपरे सारि सारि लम्बा पाम गाछ; आशेपाशे चामेलि गन्धराज रजनीगन्धा करबी दोलनचाँपा। छाद-जखमेर कथा मनेइ आनेन नि, सबाइ छिलेन खेयालि।

प्राय आसतेन अक्षय चौधुरी। ताँर गलाय सुर छिल ना सेकथा तिनिओ जानतेन, अन्येरा आरो बेशि जानत। किन्तु ताँर गावार जेद किछुते थामत ना। विशेष करे बेहाग रागिणीते छिल ताँर शख। चोख बुजे गाइतेन, यारा शुनत तादेर मुखेर भाव देखते पेतेन ना। हातेर काछे आओयाजओयाला किछु पेलेइ दाँत दिये ठोंट कामड़े धरे पटापट शब्दे ताकेइ बाँया-तबलार बदलि करे नितेन। मलाट-बाँधानो बइ थाकले भालोइ चलत। भावे भोर मानुष, ताँर छुटिर दिनेर सङ्गे काजेर दिनेर तफात बोझा येत ना।

सन्धेवेलार सभा येत भेङे। आमि चिरकाल छिलुम रात-जागिये छेले। सकले शुते येत, आमि घुरे घुरे बेड़ातुम, ब्रह्मदत्तिर चेला। समस्त पाड़ा चुपचाप। चाँदनि राते छादेर उपर सारि सारि गाछेर छाया येन स्वप्नेर आल्पना। छादेर बाइरे सिसु गाछेर माथाटा बातासे दुले उठछे, झिल्मिल् करछे पातागुलो। जानि ने केन सबचेये चोखे पड़त सामनेर गलिर घुमन्त बाड़िर छादे एकटा ढालु-पिठओयाला बेंटे चिलेकोठा। दाँड़िये दाँड़िये किसेर दिके येन आङुल बाड़िये रयेछे।

रात एकटा हय, दुटो हय। सामनेर बड़ो रास्ताय रव ओठे, 'बलो हरि, हरिबोल।'

जीवनस्मृति

शिक्षारम्भ

आमरा तिनटि बालक[1] एकसङ्गे मानुष हइतेछिलाम। आमार सङ्गीदुटि आमार चेये दुइ बछरेर बड़ो। ताँहारा यखन गुरुमहाशयेर[2] काछे पड़ा आरम्भ करिलेन आमारओ शिक्षा सेइ समये शुरु हइल,[3] किन्तु से-कथा आमार मनेओ नाइ।

केवल मने पड़े, 'जल पड़े पाता नड़े।' तखन 'कर, खल' प्रभृति बानानेर तुफान काटाइया सबेमात्र कूल पाइयाछि। सेदिन, पड़ितेछि, 'जल पड़े पाता नड़े।'[4] आमार जीवने एइटेइ आदिकविर प्रथम कविता। सेदिनेर आनन्द आजओ यखन मने पड़े तखन बुझिते पारि, कवितार मध्ये मिल जिनिसटार एत प्रयोजन केन। मिल आछे बलियाइ कथाटा शेष हइयाओ शेष हय ना— ताहार वक्तव्य यखन फुराय तखनो ताहारा झंकारटा फुराय ना—मिलटाके लइया कानेर सङ्गे मनेर सङ्गे खेला चलिते थाके। एमनि करिया फिरिया फिरिया सेदिन आमार समस्त चैतन्येर मध्ये जल पड़िते ओ पाता नड़िते लागिल।

एइ शिशुकालेर आर-एकटा कथा मनेर मध्ये बाँधा पड़िया गेछे। आमादेर एकटि अनेक कालेर खाजाञ्चि छिल, कैलास मुखुज्ये ताहार नाम। से आमादेर घरेर आत्मीयेरइ मतो। लोकटि भारि रसिक। सकलेर सङ्गेइ ताहार हासि तामाशा। बाड़िते नूतनसमागत जामातादिगके से विद्रुपे कौतुके विपन्न करिया तुलित। मृत्युर परेओ ताहार कौतुकपरता कमे नाइ, एरूप जनश्रुति आछे। एकसमये आमार गुरुजनेरा प्ल्याञ्च्येट-योगे परलोकेर सहित डाक बसाइबार चेष्टाय प्रवृत्त छिलेन। एकदिन ताँहादेर प्ल्याञ्च्येटेर पेन्सिलेर रेखाय कैलास मुखुज्येर नाम देखा दिल। ताहाके जिज्ञासा करा हइल, तुमि येखाने आछ सेखानकार व्यवस्थाटा किरूप, बलो देखि। उत्तर आसिल, आमि मरिया याहा जानियाछि, आपनारा बाँचियाइ ताहा फाँकि दिया जानिते चान? सेटि हइबे ना।

---

१. "आमार दादा सोमेन्द्रनाथ, आमार भागिनेय सत्यप्रसाद (गङ्गोपाध्याय) एवं आमि।"—पाण्डुलिपि
२. माधवचन्द्र मुखोपाध्याय—र-कथा
३. बाड़िर चण्डीमण्डपेर पाठशालाय—छेलेवेला, अध्याय ८
४. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रणीत वर्णपरिचय प्रथम भाग

सेइ कैलास मुखुज्ये आमार शिशुकाले अति द्रुतवेगे मस्त एकटा छड़ार मतो बलिया आमार मनोरञ्जन करित। सेइ छड़ाटार प्रधान नायक छिलाम आमि एवं ताहार मध्ये एकटि भावी नायिकार निःसंशय समागमेर आशा अतिशय उज्ज्वलभावे वर्णित छिल। एइ ये भुवनमोहिनी वधुटि भवितव्यतार कोल आलो करिया विराज करितेछिल, छड़ा शुनिते शुनिते ताहार चित्रटिते मन भारि उत्सुक हइया उठित। आपादमस्तक ताहार ये बहुमूल्य अलंकारेर तालिका पाओया गियाछिल एवं मिलनोत्सवेर ये अभूतपूर्व समारोहेर वर्णना शुना याइत, ताहाते अनेक प्रवीण-वयस्क सुविवेचक व्यक्तिर मन चञ्चल हइते पारित—किन्तु बालकेर मन ये मातिया उठित एवं चोखेर सामने नानावर्णे विचित्र आश्चर्य सुखच्छबि देखिते पाइत, ताहार मूल कारण छिल सेइ द्रुत-उच्चारित अनर्गल शब्द-च्छटा एवं छन्देर दोला। शिशुकालेर साहित्यरसभोगेर एइ दुटो स्मृति एखनो जागिया आछे—आर मने पड़े, 'वृष्टि पड़े टापुर टुपुर नदेय एल बान।' ओइ छड़ाटा येन शैशवेर मेघदूत।

ताहार परे ये-कथाटा मने पड़ितेछे ताहा इस्कुले याओयार सूचना। एकदिन देखिलाम, दादा एवं आमार वयोज्येष्ठ भागिनेय सत्य इस्कुले गेलेन, किन्तु आमि इस्कुले याइबार योग्य बलिया गण्य हइलाम ना। उच्चैःस्वरे कान्ना छाड़ा योग्यता प्रचार करार आर-कोनो उपाय आमार हाते छिल ना। इहार पूर्वे कोनोदिन गाड़िओ चड़ि नाइ बाड़िर बाहिरओ हइ नाइ, ताइ सत्य यखन इस्कुल-पथेर भ्रमण-वृत्तान्तटिके अतिशयोक्ति-अलंकारे प्रत्यहइ अत्युज्ज्वल करिया तुलिते लागिल तखन घरे आर मन किछुतेइ टिकिते चाहिल ना। यिनि आमादेर शिक्षक छिलेन तिनि आमार मोह विनाश करिबार जन्य प्रबल चपेटाघातसह एइ सारगर्भ कथाटि बलियाछिलेन, "एखन इस्कुले याबार जन्य येमन काँदितेछ, ना याबार जन्य इहार चेये अनेक बेशि काँदिते हइबे।" सेइ शिक्षकेर नामधाम आकृतिप्रकृति आमार किछुइ मने नाइ—किन्तु सेइ गुरुवाक्य ओ गुरुतर चपेटाघात स्पष्ट मने जागितेछे। एतबड़ो अव्यर्थ भविष्यवाणी जीवने आर-कोनोदिन कर्णगोचर हय नाइ।

कान्नार जोरे ओरियेण्टाल सेमिनारिते[1] अकाले भरति हइलाम। सेखाने की शिक्षालाभ करिलाम मने नाइ किन्तु एकटा शासनप्रणालीर कथा मने आछे। पड़ा बलिते ना पारिले छेलेके बेञ्चे दाँड़ कराइया ताहार दुइ प्रसारित हातेर

---

१. गौरमोहन आढ्येर विद्यालय, स्थापित १८२३। विद्यालयटि तखन 'गरानहाटाय गोराचाँद बशाखेर बाटीते" अवस्थित छिल।

उपर क्लासेर अनेकगुलि श्लेट एकत्र करिया चापाइया देओया हइत। एरूपे धारणशक्तिर अभ्यास बाहिर हइते अन्तरे सञ्चारित हइते पारे किना ताहा मनस्तत्त्वविद्दिगेर आलोच्य।

एमनि करिया नितान्त शिशुवयसेइ आमार पड़ा आरम्भ हइल। चाकरदेर महले ये-सकल बइ प्रचलित छिल ताहा लइयाइ आमार साहित्यचर्चार सूत्रपात हय। ताहार मध्ये चाणक्यश्लोकेर बांला अनुवाद ओ कृत्तिवास-रामायणइ प्रधान। सेइ रामायण पड़ार एकटा दिनेर छबि मने स्पष्ट जागितेछे।

सेदिन मेघला करियाछे; बाहिरबाड़िते रास्तार धारेर लम्बा बारान्दाटाते खेलितेछि। मने नाइ सत्य की कारणे आमाके भय देखाइबार जन्य हठात् 'पुलिसम्यान' 'पुलिसम्यान' करिया डाकिते लागिल। पुलिसम्यानेर कर्त्तव्य सम्बन्धे अत्यन्त मोटामुटि रकमेर एकटा धारणा आमार छिल। आमि जानिताम, लोकके अपराधी बलिया ताहादेर हाते दिबामात्रइ, कुमिर येमन खाँजकाटा दाँतेर मध्ये शिकारके विद्ध करिया जलेर तले अदृश्य हइया याय, तेमनि करिया हत-भाग्यके चापिया धरिया अतलस्पर्श थानार मध्ये अन्तर्हित हओयाइ पुलिसकर्मचारीर स्वाभाविक धर्म। एरूप निर्मम शासनविधि हइते निरपराध बालकेर परित्राण कोथाय ताहा भाविया ना पाइया एकेबारे अन्तःपुरे दौड़ दिलाम; पश्चाते ताहारा अनुसरण करितेछे एइ अन्धभय आमार समस्त पृष्ठदेशके कुण्ठित करिया तुलिल। माके[1] गिया आमार आसन्न विपदेर संवाद जानाइलाम; ताहाते ताँहार विशेष उत्कण्ठार लक्षण प्रकाश पाइल ना। किन्तु आमि बाहिरे याओया निरापद बोध करिलाम ना। दिदिमा, आमार मातार कोनो-एक सम्पर्के खुड़ि[2], ये कृत्तिवासेर रामायण पड़ितेन सेइ मार्बेलकागज-मण्डित कोणछेंड़ा-मलाटओयाला मलिन बइखानि कोले लइया मायेर घरेर द्वारेर काछे पड़िते बसिया गेलाम। सम्मुखे अन्तःपुरेर आङिना घेरिया चौकोण बारान्दा; सेइ बारान्दाय मेघाच्छन्न आकाश हइते अपराह्णेर म्लान आलो आसिया पड़ियाछे। रामायणेर कोनो-एकटा करुण वर्णनाय आमार चोख दिया जल पड़ितेछे देखिया दिदिमा जोर करिया आमार हात हइते बइटा काड़िया लइया गेलेन।

---

१. सारदादेवी (१८२४-७५), विवाह १८२९-३०। मतान्तरे (रवीन्द्र कथा पृ० १-४) : सारदादेवीर जन्म, इं १८२६; विवाह, फाल्गुन १२४० (१८३४)

२. सारदादेवीर "काकार द्वितीय पक्षेर विधवा स्त्री", "तिनि प्राय मायेर (सारदादेवीर) समवयसी छिलेन।"—ज्ञानदानन्दिनी देवीर आत्मचरित, पाण्डुलिपि

घर ओ बाहिर

आमादेर शिशुकाले भोगविलासेर आयोजन छिल ना बलिलेइ हय। मोटेर उपरे तखनकार जीवनयात्रा एखनकार चेये अनेक बेशि सादासिधा छिल। तखनकार कालेर भद्रलोकेर मानरक्षार उपकरण देखिले एखनकार काल लज्जाय ताहार सङ्गे सकल प्रकार सम्बन्ध अस्वीकार करिते चाहिबे। एइ तो तखनकार कालेर विशेषत्व, ताहार 'परे आबार विशेषभावे आमादेर बाड़िते छेलेदेर प्रति अत्यन्त बेशि दृष्टि दिबार उत्पात एकेबारेइ छिल ना। आसले, आदर करा व्यापारटा अभिभावकदेरइ विनोदनेर जन्य, छेलेदेर पक्षे एमन बालाइ आर नाइ।

आमरा छिलाम चाकरदेरइ शासनेर अधीने। निजेदेर कर्त्तव्यके सरल करिया लइबार जन्य ताहारा आमादेर नड़ाचड़ा एक प्रकार बन्ध करिया दियाछिल। सेदिके बन्धन यतइ कठिन थाक्, अनादर एकटा मस्त स्वाधीनता—सेइ स्वाधीनताय आमादेर मन मुक्त छिल। खाओयानो-परानो साजानो-गोजानोर द्वारा आमादेर चित्तके चारिदिक हइते एकेबारे ठासिया धरा हय नाइ।

आहारे आमादेर शौखिनतार गन्धओ छिल ना। कापड़चोपड़ एतइ यत्सामान्य छिल ये एखनकार छेलेर चक्षे ताहार तालिका धरिले सम्मानहानिर आशङ्का आछे। वयस दशेर कोठा पार हइबार पूर्वे कोनोदिन कोनो कारणेइ मोजा परि नाइ। शीतेर दिने एकटा सादा जामार उपरे आर-एकटा सादा जामाइ यथेष्ट छिल। इहाते कोनोदिन अदृष्टके दोष दिइ नाइ। केवल, आमादेर बाड़िर दरजि नेयामत खलिफा अवहेला करिया आमादेर जामाय पकेट-योजना अनावश्यक मने करिले दुःख बोध करिताम—कारण, एमन बालक कोनो अकिञ्चनेर घरेओ जन्मग्रहण करे नाइ, पकेटे राखिबार मतो स्थावर-अस्थावर सम्पत्ति याहार किछुमात्र नाइ; विधातार कृपाय शिशुर ऐश्वर्य सम्बन्धे धनी ओ निर्धनेर घरे बेशि किछु तारतम्य देखा याय ना। आमादेर चटिजुता एकजोड़ा थाकित, किन्तु पा दुटा येखाने थाकित सेखाने नहे। प्रतिपदक्षेपे ताहादिगके आगे आगे निक्षेप करिया चलिताम—ताहाते यातायातेर समय पदचालना अपेक्षा जुताचालना एत बाहुल्य परिमाणे हइत ये पादुकासृष्टिर उद्देश्य पदे पदे व्यर्थ हइया याइत।

आमादेर चेये याँहारा बड़ो ताँहादेर गतिविधि, वेशभूषा, आहारविहार, आराम-आमोद, आलाप-आलोचना, समस्तइ आमादेर काछ हइते बहुदूरे छिल।

ताहार आभास पाइताम किन्तु नागाल पाइताम ना। एखनकार काले छेलेरा गुरुजनदिगके लघु करिया लइयाछे; कोथाओ ताहादेर कोनो बाधा नाइ एवं ना चाहितेइ ताहारा समस्त पाय। आमरा एत सहजे किछुइ पाइ नाइ। कत तुच्छ सामग्रीओ आमादेर पक्षे दुर्लभ छिल; बड़ो हइले कोनो-एक समये पाओया याइबे, एइ आशाय ताहादिगके दूर भविष्यतेर जिम्माय समर्पण करिया बसिया छिलाम। ताहार फल हइयाछिल एइ ये, तखन सामान्य याहाकिछु पाइताम ताहार समस्त रसटुकु पुरा आदाय करिया लइताम, ताहार खोसा हइते आँठि पर्यन्त किछुइ फेला याइत ना। एखनकार सम्पन्न घरेर छेलेदेर देखि, ताहारा सहजेइ सब जिनिस पाय बलिया ताहार बारो आनाकेइ आधखाना कामड़ दिया विसर्जन करे—ताहादेर पृथिवीर अधिकांशइ ताहादेर काछे अपव्ययेइ नष्ट हय।

बाहिरबाड़िते दोतलाय दक्षिणपूर्व कोणेर घरे चाकरदेर महले आमादेर दिन काटित।

आमादेर एक चाकर छिल, ताहार नाम श्याम। श्यामवर्ण दोहारा बालक, माथाय लम्बा चुल, खुलना जेलाय ताहार बाड़ि। से आमाके घरेर एकटि निर्दिष्ट स्थाने बसाइया आमार चारिदिके खड़ि दिया गण्डि काटिया दित। गम्भीर मुख करिया तर्जनी तुलिया बलिया याइत, गण्डिर बाहिरे गेलेइ विषम विपद। बिपदटा आधिभौतिक कि आधिदैविक ताहा स्पष्ट करिया बुझिताम ना, किन्तु मने बड़ो एकटा आशङ्का हइत। गण्डि पार हइया सीतार की सर्वनाश हइया-छिल ताहा रामायणे पड़ियाछिलाम, एइजन्य गण्डिटाके नितान्त अविश्वासीर मतो उड़ाइया दिते पारिताम ना।

जानालार निचेइ एकटि घाटबाँधानो पुकुर छिल। ताहार पूर्वधारेर प्राचीरेर गाये प्रकाण्ड एकटा चीना बट—दक्षिणधारे नारिकेलश्रेणी। गण्डि-बन्धनेर वन्दी आमि जानलार खड़खड़ि खुलिया प्राय समस्तदिन सेइ पुकुरटाके एकखाना छबिर बहिर मतो देखिया देखिया काटाइया दिताम। सकाल हइते देखिताम, प्रतिवेशीरा एके एके स्नान करिते आसितेछे। ताहादेर के कखन आसिबे आमार जाना छिल। प्रत्येकेर स्नानेर विशेषत्वटुकुओ आमार परिचित। केह्-वा दुइ काने आङुल चापिया झुप्‌झुप् करिया द्रुतवेगे कतकगुला डुब पाड़िया चलिया याइत; केह्-वा डुब ना दिया गामछाय जल तुलिया घन घन माथाय ढालिते थाकित; केह्-वा जलेर उपरिभागे मलिनता एड़ाइबार जन्य बारबार दुइ हाते जल काटाइया लइया हठात् एकसमये धाँ करिया डुब पाड़ित; केह्-वा उपरेर सिँड़ि हइतेइ बिना भूमिकाय सशब्दे जलेर मध्ये झाँप दिया पड़िया आत्म-समर्पण करित; केह्-वा जलेर मध्ये नामिते नामिते एक निश्वासे कतकगुलि

श्लोक आओड़ाइया लइत; केह-वा व्यस्त, कोनोमते स्नान सारिया लइया बाड़ि याइबार जन्य उत्सुक; काहारो-वा व्यस्तता लेशमात्र नाइ, धीरेसुस्थे स्नान करिया, गा मुछिया, कापड़ छाड़िया, कोँचाटा दुइ-तिनबार झाड़िया, बागान हइते किछु-वा फुल तुलिया, मृदुमन्द दोदुलगतिते स्नानस्निग्ध शरीरेर आरामटिके वायुते विकीर्ण करिते बाड़िर दिके ताहार यात्रा। एमनि करिया दुपुर बाजिया याय, वेला एकटा हय। क्रमे पुकुरेर घाट जनशून्य, निस्तब्ध। केवल राजहाँस ओ पातिहाँसगुला सारावेला डुब दिया गुगलि तुलिया खाय एवं चञ्चुचालना करिया व्यतिव्यस्तभावे पिठेर पालक साफ करिते थाके।

पुष्करिणी निर्जन हइया गेले सेइ बटगाछेर तलाटा आमार समस्त मनके अधिकार करिया लइत। ताहार गुँड़िर चारिधारे अनेकगुला झुरि नामिया एकटा अन्धकारमय जटिलतार सृष्टि करियाछिल। सेइ कुहकेर मध्ये, विश्वेर सेइ एकटा अस्पष्ट कोणे येन भ्रमक्रमे विश्वेर नियम ठेकिया गेछे। दैवात् सेखाने येन स्वप्नयुगेर एकटा असम्भवेर राजत्व विधातार चोख एड़ाइया आजओ दिनेर आलोर माझखाने रहिया गियाछे। मनेर चक्षे सेखाने ये काहादेर देखिताम एवं ताहादेर क्रियाकलाप ये की रकम, आज ताहा स्पष्ट भाषाय बला असम्भव। एइ बटकेइ उद्देश करिया एकदिन लिखियाछिलाम --

निशिदिशि दाँड़िये आछ माथाय लये जट,
छोटो छेलेटि मने कि पड़े, ओगो प्राचीन बट।[1]

किन्तु हाय, से-बट एखन कोथाय! ये-पुकुरटि एइ वनस्पतिर अधिष्ठात्री-देवतार दर्पण छिल ताहाओ एखन नाइ; याँहारा स्नान करित ताहाराओ अनेकेइ एइ अन्तर्हित बटगाछेर छायारइ अनुसरण करियाछे। आर, सेइ बालक आज बाड़िया उठिया निजेर चारिदिक हइते नानाप्रकारेर झुरि नामाइया दिया विपुल जटिलतार मध्ये सुदिनदुर्दिनेर छायारौद्रपात गणना करितेछे।

बाड़िर बाहिरे आमादेर याओया वारण छिल, एमन-कि बाड़िर भितरेओ आमरा सर्वत्र येमन-खुशि याओया-आसा करिते पारिताम ना। सेइजन्य विश्व-प्रकृतिके आड़ाल-आवडाल हइते देखिताम। बाहिर बलिया एकटि अनन्त-प्रसारित पदार्थ छिल याहा आमार अतीत, अथच याहार रूप शब्द गन्ध द्वार-

१. द्र. 'पुरोनो बट', शिशु, रचनावली ९

जानलार नाना फाँक-फुकर दिया एदिक-ओदिक हइते आमाके चकिते छुँइया याइत। से येन गरादेर व्यवधान दिया नाना इशाराय आमार सङ्गे खेला करिबार नाना चेष्टा करित। से छिल मुक्त, आमि छिलाम बद्ध,--मिलनेर उपाय छिल ना, सेइजन्य प्रणयेर आकर्षण छिल प्रबल। आज सेइ खड़िर गण्डि मुछिया गेछे, किन्तु गण्डि तबु घोचे नाइ। दूर एखनो दूरे, बाहिर एखनो बाहिरेइ। बड़ो हइया ये कविताटि[1] लिखियाछिलाम ताहाइ मने पड़े--

खाँचार पाखि छिल सोनार खाँचाटिते,
वनेर पाखि छिल वने।
एकदा की करिया मिलन हल दोँहे,
की छिल विधातार मने।
वनेर पाखि बले, "खाँचार पाखि, आय,
वनेते याइ दोँहे मिले।"
खाँचार पाखि बले, "वनेर पाखि, आय,
खाँचाय थाकि निरिविले।"
वनेर पाखि बले, "ना,
आमि शिकले धरा नाहि दिब।"
खाँचार पाखि बले, "हाय,
आमि केमने वने बाहिरिब।"

आमादेर बाड़िर भितरेर छादेर प्राचीर आमार माथा छाड़इया उठित। यखन एकटु बड़ो हइयाछि एवं चाकरदेर शासन किञ्चित् शिथिल हइयाछे, यखन बाड़िते नूतन बधूसमागम हइयाछे एवं अवकाशेर सङ्गीरूपे ताँहार काछे प्रश्रय लाभ करितेछि, तखन एक-एकदिन मध्याह्ने सेइ छादे आसिया उपस्थित हइताम। तखन बाड़िते सकलेर आहारशेष हइया गियाछे; गृहकर्मे छेद पड़ियाछे; अन्तःपुर विश्रामे निमग्न; स्नानसिक्त शाड़िगुलि छादेर कार्निसेर उपर हइते झुलितेछे; उठानेर कोणे ये उच्छिष्ट भात पड़ियाछे ताहारइ उपर काकेर दलेर सभा बसिया गेछे। सेइ निर्जन अवकाशे प्राचीरेर रन्ध्रेर भितर हइते एइ खाँचार पाखिर सङ्गे ओइ वनेर पाखिर चञ्चुते चञ्चुते परिचय चलित। दाँड़ाइया चाहिया थाकिताम--चोखे पड़ित आमादेर बाड़िर भितरेर बागान-प्रान्तेर नारिकेल-

१. द्र. 'दुइ पाखि', सोनारतरी, रचनावली ३

श्रेणी; ताहारइ फाँक दिया देखा याइत 'सिङ्गिर बागान' पल्लीर एकटा पुकुर एवं सेइ पुकुरेर धारे ये तारा गयलानी आमादेर दुध दित ताहारइ गोयालघर; आरो दूरे देखा याइत तरुचूड़ार सङ्गे मिशिया कलिकाता शहरेर नाना आकारेर ओ नाना आयतनेर उच्चनीच छादेर श्रेणी मध्याह्नरौद्रे प्रखर शुभ्रता विच्छुरित करिया पूर्वदिगन्तेर पाण्डुवर्ण नीलिमार मध्ये उधाओ हइया चलिया गियाछे। सेइ सकल अतिदूर बाड़िर छादे एक-एकटा चिलेकोठा उँचु हइया थाकित; मने हइत, ताहारा येन निश्चल तर्जनी तुलिया चोख टिपिया आपनार भितरकार रहस्य आमार काछे संकेते बलिबार चेष्टा करितेछे। भिक्षुक येमन प्रासादेर बाहिरे दाँड़ाइया राजभाण्डारेर रुद्ध सिन्धुकगुलार मध्ये असम्भव रत्नमानिक कल्पना करे, आमिओ तेमनि ओइ अजाना बाड़िगुलिके कत खेला ओ कत स्वाधीनताय आगागोड़ा बोझाइ-करा मने करिताम ताहा बलिते पारि ना। माथार उपरे आकाशव्यापी खरदीप्ति, ताहारइ दूरतम प्रान्त हइते चिलेर सूक्ष्म तीक्ष्ण डाक आमार काने आसिया पौंछित एवं सिङ्गिर बागानेर पाशेर गलिते दिवासुप्त निस्तब्ध बाड़िगुलार सम्मुख दिया पसारी करिया सुर 'चाइ, चुड़ि चाइ, खेलोना चाइ' हाँकिया याइत––ताहाते आमार समस्त मनटा उदास करिया दित।

पितृदेव प्रायइ भ्रमण करिया बेड़ाइतेन, बाड़िते थाकितेन ना। ताँहार तेतालार घर बन्ध थाकित। खड़खड़ि खुलिया हात गलाइया, छिटकिनि टानिया दरजा खुलिताम एवं ताँहार घरेर दक्षिण प्रान्ते एकटि सोफा छिल––सेइटिते चुप करिया पड़िया आमार मध्याह्न काटित। एके तो अनेक दिनेर बन्ध-करा घर, निषिद्धप्रवेश, से-घरे येन एकटा रहस्येर घन गन्ध छिल। ताहार परे सम्मुखेर जनशून्य खोला छादेर उपर रौद्र झाँ झाँ करित, ताहातेओ मनटाके उदास करिया दित। तार उपरे आरो एकटा आकर्षण छिल। तखन सबेमात्र शहरे जलेर कल हइयाछे। तखन नूतन महिमार औदार्ये बाङालिपाड़ातेओ ताहार कार्पण्य शुरु हय नाइ। शहरेर उत्तरे दक्षिणे ताहार दाक्षिण्य समान छिल। सेइ जलेर कलेर सत्ययुगे आमार पितार स्नानेर घरे तेतालातेओ जल पाओया याइत। झाँझरि खुलिया दिया अकाले मनेर साध मिटाइया स्नान करिताम। से-स्नान आरामेर जन्य नहे, केवलमात्र इच्छाटाके लागाम छाड़िया दिबार जन्य। एकदिके मुक्ति, आर-एकदिके बन्धनेर आशङ्का, एइ दुइये मिलिया कोम्पानिर कलेर जलेर धारा आमार मनेर मध्ये पुलकशर वर्षण करित।

बाहिरेर संस्रव आमार पक्षे यतइ दुर्लभ थाक्, बाहिरेर आनन्द आमार पक्षे हयतो सेइ कारणेइ सहज छिल। उपकरण प्रचुर थाकिले मनटा कुँड़े हइया पड़े; सेइ केवलइ बाहिरेर उपरेइ सम्पूर्ण बरात दिया बसिया थाके, भुलिया याय, आनन्देर

भोजे बाहिरेर चेये अन्तरेर अनुष्ठानटाइ गुरुतर। शिशुकाले मानुषेर सर्वप्रथम शिक्षाटाइ एइ। तखन ताहार सम्बल अल्प एवं तुच्छ, किन्तु आनन्दलाभेर पक्षे इहार चेये बेशि ताहार किछुइ प्रयोजन नाइ। संसारे ये हतभाग्य शिशु खेलार जिनिस अपर्याप्त पाइया थाके ताहार खेला माटि हइया याय।

बाड़िर भितरे आमादेर ये-बागान छिल ताहाकेबागान बलिले अनेकटा बेशि बला हय। एकटा बातावि लेबु, एकटा कुलगाछ, एकटा बिलाति आमड़ा ओ एकसार नारिकेलगाछ ताहार प्रधान संगति। माझखाने छिल एकटा गोलाकार बाँधानो चाताल। ताहार फाटलेर रेखाय रेखाय घास ओ नानाप्रकार गुल्म अनधिकार प्रवेशपूर्वक जबर-दखलेर पताका रोपण करियाछिल। ये-फुल-गाछगुलो अनादरेओ मरिते चाय ना ताहाराइ मालीर नामे कोनो अभियोग ना आनिया, निरभिमाने यथाशक्ति आपन कर्त्तव्य पालन करिया याइत। उत्तर-कोणे एकटा ढेंकिघर छिल, सेखाने गृहस्थालिर प्रयोजने माझे माझे अन्तःपुरिकादेर समागम हइत। कलिकाताय पल्लीजीवनेर सम्पूर्ण पराभव स्वीकार करिया एइ ढेंकिशालाटि कोन्-एकदिन निःशब्दे मुख ढाकिया अन्तर्धान करियाछे। प्रथम-मानव आदमेर स्वर्गोद्यानटि ये आमादेर एइ बागानेर चेये बेशि सुसज्जित छिल, आमार एरूप विश्वास नहे। कारण, प्रथम-मानवेर स्वर्गलोक आवरण-हीन---आयोजनेर द्वारा से आपनाके आच्छन्न करे नाइ। ज्ञानवृक्षेर फल खाओयार पर हइते ये-पर्यन्त ना सेइ फलटाके सम्पूर्ण हजम करिते पारितेछे, से-पर्यन्त मानुषेर साजसज्जार प्रयोजन केवलइ बाड़िया उठितेछे। बाड़िर भितरेर बागान आमार सेइ स्वर्गेर बागान छिल---सेइ आमार यथेष्ट छिल। बेश मने पड़े, शरत्कालेर भोरवेलाय घुम भाङिलेइ एइ बागाने आसिया उपस्थित हइताम। एकटि शिशिरमाखा घासपातार गन्ध छुटिया आसित, एवं स्निग्ध नवीन रौद्रटि लइया आमादेर पुबदिकेर प्राचीरेर उपर नारिकेल पातार कम्पमान झालरगुलिर तले प्रभात आसिया मुख बाड़ाइया दित।

आमादेर बाड़िर उत्तर-अंशे आर-एकखण्ड भूमि पड़िया आछे, आज पर्यन्त इहाके आमरा गोलाबाड़ि बलिया थाकि। एइ नामेर द्वारा प्रमाण हय, कोनो-एक पुरातन समये ओखाने गोला करिया संवत्सरेर शस्य राखा हइत—तखन शहर एवं पल्ली अल्पवयसेर भाइभगिनीर मतो अनेकटा एकरकम चेहारा लइया प्रकाश पाइत, एखन दिदिर सङ्गे भाइयेर मिल खुँजिया पाओयाइ शक्त।

छुटिर दिने सुयोग पाइले एइ गोलाबाड़िते गिया उपस्थित हइताम। खेलि-बार जन्य याइताम बलिले ठिक बला हय ना। खेलाटार चेये एइ जायगाटारइ प्रति आमार टान बेशि छिल। ताहार कारण की बला शक्त। बोधहय

बाड़िर कोणेर एकटा निभृत पोड़ो जायगा बलियाइ आमार काछे ताहार की एकटा रहस्य छिल। से आमादेर वासेर स्थान नाहे, व्यवहारेर घर नहे; सेटा काजेर जन्यओ नहे; सेटा बाड़िघरेर बाहिर, ताहाते नित्यप्रयोजनेर कोनो छाप नाइ; ताहा शोभाहीन अनावश्यक पतित जमि, केह सेखाने फुलेर गाछओ बसाय नाइ; एइजन्य सेइ उजाड़ जायगाटाय बालकेर मन आपन इच्छामतो कल्पनाय कोनो बाधा पाइत ना। रक्षकदेर शासनेर एकटुमात्र रन्ध्र दिया येदिन कोनोमते एइखाने आसिते पारिताम सेदिन छुटिर दिन बलियाइ बोध हइत।

बाड़िते आरो-एकटा जायगा छिल, सेटा ये कोथाय ताहा आज पर्यन्त बाहिर करिते पारि नाइ। आमार समवयस्का खेलार सङ्गिनी एकटि बालिका[1] सेटाके राजार बाड़ि[2] बलित। कखनो कखनो ताहार काछे शुनिताम, 'आज सेखाने गियाछिलाम।' किन्तु एकदिनओ एमन शुभयोग हय नाइ यखन आमिओ ताहार सङ्ग धरिते पारि। से एकटा आश्चर्य जायगा, सेखाने खेलाओ येमन आश्चर्य खेलार सामग्रीओ तेमनि अपरूप। मने हइत सेटा अत्यन्त काछे; एकतलाय वा दोतलाय कोनो-एकटा जायगाय; किन्तु कोनोमतेइ सेखाने याओया घटिया उठे ना। कतबार बालिकाके जिज्ञासा करियाछि, राजार बाड़ि कि आमादेर बाड़िर बाहिरे। से बलियाछे, ना, एइ बाड़िर मध्येइ। आमि विस्मित हइया बसिया भाविताम, बाड़िर सकल घरइ तो आमि देखियाछि किन्तु से-घर तबे कोथाय! राजा ये के से-कथा कोनोदिन जिज्ञासाओ करि नाइ, राजत्व ये कोथाय ताहा आज पर्यन्त अनाविष्कृत रहिया गियाछे,—केवल एइटुकु-मात्र पाओया गियाछे ये, आमादेर बाड़ितेइ सेइ राजार बाड़ि।

छेलेबेलार दिके यखन ताकानो याय तखन सबचेये एइ कथाटा मने पड़े ये, तखन जगत्टा एवं जीवनटा रहस्ये परिपूर्ण। सर्वत्रइ ये एकटि अभावनीय आछे एवं कखन ये ताहार देखा पाओया याइबे ताहार ठिकाना नाइ, एइ कथाटा प्रतिदिनइ मने जागित। प्रकृति येन हात मुठा करिया हासिया जिज्ञासा करित, की आछे बलो देखि। कोन्टा थाका ये असम्भव, ताहा निश्चय बलिते पारिताम ना।

---

१. इरावती (१८६१-१९१८), देवेन्द्रनाथेर ज्येष्ठ कन्या सौदामिनी देवीर कन्या, सत्यप्रसादेर भग्नी
२. द्र. 'राजार बाड़ि', गल्पसल्प; 'राजार बाड़ि', शिशु, रचनावली ९

बेश मने पड़े, दक्षिणेर बारान्दार एक कोणे आतार बिचि पुँतिया रोज जल दिताम।[1] सेइ बिचि हइते ये गाछ हइतेओ पारे ए-कथा मने करिया भारि विस्मय एवं औत्सुक्य जन्मित। आतार बीज हइते आजओ अंकुर बाहिर हय, किन्तु मनेर मध्ये ताहार सङ्गे सङ्गे आज आर विस्मय अंकुरित हइया उठे ना। सेटा आतार बीजेर दोष नय, सेटा मनेरइ दोष। गुणदादार[2] बागानेर क्रीड़ाशैल हइते पाथर चुरि करिया आनिया आमादेर पड़िबार घरेर एक कोणे आमरा नकल पाहाड़ तैरि करिते प्रवृत्त हइयाछिलाम—ताहारइ माझे माझे फुलगाछेर चारा पुँतिया सेबार आतिशय्ये ताहादेर प्रति एत उपद्रव करिताम ये, नितान्तइ गाछ बलिया ताहारा चुप करिया थाकित एवं मरिते विलम्ब करित ना। एइ पाहाड़टार प्रति आमादेर की आनन्द एवं की विस्मय छिल, ताहा बलिया शेष करा याय ना। मने विश्वास छिल, आमादेर एइ सृष्टि गुरुजनेर पक्षेओ निश्चय आश्चर्येर सामग्री हइबे ; सेइ विश्वासेर येदिन परीक्षा करिते गेलाम सेइ दिनइ आमादेर गृहकोणेर पाहाड़ ताहार गाछपाला-समेत कोथाय अन्तर्धान करिल। इस्कुलघरेर कोणे ये पाहाड़ सृष्टिर उपयुक्त भित्ति नहे, एमन अकस्मात् एमन सद भावे से शिक्षालाभ करिया बड़ोइ दुःख बोध करियाछिलाम। आमादेर लीलार सङ्गे बड़ोदेर इच्छार ये एत प्रभेद ताहा स्मरण करिया, गृहभित्तिर अपसारित प्रस्तरभार आमादेर मनेर मध्ये आसिया चापिया बसिल।

तखनकार दिने एइ पृथिवी वस्तुटार रस की निविड़ छिल, सेइ कथाइ मने पड़े। की माटि, की जल, की गाछपाला, की आकाश, समस्तइ तखन कथा कहित—मनके कोनोमतेइ उदासीन थाकिते देय नाइ। पृथिवीके केवलमात्र उपरेर तलातेइ देखितेछि, ताहार भितरेर तलाटा देखिते पाइतेछि ना, इहाते कतदिन ये मनके धाक्का दियाछे ताहा बलिते पारि ना। की करिले पृथिवीर उपरकार एइ मेटे रङेर मलाटटाके खुलिया फेला याइते पारे, ताहार कतइ प्ल्यान ठाओराइयाछि। मने भाविताम, एकटार पर आर-एकटा बाँश ठुकिया ठुकिया पोँता याय, एमनि-करिया अनेक बाँश पोँता हइया गेले पृथिवीर खुब गभीरतम तलाटाके हयतो एकरकम करिया नागाल पाओया याइते पारे। माघोत्सव उपलक्ष्ये आमादेर उठानेर चारिधारे सारि सारि करिया काठेर थाम पुँतिया ताहाते झाड़ टाङानो हइत। पयला माघ हइतेइ एजन्य उठाने माटि-काटा आरम्भ हइत। सर्वत्रइ उत्सवेर उद्योगेर आरम्भटा छेलेदेर काछे अत्यन्त

१. द्र, 'आतार बिचि', छड़ार छवि।
२. गुणेन्द्रनाथ ठाकुर (१८४७-८१), देवेन्द्रनाथेर भ्राता गिरीन्द्रनाथेर कनिष्ठ पुत्र

औत्सुक्यजनक। किन्तु आमार काछे विशेषभावे एइ माटि-काटा व्यापारेर एकटा टान छिल। यदिच प्रत्येक वत्सरइ माटि काटिते देखियाछि––देखियाछि, गर्त बड़ो हइते हइते एकटु एकटु करिया समस्त मानुषटाइ गह्वरेर निचे तलाइया गियाछे, अथच ताहार मध्ये कोनोबारइ एमन-किछु देखा याय नाइ याहा कोनो राजपुत्र वा पात्रेर पुत्रेर पातालपुर-यात्रा सफल करिते पारे, तबुओ प्रत्येक बारेइ आमार मने हइत, एकटा रहस्यसिन्धुकेर डाला खोला हइतेछे। मने हइत, येन आर-एकटु खुँड़िलेइ हय–किन्तु वत्सरेर पर वत्सर गेल, सेइ आर-एकटुकु कोनोबारेइ खोँड़ा हइल ना। पर्दाय एकटुखानि टान देओयाइ हइल किन्तु तोला हइल ना। मने हइत, बड़ोरा तों इच्छा करिलेइ सब कराइते पारेन, तबे ताँहारा केन एमन अगभीरेर मध्ये थामिया बसिया आछेन––आमादेर मतो शिशुर आज्ञा यदि खाटित, ताहा हइले पृथिवीर गूढतम संवादटि एमन उदासीनभावे माटिचापा पड़िया थाकित ना। आर, येखाने आकाशेर नीलिमा ताहारइ पश्चाते आकाशेर समस्त रहस्य, से-चिन्ताओ मनके ठेला दित। येदिन बोधोदय[1] पड़ाइबार उपलक्ष्ये पण्डित-महाशय बलिलेन, आकाशेर ओइ नील गोलकटि कोनो-एकटा बाधामात्रइ नहे, तखन सेटा की असम्भव आश्चर्यइ मने हइयाछिल। तिनि बलिलेन, "सिँड़िर उपर सिँड़ि लागाइया उपरे उठिया याओ-ना, कोथाओ माथा ठेकिबे ना।" आमि भाविलाम, सिँड़ि सम्बन्धे बुझि तिनि अनावश्यक कार्पण्य करितेछेन। आमि केवलि सुर चड़ाइया बलिते लागिलाम, आरो सिँड़ि, आरो सिँड़ि, आरो सिँड़ि; शेषकाले यखन बुझा गेल सिँड़िर संख्या बाड़ाइया कोनो लाभ नाइ तखन स्तम्भित हइया बसिया भाबिते लागिलाम एवं मने करिलाम, एटा एमन एकटा आश्चर्य खबर ये पृथिवीते याँहारा मास्टारमशाय ताँहाराइ केवल एटा जानेन, आर केह नय।

नर्माल स्कुल

ओरियेण्टाल सेमिनारिते यखन पड़ितेछिलाम तखन केवलमात्र छात्र हइया थाकिबार ये-हीनता, ताहा मिटाइबार एकटा उपाय बाहिर करियाछिलाम। आमादेर बारान्दार एकटि विशेष कोणे आमिओ एकटि क्लास खुलियाछिलाम। रेलिंगुला छिल आमार छात्र। एकटा काठि हाते करिया चौकि लइया ताहादेर

---

१. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रणीत।

सामने बसिया मास्टारि करिताम। रेलिंगुलोर मध्ये के भालो छेले एवं के मन्द छेले, तांहा एकेबारे स्थिर करा छिल। एमन-कि, भालोमानुष रेलिं ओ दुष्ट रेलिं, बुद्धिमान रेलिं ओ बोका रेलिङेर मुखश्रीर प्रभेद आमि येन सुस्पष्ट देखिते पाइताम। दुष्ट रेलिंगुलार उपर क्रमागत आमार लाठि पड़िया पड़िया ताहादेर एमनि दुर्दशा घटियाछिल ये, प्राण थाकिले ताहारा प्राण विसर्जन करिया शान्ति लाभ करिते पारित। लाठिर चोटे यदतइ ताहादेर विकृति घटित ततइ ताहादेर उपर राग केवलइ बाड़िया उठित; की करिले ताहादेर ये यथेष्ट शास्ति हइते पारे, ताहा येन भाबिया कुलाइते पारिताम ना। आमार सेइ नीरव क्लासटिर उपर की भयंकर मास्टारि ये करियाछि, ताहार साक्ष्य दिबार जन्य आज केहइ वर्तमान नाइ। आमार सेइ सेकालेर दारुनिर्मित छात्रगणेर स्थले सम्प्रति लौहनिर्मित रेलिं भरति हइयाछे—आमादेर उत्तरवर्तिगण इहादेर शिक्षकतार भार आजओ केह ग्रहण करे नाइ, करिलेओ तखनकार शासनप्रणालीते एखन कोनो फल हइत ना।—इहा बेश देखियाछि, शिक्षकेर प्रदत्त विद्याटुकु शिखिते शिशुरा अनेक विलम्ब करे, किन्तु शिक्षकेर भावखाना शिखिया लइते ताहादिगके कोनो दुःख पाइते हय ना। शिक्षादान व्यापारेर मध्ये ये-समस्त अविचार, अधैर्य, क्रोध, पक्षपातपरता छिल, अन्यान्य शिक्षणीय विषयेर चेये सेटा अति सहजेइ आयत्त करिया लइयाछिलाम। सुखेर विषय एइ ये, काठेर रेलिङेर मतो नितान्त निर्वाक् ओ अचल पदार्थ छाड़ा आर-किछुर उपरे सेइ समस्त बर्बरता प्रयोग करिबार उपाय सेइ दुर्बल वयसे आमार हाते छिल ना। किन्तु यदिच रेलिं-श्रेणीर सङ्गे छात्रेर श्रेणीते पार्थक्य यथेष्ट छिल, तबु आमार सङ्गे आर संकीर्णचित्त शिक्षकेर मनस्तत्त्वेर लेशमात्र प्रभेद छिल ना।

ओरियेण्टाल सेमिनारिते बोधकरि बेशि दिन छिलाम ना। ताहार परे नर्माल स्कुले[1] भरति हइलाम। तखन वयस अत्यन्त अल्प। एकटा कथा मने पड़े, विद्यालयेर काज आरम्भ हइबार प्रथमेइ ग्यालारिते सकल छेले बसिया गानेर सुरे की समस्त कविता आवृत्ति करा हइत। शिक्षार सङ्गे सङ्गे याहाते किछु परिमाणे छेलेदेर मनोरञ्जनेर आयोजन थाके, निश्चय इहार मध्ये सेइ चेष्टा छिल। किन्तु गानेर कथागुलो छिल इंरेजि, ताहार सुरओ तथैवच—आमरा

१. इं १८५५, जुलाइ मासे "ईश्वरचन्द्र विद्यासागरेर तत्त्वावधाने" स्थापित हय। —चरितमाला १२ "तखन एइ विद्यालयटि जोड़ासाँकोते ताँहादेर (रवीन्द्रनाथेर) बाटिर सन्निकटे बाबु श्यामलाल मल्लिकेर बाटिते अवस्थित छिल।"—र-कथा, पृ० १६४

ये की मन्त्र आओड़ाइतेछि एवं की अनुष्ठान करितेछि, ताहा किछुइ बुझिताम ना। प्रत्यह सेइ एकटा अर्थहीन एकघेये व्यापारे योग देओया आमादेर काछे सुखकर छिल ना। अथच इस्कुलेर कर्तृपक्षेरा तखनकार कोनो-एकटा थियोरि अवलम्बन करिया बेश निश्चिन्त छिलेन ये, ताँहारा छेलेदेर आनन्दविधान करितेछेन; किन्तु प्रत्यक्ष छेलेदेर दिके ताकाइया ताहार फलाफल विचार करा सम्पूर्ण बाहुल्य बोध करितेन। येन ताँहादेर थियोरि-अनुसारे आनन्द पाओया छेलेदेर एकटा कर्तव्य, ना पाओया ताहादेर अपराध। एइजन्य ये इंरेजि बइ हइते ताँहारा थियोरि संग्रह करियाछिलेन, ताहा हइते आस्त इंरेजि गानटा तुलिया ताँहारा आराम बोध करियाछिलेन। आमादेर मुखे सेइ इंरेजिटा की भाषाय परिणत हइयाछिल, ताहार आलोचना शब्दतत्त्वविद्‌गणेर पक्षे निःसन्देह मूल्यवान। केवल एकटा लाइन मने पड़ितेछे--

कलोकी पुलोकी सिंगिल मेलालिं मेलालिं मेलालिं। अनेक चिन्ता करिया इहार कियदंशेर मूल उद्धार करिते पारियाछि--किन्तु 'कलोकी' कथाटा ये किसेर रूपान्तर ताहा आजओ भाबिया पाइ नाइ। बाकि अंशटा आमार बोध हय--
Full of glee, singing merrily, merrily, merrily.

क्रमश नर्मालं स्कुलेर स्मृतिटा येखाने झापसा अवस्थाय पार हइया स्फुटतर हइया उठियाछे सेखाने कोनो अंशेइ ताहा लेशमात्र मधुर नहे।[1] छेलेदेर सङ्गे यदि मिशिते पारिताम, तबे विद्याशिक्षार दुःख तेमन असह्य बोध हइत ना। किन्तु से कोनोमतेइ घटे नाइ। अधिकांश छेलेरइ संस्रव एमन अशुचि ओ अपमान-जनक छिल ये, छुटिर समय आमि चाकरके लइया दोतलाय रास्तार दिकेर एक जानलार काछे एकला बसिया काटाइया दिताम। मने मने हिसाब करिताम, एक वत्सर, दुइ वत्सर, तिन वत्सर--आरओ कत वत्सर एमन करिया काटाइते हइबे। शिक्षकदेर मध्ये एकजनेर[2] कथा आमार मने आछे, तिनि एमन कुत्सित भाषा व्यवहार करितेन ये ताँहार प्रति अश्रद्धावशत ताँहार कोनो प्रश्नेरइ उत्तर करिताम ना। संवत्सर ताँहार क्लासे आमि सकल छात्रेर शेषे नीरवे बसिया थाकिताम। यखन पड़ा चलित तखन सेइ अवकाशे पृथिवीर अनेक दुरूह समस्यार मीमांसाचेष्टा करिताम। एकटा समस्यार कथा मने आछे। अस्त्र-हीन हइयाओ शत्रुके की करिले युद्धे हारानो याइते पारे, सेटा आमार गभीर चिन्तार

---

१. "गिन्नि बलिया एकटा छोटोगल्प लिखियाछिलाम, सेटा नर्मालं स्कुलेरइ स्मृति हइते लिखित।"--पाण्डुलिपि

२. हरनाथ पण्डित

विषय छिल। ओइ क्लासेर पड़ाशुनार गुञ्जनध्वनिर मध्ये बसिया ओइ कथाटा मने मने आलोचना करिताम, ताहा आजओ आमार मने आछे। भाबिताम, कुकुर बाघ प्रभृति हिंस्र जन्तुदेर खुब भालो करिया शायेस्ता करिया, प्रथमे ताहादेर दु इ-चारिसार युद्धक्षेत्रे यदि साजाइया देओया याय, तबे लड़ाइयेर आसरेर मुख-बन्धटा बेश सहजेइ जमिया ओठे; ताहार परे निजेदेर बाहुबल काजे खाटाइले जयलाभटा नितान्त असाध्य हय ना। मने मने एइ अत्यन्त सहज प्रणालीर रणसज्जार छबिटा यखन कल्पना करिताम तखन युद्धक्षेत्रे स्वपक्षेर जय एकेबारे सुनिश्चित देखिते पाइताम। यखन हाते काज छिल ना तखन काजेर अनेक आश्चर्य सहज उपाय बाहिर करियाछिलाम। काज करिबार बेलाय देखितेछि, याहा कठिन ताहा कठिनइ, याहा दुःसाध्य ताहा दुःसाध्यइ, इहाते किछु असुविधा आछे बटे किन्तु सहज करिबार चेष्टा करिले असुविधा आरओ सातगुण बाड़िया उठे।

एमनि करिया सेइ क्लासे एक बछर यखन काटिया गेल तखन मधुसूदन वाचस्पतिर[1] निकट आमादेर बांलार वात्सरिक परीक्षा हइल। सकल छेलेर चेये आमि बेशि नम्बर पाइलाम। आमादेर क्लासेर शिक्षक कर्तृपुरुषदेर काछे जानाइलेन ये परीक्षक आमार प्रति पक्षपात प्रकाश करियाछेन। द्वितीयबार आमार परीक्षा हइल। एबार स्वयं सुपारिण्टेण्डेण्ट परीक्षकेर पाशे चौकि लइया बसिलेन। एबारेओ भाग्यक्रमे आमि उच्चस्थान पाइलाम।

कविता-रचनारम्भ

आमार वयस तखन सात-आट बछरेर बेशि हइबे ना। आमार एक भागिनेय श्रीयुक्त ज्योतिःप्रकाश[2] आमार चेये वयसे बेश एकटु बड़ो। तिनि यखन इंरेजि साहित्ये प्रवेश करिया खुब उत्साहेर सङ्गे ह्यामलेटेर स्वगत उक्ति आओड़ाइतेछेन। आमार मतो शिशुके कविता लेखाइबार जन्य ताँहार हठात् केन ये उत्साह हइल ताहा आमि बलिते पारि ना। एकदिन दुपुरबेला ताँहार घरे

---

१. नर्मालं स्कुलेर द्वितीय शिक्षक।
२. ज्योतिःप्रकाश गङ्गोपाध्याय (१८५५-१९१९) गुणेन्द्रनाथेर ज्येष्ठा भग्नी कादम्बिनी देवीर पुत्र

डाकिया लइया बलिलेन, "तोमाके पद्य लिखिते हइबे।" बलिया, पयारछन्दे चौद्द अक्षर योगायोगेर रीतिपद्धति आमाके बुझाइया दिलेन।

पद्य-जिनिसटिके ए-पर्यन्त केवल छापार बहितेइ देखियाछि। काटाकुटि नाइ, भावाचिन्ता नाइ, कोनोखाने मर्त्यजनोचित दुर्बलतार कोनो चिह्न देखा याय ना। एइ पद्य ये निजे चेष्टा करिया लेखा याइते पारे, ए-कथा कल्पना करितेओ साहस हइत ना। एकदिन आमादेर बाड़िते चोर धरा पड़ियाछिल। अत्यन्त भये भये अथच निरतिशय कौतूहलेर सङ्गे ताहाके देखिते गेलाम। देखिलाम नितान्तइ से साधारण मानुषेर मतो। एमन अवस्थाय दरोयान यखन ताहाके मारिते शुरु करिल, आमार मने अत्यन्त व्यथा लागिल। पद्य सम्बन्धेओ आमार सेइ दशा हइल। गोटाकयेक शब्द निजेर हाते जोड़ाताड़ा दितेइ यखन ताहा पयार हइया उठिल, तखन पद्यरचनार महिमा सम्बन्धे मोह आर टिकिल ना। एखन देखितेछि, पद्यबेचारार उपरेओ मार सय ना। अनेकसमय दयाओ हय किन्तु मारओ ठेकानो याय ना, हात निस्‌पिस् करे। चोरेर पिठेओ एत लोकेर एत बाड़ि पड़े नाइ।

भय यखन एकबार भाङिल तखन आर ठेकाइया राखे के। कोनो-एकटि कर्मचारीर कृपाय एकखानि नीलकागजेर खाता जोगाड़ करिलाम। ताहाते स्वहस्ते पेनसिल दिया कतकगुला असमान लाइन काटिया बड़ो बड़ो काँचा अक्षरे पद्य लिखिते शुरु करिया दिलाम।

हरिणशिशुर नूतन शिं बाहिर हइबार समय से येमन येखाने-सेखाने गुंता मारिया बेड़ाय, नूतन काव्योद्गम लइया आमि सेइरकम उत्पात आरम्भ करिलाम। विशेषत, आमार दादा[1] आमार एइ-सकल रचनाय गर्व अनुभव करिया श्रोता-संग्रहेर उत्साहे संसारके एकेबारे अतिष्ठ करिया तुलिलेन। मने आछे, एकदिन एकतलाय आमादेरि जमिदार-काछारिर आमलादेर काछे कवित्व घोषणा करिया आमरा दुइ भाइ बाहिर हइया आसितेछि, एमनसमय तखनकार 'न्याशानाल पेपार'[2] पत्रेर एडिटार श्रीयुक्त नवगोपाल मित्र सबेमात्र आमादेर बाड़िते पदार्पण करियाछेन। तत्क्षणात् दादा ताँहाके ग्रेफतार करिया कहिलेन, "नवगोपाल बाबु, रवि एकटा कविता लिखियाछे, शुनुन-ना।" शुनाइते विलम्ब हइल ना। काव्यग्रन्थावलीर बोझा तखन भारि हय नाइ। कविकीर्ति कविर जामार पकेटे-

१. सोमेन्द्रनाथ ठाकुर (१८५९-१९२३)
२. देवेन्द्रनाथेर अर्थानुकूल्ये प्रकाशित (? १८६६) स्वदेशीभाव-प्रचारक इंरेजि साप्ताहिक

पकेटेइ तखन अनायासे फेरे। निजेइ तखन, लेखक, मुद्राकर, प्रकाशक, एइ तिने-एक एके-तिन हइया छिलाम। केवल विज्ञापन दिबार काजे आमार दादा आमार सहयोगी छिलेन। पद्मेर उपरे एकटा कविता लिखियाछिलाम, सेटा देउड़िर सामने दाँड़ाइयाइ उत्साहित उच्चकण्ठे नवगोपाल बाबु के शुनाइया दिलाम। तिनि एकटु हासिया बलिलेन, "बेश हइयाछे, किन्तु ओइ 'द्विरेफ' शब्दटार माने की।"

'द्विरेफ' एवं 'भ्रमर' दुटोइ तिन अक्षरेर कथा। भ्रमर शब्दटा व्यवहार करिले छन्देर कोनो अनिष्ट हइत ना। ओइ दुरूह कथाटा कोथा हइते संग्रह करियाछिलाम, मने नाइ। समस्त कविताटार मध्ये ओइ शब्दटार उपरेइ आमार आशा-भरसा सबचेये बेशि छिल। दफतरखानार आमलामहले निश्चयइ ओइ कथाटाते विशेष फल पाइयाछिलाम। किन्तु नवगोपाल बाबुके इहातेओ लेशमात्र दुर्बल करिते पारिल ना। एमन-कि, तिनि हासिया उठिलेन। आमार दृढ़ विश्वास हइल, नवगोपालबाबु समजदार लोक नहेन। ताँहाके आर-कखनो कविता शुनाइ नाइ। ताहार परे आमार वयस अनेक हइयाछे, किन्तु के समजदार, के नय, ताहा परख करिबार प्रणालीर विशेष परिवर्तन हइयाछे बलिया मने हय ना। याइ होक, नवगोपालबाबु हासिलेन बटे किन्तु 'द्विरेफ' शब्दटा मधुपानमत्त भ्रमरेरइ मतो स्वस्थाने अविचलित रहिया गेल।

पितृदेव

आमार जन्मेर कयेक वत्सर पूर्व हइतेइ आमार पिता[1] प्राय देशभ्रमणेइ नियुक्त छिलेन। बाल्यकाले तिनि आमार काछे अपरिचित छिलेन बलिलेइ हय। माझे माझे तिनि कखनो हठात् बाड़ि आसितेन; सङ्गे विदेशी चाकर लइया आसितेन; ताहादेर सङ्गे भाव करिया लइबार जन्य आमार मने भारि औत्सुक्य हइत। एकबार लेनु बलिया अल्पवयस्क एकटि पान्जाबि चाकर ताँहार सङ्गे आसियाछिल। से आमादेर काछे ये-समादरटा पाइयाछिल ताहा स्वयं रणजित-सिंहेर पक्षेओ कम हइत ना। से एके विदेशी ताहाते पान्जाबि—इहातेइ आमादेर मन हरण करिया लइयाछिल। पुराणे भीमार्जुनेर प्रति येरकम श्रद्धा छिल,, एइ पान्जाबि जातेर प्रतिओ मने सेइ प्रकारेर एकटा सम्भ्रम छिल। इहारा योद्धा—इहारा कोनो कोनो लड़ाइये हारियाछे बटे, किन्तु सेटाकेओ इहादेर शत्रुपक्षेरइ

---

१. महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर (१८१७-१९०५)

अपराध बलिया गण्य करियाछि। सेइ जातेर लेनुके घरेर मध्ये पाइया मने खुब एकटा स्फीति अनुभव करियाछिलाम। बडठाकुरानीर[1] घरे एकटा काचावरणे-ढाका खेलार जाहाज छिल,ताहाते दम दिलेइ रङकरा कापड़ेर ढेउ फुलिया फुलिया उठित एवं जाहाजटा आर्गिन-बाधेर सङ्गे दुलिते थाकित। अनेक अनुनय विनय करिया एइ आश्चर्य सामग्रीटि बउठाकुरानीर काछ हइते चाहिया लइया, प्राय माझे माझे एइ पाञ्जाबिके चमत्कृत करिया दिताम। घरेर खाँचाय बद्ध छिलाम बलिया याहाकिछु विदेशेर, याहाकिछु दूरदेशेर, ताहाइ आमार मनके अत्यन्त टानिया लइत। ताइ लेनुके लइया भारि व्यस्त हइया पाड़िताम। एइ कारणेइ गाब्रियेल बलिया एकटि यिहुदि ताहार घुण्टिदेओया यिहुदि पोशाक परिया यखन आतर बेचिते आसित, आमार मने भारि एकटा नाड़ा दित, एवं झोलाझुलिओयाला ढिलाढाला मयला पायजामा-परा विपुलकाय काबुलिओयालाओ आमार पक्षे भीतिमिश्रित रहस्येर सामग्री छिल।

याहा हउक, पिता यखन आसितेन आमरा केवल आशपाश हइते दूरे ताँहार चाकरबाकरदेर महले घुरिया घुरिया कौतूहल मिटाइताम। ताँहार काछे पौंछानो घटिया उठित ना।

बेश मने आछे, आमादेर छेलेवेलाय कोनो-एक समये इंरेज गवर्मेण्टेर चिरन्तन जुजु रासियान कर्तृक भारत-आक्रमणेर आशङ्का लोकेर मुखे आलोचित हइते-छिल। कोनो हितैषिणी आत्मीया आमार मायेर काछे सेइ आसन्न विप्लवेर सम्भावनाके मनेर साधे पल्लवित करिया बलियाछिलेन। पिता तखन[2] पाहाड़े छिलेन। तिब्बत भेद करिया हिमालयेर कोन्-एकटा छिद्रपथ दिया से रुसीयेरा सहसा धूमकेतुर मतो प्रकाश पाइबे, ताहा तो बला याय ना। एइजन्य मार मने अत्यन्त उद्वेग उपस्थित हइयाछिल। बाड़िर लोकेरा निश्चयइ केह ताँहार एइ उत्कण्ठार समर्थन करेन नाइ। मा सेइ कारणे परिणतवयस्क दलेर सहायतालाभेर चेष्टाय हताश हइया शेषकाले एइ बालकके आश्रय करिलेन। आमाके बलिलेन, "रासियानदेर खबर दिया कर्ताके एकखाना चिठि लेखो तो।" मातार उद्वेग वहन करिया पितार काछे सेइ आमार प्रथम चिठि। केमन करिया पाठ लिखिते हय, की करिते हय किछुइ जानि ना। दफतरखानाय महानन्द

---

१. कादम्बरी (कादम्बिनी) देवी, ज्योतिरिन्द्रनाथेर पत्नी
२. इं १८६८ मे १८७० डिसेम्बर

मुनशिर[1] शरणापन्न हइलाम। पाठ यथाविहित हइयाछिल सन्देह नाइ। किन्तु भाषाटाते जमिदारि सेरेस्तार सरस्वती ये जीर्ण कागजेर शुष्क पद्मदले विहार करेन ताहारइ गन्ध माखानो छिल। एइ चिठिर उत्तर पाइयाछिलाम। ताहाते पिता लिखियाछिलेन—भय करिबार कोनो कारण नइ, रासियानके तिनि स्वयं ताड़ाइया दिबेन। एइ प्रबल आश्वासवाणीतेओ मातार रासियानभीति दूर हइल बलिया बोध हइल ना—किन्तु पितार सम्बन्धे आमार साहस खुब बाड़िया उठिल। ताहार पर हइते रोजइ आमि ताँहाके पत्र लिखिबार जन्य महानन्देर दफतरे हाजिर हइते लागिलाम। बालकेर उपद्रवे अस्थिर हइया कयेकदिन महानन्द खसड़ा करिया दिल। किन्तु मासुलेर सङ्गति तो नाइ। मने धारणा छिल, महानन्देर हाते चिठि समर्पण करिया दिलेइ बाकि दायित्वेर कथा आमाके आर चिन्ता करितेइ हइबे ना—चिठि अनायासेइ यथास्थाने गिया पौंछिबे। बला बाहुल्य, महानन्देर वयस आमार चेये अनेक बेशि छिल एवं ए-चिठिगुलि हिमाचलेर शिखर पर्यन्त पौंछे नाइ।

बहुकाल प्रवासे थाकिया पिता अल्प-कयेक दिनेर जन्य यखन कलिकाताय आसितेन, तखन ताँहार प्रभावे येन समस्त बाड़ि भरिया उठिया गम् गम् करिते थाकित। देखिताम, गुरुजनेरा गाये जोब्बा परिया, संयत परिच्छन्न हइया, मुखे पान थाकिले ताहा बाहिरे फेलिया दिया ताँहार काछे याइतेन। सकलेइ सावधान हइया चलितेन। रन्धनेर पाछे कोनो त्रुटि हय, एइजन्य मा निजे रान्नाघरे गिया बसिया थाकितेन। वृद्ध किनु हरकरा ताहार तकमाओयाला पागड़ि ओ शुभ्रचापकान परिया द्वारे हाजिर थाकित। पाछे बारान्दाय गोलमाल, दौड़ादौड़ि करिया ताँहार विराम भङ्ग करि, एजन्य पूर्वेइ आमादिगके सतर्क करिया देओया हइयाछे। आमरा धीरे-धीरे चलि, धीरे धीरे बलि, उँकि मारिते आमादेर साहस हय ना।

एकबार पिता आसिलेन आमादेर तिनजनेर उपनयन दिबार जन्य। वेदान्तवागीशके[2] लइया तिनि वैदिक मन्त्र हइते उपनयनेर अनुष्ठान निजे संकलन करिया लइलेन। अनेक दिन धरिया दालाने बसिया बेचाराम बाबु[3] प्रत्यह आमादिगके ब्राह्मधर्मग्रन्थे-संगृहीत उपनिषदेर मन्त्रगुलि विशुद्ध रीतिते बारंबार आवृत्ति कराइया लइलेन। यथासम्भव प्राचीन वैदिक पद्धति अनुसरण करिया

---

१. द्र. घरोया, पृ ३
२. आनन्दचन्द्र भट्टाचार्य (परे, वेदान्तवागीश)
२. बेचाराम चट्टोपाध्याय, देवेन्द्रनाथेर बन्धु

आमादेर उपनयन हइल।[१] माथा मुड़ाइया, वीरबौलि परिया, आमरा तिन बटु तेतालार घरे तिन दिनेर जन्य आबद्ध हइलाम। सेआमादेर भारि मजा लागिल। परस्परेर कानेर कुण्डल धरिया आमरा टानाटानि बाधाइया दिलाम। एकटा बाँया घरेर कोणे पड़ियाछिल--बारान्दाय दाँड़ाइया यखन देखिताम निचेर तला दिया कोनो चाकर चलिया याइतेछे धपाधप् शब्दे आओयाज करिते थाकिताम--ताहारा उपरे मुख तुलियाइ आमादिगके देखिते पाइया, तत्क्षणात् माथा निचु करिया अपराध-आशङ्काय छुटिया पलाइया याइत। वस्तुत, गुरुगृहे ऋषिबालकदेर ये-भावे कठोर संयमे दिन काटिबार कथा आमादेर ठिक से-भावे दिन काटे नाइ। आमार विश्वास, साबेक कालेर तपोवन अन्वेषण करिले आमादेर मतो छेले ये मिलित ना ताहा नहे; ताहारा खुब ये बेशि भालोमानुष छिल, ताहार प्रमाण नाइ। शारद्वत ओ शार्ङ्गरवेर वयस यखन दश-बारो छिल तखन ताँहारा केवलइ वेदमन्त्र उच्चारण करिया अग्निते आहुतिदान करियाइ दिन काटाइयाछेन, ए-कथा यदि कोनो पुराणे लेखे तबे ताहा आगागोड़ाइ आमरा विश्वास करिते बाध्य नइ—कारण, शिशुचरित्र नामक पुराणटि सकल पुराणेर अपेक्षा पुरातन। ताहार मतो प्रामाणिक शास्त्र कोनो भाषाय लिखित हय नाइ।

नूतन ब्राह्मण हओयार परे गायत्रीमन्त्रटा जप करार दिके खुब-एकटा झोंक पड़िल। आमि विशेष यत्ने एकमने ओइ मन्त्र जप करिबार चेष्टा करिताम। मन्त्रटा एमन नहे ये से-वयसे उहार तात्पर्य आमि ठिकभावे ग्रहण करिते पारि। आमार बेश मने आछे, आमि 'भूर्भुवः स्वः' एइ अंशके अवलम्बन करिया मनटाके खुब करिया प्रसारित करिते चेष्टा करिताम। की बुझिताम, की भाविताम ताहा स्पष्ट करिया बला कठिन, किन्तु इहा निश्चय ये कथार माने बोझाटाइ मानुषेर पक्षे सकलेर चेये बड़ो जिनिस नय। शिक्षार सकलेर चेये बड़ो अङ्गटा--बुझाइया देओया नहे, मनेर मध्ये घा देओया। सेइ आघाते भितरे ये-जिनिसटा बाजिया उठे यदि कोनो बालकके ताहा व्याख्या करिया बलिते बला हय तबे से याहा बलिबे, सेटा नितान्तइ एकटा छेलेमानुषि किछु। किन्तु याहा से मुखे बलिते पारे ताहार चेये ताहार मनेर मध्ये बाजे अनेक बेशि; याँहारा विद्यालयेर शिक्षकता करिया केवलपरीक्षार द्वाराइ सकल फल निर्णय करिते चान, ताँहारा एइ जिनिसटार कोनो खबर राखेन ना। आमार मने पड़े, छेलेवेलाय आमि अनेक जिनिस बुझि नाइ किन्तु ताहा आमार अन्तरेर मध्ये खुब-एकटा नाड़ा दियाछे।

---

१. बांला १२७९, २५ माघ

आमार नितान्त शिशुकाले मुलाजोड़े गङ्गार धारेर बागाने मेघोदये बड़दादा छादेर उपरे एकदिन मेघदूत आओड़ाइतेछिलेन, ताहा आमार बुझिबार दरकार हय नाइ एवं बुझिबार उपायओ छिल ना—ताँहार आनन्द—आवेगपूर्ण छन्द-उच्चारणइ आमार पक्षे यथेष्ट छिल। छेलेवेलाय यखन इंरेजि आमि प्राय किछुइ जानिताम ना तखन प्रचुर-छविओयाला एकखानि old curiosity shop लइया आगागोड़ा पड़ियाछिलाम। पनेरो-आना कथाइ बुझिते पारि नाइ—नितान्त आवछाया-गोछेर की एकटा मनेर मध्ये तैरि करिया सेइ आपन मनेर नाना रङेर छिन्न सूत्रे ग्रन्थि बाँधिया ताहातेइ छविगुला गाँथियाछिलाम,—परीक्षकेर हाते यदि पड़िताम तबे मस्त एकटा शून्य पाइताम सन्देह नाइ किन्तु आमार पक्षे से-पड़ा ततबड़ो शून्य हय नाइ। एकबार बाल्यकाले पितार सङ्गे गङ्गाय बोटे बेड़ाइबार समय ताँहार बइगुलिर मध्ये एकखानि अति पुरातन फोर्ट उइलियमेर प्रकाशित गीतगोविन्द पाइयाछिलाम। बांला अक्षरे छापा; छन्द अनुसारे ताहार पदेर भाग छिल ना; गद्येर मतो एक लाइनेर सङ्गे आर-एक लाइन अविच्छेदे जड़ित। आमि तखन संस्कृत किछुइ जानिताम ना। बांला भालो जानिताम बलिया अनेकगुलि शब्देर अर्थ बुझिते पारिताम। सेइ गीतगोविन्दखाना ये कतबार पड़ियाछि ताहा बलिते पारि ना। जयदेव याहा बलिते चाहियाछेन ताहा किछुइ बुझि नाइ, किन्तु छन्दे ओ कथाय मिलिया आमार मनेर मध्ये ये-जिनिसटा गाँथा हइतेछिल ताहा आमार पक्षे सामान्य नहे। आमार मने आछे, 'निभृतनिकुञ्जगृहं गतया निशि रहसि निलीय वसन्तं'—एइ लाइनटि आमार मने भारि एकटि सौन्दर्येर उद्रेक करित—छन्देर झंकारेर मुखे 'निभृतनिकुञ्जगृहं' एइ एकटिमात्र कथाइ आमार पक्षे प्रचुर छिल। गद्यरीतिते सेइ बइखानि छापानो छिल बलिया जयदेवेर विचित्र छन्दके निजेर चेष्टाय आविष्कार करिया लइते हइत—सेइटेइ आमार बड़ो आनन्देर काज छिल। येदिन आमि 'अहह कलयामि बलयादिमणिभूषणं हरिविरहदहनवहनेन बहुदूषणं'—एइ पदटि ठिकमतो यति राखिया पड़िते पारिलाम, सेदिन कतइ खुशि हइयाछिलाम। जयदेव सम्पूर्ण तो बुझिइ नाइ, असम्पूर्ण बोझा बलिले याहा बोझाय ताहाओ नहे, तबु सौन्दर्ये आमार मन एमन भरिया उठियाछिल य, आगा-गोड़ा समस्त गीतगोविन्द एकखानि खाताय नकल करिया लइयाछिलाम। आरओ-एकटु बड़ो वयसे कुमारसम्भवेर—

मन्दाकिनीनिर्झरशीकराणां
वोढ़ा मुहुः कम्पितदेवदारुः

यद्वायरम्बिष्टमृगैः किरातै--
रासेव्यते भिन्न शिखण्डिवर्हः--

एइ श्लोकटि पड़िया एकदिन मनेर भितरटा भारि मातिया उठियाछिल। आर-किछुइ बुझि नाइ--केवल 'मन्दाकिनीनिर्झरशीकर' एवं 'कम्पितदेवदारु' एइ दुइटि कथाइ आमार मन भुलाइयाछिल। समस्त श्लोकटिर रस भोग करिबार जन्य मन व्याकुल हइया उठिल। यखन पण्डितमहाशय सबटार माने बुझाइया दिलेन तखन मन खाराप हइया गेल। मृग-अन्वेषण-तत्पर किरातेर माथाय ये-मयूरपुच्छ आछे बातास ताहाकेइ चिरिया चिरिया भाग करितेछे, एइ सूक्ष्मताय आमाके बड़ोइ पीड़ा दिते लागिल। यखन सम्पूर्ण बुझि नाइ तखन बेश छिलाम।

निजेर बाल्यकालेर कथा यिनि भालो करिया स्मरण करिबेन तिनिइ इहा बुझिबेन ये, आगागोड़ा समस्तइ सुस्पष्ट बुझिते पाराइ सकलेर चेये परम लाभ नहे। आमादेर देशेर कथकेरा एइ तत्त्वटि जानितेन, सेइजन्य कथकतार मध्ये एमन अनेक बड़ो बड़ो कान-भराट-करा संस्कृत शब्द थाके एवं ताहार मध्ये एमन तत्त्वकथाओ अनेक निविष्ट हय याहा श्रोतारा कखनोइ सुस्पष्ट बोझे ना किन्तु आभासे पाय--एइ आभासे पाओयार मूल्य अल्प नहे। याँहारा शिक्षार हिसाबे जमाखरच खताइया विचार करेन ताँहाराइ अत्यन्त कषाकषि करिया देखेन, याहा देओया गेल ताहा बुझा गेल किना। बालकेरा, एवं याहारा अत्यन्त शिक्षित नहे, ताहारा ज्ञानेर ये प्रथम स्वर्गलोके वास करे सेखाने मानुष ना बुझियाइ पाय--सेइ स्वर्ग हइते यखन पतन हय तखन बुझिया पाइबार दुःखेर दिन आसे। किन्तु एकथाओ सम्पूर्ण सत्य नहे। जगते ना-बुझिया पाइबार रास्ताइ सकल समयेइ सकलेर चेये बड़ो रास्ता। सेइ रास्ता एकेबारे बन्ध हइया गेले संसारेर पाड़ाय हाटबाजार बन्ध हय ना बटे किन्तु समुद्रेर धारे याइबार उपाय आर थाके ना, पर्वतेर शिखरे चड़ाओ असम्भव हइया उठे।

ताइ बलितेछिलाम, गायत्रीमन्त्रेर कोनो तात्पर्य आमि से-वयसे ये बुझिताम ताहा नहे, किन्तु मानुषेर अन्तरेर मध्ये एमन किछु एकटा आछे सम्पूर्ण ना बुझि-लेओ याहा चले। ताइ आमार एकदिनेर कथा मने पड़े--आमादेर पड़िबार घरे शानबाँधानो मेझेर एक कोणे बसिया गायत्री जप करिते करिते सहसा आमार दुइ चोख भरिया केवलइ जल पड़िते लागिल। जल केन पड़ितेछे ताहा आमि निजे किछुमात्र बुझिते पारिलाम ना। अतएव, कठिन परीक्षकेर हाते पड़िले आमि मूढ़ेर मतो एमन कोनो-एकटा कारण बलिताम गायत्रीमन्त्रेर सङ्गे याहार कोनोइ योग नाइ। आसल कथा, अन्तरेर अन्तःपुरे ये-काज चलितेछे बुद्धिर क्षेत्रे सकल समये ताहार खबर आसिया पौँछाय ना।

हिमालययात्रा

पइता उपलक्षे माथा मुड़ाइया भयानक भावना हइल, इस्कुल याइब की करिया। गोजातिर प्रति फिरिङ्गिर छेलेर आन्तरिक आकर्षण येमनि थाक्, ब्राह्मणेर प्रति तो ताहादेर भक्ति नाइ। अतएव, नेड़ामाथार उपरे ताहारा आर-कोनो जिनिस वर्षण यदि नाओ करे तबे हास्यवर्षण तो करिबेइ।

एमन दुश्चिन्तार समये एकदिन तेतलार घरे डाक पड़िल। पिता जिज्ञासा करिलेन, आमि ताँहार सङ्गे हिमालये याइते चाइ किना। 'चाइ' एइ कथाटा यदि चीत्कार करिया आकाश फाटाइया बलिते पारिताम, तबे मनेर भावेर उपयुक्त उत्तर हइत। कोथाय बेङ्गल एकाडेमि आर कोथाय हिमालय।

बाड़ि हइते यात्रा करिबार समय पिता ताँहार चिररीति-अनुसारे बाड़िर सकलके दालाने लइया उपासना करिलेन। गुरुजनदिगके प्रणाम करिया पितार सङ्गे गाड़िते चड़िलाम। आमार बयसे एइ प्रथम आमार जन्य पोशाक तैरि हइयाछे। की रङेर किरूप कापड़ हइबे ताहा पिता स्वयं आदेश दियाछिलेन। माथार जन्य एकटा जरिर-काज-करा गोल मखमलेर टुपि हइयाछिल। सेटा आमार हाते छिल, कारण नेड़ामाथार उपर टुपि परिते आमार मने मने आपत्ति छिल। गाड़िते उठियाइ पिता बलिलेन, "माथाय परो।" पितार काछे यथा-रीति परिच्छन्नतार त्रुटि हइबार जो नाइ। लज्जित मस्तकेर उपर टुपिटा परितेइ हइल। रेलगाड़िते एकटु सुयोग बुझिलेइ टुपिटा खुलिया राखिताम। किन्तु पितार दृष्टि एकबारओ एड़ाइत ना। तखनइ सेटाके स्वस्थाने तुलिते हइत।

छोटो हइते बड़ो पर्यन्त पितृदेवेर समस्त कल्पना एवं काज अत्यन्त यथायथ छिल। तिनि मनेर मध्ये कोनो जिनिस झापसा राखिते पारितेन ना, एवं ताँहार काजेओ येमन-तेमन करिया किछु हइबार जो छिल ना। ताँहार प्रति अन्येर एवं अन्येर प्रति ताँहार समस्त कर्तव्य अत्यन्त सुनिर्दिष्ट छिल। आमादेर जातिगत स्वभावटा यथेष्ट ढिलाढाला। अल्पस्वल्प एदिक-ओदिक हओयाके आमरा धर्तव्येर मध्येइ गण्य करि ना। सेइजन्य ताँहार सङ्गे व्यवहारे आमादेर सकलकेइ अत्यन्त भीत ओ सतर्क थाकिते हइत। उनिश-बिश हइले हयतो किछु क्षतिवृद्धि ना हइते पारे, किन्तु ताहाते व्यवस्थार ये लेशमात्र नड़चड़ घटे सेइखाने तिनि आघात पाइतेन। तिनि याहा संकल्प करितेन ताहार प्रत्येक अङ्गप्रत्यङ्ग तिनि मनश्चक्षुते स्पष्टरूपे प्रत्यक्ष करिया लइतेन। एइजन्य कोनो क्रियाकर्मे

कोन् जिनिसटा ठिक कोथाम थाकिबे, के कोथाय बसिबे, काहार प्रति कोन् काजेर कतटुकु भारथाकिबे, समस्तइ तिनि आगागोड़ा मनेर मध्ये ठिक करिया लइतेन एवं किछुतेइ कोनो अंशे ताहारअन्यथा हइते दितेन ना। ताहार परे से-काजटा सम्पन्न हइया गेले नाना लोकेर काछे ताहार विवरण शुनितेन। प्रत्येकेर वर्णना मिलाइया लइया एवं मनेर मध्ये जोड़ा दिया घटनाटि तिनि स्पष्ट करिया देखिते चेष्टा करितेन। ए-सम्बन्धे आमादेर देशेर जातिगत धर्म ताँहार एकेबारेइ छिल ना। ताँहार संकल्पे, चिन्ताय, आचरणे ओ अनुष्ठाने तिलमात्र शैथिल्य घटिबार उपाय थाकित ना। एइजन्य हिमालययात्राय ताँहार काछे यतदिन छिलाम, एकदिके आमार प्रचुर परिमाणे स्वाधीनता छिल, अन्यदिके समस्त आचरण अलङ्‌घ्येरुपे निर्दिष्ट छिल। येखाने तिनि छुटि दितेन सेखाने तिनि कोनो कारणे कोनो बाधाइ दितेन ना, येखाने तिनि नियम बाँधितेन सेखाने तिनि लेशमात्र छिद्र राखितेन ना।

यात्रार आरम्भे प्रथमे किछुदिन बोलपुरे थाकिबार कथा। किछुकाल पूर्वे पितामातार[1] सङ्गे सत्य[2] सेखाने गियाछिल। ताहार काछे भ्रमणवृत्तान्त याहा शुनियाछिलाम, उनविंश शताब्दीर कोनो भद्रघरेर शिशु ताहा कखनोइ विश्वास करिते पारित ना। किन्तु आमादेर सेकाले सम्भव-असम्भवेर माझ-खाने सीमारेखाटा ये कोथाय ताहा भालो करिया चिनिया राखिते शिखि नाइ। कृत्तिवास, काशीरामदास ए-सम्बन्धे आमादेर कोनो साहाय्य करेन नाइ। रङ्करा छेलेदेर बइ एवं छविदेओया छेलेदेर कागज सत्यमिथ्या सम्बन्धे आमादिगके आगेभागे सावधान करिया देय नाइ। जगते ये एकटा कड़ा नियमेर उपसर्ग आछे सेटा आमादिगके निजे ठेकिया शिखिते हइयाछे।

सत्य बलियाछिल, विशेष दक्षता ना थाकिले रेलगाड़िते चड़ा एक भयंकर संकट—पा फसकाइया गेलेइ आर रक्षा नाइ। तारपर, गाड़ि यखन चलिते आरम्भ करे तखन शरीरेर समस्त शक्तिके आश्रय करिया खुब जोर करिया बसा चाइ, नहिले एमन भयानक धाक्का देय ये मानुष के कोथाय छिटकाइया पड़े ताहार ठिकाना पाओया याय ना। स्टेशने पौँछिया मनेर मध्ये बेश एकटु भय-भय करितेछिल। किन्तु गाड़िते एत सहजेइ उठिलाम ये मने सन्देह हइल, एखनो

१. सारदाप्रसाद गङ्गोपाध्याय (मृत्यु १८८३) ओ देवेन्द्रनाथेर ज्येष्ठ कन्या सौदामिनी देवी (१८४७-१९२०)

२. भागिनेय सत्यप्रसाद गङ्गोपाध्याय (१८५९-१९३३); इनि रवीन्द्रनाथेर प्रथम काव्यसंग्रह 'काव्यग्रन्थावली' (१३०३) प्रकाश करेन।

हयतो गाड़ि-ओठार आसल अङ्गटाइ बाकि आछे। ताहार परे यखन अत्यन्त सहजे गाड़ि छाड़िया दिल तखन कोथाओ विपदेर एकटुओ आभास ना पाइया मनटा विमर्ष हइया गेल।

गाड़ि छुटिया चलिल; तरुश्रेणीर सबुज नील पाड़-देओया विस्तीर्ण माठ एवं छायाच्छन्न ग्रामगुलि रेलगाड़िर दुइ धारे दुइ छविर झरनार मतो वेगे छुटिते लागिल, येन मरीचिकार बन्या बहिया चलियाछे। सन्ध्यार समय बोलपुरे पौँछिलाम।[१] पालकिते चड़िया चोख बुजिलाम। एकेबारे काल सकाल-वेलाय बोलपुरेर समस्त विस्मय आमार जाग्रत चोखेर सम्मुखे खुलिया याइबे, एइ आमार इच्छा—सन्ध्यार अस्पष्टतार मध्ये किछु किछु आभास यदि पाइ तबे कालकेर अखण्ड आनन्देर रसभङ्ग हइबे।

भोरे उठिया बुक दुरुदुरु करिते करिते बाहिरे आसिया दाँड़ाइलाम। आमार पूर्ववर्ती भ्रमणकारी आमाके बलियाछिल, पृथिवीर अन्यान्य स्थानेर सङ्गे बोलपुरेर एकटा विषये प्रभेद एइ छिल ये, कुठिबाड़ि हइते रान्नाघरे याइवार पथे यदिओ कोनो प्रकार आवरण नाइ तबु गाये रौद्रवृष्टि किछुइ लागे ना। एइ अद्भुत रास्ताटा खुँजिते बाहिर हइलाम। पाठकेरा शुनिया आश्चर्य हइबेन ना ये, आज पर्यन्त ताहा खुँजिया पाइ नाइ।

आमरा शहरेर छेले, कोनोकाले धानेर खेत देखि नाइ एवं राखालबालकेर कथा बइये पड़िया ताहादिगके खुब मनोहर करिया कल्पनार पटे आँकियाछिलाम। सत्यर काछे शुनियाछिलाम, बोलपुरेर माठे चारिदिकेइ धान फलिया आछे एवं सेखाने राखालबालकदेर सङ्गे खेला प्रतिदिनेर नित्यनैमित्तिक घटना। धान-खेत हइते चाल संग्रह करिया भात राँधिया राखालदेर सङ्गे एकत्रे बसिया खाओया, एइ खेलार एकटा प्रधान अङ्ग।

व्याकुल हइया चारिदिके चाहिलाम। हाय रे, मरुप्रान्तरेर मध्ये कोथाय धानेर खेत। राखालबालक हयतो-वा माठेर कोथाओ छिल, किन्तु ताहादिगके विशेष करिया राखालबालक बलिया चिनिबार कोनो उपाय छिल ना।

याहा देखिलाम ना ताहार खेद मिटिते विलम्ब हइल ना—याहा देखिलाम ताहाइ आमार पक्षे यथेष्ट हइल। एखाने चाकरदेर शासन छिल ना। प्रान्तर-लक्ष्मी दिक्‌चक्रवाले एकटिमात्र नील रेखार गण्डि आँकिया राखियाछिलेन, ताहाते अबाधसञ्चरणेर कोनो व्याघात करित ना।

---

१. बांला १२७९, फाल्गुन

यदिच आमि नितान्त छोटो छिलाम किन्तु पिता कखनो आमाके यथेच्छ-विहारे निषेध करितेन ना। बोलपुरेर माठेर मध्ये स्थाने स्थाने वर्षार जलधाराय बालिमाटि क्षय करिया, प्रान्तरतल हइते निम्ने, लाल काँकर ओ नानाप्रकार पाथरे खचित छोटो छोटो शैलमाला गुहागह्वर नदी-उपनदी रचना करिया, बालखिल्यदेर देशेर भूवृत्तान्त प्रकाश करियाछे। एखाने एइ ढिबिओयाला खादगुलिके खोयाइ बले। एखान हइते आमार आँचले नाना प्रकारेर पाथर संग्रह करिया पितार काछे उपस्थित करिताम। तिनि आमार एइ अध्यवसायके तुच्छ बलिया एक-दिनओ उपेक्षा करेन नाइ। तिनि उत्साह प्रकाश करिया बलिलेन, "की चमत्कार ! ए-समस्त तुमि कोथाय पाइले !" आमि बलिताम, "एमन आरओ कत आछे ! कत हाजार हाजार ! आमि रोज आनिया दिते पारि।" तिनि बलितेन, "से हइले तो बेश हय। ओइ पाथर दिया आमार एइ पाहाड़टा तुमि साजाइया दाओ।"

एकटा पुकुर खुंड़िबार चेष्टा करिया अत्यन्त कठिन माटि बलिया छाड़िया देओया हय। सेइ असमाप्त गर्तेर माटि तुलिया दक्षिण धारे पाहाड़ेर अनुकरणे एकटि उच्च स्तूप तैरि हइयाछिल। सेखाने प्रभाते आमार पिता चौकि लइया उपासनाय बसितेन। ताँहार सम्मुखे पूर्वदिकेर प्रान्तरसीमाय सूर्योदय हइत। एइ पाहाड़टाइ पाथर दिया खचित करिबार जन्य तिनि आमाके उत्साह दिलेन। बोलपुर छाड़िया आसिबार समय एइ राशीकृत पाथरेर सञ्चय सङ्गे करिया आनिते पारि नाइ बलिया, मने बड़ोइ दुःख अनुभव करियाछिलाम। बोझा-मात्रेरइ ये बहनेर दाय ओ मासुल आछे से-कथा तखन बुझिताम ना, एवं सञ्चय करियाछि बालियाइ ये ताहार सङ्गे सम्बन्धरक्षा करिते पारिब एमन कोनो दावि नाइ, सेकथा आजओ बुझिते ठेके। आमार सेदिनकार एकान्तमनेर प्रार्थनाय विधाता यदि बर दितेन ये 'एइ पाथरेर बोझा तुमि चिरदिन बहन करिबे,' ताहा हइले ए कथाटा लइया आज एमन करिया हासिते पारिताम ना।

खोयाइयेर मध्ये एकजायगाय माटि चुँइया एकटा गंभीर गर्तेर मध्ये जल जमा हइत। एइ जलसञ्चय आपन बेष्टन छापाइया झिर् झिर् करिया बालिर मध्य दिया प्रवाहित हइत। अति छोटो छोटो माछ सेइ जलकुण्डेर मुखेर काछे स्रोतेर उजाने सन्तरणेर स्पर्धा प्रकाश करित। आमि पिताके गिया बलिलाम, "भारि सुन्दर जलेर धारा देखिया आसियाछि, सेखान हइते आमादेर स्नानेर ओ पानेर जल आनिले बेश हय।" तिनि आमार उत्साहे योग दिया बलिलेन, "ताइतो, से तो बेश हइबे" एवं आविष्कारकर्ताके पुरस्कृत करिबार जन्य सेइखान हइतेइ जल आनाइबार व्यवस्था करिया दिलेन।

आमि यखन-तखन सेइ खोयाइयेर उपत्यका-अधित्यकार मध्ये अभूतपूर्व कोनो-एकटा किछुर सन्धाने घुरिया बेड़ाइताम। एइ क्षुद्र अज्ञात राज्येर आमि छिलाम लिभिंस्टोन। एटा येन एकटा दुरबीनेर उलटा दिकेर देश। नदी-पाहाड़गुलोओ येमन छोटो छोटो, माझे माझे इतस्तत बुनो-जाम बुनो-खेजुरगुलोओ तेमनि बेँटेखाटो। आमार आविष्कृत छोटो नदीटिर माछगुलिओ तेमनि, आर आविष्कारकर्तािटर तो कथाइ नाइ।

पिता बोधकरि आमार सावधानतावृत्तिर उन्नतिसाधनेर जन्य आमार काछे दुइ-चारि आना पयसा राखिया बलितेन, हिसाब राखिते हइबे, एवं आमार प्रति ताँहार दामि सोनार घड़िटि दम दिबार भार दिलेन। इहाते ये क्षतिर सम्भावना छिल से-चिन्ता तिनि करिलेन ना, आमाके दायित्वे दीक्षित कराइ ताँहार अभिप्राय छिल। सकाले यखन बेड़ाइते बाहिर हइतेन, आमाके सङ्गे लइतेन। पथेर मध्ये भिक्षुक देखिले, भिक्षा दिते आमाके आदेश करितेन। अवशेषे ताँहार काछे जमाखरच मेलाइबार समय किछुतेइ मिलित ना। एकदिन तो तहबिल बाड़िया गेल। तिनि बलिलेन, "तोमाकेइ देखितेछि आमार क्याशियार राखिते हइबे, तोमार हाते आमार टाका बाड़िया उठे।" ताँहार घड़िते यत्न करिया नियमित दम दिताम। यत्न किछु प्रबलवेगेइ करिताम; घड़िटा अनतिकालेर मध्येइ मेरामतेर जन्य कलिकाताय पाठाइते हइल।

बड़ो वयसे काजेर भार पाइया यखन ताँहार काछे हिसाब दिते हइत सेइ दिनेर कथा एइखाने आमार मने पड़ितेछे। तखन तिनि पार्क स्ट्रीटे थाकितेन[1]। प्रति मासेर दोसरा ओ तेसरा आमाके हिसाब पड़िया शुनाइते हइत। तिनि तखन निजे पड़िते पारितेन ना। गत मासेर ओ गत वत्सरेर सङ्गे तुलना करिया समस्त आयव्ययेर विवरण[2] ताँहार सम्मुखे धरिते हइत। प्रथमत मोटा अङ्कगुलो तिनि शुनिया लइतेन ओ मने मने ताहार योगवियोग करिया लइतेन। मनेर मध्ये यदि कोनोदिन असङ्गति अनुभव करितेन तबे छोटो छोटो अङ्कगुला शुनाइया याइते हइत। कोनो कोनो दिन एमन घटियाछे, हिसाबे येखाने कोनो दुर्बलता थाकित सेखाने ताँहार विरक्ति बाँचाइबार जन्य चापिया गियाछि, किन्तु कखनो ताहा चापा थाके नाइ। हिसाबेर मोट चेहारा तिनि चित्तपटे आँकिया लइतेन। येखाने छिद्र पड़ित सेइखानेइ तिनि धरिते पारितेन। एइ कारणे मासेर ओइ

---

१. ५२ नं बाड़ि। रवीन्द्रनाथ आदि ब्राह्म समाजेर सेक्रेटारि छिलेन
२. आदि ब्रह्म समाजेर

दुटा दिन विशेष उद्वेगेर दिन छिल। पूर्वेइ बलियाछि, मनेर मध्ये सकल जिनिस सुस्पष्ट करिया देखिया लओया ताँहार प्रकृतिगत छिल—ता हिसाबेर अङ्कइ होक वा प्राकृतिक दृश्यइ होक वा अनुष्ठानेर आयोजनइ होक। शान्तिनिकेतनेर नूतन मन्दिर प्रभृति अनेक जिनिस तिनि चक्षे देखेन नाइ। किन्तु ये-केह शान्तिनिकेतन देखिया ताँहार काछे गियाछे, प्रत्येक लोकेर काछ हइते विवरण शुनिया तिनि अप्रत्यक्ष जिनिसगुलिके मनेर मध्ये सम्पूर्णरूपे आँकिया ना लइया छाड़ेन नाइ। ताँहार स्मरणशक्ति ओ धारणाशक्ति असाधारण छिल। सेइजन्य एकबार मनेर मध्ये याहा ग्रहण करितेन ताहा किछुतेइ ताँहार मन हइते भ्रष्ट हइत ना।

भगवद्गीताय पितार मनेर मतो श्लोकगुलि चिह्नित करा छिल। सेइगुलि बांला अनुवाद समेत आमाके कापि करिते दियाछिलेन। बाड़िते आमि नगण्य बालक छिलाम, एखाने आमार 'परे एइसकल गुरुतर काजेर भार पड़ाते ताहार गौरवटा खुब करिया अनुभव करिते लागिलाम।

इतिमध्ये सेइ छिन्नविच्छिन्न नील खाताटि बिदाय करिया एकखाना बाँधानो लेट्स् डायारि संग्रह करियाछिलाम। एखन खातापत्र एवं बाह्य उपकरणेर द्वारा कवित्वेर इज्जत राखिबार दिके दृष्टि पड़ियाछे। शुधु कविता लेखा नहे, निजेर कल्पनार सम्मुखे निजेके कवि बलिया खाड़ा करिबार जन्य एकटा चेष्टा जन्मियाछे। एइजन्य बोलपुरे यखन कविता लिखिताम तखन बागानेर प्रान्ते एकटि शिशु नारिकेलगाछेर तलाय माटिते पा छड़ाइया बसिया खाता भराइते भालोबासिताम। एटाके बेश कविजनोचित बलिया बोध हइत। तृणहीन कङ्करशय्याय बसिया रौद्रेर उत्तापे 'पृथ्विराजेर पराजय'[1] बलिया एकटा वीररसात्मक काव्य लिखियाछिलाम। ताहार प्रचुर वीररसेओ उक्त काव्यटाके विनाशेर हात हइते रक्षा करिते पारे नाइ। ताहार उपयुक्त वाहन सेइ बाँधानो लेट्स् डायारिटिओ ज्येष्ठा सहोदरा नील खाताटिर अनुसरण करिया कोथाय गियाछे ताहार ठिकाना काहारओ काछे राखिया याय नाइ।

बोलपुर हइते बाहिर हइया साहेबगञ्ज, दानापुर, एलाहाबाद, कानपुर प्रभृति स्थाने माझे माझे विश्राम करिते करिते अवशेषे अमृतसरे गिया पौँछिलाम।

पथेर मध्ये एकटा घटना घटियाछिल येटा एखनो आमार मने स्पष्ट आँका रहियाछे। कोनो-एकटा बड़ो स्टेशने गाड़ि थामियाछे। टिकिटपरीक्षक आसिया आमादेर टिकिट देखिल। एकबार आमार मुखेर दिके चाहिल। की

---

१. तु परे-प्रकाशित रुद्रचण्ड नाटिका, रचनावली-अ १

एकटा सन्देह करिल किन्तु बलिते साहस करिल ना। किछुक्षण परे आर-एकजन आसिल—उभये आमादेर गाड़िर दरजार काछे उस्खुस् करिया आबार चलिया गेल। तृतीय बारे बोधहय स्वयं स्टेशनमास्टर आसिया उपस्थित। आमार हाफ्‌टिकिट परीक्षा करिया पिताके जिज्ञासा करिल, "एइ छेलेटिर वयस कि बारो बछरेर अधिक नहे"। पिता कहिलेन, "ना।" तखन आमार बयस एगारो। वयसेर चेये निश्चयइ आमार वृद्धि किछु बेशि हइयाछिल। स्टेशनमास्टर कहिल, "इहार जन्य पुरा भाड़ा दिते हइबे।" आमार पितार दुइ चक्षु ज्वलिया उठिल। तिनि बाक्स हइते तखनइ नोट बाहिर करिया दिलेन। भाड़ार टाका बाद दिया अवशिष्ट टाका यखन ताहारा फिराइया दिते आसिल तिनि से-टाका लइया छुँड़िया फेलिया दिलेन, ताहा प्ल्याटफर्मेर पाथरेर मेजेर उपर छड़ाइया पड़िया झन्‌झन् करिया बाजिया उठिल। स्टेशन मास्टर अत्यन्त संकुचित हइया चलिया गेल—टाका बाँचाइबार जन्य पिता ये मिथ्या कथा बलिबेन, ए सन्देहेर क्षुद्रता ताहार माथा हेँट करिया दिल।

अमृतसरे गुरुदरबार आमार स्वप्नेर मतो मने पड़े। अनेकदिन सकाल-वेलाय पितृदेवेर सङ्गे पदव्रजे सेइ सरोबरेर माझखाने शिख-मन्दिरे गियाछि। सेखाने नियतइ भजना चलितेछे। आमार पिता सेइ शिख-उपासकदेर माझखाने बसिया सहसा एकसमय सुर करिया ताहादेर भजनाय योग दितेन—विदेशीर मुखे ताहादेर एइ वन्दनागान शुनिया ताहारा अत्यन्त उत्साहित हइया उठिया ताँहाके समादर करित। फिरिबार समय मिछरिर खण्ड ओ हालुआ लइया आसितेन।

एकबार पिता गुरुदरबारेर एकजन गायकके बासाय आनाइया ताहार काछ हइते भजनागान शुनियाछिलेन। बोधकरि ताहाके ये-पुरस्कार देओया हइयाछिल ताहार चेये कम दिलेओ से खुशी हइत। इहार फल हइल एइ, आमादेर बासाय गान शोनाइबार उमेदारेर आमादानि एत बेशि हइते लागिल ये, ताहादेर पथरोधेर जन्य शक्त बन्दोबस्तेर प्रयोजन हइल। बाड़िते सुविधा ना पाइया ताहारा सरकारि रास्ताय आसिया आक्रमण आरम्भ करिल। प्रतिदिन सकाल-वेलाय पिता आमाके सङ्गे करिया बेड़ाइते बाहिर हइतेन। एइ समये क्षणे क्षणे हठात् सम्मुखे तानपुरा-घाड़े गायकेर आविर्भाव हइत। ये-पाखिर काछे शिकारि अपरिचित नहे से येमन काहारओ घाड़ेर उपर बन्दुकेर चोङ देखिलेइ चमकिया उठे, रास्तार सुदूर कोनो-एकटा कोणे तानपुरा-यन्त्रेर डगाटा देखिलेइ आमादेर सेइ दशा हइत। किन्तु शिकार एमनि सेयाना हइया उठियाछिल ये, ताहादेर तानपुरार आओयाज नितान्त फाँका आओयाजेर काज करित—ताहा आमादिगके दूरे भागाइया दित, पाड़िया फेलिते पारित ना।

यखन सन्ध्या हइया आसित पिता बागानेर सम्मुखे बारान्दाय आसिया बसितेन। तखन ताँहाके ब्रह्मसंगीत शोनाइबार जन्य आमार डाक पड़ित। चाँद उठियाछे, गाछेर छायार भितर दिया ज्योत्स्नार आलो बारान्दार उपर आसिया पड़ियाछे--आमि बेहागे गान गाइदेतेछि[1]--

तुमि बिना के प्रभु संकट निवारे
के सहाय भव-अन्धकारे--

तिनि निस्तब्ध हइया नतशिरे कोलेर उपर दुइ हात जोड़ करिया शुनितेछेन,--सेइ सन्ध्यावेलाटिर छबि आजओ मने पड़ितेछे।

पूर्वेइ बलियाछि एकदिन आमार रचित दुइटि पारमार्थिक कविता श्रीकण्ठ-बाबुर निकट शुनिया पितृदेव हासियाछिलेन। ताहार परे बड़ो वयसे आर-एकदिन आमि ताहार शोध लइते पारियाछिलाम। सेइ कथाटा एखाने उल्लेख करिते इच्छा करि।

एकबार माघोत्सवे[2] सकाले ओ विकाले आमि अवनेकगुलि गान तैरि करियाछिलाम। ताहार मध्ये एकटा गान--'नयन तोमारे पाय ना देखिते रयेछ नयने नयने।'

पिता तखन चुँचुड़ाय छिलेन। सेखाने आमार एवं ज्योतिदादार[3] डाक पड़िल। हारमोनियमे ज्योतिदादाके बसाइया आमाके तिनि नूतन गान सब-कटि एके एके गाहिते बलिलेन। कोनो कोनो गान दुबारओ गाहिते हइल।

गान गाओया यखन शेष हइल तखन तिनि बलिलेन, 'देशेर राजा यदि देशेर भाषा जानित ओ साहित्येर आदर बुझित, तबे कविके तो ताहारा पुरस्कार दित। राजार दिक हइते यखन ताहार कोनो सम्भावना नाइ तखन आमाकेइ से-काज करिते हइबे।' एइ बलिया तिनि एकखानि पाँच-श टाकार चेक आमार हाते दिलेन।

पिता आमाके इंरेजि पड़ाइबेन बलिया Peter Parly's Tales पर्यायेर अनेकगुलि बइ लइया गियाछिलेन। ताहार मध्य हइते बेन्जामिन फ्याङ्कलिनेर जीवनवृत्तान्त तिनि आमार पाठ्यरूपे बाछिया लइलेन। तिनि मने करिया-

---

१. गानटि सत्येन्द्रनाथ ठाकुर रचित (१२७५, माघ)। द्र ब्रह्मसङ्गीत
२. बांला १२९३, माघ
३. ज्योतिरिन्द्रनाथ ठाकुर (१८४९-१९२५)

छिलेन, जीवनी अनेकटा गल्पेर मतो लागिबे एवं ताहा पड़िया आमार उपकार हइबे। किन्तु पड़ाइते गिया ताँहार भुल भाङिल। बेञ्जामिन फ्याङ्कलिन नितान्तइ सुबुद्धि मानुष छिलेन। ताँहार हिसाब-करा केजो धर्मनीतिर संकीर्णता आमार पिताके पीड़ित करित। तिनि एक-एक जायगा पड़ाइते पड़ाइते फ्याङ्क-लिनेर घोरतर सांसारिक विज्ञतार दृष्टान्ते ओ उपदेशवाक्ये अत्यन्त विरक्त हइया उठितेन एवं प्रतिवाद ना करिया थाकिते पारितेन ना।

इहार पूर्वे मुग्धबोध मुखस्थ करा छाड़ा संस्कृत पड़ार आर-कोनो चर्चा हय नाइ। पिता आमाके एकेबारेइ ऋजुपाठ द्वितीयभाग[1] पड़ाइते आरम्भ करिलेन एवं ताहार सङ्गे उपक्रमणिकार शब्दरूप मुखस्थ करिते दिलेन। बांला आमा-दिगके एमन करिया पड़िते हइयाछिल ये, ताहातेइ आमादेर संस्कृत शिक्षार काज अनेकटा अग्रसर हइया गियाछिल। एकेबारे गोड़ा हइतेइ यथासाध्य संस्कृत रचनाकार्ये तिनि आमाके उत्साहित करितेन। आमि याहा पड़िताम ताहारइ शब्दगुला उलटपालट करिया लम्बा लम्बा समास गाँथिया येखाने-सेखाने यथेच्छ अनुस्वार योग करिया देवभाषाके अपदेवेर योग्य करिया तुलिताम। किन्तु पिता आमार एइ अद्‌भुत दुःसाहसके एकदिनओ उपहास करेन नाइ।

इहा छाड़ा तिनि प्रक्टरेर[2] लिखित सरलपाठ्य इंरेजि ज्योतिषग्रन्थ हइते अनेक विषय मुखे मुखे आमाके बुझाइया दितेन; आमि ताहा बांलाय लिखिताम।[3]

ताँहार निजेर पड़ार जन्य तिनि ये—बइगुलि सङ्गे लइयाछिलेन ताहार मध्य एकटा आमार चोखे खुब ठेकित। दश-बारो खण्डे बाँधानो बृहदाकार गिबनेर रोम[4]। देखिया मने हइत ना इहार मध्ये किछुमात्र रस आछे। आमि मने भाविताम, आमाके दाये पड़िया अनेक जिनिस पड़िते हय, कारण आमि बालक, आमार उपाय नाइ—किन्तु इनि तो इच्छा करिलेइ ना पड़िलेइ पारितेन, तबे ए दुःख केन।

---

१. ईश्वरचन्द्र विद्यासागरेर प्रणीत

२. Richd A. Procter

३. "रवीन्द्र एखाने भालो आछे एवं आमार निकटे संस्कृत ओ इंराजि अल्प अल्प पाठ शिखितेछे। इहाके ब्राह्मधर्मओ पड़ाइया थाकि।"—देवेन्द्रनाथेर पत्र, वक्रोटा, १८७३, २५ एप्रिल

४. The History of the Decline and Fall of the Roman Empire by Edward Gibbon (1838 ed.)

अमृतसरे मासखानेक छिलाम। सेखाने हइते चैत्रमासेर शेषे ड्यालहौसि पाहाड़े यात्रा करा गेल। अमृतसरे मास आर काटितेछिल ना। हिमालयेर आह्वान आमाके अस्थिर करिया तुलितेछिल।

यखन झाँपाने करिया पाहाड़े उठितेछिलाम तखन पर्वतेर उपत्यका-अधित्यका-देशे नानाविध चैतालि फसले स्तरे स्तरे पंक्तिते सौन्दर्येर आगुन लागिया गियाछिल। आमरा प्रातःकालेइ दुधरुटि खाइया बाहिर हइताम एवं अपराह्ने डाकबांलाय आश्रय लइताम। समस्तदिन आमार दुइ चोखेर विराम छिल ना—पाछे किछु-एकटा एड़ाइया याय, एइ आमार भय। येखाने पाहाड़ेर कोनो कोणे पथेर कोनो बाँके पल्लवभाराच्छन्न वनस्पतिर दल निविड़ छाया रचना करिया दाँड़ाइया आछे एवं ध्यानरत वृद्ध तपस्वीदेर कोलेर काछे लीलामयी मुनिकन्यादेर मतो दुइ-एकटि झरनार धारा सेइ छायातल दिया, शैवालाच्छन्न कालो पाथरगुलार गा बाहिया, घनशीतल अन्धकारेर निभृत नेपथ्य हइते कुल्‌कुल् करिया झरिया पड़ितेछे, सेखाने झाँपानिरा झाँपान नामाइया विश्राम करित। आमि लुब्धभावे मने करिताम, ए-समस्त जायगा आमादिगके छाड़िया याइते हइतेछे केन। एइखाने थाकिलेइ तो हय।

नूतन परिचयेर ओइ एकटा मस्त सुविधा। मन तखनो जानिते पारे ना ये एमन आरओ अनेक आछे। ताहा जानिते पारिलेइ हिसाबि मन मनोयोगेर खरचटा बाँचाइते चेष्टा करे। यखन प्रत्येक जिनिसटाकेइ एकान्त दुर्लभ बलिया मने करे तखनइ मन आपनार कृपणता घुचाइया पूर्ण मूल्य देय। ताइ आमि एक-एकदिन कलिकातार रास्ता दिया याइते याइते निजेके विदेशी बलिया कल्पना करि। तखनइ बुझिते पारि, देखिबार जिनिस ढेर आछे, केवल मन दिबार मूल्य दिइ ना बलिया देखिते पाइ ना। एइ कारणेइ देखिबार क्षुधा मिटाइबार जन्य लोके विदेशे याय।

आमार काछे पिता ताँहार छोटो क्याशबाक्सटि राखिबार भार दियाछिलेन। ए सम्बन्धे आमिइ योग्यतम व्यक्ति, से-कथा मने करिबार हेतु छिल ना। पथ-खरचेर जन्य ताहाते अनेक टाकाइ थाकित। किशोरी चाटुर्जेर[1] हाते दिले तिनि निश्चिन्त थाकिते पारितेन किन्तु आमार उपर विशेष भार देओयाइ ताँहार उद्देश्य छिल। डाकबांलाय पौँछिया एकदिन बाक्सटि ताँहार हाते ना दिया घरेर टेबिलेर उपर राखिया दियाछिलाम, इहाते तिनि आमाके भर्त्सना करियाछिलेन।

---

१. किशोरीनाथ चट्टोपाध्याय, देवेन्द्रनाथेर अनुचर

डाकबांलाय पौँछिले पितृदेव बाहिरे चौकि लइया बसितेन। सन्ध्या हइया आसिले पर्वतेर स्वच्छ आकाशे तारागुलि आश्चर्य सुस्पष्ट हइया उठित एवं पिता आमाके ग्रहतारका चिनाइया दिया ज्योतिष्क सम्बन्धे आलोचना करितेन।

वक्रोटाय आमादेर बासा एकटि पाहाड़ेर सर्वोच्च चूड़ाय छिल। यदिओ तखन वैशाख मास, किन्तु शीत अत्यन्त प्रबल। एमन-कि, पथेर ये-अंशे रौद्र पड़ित ना सेखाने तखनो बरफ गले नाइ।

एखानेओ कोनो आशङ्का करिया आपन इच्छाय पाहाड़े भ्रमण करिते पिता एकदिनओ आमाके बाधा देन नाइ।

आमादेर बासार निम्नवर्ती एक अधित्यकाय विस्तीर्ण केलुवन छिल। सेइ वने आमि एकला आमार लौहफलकविशिष्ट लाठि लइया प्राय बेड़ाइते याइताम। वनस्पतिगुला प्रकाण्ड दैत्येर मतो मस्त मस्त छाया लइया दाँड़ाइया आछे; ताहादेर कत शत वत्सरेर विपुल प्राण! किन्तु एइ सेदिनकार अति क्षुद्र एकटि मानुषेर शिशु असंकोचे ताहादेर गा घेँसिया घुरिया बेड़ाइतेछे, ताहारा एकटि कथाओ बलिते पारे ना। वनेर छायार मध्ये प्रवेश करिबामात्रइ येन ताहार एकटा विशेष स्पर्श पाइताम। येन सरीसृपेर गात्रेर मतो एकटि घन शीतलता, एवं वनतलेर शुष्क पत्रराशिर उपरे छाया-आलोकेर पर्याय येन प्रकाण्ड एकटा आदिम सरीसृपेर गात्रेर विचित्र रेखावली।

आमार शोबार घर छिल एकटा प्रान्तेर घर। रात्रे बिछानाय शुइया काचेर जानालार भितर दिया नक्षत्रालोकेर अस्पष्टताय पर्वतचूड़ाय पाण्डुरवर्ण तुषार-दीप्ति देखिते पाइताम। एक-एकदिन, जानि ना कतरात्रे, देखिताम, पिता गाये एकखानि लाल शाल परिया हाते एकटि मोमबातिर सेज लइया निःशब्दसञ्चरणे चलियाछेन। काचेर आवरणे घेरा बाहिरेर बारान्दाय वसिया उपासना करिते याइतेछेन।

ताहार पर आर-एक घुमेर परे हठात् देखिताम, पिता आमाके ठेलिया जागाइया दितेछेन। तखनो रात्रिर अन्धकार सम्पूर्ण दूर हय नाइ। उपक्रमणिका हइते 'नरः नरौ नराः' मुखस्थ करिबार जन्य आमार सेइ समय निर्दिष्ट छिल। शीतेर कम्बलराशिर तप्त वेष्टन हइते बड़ो दुःखेर एइ उद्बोधन।

सूर्योदयकाले यखन पितृदेव ताँहार प्रभातेर उपासना अन्ते एकबाटि दुध खाओया शेष करितेन, तखन आमाके पाशे लइया दाँड़ाइया उपनिषदेर मन्त्रपाठ द्वारा आर-एकबार उपासना करितेन।

ताहार परे आमाके लइया बेड़ाइते बाहिर हइतेन। ताँहार सङ्गे बेड़ाइते आमि पारिब केन। अनेक वयस्क लोकेरओ से साध्य छिल ना। आमि पथि-

मध्येइ कोनो-एकटा जायगाय भङ्ग दिया पाय-चलापथ बाहिया उठिया आमादेर बाड़िते गिया उपस्थित हइताम।

पिता फिरिया आसिले घण्टाखानेक इंरेजि पड़ा चलित[1]! ताहार पर दशटार समय बरफगला ठाण्डाजले स्नान। इहा हइते कोनोमतेइ अव्याहति छिल ना; ताँहार आदेशेर विरुद्धे घड़ाय गरमजल मिशाइतेओ भृत्येरा केह साहस करित ना। यौवनकाले तिनि निजे किरूप दुःसहशीतल जले स्नान करियाछेन, आमाके उत्साह दिबार जन्य सेइ गल्प करितेन।

दुध खाओया आमार आर-एक तपस्या छिल। आमार पिता प्रचुर परिमाणे दुध खाइतेन। आमि एइ पैतृक दुग्धपानशक्तिर अधिकारी हइते पारिताम किना निश्चय बला याय ना। किन्तु पूर्वेइ जानाइयाछि की कारणे आमार पानाहारेर अभ्यास सम्पूर्ण उलटादिके चलियाछिल। ताँहार सङ्गे बराबर आमाके दुध खाइते हइत। भृत्यदेर शरणापन्न हइलाम। ताहारा आमार प्रति दया करिया वा निजेर प्रति ममतावशत बाटिते दुधेर अपेक्षा फेनार परिमाण बेशि करिया दित।

मध्याह्ने आहारेर पर पिता आमाके आर-एकबार पड़ाइते बसितेन। किन्तु से आमार पक्षे असाध्य हइत। प्रत्युषेर नष्टघुम ताहार अकालव्याघातेर शोध लइत। आमि घुमे बारबार ढुलिया पड़िताम। आमार अवस्था बुझिया पिता छुटि दिवामात्र घुम कोथाय छुटिया याइत। ताहार परे देवतात्मा नगाधिराजेर पाला।

एक-एकदिन दुपुरवेलाय लाठिहाते एकला एक पाहाड़ हइते आर-एक पाहाड़े चलिया याइताम; पिता ताहाते कखनो उद्वेग प्रकाश करितेन ना। ताँहार जीवनेर शेष पर्यन्त इहा देखियाछि, तिनि कोनो मतेइ आमादेर स्वातन्त्र्ये बाधा दिते चाहितेन ना। ताँहार रुचि ओ मतेर विरुद्ध काज अनेक करियाछि—तिनि इच्छा करिलेइ शासन करिया ताहा निवारण करिते पारितेन किन्तु कखनो ताहा करेन नाइ। याहा कर्तव्य ताहा आमरा अन्तरेर सङ्गे करिब, एजन्य तिनि अपेक्षा करितेन। सत्यके एवं शोभनके आमरा बाहिरेर दिक हइते लइब, इहाते ताँहार मन तृप्ति पाइत ना—तिनि जानितेन, सत्यके भालोबासिते ना पारिले सत्यके ग्रहण कराइ हय ना। तिनि इहाओ जानितेन ये, सत्य हइते दूरे गेलेओ एकदिन सत्ये फेरा याय किन्तु कृत्रिमशासने सत्यके अगत्या अथवा अन्धभावे मानिया लइले सत्येर र मध्ये फिरिबार पथ रुद्ध करा हय।

---

१. "फिरिया आसिया पितार काछे बेञ्जमिनफ्राङ्कलिनेर जीवनी पड़िताम।" —पाण्डुलिपि

आमार यौवनारम्भे एक समये आमार खेयाल गियाछिल, आमि गोरुर गाड़िते करिया ग्रचाण्डट्राङ्क रोड धरिया पेशोयार पर्यन्त याइब। आमार ए प्रस्ताव केह अनुमोदन करेन नाइ एवं इहाते आपत्तिर विषय अनेक छिल। किन्तु आमार पिताके यखनइ बलिलाम, तिनि बलिलेन, "ए तो खुब भालो कथा; रेलगाड़िते भ्रमणके कि भ्रमण बले।" एइ बलिया तिनि किरूपे पदब्रजे एवं घोड़ार गाड़ि प्रभृति वाहने भ्रमण करियाछेन, ताहार गल्प करिलेन। आमार ये इहाते कोनो कष्ट बा विपद घटिते पारे, ताहार उल्लेखमात्र करिलेन ना।

आर-एकबार यखन[1] आमि आदिसमाजेर सेक्रेटारिपदे नूतन नियुक्त हइयाछि तखन पिताके पार्कस्ट्रीटेर बाड़िते गिया जानाइलाम ये, "आदिब्राह्म-समाजेर बेदिते ब्राह्मण छाड़ा अन्यवर्णेर आचार्य बसेन ना, इहा आमार काछे भालो बोध हय ना।" तिनि तखनइ आमाके बलिलेन, "बेश तो, यदि तुमि पार तो इहार प्रतिकार करियो।" यखन ताँहार आदेश पाइलाम तखन देखिलाम, प्रतिकारेर शक्ति आमार नाइ। आमि केवल असम्पूर्णता देखिते पारि किन्तु पूर्णता सृष्टि करिते पारि ना। लोक कोथाय। ठिक लोकके आह्वान करिब, एमन जोर कोथाय। भाङिया से-जायगाय किछु गड़िब, एमन उपकरण कइ। यतक्षण पर्यन्त यथार्थ मानुष आपनि ना आसिया जोटे ततक्षण एकटा बाँधा नियमओ भालो, इहाइ ताँहार मने छिल। किन्तु क्षणकालेर जन्यओ कोनो विघ्नेर कथा बलिया तिनि आमाके निषेध करेन नाइ। येमन करिया तिनि पाहाड़े-पर्वते आमाके एकला बेड़ाइते दियाछेन, सत्येर पथेओ तेमनि करिया चिरदिन तिनि आपन गम्य-स्थान निर्णय करिबार स्वाधीनता दियाछेन। भुल करिब बलिया तिनि भय पान नाइ, कष्ट पाइब बलिया तिनि उद्विग्न हन नाइ। तिनि आमादेर सम्मुखे जीवनेर आदर्श धरियाछिलेन किन्तु शासनेर दण्ड उद्यत करेन नाइ।

पितार सङ्गे अनेक समयेइ बाड़िर गल्प बलिताम। बाड़ि हइते काहारओ चिठि पाइबामात्र ताँहाके देखाइताम। निश्चयइ तिनि आमार काछ हइते एमन अनेक छवि पाइतेन याहा आर-काहारओ काछ हइते पाइबार कोनो सम्भावना छिल ना।

बड़दादा मेजदादार[2] काछ हइते कोनो चिठि आसिले तिनि आमाके ताहा पड़िते दितेन। की करिया ताँहाके चिठि लिखिते हइबे, एइ उपाये ताहा आमार

१. प्रथम नियोग, १२९१, आश्विन

२. सत्येन्द्रनाथ ठाकुर (१८४२-१९२३)

४

शिक्षा हइयाछिल। बाहिरेर एइ समस्त कायदाकानुन सम्बन्धे शिक्षा तिनि विशेष आवश्यक बलिया जानितेन।

आमार बेश मने आछे, मेजदादार कोनो चिठिते छिल तिनि 'कर्मक्षेत्रे गलबद्ध-रज्जु' हइया खाटिया मारितेछेन—सेइ स्थानेर कयेकटि वाक्य लइया पिता आमाके ताहार अर्थ जिज्ञासा करियाछिलेन। आमि येरूप अर्थ करियाछिलाम ताहा ताँहार मनोनीत हय नाइ—तिनि अन्य अर्थ करिलेन। किन्तु आमार एमन धृष्टता छिल ये से-अर्थ आमि स्वीकार करिते चाहिलाम ना। ताहा लइया अनेकक्षण ताँहार सङ्गे तर्क करियाछिलाम। आर-केह हइले निश्चय आमाके धमक दिया निरस्त करिया दितेन, किन्तु तिनि धैर्येर सङ्गे आमार समस्त प्रतिवाद सह्य करिया आमाके बुझाइबार चेष्टा करियाछिलेन।

तिनि आमार सङ्गे अनेक कौतुकेर गल्प करितेन। ताँहार काछ हइते सेकाले बड़ोमानुषिर अनेक कथा शुनिताम। ढाकाइ कापड़ेर पाड़ ताहादेर गाये कर्कशो ठेकित बलिया तखनकार दिनेर शौखिन लोकेरा पाड़ छिँड़िया फेलिया कापड़ परित—एइ सब गल्प ताँहार काछे शुनियाछि। गयला दुधे जल दित बलिया दुध परिदर्शनेर जन्य भृत्य नियुक्त हइल, पुनश्च ताहार कार्यपरिदर्शनेर जन्य द्वितीय परिदर्शक नियुक्त हइल। एइरूपे परिदर्शकेर संख्या बाड़िया चलिल दुधेर रङअ ततइ घोला एवं काकचक्षुर मतो स्वच्छनील हइया उठिते लागिल—एवं कैफियत दिबार काले गयला बाबुके जानाइल, परिदर्शक यदि आरो बाड़ानो हय तबे अगत्या दुधेर मध्ये शामुक झिनुक ओ चिंड़िमाछेर प्रादुर्भाव हइबे। एइ गल्प ताँहारइ मुखे प्रथम शुनिया खुब आमोद पाइयाछि।

एमन करिया कयेक मास काटिले पर, पितृदेव ताँहार अनुचर किशोरी चाटुर्जेर सङ्गे आमाके कलिकाताय पाठाइया दिलेन।

आमेदाबाद

भारती यखन द्वितीय बत्सरे पड़िल मेजदादा प्रस्ताव करिलेन, आमाके तिनि बिलाते लइया याइबेन। पितृदेव यखन सम्मति दिलेन तखन आमार भाग्यविधातार एइ आर एकटि अयाचित वदान्यताय[1] आमि विस्मित हइया उठिलाम।

---

१. तु 'हिमालययात्रा' पृ० ३०९

बिलायतयात्रार पूर्वे मेजदादा आमाके प्रथमे आमेदाबादे लइया गेलेन। तिनि सेखाने जज छिलेन। आमार बउठाकरुन[1] एवं छेलेरा[2] तखन इंलण्डे——सुतरां बाड़ि एकप्रकार जनशून्य छिल।

शाहिबागे जजेर बासा। इहा बादशाहि आमलेर प्रासाद, बादशाहेर जन्यइ निर्मित। एइ प्रासादेर प्राकारपादमूले ग्रीष्मकालेर क्षीणस्वच्छस्रोता साबरमती नदी ताहार बालुशय्यार एकप्रान्त दिया प्रवाहित हइतेछिल। सेइ नदीतीरेर दिके प्रासादेर सम्मुखभागे एकटि प्रकाण्ड खोला छाद। मेजदादा आदालते चलिया याइतेन। प्रकाण्ड बाड़िते आमि छाड़ा आर केह थाकित ना——शब्देर मध्ये केवल पायरागुलिर मध्याह्नकूजन शोना याइत। तखन आमि येन एकटा अकारण कौतूहले शून्य घरे घरे घुरिया बेड़ाइताम। एकटि बड़ो घरेर देयालेर खोपे खोपे मेजदादार बइगुलि साजानो छिल। ताहार मध्ये, बड़ो बड़ो अक्षरे छापा, अनेक-छविओयाला एकखानि टेनिसनेर काव्यग्रन्थ छिल। सेइ ग्रन्थटिओ तखन आमार पक्षे एइ राजप्रासादेरइ मतो नीरव छिल। आमि केवल ताहार छविगुलिर मध्ये बारबार करिया घुरिया घुरिया बेड़ाइताम। वाक्यगुलि ये एकेबारेइ बुझिताम ना ताहा नहे——किन्तु ताहा वाक्येर अपेक्षा आमार पक्षे अनेकटा कूजनेर मतोइ छिल। लाइब्रेरिते आर-एकखानि बइ छिल, सेटि डाक्तार हेबर्लिन कर्तृक संकलित श्रीरामपुरेर छापा पुरातन संस्कृत काव्यसंग्रहग्रन्थ। एइ संस्कृत कवितागुलि बुझिते पारा आमार पक्षे असम्भव छिल। किन्तु संस्कृत वाक्येर ध्वनि एवं छन्देर गति आमाके कतदिन मध्याह्ने अमरुशतकेर मृदङ्गघात-गम्भीर श्लोकगुलिर मध्ये घुराइया फिरियाछे।

एइ शाहिबाग-प्रासादेर चूड़ार एकटि छोटो घरे आमार आश्रय छिल। केवल एकटि चाकभरा बोलतार दल आमार एइ घरेर अंशी। रात्रे आमि सेइ निर्जन घरे शुइताम——एक-एकदिन अन्धकारे दुइ-एकटा बोलता चाक हइते आमार बिछानार उपर आसिया पड़ित——यखन पाश फिरिताम तखन ताहाराओ प्रीत हइत ना एवं आमार पक्षेओ ताहा तीक्ष्णभावे अप्रीतिकर हइत। शुक्लपक्षेर गभीर रात्रे सेइ नदीर दिकेर प्रकाण्ड छादटाते एकला घुरिया घुरिया बेड़ानो आमार आर-एकटा उपसर्ग छिल। एइ छादेर उपर निशाचर्य करिबार समयइ आमार निजेर

---

१. ज्ञानदानन्दिनी देवी (१८५०-१९४१), सत्येन्द्रनाथेर पत्नी, विवाह १८५९।
२. सुरेन्द्रनाथ (१८७२-१९४०), इन्दिरादेवी (जन्म १८७३) ओ कवीन्द्र (१८७५-७९)।

सुर देओया सर्वप्रथम गानगुलि रचना करियाछिलाम[१]। ताहार मध्ये 'बलि ओ आमार गोलापबाला' गानटि[२] एखनो आमार काव्यग्रन्थेर मध्ये आसन राखियाछे।

इंरेजिते नितान्तइ काँचा छिलाम बलिया समस्तदिन डिक्शनारि लइया नाना इंरेजि बइ पड़िते आरम्भ करिया दिलाम। बाल्यकाल हइते आमार एकटा अभ्यास छिल, सम्पूर्ण बुझिते ना पारिलेओ ताहाते आमार पड़ार बाधा घटित ना। अल्पस्वल्प याहा बुझिताम ताहा लइया आपनार मने एकटा-किछु खाड़ा करिया आमार बेशएकरकम चलिया याइत। एइ अभ्यासेर भालो मन्द दुइप्रकार फलइ आमि आज पर्यन्त भोग करिया आसितेछि।

बिलात

एइरूपे आमेदाबादे ओ बोम्बइये मासछयेक काटाइया आमरा बिलाते यात्रा करिलाम[३]। अशुभक्षणे बिलातयात्रार पत्र[४] प्रथमे आत्मीयदिगके ओ परे भारतीते पाठाइते आरम्भ करियाछिलाम। एखन आर एगुलिके विलुप्त करा आमार साध्येर मध्ये नाइ। एइ चिठिगुलिर अधिकांशइ बाल्यवयसेर बाहादुरि। अश्रद्धा प्रकाश करिया, आघात करिया रचनार आतशबाजि करिबार एइ प्रयास। श्रद्धा करिबार, ग्रहण करिबार, प्रवेशलाभ करिबार शक्तिइ ये सकलेर चेये महत्शक्ति एवं विनयेर द्वाराइ ये सकलेर चेये बड़ो करिया अधिकार विस्तार करा याय—— काँचावयसे ए-कथा मन बुझिते चाय ना। भालोलागा, प्रशंसा करा, येन एकटा पराभव——से येन दुर्बलता——एइजन्य केवलइ खोंचा दिया आपनार श्रेष्ठत्व प्रतिपन्न करिबार एइ चेष्टा आमार काछे आज हास्यकर हइते पारित यदि इहार औद्धत्य ओ असरलता आमार काछे कष्टकर ना हइत।

छेलेबेला हइते बाहिरेर पृथिवीर सङ्गे आमार सम्बन्ध छिलना बलिलेइ हय। एमन समये हठात् सतेरोबछर वयसे बिलातेर जनसमुद्रेर मध्ये भासिया पड़िले

---

१. सर्वप्रथम गान : 'नीरव रजनी देखो मग्न जोछनाय'——भग्नहृदय, रचनावली-अ-१। तु गीतवितान।

२. द्र पूर्वपाठ, भारती २८७ अग्रहायण, रचनावली-अ-१।

३. इं १८७८, २० सेप्टेम्बर, 'पुना स्टिमारे यात्रा। द्र० युरोपप्रवासीर पत्र, प्रथम-रचनावली १।

४. द्र 'युरोप-यात्री कोन बंगीय युवकेर पत्र' भारती, १२८६ वैशाख-पौष, फाल्गुन, १२८७ वैशाख-श्रावण। तु० युरोपप्रवासीर पत्र, रचनावली १।

खुब एकचोट हाबुडुबु खाइबार आशङ्का छिल। किन्तु आमार मेजोबउठाकरुन तखन छेलेदेर लइया ब्राइटेन[1] बास करितेछिलेन——ताँहार आश्रये गिया विदेशेर प्रथम धाक्काटा आर गाये लागिल ना।

तखन शीत आसिया पड़ियाछे। एकदिन रात्रे घरे बसिया आगुनेर धारे गल्प करितेछि, छेलेरा, उत्तेजित हइया आसिया कहिल, बरफ पड़ितेछे[2]। बाहिरे गिया देखिलाम, कनकने शीत, आकाशे शुभ्र ज्योत्सना एवं पृथिवी सादा बरफे ढाकिया गियाछे। चिरदिन पृथिवीर ये-मूर्ति देखियाछि ए से-मूर्तिइ नय——ए येन एकटा स्वप्न, येन आर किछु——समस्त काछेर जिनिस येन दूरे गिया पड़ियाछे, शुभ्रकाय निश्चल तपस्वी येन गभीर ध्यानेर आवरणे आवृत। अकस्मात् घरेर बाहिर हइयाइ एमन आश्चर्य विराट सौन्दर्य आर-कखनो देखि नाइ।

बउठाकुरानीर यत्ने एवं छेलेदेर विचित्र उत्पात-उपद्रवेर आनन्दे दिन बेश काटिते लागिल। छेलेरा आमार अद्भुत इंरेजि उच्चारणे भारि आमोद बोध करिल। ताहादेर-आर सकलरकम खेलाय आमार कोनो बाधा छिल ना, केवल ताहादेर एइ आमोदटाते आमि सम्पूर्णमने योग दिते पारिताम ना। Warm शब्दे a-र उच्चारण o-र मतो एवं Worm शब्दे o-र उच्चारण a-र मतो—— एटा ये कोनोमतेइ सहजज्ञाने जानिबार विषय नहे, सेटा आमि शिशुदिगके बुझाइब की करिया। मन्दभाग्य आमि, ताहादेर हासिटा आमार उपर दियाइ गेल, किन्तु हासिटा सम्पूर्ण पाओना छिल इंरेजि उच्चारण-विधिर। एइ दुटि छोटो छेलेर[3] मन भोलाइबार, ताहादिगके हासाइबार, आमोद दिबार नानाप्रकार उपाय आमि प्रतिदिन उद्भावन करिताम। छेले भोलाइबार सेइ उद्भावनी शक्ति खाटाइबार प्रयोजन ताहार परे आरओ अनेकबार घटियाछे—एखनो से-प्रयोजन याय नाइ। किन्तु से-शक्तिर आर से अजस्र प्राचुर्य अनुभव करि ना। शिशुदेर काछे हृदयके दान करिबार अवकाश सेइ आमार जीवने प्रथम घटियाछिल—— दानेर आयोजन ताइ एमन विचित्रभावे पूर्ण हइया प्रकाश पाइयाछिल।

किन्तु समुद्रेर एपारेर घर हइते बाहिर हइया समुद्रेर घरे प्रवेश करिबार जन्य तो आमि यात्रा करि नाइ। कथा छिल, पड़ाशुना करिब, व्यारिस्टर हइया देशे फिरिब ताइ एकदिन ब्राइटने एकटि पाबलिक स्कुले आमि भरति हइलाम। विद्यायलयेर अध्यक्ष प्रथमेइ आमार मुखेर दिके ताकाइया बलिया उठिलेन, "बाहबा,

---

१. (Brighton, Sussex), द्र० युरोपप्रवासीर पत्र, षष्ठ।
२. द्र 'बरफ पड़ा' बालक, १२९२ आश्विन।
३. सुरेन्द्र ओ इन्दिरा।

तोमार माथाटा तो चमत्कार।" (What a splendid head you have!) एइ छोटो एकटा ये आमार मने आछे ताहार कारण एइ ये, बाड़िते आमार दर्पहरण करिबार जन्य याँहार प्रबल अध्यवसाय छिल—तिनि विशेष करिया आमाके एइ कथाटि बुझाइया दियाछिलेन ये, आमार ललाट एवं मुखश्री पृथिवीर अन्य अनेकेर सहित तुलनाय कोनोमते मध्यमश्रेणीर बलिया गण्य हइते पारे। आशा करि, एटाके पाठकेरा आमार गुण बलियाइ धरिबेन ये, आमि ताँहार कथा सम्पूर्ण विश्वास करियाछिलाम एवं आमार सम्बन्धे सृष्टिकर्तार नानाप्रकार कार्पण्ये दुःख अनुभव करिया नीरव हइया थाकिताम। एइरूपे क्रमे ताँहार मतेर सङ्गे बिलात बासीर मतेर दुटो-एकटा विषये पार्थक्य देखिते पाइया अनेकबार आमि गम्भीर हइया भाबियाछि, हयतो उभय देशेर विचारेर प्रणाली ओ आदर्श सम्पूर्ण विभिन्न।

ब्राइटनेर एइ स्कुलेर एकटा जिनिस लक्ष्य करिया आमि विस्मित हइयाछिलाम—छात्रेरा आमार सङ्गे किछुमात्र रूढ़ व्यवहार करे नाइ। अनेक समये ताहारा आमार पकेटेर मध्ये कमलालेबु आपेल प्रभृति फल गुँजिया दिया पलाइया गियाछे। आमि विदेशी बलियाइ आमार प्रति ताहादेर एइरूप आचरण, इहाइ आमार विश्वास।

ए-इस्कुलेओ आमार बेशिदिन पड़ा चलिल ना—सेटा इस्कुलेर दोष नय। तखन तारक पालित महाशय[1] इंलण्डे छिलेन। तिनि बुझिलेन, एमन करिया आमार किछु हइबे ना। तिनि मेजदादाके बलिया आमाके लण्डने आनिया प्रथमे एकटा बासाय एकला छाड़िया दिलेन। से बासाटा छिल रिजेण्ट उद्यानेर सम्मुखेइ। तखन घोरतर शीत। सम्मुखेर बागानेर गाछगुलाय एकटिओ पाता नाइ—बरफे-ढाका आँकाबाँका रोगा डालगुला लइया ताहारा सारि सारि आकाशेर दिके ताकाइया खाड़ा दाँड़ाइया आछे—देखिया आमार हाड़गुलार मध्ये पर्यन्त येन शीत करिते थाकित। नवागत प्रवासीर पक्षे शीतेर लण्डनेर मतो एमन निर्मम स्थान आर-कोथाओ नाइ। काछाकाछिर मध्ये परिचित केह नाइ, रास्ताघाट भालो करिया चिनि ना। एकला घरे चुप करिया बसिया बाहिरेर दिके ताकाइया थाकिबार दिन आबार आमार जीवने फिरिया आसिल। किन्तु बाहिर तखन मनोरम नहे, ताहार ललाटे भ्रूकुटि; आकाशे रंग घोला, आलोक मृतव्यक्तिर चक्षुतारार मतो दीप्तिहीन; दशदिक आपनाके संकुचित करिया आनियाछे, जगतेर मध्ये उदार आह्वान नाइ। घरेर मध्ये आसबाब प्राय किछुइ छिल ना। दैवक्रमे की कारणे एकटा हारमोनियम छिल। दिन यखन सकाल-

---

१. स्यर तारकनाथ पालित (? ८४१-१९१४)।

सकाल अन्धकार हइया आसित तखन सेइ यन्त्रटा आपनमने बाजाइताम। कखनो कखनो भारतवर्षीय केह केह आमार सङ्गे देखा करिते आसितेन। ताँहादेर सङ्गे आमार परिचय अति अल्पइ छिल। किन्तु यखन बिदाय लइया ताँहारा उठिया चलिया याइतेन आमार इच्छा करित, कोट धरिया ताँहादिगके टानिया आबार घरे आनिया बसाइ।

एइ बासाय थाकिबार समय एकजन आमाके लाटिन शिखाइते आसितेन। लोकटि अत्यन्त रोगा--गायेर कापड़ जीर्णप्राय--शीतकालेर नग्न गाछगुलार मतोइ तिनि येन आपनाके शीतेर हात हइते बाँचाइते पारितेन ना। ताँहार वयस कत ठिक जानि ना किन्तु तिनि ये आपन वयसेर चेये बुड़ा हइया गियाछेन, ताहा ताँहाके देखिलेइ बुझा याय। एक-एकदिन आमाके पड़ाइबार समय तिनि येन कथा खुँजिया पाइतेन ना, लज्जित हइया पड़ितेन। ताँहार परिवारेर सकल लोके ताँहाके बातिकग्रस्त बलिया जानित। एकटा मत ताँहाके पाइया बसिया छिल। तिनि बलितेन, पृथिवीते एक-एकटा युगे एकइ समये भिन्न भिन्न देशेर मानव समाजे एकइ भावेर आविर्भाव हइया थाके; अवश्य सभ्यतार तारतम्य-अनुसारे सेइ भावेर रूपान्तर घटिया थाके किन्तु हाओयाटा एकइ। परस्परेर देखादेखि ये एकइ भाव छड़ाइया पड़े ताहा नहे, येखाने देखादेखि नाइ सेखानेओ अन्यथा हय ना। एइ मतटिके प्रमाण करिबार जन्य तिनि केवलइ तथ्यसंग्रह करितेछेन ओ लिखितेछेन। एदिके घरे अन्न नाइ, गाये वस्त्र नाइ, ताँहार मेयेरा ताँहार मतेर प्रति श्रद्धामात्र करे ना एवं सम्भवत एइ पागलामिर जन्य ताँहाके सर्वदा भर्त्सना करिया थाके। एक-एकदिन ताँहार मुख देखिया बुझा याइत--भालो कोनो-एकटा प्रमाण पाइयाछेन, लेखा अनेकटा अग्रसर हइयाछे। आमि सेदिन सेइ विषये कथा उत्थापन करिया ताँहार उत्साहे आरओ उत्साह सञ्चार करिताम, आबार एक-एकदिन तिनि बड़ो विमर्ष हइया आसितेन--येन ये-भार तिनि ग्रहण करियाछेन ताहा आर वहन करिते पारितेछेन ना। सेदिन पड़ानोर पदे पदे बाधा घटित, चोखदुटो कोन् शून्येर दिके ताकाइया थाकित, मनटाके कोनोमतेइ प्रथमपाठ्य लाटिन-व्याकरणेर मध्ये टानिया आनिते पारितेन ना। एइ भावेर भारे ओ लेखार दाये अवनत, अनशन क्लिष्ट लोकटिके देखिले आमार बड़ोइ वेदना बोध हइत। यदिओ बेश बुझितेछिलाम, इँहार द्वारा आमार पड़ार साहाय्य प्राय किछुइ हइबे ना, तुबुओ कोनोमतेइ इँहाके बिदाय करिते आमार मन सरिल ना। ये-कयदिन से-बासाय छिलाम एमनि करिया लाटिन पड़िबार छल करियाइ काटिल। बिदाय लइबार समय यखन ताँहार वेतन चुकाइते गेलाम तिनि करुणस्वरे आमाके कहिलेन, "आमि केवल तोमार समय नष्ट करियाछि, आमि तो

कोनो काजइ करि नाइ, आमि तोमार काछ हइते वेतन लइते पारिब ना।" आमि ताँहाके अनेक कष्टे वेतन लइते राजि करियाछिलाम। आमार सेइ लाटिनशिक्षक यदिच ताँहार मतके आमार समक्षे प्रमाणसह उपस्थित करेन नाइ, तबु ताँहार से-कथा आमि ए-पर्यन्त अविश्वास करि ना। एखनो आमार एइ विश्वास ये, समस्त मानुषेर मनेर सङ्गें मनेर एकटि अखण्ड गंभीर योग आछे; ताहार एक जायगाय ये-शक्तिर क्रिया घटे अन्यत्र गूढ़भावे ताहा संक्रामित हइया थाके।

एखान हइते पालित महाशय आमाके बार्कार नामक एकजन शिक्षकेर बासाय लइया गेलेन।[1] इनि बाड़िते छात्रदिगके परीक्षार जन्य प्रस्तुत करिया दितेन। इँहार घरे इँहार भालोमानुष स्त्रीटि छाड़ा अत्यल्पमात्रओ रम्य जिनिस किछुइ छिल ना। एमन शिक्षकेर छात्र ये केन जोटे ताहा बुझिते पारि, कारण छात्र-बेचारादेर निजेर पछन्द प्रयोग करिबार सुयोग घटे ना--किन्तु एमन मानुषेरओ स्त्री मेले केमन करिया से-कथा भाविले मन व्यथित हइया उठे। बार्कार-जायार सान्त्वनार सामग्री छिल एकटि कुकुर--किन्तु स्त्रीके यखन बार्कार दण्ड दिते इच्छा करितेन तखन पीड़ा दितेन सेइ कुकुरके। सुतरां एइ कुकुरके अवलम्बन करिया मिसेस बार्कार आपनार वेदनार क्षेत्रके आरओ खानिकटा विस्तृत करिया तुलियाछिलेन।

एमनसमय बउठाकुरानी यखन डेभनशियरे टर्किनगर[2] हइते डाक दिलेन तखन आनन्दे सेखाने दौड़ दिलाम। सेखाने पाहाड़े, समुद्रे, फुलबिछानो प्रान्तरे, पाइनवनेर छायाय आमार दुइटि लीलाचञ्चल शिशुसङ्गीके लइया की सुखे काटियाछिल बलिते पारि ना। दुइ चक्षु यखन मुग्ध, मन आनन्दे अभिषिक्त एवं अवकाशे पूर्ण दिनगुलि निष्कण्टक सुखेर बोझा लइया प्रत्यह अनन्तेर निस्तब्ध नीलाकाश समुद्रे पाड़ि दितेछे, तखनो केन ये मनेर मध्ये कविता लेखार तागिद आसितेछे ना, एइ कथा चिन्ता करिया एक-एकदिन मने आघात पाइयाछि। ताइ एकदिन खाता-हाते छाता-माथाय नीलसागरेर शैलबेलाय कविर कर्त्तव्य पालन करिते गेलाम। जायगाटि सुन्दर बाछियाछिलाम--कारण, सेटा तो छन्दओ नहे, भावओ नहे। एकटि समुच्च शिलातट चिरव्यग्रतार मतो समुद्रेर अभिमुखे, शून्ये झुंकिया रहियाछे;-- सम्मुखेर फेनरेखाङ्कित तरल नीलिमार दोलार उपर दिनेर आकाश दोल खाइया तरङ्गेर कलगाने हासिमुखे घुमाइतेछे

---

१. द्र० युरोपप्रवासीर पत्र, सप्तम।

२. **Torquay, Devonshire**। द्र युरोपप्रवासीर पत्र, नवम।

——पश्चाते सारिबाँधा पाइनेर सुगन्धि छायाखानि वनलक्ष्मीर आलस्यस्खलित आँचलटिर मतो छड़ाइया पड़ियाछे। सेइ शिलासने बसिया भग्नतरी[1] नामे एकटि कविता लिखियाछिलाम। सेइखानेइ समुद्रेर जले सेटाके मग्न करिया दिया आसिले आज हयतो बसिया बसिया भाविते पारिताम ये, से जिनिसटा बेश भालोइ हइयाछिल। किन्तु से रास्ता बन्ध हइया गेछे। दुर्भाग्यक्रमे एखनो से सशरीरे साक्ष्य दिबार जन्य वर्तमान। ग्रन्थावली हइते यदिओ से निर्वासित तबु सपिनाजारि करिले ताहार ठिकाना पाओया दुःसाध्य हइबे ना।

किन्तु कर्त्तव्येर पेयादा निश्चिन्त हइया नाइ। आबार तागिद आसिल—— आबार लण्डने फिरिया गेलाम। एबारे डाक्तार स्कट नामे एकजन भद्र गृहस्थेर घरे आमार आश्रय जुटिल।[2] एकदिन सन्ध्यार समय बाक्स तोरङ्ग लइया ताँहादेर घरे प्रवेश करिलाम। बाड़िते केवल पक्ककेश डाक्तार, ताँहार गृहिणी ओ ताँहादेर बड़ो मेयेटि आछेन। छोटो दुइजन मेये भारतवर्षीय अतिथिर आगमन-आशङ्काय अभिभूत हइया कोनो आत्मीयेर बाड़ी पलायन करियाछेन। बोधकरि यखन ताँहारा संवाद पाइलेन, आमार द्वारा कोनो सांघातिक विपदेर आशु सम्भावना नाइ तखन ताँहारा फिरिया आसिलेन।

अति अल्पदिनेर मध्येइ आमि इँहादेर घरेर लोकेर मतो हइया गेलाम। मिसेस स्कट आमाके आपन छेलेर मतोइ स्नेह करितेन। ताँहार मेयेरा आमाके येरूप मनेर सङ्गे यत्न करितेन ताहा आत्मीयदेर काछ हइतेओ पाओया दुर्लभ।

एइ परिवारे बास करिया एकटि जिनिस आमि लक्ष्य करियाछि—मानुषेर प्रकृति सब जायगातेइ समान। आमरा बलिया थाकि एवं आमिओ ताहा विश्वास करिताम ये, आमादेर देशे पतिभक्तिर एकटि विशिष्टता आछे, युरोपे ताहा नाइ। किन्तु आमादेर देशेर साध्वीगृहिणीर सङ्गे मिसेस स्कटेर आमि तो विशेष पार्थक्य देखि नाइ। स्वामीर सेवाय ताँहार समस्त मन व्यापृत छिल। मध्यवित्त गृहस्थघरे चाकर-बाकरदेर उपसर्ग नाइ, प्राय सब काजइ निजेर हाते करिते हय——एइजन्य स्वामीर प्रत्येक छोटोखाटो काजटिओ मिसेस स्कट निजेर हाते करितेन। सन्ध्यार समय स्वामी काज करिया घरे फिरिबेन, ताहार पूर्वेइ आगुनेर धारे तिनि स्वामीर आरामकेदारा ओ ताँहार पशमेर जुताजोड़ाटि स्वहस्ते गुछाइया राखितेन। डाक्तार स्कटेर की भालो लागे आर ना लागे,

---

१. द्र 'भग्नतरी', भारती, १२८६ आषाढ़; रचनावली-अ १

२. द्र युरोपप्रवासीर पत्र, दशम

कोन् व्यवहार ताँहार काछे प्रिय बा अप्रिय, से-कथा मुहूर्तेर जन्यओ ताँहार स्त्री भुलितेन ना। प्रातःकाले एकजनमात्र दासीके लइया निजे उपरेर तला हइते निचेर रान्नाघर, सिड़ि एवं दरजार गायेर पितलेर काजगुलिके पर्यन्त धुइया माजिया तक्तके झक्झके करिया राखिया दितेन। इहार परे लोक-लौकिकतार नाना कर्तव्य तो आछेइ। गृहस्थालिर समस्त काज सारिया सन्ध्यार समय आमादेर पड़ाशुना गानबाजनाय तिनि सम्पूर्ण योग दितेन; अवकाशेर काले आमोदप्रमोदके जमाइया तोला, सेटाओ गृहिणीर कर्तव्येरइ अङ्ग।

मेयेदेर लइया एक-एकदिन सन्ध्याबेलाय सेखाने टेबिल-चाला हइत। आमरा कयेकजने मिलिया एकटा टिपाइये हात लागाइया थाकिताम, आर टिपाइटा घरमय उन्मत्तेर मतो दापादापि करिया बेड़ाइत। क्रमे एमन हइल, आमरा याहाते हात दिइ ताहाइ नाड़िते थाके। मिसेस स्कटेर एटा ये खुब भालो लागित ताहा नहे। तिनि मुख गम्भीर करिया एक-एकबार माथा नाड़िया बलितेन, "आमार मने हय, एटा ठिक वैध हइतेछे ना।" किन्तु तबु तिनि आमादेर एइ छेलेमानुषि काण्डे जोर करिया बाधा दितेन ना, एइ आनाचार सह्य करिया याइतेन। एकदिन डाक्तार स्कटेर लम्बा टुपि लइया सेटार उपर हात राखिया यखन चालिते गेलाम, तिनि व्याकुल हइया ताड़ाताड़ि छुटिया आसिया बलिलेन, "ना ना, ओ-टुपि चालाइते पारिबे ना।" ताँहार स्वामीर माथार टुपिते मुहूर्तेर जन्य शयतानेर संस्रव घटे, इहा तिनि सहिते पारिलेन ना।

एइ-समस्तेर मध्ये एकटि जिनिस देखिते पाइताम, सेटि स्वामीर प्रति ताँहार भक्ति। ताँहार सेइ आत्मविसर्जनपर मधुर नम्रता स्मरण करिया स्पष्ट बुझिते पारि, स्त्रीलोकेर प्रेमेर स्वाभाविक चरम परिणाम भक्ति। सेखाने ताहादेर प्रेम आपन विकाशे कोनो बाधा पाय नाइ सेखाने ताहा आपनि पूजाय आसिया ठेके। येखाने भोगविलासेर आयोजन प्रचुर येखाने आमोदप्रमोदइ दिनरात्रिके आविल करिया राखे, सेखाने एइ प्रेमेर विकृति घटे; सेखाने स्त्रीप्रकृति आपनार पूर्ण आनन्द पाय ना।

कयेक मास एखाने काटिया गेल। मेजदादादेर देशे फिरिवार समय उपस्थित हइल। पिता लिखिया पाठाइलेन, आमाकेओ ताँहादेर सङ्गे फिरिते हइबे। से-प्रस्तावे आमि खुशि हइया उठिलाम। देशेर आलोक देशेर आकाश आमाके भितरे भितरे डाक दितेछिल। विदायग्रहणकाले मिसेस स्कट आमार दुइ हात धरिया काँदिया कहिलेन, "एमन करियाइ यदि चलिया याइबे तबे एत

अल्पदिनेर जन्य तुमि केन एखाने आसिले।" —लण्डने एइ गृहटि एखन आर नाइ—एइ डाक्तार परिवारेर केहबा अवलोके केहबा इहलोके के कोथाय चलिया गियाछेन, ताहार कोनो संवादइ जानि ना किन्तु सेइ गृहटि आमार मनेर मध्ये चिरप्रतिष्ठित हइया आछे।

एकबार शीतेर समय आमि टन्ब्रिज ओयेल्स्[1] शहरेर रास्ता दिया याइबार समय देखिलाम एकजन लोक रास्तार धारे दाँड़ाइया आछे; ताहार छेंड़ा जुतार भितर दिया पा देखा याइतेछे, पाये मोजा नाइ, बुकेर खानिकटा खोला। भिक्षा करा निषिद्ध बलिया से आमाके कोनो कथा बलिल ना, केवल मुहूर्तकालेर जन्य आमार मुखेर दिके ताकाइल। आमि ताहाके ये-मुद्रा दिलाम ताहा ताहार पक्षे प्रत्याशार अतीत छिल। आमि किछुदूर चलिया आसिले से ताड़ाताड़ि छुटिया आसिया कहिल, "महाशय, आपनि आमाके भ्रमक्रमे एकटि स्वर्णमुद्रा दियाछेन।"—बलिया सेइ मुद्राटि आमाके फिराइया दिते उद्यत हइल। एइ घटनाटि हयतो आमार मने थाकित ना किन्तु इहार अनुरूप आर-एकटि घटना घटियाछिल। बोधकरि टर्कि स्टेशन प्रथम यखन पौँछिलाम एकजन मुटे आमार मोट लइया ठिका गाड़िते तुलिया दिल। टाकार थलि खुलिया पेनि-जातीय किछु पाइलाम ना, एकटि अर्धक्राउन छिल—सेइटिइ ताहार हाते दिया गाड़ि छाड़िया दिलाम। किछुक्षण परे देखि सेइ मुटे गाड़िर पिछने छुटिते छटिते गाड़ोयानके गाड़ि थामाइते बलितेछे। आमि मने भाबिलाम, से आमाके निर्बोध विदेशी ठाहराइया आरओ किछु दाबि करिते आसितेछे। गाड़ि थामिले से आमाके बलिल, "आपनि बोधकरि पेनि मने करिया आमाके अर्धक्राउन दियाछेन।"

यतदिन इंलण्डे छिलाम केह आमाके वञ्चना करे नाइ, ताहा बलिते पारि ना—किन्तु ताहा मने करिया राखिबार विषय नहे एवं ताहाके बड़ो करिया देखिले अविचार करा हइबे। आमार मने एइ कथाटा खुब लागियाछे ये, याहारा निजे विश्वास नष्ट करे ना ताहाराइ अन्यके विश्वास करे। आमरा सम्पूर्ण विदेशी अपरिचित, यखन खुशि फाँकि दिया दौड़ मारिते पारि—तबु सेखाने दोकाने बाजारे केह आमादिगके किछु सन्देह करे नाइ।

यतदिन बिलाते छिलाम, शुरु हइते शेष पर्यन्त एकटि प्रहसन आमार प्रवास-बासेर सङ्गे जड़ित हइया छिल। भारतवर्षेर एकजन उच्च इंरेज कर्मचारीर विधवा स्त्रीर सहित आमार आलाप हइयाछिल। तिनि स्नेह करिया आमाके रुबि

---

१. Tunbridge Wells, Kent —द्र युरोपप्रवासीर पत्र, अष्टम।

बलिया डाकितेन। ताँहार स्वामीर मृत्यु-उपलक्षे ताँहार भारतवर्षीय एक बन्धु इंरेजिते एकटि विलापगान रचना करियाछिलेन। ताहार भाषानैपुण्य ओ कवित्वशक्ति सम्बन्धे अधिक वाक्यव्यय करिते इच्छा करि ना। आमार दुर्भाग्य-क्रमे सेइ कविताटि बेहागरागिणीते गाहिते हइबे एमन एकटा उल्लेख छिल। आमाके एकदिन तिनि धरिलेन, "एइ गानटा तुमि बेहागरागिणीते गाहिया आमाके शुनाओ।" आमि नितान्त भालोमानुषि करिया ताँहार कथाटा रक्षा करिया-छिलाम। सेइ अद्भुत कवितार सङ्गे बेहाग सुरेर सम्मिलनटा ये किरूप हास्यकर हइयाछिल, ताहा आमि छाड़ा बुझिबार द्वितीय कोनो लोक सेखाने उपस्थित छिल ना। महिलाटि भारतवर्षीय सुरे ताँहार स्वामीर शोकगाथा शुनिया खुब खुशि हइलेन। आमि मने करिलाम, एइखानेइ पाला शेष हइल--किन्तु हइल ना।

सेइ विधवा रमणीर सङ्गे निमन्त्रणसभाय प्रायइ आमार देखा हइत। आहारान्ते बैठकखाना घरे यखन निमन्त्रित स्त्रीपुरुष सकले एकत्रे समवेत हइतेन तखन तिनि आमाके सेइ बेहाग गान करिबार जन्य अनुरोध करितेन। अन्य सकले भावितेन, भारतवर्षीय सङ्गीतेर एकटा बुद्धि आश्चर्य नमुना शुनिते पाइबेन--ताँहारा सकले मिलिया सानुनय योग दितेन, महिलाटिर पकेट हइते सेइ छापानो कागजखानि बाहिर हइत--आमार कर्णमूल रक्तिम आभा धारण करित। नतशिरे लज्जितकण्ठे गान धरिताम--स्पष्टइ बुझिते पारिताम, एइ शोकगाथार फल आमार पक्षे छाड़ा आर-काहारओ पक्षे यथेष्ट शोचनीय हइत ना। गानेर शेषे चापा हासिर मध्य हइते शुनिते पाइताम। "Thank you very much. How interesting!" तखन शीतेर मध्येओ आमार शरीर घर्माक्त हइबार उपक्रम करित। एइ भद्रलोकेर मृत्यु आमार पक्षे ये एतबड़ो एकटा दुर्घटना हइया उठिबे, ताहा आमार जन्मकाले बा ताँहार मृत्युकाले के मने करिते पारित!

ताहार परे आमि यखन डाक्तार स्कटेर बाड़िते थाकिया लण्डन युनिभार्सिटिते पड़ा आरम्भ करिलाम तखन किछुदिन सेइ महिलाटिर सङ्गे आमार देखासाक्षात् बन्ध छिल। सेइ बाड़िते याइबार जन्य तिनि प्राय आमाके अनुरोध करिया चिठि लिखितेन। आमि शोकगाथार भये कोनोमतेइ राजि हइताम ना। अवशेषे एकदिन ताँहार सानुनय एकटि टेलिग्राम पाइलाम। टेलिग्राम यखन पाइलाम तखन कलेजे याइतेछि। एदिके तखन कलिकाताय फिरिबार समयओ आसन्न हइयाछे। मने करिलाम, एखान हइते चलिया याइबार पूर्वे विधवार अनुरोधटा पालन करिया याइब।

कलेज हइते बाड़ि ना गिया एकेबारे स्टेशने गेलाम। सेदिन बड़ो दुर्योग

खुब शीत, बरफ पड़ितेछे, कुयाशाय आकाश आच्छन्न। येखाने याइते हइबे सेइ स्टेशनेइ ए-लाइनेर शेष गम्यस्थान—ताइ निश्चिन्त हइया बसिलाम। कखन गाड़ि हइते नामिते हइबे ताहा सन्धान लइबार प्रयोजन बोध करिलाम ना।

देखिलाम, स्टेशनगुलि सब डानदिके आसितेछे। ताइ डानदिकेर जानला घँषिया बसिया गाड़िर दीपालोके एकटा बइ पड़िते लागिलाम। सकाल सकाल सन्ध्या हइया अन्धकार हइया आसियाछे——बाहिरे किछुइ देखा याय ना। लण्डन हइते ये कयजन यात्री आसियाछिल ताहारा निज निज गम्यस्थाने एके एके नामिया गेल।

गन्तव्य स्टेशनेर पूर्व स्टेशन छाड़िया गाड़ि चलिल। एक जायगाय एकबार गाड़ि थामिल। जानला हइते मुख बाड़ाइया देखिलाम, समस्त अन्धकार। लोकजन नाइ, आलो नाइ, प्ल्याटफर्म नाइ, किछुइ नाइ। भितरे याहारा थाके ताहाराइ प्रकृत तत्त्व जाना हइते वञ्चित—रेलगाड़ि केन ये अस्थाने असमये थामिया बसिया थाके रेलेर आरोहीदेर ताहा बुझिबार उपाय नाइ, अतएव पुनराय पड़ाय मन दिलाम। किछुक्षण बादे गाड़ि पिछु हटिते लागिल——मने ठिक करिलाम, रेलगाड़िर चरित्र बुझिबार चेष्टा करा मिथ्या। किन्तु यखन देखिलाम ये-स्टेशनटि छाड़िया गियाछिलाम सेइ स्टेशने आसिया गाड़ि थामिल, तखन उदासीन थाका आमार पक्षे कठिन हइल। स्टेशनेर लोकके जिज्ञासा करिलाम, अमुक स्टेशन कखन पाओया याइबे। से कहिल, सेइखान हइतेइ तो ए-गाड़ि एइमात्र आसियाछे। व्याकुल हइया जिज्ञासा करिलाम, कोथाय याइतेछे। से कहिल, लण्डने। बुझिलाम ए-गाड़ि खेयागाड़ि, पारापार करे। व्यतिव्यस्त हइया हठात् सेइखाने नामिया पड़िलाम। जिज्ञासा करिलाम, उत्तरेर गाड़ि कखन पाओया याइबे। से कहिल, आज रात्रे नय। जिज्ञासा करिलाम, काछाकाछिर मध्ये सराइ कोथाओ आछे? से बलिल, पाँच माइलेर मध्ये ना।

प्राते दशटार समय आहार करिया बाहिर हइयाछि, इतिमध्ये जलस्पर्श करि नाइ। किन्तु वैराग्य छाड़ा यखन द्वितीय कोनो पथ खोला ना थाके तखन निवृत्तिइ सबचेये सोजा। मोटा ओभारकोटेर बोताम गला पर्यन्त आँटिया स्टेशनेर दीप-स्तम्भेर निचे बेञ्चेर उपर बसिया बइ पड़िते लागिलाम। बइटा छिल स्पेन्सरेर Data of Ethics [१] सेटि तखन सबेमात्र प्रकाशित हइयाछे। गत्यन्तर यखन नाइ तखन, एइजातीय बइ मनोयोग दिया पड़िबार एमन परिपूर्ण अवकाश आर जुटिबे ना, एइ वलिया मनके प्रबोध दिलाम।

---

१. *The Data of Ethics* by Herbert Spencer (1879, June)

किछुकाल परे पोर्टार आसिया कहिल, आज एकटि स्पेशल आछे—आध-घण्टार मध्ये आसिया पौंछिबे। शुनिया मने एत स्फुर्तिर सञ्चार हइले ये ताहार पर हइते Data of Ethics ए-मनोयोग करा अमार पक्षे असाध्य हइया उठिल।

सातटार समय येखाने पौंछिबार कथा सेखाने पौंछिते साड़े-नयटा हइल। गृहकर्त्री कहिलेन, "ए की रुबी, व्यापारखाना की।" आमि आमार आश्चर्य भ्रमणवृत्तान्तटि खुब-ये सगर्वे बलिलाम ताहा नय।

तखन सेखानकार निमन्त्रितगण डिनार शेष करियाछेन। आमार मने धारण छिल ये, आमार अपराध यखन स्वेच्छाकृत नहे तखन गुरुतर दण्डभोग करिते हइबे ना—विशेषत रमणी यखन विधानकर्त्री। किन्तु उच्चपदस्थ भारत कर्मचारीर विधवा स्त्री आमाके बलिलेन, "एसो रुबि, एक पेयाला चा खाइबे।"

आमि कोनोदिन चा खाइ ना, किन्तु जठरानल निर्वापणेर पक्षे पेयाला यत्किञ्चित साहाय्य करिते पारे मने करिया गोटादुयेक चक्राकार बिस्कुटेर सङ्गे सेइ कड़ा चा गिलिया फेलिलाम। बैठकखानाघरे आसिया देखिलाम, अनेक-गुलि प्राचीना नारीर समागम हइयाछे। ताँहादेर मध्ये एकजन सुन्दरी युवती छिलेन, तिनि आमेरिकान एवं तिनि गृहस्वामिनीर युवक भ्रातुष्पुत्रेर सहित विवाहेर पूर्वे पूर्वरागेर पाला उद्यापन करितेछेन। घरेर गृहिणी बलिलेन, "एबार तबे नृत्य शुरू करा याक।" आमार नृत्येर कोनो प्रयोजन छिल ना एवं शरीरमनेर अवस्थाओ नृत्येर अनुकूल छिल ना। किन्तु अत्यन्त भालोमानुष याहारा जगते ताहारा असाध्यसाधन करे। सेइ कारणे यदिच एइ नृत्यसभाटि सेइ युवकयुवतीर जन्यइ आहूत, तथापि दशघण्टा उपवासेर पर दुइखण्ड बिस्कुट खाइया तिनकाल-उत्तीर्ण प्राचीन रमणीदेर सङ्गे नृत्य करिलाम।

एखानेइ दुःखेर अवधि हइल ना। निमन्त्रणकर्त्री आमाके जिज्ञासा करिलेन, "रुबि, आज तुमि रात्रियापन करिबे कोथाय।" ए-प्रश्नेर जन्य आमि एकेबारेइ प्रस्तुत छिलाम ना। आमि हतबुद्धि हइया यखन ताहार मुखेर दिके ताकाइया रहिलाम तिनि कहिलेन, "रात्रि द्विप्रहरे एखानकार सराइ बन्ध हइया याय, अतएव आर विलम्ब ना करिया एखनइ तोमार सेखाने जाओया कर्तव्य।" सौजन्येर एकेबारे अभाव छिल ना—सराइ आमाके निजे खुंजिया लइते हय नाइ। लण्ठन धरिया एकजन भृत्य आमाके सराइये पौंछाइया दिल।

मने करिलाम, हयतो शापे वर हइल—हयतो एखाने आहारेर व्यवस्था आछे। जिज्ञासा करिलाम, आमिष हउक, निरामिष हउक, ताजा हउक, बासि हउक, किछु खाइते पाइब कि। ताहारा कहिल, मद्य यत चाओ पाइबे, खाद्य नय। तखन

भाबिलाम, निद्रादेवीर हृदय कोमल, तिनि आहार ना दिन विस्मृति दिबेन। किन्तु ताँहार जगत्जोड़ा अङ्केओ तिनि से-रात्रे आमाके स्थान दिलेन ना। बेलेपाथरेर मेजेओयाला घर ठाण्डा कन्कन् करितेछे; एकटि पुरातन खाट ओ एकटि जीर्ण मुख धुइबार टेबिल घरेर आसबाब।

सकालबेलाय इङ्गभारती विधवाटि प्रातराश खाइबार जन्य डाकिया पाठाइलेन। इंरेजि दस्तुरे याहाके ठाण्डा खाना बले ताहारइ आयोजन। अर्थात्, गतरात्रिर भोजेर अवशेष आज ठाण्डा अवस्थाय खाओया गेल। इहारइ अति यत्सामान्य किछु अंश यदि उष्ण बा कवोष्ण आकारे काल पाओया याइत ताहा हइले पृथिवीते काहारओ कोनो गुरुतर क्षति हइत ना--अथच आमार नृत्यटा डाङाय-तोला कइमाछेर नृत्येर मतो एमन शोकावह हइते पारित ना।

आहारान्ते निमन्त्रणकर्मी कहिलेन, "याँहाके गान शुनाइबार जन्य तोमाके डाकियाछि तिनि असुस्थ, शय्यागत; ताँहार शयनगृहे दाँड़ाइया तोमाके गाहिते हइबे।" सिंड़िर उपर आमाके दाँड़ कराइया देओया हइल। रुद्धद्वारेर दिके अंगुलि निर्देश करिया गृहिणी कहिलेन, "ओइ घरे तिनि आछेन।" आमि सेइ अदृश्य रहस्येर अभिमुखे दाँड़ाइया शोकेर गान बेहागरागिणीते गाहिलाम, ताहार पर रोगिणीर अवस्था की हइल से-संवाद लोकमुखे बा संवादपत्रे जानिते पाइ नाइ।

लण्डने फिरिया आसिया दुइ-तीन दिन बिछानाय पड़िया निरंकुश भालोमानुषिर प्रायश्चित्त करिलाम। डाक्तारेर मेयेरा कहिलेन, "दोहाइ तोमार, एइ निमन्त्रण व्यापारके आमादेर देशेर आतिथ्येर नमुना बलिया ग्रहण करियो ना। ए तोमादेर भारतवर्षेर निमकेर गुण।"

प्रभात सङ्गीत[1]

गङ्गार धारे बसिया सन्ध्यासंगीत छाड़ा किछु-किछु गद्यओ लिखिताम, सेओ कोनो बाँधा लेखा नहे--सेओ एकरकम या-खुशी ताइ लेखा। छेलेरा येमन लीलाच्छले पतङ्ग धरिया थाके एओ सेइरकम। मनेर राज्ये यखन वसन्त आसे तखन छोटो-छोटो स्वल्पायु रङिन भावना उड़िया उड़िया बेड़ाय, ताहादिगके केह अलक्ष्यओ करे ना, अवकाशेर दिने सेइगुलाके धरिया राखिबार खेयाल आसियाछिल। आसल कथा, तखन सेइ एकटा झोंकार मुखे चलिया छिलाम--मन बुक-

---

१. प्रकाश, शक १८०५ वैशाख (१८८३)। रचनावली १

फुलाइया बलितेछिल, आमार याहा इच्छा ताहाइ लिखिब—की लिखिब से खेयाल छिल ना, किन्तु आमिइ लिखिब, एइमात्र ताहार एकटा उत्तेजना। एइ छोट-छोटो गद्य लेखागुला एक समये 'विविध प्रसङ्ग' नामे ग्रन्थ आकारे बाहिर हइयाछे[1]—प्रथम संस्करणेर शेषेइ ताहादिगके समाधि देओया हइयाछे, द्वितीय संस्करणे आर ताहादिगके नूतन जीवनेर पाट्टा देओया हय नाइ।

बोधकरि एइ समयेइ 'बउठाकुरानीर हाट' नामे एकटा बड़ो नभेल लिखिते शुरू करियाछिलाम।[2]

एइरूपे गङ्गातीरे किछुकाल काटिया गेले ज्योतिदादा किछुदिनेर जन्य चौरङ्गि जादुघरेर निकट दश नम्बर सदर स्ट्रीटे बास करितेन। आमि ताँहार सङ्गे छिलाम। एखानेओ एकटु एकटु करिया बउठाकुरानीर हाट ओ एकटि एकटि करिया सन्ध्यासङ्गीत लिखितेछि एमन समये आमार मध्ये हठात् एकटा की उलट-पालट हइया गेल।

एकदिन जोड़ासाँकोर बाड़िर छादेर उपर अपराह्लेर शेषे बेड़ाइतेछिलाम। दिवावसानेर म्लानिमार उपरे सूर्यास्तेर आभाटि जड़ित हइया सेदिनकार आसन्न सन्ध्या आमार काछे विशेषभावे मनोहर हइया प्रकाश पाइयाछिल। पाशेर बाड़िर देयालगुला पर्यन्त आमार काछे सुन्दर हइया उठिल। आमि मने-मने भाविते लागिलाम, परिचित जगतेर उपर हइते एइ-ये तुच्छतार आवरण एकेबारे उठिया गेल ए कि केवलमात्र सायाह्लेर आलोकसम्पातेर एकटि जादुमात्र। कखनोइ ताहा नय। आमि बेश देखिते पाइलाम, इहार आसल कारणटि एइ ये, सन्ध्या आमारइ मध्ये आसियाछे—आमिइ ढाका पड़ियाछि। दिनेर आलोते आमिइ यखन अत्यन्त उग्र हइया छिलाम तखन याहाकिछुकेइ देखिते-शुनिते-छिलाम समस्तके आमिइ जड़ित करिया आवृत करियाछि। एखन सेइ आमि सरिया आसियाछे बलियाइ जगतके ताहार निजेर स्वरूपे देखितेछि। से-स्वरूप कखनोइ तुच्छ नहे—ताहा आनन्दमय सुन्दर। ताहार पर आमि माझे माझे इच्छापूर्वक निजेके येन सराइया फेलिया जगतके दर्शकेर मतो देखिते चेष्टा करिताम, तखन मनटा खुशि हइया उठित। आमार मने आछे, जगतटाके केमन करिया देखिले ये ठिकमतो देखा याय एवं सेइसङ्गे निजेर भार लाघव हय, सेइ कथा एकदिन बाड़िर कोनो आत्मीयके बुझाइबार चेष्टा करियाछिलाम—किछुमात्र कृतकार्य

---

१. शक १८०५, भाद्र (१८८३)। रचनावली-अ १

२. द्र भारती, १२८८ कार्तिक-१२८९ आश्विन। ग्रन्थप्रकाश, शक १८०४ पौष (१८८३)। रचनावली १

हइ नाइ, ताहा जानि। एमन समये आमार जीवनेर एकटा अभिज्ञता लाभ करिलाम, ताहा आज पर्यन्त भूलिते पारि नाइ।

सदर स्ट्रीटेर रास्ताटा येखाने गिया शेष हइयाछे सेइखाने बोधकरि फ्री-इस्कुलेर बागानेर गाछ देखा जाय। एकदिन सकाले बारान्दाय दाँड़ाइया आमि सेइदिके चाहिलाम। तखन सेइ गाछगुलिर पल्लवान्तराल हइते सूर्योदय हइतेछिल। चाहिया थाकिते थाकिते हठात् एक मुहूर्तेर मध्ये आमार चोखेर उपर हइते येन एकटा पर्दा सरिया गेल। देखिलाम एकटि अपरूप महिमाय विश्वसंसार समाच्छन्न, आनन्दे एवं सौन्दर्ये सर्वत्रइ तरङ्गित। आमार हृदये स्तरे स्तरे ये-एकटा विषादेर आच्छादन छिल ताहा एक निमिषेइ भेद करिया आमार समस्त भितरटाते विश्वेर आलोक एकेबारे बिच्छुरित हइया पड़िल। सेइदिनइ 'निर्झरेर स्वप्नभङ्ग' कविताटि[1] निर्झरेर मतोइ येन उत्सारित हइया बहिया चलिल। लेखा शेष हइया गेल किन्तु जगतेर सेइ आनन्दरूपेर उपर तखनो यवनिका पड़िया गेल ना। एमनि हइल आमार काछे तखन केहइ एवं किछुइ अप्रिय रहिल ना। सेइदिनइ किंवा ताहार परेर दिन एकटा घटना घटिल, ताहाते आमि निजेइ आश्चर्य बोध करिलाम। एकटि लोक छिल से माझे माझे आमाके एइ प्रकारेर प्रश्न जिज्ञासा करित, "आच्छा मशाय, आपनि कि ईश्वरके कखनो स्वचक्षे देखियाछेन।" आमाके स्वीकार करितेइ हइत, देखि नाइ--तखन से बलित, "आमि देखियाछि।" यदि जिज्ञासा करिताम "किरूप देखियाछे", से उत्तर करित, चोखेर सम्मुखे बिज-बिज करिते थाकेन। एरूप मानुषेर सङ्गे तत्त्वालोचनाय कालयापन सकल समये प्रीतिकर हइते पारे ना। विशेषत, तखन आमि प्राय लेखार झोंके थाकिताम। किन्तु लोकटा भालोमानुष छिल बलिया ताहाके बाधा दिते पारिताम ना, समस्त सहिया याइताम।

एइबार, मध्याह्नकाले सेइ लोकटि यखन आसिल तखन आमि सम्पूर्ण आनन्दित हइया ताहाके बलिलाम, "एसो एसो।" से ये निर्बोध एवं अद्भुतरकमेर व्यक्ति, ताहार सेइ बहिरावरणटि येन खुलिया गेछे। आमि याहाके देखिया खुशि हइलाम एवं अभ्यर्थना करिया लइलाम से ताहार भितरकार लोक—आमार सङ्गे ताहार

---

१. प्रथम प्रकाश, भारती, १२८९ अग्रहायण।
"आमि सेइ दिनइ समस्त मध्याह्न ओ अपराह्न 'निर्झरेर स्वप्नभङ्ग' लिखिलाम।.....एकटि अपूर्व अद्भुत हृदयस्फूर्तिर दिने 'निर्झरेर स्वप्न-भङ्ग' लिखियाछिलाम किन्तु सेदिन के जानित एइ कविताय आमार समस्त काव्येर भमिका लेखा हइतेछे।"--पाण्डुलिपि।

अनैक्य नाइ, आत्मीयता आछे। यखन ताहाके देखिया आमार कोनो पीड़ा बोध हइल ना, मने हइल ना, ये आमार समय नष्ट हइबे, तखन आमार भारि आनन्द हइल––बोध हइल, एइ आमार मिथ्या जाल काटिया गेल, एतदिन एइ सम्बन्धे निजेके बारबार ये कष्ट दियाछि ताहा अलीक एवं अनावश्यक।

आमि बारान्दाय दाँड़ाइया थाकिताम, रास्ता दिया मुटे मजुर ये-केह चलित ताहादेर गतिभङ्गि, शरीरेर गठन, ताहादेर मुखश्री आमार काछे भारि आश्चर्य बलिया बोध हइत ; सकलेइ येन निखिल समुद्रेर उपर दिया तरङ्गलीलार मतो बहिया चलियाछे। शिशुकाल हइते केवल चोख दिया देखाइ अभ्यस्त हइया गियाछिल, आज येन एकेबारे समस्त चैतन्य दिया देखिते आरम्भ करिलाम। रास्ता दिया एक युवक यखन आर-एक युवकेर काँधे हात दिया हासिते हासिते अवलीलाक्रमे चलिया याइत सेटाके आमि सामान्य घटना बलिया मने करिते पारिताम ना––विश्वजगतेर अतलस्पर्श गभीरतार मध्ये ये अफुरान रसेर उत्स चारिदिके हासिर झरना झराइतेछे सेटाके येन देखिते पाइताम।

सामान्य किछु काज करिबार समये मानुषेर अङ्गे प्रत्यङ्गे ये-गतिवैचित्र्य प्रकाशित हय ताहा आगे कखनो लक्ष्य करिया देखि नाइ—एखन मुहूर्ते मुहूर्ते समस्त मानवदेहेर चलनेर सङ्गीत आमाके मुग्ध करिल। ए-समस्त के आमि स्वतन्त्र करिया देखिताम ना, एकटा समष्टिके देखिताम। एइ मुहूर्तेइ पृथिवीर सर्वत्रइ नाना लोकालये, नाना काजे, नाना आवश्यके कोटि कोटि मानव चञ्चल हइया उठियाछे––सेइ धरणीव्यापी समग्र मानवेर देहचाञ्चल्यके सुवृहत्भावे एक करिया देखिया आमि एकटि महासौन्दर्यनृत्येर आभास पाइताम। बन्धुके लइया बन्धु हासितेछे, शिशुके लइया माता लालन पालन करितेछे, एकटा गोरु आर-एकटा गोरुर पाशे दाँड़ाइया ताहार गा चाटितेछे, इहादेर मध्ये ये-एकटि अन्तहीन अपरिमेयता आछे ताहाइ आमार मनके विस्मयेर आघाते येन वेदना दिते लागिल। एइ समये ये लिखियाछिलाम[1]––

हृदय आजि मोर केमने गेल खुलि,
जगत् आसि सेथा करिछे कोलाकुलि––

इहा कविकल्पनार अत्युक्ति नहे। वस्तुत, याहा अनुभव करियाछिलाम ताहा प्रकाश करिबार शक्ति आमार छिल ना।

किछुकाल आमार एइरूप आत्महारा आनन्देर अवस्था छिल। एमन समये ज्योतिदादारा स्थिर करिलेन, ताँहारा दार्जिलिङे याइबेन। आमि भाबिलाम, ए

---

१. द्र 'प्रभात-उत्सव', भारती, १२८९ पौष।

आमार हइल भालो--सदर स्ट्रीटे शहरेर भिड़ेर मध्ये याहा देखिलाम हिमालयेर उदार शैलशिखरे ताहाइ आरओ भालो करिया, गभीर करिया, देखिते पाइब। अन्तत एइ दृष्टिते हिमालय आपनाके केमन करिया प्रकाश करे ताहा जाना याइबे।

किन्तु सदर स्ट्रीटेर सेइ तुच्छ बाड़िटारइ जित हइल। हिमालयेर उपरे चड़िया यखन ताकाइलाम तखन हठात् देखि, आर सेइ दृष्टि नाइ। बाहिर हइते आसल जिनिस किछु पाइब एइटे मने कराइ बोधकरि आमार अपराध हइयाछिल नागाधिराज यत बड़ोइ अभ्रभेदी होन-ना, तिनि किछुइ हाते तुलिया दिते पारेन ना, अथच यिनि देनेओयाला तिनि गलिर मध्येइ एक मुहूर्ते विश्वसंसारके देखाइया दिते पारेन।

आमि देवदारुवने घुरिलाम, झरनार धारे बसिलाम, ताहार जले स्नान करिलाम, काञ्चनशृंङ्गार मेघमुक्त महिमार दिके ताकाइया रहिलाम--किन्तु येखाने पाओया सुसाध्य मने करियाछिलाम सेइखानेइ किछु खुँजिया पाइलाम ना। परिचय पाइयाछि किन्तु आर देखा पाइ ना। रत्न देखितेछिलाम, हठात् ताहा बन्ध हइया एखन कौटा देखितेछि। किन्तु कौटार उपरकार कारुकार्य यतइ थाक्, ताहाके आर केवल शून्य कौटामात्र बलिया भ्रम करिबार आशङ्का रहिल ना।

प्रभातसङ्गीतेर गान थामिया गेल शुधु तार दूर प्रतिध्वनिस्वरूप प्रतिध्वनि नामे एकटि कविता दार्जिलिङ्गे लिखियाछिलाम।[1] सेटा एमनि एकटा अबोध्य व्यापार हइयाछिल ये, एकदा दुइ बन्धु बाजि राखिया ताहार अर्थनिर्णय करिबार भार लइयाछिल। हताश हइया ताहादेर मध्ये एकजन आमार काछ हइते गोपने अर्थ बुझिया लइबार जन्य आसियाछिल। आमार सहायताय से बेचारा ये बाजि जितिते पारियाछिल एमन आमार बोध हय ना। इहार मध्ये सुखेर विषय एइ ये, दुजनेर काहाकेओ हारेर टाका दिते हइल ना। हाय रे, येदिन पद्मेर उपरे एवं वर्षार सरोवरेर उपरे कविता लिखियाछिलाम सेइ अत्यन्त परिष्कार रचनार दिन कतदूरे चलिया गियाछे।

किछु-एकटा बुझाइबार जन्य केह तो कविता लेखे ना। हृदयेर अनुभूति कवितार भितर दिया आकार धारण करिते चेष्टा करे। एइजन्य कविता शुनिया केह यखन बले 'बुझिलाम ना' तखन विषम मुशकिले पड़िते हय। केह यदि फुलेर गन्ध शुंकिया बले 'किछु बुझिलाम ना' ताहाके एइ कथा बलिते हय, इहाते बुझिबार किछु नाइ, ए ये केवल गन्ध। उत्तर शुनि, 'से तो जानि, किन्तु खामका गन्धइ

---

१. 'प्रतिध्वनि', प्रभातसङ्गीत, द्र रचनावली १, पृ० ७६।

बा केन, इहार मानेटा की।' हय इहार जबाब बन्ध करिते हय, नय खुब एकटा घोरालो करिया बलिते हय, प्रकृतिर भितरकार आनन्द एमनि करिया गन्ध हइया प्रकाश पाय। किन्तु मुशकिल एइ ये, मानुषके ये कथा दिया कविता लिखिते हय से-कथार ये माने आछे। एइजन्यइ तो छन्दबन्ध प्रभृति नाना उपाये कथा करिबार स्वाभाविक पद्धति उलटपालट करिया दिया कविके अनेक कौशल करिते हइयाछे, याहाते कथार भावटा बड़ो हइया कथार अर्थटाके यथासम्भव ढाकिया फेलिते पारे। एइ भावटा तत्त्वओ नहे, विज्ञानओ नहे, कोनो प्रकारेर काजेर जिनिस नहे, ताहा चोखेर जल ओ मुखेर हासिर मतो अन्तरेर चेहारा मात्र। ताहार सङ्गे तत्त्वज्ञान, विज्ञान किंवा आर कोनो बुद्धिसाध्य जिनिस मिलाइया दिते पार तो दाओ किन्तु सेटा गौण। खेयानौकाय पार हइबार समय यदि माछ धरिया लइते पार तो से तोमार बाहादुरि किन्तु ताइ बलिया खेयानौका—जेलेडिङि नय—खेयानौकाय माछ रप्तानि हइतेछे ना बलिया पाटुनिके गालि दिले अविचार करा हय।

प्रतिध्वनि कविताटा आमार अनेकदिनेर लेखा—सेटा कहारओ चोखे पड़े ना सुतरां ताहार जन्य काहारओ काछे आज—आमाके जबाबदिहि करिते हय ना। सेटा भालोमन्द येमनि होक ए-कथा जोर करिया बलिते पारि, इच्छा करिया पाठकदेर धाँधा लागाइबार जन्य से-कविताटा लेखा हय नाइ एवं कोनो गभीर तत्त्वकथा फाँकि दिया कविताय बलिया लइबार प्रयासओ ताहा नहे।

आसल कथा हृदयेर मध्ये ये-एकटा व्याकुलता जन्मियाछिल से निजेके प्रकाश करिते चाहियाछे। याहार जन्य व्याकुलता ताहार आर-कोनो नाम खुंजिया ना पाइया ताहाके बलियाछे प्रतिध्वनि एवं कहियाछे—

ओगो प्रतिध्वनि,
बुझि आमि तोरे भालोबासि
बुझि आर कारेओ बासि ना।

विश्वेर केन्द्रस्थले से कोन् गानेर ध्वनि जागितेछे—प्रियमुख हइते, विश्वेर समुदय सुन्दर सामग्री हइते प्रतिघात पाइया याहार प्रतिध्वनि आमादेर हृदयेर भितरे गिया प्रवेश करितेछे। कोनो वस्तुके नय किन्तु सेइ प्रतिध्वनिकेइ बुझि आमरा भालोबासि, केनना इहा ये देखा गेछे, एकदिन याहार दिके ताकइ नाइ आर-एकदिन सेइ एकइ वस्तु आमादेर समस्त मन भुलाइयाछे।

एतदिन जगत्के केवल बाहिरेर दृष्टिते देखिया आसियाछे, एइजन्य ताहार एकटा समग्र आनन्दरूप देखिते पाइ नाइ। एकदिन हठात् आमार अन्तरेर येन एकटा गभीर केन्द्रस्थल हइते एकटा आलोकरश्मि मुक्त हइया समस्त विश्वेर उपर

यखन छड़ाइया पड़िल तखन सेइ जगत्के आर केवल घटनापुञ्ज ओ वस्तुपुञ्ज करिया देखा गेल ना, ताहाके आगागोड़ा परिपूर्ण करिया देखिलाम। इहा हइतेइ एकटा अनुभूति आमार मनेर मध्ये आसियाछिल ये, अन्तरेर कोन्-एकटि गभीरतम गुहा हइते सुरेर धारा आसिया देशे काले छड़ाइया पड़ितेछे--एवं प्रतिध्वनिरूपे समस्त देशकाल हइते प्रत्याहृत हइया सेइखानेइ आनन्दस्रोते फिरिया याइतेछे। सेइ असीमेर दिके फेरार मुखेर प्रतिध्वनिइ आमादेर मनके सौन्दर्ये व्याकुल करे। गुणी एखन पूर्ण हृदयेर उत्स हइते गान छाड़िया देन तखन सेइ एक आनन्द; आबार यखन सेइ गानेर धारा ताँहारइ हृदये फिरिया याय तखन से एक द्विगुणतर आनन्द। विश्वकविर काव्यगान यखन आनन्दमय हइया ताँहारइ चित्ते फिरिया याइतेछे तखन सेइटेके आमादेर चेतनार उपर दिया वहिया याइते दिले आमरा जगतेर परम परिणामटिके येन अनिर्वचनीयरूपे जानिते पारि। येखाने आमादेर सेइ उपलब्धि सेइखानेइ आमादेर प्रीति; सेखाने आमादेरओ मन सेइ असीमेर अभिमुखीन आनन्दस्रोतेर टाने उतला हइया सेइ दिके आपनाके छाड़िया दिते चाय। सौन्दर्येर व्याकुलतार इहाइ तात्पर्य। से-सुर असीम हइते बाहिर हइया सीमार दिके आसितेछे ताहाइ सत्य, ताहाइ मङ्गल, ताहा नियमे बाँधा, आकारे निर्दिष्ट; ताहारइ ये-प्रतिध्वनि सीमा हइते असीमेर दिके पुनश्च फिरिया याइतेछे ताहाइ सौन्दर्य, ताहाइ आनन्द। ताहाके धराछोंयार मध्ये आना असम्भव, ताइ से एमन करिया घरछाड़ा करिया देय। प्रतिध्वनि कवितार मध्ये आमार मनेर एइ अनुभूतिइ रूपके ओ गाने व्यक्त हइवार चेष्टा करियाछे। से चेष्टार फलटि स्पष्ट हइया उठिबे एमन आशा करा याय ना, कारण चेष्टाटाइ आपनाके आपनि स्पष्ट करिया जानित ना।

आरओ किछु अधिक वयसे प्रभातसङ्गीत सम्बन्धे एकटा पत्र लिखियाछिलाम, सेटार एक अंश एखाने उद्धृत करि--

"जगते केह नाइ सबाइ प्राणे मोर'--ओ एकटा वयसेर विशेष अवस्था। यखन हृदयटा सर्वप्रथम जाग्रत हये दुइ बाहु बाड़िये देय तखन मने करे, से येन समस्त जगत्टाके चाय--येमन नवोदगतदन्त शिशु मने करेन, समस्त विश्व-संसारके तिनि गाले पुरे दिते पारेन।

"क्रमे क्रमे बुझते पारा याय, मनटा यथार्थ की चाय एवं की चाय ना। तखन सेइ परिव्यप्त हृदयवाष्प संकीर्ण सीमा अवलम्बन करे ज्वलते एवं ज्वालाते आरम्भ करे। एकेबारे समस्त जगत्टा दाबि करे बसले किछुइ पाओया याय ना, अवशेषे एकटा कोनोकिछुर मध्ये समस्त प्राणमन दिये निविष्ट हते पारले तबेइ असीमेर मध्ये प्रवेशेर सिंहद्वारटि पाओया याय। प्रभातसङ्गीत आमार अन्तरप्रकृतिर

प्रथम बहिर्मुख उच्छ्वास, सेइजन्ये ओटाते आर-किछुमात्र बाछविचार नेइ।"--

प्रथम उच्छ्वासेर एकटा साधारण भावेर व्याप्त आनन्द क्रमे आमादिगके विशेष परिचयेर दिके ठेलिया लइया याय--बिलेर जल क्रमे येन नदी हइया बाहिर हइते चाय--तखन पूर्वराग अनुरागे परिणत हय। वस्तुत, अनुराग पूर्वरागेर अपेक्षा एक हिसाबे संङ्कीर्ण। ताहा एकग्रासे समस्तटा ना लइया क्रमे क्रमे खण्डे खण्डे चाखिया लइते थाके। प्रेम तखन एकाग्र हइया अंशेर मध्येइ समग्रके, सीमार मध्येइ असीमके उपभोग करिते पारे। तखन ताहार चित्त प्रत्यक्ष विशेषेर मध्य दियाइ अप्रत्यक्ष अशेषेर मध्ये आपनाके प्रसारित करिया देय। तखन से याहा पाय ताहा केवल निजेर मनेर एकटा अनिर्दिष्ट भावानन्द नहे--बाहिरेर सहित, प्रत्यक्षेर सहित एकान्त मिलित हइया ताहार हृदयेर भावटि सर्वाङ्गीण सत्य हइया उठे।

मोहितबाबुर ग्रन्थावलीते प्रभातसङ्गीतेर कवितागुलिके 'निष्क्रमण' नाम देओया हइयाछे। कारण, ताहा हृदयारण्य हइते बाहिरेर विश्वे प्रथम आगमनेर वार्ता। तार परे सुखदुःख आलोक-अन्धकारे संसारपथेर यात्री एइ हृदयटार सङ्गे एके-एके खण्डे-खण्डे नाना सुरे ओ नाना छन्दे विचित्रभावे विश्वेर मिलन घटियाछे--अवशेषे एइ बहुविचित्रेर नाना बाँधानो घाटेर भितर दिया परिचयेर धारा बहिया चलिते चलिते निश्चयइ आर-एकदिन आबार एकबार असीम व्याप्तिर मध्ये गिया पौंछिबे, किन्तु सेइ व्याप्ति अनिर्दिष्ट आभासेर व्याप्ति नहे, ताहा परिपूर्ण सत्येर परिव्याप्ति।

आमार शिशुकालेइ विश्वप्रकृतिर सङ्गे आमार खुब एकटि सहज एवं निविड़ योग छिल। बाड़िर भितरेर नारिकेल गाछगुलि प्रत्येके आमार काछे अत्यन्त सत्य हइया देखा दित। नर्मालं स्कुल हइते चारिटार पर फिरिया गाड़ि हइते नामियाइ आमादेर बाड़िर छादटार पिछने देखिलाम, घन सजल नीलमेघ राशीकृत हइया आछे—मनटा तखनइ एक निमेषे निविड़ आनन्देर मध्ये अनावृत हइया गेल—सेइ मुहूर्तेर कथा आजिओ आमि भुलिते पारि नाइ। सकाले जागिबामात्रइ समस्त पृथिवीर जीवनोल्लासे आमार मनके ताहार लेखार सङ्गीर मतो डाकिया बाहिर करित, मध्याह्ने समस्त आकाश एवं प्रहर येन सुतीव्र हइया उठिया आपन गभीरतार मध्ये आमाके विवागि करिया दित एवं रात्रिर अन्धकार ये मायापथेर गोपन दरजाटा खुलिया दित ताहा सम्भव—असम्भवेर सीमाना छाड़ाइया रूपकथार अपरूप राज्ये सातसमुद्र तेरोनदी पार करिया लइया याइत। ताहार पर एकदिन यखन यौवनेर प्रथम उन्मेषे हृदय आपनार खोराकेर

दाबि करिते लागिल तखन बाहिरेर सङ्गे जीवनेर सहज योगटि बाधाग्रस्त हइया गेल। तखन व्यथित हृदयटाके घिरिया घिरिया निजेर मध्येइ निजेर आवर्तन शुरू हइल—चेतना तखन आपनार भितर दिकेइ आबद्ध हइया रहिल। एइरूपे रुग्ण हृदयटार आवदारे अन्तरेर सङ्गे बाहिरेर ये-सामञ्जस्यटा भाङिया गेल, निजेर चिरदिनेर ये सहज अधिकारटि हाराइलाम, सन्ध्यासङ्गीत ताहारइ वेदना व्यक्त हइते चाहियाछे। अवशेषे एकदिन सेइ रुद्ध द्वार जानि ना कोन् धाक्काय हठात भाङिया गेल, तखन याहाके हाराइयाछिलाम ताहाके पाइलाम। शुधु पाइलाम ताहा नहे, विच्छेदेर व्यवधानेर भितर दिया ताहार पूर्णतार परिचय पाइलाम। सहजके दुरूह करिया तुलिया यखन पाओया याय तखनइ पाओया सार्थक हय। एइजन्य आमार शिशुकालेर विश्वके प्रभातसङ्गीते यखन आबार पाइलाम तखन ताहाके अनेक बेशि पाओया गेल। एमनि करिया प्रकृतिर सङ्गे सहज मिलन, विच्छेद ओ पुनर्मिलने जीवनेर प्रथम अध्यायेर एकटा पाला शेष हइया गेल। शेष हइया गेल बलिले मिथ्या बला हय। एइ पालाटाइ आबार आरओ एकटु विचित्र हइया शुरू हइया, आबार आरओ एकटा दुरूहतर समस्यार भितर दिया बृहत्तर परिणामे पौंछिते चलिल। विशेष मानुष जीवने विशेष एकटा पालाइ सम्पूर्ण करिते आसियाछे—पर्वे पर्वे ताहार चक्रटा बृहत्तर परिधिके अवलम्बन करिया बाड़िते थाके—प्रत्येक पाकके हठात् पृथक बलिया भ्रम हय किन्तु खुंजिया देखिले देखा याय केन्द्रटा एकइ।

यखन सन्ध्यासङ्गीत लिखितेछिलाम तखन खण्ड खण्ड गद्य 'विविध प्रसङ्ग' नामे बाहिर हइतेछिल। आर, प्रभातसङ्गीत यखन लिखितेछिलाम किंवा ताहार किछु पर हइते ओइरूप गद्य लेखागुलि आलोचना[1] नामक ग्रन्थे संगृहीत हइया छापा हइयाछिल। एइ दुइ गद्यग्रन्थे ये-प्रभेद घटियाछे ताहा पड़िया देखिलेइ लेखकेर चित्तेर गति निर्णय करा कठिन हय ना।[2]

---

१. प्रकाश, (?) १९८५, एप्रिल। रचन(वली-अ २।

२. "सदरस्ट्रीटे बासेर सङ्गे आमार आर एकटा कथा मने आसे। एमन समये विज्ञान पड़िबार जन्य आमार अत्यन्त एकटा आग्रह उपस्थित हइया-छिल। यखन हक्स्लिर रचना हइते जीवतत्त्व ओ लक्इयार, निउकोम्ब प्रभृतिर ग्रंथ हइते ज्योतिविद्या निविष्टचित्ते पाठ करिताम। जीवतत्त्व ओ ज्योतिष्कतत्त्व आमार अत्यन्त उपादेय बोध हइत"—पाण्डुलिपि।.

जाहाजेर खोल

कागजे[1] की एकटा विज्ञापन देखिया एकदिन मध्याह्ने ज्योतिदादा निलामे गिया फिरिया आसिया खबर दिलेन ये, तिनि सात हाजार टाका दिया एकटा जाहाजेर खोल किनियाछेन। एखन इहार उपरे एञ्जिन जुड़िया कामरा तैरि करिया एकटा पुरा जाहाज निर्माण करिते हइबे[2]।

देशेर लोकेरा कलम चालाय, रसना चालाय किन्तु जाहाज चालाय ना, बोधकरि एइ क्षोभ ताँहार मने छिल। देशे देशालाइकाठि ज्वालाइबार जन्य तिनि एकदिन चेष्टा करियाछिलेन, देशालाइकाठि अनेक घर्षणेओ ज्वले नाइ। देशे ताँतेर कल चालाइबार जन्यओ ताँहार उत्साह छिल किन्तु सेइ ताँतेर कल एकटिमात्र गामछा प्रसव करिया ताहार पर हइते स्तब्ध हइया आछे[3]। ताहार परे स्वदेशी चेष्टाय जाहाज चालाइबार जन्य तिनि हठात् एकटा शून्य खोल किनि-लेन, से-खोल एकदा भरति हइया उठिल शुधु केवल एञ्जिने एवं कामराय नहे—ऋणे एवं सर्वनाशे। किन्तु तबु ए-कथा मने राखिते इहबे, एइ-सकल चेष्टार क्षति याहा से एकला तिनिइ स्वीकार करियाछेन आर हइारलाभ याहा ताहा निश्चयइ एखनो ताँहार देशेर खाताय जमा हइया आछे। पृथिवीते एइरूप बेहिसाबि अव्यवसायी लोकेराइ देशेर कर्मक्षेत्रेर उपर दिया बराबर निष्फल अध्यवसायेर वन्या बहाइया दिते थाकेन; से-वन्या हठात् आसे एवं हठात् चलिया याय, किन्तु ताहा स्तरे स्तरे ये-पलि राखिया चले ताहातेइ देशेर माटिके प्राणपूर्ण करिया तोले—ताहार पर फसलेर दिन यखन आसे तखन ताँहादेर कथा काहारओ मने थाके ना बटे, किन्तु समस्त जीवन याँहारा क्षतिवहन करियाइ आसियाछेन मृत्युर परवर्ती एइ क्षतिटुकुओ ताँहारा अनायासे स्वीकार करिते पारिबेन।

एकदिके बिलाति कोम्पानि[4] आर-एकदिके तिनि एकला—एइ दुइ पक्षे

---

१. Exchange Gazette संवादपत्र

२. द्र ज्योतिस्मृति, पृ १९१-२०६

३. द्र रचनावली १७, पृ ३५२

४. 'फ्लोटिला कोम्पानि', परे क्षतिग्रस्थ हइया उहारा 'होर्‌मिलार कोम्पानि' के समुदाय स्वत्व विक्रय करे। द्र ज्योतिन्द्रनाथ, पृ १२४-३२।

बाणिज्य-नौयुक्त क्रमशइ किरूप प्रचण्ड हइया उठिल ताहा खुलना-बरिशालेर लोकेरा एखनो बोधकरि स्मरण करिते पारिबेन। प्रतियोगितार ताड़नाय जाहाजेर पर जाहाज[1] तैरि हइल, क्षतिर पर क्षति बाड़िते लागिल, एवं आयेर अंक क्रमशइ क्षीण हइते हइते टिकिटेर मूल्येर उपसर्गटा सम्पूर्ण विलुप्त हइया गेल--बरिशाल-खुलनार स्टीमार लाइने सत्ययुग आविर्भाविर उपक्रम हइल। यात्रीरा ये केवल बिना भाड़ाय यातायात शुरु करिल ताहा नहे, ताहारा बिना मूल्ये मिष्टान्न खाइते आरम्भ करिल। इहार उपरे बरिशालेर भलण्टियारेर दल स्वदेशी कीर्तन गाहिया कोमर बाँधिया यात्रीसंग्रहे लागिया गेल[2], सुतरां जाहाजे यात्रीर अभाव हइल ना किन्तु आर सकलप्रकार अभावइ बाड़िल बइ कमिल ना। अङ्कशास्त्रेर मध्ये स्वदेशहितैषितार उत्साह प्रवेश करिबार पथ पाय ना;--कीर्तन यतइ जमुक, उत्तेजना यतइ बाड़ुक, गणित आपनार नामता भुलिते पारिल ना--सुतरां तिन-त्रिक्खे नय ठिक ताले ताले फड़िंयेर मतो लाफ दिते दिते ऋणेर पथे अग्रसर हइते लागिल।

अव्यवसायी भावुक मानुषेर एकटा कुग्रह एइ ये, लोकेरा ताँहादिगके अति सहजेइ चिनिते पारे किन्तु ताँहारा लोक चिनिते पारेन ना; अथच ताँहारा ये चेनेन ना एइटुकुमात्र शिखिते ताँहादेर विस्तर खरच एवं ततोधिक विलम्ब हय, एवं सेइ शिक्षा काजे लागानो ताँहादेर द्वारा इहजीवनेओ घटे ना। यात्रीरा यखन बिना मुल्ये मिष्टान्न खाइतेछिल तखन ज्योतिदादार कर्मचारीरा ये तपस्वीर मतो उपवास करितेछिल, एमन कोनो लक्षण देखा याय नाइ, अतएव यात्रीदेर जन्यओ जलयोगेर व्यवस्था छिल, कर्मचारीराओ वञ्चित हय नाइ, किन्तु सकलेर चेये महत्तम लाभ रहिल ज्योतिदादार--से ताँहार एइ सर्वस्व-क्षतिस्वीकार।

तखन खुलना-बरिशालेर नदीपथे प्रतिदिनेर एइ जयपराजयेर संवाद-आलोचनाय आमादेर उत्तेजनार अन्त छिल ना। अवशेषे एकदिन खबर आसिल, ताँहार स्वदेशी नामक जहाज हावड़ार ब्रिजे ठेकिया डुबियाछे। एइरूपे यखन तिनि ताँहार निजेर साध्येर सीमा एकेबारे सम्पूर्ण अतिक्रम करिलेन, निजेर पक्षे किछुइ आर बाकि राखिलेन ना, तखनइ ताँहार व्यवसा बन्ध हइया गेल।

---

१. इं १८८४, २३ मे तारिखे प्रथम जाहाज 'सरोजिनी' लइया कार्य आरम्भ, क्रमे 'भारत', 'लर्ड रिपण, 'बंगलक्ष्मी' ओ 'स्वदेशी' नामक जाहाज निर्माण।

२. द्र 'बरिशालेर पत्र', बालक,-१२९२ श्रावण।

मृत्युशोक

इतिमध्ये बाड़िते परे परे कयेकटि मृत्युघटना घटिल। इतिपूर्वे मृत्युके आमि कोनोदिन प्रत्यक्ष करि नाइ। मा'र यखन मृत्यु हय आमार तखन वयस अल्प[1]। अनेकदिन हइते तिनि रोगे भुगितेछिलेन, कखन ये ताँहार जीवनसङ्कट उपस्थित हइयाछिल ताहा जानितेओ पाइ नाइ। एतदिन पर्यन्त ये-घरे आमरा शुइताम सेइ घरेइ स्वतन्त्र शय्याय मा शुइतेन। किन्तु ताँहार रोगेर समय एकबार किछुदिन ताँहाके बोटे करिया गङ्गाय बेड़ाइते लइया याओया हय—ताहार परे बाड़िते फिरिया तिनि अन्तःपुरेर तेंतालार घरे थाकितेन। ये-रात्रिते ताँहार मृत्यु हय आमरा तखन घुमाइतेछिलाम, तखन कत रात्रि जानि ना। एकजन पुरातन दासी आमादेर घरे छुटिया आसिया चीत्कार करिया काँदिया उठिल, "ओरे तोदेर की सर्वनाश हल रे!" तखनइ बउठाकुरानी[2] ताड़ाताड़ि ताहाके भर्त्सना करिया घर हइते टानिया बाहिर करिया लइया गेलेन—पाछे गभीर रात्रे आचमका आमादेर मने गुरुतर आघात लागे एइ आशङ्का ताँहार छिल। स्मिति प्रदीपे, अस्पष्ट आलोके क्षणकालेर जन्य जागिया उठिया हठात् बुकटा दमिया गेल किन्तु की हइयाछे भालो करिया बुझितेइ पारिलाम ना। प्रभाते उठिया यखन मा'र मृत्युसंवाद शुनिलाम तखनो से कथाटार अर्थ सम्पूर्ण ग्रहण करिते पारिलाम ना। बाहिरेर बारान्दाय आसिया देखिलाम ताँहार सुसज्जित देह प्राङ्गणे खाटेर उपरे शयान। किन्तु मृत्यु ये भयङ्कर से-देहे ताहार कोनो प्रमाण छिल ना;—सेदिन प्रभातेर आलोके मृत्युर ये-रूप देखिलाम ताहा सुखसुप्तिर मतोइ प्रशान्त ओ मनोहर। जीवन हइते जीवनान्तरे विच्छेद स्पष्ट करिया चोखे पड़िल ना। केवल यखन ताँहार देह वहन करिया बाड़िर सदर दरजार बाहिरे लइया गेल एवं आमरा ताँहार पश्चात् श्मशाने चलिलाम तखनइ शोकेर समस्त झड़ येन एकेबारे एक दमकाय आसिया मनेर भितरटाते एइ एकटा हाहाकार तुलिया दिल ये, एइ बाड़िर एइ दरजा दिया मा आर एकदिनओ ताँहार निजेर एइ चिरजीवनेर घरकरनार मध्ये आपनार आसनटिते आसिया वसिबेन ना। बेला हइल, श्मशान हइते फिरिया आसिलाम; गलिर मोड़े आसिया तेतलाय पितार

---

१. सारदादेवीर मृत्यु १२८१, २५ फाल्गुन, (१८७५, ८ मार्च) र-कथा।

२. कादम्बरी देवी, ज्योतिरिन्द्रनाथेर पत्नी।

घरेर दिके चाहिया देखिलाम—तिनि तखनो ताँहार घरेर सम्मुखेर बारान्दाय स्तब्ध हइया उपासनाय बसिया आछेन।

बाड़िते यिनि कनिष्ठा वधु[१] छिलेन तिनिइ मातृहीन बालकदेर भार लइलेन। तिनिइ आमादिगके खाओयाइया पराइया सर्वदा काछे टानिया, आमादेर ये कोनो अभाव घटियाछे ताहा भुलाइया राखिबार जन्य दिनरात्रि चेष्टा करिलेन। ये-क्षति पूरण हइबे ना, ये विच्छेदेर प्रतिकार नाइ, ताहाके भुलिबार शक्ति प्राणशक्तिर एकटा प्रधान अङ्ग;—शिशुकाले सेइ प्राणशक्ति नवीन ओ प्रबल थाके, तखन से कोनो आघातके गभीरभावे ग्रहण करे ना, स्थायी रेखाय आँकिया राखे ना। एइ-जन्य जीवने प्रथम ये-मृत्यु कालो छाया फेलिया प्रवेश करिल, ताहा आपनार कालिमाके चिरन्तन ना करिया छायार मतोइ एकदिन निःशब्दपदे चलिया गेल। इहार परे बड़ो हइले यखन वसन्तप्रभाते एकमुठा अनतिस्फुट मोटा मोटा बेलफुल चादरेर प्रान्ते बाँधिया ख्यापार मतो बेड़ाइताम—तखन सेइ कोमल चिक्कण कुँड़िगुलि ललाटेर उपर बुलाइया प्रतिदिनइ आमार मायेर शुभ्र आङुलगुलि मने पड़ित;—आमि स्पष्टइ देखिते पाइताम ये-स्पर्श सेइ सुन्दर आङुलेर आगाय छिल सेइ स्पर्शइ प्रतिदिन एइ बेलफुलगुलिर मध्ये निर्मल हइया फुटिया उठितेछे; जगते ताहार आर अन्त नाइ—ता आमरा भुलिइ आर मने राखि।

किन्तु आमार चब्बिशबछर बयसेर समय मृत्युर[२] सङ्गे ये-परिचय हइल ताहा स्थायी परिचय। ताहा ताहार परवर्ती प्रत्येक विच्छेदशोकेर सङ्गे मिलिया अश्रुर माला दीर्घ करिया गाँथिया चलियाछे। शिशुवयसेर लघु जीवन बड़ो बड़ो मृत्यु-केओ अनायासेइ पाश काटाइया छुटिया याय—किन्तु अधिक वयसे मृत्युके अत सहजे फाँकि दिया एड़ाइया चलिवार पथ नाइ। ताइ सेदिनकार समस्त दुःसह आघात बुक पातिया लइते हइयाछिल।

जीवनेर मध्ये कोथाओ ये किछुमात्र फाँक आछे, ताहा तखन जानिताम ना; समस्तइ हासिकान्नाय एकेबारे निरेट करिया बोना। ताहाके अतिक्रम करिया आर किछुइ देखा याइत ना, ताइ ताहाके एकेबारे चरम करियाइ ग्रहण करिया-छिलाम। एमन समय कोथा हइते मृत्यु आसिया एइ अत्यन्त प्रत्यक्ष जीवनटार एकटा प्रान्त यखन एक मुहूर्तेर मध्ये फाँक करिया दिल, तखन मनटार मध्ये से की धाँधाइ लागिया गेल। चारिदिके गाछपाला माटिजल चन्द्रसूर्य ग्रहतारा तेमनि

---

१. कादम्बरी देवी, ज्योतिरिन्द्रनाथेर पत्नी।

२. कादम्बरी देवीर मृत्यु, १२९१, ८ वैशाख, (१८८४, १९ एप्रिल) रविन्द्र-जीवनी १, पृ १५०।

निश्चित चसत्येरइ मतो विराज करितेछे, अथच ताहादेरइ माझखाने ताहादेरइ मतो याहा निश्चित सत्य छिल—एमन-कि, देह प्राण हृदय मनेर सहस्रविध स्पर्शेर द्वारा याहाके ताहादेर सकलेर चेयेइ बेशि सत्य करियाइ अनुभव करिताम सेइ निकटेर मानुष यखन एत सहजे एक निमिषे स्वप्नेर मतो मिलाइया गेल तखन समस्त जगतेर दिके चाहिया मने हइते लागिल, ए की अद्भुत आत्मखण्डन ! याहा आछे एवं याहा रहिल ना, एइ उभयेर मध्ये कोनोमते मिल करिब केमन करिया।[1]

जीवनेर एइ रन्ध्रटिर भितर दिया ये एटका अतलस्पर्श अन्धकार प्रकाशित हइया पड़िल, ताहाइ आमाके दिनरात्रि आकर्षण करिते लागिल। आमि घुरिया फिरिया केवल सेइखाने आसिया दाँड़ाइ, सेइ अन्धकारेर दिकेइ ताकाइ एवं खुँजिते थाकि—याहा गेल ताहार परिवर्ते की आछे। शून्यताके मानुष कोनोमतेइ अन्तरेर सङ्गे विश्वास करिते पारे ना। याहा नाइ ताहाइ मिथ्या, याहा मिथ्या ताहा नाइ। एइजन्यइ याहा देखितेछि ना ताहार मध्ये देखिबार चेष्टा, याहा पाइतेछि ना ताहार मध्येइ पाइबार सन्धान किछुतेइ थामिते चाय ना। चारागाछके अन्धकार बेड़ार मध्ये घिरिया राखिले, ताहार समस्त चेष्टा येमन सेइ अन्धकारके कोनोमते छाड़ाइया आलोके माथा तुलिबार जन्य पदाङ्गुलिते भर करिया यथा-सम्भव खाड़ा हइया उठिते थाके—तेमनि, मृत्यु यखन मनेर चारिदिके हठात् एकटा 'नाइ'—अन्धकारेर बेड़ा गाड़िया दिल, तखन समस्त मनप्राण अहोरात्र दुःसाध्य चेष्टाय ताहारइ भितर दिया केवलइ 'आछे'—आलोकेर मध्ये बाहिर हइते चाहिल। किन्तु सेइ अन्धकारके अतिक्रम करिबार पथ अन्धकारेर मध्ये यखन देखा याय ना तखन ताहार मतो दुःख आर की आछे।

तबु एइ दुःसह दुःखेर भितर दिया आमार मनेर मध्ये क्षणे क्षणे एकटा आक-स्मिक आनन्देर हाओया बहिते लागिल, ताहाते आमि निजेइ आश्चर्य हइताम। जीवन ये एकेबारे अविचलित निश्चित नहे, एइ दुःखेर संवादेइ मनेर भार लघु हइया गेल। आमरा ये निश्चल सत्येर पाथरे-गाँथा देयालेर मध्ये चिरदिनेर कयेदि नहि, एइ चिन्ताय आमि भितरे भितरे उल्लास बोध करिते लागिलाम। याहाके धरियाछिलाम ताहाके छाड़ितेइ हइल, एइटाके क्षतिर दिक दिया देखिया येमन वेदना पाइलाम तेमनि सेइक्षणेइ इहाके मुक्तिर दिक दिया देखिया एकटा उदार शान्ति बोध करिलाम। संसारेर विश्वव्यापी अति विपुल भार जीवनमृत्युर

---

१. तु 'कोथाय' (भारती, १२९१ पौष), कड़ि ओ कोमल, रचनावली २ 'पुष्पाञ्जलि' (भारती, १२९१ वैशाख) एवं 'प्रथम शोक' ('कथिका', सबुजपत्र, १२२६ आषाढ़) लिपिका।

हरणपूरणे आपनाके आपनि सहजेइ नियमित करिया चारिदिके केवलइ प्रवाहित हइया चलियाछे, से-भार बद्ध हइया काहाकेओ कोनोखाने चापिया राखिया दिबेना —एकेश्वर जीवनेर दौरात्म्य काहाकेओ वहन करिते हइबे ना—एइ कथाटा एकटा आश्चर्य नूतन सत्येर मतो आमि सेदिन येन प्रथम उपलब्धि करियाछिलाम।

सेइ वैराग्येर भितर दिया प्रकृतिर सौन्दर्य आरओ गभीररूपे रमणीय हइया उठियाछिल। किछुदिनेर जन्य जीवनेर प्रति आमार अन्ध आसक्ति एकेबारेइ चलिया गियाछिल बलियाइ, चारिदिके आलोकित नील आकाशेर मध्ये गाछपालार आन्दोलन आमार अश्रुधौत चक्षे भारि एकटि माधुरी वर्षण करित। जगतके सम्पूर्ण करिया एवं सुन्दर करिया देखिबार जन्य ये-दूरत्वेर प्रयोजन मृत्यु सेइ दूरत्व घटाइया दियाछिल। आमि निर्लिप्त हइया दाँड़ाइया मरणेर बृहत् पटभूमिकार उपर संसारेर छविटि देखिलाम एवं जानिलाम ताहा बड़ो मनोहर।

सेइ समये आबार किछुकालेर जन्य आमार एकटा सृष्टिछाड़ा रकमेर मनेर भाव ओ बाहिरेर आचरण देखा दियाछिल। संसारेर लोकलौकिकताके निरतिशय सत्य पदार्थेर मतो मने करिया ताहाके सदासर्वदा मानिया चलिते आमार हासि पाइत। से-समस्त येन आमार गायेइ ठेकित ना। के आमाके की मने करिबे, किछुदिन ए-दाय आमार मने एकेबारेइ छिल ना। धुतिर उपर गाये केवल एकटा मोटा चादर एवं पाये एकजोड़ा चटि परिया कतदिन थ्याकारेर[1] बाड़िते बइकिनिते गियाछि। आहारेर व्यवस्थाटाओ अनेक अंशे खापछाड़ा छिल। किछुकाल धरिया आमार शयन छिल वृष्टि बादल शीतेओ तेतालाय बाहिरेर बारान्दाय; सेखाने आकाशेर तारार सङ्गे आमार चोखोचोखि हइते पारित एवं भोरेर आलोर सङ्गे आमार साक्षातेर विलम्ब हइत ना।

ए-समस्त ये वैराग्येर कृच्छ्रसाधन ताहा एकेबारेइ नहे। ए येन आमार एकटा छुटिर पाला, संसारेर बेत-हाते गुरुमहाशयके यखन नितान्त एकटा फाँकि बलिया मने हइल तखन पाठशालार प्रत्येक छोटो छोटो शासनओ एड़ाइया मुक्तिर आस्वादने प्रवृत्त हइलाम। एकदिन सकाले घुम हइते जागियाइ यदि देखि पृथिवीर भाराकर्षणटा एकेबारे अर्धेक कमिया गियाछे, ताहा हइले कि आर सरकारि रास्ता बाहिया सावधाने चलिते इच्छा करे। निश्चयइ ताहा हइले ह्यारिसन रोड़ेर चारतला-पाँचतला बाड़िगुला विना कारणेइ लाफ दिया डिङाइया चलि एवं मयदाने हाओया खाइबार समय यदि सामने अक्टर्लोनि मनुमेण्ट्टा आसिया

१. Thacker Spink & Co.

पड़े ताहा हइले ओइटुकुखानि पाश काटाइतेओ प्रवृत्ति हय ना, धाँ करिया ताहाके लङ्घन करिया पार हइया याइ। आमारओ सेइ दशा घटियाछिल---पायेर निचे हइते जीवनेर टान कमिया याइतेइ आमि बाँधा रास्ता एकेबारे छाड़िया दिबार जो करियाछिलाम।

बाड़िर छादे एकला गभीर अन्धकारे मृत्युराज्येर कोनो-एकटा चूड़ार उपरकार एकटा ध्वजपताका, ताहार कालो पाथरेर तोरणद्वारेर उपरे आँक-पाड़ा कोनो-एकटा अक्षर किंवा एकटा चिह्न देखिबार जन्य आमि येन समस्त रात्रिटार उपर अन्धेर मतो दुइ हात बुलाइया फिरिताम। आबार, सकालबेलाय यखन आमार सेइ बाहिरेर पाता बिछानार उपरे भोरेर आलो आसिया पड़ित तखन चोख मेलियाइ देखिताम, आमार मनेर चारिदिकेर आवरण येन स्वच्छ हइया आसियाछे; कुयाशा काटिया गेले पृथिवीर नदी गिरि अरण्य येमन झलमल करिया ओठे, जीवनलोकेर प्रसारित छविखनि आमार चोखे तेमनि शिशिरसिक्त नवीन ओ सुन्दर करिया देखा दियाछे।

[अंग्रेजी में 'माई रेमिनिसेन्सेज़' के नाम से मैकमिलन द्वारा प्रकाशित। मूल रचना 'प्रवासी' में (२३१८ भाद्र से १३१९ श्रावण तक) अगस्त १९११ से जुलाई १९१२ तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई। जुलाई १९१२ में यह पुस्तकाकार प्रकाशित हुई जिसमे गगनेन्द्रनाथ ठाकुर के चित्रांकन थे। पुनमुद्रण : विश्वभारती, १९६०।]

द्वितीय खण्ड

पत्र-धारा

१. छिन्न-पत्र
२. भानुसिंहेर पत्रावली
३. पथे ओ पथेर प्रान्ते
४. चिठिपत्र

छिन्नपत्र

लण्डन

१० अक्टोबर, १८९०

मानुष कि लोहार कल ये ठिक नियम अनुसारे चलबे ? मानुषेर मनेर एत विचित्र एवं विस्तृत काण्ड-कारखाना, तार एत दिके गति एवं एत रकमेर अधिकार ये ए दिके ओ दिके हेलतेइ हवे। सेइ तार जीवनेर लक्षण, तार मनुष्यत्वेर चिह्न, तार जड़त्वेर प्रतिवाद। एइ द्विधा, एइ दुर्बलता यार नेइ तार मन नितान्त संकीर्ण एवं कठिन एवं जीवनविहीन। याके आमरा प्रवृत्ति बलि एवं यार प्रति आमरा सर्वदाइ कटुभाषा प्रयोग करि सेइ तो आमादेर जीवनेर गतिशक्ति—सेइ आमादेर नाना सुखदुःख-पापपुण्येर मध्ये दिये अनन्तरे दिके विकशित क'रे तुलछे। नदी, यदि प्रति पदे बले, 'कइ समुद्र कोथाय, ए ये मरुभूमि, ऐ ये अरण्य, ऐ ये वालिर चड़ा, आमाके ये शक्ति ठेले निये याच्छे से बुझि आमाके भुलिये अन्य जायगाय निये याच्छे—ता हले तार येरकम भ्रम हय प्रवृत्तिर उपरे एकान्त अविश्वास करले आमादेरओ कतकटा सेइरकम भ्रम हय। आमराओ प्रतिदिन विचित्र संशयेर मध्ये दिये प्रवाहित हये याच्छि, आमादेर शेष आमरा देखते पाच्छि ने, किन्तु यिनि आमादेर अनन्त जीवनेर मध्ये प्रवृत्तिनामक प्रचण्ड गतिशक्ति दियेछेन तिनिइ जानेन तार द्वारा आमादेर किरकम क'रे चालना करबेन। आमादेर सर्वदा एइ एकटा मस्त भुल हय ये, आमादेर प्रवृत्ति आमादेर येखाने निये एसेछे सेइखानेइ बुझि छेड़े दिये चले याबे; आमरा तखन जानते पारि ने से आमादेर तार मध्ये थेके टेने तुलबे। नदीके ये शक्ति मरुभूमिर मध्ये निये आसे सेइ शक्तिइ समुद्रेर मध्ये निये याय। भ्रमेर मध्ये ये फेले भ्रम थेके टेने निये याय—एइ रकम अकरे इामरा चलछि। यार एइ प्रवृत्ति अर्थात् जीवनीशक्तिर प्राबल्य नेइ, यार मनेर रहस्यमय विचित्र विकाश नेइ, से खुशी हते पारे, साधु हते पारे, एवं तार सेइ संकीर्णताके लोके मनेर जोर बलते पारे, किन्तु अनन्त जीवनेर पाथेय तार बेशि नेइ।

पतिसर
१८९१

आमार बोट काछारिर काछ थेके अनेक दूरे एने एकटि निरिबिलि जायगाय बेंधेछि। एदेशे गोलमाल कोथाओ नेइ, इच्छा करलेओ पाओया याय ना, केवल हयतो अन्यान्य विविध जिनिसेर सङ्गे हाटे पाओया येते पारे। आमि एखन येखाने एसेछि ए जायगाय अधिकन्तु मानुषेर मुख देखा याय ना। चारिदिके केवल माठ धू धू करछे; माठेर शस्य केटे निये गेछे, केवल काटा धानेर गोड़ागुलिते समस्त माठ आच्छन्न। समस्त दिनेर पर सूर्यास्तेर समय एइ माठे काल एकबार बेड़ाते बेरियेछिलुम। सूर्य क्रमेइ रक्तवर्ण हये एकेबारे पृथिवीर शेषरेखार अन्तराले अन्तर्हित हये गेल। चारि दिक की ये सुन्दर हये उठल से आर की बलब। बहु दूरे एकेबारे दिगन्तेर शेष प्रान्ते एकटु गाछपालार घेर देओया छिल; सेखानटा मन मायामय हये उठल, नीलेते लालेते मिशे एमन आवछाया हये एल, मने हल, ऐखाने येन सन्ध्यार बाड़ि, ऐखाने गिये से आपनार राङा आँचलटि शिथिल भावे एलिये देय, आपनार सन्ध्यातारटि यत्न करे ज्वलिये तोले, आपन निभृत निर्जनतार मध्ये सिँदूर परे बधूर मतो कार प्रतीक्षाय बसे थाके, एवं बसे बसे पा दुटि मेले तारार माला गाँथे एवं गुन्‌गुन् स्वरे स्वप्न रचना करे। समस्त अपार माठेर उपर एकटि छाया पड़ेछे—एकटि कोमल विषाद, ठिक अश्रुजल नय, एकटि निर्निमेष चोखेर बड़ो बड़ो पल्लवेर नीचे गभीर छल्‌छले भावेर मतो। एमन मने करा येते पारे—मा पृथिवी लोकालयेर मध्ये आपन छेलेपुले एवं कोलाहल एवं घर्‌करनार काज निये थाके; येखाने एकटु फाँका, एकटु निस्तब्धता, एकटु खोला आकाश, सेइखानेइ तार विशाल हृदयेर अन्तर्निहित वैराग्य एवं विषाद फुटे ओठे, सेइखानेइ तार गभीर दीर्घनिश्वास शोना याय। भारतवर्षे येमन बाधाहीन परिष्कार आकाश, बहुदूरविस्तृत समतलभूमि आछे, एमन युरोपेर कोथाओ आछे किना सन्देह। एइजन्ये आमादेर जाति येन बृहत् पृथिवीर सेइ असीम वैराग्य आविष्कार करते पेरेछे; एइजन्ये आमादेर पुरबीते किम्वा टोड़िते समस्त विशाल जगतेर अन्तरेर हा-हा-ध्वनि येन व्यक्त करछे, कारओ घरेर कथा नय। पृथिवीर एकटा अंश आछे येटा कर्मपटु, स्नेहशील, सीमावद्ध; तार भावटा आमादेर मने तेमन प्रभाव विस्तार करबार अवसर पाय नि। पृथिवीर ये भावटा निर्जन, विरल, असीम, सेइ आमादेर उदासीन करे दियेछे। ताइ सेतारे यखन भैरवीर मिड़ टाने आमादेर भारतवर्षीय हृदये एकटा टान पड़े। काल सन्ध्येर समय निर्जन माठेर मध्य पुरवी बाजछिल, पाँच-छ क्रोशेर मध्ये केवल आमि एकटि प्राणी बेड़ाच्छिलुम,

एवं आर-एकटि प्राणी बोटेर काछे पागड़ि बेंधे लाठि हाते अत्यन्त संयत भावे दाँड़िये छिल। आमार बाँ पाशे छोट्टो नदीटि दुइ धारेर उँचु पाड़ेर मध्ये एँकेबेंके खुब अल्प दुरेइ दृष्टिपथेर बार ह्ये गेछे; जले ढेउयेर रेखामात्र छिल ना, केवल सन्ध्यार आभा अत्यन्त मुमूर्षुहासिर मतो खानिक क्षणेर जन्ये लेगेछिल। येमन प्रकाण्ड माठ तेमनि प्रकाण्ड निस्तब्धता; केवल एकरकम पाखि आछे तारा माटिते बासा क'रे थाके, सेइ पाखि यत अन्धकार ह्ये आसते लागल तत आमाके तार निराला बासार काछे क्रमिक आनागोना करते देखे व्याकुल सन्देहेर स्वरे टी-टी करे डाकते लागल। क्रमे एखानकार कृष्णपक्षेर चाँदेर आलो ईषत फुटे उठल। बराबर नदीर धारे धारे माठेर प्रान्त दिये एकटा शीर्ण पदचिह्न चले गेछे, सेइखाने नतशिरे चलते चलते भावछिलुम।

शिलाइदह
अक्टोबर, १८९१

आज दिनटि वेश ह्येछे। घाटे दुटि-एकटि क'रे नौको लागछे, विदेश थेके प्रवासीरा पुजोर छुटिते पोँटला-पुँटलि बाक्स-धामा बोझाइ करे नाना उपहारसामग्री निये संवत्सर परे बाड़ि फिरे आसछे। देखलुम, एकटि बाबु घाटेर काछाकाछि नौको आसतेइ पुरोनो कापड़ बदले एकटि नतुन कोँचानो धुति परले; जामार उपर सादा रेशमेर एकखानि चायनाकोट गाये दिले, आर एकखानि पाकानो चादर बह यत्ने काँधेर उपर झुलिये, छाता घाड़े करे ग्रामेर अभिमुखे चलल। धानेर खेत थरथर करे काँपछे, आकाशे सादा सादा मेघेर स्तूप, तारइ उपर आम एवं नारकेल गाछेर माथा उठेछे, नारकेलेर पाता बातासे झुरझुर करछे, चरेर उपर दुटो-एकटा करे काश फुटे ओठवार उपक्रम करेछे—सबसुद्ध बेश एकटा सुखेर दृश्य। विदेश थेके ये लोकटि एइमात्र ग्रामे फिरे एल, तार मनेर भाव, तार घरेर लोकदेर मिलनेर आग्रह, एवं शरत्कालेर एइ आकाश, एइ पृथिवी, सकाल बेलाकार एइ झिरझिरे बातास—एवं गाछपाला, तृणगुल्म, नदीर तरङ्ग, सकलेर भितरकार एकटि अविश्राम सघन कम्पन, समस्त मिशिये वातायनवर्ती एइ एकक युवकटिके सुखेदुःखे एकरकम अभिभूत करे फेलछिल। पृथिवीते जानलार धारे एकला बसे चोख मेले देखलेइ मने नतुन साध जन्माय—नतुन साध ठिक नय, पुरोनो साध नाना नतुन मूर्ति धारण करते आरम्भ करे। परशुदिन अमनि बोटेर जानलार काछे चप करे बसे आछि, एकटा जेलेडिङ्गिते एकजन माझि गान गाइतेगाइते चले

गेल, खुब ये सुस्वर ता नय। हठात् मने पड़े गेल, बहुकाल हल छेलेबेलाय बोटे करे पद्माय आसछिलुम, एकदिन रात्तिर प्राय दुटोर समय घुम भेङे येतेइ बोटेर जानलाटा तुले ध'रे मुख बाड़िये देखलुम निस्तरङ्ग नदीर उपरे फुटफुटे ज्योत्सना हयेछे, एकटि छोट्ट डिङिते एकजन छोकरा एकला दाँड़ बेये चलेछे—एमनि मिष्टि गलाय गान धरेछे—गान तार पूर्वे तेमन मिष्टि कखनओ शुनि नि। हठात् मने हल, आबार यदि जीवनटा ठिक सेइ दिन थेके फिरे पाइ! आर-एकबार परीक्षा करे देखा याय; एबार ताके आर शुष्क अपरितृप्त करे फेले रेखे दिइ ने—कविर गान गलाय निये एकटि छिपछिपे डिङिते जोयारेर बेलाय पृथिवीते भेसे पड़ि, गान गाइ एवं बश करि एवं देखे आसि पृथिवीते कोथाय की आछे; आपनाकेओ एकबार जानान दिइ, अन्यकेओ एकबार जानि; जीवने यौवने उच्छ्वसित हये बातासेर मतो एकबार हु हु क'रे बेड़िया आसि, तारपरे घरे फिरेएसे परिपूर्ण प्रफुल्ल बार्धक्यटा कविर मतो काटाइ। खुब ये एकटा उँचु आइडियाल ता नय। जगतेर हित करा एर चेये ढेर बेशि बड़ो आइडियाल हते पारे, किन्तु आमि सबबन्धु येरकम लोक आमार ओटा मनेओ उदय हय ना। उपवास क'रे, आकाशेर दिके ताकिये अनिद्र थेके, सर्वदा मने मने वितर्क क'रे, पृथिवीके एवं मनुष्यहृदयके कथाय कथाय वञ्चित करे, स्वेच्छारचित दुर्भिक्षे एइ दुर्लभ जीवन त्याग करते चाइ ना। पृथिवी ये सृष्टिकर्तार एकटा फाँकि एवं शयतानेर एकटा फाँद, ता ना मने करे एके विश्वास क'रे भालोबेसे, भालोबासा पेये, मानुषेर मतो बे चे एवं मानुषेर मतो मरे गेलेइ यथेष्ट—देवतार मतो हाओया हये याबार चेष्टा करा आमार काज नय।

बोलपुर
शनिवार। २मे १८९२

जगत्संसारे अनेकगुलो प्याराडक्स् आछे। तार मध्ये एओ एकटि ये, येखाने बृहत् दृश्य, असीम आकाश, निविड़ मेघ, गभीर भाव, अर्थात् येखाने अनन्तेर आविर्भाव, सेखाने तार उपयुक्त। सङ्गी एकजन मानुष—अनेकगुलो मानुष भारि क्षुद्र एवं खिजिबिजि असीमता एवं एकटि मानुष उभये परस्परेर समकक्ष, आपन आपन सिंहासने परस्पर मुखोमुखि बसे थाकबार योग्य। आर, कतकगुलो मानुषे एकत्रे थाकले तारा परस्परके छेँटेछुँटे अत्यन्त खाटो करे रेखे देय; एकजन मानुष यदि आपनार समस्त अन्तरात्माके विस्तृत करते चाय ता हले एत बेशि

जायगार आवश्यक करे ये काछाकाछि पाँच-छ जनेर स्थान थाके ना। अधिक लोक जोटाते गेलेइ परस्परेर अनुरोध आपनाके संक्षेप करते हय, येखाने यतटुकु फाँक सेइखाने ततटुकु माथा गलाते हय। माझेर थेके, दुइ बाहु प्रसारित करे दुइ अञ्जलि पूर्ण करे, प्रकृतिर एइ अगाध अनन्त विस्तीर्णताके ग्रहण करते पारछि ने।

शिलाइदह
२० अगस्ट १८९२

रोज सकाले चोख चेयेइ आमार बाँ दिके जल एवं डान दिके नदीतीर सूर्यकिरणे प्लावित देखते पाइ। अनेक समये छवि देखले ये मने हय 'आहा, एइखाने यदि थाकतुम', ठिक सेइ इच्छाटा एखाने परितृप्त हय; मने हय, एकटि जाज्वल्यमान छविर मध्ये आमि बास करछि, वास्तव जगतेर कोनो कठिनताइ एखाने येन नाइ। छेलेबेलाय रबिन्सन्-क्रुसो पौलवर्जिनि प्रभृति बई थेके गाछपाला समुद्रेर छवि देखे मन भारि उदासीन हये येत--एखानकार रौद्र आमार सेइ छवि देखार बाल्यस्मृति भारि जेगे उठे। एर ये की माने ठिक धरते पारि ने, एर सङ्गे ये की एकटा आकांक्षा जड़ित आछे ठिक बुझते पारि ने। ए येन एइ बृहत् धरणीर प्रति एकटा नाड़ीर टान। एक समये यखन आमि एइ पृथिवीर सङ्गे एक हये छिलुम, यखन आमार उपर सवुज घास उठत, शरतेर आलो पड़त, सूर्यकिरणे आमार सुदूर-विस्तृत श्यामल अङ्गेर प्रत्येक रोमकूप थेके यौवनेर सुगन्धि उत्ताप उत्थित हते थाकत, आमि कत दूर-दूरान्तर कत देश-देशान्तररे जल स्थल पर्वत व्याप्त करे उज्ज्वल आकाशेर नीचे निस्तब्धभावे शुये पड़े थाकतुम—तखन शरत्सूर्यालोके आमार बृहत् सर्वाङ्गे ऐ एकटि आनन्दरस, एकटि जीवनीशक्ति, अत्यन्त अव्यक्त अर्धचेतन एवं अत्यन्त प्रकाण्ड भावे सञ्चारित हते थाकत, ताइ येन खनिकटा मने पड़े। आमार एइ-ये मनेर भाव ए येन एइ प्रतिनियत अंकुरित मुकुलित पुलकित सूर्यसनाथा आदिम पृथिवीर भाव। येन आमार एइ चेतनाइ प्रवाह प्रत्येक घासे एवं गाछेर शिकड़े शिकड़े शिराय शिराय धीरे धीरे प्रवाहित हच्छे, समस्त शस्यक्षेत्र रोमाञ्चित हये उठछे एवं नारकेल गाछेर प्रत्येक पाता जीवनेर आवेगे थरथर करे काँपछे। एइ पृथिवीर उपर आमार ये-एकटि आन्तरिक आत्मीयवत्सलतार भाव आछे, इच्छे करे सेटा भालो क'रे प्रकाश करते—किन्तु ओटा बोध हय अनेकेइ ठिकटि बुझते पारबे ना, की एकटा किम्भूत रकमेर मने करबे।

नाटोर.
२ डिसेम्बर १८९२

काल म-र ओखाने गियेछिलुम। बिकेले सकले मिले बेड़ाते गेलुम। दुइ माठेर माझखान दिये रास्ताटा आमार बेश लेगेछिल। बांलादेशेर धूधू जनहीन माठ एवं तार प्रान्तवर्ती गाछपालार मध्ये सूर्यास्त—की एकटि विशाल शान्ति एवं कोमल करुणा। आमादेर एइ आपनादेर पृथिवीर सङ्गे आर ऐ बहुदूरवर्ती आकाशेर सङ्गे की एकटा स्नेहभारविनत मौन म्लान मिलन। अनन्तेर मध्ये ये-एकटि प्रकाण्ड चिरविरहविषाद आछे से एइ सन्धेबेलाकार परित्यक्ता पृथिवीर उपारे की-एकटि उदास आलोके आपनाके ईषत् प्रकाश करे देय, समस्त जले स्थले आकशे की-एकटि भाषापरिपूर्ण नीरवता। अनेक क्षण चुप करे अनिमेष नेत्रे चेये देखते देखते मने हय, यदि एइ चराचरव्याप्त नीरवता आपनाके आर धारण करते ना पारे सहसा तार अनादि भाषा यदि विदीर्ण हये प्रकाश पाय, ता हाले की-एकटा गभीर गम्भीर शान्तसुन्दर सकरुण सङ्गीत पृथिवी थेके नक्षत्रलोक पर्यन्त बेजे उठे। आसले ताइ हच्छे। आमरा एकटु निविष्टचित्ते स्थिर हये चेष्टा करले जगतेर समस्त सम्मिलित आलोक एवं वर्णेर बृहत् हार्मनिके मने मने एकटि विपुल संगीते तर्जमा करे निते पारि। एइ जगत्व्यापी दृश्यप्रवाहे अविश्राम कम्पध्वनिके केवल एकबार चोख बुजे मनेर कान दिये शुनते हय। किन्तु आमि एइ सूर्योदय एवं सूर्यास्तेर कथा कतबार लिखब। नित्य नूतन करे अनुभव करा याय, किन्तु नित्य नूतन करे प्रकाश करि की करे।

कटक
मार्च, १८९३

एक-एकजन लोक आछे यारा कोनो-किछु ना करलेओ येन आशातीत फल गान करे; सु—सेइ दलेर लोक। ओ ये खुब पास करब, प्राइज पावे, लिखवे, बड़ो काज किम्बा भालो चाकरि करबे, ता येन तेमन आवश्यक मने हय ना—मने हय येन किछु ना करलेओ ओर मध्ये एकटा चरितार्थता आछे। अधिकांश लोककेइ अकर्मण्य हये थाका शोभा पाय ना, ताते तादेर अपदार्थता परिस्फुट हये ओठे। किन्तु सु—किछुइ ना करलेओ ओके केउ अयोग्य बले घृणा करते पारबे

ना। काजकर्मेर व्यस्तता मानुषेर पक्षे एकटा आच्छादनेर मतो, समस्त कमन्-प्लेस लोकेर सेटा भारी आवश्यक--ताते तादेर दैन्य, तादेर शीर्णता ढाका पड़े--किन्तु यारा स्वभावतइ परिपूर्ण प्रकृतिर लोक तारा समस्त कर्मावरणमुक्त हलेओ एकटि शोभा एवं सम्भ्रम रक्षा करते पारे। सु--र मतन अमन षोलो आना शैथिल्य आर-कोनो छेलेर देखले निश्चय असह्य बोध हत, किन्तु सु--र कुँड़ेमिते एकटि माधुर्य आछे। से आमि ओके भालोबासि ब'ले नय--तार प्रधान कारण हच्छे, चुपचाप बसे थेकेओ ओर मनटि बेश परिणत हये उठछे एवं ओर आत्मीय स्वजनेर प्रति ओर किछुमात्र औदासीन्य नेइ। ये कुँड़ेमिते मूढ़ता एवं अन्येर प्रति अवहेला क्रमागत स्फीत हये गोलगाल तेल-चुक्चुके हय उठते थाके सेइटेइ यथार्थ घृण्य। सु--एकटि सहृदय एवं सुबुद्धि आलस्येर द्वारा येन मधुररससिक्त हये आछे। ये गाछे सुगन्ध फुल फोटे से गाछे आहार्य फल ना धरलेओ चले! सु--के ये सकले भालोबासे से ओर कोनो काजेर दरुन, क्षमतार दरुन, चेष्टार दरुन नय--ओर प्रकृतिर अन्तर्गत एकटि सामञ्जस्य ओ सौन्दर्येर दरुन।

शिलाइदह
८ मे, १८९३

कविता आमार बहुकालेर प्रेयसी--बोध हय यखन आमार रथीर मतो बयस छिल तखन थेके आमार सङ्गे वाक्दत्ता हयेछिल। तखन थेके आमादेर पुकुरेर धारे बटेर तला, बाड़िभितरेर बागान, बाड़िभितरेर एकतलार अनाविष्कृत घर-गुलो, एवं समस्त बाहिरेर जगत्, एवं दासीदेर मुखेर समस्त रूपकथा एवं छड़ागुलो, आमार मनेर मध्ये भारी एकटा मायाजगत् तैरि करछिल। तखनकार सेइ आबछाया अपूर्व मनेर भाव प्रकाश करा भारी शक्त, किन्तु एइपर्यन्त बेश बलते पारि, कविकल्पनार सङ्गे तखन थेकेइ मालाबदल हये गियेछिल। किन्तु ओ मेयेटि पयमन्त नय, ता स्वीकार करते हय; आर याइ होक, सौभाग्य निये आसेन ना। सुख देय ना बलते पारि ने, किन्तु स्वस्तिर सङ्गे कोनो सम्पर्क नेइ। याके वरण करेन ताके निविड़ आनन्द देन, किन्तु एक-एक समय कठिन आलिङ्गने हृत्पिण्डटि निंड़े रक्त बेर क'रे नेन। ये लोकके तिनि निर्वाचन करेन, संसारेर माझखाने भित्ति स्थापन क'रे गृहस्थ हये स्थिर हये आयेस करे बसा से लक्ष्मीछाड़ार पक्षे एकेबारे असम्भव। किन्तु आमार आसल जीवनटि तार काछेइ बन्धक आछे।

साधनाइ लिखि आर जमिदारिइ देखि, येमन कविता लिखते आरम्भ करि अमनि आमार चिरकालेर यथार्थ आपनार मध्ये प्रवेश करि---आमि बेश बुझते पारि एइ आमार स्थान। जीवने ज्ञातसारे एवं अज्ञातसारे अनेक मिथ्याचरण करा याय, किन्तु कविताय कखनओ मिथ्या कथा बलि ने---सेइ आमार जीवनेर समस्त गभीर सत्येर एकमात्र आश्रयस्थान।

कलकाता

२१ जुन, १८९३

एबारकार डायारिटाते ठिक प्रकृतिर स्तव नय---मन-नामक एकटा सृष्टि-छाड़ा चन्चल पदार्थ कोनो गतिके आमादेर शरीरेर मध्ये प्रवेश कराते ये की रकम एकटा उत्पात हयेछे तत्सम्बन्धे आलोचना करा गेछे। आसले, आमरा खाब परब, चेबेँ थाकब, एइरकम कथा छिल---आमरा ये विश्वेर आदिकरण अनुसन्धान करि, इच्छापूर्वक खुब शक्त एकटा भाव व्यक्त करबार प्रयास करि, आबार तार मध्ये पदे पदे मिल थाका दरकार मने करि, आपादमस्तक ऋणे निमग्न हयेओ मासे मासे घरेर कड़ि खरच करे साधना बेर करि, एर की आवश्यकता छिल! ओ दिके नारायण सिं देखो, घि दिये आटा दिये बेश मोटा मोटा रुटि बानिये, तार सङ्गे दधि संयोग क'रे आनन्दमने भोजनपूर्वक, दु-एक छिलिम तामाक टेने, दुपुरबेलाटा केमन स्वच्छन्दे निद्रा दिच्छे एवं सकाले बिकाले लोकेदेर सामान्य दु-चारटा काज करे रात्रे अकातरे विश्राम लाभ करछे। जीवनटा ये व्यर्थ हल, विफल हल, एमन कखनओ तार स्वप्नेओ मने हय ना; पृथिवीर ये यथेष्ट द्रुतवेगे उन्नति हच्छे ना सेइजन्ये से निजेके कखनओ दायिक करे ना। जीवनेर सफलता कथाटार कोनो माने नेइ---प्रकृतिर एकमात्र आदेश हच्छे 'बेँचे थाको'। नारायण सिं सेइ आदेशटिर प्रति लक्ष रेखेइ निश्चिन्त आछे। आर, ये हतभागार वक्षेर मध्ये मन-नामक एकटा प्राणी गर्त खुंड़े बासा करेछे, तार आर विश्राम नेइ; तार पक्षे किछुइ यथेष्ट नय; तार चतुर्दिक्वर्ती अवस्थार सङ्गे समस्त सामञ्जस्य नष्ट हये गेछे---ये यखन जले थाके तखन स्थलेर जन्ये लालायित हय, यखन स्थले थाके तखन जले साँतार देबार जन्ये तार 'असीम आकांक्षा'र उद्रेक हय। एइ दुरन्त असन्तुष्ट मनटाके प्रकृतिर अगाध शान्तिर मध्ये विसर्जन करे एकटुखानि स्थिर हये बसते पारले बाँचा याय, कथाटा हच्छे एइ।

साजादपुर
३० आषाढ़, १८९३

आजकाल कविता लेखाटा आमार पक्षे येन एकटा गोपननिषिद्ध सुखसम्भोगेर मतो हये पड़ेछे––ए दिके आगामी मासेर 'साधना'र जन्ये एकटि लाइन लेखा हय नि, ओ दिके मध्ये मध्ये सम्पादकेर ताड़ा आसछे, अनतिदूरे आश्विन-कार्तिकेर युगल 'साधना' रिक्तहस्ते आमार मुखेर दिके ताकिये भर्त्सना करछे, आर आमि आमार कवितार अन्तःपुरे पालिये पालिये आश्रय निच्छि। रोज मने करि, आज एकटा दिन बै तो नय––एमनि करे कत दिन केटे गेल। आमि वास्तविक भेबे पाइ ने कोन्टा आमार आसल काज। एक-एक समय मने हय, आमि छोटो छोटो गल्प अनेक लिखते पारि एवं मन्द लिखते पारि ने––लेखबार समय सुखओ पाओया याय। एक-एक समय मने हय, आमार माथाय एमन अनेकगुलो भावेर उदय हय या ठिक कविताय व्यक्त करबार योग्य नय, सेगुलो डायारि प्रभृति नाना आकारे प्रकाश करे रेखे देओया भालो; बोध हय ताते फलओ आछे आनन्दओ आछे। एक-एक समय सामाजिक विषय निये आमादेर देशेर लोकेर सङ्गे झगड़ा करा खुब दरकार, यखन आर-केउ करछे ना तखन काजेइ आमाके एइ अप्रिय कर्तव्यटा ग्रहण करते हय––आबार एक-एक समय मने हय, दूर होक गे छाइ, पृथिवी आपनार चरकाय आपनि तेल देबे एखन; मिल करे छन्द गेँथे छोटो छोटो कविता लेखाटा आमार बेश आसे, सब छेड़ेछुड़े दिये आपनार मने आपनार कोणे सेइ काजइ करा याक। मदगर्विता युवती येमन तार अनेकगुलि प्रणयीके निये कोनोटिकेइ हातछाड़ा करते चाय ना, आमार कतकटा येन सेइ दशा हयेछे। मिउजदेर मध्ये आमि कोनोटिकेइ निराश करते चाइ ने––किन्तु ताते काज अत्यन्त बेड़े याय एवं हयतो 'दीर्घ दौड़' कोनोटिइ परिपूर्णभावे आमार आयत्त हय ना। साहित्य विभागेओ कर्तव्यबुद्धिर अधिकार आछे, किन्तु अन्य विभागेर कर्तव्य-बुद्धिर सङ्गे तार एकटु प्रभेद आछे। कोन्टाते पृथिवीर सब चेये उपकार हबे साहित्यकर्तव्यज्ञाने से कथा भावबार दरकार नेइ, किन्तु कोन्टा आमि सब चेये भालो करते पारि सेइटेइ हच्छे विचार्य। बोध हय जीवनेर सकल विभागेइ ताइ। आमार बुद्धिते यतटा आसे ताते तो बोध हय, कवितातेइ आमार सकलेर चेये बेशि अधिकार। किन्तु आमार क्षुधानल विश्वराज्य ओ मनोराज्येर सर्वत्रइ आपनार ज्वलन्त शिखा प्रसारित करते चाय। यखन गान तैरि करते आरम्भ करि तखन मने हय, एइ काजेइ यदि लेगे थाका याय ता हले तो मन्द हय ना; आबार यखन एकटा-किछु अभिनये प्रवृत्त हओया याय तखन एमनि नेशा चेपे याय ये मने हय ये,

चाइ की, एटातेओ एकजन मानुष आपनार जीवन नियोग करते पारे। आबार यखन 'बाल्यविवाह' किंवा 'शिक्षार हेरफेर' निये पड़ा याय तखन मने हय, एइ हच्छे जीवनेर सर्वोच्च काज। आबार लज्जार माथा खेये सत्यि कथा यदि बलते हय तबे एटा स्वीकार करते हय ये, ऐ ये चित्रविद्या ब'ले एकटा विद्या आछे तार प्रति ओ आमि सर्वदा हताश प्रणयेर लुब्ध दृष्टिपात करे थाकि—किन्तु आर पाबार आशा नेइ, साधन करबार बयस चले गेछे। अन्यान्य विद्यार मतो ताँकेओ सहजे पाबार जो नेइ—ताँर एकेबारे धनुक-भाङा पण—तूलि टेने टेने एकेबारे हयरान ना हले ताँर प्रसन्नता लाभ करा याय ना। एकला कविताटाके निये थाकाइ आमार पक्षे सब चेये सुबिधे—बोध हय येन उनिइ आमाके सब चेये बेशि धरा दियेछेन; आमार छेलेबेलाकार, आमार बहुकालेर अनुरागिणी सङ्गिनी।

शिलाइदह
९ अगस्ट, १८९४

नदी एकेबारे कानाय भरे एसेछे। ओ पारटा प्राय देखा याय ना। जल एक-एक जायगाय टग्‌बग् करे फुटछे, आबार एक-एक जायगाय के येन अस्थिर जलके दुइ हात दिये चेपे चेपे समान करे मेले दिये याच्छे। आज देखते पेलुम, छोटो एकटि मृत पाखि स्रोते भेसे आसछे—ओर मृत्युर इतिहास बेश बोझा याच्छे। कोन्-एक ग्रामेर धारे बागानेर आम्रशाखाय ओर बासा छिल। सन्ध्यार समय बासाय फिरे एसे सङ्गीदेर नरम-नरम गरम डानागुलिर सङ्गे पाखा मिलिये श्रान्त-देहे घुमिये छिल। हठात् रात्रे पद्मा एकटुखानि पाश फिरेछेन अमनि गाछेर निचेकार माटि धसे पड़े गेछे—नीड़च्युत पाखि हठात् एक मुहूर्तेर जन्ये जेगे उठल, तार परे आर ताके जागते हल ना। आमि यखन मफस्वले थाकि तखन एकटि बृहत सर्वग्रासी रहस्यमयी प्रकृतिर काछे निजेर सङ्गे अन्य जीवेर प्रभेद अकिञ्चित्-कर बले उपलब्धि हय। शहरे मनुष्य-समाज अत्यन्त प्रधान हये ओठे; सेखाने से निष्ठुरभावे आपनार सुखदुःखेर काछे अन्य कोनो प्राणीर सुखदुःख गणनार मध्येइ आने ना। युरोपेओ मानुष एत जटिल ओ एत प्रधान ये, तारा जन्तुके बड़ो बेशि जन्तु मने करे। भारतवर्षीयेरा मानुष थेके जन्तु ओ जन्तु थेके मानुष हओयाटाके किछुइ मने करे ना; एइजन्य आमादेर शास्त्रे सर्वभूते दयाटा एकटा असम्भव आतिशय्य बले परित्यक्त हय नि। मफस्वले विश्वप्रकृतिर सङ्गे देहे

देहे घनिष्ट संस्पर्श हले सेइ आमार भारतवर्षीय स्वभाव जेगे ओठे। एकटि पाखिर सुकोमल पालके आवृत स्पन्दमान क्षुद्र वक्षटुकुर मध्ये जीवनेर आनन्द ये कत प्रबल, ता आर आमि अचेतनभावे भुले थाकते पारि ने।

भानुसिंहेर पत्रावली

शान्तिनिकेतन

आज दुपुरबेलाय यखन खेते बसेचि, एमन समय--रोसो, आग बलान का खाच्छिलुम--खुब प्रकाण्ड मोटा एकटा रुटि--किन्तु मने कोरो ना तार सबटाइ आमि खाच्छिलुम। रुटिटाके यदि पूर्णिमार चाँद बले धरे नेओ ताहले आमार टुकरोटि द्वितीयार चाँदेर चेये बड़ो हबे ना। सेइ रुटिर सङ्गे किछु डाल छिल, आर छिल चाटनि आर एकटा तरकारिओ छिल। याहोक, बसे बसे रुटि चिबोच्चि, एमन समय—रोसो, आगे बले निइ रुटि, डाल, चाटनि एल कोथा थेके-- तुमि बोध हय जान, आमार एखाने प्राय पँचिशजन गुजराटि छेले आछे—आमाके खाओयाबे बले तादेर हठात् इच्छा हयेछिल। ताइ आज सकाले आमार लेखा सेरे स्नानेर घरेर दिके यखन चलेचि, एमन समय देखि, एकटि गुजराटि छेले थाला हाते करे आमार द्वारे एसे हाजिर। या होक, निचेर घरे टेबिले बसे बसे रुटिर, टुकरो भाङचि आर खाच्चि, आर तार सङ्गे एकटु एकटु चाटनिओ मुखे दिच्चि, एमन समय--रोसो, आगे बले निइ, खाबार की रकम हयेछिल। रुटिटा बेश शक्त-गोछेर छिल; यदि आमाके सम्पूर्ण चिबिये सबटा खेते हत ताहले आमार एकलार शक्तिते कुलिये उठत ना, मजुर डाकते हत। किन्तु छिंड़ते यत शक्त मुखेर मध्ये ततटा नय। आबार रुटिटा मिष्टि छिल; डाल तरकारी दिये मिष्टि रुटि खाओया आमादेर आइने लेखे ना, किन्तु खेये देखा गेल-ये खेले-ये विशेष अपराध हय ता नय। सेइ रुटि खाच्चि, एमन समय—रोसो, ओर मध्ये एकटा कथा बलते एकेबारेइ भुले गेचि, दुटो पाँपर-भाजाओ छिल; से-दुटो, आमि याके बले थाकि सुश्राव्य—अर्थात् खेते बेश भालो लागे। शुने तुमि हयतो आश्चर्य हबे एवं आमाके हयतो मने मने पेटुक ठाउरे रेखे देबे—एवं यखन आमि काशीते

याब तखन ह्यतो सकाले बिकाले आमाके चाटनि दिये केवलि पाँपर-भाजा खाओ-याबे। तबु सत्य गोपन करब ना, दुखाना पाँपर-भाजा सम्पूर्णइ खेयेछिलुम। या होक सेइ पाँपर मच मच शब्दे खाच्चि, एमन समय—रोसो, मने करे देखि से-समये के उपस्थित छिल। तुमि भावच, तोमार बउमा तोमार भानुदादार पाँपर-भाजा खाओया देखे अवाक हये हतबुद्धि हये टेबिलेर एक कोणे बसे मने मने ठाकुर-देवतार नाम करछिलेन, ता नय—तिनि तखन काथाय आमि जानिने। आर कमल? सेओ-ये तखन कोथाय बसे रोद पोयाच्छिल ता आमि जानिने ताहले देखचि टेबिले आमि एकला छाड़ा केउइ छिल ना। याइ होक दुखाना पाँपर-भाजार परे प्राय सिकिटुकरो रुटिर पौने चार आना यखन शेष करेचि, एमन समय—हाँ, हाँ, एकटा कथा बलते भुले गेचि—आमि लिखेचि खोबार समये केउ छिल ना, कथाटा सत्य नय। भोँदा कुकुरटा एकदृष्टे आमार मुखेर दिके ताकिये ताकिये लालायित जिह्वाया चिन्ता करछिल—ये, आमि यदि मानुष हतुम ताहले सकाल थेके रात्तिर पर्यन्त ऐ रकम मुच मुच मुच मुच मुच मुच करे केवलि पाँपर-भाँजा खेतुम, इतिहासेओ पड़तुम ना, भूगोलेओ पड़तुम ना—शिशु महाभारत, चारुपाठेर कोनो धार धारतुम ना। या होक यखन दुखाना पाँपर-भाजा एवं किछु रुटि ओ चाटनि खेयेचि, एमन समय—किन्तु डालटा खाइनि, सेटा नारकोल दिये एवं अनेकखानि कुयोर जल दिये तैरि करेछिल ताते डालेर चेये कुयोर जलेर स्वादटाइ बेशि छिल, आर तरकारिटाओ खाइनि—केनना, आमि मोटेर उपर तरकारि प्रभृति बड़ो बेशि खाइने। याइ होक, यखन रुटि एवं पाँपर-भाजा खाओया प्राय शेष हयेचे, एमन समये डाक-हरकरा आमार हाते काशीर छापमार एकखाना चिठि दिये गेल।

शान्तिनिकेतन

तुमि भावच—मजा केवल तोमादेरइ हयेचे ताइ तोमादेर इस्कुलेर प्राइजेर मजार फर्द आमाके लिखे पाठियेच, किन्तु एत सहजे आमाके हार मानाते पारच ना। मजा आमादेर एखानेओ हय एवं यथेष्ट बेशि करेइ हय। आच्छा, तोमादेर प्राइजे कत लोक जमेछिल?—पञ्चाश जन? किन्तु आमादेर एखाने मेलाय अन्ततः दश हाजार लोक तो हयेइछिल। तुमि लिखेच, एकटि छोटो मेये तार दिदिर काछे गिये खुब चीत्कार करे तोमादेर सभा खुब जमिये तुलेछिल—आमादेर, एखानकार माठे या-चीत्कार हयेछिल ताते कत रकमेरइ आओयाज मिलेछिल, तार कि संख्या छिल। छोटो छेलेर कान्ना, बड़ोदेर हाँकडाक, डुगडुगिर वाद्य,

गोरुर गाड़िर क्याँचकोँच, यात्रार दलेर चीत्कार, तुबड़िबाजिर सोँ सोँ, पटकारि फुटफाट, पुलिस-चौकिदारेर है है,--हासि, कान्ना, गान, चेंचामेचि, झगड़ा इत्यादि इत्यादि। ७इ पौषे माठे खुब बड़ो हाट बसेछिल--ताते गालार खेलना, फलेर मोरब्बा, माटिर पुतुल, तेले-भाजा फुलुरि, चिनेबादाम भाजा प्रभृति आश्चर्य आश्चर्य जिनिस बिक्रि हल। एक-एक पयसा दिये छेलेमेयेरा सब नागरदोलाय दुलेल; चाँदोयार निचे नीलकण्ठ मुखुज्येर कंसवध यात्रार पाला गान हच्छिल--सेइखाने एकेबारे ठेलाठेलि भिड़। तारपरे ९इ पौषे आमादेर मेयेरा आबार एक मेला करेछिलेन—ताते सिङारा, आलुर-दमेर दोकान बसियेछिलेन—एक एकटा आलुर-दम एक-एक पयसाय बिक्रि हल। सुकेशी बउमा चिने बादामेर पुतुल गड़ेछिलेन, तार एक-एकटा छ-आना दामे बिक्रि हये गेल। कमल कादा दिये एकटा घर बानियेछिल--तार खड़ेर चाल, चारिदिके माटिर पाँचिल, आङिनाय शिव-स्थापन करा आछे-सेटा केउ किनते चाय ना, ताइ कमल आमाके सेटा जोर करे तिन टाकाय बिक्रि करेचे। भेबे देखो--की रकम भयानक मजा। छोटो मेयेरा एकटुकरो नेकड़ा छिंड़े तार चारिदिके पाड़ सेलाइ करे आमार काछे एने बलले, "एटा रुमाल, एर दाम आट आना, आपनाके नितेइ हबे"--बले सेटा आमार पकेटे पुरे दिले—एमन भयानक मजा। ओँदेर बाजारे एइरकम श्रीणीर सब भयानक मजा हये गेचे--तोमरा ये-सब प्राइज पेयेच, से एर काछे कोथाय लागे। तारपरे मजा,--मेला यखन भेङे गेल,समस्त रात धरे चेँचाते चेँचाते बेसुरो गान गाइते गाइते दलेदले लोक ठिक आमार शोबार घरेर सामनेर रास्ता दियेइ येते लागल—मजाय एकटुओ घुम हलना—निचे यतगुलो कुकुर छिल, सबाइ मिले ऊर्ध्वश्वासे चेँचाते लागल, एमन मजा। तारपरे कलकतार अनेक मेये ताँदेर छोटो छेलेमेये निये एसेछिलेन—ताँदेर कारो काशि कारो ज्वर। निश्चयइ तोमादेर प्राइजे एमन धुमधाम, गोलमाल, काशि-सर्दि, असुख-बिसुख आटआनाय रुमाल बेचा प्रभृति हयनि--अतएव आमारइ जित रइल।

शान्तिनिकेतन

तोमार आजकेर चिठि पेये बड़ो लज्जा पेलुम। केन बलब? एर आगे तोमार एकखानि चिठि पेयेछिलुम—तार जबाब देब-देब करच्चि, एमन समय तोमार

एइ चिठि, आज तोमार काछे आमार हार मानते हल। आमि एत बड़ो लेखक, बड़ो बड़ो पाँच भलुम काव्यग्रन्थ लिखेचि,---एहेन-ये आमि---यार उपाधिसमेत नाम हओया उचित श्रीरवीन्द्रनाथ शर्मा रचना-लावण्याबुधि किंवा साहित्य-अजगर किंवा वागक्षौहिणीनायक किंवा रचना-महामहोपद्रव किंवा काव्यकलाकल्पद्रुम किंवा---कस् करे एखन मने पड़चेना, परे भेबे बलब---एकरत्ति मेये, "साताश" बछर वयस लाभ करते थाके अन्ततः पँयत्रिश बछर साधना करते हबे, तारइ काछे पराभव---(Two goals to nil)। तारपरे आमार तुमि ये-सब विपज्जनक भ्रमणवृत्तान्त लिखच, आमार एइ डेस्के बसे तार सङ्गे पाल्ला दिइ की करे। आज सकाले ताइ भावछिलुम, पारुलबनेर सामने दिये ये रेलेर रास्ता आछे सेखाने गिये रात्रे दाँड़िये थाकब---तारपरे बुकेर उपर दिये प्यासेन्जार ट्रेनटा चले गेले पर यदि तखनो हात चले ताहले सेइ मुहूर्ते सेइखाने बसे तोमाके यदि चिठि लिखते पारि तबे तोमाके टेक्का दिते पारब। ए सम्बन्धे एखनो बउमार सङ्गे परामर्श करिनि, एण्डरुज साहबकेओ जानाइनि। आमार केमन मने मने सन्देह हच्चे, ओँरा हयतो केउ सम्मति देबेन ना, ताछाड़ा आमार निजेर मनेओ एकटा केमन धोंका लागचे; मने हच्चे यदि गाड़िटार चापे बुड़ो आङुलटा किछु जखम करे ताहले हयतो लेखा घटेइ उठबे ना। आर यदि ना घटे ताहले अनन्तकालेर मतो ऐ दु-खाना चिठिर जित तोमार रयेइ याबे, अतएव थाक्।

अल्पदिनेर मध्ये आमादेर एखाने भयङ्कर व्यापार एकटाओ घटेनि। झड़-वृष्टि अल्प-स्वल्प हयेचे किन्तु ताते आमादेर बाड़िर छाद भाङेनि, आमादेर कारो माथाय-ये सामान्य एकटा वज्र पड़बे ताओ पड़ल ना। बन्दुक निये छोराछुरि निये देशेर नाना जायगाय डाकाति हच्चे; किन्तु आमादेर अदृष्ट एमनि मन्द-ये, आज पर्यन्त अवज्ञा करे आमादेर आश्रमे तारा किंवा तादेर दूर-सम्पर्केर केउ पदार्पण करले ना। ना, ना, भुल बलचि। एकटा रोमहर्षण घटना अल्पदिन हल घटेचे। सेटा बलि। आमादेर आश्रमेर सामने दिये निर्जन प्रान्तरेर प्रान्त बेये एकटि दीर्घ पथ बोलपुर-स्टेशन पर्यन्त चले गेचे। सेइ पथेर पश्चिमे एकटि दोतला इमारत। सेइ इमारतेर एकतलाय एकटि बङ्ग-रमणी एकाकिनी बास करेन। सङ्गे केवल कयेकटि दासदासी, बेहारा, गोयाला, पाचक-ब्राह्मण एवं उपरेर तलाय एण्डरुज साहेब नामक एकटि इंरेज थाकेन। समस्त बाड़िटाते ए-छाड़ा आर-प्राणी नेइ। सेदिन मेघाच्छन्न रात्रि, मेघेर आड़ाल थेके चन्द्र म्लान किरण विकीर्ण करचेन। एमन समय रात्रि यखन साड़े एगारटा, यखन केवलमात्र दशबारो जन लोक निये एकाकिनी रमणी विश्राम करचेन, एमन समये घरेर मध्ये के ऐ पुरुष प्रवेश करले? केन् अपरिचित युवक? कोथाय ओर बाड़ि, को ओर

अभिसन्धि ? हठात् सेइ निस्तब्ध निद्रित घरेर निःशब्दता सचकित करे तुले से जिज्ञासा करले—"इस्कुल कोथाय ?"अकस्मात् जागरणे उक्त रमणीर घन घन हृत्कम्प हते लागल; रुद्धप्राय कण्ठे बललेन, "इस्कुल ऐ पश्चिम दिके।" तखन युवक जिज्ञासा करले, "हेडमास्टारेर घर कोथाय ?" रमणी बलेन, "जानिने ?"

तारपरे द्वितीय परिच्छेद। ऐ युवक सेइ म्लान ज्योत्सनालोके सेइ झिल्लि-मुखरित मध्यरात्रे आबार आश्रमेर कङ्कर-विकीर्ण पथे आश्रम कुक्कुरवृन्देर तार-तिरस्कार शब्द उपेक्षा करे द्वितीय एकटि निःसहाया अबलार गृहेर मध्ये प्रवेश करले। सेइ घरे तत्काले उक्त रमणीर पूर्णवयस्क एकटि स्वामीमात्र छिल, आर जन-प्राणीओ ना। सेखाने ओ पूर्ववत् सेइ दुटि मात्र प्रश्न। सेइ प्रश्नेर शब्दे स्तिमितदीपालोकित सेइ निर्जनप्राय कक्षटि आतङ्के निस्तब्ध हये रइल। लोकटा बहुदूर देश थेके हेडमास्टरके खुँजते खुँजते केन एखाने एल। तार सङ्गे किसेर शत्रुता। सेइ रात्रे स्वमीसनाथा ऐ एकटि रमणी एवं स्वामीदूरगता जन्य अबला ना जानि तादेर सरल कोमल हृदये की आशङ्का वहन करे घुमिये पड़ल। परदिन प्रभाते हेड-मास्टारेर मास्टर बाद दिये बाकि छिन्न अंश कि कोथाओ पाओया यावे—ताँरा आशङ्का करेछिलेन ?

तारपरे तृतीय परिच्छेद। परदिन प्रथमा नारीटि आमाके बललेन, "तात, मध्यरात्रे एकटि युवक—इत्यादि।" शुने आमार पाठिका विस्मिता हबेन ना-ये, आमि आश्रम छेड़े पालाइनि; एमन कि आमि तरबारिओ कोषोन्मुक्त करलुम ना। करबार इच्छे थाकलेओ तरबारि छिल ना, थाकबार मध्ये एकटा कागज-काटा छुरि छिल। सङ्गे कोनो पदातिक वा अश्वारोही ना नियेइ आमि सन्धान करते बेरलुम, कोन् अपरिचित युवा काल निशीथे "हेडमास्टर कोथाय" बले अबला रमणीर निद्रा भङ्ग करेचे ?

तारपरे उपसंहार। युवकके देखा गेल, ताके प्रश्न करा गेल। उत्तरे जाना गेल—एखाने तार कोनो एकटि आत्मीय-बालकके से भर्ति करे दिते चाय। इति समाप्त।

---

२६ आषाढ़, १३२६।

पथे ओ पथेर प्रान्ते

काल सकाले कलम्बो पौँछब। यखन युरोपे घुरे घुरे बेड़ाच्छिलुम आजकेर एइ दिनेर छवि अनेकदिन मने मने एँकेछि---जाहाज एसेछे भारतवर्षेर काछाकाछि; उज्ज्वल आकाश बुक बाड़िये दियेछे; शकुन्तलाय, बालक भरत येमन सिंहेर केशर धरे खेलछे, शीतेर निर्मल रौद्र तेमनि तरङ्गित नील समुद्र के निये छेलेमानुषि करछे, आर सेइ नारकेल गाछेर घन वन, येन दूरे थेके डाङार हात-तोला डाक। सेइ कल्पनार छवि सामने एसेछे। काल लाक्काडीभेर खुब काछ घेँषे जाहाज एल---श्यामल तटभूमिर कण्ठस्वर येन शुनते पेलुम। ऐ तरुवेष्टित दिगन्तेर धारे मानुषेर प्रतिदिनेर जीवनयात्रा चलछे एइ कथाटा येन नतुन ओ निविड़ विस्मयेर सङ्गे आमार मने लागल। आमि जानि यारा एखाने माटि आँकड़े आछे तारा निजे एर आनन्द, एर सौन्दर्य एर महार्घता ये स्पष्ट बुझते ता नय। अभ्यासे आमादेर चैतन्यके म्लान करे देय, किन्तु तबु या सत्य ता सत्यइ। दूरेर थेके शान्तिनिकेतन आमार काछे यतखानि, काछेर थेके ठिक ततखानि ना हतेओ पारे---किन्तु तार थेके की प्रमाण हय। दूरेर दृष्टिते ये-समग्रता आमरा एक करे देखते पाइ सेइटार बड़ो देखा, काछेर दृष्टिते ये खुंटिनाटिते मन आबद्ध हये समष्टिके स्पष्ट देखते देय ना, सेइटेइ आमादेर शक्तिर असम्पूर्णता। एइ कारणेइ, आमादेर समस्त आयु निये आमरा ये जीवन-यापन करेछि ताके आमरा पुरोपुरो जानतेइ पारि ने। या पाइ ने पार जन्ये खुँत-खुँत करि, या हारियेछे तार जन्ये विलाप करि, एमनि करे या पेयेछि तार सबटाके निये ताके याचाइ करबार अवकाश पाइ ने। आसल कथा, शान्तिनिकेतनेर आकाश ओ अवकाशे परिवेष्ठित आमादेर ये जीवन तार मध्ये सत्यइ एकटि सम्पूर्ण रूप आछे, या कलकातार सूत्रछिन्न जीवने नेइ। सेइ सम्पूर्ण रूपेर अन्तर्गत नाना अभाव ओ त्रुटि तार पक्षे ऐकान्तिक नय, सेगुलो अप्रासङ्गिक, पर्वतेर गायेर गर्तेर मतो, या पर्वतेर उच्चताके वृथा प्रतिवाद करे। शान्तिनिकेतनेर भितर दिये मोटेर उपर आमि निजेके की रकम करे प्रकाश करेछि सेइटेर द्वाराइ प्रमाण हय शान्तिनिकेतन आमार पक्षे की---माझे माझे की रकम नालिश करेछि, छटफट करेछि तार द्वारा नय। शुधु आमि नइ, शान्तिनिकेतन अनेकेइ आपन आपन साध्यमतो एकटि सुसङ्गतिर मध्ये निजेके प्रकाश करबार सुयोग पेयेछेन। एटा

ये हयेछे से केवल आमार जन्येइ हयेछे ए कथा यदि बलि ताहले अहङ्कारेर मतो शुनते हबे, किन्तु मिथ्ये बला हबे ना। आमि निजेर इच्छार द्वारा कर्मप्रणालीर द्वारा काउके अत्यन्त आँट करे बाँधि ने; ताते क'रे कोनो असुविधे हय ना ता बलि ने—आमि निजेइ तार जन्ये अनेक दुःख पेयेछि किन्तु तबु आमि मोटेर उपर एइटे निये गौरव करि। अधिकांश कर्मवीरइ एर मध्ये डिसिप्लिनेर शिथिलता देखे—अर्थात् ना-एर दिक थेके, हाँ-एर दिक थेके देखे ना। स्वाधीनता ओ कर्मेर सामञ्जस्य सङ्घटित एइ ये व्यवस्था एटि आमार एकटि सृष्टि—आमार निजेर स्वभाव थेके एर उद्‌भव। आमि यखन विदाय नेब, यखन थाकबे संवाद, परिषद ओ नियमावली, तखन ए जिनिसटिओ थाकबे ना। अनेक प्रतिवाद ओ अभियोगेर सङ्गे लड़ाइ करे एतदिन एके बाँचिये रेखेछि—किन्तु यारा विज्ञ ओ अभिज्ञ तारा एके विश्वास करे ना। एर परे इस्कुल-मास्टारेर झाँक निये तारा अति विशुद्ध ज्यामितिक नियमे चाक बाँधबे—शान्तिनिकेतनेर आकाश ओ प्रान्तर ओ शालवीथिका विमर्ष हये ताइ देखबे ओ दीर्घनिःश्वास फेलबे। तखन तादेर नालिश कि कोनो कविर काछे पौँछबे।

१३

भ्रमण शेष करे शान्तिनिकेतने फिरे एसेछि। आज नववर्षेर दिन। मन्दिरेर काज शेष करे एलुम। बाइरेर केउ छिल ना केवल आमादेर आश्रमेर सबाइ।

एबार आमार जीवने नूतन पर्याय आरम्भ हल। एके बला येते पारे शेष अध्याय। एइ परिशिष्टभागे समस्त जीवनेर तात्पर्यके यदि संहत करे सुस्पष्ट करे ना तुलते पारि ता हले असम्पूर्णतार भितर दिये विदाय निते हबे। आमार वीणाय अनेक बेशि तार—सब तारे निखुँत सुर मेलानो बड़ो कठिन। आमार जीवने सबचेये कठिन समस्या आमार कविप्रकृति। हृदयेर सब अनुभूतिर दाविइ आमाके मानते हल—कोनोटाके क्षीण करले आमार एइ हाजार सुरेर गानेर आसर सम्पूर्ण जमे ना। अथच नाना अनुभूतिके निये यादेर व्यवहार, जीवनेर पथे सोजा रथ हाँकिये चला तादेर पक्षे एकटुओ सहज नय—ए येन एक्कागाड़िते दशटा वाहन जुते चालानो। तार सबगुलोइ यदि घोड़ा हत ताहलेओ एकरकम करे सारथ्य करा येते पारत। मुशकिल एइ, एर कोनोटा उट, कोनोटा हाति, कोनोटा घोड़ा, आबार कोनोटा धोबार बाड़िर गाधा—मयला कापड़ेर वाहक। एदेर सकलके एकराशे बागिये एक चाले चालाते पारे एमन मल्ल क'जन आछे। किन्तु आमि यदि निछक कवि हतुम ता हले एजन्ये मने भावनाओ थाकत ना, एमन कि यखन

घाड़भाङा गर्तेर अभिमुखे वाहनगुलो चार पा तुले छुटत तखनो अट्टहास्य करते पारतुम--एमन-सकल मरिया कवि संसारे माझे माझे देखा याय तारा स्पर्धार सङ्गे बलते पारे, स्वधर्मे निधनं श्रेयः। किन्तु आमार स्वधर्म की ता निये वितर्क आर घुचल ना। एटुकु प्रतिदिनइ बुझते पारि कविधर्म आमार एकमात्र धर्म नय--रसबोध एवं सेइ रसके रसात्मक वाक्ये प्रकाश करेइ आमार खालास नय। अस्तित्वेर नाना विभागेइ आमार जबाबदिहि--सब हिसाबके एकटा चरम अङ्के मेलाब की करे। यदि ना मेलाते पारि ता हले समस्या अत्यन्त कठिन बले तो परीक्षक आमाके पार करे देबेन ना--जीवनेर परीक्षाय तो हाल आमलेर विश्व-विद्यालयेर साहाय्य पाओया याय ना। आमार आपनार मध्ये एइ नाना विरुद्धतार विषय दौरात्म्य आछे बलेइ आमार भितरे मुक्तिर जन्ये एमन निरन्तर एवं प्रबल कान्ना। इति १ ला वैशाख १३३४।

१९

दीर्घकाल ना करेछि कोनो काजेर मतो काज, बा पड़ार मतो पड़ा। सेइ-जन्येइ भितरे भितरे मनटा आत्मअसन्तोषेर भारे अत्यन्त पीड़ित हये आछे। शून्य दिनेर मतो बोझा जीवने आर किछुइ नेइ, विशेषत जीवनेर मेयाद यखन खाटो हये एसेछे। निजेके यतइ छोटो करे आनछि ततइ तार भार बड़ो करे बइते हच्छे। प्रतिदिनइ मने मने निजेके लाञ्छना करछि, मने हच्छे अन्धकारे हातड़ेहातड़े निजेके कोथाओ खुंजे पाच्छि ने--कोथाय से कोन् अकिञ्चित्करतार मध्ये तलिये गेछे तार ठिकाना नेइ। अनवधानताय प्रत्यह आमि आमार अधिकांश जिनिसइ हाराइ, कागज कलम घड़ि चशमा खाता इत्यादि--निजेकेओ हठात् हारिये ब'से आर तार टिकि देखते पाइ ने। मरार चेये एइ हारानो आरो बेशि लोकसानेर। एइ हारिये-याओया भूते-पाओया अकर्मण्य दिनगुलो थेके एक दौड़े छुटे पालाते इच्छे करछे। ये प्रदीप समस्त रात परिष्कार आलो दियेछे भोरेर बेलाय तार तैल-दीन शिखा निजेर धोंयाते निजेके वन्दी करे केन। इति १८ भाद्र १३३५।

२३

आमार एखनकार सर्वप्रधान दैनिक खबर हच्छे छबि आँका। रेखार माया-जाल आमार समस्त मन जड़िये पड़ेछे। अकाले अपरिचितार प्रति पक्षापाते

कविता एकेबारे पाड़ा छेड़े चले गेल। कोनोकाले ये कविता लिखतुम से कथा भुले गेछि। एइ व्यापारटा मनके एत करे ये आकर्षण करछे तार प्रधान कारण एर अभावनीयता। कवितार विषयटा अस्पष्टभावे-ओ गोड़ातेइ माथाय आसे, तार परे शिवेर जटा थेके गोमुखी बेये येमन गङ्गा नामे तेमनि करे काव्येर झरना कलमेर मुखे तट रचना करे, छन्द प्रवाहित हते थाके। आमि येसब छबि आँकार चेष्टा करि ताते ठिक तार उलटो प्रणाली--रेखार आमेज प्रथमे देखा देय कलमेर मुखे, तार परे यतइ आकार धारण करे ततइ सेटा पौंछते थाके माथाय। एइ रूपसृष्टिर विस्मये मन मेते ओठे। आमि यदि पाका आर्टिस्ट हतुम ता हले गोड़ातेइ सङ्कल्प करे छबि आँकतुम, मनेर जिनिस बाइरे खाड़ा हत--तातेओ आनन्द आछे। किन्तु निजेर बहिर्वर्ती रचनाय मनके यखन आविष्ट करे तखन ताते आरो येन बेशि नेशा। फल हयेछे एइ ये, बाइरेर आर समस्त दायित्व दरजार बाइरे एसे उँकि मेरे हाल छेड़े दिये चले याच्छे। यदि सेकालेर मतो कर्म-दाय थेके सम्पूर्ण मुक्त थाकतुम, ता हले पद्मार तीरे बसे कालेर सोनार तरीर जन्ये केवलि छबिर फसल फलातुम। एखन नाना दाबिर भिड़ ठेलेठुले ओर जन्ये अल्पइ एकटु जायगा करते पारि। ताते मन सन्तुष्ट हय ना। ओ चाच्छे आकाशेर प्राय समस्तटाइ आमारओ दिते आग्रह, किन्तु ग्रहदेर चक्रान्ते नाना बाधा एसे जोटे--जगतेर हितसाधन तार मध्ये सर्वप्रधान। इति २१ कार्तिक १३३५।

२७

अन्य कथा परे हबे, गोड़ातेइ बले राखि तुमि ये चा पाठियेछिले सेटा खुब भालो। एतदिन ये लिखि नि सेटा आमार स्वभावेर विशेषत्ववशत। येमन आमार छबि आँका तेमनि आमार चिठि लेखा। एकटा या हय किछु माथाय आसे सेटा लिखे फेलि, प्रतिदिनेर जीवनयात्राय छोटो बड़ो ये सब खबर जेगे ओठे तार सङ्गे कोनो योग नेइ। आमार छबिओ ऐरकम। या हय कोनो एकटा रूप मनेर मध्ये हठात् देखते पाइ, चारदिकेर कोनो किछुर सङ्गे तार सादृश्य बा संलग्नता थाक् वा ना थाक्। आमादेर भितरेर दिके सर्वदा एकटा भाङागड़ा चलाफेरा जोड़ाताड़ा चलछेइ, किछु बा भाव, किन्तु बा छवि नाना रकम चेहारा धरछे तारइ सङ्गे आमार कलमेर कारबार एर आगे आमार मन आकाशे कान पेते छिल, बातास थेके सुर आसत, कथा शुनते पेत, आजकल से आछे चोख मेले रूपेर राज्ये, रेखार भिड़ेर मध्ये। गाछपालार दिके ताकाइ, तादेर अत्यन्त देखते पाइ— स्पष्ट बुझते पारि जगत्टा आकारेर महायात्रा। आमार कलमेओ आसते चाय

सेइ आकारेर लीला। आवेग नय, भाव नय, चिन्ता नय, रूपेर समावेश। आश्चर्य एइ ये ताते गभीर आनन्द। भारि नेशा। आजकाल रेखाय आमाके पेये बसेछे। तार हात छाड़ते पारछि ने। केवलइ तार परिचय पाच्छि नतुन नतुन भङ्गिर मध्ये दिये। तार रहस्येर अन्त नेइ। ये विधाता छबि आँकेन एतदिन परे ताँर मनेर कथा जानते पारछि। असीम अव्यक्त, रेखाय रेखाय आपन नतुन नतुन सीमा रचना करछेन--आयतने सेइ सीमा किन्तु वैचित्र्य से अन्तहीन। आर किछु नय, सुनिर्दिष्टतातेइ यथार्थ सम्पूर्णता। अमिता यखन सुमिताके पाय तखन से चरितार्थ हय। छबिते ये आनन्द, से हच्छे सुपरिमितिर आनन्द, रेखार संयमे सुनिर्दिष्टके सुस्पष्ट करे देखि--मन बले ओठे, निश्चित देखते पेलुम--ता से याकेइ देखि ना केन, एक टुकरो पाथर, एकटा गाधा, एकटा काँटागाछ, एकजन बुड़ि, याइ होक। निश्चित देखते पाइ येखानेइ, सेखानेइ असीमके स्पर्श करि, आनन्दित हये उठि। ताइ बले ए कथा भुलबे ना ये तोमार चा खुब भालो लेगेछे। इति १३ अग्रहायण १३३५।

३२

सेदिन हठात् एक समये, जानि ने केन, छेलेबेलाकार एकटा छबि खुब स्पष्ट करे आमार मने जेगे उठल। शीतकालेर सकाल बोध हय साड़े पाँचटा। अल्प अल्प अन्धकार आछे। चिर अभ्यासमतो भोरे उठे बाइरे एसेछि। गाये खुब अल्प कापड़ केवल एकखाना सुतोर जामा एवं इजेर। एइ रकम खुब गरिबेर मतोइ आमादेर बाल्यकाल केटेछे। भितरे भितरे शीत करछिल--ताइ एकटा कोणेर घर, याके आमरा तोषाखाना बलतुम, येखाने चाकरारा थाकत--सेइखाने गेलुम। आधा अन्धकारे ज्योतिदार चाकर चिन्ते लोहार आङटाय काठेर कयला ज्वालिये तार उपरे झाँझरि रेखे ज्यैदार जन्ये रुटि तोस करछे। सेइ रुटिर उपर माखन गलार लोभनीय गन्धे घर भरा। तार सङ्गे छिल चिन्तेर गुन गुन रवे मधुकानेर गान, आर सेइ काठेर आगुन थेके बड़ो आरामेर अल्प एकटुखानि तात। आमार वयस बोध हय तखन नय हबे। छिलुम स्रोतेर शेओलार मतो--संसारप्रवाहेर उपरतले हालकाभावे भेसे बेड़ातुम--कोथाओ शिकड़ पौंछय नि--येन कारो छिलुम ना, सकाल थेके रात्तिर पर्यन्त चाकरदेर हातेइ थाकते हत, कारो काछे किछुमात्र आदर पावार आशा छिल ना। ज्यैदा तखन विवाहित, ताँर जन्ये भाववार लोक छिल, ताँर जन्ये भोरबेला थेकेइ रुटि तोस आरम्भ। आमि छिलुम संसार-पद्मार बालुचरेर दिके, अनादरेर कूले--सेखाने फुल छिल ना, फल

छिल ना, फसल छिल ना; केवल एकला बसे भाववार मतो आकाश छिल। आर ज्यैदा पश्चार ये कूले छिलेन, सेइ कूल छिल श्यामल--सेखानकार दूर थेके किछु गन्ध आसत, किछु गान आसत, सचल जीवनेर छबि एकटु-आधटु चोखे पड़त। बुझते पारतुम ऐखानेइ जीवनयात्रा सत्य। किन्तु पार हये यावार खेया छिल ना, ताइ शून्यतार माझखाने बसे केवलि चेये थाकतुम आकाशेर दिके। छेलेबेलाय वास्तव जगत् थेके दूरे छिलुम ब'लेइ तखन थेके चिरदिन "आमि सुदूरेर पियासी"। अकारणे ऐ छबिटा अत्यन्त परिस्फुट हये मने जेगे उठल। तार परे भेवे देखलुम, सेदिन आमिइ छिलुम छायार मतो, आमार संसारे वस्तु छिल ना, घरे छिल ना आत्मीयता, बाइरे छिल ना बन्धुत्व। ज्योतिदादा छिलेन निविड़भावे सत्य, ताँर संसार छिल निविड़भावे ताँर निजेर। से दिन मने करा असम्भव छिल एइ येटुकु देखछि या घटछे एर किछु व्यत्यय हते पारे। पूर्णतार चेहारा देखा येत, किछुतेइ भावा येते पारत ना तार कोनो काले अन्त आछे। सेदिनकार सेइ रुटितोससुगन्धि सकालबेला ये पूर्णजीवनेर रूपक छिल सेदिन आमार समस्त जीवने तार समतुल्य किछुइ छिल ना। किन्तु कोथाय सेइ सकाल सेइ गुन गुन गान-करा चिन्ते चाकर—आर ज्यैदा, ताँर या-किछु समस्त निये कोथाय। आज सेइ शीतेर सकालेर अनाहत रवि जाहाजे चड़े चलछे वृहत् जगते। सेदिनेर सव चेये या सत्य तार कोनो चिह्न नेइ, आर सब चेये या छाया ता आज अद्भुत रकमे प्रकाण्ड हये उठेछे। आबार मने हच्छे आजकेर दिनेर समस्त किछु येन एइभावेइ बराबर चलबे, परिवर्तनेर कथा मने करा याय किन्तु मस्त फाँकगुलोर कथा कल्पनाय आनते पारि ने; तबु चलते चलते एमन-एकटा विशेष दिन आसे रात्रि आसे यखन एकटाना रास्तार माझखाने हठात् मस्त एकटा गह्वर देखा देय, मने करा याय ना एमन फाँक जीवने सइबे की करे, तार परे तार उपर दिये ओ समयेर रथ अनायासे पार हये याय, तार परे सेइ रथेर चिह्नटाओ याय मुछे। अत्यन्त पुरोनो कथा, किन्तु अत्यन्त अद्भुत कथा; एकटा धारा चलेइछे, येटा चिरकालइ आछे अथच पदे पदेइ नेइ—'समस्त' ब'ले मस्त एकटा किछु आछे अथच तार प्रत्येक अंशटाइ थाकछे ना--एक दिके से माया, तबु आर एक दिके से सत्य। इति १४ मार्च १९२९।

३६

प्ल्याटिनामेर आङटिर माझखाने येन हीरे—आकाशेर दिगन्त घिरे मेघ जमेछे, तार माझखानेर फाँक दिये रोद्दुर पड़ेछे परिपुष्ट श्यामल पृथिवीर उपरे। आज आर वृष्टि नेइ—हुहु करे हाओया दिच्छे, सामने पेँपे गाछेर पाता काँपछे, आरो दूरे उत्तरेर माठे आमार पञ्चवटीर निमगाछेर डाले डाले चलछे आन्दोलन, आर तार पिछने एका दाँड़िये आछे तालगाछ, तार माथाय येन विस्तर बकुनि। बेला एखन आड़ाइटे। आमार आबार दृश्य परिवर्तन हयेछे—उदयनेर दोतलाय बसबार घरे पश्चिम पाशे ये-नाबार घर छिल, प्रोमोशन हये सेटाइ हयछे बसबार घर—तार पाशेर छादटुकुते नाबार घरेर प्रतिष्ठा हयेछे। मस्त एकटा टेबिल पेते बसेछि—पिछने दक्षिण दिकेर आकाश, सामने उत्तर दिकेर। आषाढ़ मासेर स्ताननिर्मल स्निग्ध मध्याह्नटि एइ दुदिकेर खोला जालना दिये आमार एइ निर्जन घरेर मध्ये एसे दाँड़ियेछे। मने मने भावछि केन एमन दिने बहु आगेकार दिनेर एकटा आभास चित्त-आकाशेर दिगप्रान्ते अदृश्य कोन् राखालेर मतो मुलताने बाँशि बाजाय। अर्थात् ए रकम दिन येन वर्तमानेर कोनो दायके स्वीकार करे ना, एर काछे जरूरि किछुइ नेइ—ये-सब दिन एकेबारे चले गेछे ए तारि मतो वर्तमान भविष्यतेर बाँधनछेंड़ा उदासी—कारो काछे कोनो जवाबदिहिर धार धारे ना। किन्तु एइ अतीत वस्तुत कोनोदिनइ छिल ना, या छिल ता वर्तमान—तार प्रत्येक मुहूर्त बोझा पिठे सार बेंधे चलेछिल तार हिसेब दिते हयेछे। "गत काल" ब'ले ये-अतीत से आजइ आछे, गतकाल से छिलइ ना। स्वप्नरूपिणी से, वर्तमानेर बाँ पाशे बसे आछे—मधुर हये उठते तार कोनो खरच नेइ। सेइजन्यइ वर्तमान कालेर मध्ये यखन कोनो एकटा दिनेर विशुद्ध सुन्दर चेहारा देखि तखन बलि से अतीतकालेर साज परे एसेछे—प्रेयसीके बलि तुमि येन आमार जन्मान्तरेर जाना, अर्थात् एमन कालेर जाना ये-काल सकल कालेर अतीत—ये-काले स्वर्ग, ये-काले सत्य युग—ये-काल चिर अनायत्त। आजकेर एइ ये सोनाय पान्नाय छायाय आलोय बिजड़ित सुगभीर अवकाशेर मधुते भरा मध्याह्नटि सुदूर विस्तृत सबुज माठेर उपर विह्वल हये पड़े आछे एर अनुभूतिर मध्ये एकटा वेदना एइ आछे-ये एके पाओया याय ना, छोंओया याय ना, संग्रह करा याय ना—अर्थात् ए आछे तबुओ नेइ। सेइजन्येइ एके दूर अतीतेर भूमिकार मध्ये देखि। सेइ अतीतेर या माधुरी ता विशुद्ध; सेइ अतीते या हारियेछे बले निःश्वास फेलि तार सङ्गे एमन आरो अनेक हारियेछे या सुन्दर नय सुखकर नय, किन्तु सेगुलि अतीत नय, ता विनष्ट—या सुन्दर या सुखेर ताइ चिर अतीत, ता कोनोदिन मरे ना, अथच तार मध्ये अस्तित्वेर कोनो भार नेइ। आजकेर एइ दिनटा सेइ रकमेर—ए आछे

तबु नेइ, एइ मध्याह्नेर उपर विश्वभारतीर कोनो दाबि; नेइ--ए गौड़सारङेर आलाप, यखन समाप्त हये याबे तखन हिसाबेर खाताय कोनो अङ्क रेखे याबे ना।

४२

फुल फोटे गाछेर डाले, सेइ तार आश्रय। किन्तु मानुष ताके आपनार मने स्थान देय नाम दिये। आमादेर देशे अनेक फुल आछे यारा गाछे फोटे, मानुष तादेर मनेर मध्ये स्वीकार करे नि। फुलेर प्रति एमन उपेक्षा आर कोनो देशेइ देखा याय ना। हयतो बा नाम आछे किन्तु से नाम अख्यात। गुटिकयेक फुल नामजादा हयेछे केवल गन्धेर जोरे--अर्थात् उदासीन तादेर प्रति दृष्टिक्षेप ना करलेओ तारा एगिये एसे गन्धेर द्वारा स्वयं जानान देय। आमादेर साहित्ये तादेरइ बाँधा निमन्त्रण। तादेरओ अनेकगुलिर नामइ जानि, परिचय नेइ, परिचयेर चेष्टाओ नेइ। काव्येर, नाममालाय रोजइ बारबार प'ड़े आसछि यूथी जाति सेंउति। छन्द मिललेइ खुशि थाकि, किन्तु कोन फुल जाति, कोन् फुल सेंउति से प्रश्न जिज्ञासा करबारओ उत्साह नेइ। जाति बले चामेलिके, अनेक चेष्टाय एइ खबर पेयेछि, किन्तु सेंउति काके बले आज पर्यन्त अनेक प्रश्न क'रे उत्तर पाइ नि। शान्तिनिकेतने एकटि गाछ आछे ताके केउ केउ पियाल बले, किन्तु संस्कृत काव्ये विख्यात पियालेर परिचय कयजनेरइ बा आछे। अपरपक्षे देखो, नदीर सम्बन्धे आमादेर मने औदास्य नेइ, नितान्त छोटो नदीओ आमादेर मने प्रियनामेर आसन पेयेछे--कपोताक्षी मयूराक्षी इच्छामती। तादेर सङ्गे आमादेर प्रात्यहिक व्यवहारेर सम्बन्ध। पूजार फुल छाड़ा आर कोनो फुलेर सङ्गे आमादेर अवश्य प्रयोजनेर सम्बन्ध नेइ। फ्याशानेर सम्बन्ध आछे अचिरायु सीजन् फ्लाउयारेर सङ्गे--मालीर हाते तादेर शुश्रुषार भार--फुलदानिते यथारीति तादेर यातायात। एकेइ बले तामसिकता, अर्थात् मेटीरियालिज्म् --स्थूल प्रयोजनेर बाइरे चित्तेर असाड़ता। एइ नामहीन फुलेर देशे कविर की दुर्दशा भेबे देखो, फुलेर राज्ये नितान्त संकीर्ण तार लेखनीर सञ्चरण। पाखि सम्बन्धेओ ए कथा, काक कोकिल पापिया बौ-कथा-कओके अस्वीकार करबार उपाय नेइ, किन्तु कत सुन्दर पाखि आछे यार नाम अन्तत साधारणे जाने ना। ए प्रकृति-गत औदासीन्य आमादेर सकल पराभवेर मूले--देशेर लोकेर सम्बन्धे आमादेर औदासीन्यओ एइ स्वभाववशतइ प्रबल। परीक्षा पासेर जन्ये इतिहास-पाठे उपेक्षा करबार जो नेइ--आमादेर स्वादेशिकता सेइ पुँथिर झुलि दिये तैरि, देशेर लोकेर परे अनुरागेर औत्सुक्य दिये नय। आमादेर जगतटा कत छोटो भेबे देखो--तार थेके कत जिनिसइ बाद पड़ेछे। इति १६ इ सेप्टेम्बर १९२९।

४७

एइ पर्यन्त काल लिखेछि एमन समय डाक पड़ल। मेयेरा ऋतुरङ्ग अभिनय करबे आज सन्ध्येबेलाय। तादेर अभ्यास कराते हबे। ओरा अङ्गभङ्गिमार लताने रेखा दिये गानेर सुरेर उपर नक्शा काटते थाके। मने मने भावि एर अर्थटा की। आमादेर प्रतिदिनटा दाग-धरा, छेंड़ाखोंड़ा, काटाकुटिते भरा, तार मध्ये एर सङ्गति कोथाय। यारा लोकहित-व्रतपरायण सन्न्यासी तारा बले वास्तव संसारे दुःख दैन्य श्रीहीनतार अन्त नेइ, तार मध्ये एइ विलासेर अवतारणा केन। तारा जाने "दरिद्रनारायण" तो नाच शेखेन नि, तिनि नाना दाय निये केवलि छटफट करे बेड़ान, ताते छन्द नेइ। एरा एइ कथाटा भुले याय ये, दरिद्र शिवेर आनन्द नाचे। प्रतिदिनेर दैन्यटाइ यदि प्रकान्त सत्य हत ता हले एइ नाचटा आमादेर एकेबारेइ भालो लागत ना, एटाके पागलामि बलतुम। किन्तु छन्देर एइ सुसम्पूर्ण रूपलीलाटि यखन देखि तखन मन बलते थाके एइ जिनिसटि अत्यन्त सत्य––छिन्नविच्छिन्न अपरिच्छन्नभावे चार दिके या चोखे पड़ते थाके तार चेये अनेक गभीरभावे निविड़भावे। पर्दाटार उपरेइ प्रतिदिनेर चलति हातेर छाप पड़छे, दाग धरछे, धुलो लागछे, परिपूर्णतार चेहाराटा केवलि अप्रमाण हच्छे––एकेइ बलि वास्तव। किन्तु पर्दार आड़ाले आछे सत्य, तार छन्द भाङे ना, से अम्लान, से अपरूप। ताइ यदि ना हबे तबे गोलापफुल फुटे ओठे किसेर थेके, कोन गभीरे कोथाय बाजे सेइ बाँशि यार ध्वनि शुने मानुषेर कण्ठे कण्ठे युगे युगे गान चले एसेछे आर मने हयेछे मानुषेर कलह-कोलाहलेर चेये मानुषेर एइ गानेइ चिरन्तनेर लीला। अङ्गे अङ्गे यखन नाच देखा दिल तखन ऐ मयला छेंड़ा पर्दाटार एक कोणा उठे गेल––'दरिद्र नारायण' के हठात् देखा गेल वैकुण्ठे, लक्ष्मीर डानपाशे। ताकेइ असत्य बले उठे चले याबो मन तो ताते साय देय ना। दरिद्रनारायण के वैकुण्ठेर सिंहासनेइ बसाते हबे, ताँके लक्ष्मीछाड़ा करे राखब ना। आमादेर पुराणे शिवेर मध्ये ईश्वरेर दरिद्रवेश आर अन्नपूर्णाय ताँर ऐश्वर्य विश्वे एइ दुइयेर मिलनेइ सत्य। साधुरा एइ मिलनके यखन स्वीकार करते चान ना तखन कविदेर सङ्गे ताँदेर विवाद बाधे। तखन शिवेर भक्त कवि कालिदासेर दोहाइ पेड़े सेइ युगलकेइ आमादेर सकल अनुष्ठानेर नान्दीते आवाहन करब याँरा, 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ'। याँदेर मध्ये अभाव ओ अभावेर पूर्णतार नित्यलीला।

५९

निर्मल नील आकाश, काँचासोना-रङेर रोद्दुर, पाताल रेशमि चादरे ढाका छोटो पाहाड़गुलिर ऊर्ध्वे नगाधिराजेर तुषार-किरीटी महिमा, महादेवेर ध्यानोद्दीप्त शुभ्र ललाट। आमादेर काछेर अधित्यकार वने वने स्निग्ध चिक्कण पुञ्जीभूत सबुजे लेगेछे परशमणिर स्पर्श, पाताय पाताय जेगेछे सोनार रोमाञ्च, नील निस्तब्धतार उपर पाखिदेर मिश्रित काकलि नीलाम्बरी कापड़ेर उपर जरिर काजेर मतो झिलिमिलि करछे। एइमात्र खेये उठलुम, एकटा आम, गोटाकतक लिचु टोस्ट-करा रुटि, पहाड़ी गोष्ठेर माखने आर पाहाड़ी मौचाकेर मधुते लिप्त। एसे बसेछि मुक्तद्वार घरे। प्रचुर आलोते आमार मन गियेछे तलिये, आमार उड़ो भावना झापसा बेगनि कुहेलिकाय अस्पष्ट, कर्तव्यबुद्धिटा येन नेशा करे भोलानाथ हये बसे आछे। ईर्षा हच्छे ना? सेइजन्येइ लेखा। कालिम्पङ, १४ इ मे शनिवार १९३८।

चिठीपत्र

(मृणालिनी देवीके लिखित)

ॐ

भाइ छुटि

आज आमार प्रवास ठिक एक मास ह्ल। आमि देखेछि यदि काजेर भिड़ थाके ता ह्ले आमि कोनो मते एकमास काल विदेशे काटिये दिते पारि। तार पर थेके बाड़िर दिके मन टानते थाके।—काल सन्धेर समय एखाने वेश एकटु रीतिमत झड़ेर मतो हये गेछे। वातासेर गर्जने अनेकक्षण घुमोते देयनि। तोमादेर ओखानेओ बोध हय ए झड़टा हये गेछे। काल दिनेर बेलाओ खुब वृष्टि हये गेछे। नदीर जलओ अनेकखानि बेड़े उठेछे। शस्येर क्षेत समस्तइ जले डुबे गेछे—जल आर एकफुट बाड़लेइ आमादेर बागानेर काछे आसे। येदिके चेये देखि खानिकटा डाङा खानिकटा जल। मेयेरा आपनार बाड़िर सामनेर जलेइ बासन माजा एवं अन्यान्य नित्य क्रिया सम्पन्न करचे। सभ्यतार अनुरोधे शरीर यतखानि कापड़े आवृत्त थाका उचित तार चेयेओ आङुल चार पाँच उपरे कापड़ तुले मेये पुरुष सकलेइ रास्ता दिये चलेचे। गर्मिकाले एखाने येमन जलकष्ट, वर्षाकाले ठिक तार उल्टो। आमादेर तेतलातेओ बोध हय वृष्टि ह्'ले कतकटा एइ रकमेर दृश्यइ देखा याय। बारान्दाय ये परिमाणे जल दाँड़ाय ताते बोध हय अनायासे चौकाठेर काछे बसे स्नान बासनामाजा प्रभृति चले याय। वर्षाकाले यदि एइ उपाय अवलम्बन करो ताहले तोमार अनेकटा परिश्रम बेंचे याय। आजकाल तुमि दु बेला खानिकटा क'रे छाते पायचारि क'रे बेड़ाच्च कि ना आमाके वल देखि। एवं अन्यान्य समस्त नियम पालन हच्चे कि ना, ताओ जनाबे। आमार खुब सन्देह हच्चे तुमि सेइ केदाराटार उपर पा छड़िये ब'से एकटु एकटु करे पा दोलाते दोलाते दिव्यि आरामे नभेल पड़च। तोमार ये माथा धरत एखन की रकम आछे ?

(सहाजादपुर, १८९१) रवि

(मृणालिनी देवीके लिखित)

ॐ

भाइ छुटि

आज आहारान्ते ढुलते ढुलते तोमाके एकखानि चिठि लिखेछि तारपरेओ आबार खानिकक्षण ढुलते ढुलते गड़ाते गड़ाते साधारण काज करेछि। तारपरे यखन एखानकार प्रधान कर्म्मचारीरा बड़ बड़ कागजेर ताड़ा निये एसे प्रणाम क'रे मुखेर दिके चेये दाँड़ालेन तखन आमार घुमेर घोर आमार सुखेर स्वप्न एकेबारे छुटे गेल। एकबार मने मने भावलुम, यदि एदेर मध्ये केउ हठात् सुर क'रे गेये ओठे--

"ओगो देखि आँखि तुले चाओ,
तोमार चोखे केन घुमघोर।"

ता हले ओ गानटा बोध हय मायार खेलार द्वितीय संस्करण थेके एकेबारे उठिये दिइ। किन्तु से रकम सुर करे गान गावार भाव कारो देखलुम ना। दुइ एक जनेर एकटु खानि काँदुनिर सुर छिल किन्तु तादेर वक्तव्य विषयटा घुमेर घोर प्रेमेर डोर निये नय--तारा वेतन वृद्धि चाय। तादेर अनेकगुलि छेलेपुले, हजुरेर श्रीचरण छाड़ा तादेर आर कोनो भरसा नेइ, हजुर तादेर माता एवं पिता। ए छाड़ा कतकगुलि सावेक इजारादारेर नामे बाकि खाजनार डिग्रि करा हयेचे सूद खरचा माप निये किस्तिबन्दी करे टाका दिते चाय एवं तादेर देनार मध्ये ये समस्त ओजर आछे तारओ एकटा सद्विचार प्रार्थना करे। एर मध्ये करुणरस एवं अश्रुजल यथेष्ट आछे, अनेके हयतो बाड़ि घर दोर निलेम क'रे सर्वस्वान्त ह'ते बसेछे किन्तु एते सुर बसिये अपेरा हबार यो नेइ--किन्तु नलिन नयनेर कोणे एकटुखानि छलछल क'रे आसुक देखि अमनि कविर कविता, गाइयेर गान, बाजियेर बाजना, समस्त ध्वनित हये उठबे, अमनि दर्शक श्रोता एवं पाठकेर वक्षस्थल अश्रुजले भेसे याबे! एमनि एइ संसार! समुद्रतीर एवं समुद्रतरंगेर उपर यखन कविता लिखचि तखन आर काठा बिघेर ज्ञान थाके ना, तखन अनन्त समुद्र अनन्त तीर चोद्द अक्षरेर मध्ये। आर सेइ समुद्रेर धारे एकटि छोट्ट बाङ्गला बानाते याओ, तखन एञ्जिनियर, कण्ट्राक्टर एस्टिमेट् चिन्ता परामर्श धार एवं टोयेल्भ् पार्सेण्ट् सुद— तार उपरे आवार कविर स्त्रीर पछन्द हय ना, लोकसान बोध हय—स्वामीर मस्तिष्केर अवस्थार उपर सन्देह उपस्थित हय। कवित्व एवं संसार एइ दुटोर बनिबनाओ आर किछुते हये उठल ना देखचि। कवित्वे एक पयसा खरच नेइ।

(यदि ना बइ छापाते याइ) आर संसारटाते पदे पदे व्ययबाहुल्य एवं तर्कवितर्क। एइ रकम नाना चिन्ता करचि एवं खालेर मध्ये दिये बोट टेने निये याच्चे---आकाशे घननील मेघ करेचे---भिजे बादलार बातास दियेछे, सूर्य प्राय अस्तमित ---पिठे एकखानि शाल चापिये जोड़ासाँकोर छात आमार सेइ दुटो लम्बा केदारा एवं साँत्लाभाजार कथा एक एकबार मने करछि। साँत्ला भाजा चुलोय याक् रात्रे रीतिमतो आहार जुटले बाँचि। गोफुर मिञा नौकोर पिछन दिके एकटा छोट उनुन ज्वालिये की एकटा रन्धन कार्य्ये नियुक्त आछे माझे माझे घिये भाजर चिड़बिड़ शब्द हच्चे---एवं नासारन्ध्रे एकटा सुस्वादु गन्धओ आस्चे किन्तु एक पस्ला वृष्टि एलेइ समस्त माटि।

रवि

१८९२ शुक्रवार

ॐ

भाइ छुटि

आज यदि बिराहिमपुरेर पेश्कार सेखानकार फटिक मजुमदारेर मकद्दमाय प्रतिवादीर पक्षेर उकिल वक्तृताय आमादेर विरुद्धे की की कथा बलेचे विवृत क'रे एकखानि चिठि ना लिखत ता हले आमार डाके एकखानिओ चिठि आस्त ना एवं आमि एतक्षण बसे बसे भावतुम आज एखनो डाक एल ना बुझि। तोमादेर मतो एत अकृतज्ञ आमि देखिनि। पाछे तोमादेर चिठि पेते एक दिन देरि हय बले कोथाओ यात्रा करबार समय आमि एकदिने उपरि उपरि तिनटे चिठि लिखेचि। किन्तु आज थेके नियम करलुम चिठिर उत्तर ना पेले आमि चिठि लिखब ना। ए रकम करे चिठि लिखे लिखे केवल तोमादेर अभ्यास खाराप क'रे देओया हय---एते तोमादेर मनेओ एकटुखानि कृतज्ञतार सञ्चार हय ना। तुमि यदि हप्ताय नियमित दुखाना करे चिठिओ लिखते ता हलेओ आमि यथेष्ट पुरस्कार ज्ञान करतुम। एखन आमार क्रमशः विश्वास ह'ये आसचे तोमार काछे आमार चिठिर कोनो मूल्य नेइ एवं तुमि आमाके दु छत्र लिखते किछुमात्र केयार करो ना। आमि मूर्ख केन ये मने करि तोमाके रोज चिठि लिखले तुमि हयतो एकटुखानि खुसि हबे एवं ना लिखले हयत चिन्तित हते पारो, ता भगवान जानेन। बोध हय ओटा एकटा अहंकार। किन्तु ए गर्वटुकु आर तो राखते पारलुम ना। एखन थेके विसर्ज्जन देओया याक्। आज सन्धेबेलाय श्रान्त शरीरे बसे बसे एइ रकम लिखलुम, आवार हयत काल दिनेर

बेलाय अनुताप हबे, मने हबे पृथिवीते परेर काज निये परके भर्त्सना करार चेये निजेर काज निजे करे याओयाइ भालो। किन्तु एकटु सुयोग पेलेइ परेर त्रुटि निये खिटिमिटि करा आमार स्वभाव एवं तोमार अदृष्टक्रमे तोमाके चिरजीवन एटा सह्य करते हबे। भर्त्सनाटा प्राय चेंचिये करि आर अनुतापटा मने मने केउ शुनते पाय ना।

(शिलाइदह) रवि

(प्रमथ चौधुरीके लिखित)

ॐ

पोस्टमार्क, शिलाइदा--
२१ जून, १८९०

मथ

आमार मस्तिष्क ये अवस्थाय आछे से आर की बलव। वर्षाकाले येकाँचा रास्ताय केवल गोरुर गाड़ि एवं मोषेर पाल यातायात करे तार ये रकम आकार प्रकारहीन शोचनीय दशा उपस्थित हय, आमार बुद्धि वृत्तिर सेइ रकम दुरवस्था घटेछे। एरइ माझे-माझे पाँच-छ मिनट समय चुरि क'रे एकटा लेखा आरम्भ करेछिलुम--सेटा भालो हच्चे कि मन्द हच्चे एकटु स्थिर हये बोझबारओ समय पाच्चिने--क्षणिक अवसरे एकरकम श्रान्त मुह्यमान मस्तिष्के बिछानाय पड़े-पड़े नितान्त अलसभावे लिखे याइ--लिखते-लिखते माझे-माझे निद्राकर्षणओ हय--माझे माझे अन्यमनस्कभावे जलेर ढेउ बा तीरेर झाउवनेर दिके ताकिये थाकि, एवं कखन अलक्षितभावे मनेर मध्ये एमन सकल प्रसङ्ग प्रवेश लाभ करे यार सङ्गे सरस्वतीदेवीर कोनो सुदूर सम्पर्कओ नेइ। येटा लिखचि आगे थाकतेइ तार नाम दिये रेखेचि अनङ्ग आश्रम। नामटा अनेकेर मनोरञ्जक हबे बोध हय--कारण उनविंश शताब्दीर कलिते बहुविध फिलजाफिर दौरात्म्ये आमादेर शिक्षित सम्प्रदायरे मगज थेके आर समस्त देवताइ दौड़ दियेछेन "केवल अनङ्गदेव रयेछेन बाकि।" "रयेछेन बाकी" बलले ठिक बला हय ना--उक्त non-regulation province--एर एकाधिपत्य पेये तिनि क्रमशः दिव्यि हृष्टपुष्ट हये उठेछेन--यदिओ आजकल ताँर निज नामे ताँके डाकले रुचिव्यभिचार

दोषे दण्डनीय हते हय। हाय हाय, पूर्वे देवतादेर काछे ये नामे तार परिचय छिल, एखन मानवसमाजे से नाम तिनि लज्जाय गोपन करते चान--आमरा एत शिक्षित एत उन्नत हये उठेछि। बोध हय सभ्यतार उन्नतिसहकारे "प्रेम" शब्दटाओ क्रमे अतिलज्जाजनक हये उठबे--तखनकार युवकेरा आमादेर बइगुलो बालिसेर निचे लुकिये रेखे गोपने पड़बे, सेइजन्ये बोध हय एखनकार चेये ढेर बेशि भालो लागबे। आबार तखन यदि साधारण ब्राह्म थाके तबे तारा ना जानि की रकम प्रचण्ड पवित्रता प्रचार करबे। से कथा मने करले आमादेर मतो कविदेर हृत्कम्प उपस्थित हय।--एखाने नितान्त समयाभाव एवं अति शीघ्र देखा हबे सेइ जन्ये बेशि लिखलुम ना। तोमार जयदेव प्रबन्धटा पड़बार प्रत्याशाय रइलुम। कुमुदके आश्वस्त क'रे एक चिठि लिखलुम। इति

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

(प्रमथ चौधुरीके लिखित)

प्रमथ

अनेकगुलि अपरिचिताक्षर पातला चिठिर मध्ये चुयोडाङा मुद्राङ्कित एकखानि बेश मोटा मजबूत भारि गोछेर चिठि पेये लागल भालो। काल सकालबेलाय एकटा लेखा एवं रात्तिरे एकटा बइ शेष करे आज प्रातःकाले नितान्त अकर्मण्यभावे बसे छिलुम--ठिक समये चिठि पाओया गेल--एखन शरीर मन आबार एकटु सचेतन हये उठेछे।

एखाने आजकल खुब झड़वृष्टि बादलेर प्रादुर्भाव हयेछे। ए जायगाटा ठिक झड़वृष्टिरइ उपयुक्त। समस्त आकाशमय मेघ करे, अर्थात् समस्त आकाशटा देखते पाओया याय, झड़ समस्त माठटाके आपनार हाते पाय--वृष्टि माठेर उपर दिये चले चले आसे, दूरे थेके बारान्दाय दाँड़िये देखा याय। वर्षार अन्धकार छायाटाके आपनार चतुर्दिके प्रकाण्डभावे विस्तृत देखते पाओया याय। खुब दूर थेके हुहु शब्द करते-करते धुलो, शुकनो पाता एवं छिन्नविच्छिन्न स्तूपाकार मेघ उड़िये निये अकस्मात् आमादेर एइ बागानेर उपर मस्त एकटा झड़ एसे पड़े--तार परे, बड़ो-बड़ो गाछगुलोर झुंटि ध'रे ये नाड़ा दिते थाके से एक आश्चर्य दृश्य। फले परिपूर्ण आमगाछ तार समस्त डालपाला निये भूमिते लुटिये लुटिये पड़े--केवल शालगाछगुलो बराबर खाड़ा दाँड़िये आगागोड़ा थरथर क'रे काँपते थाके। माठेर माझखाने आमादेर बाड़ि--सुतरां चतुर्दिकेर झड़ एरइ उपरे एसे प'ड़े घुरपाक खेते थाके; सेदिन तो एकटा दरजा टुकरो-टुकरो करे भेङे आमादेर घरेर मध्ये एसे

उपस्थित——ये काण्डटा करलेन तार थेके स्पष्टइ बोझा गेल अरण्यइ एँर उपयुक्त स्थान——भद्रलोकेर घरेर मध्ये प्रवेश करबार मतो सहवत् शिक्षा हय नि; अविश्यि, कार्ड पाठिये ढोका प्रभृति नव्य रीति एँर काछ थेके प्रत्याशा कराइ येते पारे ना, किन्तु भिजे पाये ढुके गृहस्थ घरेर जिनिसपत्र समस्त लण्डभण्ड क'रे देओयाइ कि सनातन प्रथा ? किन्तु ए रकम अशिष्टाचरण सत्त्वेओ लेगेछिल भालो। बहुकाल ए रकम रीतिमतो झड़ देखिनि। एखानकार लाइब्रेरीते एकखाना मेघदूत आछे, झड़वृष्टिदुर्योगे, रुद्धद्वार गृहप्रान्ते ताकिया आश्रय क'रे दीर्घ अपराह्णे सेइटि सुर करे-करे पड़ा गेछे——केवल पड़ा नय——सेटार उपरे इनिये बिनिये वर्षार उपयोगी एकटा कविता लिखेओ फेलेछि। मेघदूत पड़े की मने हच्छिल जानो ? बइटा विरहीदेर जन्येइ लेखा बटे——किन्तु एर मध्ये आसले विरहेर विलाप खुब अल्पइ आछे——अथच समस्त व्यापारटा भितरे-भितरे विरहीर आकांक्षाया परिपूर्ण। विरहावस्थार मध्ये एकटा बन्दीभाव आछे किना——एइ जन्ये बाधाहीन आकाशेर मध्ये मेघेर स्वाधीन गति देखे अभिशापग्रस्त यक्ष आपनार दुरन्त आकांक्षाके तारि उपरे आरोपण करे विचित्र नदी पर्वत वन ग्राम नगरीर उपर दिये आपनार अपार स्वाधीनतार सुख उपभोग करते करते भेसे चलेछे। मेघदूत काव्यटा सेइ बन्दी हृदयेर विश्वभ्रमण। अवश्य निरुद्देश्य भ्रमण नय——समस्त भ्रमणेर शेषे बहुदूरे एकटि आकांक्षार धन आछे——सेइखाने चरम विश्राम——सेइ एकटि निर्दिष्ट उद्देश्य दूरे ना——थाकले एइ लक्ष्यहीन भ्रमण अत्यन्त श्रान्ति ओ औदास्येर कारण हत। किन्तु सेखाने याबार ताड़ाताड़ि नेइ——रये बसे आपनार स्वाधीनता सुख सम्पूर्ण उपभोग करे, पथिमध्यस्थित विचित्र सौन्दर्येर कोनोटिकेइ अनादरे उल्लंघन ना करे रीतिमतो (oriental) राजमाहात्म्ये याओया याच्चे। यक्षेर दिक थेके देखते गेले सेटा हयतो ठिक "ड्रामाटिक" हय ना——एकटा दक्षिणे झड़ उठिये एकेबारे हुस क'रे सेखाने गिये पड़लेइ बोध हय तार पक्षे ठिक ह'तो, किन्तु ताहले पाठकदेर अवस्था की हतो बलो देखि ? आमरा एइ वर्षार दिने घरे बन्ध हये आछि——मनटा उदास हये आछे, आमादेर एकबार मेघेर मतो महास्वाधीनता ना दिले अलकापुरीर अतुल ऐश्वर्येर वर्णना कि तेमन भालो लागत। आज वर्षार दिने मने हच्छे पृथिवीर काजकर्म समस्त रहित हये गेछे, कालेर मस्त घड़िटा बन्ध, वेला चलचे ना——तबुओ आमि बन्ध हये आछि छुटि पाच्चि ने। आज एइ कर्महीन आषाढ़ेर दीर्घ दिने पृथिवीर समस्त अज्ञात अपरिचित देशेर मध्ये बेरिये पड़ले बेश हय——आज तो आर कोनो दायित्वेर काज किछुइ नेइ——संसारेर सहस्र छोटोखाटो कर्तव्य आजकेर एइ महादुर्योगे स्थानच्युत हये अदृश्य हयेछे——आज तेमन सुयोग थाकले के ध'रे राखते पारत ? ये सकल नदीगिरि नगरीर सुन्दर बहुप्राचीन नाम

बहुकाल थेके शोना याय मेघेर उपरे ब'से सेगुलो देखे आसतुम। वास्तविक की सुन्दर नाम! नाम शुनलेइ टर पाओया याय कत भालोबेसे एइ नामगुलि राखा हयेछिल एवं एइ नामगुलिर मध्ये केमन एकटि श्री ओ गाम्भीर्य आछे। रेवा, शिप्रा, जयन्ती, गम्भीरा, निर्वन्ध्या; चित्रकूट, आम्रकट, विन्ध्य; दशार्ण, विदिशा, अवन्ती, उज्जयिनी; एदेरइ सकलेर उपरे नववर्षा मेघ उठेछे, एदेरइ यूथीवने वृष्टि पड़चे एवं जनपदवधूरा कृषिफलेर प्रत्याशाय स्निग्ध नेत्रे मेघेर दिके चाच्चे। एदेर जम्बुकुञ्जे फल पेके आकाशेर मेघेर मतो कालो हये उठेछे--दशार्ण ग्रामेर चतुर्द्दिके केयागाछेर बेड़ागुलिते फुल धरेछे--सेइ फुलगुलिर मुख सबे एकटुखानि खुलते आरम्भ करेछे। मेघाच्छन्न रात्रे उज्जयिनीर गृहस्थ घरेर छादेर नीचे पायरागुलि समस्त घुमिये रयेछे--राजपथेर अन्धकार एमनि प्रगाढ़ ये सूचि दिये भेद करा याय। कविर प्रसादे आजकेर दिने यदि मेघेर रथ पाओयाइ गेल ताहले एसब देश ना देखे कि याओया याय? यक्षेर यदि एतइ ताड़ा छिल ताहले झोड़ो वातासके किम्बा विद्युत्के दूत करलेइ ठिक हतो--यक्ष यदि उनविंश शताब्दीर हय ताहले टेलिग्राफेर उल्लेख करा येते पारे। सेकालेर दिने यदि एखनकार मतो तीक्ष्णदर्शी क्रिटिक सम्प्रदाय थाकत ताहले कालिदासके महा जबाबदिहिते पड़ते हत--ताहले एइ क्षुद्र सोनार तरीटि लिरिक ड्रामाटिक, डेसक्रिप्टिभ, प्यास्टोराल प्रभृति क्रिटिकदेर कोन पाहाड़े ठेके डुबि ह'तो बला याय ना। आमि एइ कथा बलि यक्षेर पक्षे कविर आचरण येमनि होक आमार पक्षे भारि सुविधे हयेछे--क्रिटिकेर सङ्गे सम्पूर्ण एकमत हये बलचि, dramatic हयनि, किन्तु आमार बेश लागचे। आमार आर एकटा कथा मने पड़चे--ये समये कालिदास लिखेछिल से समये काव्ये लिखित देश देशान्तरेर नाना लोक प्रवासी हये उज्जयिनी राजधानीते बास करत, तादेरओ तो विरहावस्था छिल--एइजन्ये अलका यदिओ मेघेर terminus, तथापि विविध मध्यवर्ती स्टेशने एइ सकल विरही हृदयदेर नाबिये दिये येते हयेछिल। से-समयकार नाना विरहके नाना देश विदेशे पाठाते हयेछिल, ताइ जन्ये अलकाय पौंछते एकटु देरि हयेछिल--एजन्ये हतभाग्य यक्षेर एवं तदपेक्षा हतभाग्य क्रिटिकेर निकट कविर समुचित apology करा हयनि--किन्तु सेटाके ताँरा यदि public grievance ब'ले धरेन ता हले भारि भुल करा हय। आमि तो बलते पारि एते खुशि अछि। वर्षाकाले सकल लोकेरइ किछु-ना-किछु विरहेर दशा उपस्थित हय--एमन कि प्रणयिनी काछे थाकलेओ हय--कवि निजेइ लिखेछेन--

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।

अर्थात् मेघला दिने प्रणयिनी गलाय लेगे थाकलेओ सुखी लोकेर मन उदासीन हये याय, दूरे थाक्ले तो कथाइ नेइ। अतएव कविके वर्षार दिने एइ जगद्-व्यापी विरहीमण्डलीके सान्त्वना दिते हबे, केवल क्रिटिकके ना। एइ वर्षार अपराह्णे क्षुद्र आत्म कोटरेर मध्ये अवरुद्ध बन्दीदिगके सौन्दर्येर स्वाधीनता क्षेत्रे मुक्ति दिते हबे--आजकेर समस्त संसार दुर्योगेर मध्ये रुद्ध हये अन्धकार हये विषण्ण हये बसे आछे।

मेघदूत पड़ते-पड़ते आर एकटा चिन्ता मने उदय हय। सेकालेइ वास्तविक विरही विरहिणी छिल, एखन आर नेइ। पथिकवधूदेर कथा काव्ये पड़ा याय किन्तु तादेर प्रकृत अवस्था आमरा ठिक अनुभव करते पारिने। पोस्ट आफिस एवं रेलगाड़ि एसे देश थेके विरह ताड़ियेछे। एखन तो आर प्रवास ब'ले किछु नेइ--ताइजन्ये विरहिणीरा आर केश एलिये आर्द्रतन्त्री वीणा कोले क'रे भूमितले पड़े थाके ना। डेस्केर सामने बसे चिठि लिखे मुड़े टिकिट लागिये डाकघरे पाठिये देय, तार परे निश्चिन्तमने स्नानाहार करे। एमन कि इङराज राजत्वेओ किछुदिन पूर्वे यखन भालोरूप रास्ताघाट यानवाहनादि ओ पुलिशेर बन्दोबस्त हयनि तखनो प्रवास बले एकटा सत्यिकार जिनिस छिल--ताइ

प्रवासे यखन याय गो से
तारे बलि बलि आर बला हलो ना।

कविदेर ए सकल गानेर मध्ये एतटा करुणा प्रवेश करेछिल। तुमि मने कोरो ना आमि एतदूर निर्लज्ज कृतघ्न ये चिठिर मध्येइ पोस्ट आफिसेर विरुद्धे निन्दावाद करिच। आमि पोस्ट आफिसेर विशेष पक्षपाती, किन्तु सेइ सङ्गे एटाओ स्वीकार करचि ये यखन मेघदूत बा कोनो प्राचीन काव्ये विरहिणीर कथा पड़ि--तखन मनेर मध्ये इच्छे करे एं रकम सत्यिकार विरहिणी आमार जन्ये यदि कोनो प्रवासे विरहशयने विलीन हये थाके एवं आमि यदि जड़ अथवा चेतन कोनो दूतेर साहाय्ये अथवा कल्पनार प्रभावे सेटा जानते पारि ताहले वेश हय। स्वदेशेइ थाक विदेशेइ थाक एवं भालोबासा येमनइ थाक सकलेइ वेश comfortably कालयापन करचे एटा कि रकम गद्योपयोगी शोनाय।--बाइरे खुब वृष्टि हच्चे--वातास बच्चे एवं सन्ध्येर अन्धकार घनीभूत हये आसचे। बहुकष्टे आमार अक्षर देखते पाच्चि--दिनेर आलो सम्पूर्ण निर्वापित हवार पूर्वेइ चिठिटा शेष करे फेलवार जन्ये एकेवारे हू हू करे लिखे चलेछि--चिन्ताशक्ति माझे माझे विश्राम करवार किंवा नूतन steam सञ्चय करवार अवसर पाच्चे ना--किन्तु आज बोध हय शेष हल ना--काल सकाले शेष करा यावे।--

भरसा करि ए चिठिटा यखन तोमार हाते गिये पौंछबे तखन चुयोडाङ्गार आकाश अन्धकार क'रे मेघ करेछे एवं समस्त प्रान्तर व्याप्त क'रे झुप झुप शब्दे वृष्टि हच्चे। नइले रोद्दुरे यदि चारिदिक धू धू करते थाके, घासगुलि यदि समस्त शुकिये हलदे हये एसे थाके, एवं आकाशेर कोनो प्रान्तभागे यदि मेघेर आश्वासमात्र ना थाके, ताहले एइ वर्षाजीवी चिठिटा नितान्त अकालमृत्युर हाते गिये पड़बे। वर्षाकालटा किना प्रकृतिर साधारण अवस्थार एकटा व्यतिक्रम दशा। सूर्य नक्षत्र प्रभृति प्रकृतिर सर्वापेक्षा नित्यलक्षणगुलि विलुप्त, तार स्थाने क्षणिक मेघेर राजत्व,––प्रकृतिर दैनन्दिन जगतेर विचित्र जीवन-कलरव मौन-तारइ स्थाने अविश्राम एकतान वृष्टिर झरझर शब्द––अवसुद्ध एइ रकम क्षणस्थायी एकटा विपर्यय भाव। सुतरां प्रकृति प्रकृतिस्थ हबामात्रइ एकटु रोद उठलेइ वर्षार कथा समस्त भुले येते हय। वर्षार सम्पूर्ण भावटि आर मनेर मध्ये आना याय ना––ताइ आशङ्का हच्चे पाछे चिठिटा ज्येष्ठमासेर मध्याह्नतापेर समय तोमार हाते गिये पौंछाय। चिठिर एकटा मस्त अभाव हच्चे ऐ––वृष्टिर चिठि रौद्रेर समय गिये पौंछय सन्धेर चिठि सकाले उपस्थित हय–उभयपक्षेर मध्ये परिपूर्ण समवेदना थाके ना। घनीभूत अन्धकार सायाह्ने बाति ज्वेले एकला ब'से ये–– चिठिटा लेखा हय सेटा यदि तुमि प्रातःकाले मुखप्रक्षालनपूर्वक सपरिवारे चा रुटि सेवन करते-करते पाठ करो ताहले की रकम पापानुष्ठान हय भेबे देख देखि ––चुरि करे लोकेर डायारि पड़ले ये-पाप हय एटा तार चेये किछु कम नय।

तोमार एबारकार चिठितेओ "छबि ओ गाने" र कथा आछे––विषयटा आमार पक्षे खुब मनोरम सन्देह नेइ। आजकाल ये-सकल कविता लिखचि ता' छबि ओ गान थेके एत तफात ये, आमि भाबि आमार, लेखार आर कोथाओ परिणति हच्चे ना, क्रमागतइ परिवर्तन चलेछे। आमि बेश अनुभव करते पारचि आमि येन आर एकटा परिवर्तनेर सन्धिस्थले आसन्न अवस्थाय दाँड़िये आछि। ए रकम आर कतकाल चलबे ताइ भाबि। अवशेषे एकटा जायगा तो पाब येटा विशेष रूपे आमारइ जायगा। आविश्राम परिवर्तन देखले भय हय ये, एतकाल ध'रे एतगुलो ये लिखलुम से गुलो किछुइ हयतो टिकबे ना––आमार निजेर येटा यथार्थ चरम अभिव्यक्ति सेटा यतक्षण ना आसे ततक्षण एगुलो केवल tentative भाबे आछे। वास्तविक, कोनटा सत्यि, कोनटा मिथ्ये कबे ये धरा पड़बे तार ठिक नेइ। किन्तु आमि देखेछि, यदिओ एक-एक समये सन्देहेर अन्धकारे मन आच्छन्न हये याय, एवं आमार पुरातन समस्त लेखार उपरेइ अविश्वास जमे तबु मोटेर उपरे मन थेके एइ आत्म विश्वासटुकु याय ना ये, यदि यथेष्टकाल बेंचे थाकि ताहले एमन एकटा दृढ़ प्रतिष्ठाभूमिते गिये पौंछब येखाने थेके केउ आमाके स्थानच्युत

करते पारबे ना। किन्तु ए रकम आत्मविश्वास आरो सहस्र सहस्र लोकेर छिल एवं आछे एवं तादेर भ्रान्त जीवन निष्फल हयेछे एवं हबे अतएव ए रकम आत्म-विश्वास कोनो विषयेर प्रमाण ब'ले ध'रे लओया याय ना। एइ देख, खुब एक चोट अहमिकार अवतारणा करा गेल—किन्तु चारटे चिठिर कागज पोराते गेले अवशेष "अहं" बइ आर गति नेइ—एतटि जायगा जोड़ा आर आरो साध्य नेइ। आर सकल खबर सकल आलोचनाइ फुरिये याय—एर कथा आर शेष हय ना—अतएव दीर्घ चिठिर प्रत्याशा करो यदि, तो सर्वापेक्षा दीर्घ एइ अहम्पुरुषके बहुल परिमाणे सह्य करते हबे।

(प्रमथ चौधुरीके लिखित)

ॐ

पोस्टमार्क, शाजादपुर

भाइ प्रमथ

एइ खानिकक्षण हल तोमार चिठि पेलुम। सेदिन कलकातार चिठिते तोमार कनभोकेशने उपस्थितिर खबर पेये आमि ठाओरेछिलुम तबे बुझि तुमि एखनो कलकाताय आछ एवं आमार पत्रखण्ड तोमादेर हरिपुरेर माठे मारा गेल। किन्तु तोमार चिठिते जाना गेल, आमार चिठि रक्षे पेयेछे एवं तत्परिवर्ते सेखानकार माठे बाघ बराह प्रभृति हिंस्र जन्तु गुलो मारा पड़चे। आमि एखाने आमार सामनेर एइ सब कटा जानला खुले दिये एखानकार दुपुरेर रौद्रे बड़ो-बड़ो गछओयाला काँचा रास्तार उपर दिये पाड़ागाँयेर अनतिव्यस्त लोकचलाचलेर प्रति अनिमेष नेत्र निहित रेखे एमनि अन्यमनस्क उड़ोउड़ोभावे थाकि ये एकटु मनःसंयोग क'रे एकटा भद्ररकम प्रमाणसइ चिठि ये लिखब तार सामर्थ्य नेइ। एइ क्षुद्रायतन कागजे दुटो-चारटे असंलग्न कथा लिखे कोनोमते साङ्ग क'रे दिते हय। एखानकार वातासे एवं बाह्यदृश्ये एमन एकटा आलस्य औदास्य, वैराग्य, अथच एमन एकटा माधुर्य आछे ये आमार मन किछुते निविष्ट हये आछे कि विक्षिप्त हये आछे बुझते पारचि ने। मानसी सम्बन्धे ये लिखेछ, ये तार मध्ये एकटा despair एवं resignation एर भाव प्रबल, सेइ कथाटा आमि भाबछिलुम। प्रतिदिनइ आमि देखते पाच्चि निजेर रचना एवं निजेर मन सम्बन्धे समालोचना करा भारि कठिन। आमि बेर

करते चेष्टा करछिलुम एइ despair एवं resignation एर मूलटा कोनखाने। आमार चरित्रेर कोनखाने सेइ केन्द्रस्थल आछे येखाने गिये आमार समस्तटार एकटा परिष्कार माने पाओया याय। कड़ि ओ कोमलेर समालोचनाय आशु यखन बलेछिलेन जीवनेर प्रति दृढ़ आसक्तिइ आमार कवित्वेर मूलमन्त्र तखन हठात् एकबार मने हयेछिल ह'तेओ पारे, आमार अनेकगुलो लेखा ताते क'रे परिस्फुट हय बटे। किन्तु एखन आर ता मने हय ना। एखन एक एकबार मने हय आमार मध्ये दुटो विपरीत शक्तिर द्वन्द्व चलचे। एकटा आमाके सर्वदा विश्राम एवं परिसमाप्तिर दिके आह्वान करचे, आर-एकटा आमाके किछुते विश्राम करते दिच्चे ना। आमार भारतवर्षीय शान्तप्रकृतिके युरोपेर चाञ्चल्य सर्वदा आघात करचे--सेइजन्य एकदिके वेदना आर एकदिके वैराग्य। एक दिके कविता आर एकदिके फिलजाफि। एकदिके देशेर प्रति भालोबासा आर एकदिके देशहितैषितार प्रति उपहास। एकदिके कर्मेर प्रति आसक्ति आर एकदिके चिन्तार प्रति आकर्षण। एइजन्ये सबसुद्ध जड़िये एकटा निष्फलता एवं औदास्य। एटा तोमार की रकम मने हय ? तुमि की भावे देख सेटा आमाके एकटु परिष्कार करे लिखो--तोमादेर द्वारा आमरा निजेके objcctively देखते इच्छे करे। निजेर मध्ये निजेके देखते चेष्टा करा दुराशा--कारण प्रतिमुहूर्तइ आमार निजेर काछे एमनि जीवन्त एवं बलवान ये, मोटेर उपरे आमि ये की ता देखते पाइने। कखनो आशा कखनो नैराश्य, कखनो गर्व्व, कखनो ग्लानि अनुभव करि, किन्तु निजेर ठिक परिमाणटा पाइने। आमि यखन आमार काव्य समालोचना करते चेष्टाकरि तखन वर्तमान मुहूर्तटाइ क्रिटिक हये बसेन किन्तु तार कथा किछुमात्र विश्वासयोग्य नय :--तोमरा यखन समालोचना करो तखन आमार पूर्वेर सङ्गे पर एवं एकटार सङ्गे आरेकटा मिलिये देखते पारो। Bashkirtsiff एर Journal आमिओ पड़छि--मन्द लागचेना किन्तु मोटेर उपरे कष्टकार ठेकचे। एर थेके माझेमाझे अनेकगुलो कथा मने आसे--किन्तु येटुकु स्थान अवशिष्ट आछे तार मध्ये आर सेसकल उत्थापन करा येते पारे ना--अतएव आज विदाय--

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

१७ माघ, १८९१

भाइ प्रमथ

हठात् आज प्रातःकाले आमार दक्षिण काँधे वातेर मतो हयेछे--माथा एवं हात नाड़ा दुःसाध्य हये पड़छे--एवं पृष्ठदेश--याके सर्वदाइ पश्चाते फेले

रेखेछि--याके चक्षेओ देखिने--बहुपरिश्रमेर पर चौकिते ठेसान देबार समय व्यतीत यार अस्तित्व कखनो अनुभव करा याय ना सेइ सर्वपश्चाद्वर्ती पृष्ठदेशइ आपनाके चेतनाराज्येर एकाधिपति करे रेखेछे। तोमोके एइ ये क'लाइन चिठि लिखलुम एर मध्ये अनेक मुखभङ्गी एवं आर्तनाद अव्यक्तभावे प्रच्छन्न आछे। वर्तमान एइ व्याधिटार तुलनाय मानसीर समस्त औदास्य एवं नैराश्य अत्यन्त मिथ्या एवं नितान्त शौखिन ब'ले मने हच्चे। पिठ एवं काँधके हृदय एवं आत्मार चेये अनेक बेशि मने हच्चे। अतएव आज मानसी सम्बन्धे ठिक समालोचनाटा आमार काछ थेके प्रत्याशा करा येते पारे ना। भालो क'रे भेवे देखते गेले मानसीर भालो बासार अंशटुकुइ काव्यकथा--बड़ो रकमेर सुन्दर रकमेर खेला मात्र--ओर आसल सत्यिकथाटुकु हच्चे एइ ये, मानुष की चाय ता किछु जाने ना--एक घटि जल चाय, कि आधखाना बेल चाय, जिज्ञासा करले बलते पारे ना, आमि एमन अवस्थाय मनेर सङ्गे आपषे बोझापड़ा क'रे कल्पनार कल्पवृक्षेर मायाफल पाड़बार चेष्टा करचि। यखन जानि, सत्य एके नितान्त असन्तोषजनक, तार उपरे आबार रूढ़भावे मानवमनेर मुखेर उपर सर्वदा जवाव करे--ताइ ध्यानभरे कल्पना-सिद्ध हबार चेष्टा करा याच्चे--कल्पनार काछ थेकेओ पुरो फल (पाओया) याय ना--किन्तु सत्येर चेये से ढेर बेशि आज्ञावह। ताइ जन्येइ "साध याय सत्य यदि हत कल्पना"--आमि दुटो यदि एक करते पारतुम। अर्थात् आमि यदि ईश्वर हते पारतुम। मानुषेर मने ईश्वरेर मतो आकांखा आछे, किन्तु ईश्वरेर मतो असीम क्षमता नेइ--केउबा बलचे, आछे--बले बहिर्जगते चेष्टा करे बेड़ाच्छे--केउ बा जाने, नेइ--ताइ आकांक्षाराज्ये बसेइ अर्द्ध निराश्वासभावे कल्पनापुत्तली गड़िये ताके पुजो करचे। एकेइ बल भालोबासा? आमार भालोबासार लोक कइ? आमि भालोबासि अनेकके--किन्तु मानसीते याके खाड़ा करेचि से मानसेइ आछे--से--artistएर हाते रचित ईश्वरेर प्रथम असम्पूर्ण प्रतिमा। क्रमे सम्पूर्ण हवे कि?

रविका--

पोस्टमार्क, शान्तिनिकेतन

कल्याणीयषु

तुमि सामयिक पत्रेर संक्षिप्त समालोचनाके खातिर करे चलो शुने आश्चर्य हलुम। छापार अक्षर जिनिसटार एकटा जादु आछे। सेइ जादुर आवरण

काटिये स्वयं समालोचक पुरुषटिके यदि प्रत्यक्ष देखते पेते ताहले अधिकांश स्थलेइ देखते पेते तार सम्पत्तिर मध्ये आछे मात्र कलम। आक्केल एवं एलेम बेशि नय। आमादेर देशेर पनेरो आना लेखार मध्ये मन जिनिसटा नेइ—आमादेर पाठकदेर पाकयन्त्र सेइजन्ये ओटा एखनओ हजम करते शेखेनि। उपदेश एवं अश्रु एवं उत्तेजना यतइ जोगाबे तार अफुरान काटति। किन्तु मन जिनिषटा बड़ो बालाइ। ओटाके गालेर मध्ये दिलेइ अमनि गले ना। ओटार सङ्गे कारबार करते हले ये परिणतिर दरकार ये-कारणेइ होक आमादेर देशे सेटा दुर्लभ हयेचे। आमरा मनेर आबाहाओयार मध्ये जन्माइनि—ये-देशे सकल भावना भावित एवं सकल कर्म कृत हये चिरदिनेर जन्ये खतम हये गेचे सेइ "आमार जन्मभूमि" ते आमरा मानुष। तार परे आबार आमादेर विद्याशिक्षाओ मूल बइ थेके नय नोटबइ थेके। एइ रकम क'रे आरेक जनेर मन येटा चिबिये आमादेर जन्ये अधक हजम करे देय सेइ खाद्येइ आमादेर मनेर बाड़बार वयस काटल। एमन समये हठात् आमादेर भावते बलले आमादेर राग हय—एवं भेबे येटा दाँड़ाय सेटा अजीर्णता। तुमि किछुकाल यदि इब्सेन मेटारलिङ्क डस्टेभ्स्कि बार्नार्ड् श कोट करे एवं व्याख्या करे इस्कुलमास्टारि करते पारो ताहले तार मूल्य यतइ तुच्छ होक तार काटत एवं ख्याति हबे प्रचुर। किन्तु तोमार दोष हच्चे तुमि निजे भाबो सुतरां तुमि भावना दाबी करो—एतबड़ो दुराशा आमादेर देशे चलबे ना। अक्षय मजुमदार बलतेन "अभिनय करबार समय दर्शकदेर मने करतुम बाँदर, तातेइ अभिनय करा सहज हतो।" किन्तु अभिनयेर बेला येटा खाटे साहित्येर बेला सेटा खाटे ना। साहित्येर बेला मने राखतेइ हबे यादेर जन्ये लिख्चि तारा सकलेइ मानुष, तादेर सकलेरइ मन आछे। आमादेर पाठकदेर मध्ये सेइ मनेर याचाइटा खाँटि एवं कड़ा नय ब'लेइ कतइ ये बाजे लेखा लिखेचि तार ठिकानाइ नेइ। बाहिर थेके आदाय क'रे नेबार लोकटि ना-थाकले भितरेर दान करवार शक्तिते विकार घटे। किन्तु एसमस्त मेनेओ कोमर बेंधे चलते हबे एवं जानते हबे, दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति।

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर।

प्रमथ चौधुरीके लिखित

ॐ

पोस्टमार्क, शान्तिनिकेतन

कल्याणीयेषु

प्रमथ, आमार मनटा अत्यन्त क्लान्त हये आछे—सेइ जन्येइ कोनो रीतिमतो लेखाय हात दिते पारिनि। राममोहन राय लिखते बसेछिलुम किन्तु शेष करिनि। मने बले ये, "पृथिवीर उपकार करा तोमार काज नय। ए काजे विस्तर लोक लेगेछे, आर भिड़ बाड़ाले वसुन्धरार भार हरणेर जन्ये खुब मजबुत गोछेर अवतारेर दरकार हबे।" अत्यन्त गम्भीर कर्तव्यगुलो देखले आजकाल केवल ये क्लान्ति आसे ता नय, हासि पाय। मने हय ओर बारो आनाइ मुखोस-परा फाँकि। आमि एखाने ये मस्त एकटा काज फेंदे बसेचि तार महिमा आमाके आर दाबिये राखते पारचे ना। आमार पक्षे एगुलो हच्चे समय नष्ट करवार उपाय—कारण, आमार जीवनटार शीर्षदेशे विधातार शिलमोहर करा छुटिर मञ्जुरि हुकुम छिल। सेइजन्येइ बराबर इस्कुल पालियेछि अथच साजा पाइनि। एइ नष्ट करते बसेचि बलेइ आजकल भितरे-भितरे साजा पाच्चि। जरुरि चिठि, जरूरि प्रबन्ध, समस्त ठेले रेखे माझे-माझे प्रायइ गान लिखि। यखन लिखि तखन मने हय स्वराज व्यापारटा एमन किछु गुरुतर जिनिस नय—मानुषेर इतिहासे अनेक स्वराज बुद्‌बुदेर मतो उठेचे आर फेटे गेछे—किन्तु ये गानगुलोके देखते बुद्‌बुदेर मतो तारा आलोर बुद्‌बुद, नक्षत्रेर मतोइ। सृष्टिकर्तार खेलनागुलिर सङ्गे तादेर रङ्गेर मिल आछे। सेइजन्येइ यखन तारा गड़े उठते थाके तखन कर्तव्य भुले याइ। अथच देशेर कर्ताव्यक्तिदेर काछ थेके हुकुम आसचे ये, "समय खाराप अतएव बाँशि राखो, लाठि धरो।" यदि ता करि ताहले कर्तारा खुसि हबेन, किन्तु आमार एक बाँशिओयाला मिता आछेन कर्तादेर अनेक उपरे, तिनि आमाके एकेबारे बरखास्त करे देबेन। कर्तारा बलेन, "तिनि आबार के? एक तो आछे वन्देमातरम् ताँदेर गड़ करे आमाके आज बलते हच्चे—"आमार वन्देमातरम् भुलियेचेन ऐ तिनि। आमि देशछाड़ा घरछाड़ार दले। आमि भूगोलेर प्रतिमार पाण्डादेर यदि आज मानते वसि ताहले आमार जात जाबे।" किन्तु दुर्भाग्यक्रमे भूगोलेर, प्रतिमार पाण्डारा शुधु पाण्डा नय तारा गुण्डा—अतएव मार खेते हबे। ताइ सइ। मार सुरु हयेछे। "मरार बाड़ा गान नेइ" आमादेर भाषाय बले, से कथा मिथ्ये। मराटा गाल नय मरार भय कराटाइ गाल। मरार भये चाँद

सदागर शिवके छेड़े सापेर देवतार काछे हार मेनेछिल, सेइखाने तार गाल र'ये गेल। आमि किन्तु शिवके छाड़ब ना। आमार शिव सकल जगतेर—किन्तु सापेर देवतार जायगा हच्चे गर्तेर भितरे। सेइ गर्तेर मुखे दुधकला जोगाबार बायना याँरा नियेचेन ताँरा ये फलेर लोभ करेन आमि सेइ फलके बड़ो मने करिने। आमार मन म्यापेर, गर्तेर मध्ये आर कोनोदिन देवता खुंजबे ना। बुझते पेरेचि एइ निये घरे परे, आमाके त्याग करबे। आमि ठिक करेचि, यार या, मनेर साध मिटिये निक, आमि आर कथा कइब ना।

*　　*　　*

(श्री इन्दिरा देवीके लिखित)

६इ मे १९१३

कल्याणीयासु,

बिबि, तोर चिठिखानि पेये खुब खुसि हयेछि। समुद्र पेरिये अवधि आत्मीय-स्वजनदेर एरकम अनुपूर्विक खबर आर पाइनि। तार कारण, प्रधानभावे बोलपुर विद्यालयेर सङ्गेइ आमार चिठिर देनापाओना चले आसचे;—ताछाड़ा आपनार लोकेरा यारा माझे माझे लेखे तारा, आमार पक्षे कोन् खबरटा ये खबर, ता भेबेइ पाय ना। सेइजन्य आमि आछि एमन भावे, येन देशे समयेर घड़िते केउ दम देय नि अथच एखाने प्रत्येक सेकेण्डटा दोलादण्डेर काँधे चड़े टिक टिक शब्दे घर मातिये रखेछे।

गीताञ्जलिर इङरेजि तर्ज्जमा कथा लिखेछिस्। ओटा ये केमन क'रे लिखलुम एवं केमन करे लोकेर एत भालो लेगे गेल, से-कथा आमि आज पर्यन्त भेबेइ पेलुम ना। आमि ये इङरेजि लिखते पारिने ए कथाटा एमनि सादा ये ए सम्बन्धे लज्जा करबार मत अभिमानटुकुओ आमार कोनोदिन छिल ना। यदि आमाके केउ चा खाबार निमन्त्रण करे इरेजिते चिठि लिखित ताहले तार जवाब दिते आमार भरसा हत ना। तुइ भावछिस आजकेर बुझि आमार से माया केटे गेछे—एकेबारेइ ता नय—इङ्रेजिते लिखेछि एइटेइ आमार माया बले मने हय। गेलबारे यखन जाहाजे चड़बार दिने माथा घुरे पड़लुम, विदाय नेवार विषम ताड़ाय यात्रा वन्ध हये गेल, तखन शिलाइदहे विश्राम करते गेलुम। किन्तु मस्तिष्क षोलो आना सबल ना थाकले एकेबारे विश्राम करबार मतो जोर पाओया याय ना, ताइ अगत्या मनटा शान्त राखबार जन्ये एकटा अनावश्यक काज हाते नेओया गेल। तखन चैत्रमासे आमेर बोलेर गन्धे आकाशे आर कोयाओ फाँक छिल ना एवं पाखिर

डाका डाकिते दिनेरबेलाकार सकल क'टा प्रहर एकेबारे मातिये रेखेछिल। छोटो छले यखन ताजा थाके तखन मार कथा भुलेइ थाके, यखन काहिल हये पड़े तखनइ मायेर कोलटि जुड़े बसते चाय—आमार सेइ दशा हल। आमि आमार समस्त मन दिये आमार समस्त छुटि दिये चैत्रमासटिके येन जुड़े बसलुम—तार आलो तार हाओया तार गन्ध तार गान एकटुओ आमार काछे बाद पड़ल ना। किन्तु एमन अवस्थाय चुप करे थाका याय ना—हाड़े यखन हाओया लागे तखन बेजे उठते चाय, ओटा आमार चिरकाले अभ्यास, जानिस तो। अथच कोमर बेंधे किछु लेखबार मतो बल आमार छिल ना। सेइ जन्ये ऐ गीताञ्जलिर कवितागुलि निये एकटि एकटि करे इङरेजिते तर्जमा करते बसे गेलुम। यदि बलिस काहिल शरीरे एमनतर दुःसाहसेर कथा मने जन्माय केन—किन्तु आमि बहादुरि करबार दुराशय ए काजे लागि नि। आर एकदिन ये भावेर हाओयाय मनेर मध्ये रसेर उत्सव जेगे उठेछिल सेइटिके आर एकबार आर एक भाषार भितर दिये मनेर मध्ये उद्भावित क'रे नेबार जन्ये केमन एकटा तागिद एल। एकटि छोट्ट खाता भ'रे एल। एइटि पकेटे क'रे निये जहाजे चड़लुम। पकेटे क'रे नेबार माने हच्चे एइ ये, भावलुम समुद्रेर मध्ये मनटि यखन उसखुस करे उठबे तखन डेक चेयारे हेलान दिये आबार एकटि दुटि क'रे तर्जमा करते बसब। घटलओ ताइ। एक खाता छापिये आर एक खाताय पौंछन गेल। रोटेनस्टाइन आमार कवियशेर आभाश पूर्वेइ आर एकजन भारतवर्षीयेर काछ थेके पेयेछिलेन। तिनि यखन कथाप्रसङ्गे आमार कवितार नमुना पाबार इच्छा प्रकाश करलेन, आमि कुण्ठित मने ताँर हाते आमार खाताटि समर्पण करलुम। तिनि ये अभिमत प्रकाश करलेन सेटा आमि विश्वास करते पारलुम ना। तखन तिनि कवि येट्सेर काछे आमार खाता पाठिये दिलेन—तारपरे की हल से इतिहास तोदेर जाना आछे। आमार कैफियत् थेके एटुकु बुझते पारबि आमार कोनो अपराध छिल ना—अनेकटा घटना चक्रे हये पड़ेछे।

तार परे यखन आमेरिकाय गेलुम, भावलुम किछुदिन चुपचाप करे विश्राम करब। किन्तु चुप करे थाकबार जायगा आमेरिका नय। ओ देश मूकं करोति वाचालम्—विदेश थेके ये-केउ गेलेइ आमेरिका तार काछ थेके वक्तृता दावी क'रे वसे। आमि आर्व्बाना शहरे एकटु गुछिये बसबामात्रइ वक्तृतार जन्ये तागिद आसते लागल। आमि बललुम आमि इङरेजिभाषा जानिने, किन्तु सेटा इङरेजि भाषातेइ बलते हय ब'ले केउ बिश्वास करे ना, बले, तुमि तो बेश खासा इङरेजि बलचो। अनुरोध एड़ानोर विद्याटा आजओ आयत्त हयनि। बलते पारब ना, ए कथा बारबार बलार चेये वक्तृता करा आमार पक्षे सहज। एमनि क'रे आमेरिकाय आमार टुंटि चेपे धरे वक्तृता बेर करे निले। एसम्बन्धे सेखाने ख्यातिओ

लाभ करेछि—किन्तु तबु आज पर्यन्त आमार मने हय ओ गुलो दैवात् हये गेछे। इङ्रेजि भाषाय ये अनेकगुलो अत्यन्त नड़नड़े जिनिष आछे—येमन ओर article गुलो, ओर preposition गुलो, ओर shall एवं will ओगुलो तो सहजज्ञान थेके जोगन देओया याय ना, ओर शिक्षा थाका चाइ। एखन बुझते पारचि आमार मग्न चैतन्य, आमार subliminal conciousnes एर मध्ये ओगुलो माटिर तलार गर्तेर भितरकार कीट सम्प्रदायेर मतो बासा बेंधे रयेछे—यखन हाल छेड़े दिये चोख बुजे लिखते बसि तखन अन्धकारे ओरा सुड़मुड़ करे बेरिये एसे आपनादेर काज सेरे दिये याय, किन्तु जाग्रत् चैतन्येर आलो देखलेइ ओरा अत्यन्त एलोमेलो हये दौड़ दिते थाके—सुतरां ओदेर सम्बन्धे कोनोमतेइ शेष पर्यन्त मनेर मध्ये भरसा पाइने—सुतरां आज पर्यन्त ओ कथाटा सत्य रये गेल ये आमि इङ्रेजि भाषा जानिने। ठिक जानिने बलले एकटु अत्युक्ति करा हय, किन्तु नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च। आमि तोके सत्य कथाइ बलचि, ए कयटा इङ्रेजि प्रबन्ध लिखते पेरेछि ब'ले आमार मने एकटा दुश्चिन्ता जागचे एइ ये, एइ नजिरेर उपर बराबर आमि चलब की करे? कृतकार्य हबार मतो शिक्षा यादेर नेइ, यारा केवलमात्र नेहात् दैवक्रमेइ कृतकार्य हये ओठे, तादेर सेइ कृतकार्यता एकटा विषम बालाइ।

* * *

नदिदि आमाके ताँर फुलेर मालार तर्जमाटा पाठिये छिलेन। एखानकार साहित्येर बाजार यदि देखतेन ताहले बुझते पारतेन ए सब जिनिष एखाने केन कोनोमतेइ चलते पारे ना। एरा याके reality बले से-जिनिषटा थाका चाइ। एइ जिनिषेर सङ्गे आमादेर कारबार अत्यन्त कम—सेइजन्ये एटा आमरा चिनिओ ने एवं एर अभावटा की ता आमरा बुझिओ ने। आमार पक्षे मुष्किल एइ ये आमि ए-सम्बन्धे किछु बलते गेले लोके भुल बुझबे केनना आमार रचनागुलोके एरा ग्रहण करेछे। यदि जिज्ञासा करिस केन करेछे तबे तार उत्तर एइ ये, एइ कवितागुलि आमि लिखब ब'ले लिखिनि—ए आमार जीवनेर भितरेर जिनिष—ए आमार सत्यकार आत्मनिवेदन एर मध्ये आमार जीवनेर समस्त सुखदुःख समस्त साधना विगलित् हये आपनि आकार धारण करेछे। एइ जीवनेर जिनिष जीवनेर क्षेत्रे आदर पाय ए-कथा आमि बेश बुझते पेरेछि, किन्तु ए-कथा बोझानो शक्त। केनना निजेर फाँकि मानुष निजे देखते पाय ना;—केनना फाँकि जिनिषटाते परिश्रम बेशि, चेष्टा बेशि एवं तार प्रति मानुषेर ममताओ बोध हय

बेशि हये थाके। आमादेर देशेर कोनो एकजन लेखक ताँर कोनो बइ तर्जमा क'रे एखाने कारो काछे पाठिये छिलेन। एँरा ताँके बल्लेन एटाके सम्पूर्ण नूतन क'रे ना—लिखले चलबे ना। ताते तिनि जबाब दियेछिलेन, केन, रवीन्द्र ठाकुरेर भाषा यदि च'ले थाके ताहले आमार केन चलवेना। तिनि मस्त भूल एइ करेछिलेन ये तिनि मने करेछेन भाषार उपरेइ बुझि एर निर्भर। एकथा खुबइ सत्य इङ्रेजि भाषा निये अभिमान करते पारि एमन आयोजन आमार जीवने कराइ हयनि— किन्तु ये कारणेइ होक जगत्टाके आमि येमन क'रे उपलब्धि करेछि सेटा आमार आन्तरिक सत्य जिनिष सेइ सत्यटुकुके तार निजेर तागिदेइ आमि प्रकाश करबार चेष्टा करे एसेछि—एइजन्ये इस्कुलमास्टारके फाँकि दियेओ आमि निजेर जीवनटाके फाँकि दिइनि—इङ्रेजि व्याकरणेर काछे आमार यत अपराधइ थाक साहित्येर काछे अपमानित हवार मतो अपकर्म खुब बेशि करिनि। किन्तु आमि बेश देखते पाच्चि इङ्रेजिते आमादेर देशेर शिक्षित व्यक्तिदेर चेये अनेक काँचा थाका सत्वेओ इङ्रेजि साहित्ये आमि स्थानलाभ करते पेरेछि, ए-जन्य आमाके क्षमा करा एवं घटनाटिके सरल ओ उदार भावे ग्रहण करा अनेकेर पक्षे दुःखकर हये उठबे।

मे मास पड़ेछे, आज २२शे वैशाख किन्तु तबु एखाने आकाश झापसा, आलो घोला एवं सूर्यदेवेर सोनार भाण्डारेर द्वार एकेबारे एँटे बन्ध। माझे-माझे मन्द-मन्द वृष्टिओ हच्चे, भिजे सँयात्सेंते हाओयाय आजओ घरे आगुन ज्वालाते हच्छे। भालो लागचे ना—केनना आमि आलोर काङाल; आमार सेइ बोलपुरेर माठेर उपरे एकेवारे आकाश उपुड़ क'रे ढाला आलोर जन्ये हृदय पिपासित हये आछे। किन्तु यखन भेबे देखि देशे फिरे गिये चारिदिक थेके कत छोटो कथाई शुनते हबे, कत विरोध विद्वेष, कत निन्दाग्लानि, तखन मने मने भावि आरो किछु दिन थाक, यत दिन पारि एइ समस्त काकली थेके दूरे थाकि। किन्तु अप्रियताके पाश काटिये चला चले ना, ताके ठेले चलाइ हच्चे प्रकृष्ट पन्था —नदीर धार दिये दिये गिये नदी पार हओया पाय ना, एकेबारे झाँप दिये पड़े दुहात दिये ढेउ काटिये तबेइ पारेर डाङाय ओठा सम्भव—या भालो लागे ना ताके एड़िये—एड़िये डरिये चलब ना, ताके समस्त बुक दिये ठेला दियेइ चले याब—एइ प्रतिज्ञाटाकेइ आँकड़े धरे राखा भालो। अतएव वक्तृतागुलो हये याक एवं बइ छापाबार व्यवस्थाटा समाधा होक, तार परेइ पूर्वमुखे पाड़ि देओया यावे।

ज्योत्सनार सङ्गे आजओ देखा हयनि, से लण्डनेर बाइरे कोथाय थाके। आज मेब्ल् तादेर बासाय चा खेते निमन्त्रण करेछिल। आमेरिका थेके फिरे आसार पर एतदिन केउ खबर पाय नि ताइ चुपचापभावे चलछिल, क्रमे भिड़ हवार

लक्षण देखा दिच्चे। एइ टानाटानिटा किछुतेइ सह्य करते पारिने—निमन्त्रण चिठि पावामात्रइ आगेभागे आमि क्लान्त हते आरम्भेर करि—अनेक समय वरञ्च सेखाने गिये क्लान्ति दूर हय। रात हये एल। वर्षारम्भेर आशीर्वाद जानिये एइखाने चिठि शेष करि।

शुभानुध्यायी—
श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

(इन्दिरा देवीके लिखित)

पोस्टमार्क
शान्तिनिकेतन
२० अक्टोबर, १९२१

कल्याणीयासु

तोरा आमार विजयार आशीर्व्वाद निस।

एबार देशे फिरे एसे अवधि आमार शान्ति नेइ, विश्राम नेइ। आजकाल ताइ केवलि इच्छे करे चारिदिकेर बेड़ा समस्त भेङे दुरे फेले सेइ आमार अल्प-वयसेर साहित्येर खेलाघरे पालिये याइ—यखन जीवने कोनो दायित्व साध क'रे ग्रहण करिनि—यखन भावतुम गल्प लेखा काव्य लेखाइ यथेष्ट, आर समस्तइ अकिञ्चित्कर। तखन काँचा छिलुम ब'लेइ ये भुल बुझेछिलुम, आर एखन वुद्धि पेकेचे ब'लेइ ये ठिक बुझेचि ता नय। आसले जगद्व्यापारटा खेलारइ मतो हाल्का, गानरइ मतो पाखाओयाला,—आमरा ओर' परे आमादेर घरगड़ा चिन्तार बोझा चापिये ओके आमादेर पक्षे विषम भारि करे तुलेचि। विष्णुर येमन गरुड़ एइ जगत्टा तेमनिइ आमादेर वाहन छिल, ओ आमादेर स्वर्ग मर्त्ये अवारित विचरण करिये निये बेड़ाते पारत, किन्तु आमरा अत्यन्त बुद्धिमान हये उठे ओके दिये आमादेर मालगाड़ि टानाबार व्यवस्था करेछि ताते करे मालगाड़ि चलचे सन्देह नेइ, आर लोके भावचे खुब उन्नति हच्चे किन्तु आकाश पाताले आमादेर विचरणेर अधिकार नष्ट हये गेल। किन्तु माल ये आछेइ, सेगुलोके टानातेओ ये हबेइ, अतएव केवल मुक्ति निये तो घर, चलबे ना, दायित्वओ ये मानते हबे। ता जानि, ताइ यारा कलकब्जार तत्त्व बोझे, यारा मालगाड़ि डिपार्टमेण्टेर भारप्राप्त, तादेर आमि भालोइ बलि। अथच ए-कथाओ तो भुलले चलबे ना ये, माल मानुषेर किन्तु मानुष निजे माल नय। सेइ निजेर जगत्टाके केवलि मालेर जगत् करे तुलले निजेके मानुष चिनबे केमन करे ? आजकाल ताइ केवलि भावचि, माल बोझाइ करबार दाय आमि ना निलेओ लोकसान विशेष हत ना, किन्तु दाय खोलसा करबार ये-अधिकार आमार छिल

सेटाके नष्ट करे आमि निजेर भालो करिनि परेरओ ये विशेष उपकार करेचि ता बलते पारिने। अर्थात् तादेर उपकार करार चेयेओ आरो हयतो किछु करबार आछे, सेटा हयतो बा आमार द्वारा ह'ते पारतो। नाइबा ह'ते पारत, तातेइ बा की। मनष्यलोके दुइ जातेर प्राणी आछे,—केजो आर अकेजो। एरा निजेर निजेर धर्मरक्षा करे चलबे एदेर प्रति विधातार एइ अनुशासन छिल। कारण, स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मोभयावहः। किन्तु संसारे काजेर दाबी एत बेशि ये बेकार लोके आपन बेकारधर्म पालन करबार सुयोग पाय ना। केजो लोकेरा समस्त पृथिवीते आपन कर्मक्षेत्र विस्तार करे भारि खुशि हय—तारा जाने ना अकाजेर स्थान ओ अवकाश मारा गिये तादेर काज बिगड़े याच्चे। किन्तु आज आमार एइ सुबुद्धि केवल परिताप जन्मातेइ पारे, आमाके उद्धार करते पारे ना। आमि आमार फेरबार पथेर माझखाने दायित्वेर देयाल तुलेचि, अतएव माल बोझाइ करबार आपिश थेके ए-जन्मे आमार आर निष्कृति नेइ। आबार, आमार कपाल एमनि ये, ए आपिशे, आमार यत माइने मेले जरिमाना तार डबलेरओ बेशि। जरिमाना शुधु बाइरे नय अन्तरेओ—येमाटिते मजुरि करि सेखाने काँटा, आर ये-आकाशे आमार छुटि सेओ गेछे मारा। ताइ एखन आमार एक भरसा परजन्मेर उपर। किन्तु से-जन्मे यदि खबरेर कागजेर सम्पादक हये जन्माइ ?

रविकाका

शान्तिनिकेतन

कल्याणीयासु,

आमार जन्मदिन उपलक्ष्ये तुइ ये चिठिखानि लिखेछिस सेटि पेये आमि खुब खुशि हयेछि। एबारे शिलाइदहे गिये देखलुम पद्मा अनेक दूरे च'ले गेछे—तेमनि देखते पाइ तोदेर जीवनेर क्षेत्र थेके आमार जन्मदिनेर धारा दुरे सरे एसेचे। माझे-माझे से-कथा मने पड़े। आमादेर परिवारेर सङ्गे आमार सम्पर्क एखन छायामय हये एसेचे—तार एकटा कारण, छेलेबेलाय यादेर सङ्गे आमार जीवनेर पारिवारिक ग्रन्थि बाँधा हयेछिल तारा प्राय सबाइ कोथाय अपसारित—परलोके एवं इहलोके एखन जोड़ासाँकोर बाड़िटा नदीर सेइ बालुमय पथेर मतो याते नदीर स्रोत आर चले ना। ता छाड़ा तोर सङ्गे आमार एकटा प्रकृतिगत प्रभेद आछे, मोटेर उपर आमार पारिवारिक आसक्ति तेमन प्रबल नय, कोनो मानुष आमार परिवार नामक एकटा श्रेणीर मध्ये प'ड़े गेछे ब'लेइ से ये अन्य मानुषेर चेये आमार काछे मनोरम ता नय—अवश्य, परिवारेर मध्ये एमन अनेक लोक आछे यादेर आमि विशेष भालो-

वासि—किन्तु से तारा परिवारेर लोक ब'ले नय। निजेर छेले मेयेदेर उपर एकटा स्वभाविक स्नेह सकलेरइ आछे किन्तु से जिनिसटाके पारिवारिक बला चले ना। सेटा यथार्थ आत्मीयता, पारिवारिकता नय। देवतार सङ्गे अन्तरेर बन्धन, आर ताँर सङ्गे सम्प्रदायेर बन्धने ये-तफात्, एइ दुइये सेइ तफात्। अनेकेरइ काछे निजेर छेलेर एकटा मूल्य आछे से छेले ब'लेइ; किन्तु तार उपरेओ सेइ छेलेर एकटा पारिवारिक मूल्यके से बड़ो करे देखे। से कल्पना करे तार छेले परिवार नामक एकटा पदार्थेर विशेष एकजन वाहन। रथीर सम्बन्धे आमार से-भाव किछुमात्रइ नेइ। विश्वभारतीर जन्ये आमार या किछु सम्बल समस्तइ आमि खरच करचि, एमन कि तार चेये बेशिइ करचि। यखन देखि रथी ताते आपत्ति करे ना, वरञ्च उत्साहपूर्वक योग देय—ताते आमार भारि आनन्द हय। से आनन्द किसेर? मुक्तिर। किसेर थेके मुक्तिर? परिवार नामक एकटा abstraction एर बन्धन थेके। आमार यदि पारिवारिक बोध प्रबल थाकतो ताहले सेइ परिवार पदार्थेर प्रतिमाटिके तैरि करा, साजनो एवं तारइ पूजा करवार जन्येइ आमार उपार्जन ओ सञ्चयेर अधिकांशेर उपरे टान पड़त। आमार आनन्द एइ ये, रथी एकदिके आमार छेले आर एकदिके से परिवार नामक मायागण्डिर बाहिरेर वास्तव मानुष—आमार आश्रमे ये-देश थेके ये-जातेर ये-कोनो छेले आसे रथी तारइ रथी-दा,—ओर तरफ थेके सकलेर प्रति ओर सेइ रथीदा'र दायित्व आछे। तादेर जन्ये ओ सर्वदाइ खाटचे, भावचे, प्ल्यान् करचे, खरच करचे, ताते ओर सुख छाड़ा किछुमात्र विरक्ति नेइ। कखनो ओ मनेओ भावे ना, ये प्रभूत टाका ए पर्यन्त अर्जन करेचि ताइ दिये केन आमि, विशेष भाबे ना होक, प्रधानभावे ओदेरइ संस्थान करे ना दिच्चि। सम्पत्ति जिनिसटाइ तो हच्चे परिवारपदार्थेर वृन्त, तारइ स्रोतके घरेर दिक थेके बाइरेर दिके चालिये दिले पारिवारिक मानुषेर पक्षे सेटा कठोर हये ओठो। आमार घरे सेइ कठोरता स्वीकार करे निते कारो तेमन बाधल ना, तार कारण आमार घरे पारिवारिक हाओया वय ना। याइ होक पारिवारिक सत्ता आमार मध्ये प्रबल नय, बटे, किन्तु ताइ ब'ले आमार मन ये केवलमात्र मानवसाधारणेर आमदरबारेइ दिन काटाते भालोबासे ता नय—विराट मानवेर मध्येइ आमार आत्मा कैवल्य लाभ करेचे ता बलते पारिने— आमार मध्ये खुबइ एकटा प्रबल व्यक्तिगत सत्ता आछे। विशेष मानुष एवं विश्वमानुष दुटोइ आमार काछे सबचेये सत्य—पारिवारिक मानुष एइ दुइयेर माझखानेर प्रदोषान्धकारेर एकटा जिनिष—आमार काछे ओ सुस्पष्ट नय—एइजन्ये ओर उद्देशे आमार त्यागेर उत्साह जागे ना। एकदिन सेक्रेटारिर पद पेये आदि ब्राह्मसमाजके आमि विश्वेर सङ्गे योगयुक्त क'रे दिते चेष्टा करेछिलुम, येइ देखलुम सेटा सम्भवपर नय,

येहेतुक ओटा आमादेर पारिवारिक जिनिष, तखनइ ओर जन्ये एक मुहूर्त बा एक पयसाओ खरच करा आमार पक्षे अपव्यय ब'ले बोध हल। किन्तु आमार आश्रमे ऐ जिनिषटाइ—अर्थात् देवदार अर्चनाविश्वमानुषेर नय, पारिवारिक मानुषेर नय, किन्तु व्यक्तिगत मानुषेर जिनिष हयेचे बलेइ आमार हृदय आकर्षण करे नियेचे। आमि छेलेदेर भालोबासि, सेइ भालोबासार सङ्गे आमार पूजा मिश्रित हये आमार काछे विशेष रसेर सामग्री हयेचे, ताइ एके समय दिते सामर्थ्य दिते आमार किछुमात्र बाधे ना। याइ होक आमार मध्ये एइ व्यक्तिगत सत्ता अत्यन्त सजीव आछे बलेइ माझे-माझे काजेर फाँके-फाँके तार दावी जेगे ओठे। से बले, आमि उपवासी थेके काज करते आर पारिने, से बसे, एकला पथे शेष पर्यन्त च'ले ओठा बड़ो कठिन। एइजन्येइ एइ बाहिरेर संसारे यतदुरेइ च'ले आसि ना केन, से यत बृहत् अनुष्ठान होक्, तार यत्, महत् गौरव थाक, तबु तोदेर संसार थेके यखन कोनो साड़ा पाइ, तखन देखि आमार जन्म दिनेर सेइ तारटिते मरचे पड़ेनि, एखनो ताते सुर बेजे ओठे—

* * *

इति २७ वैशाख १३२९
रविकाका

Srabasti
Colombo

ॐ

कल्याणीयासु

तोर विजयार प्रणाम समुद्र पार हये आज एखाने एसे पौंछल। रथीरा एसे पौंछबे काल सन्ध्यावेलाय। आमि भिक्षापात्र हाते निये देशे-देशे घुरे बेड़ाच्चि—हाते निये बलले ठिक हय ना, कण्ठे निये। ए विद्या आमार अभ्यस्त नय, तृप्तिकरओ नय। सुतरां दिनगुलो ये सुखे काटचे ता नय। जीवनेर पूर्वाह्न सोनार स्वपन निये अतीत हयेचे, जीवनेर सायाह्न सोनार सन्धान निये तीत[1] हये उठल।

---

१ बांला 'तेतो' (तित, तिक्त) शब्दटि निये रवीन्द्रनाथ एखाने खेला करेछेन; 'अ-तीत' शब्देर अर्थ बेरिये एसेछे : (१) विगत (२) या तिक्त नय, मधुरा—अन्यदिनेरटीका।

यखन मन श्रान्त हये पड़े तखन विश्वभारतीके मरीचिका बले मने हय—तखन बुझते पारि यखन कवित्व रचना करेचि सेइ छिल आमार वास्तव काज, आर आज यखन शुभानुष्ठानेर पाका भित्तिपत्तन करते बसेचि एइ हच्चे माया। एकि टिकबे? आइडिया जिनिषटा सजीव, किन्तु कोनो इनस्टिटयुशनेर लोहार सिन्धुके त ताके बाँचिये राखा याय ना—मानुषेर चित्तक्षेत्रे यदि से स्थान पाय तबेइ से वर्ते गेल। देशेर चित्तेर दिके यखन ताकिये देखि तखन देखते पाइ विपुल काँटावन—सेखाने खोंचार आइडियार मध्ये फसलेर आइडिया कि जायगा पाबे? याइ होक आमादेर शास्त्र बलेचेन बपन करते, फलेर हिसेब करते निषेध करेचेन। अतएव एमनि क'रेइ दिन काटबे, तार परे दिन शेष हये गेले आमार दाय याबे चुके।

गृहस्वामीर चायेर टेबिले डाक पड़ेचे, चललुम। इति ३० आश्विन १३२९

रविकाका

New Heaven

कल्याणीयासु

पृथिवीते अल्पसंख्यक दुर्भागा आछे यादेर गतिविधि खबरेर कागजे कालिर छाप दिते दिते चले, तादेर निरालाय असुस्थ हवारओ जो नेइ। अतएव तोदेर काछे छापा नेइ ये आमार शरीर खाराप। काछे थाकले बुझते पारतिस खाराप हलेओ एमनीइ कि खाराप। अर्थात् किछुदिनेर मतो चुपचाप क'रे पड़े थाकबार मतो खाराप, तार बेशि नय। ध'रेनेओया याक सप्तमी तिथिर परिमाणे खाराप, अमावस्या परिमाणे नैव नैवच, एमन कि एकादशीर काछ दियेओ याय ना। अतएव निःसंशये जानिस हाओड़ा ब्रिज आरो एकबार आमाके पार ह'ते हबे। हिसाब करे यदि देखिस तो देखते पाबि वयस होलो प्राय सत्तर, अर्थात् वैतरणीर धार घेंषे चलेचि। किन्तु बोध हच्चे भोग येन किछु बाकि आछे ताइ यदिच घाटे आसन पेतेछि तबु खेयाय एखनो जायगा होलोना। एकटा अत्यन्त निश्चित्य सत्य आछे येटा मानुष तार समस्त जीवने केवल एकबारमात्र प्रमाण करते पारे—से हच्चे मानुष अमर नय। किन्तु नाइ वा होलो—किछुदिन बेंचेछि, अत्यन्त निविड़ क'रे जेनेचि आमि हच्चि आमि—अन्तहीन आमि नय एर माझखाने एइ एकटिमात्र आमि—असीम जगते एइ परमाश्चर्य सत्य असीम कालेर अति क्षुद्रमात्राय आमार मध्ये दीप्त हये उठेछे एर चेये आर की चाइ। मृत्ये कि एर चेयेओ बड़ो ये भावना करते हबे। साधकेरा बलेचेन दुःख थेके मुक्ति पाबार जन्ये हओयाटाकेइ समूले उपड़े फेलते हबे—किन्तु आमि बलि हओयाटाइ यदि मिटल तबे दुःखटा गेल किना

गेल ताते की आसे याय। रुगी बल्चे, कबरेजमशाय, ज्वर छाड़ाओ—कविराज तस्य निये बललेन देहत्याग कलरले ज्वरेर उत्पात एकेबारे घुचबे। रुगीर वक्तव्य एइ ये देहटार जन्येइ ज्वरेर अवसान कामना करा, देहटारइ अवसान यदि एकमात्र उपाय हय ताहले ज्वरटा ना-हय रइल। आमि आछि एइटे होल शेष कथा, एटाकेओ शेष करले बाकि रइल की? मृत्युते ओटा शेष हय कि ना हल जानिने, किन्तु बेंचे थाकते थाकतेइ ये-सब सन्यासी ओटाके केवलि रगड़े मुछे फेलवार चेष्टाय लेगे थाके, तादेर सङ्गे कोनोदिन आमार बनिबनाओ होलो ना। जीवने कठिन दुःख पेयेछि एवं निविड़ सुख। किन्तु सेइ दुःखे आमार हओयाटाकेइ तीव्र क'रे प्रमाण करेचे, अतएव ताके निन्दे करब ना। बिछानाय प'ड़े प'ड़े एइ सब कथा भेबेचि।

आरो एकटा कथा भेबेचि। देशेर काज करव ब'ले एकदिन कोमर बेंधे लेगेछिलेम। देहेर दिके ताकाइनि, तहविलेर दिके ताकाइनि, आरामेर दिके ना, अवकाशेर दिके ना—निजेर घरकन्नाके एकरकम छन्नछन्न करेछि से तोरा जानिस्। याके बले घरेर खेये वनेर मोष ताड़ानो। स्वदेशे अति सब अयोग्य लोकेर द्वारे द्वारे फिरेचि माथा हेंट क'रे। यदि किछु पेये थाकि ताते जात गियेछे पेट भरेनि। विधातार कृपाय खुब मजबुत शरीर नियेइ जन्मेछिलेम, ताइ "आमार जन्म भूमि" आमाके यत मार मेरेछे तातेओ टिँके आछि। विशेषत वन्धुदेर हातेर गोपन ओ प्रकाश्य मार। एमन वन्धुओ बाकि आछे यारा मारेओ ना किछु करेओ ना, शुधु कथा कय; यारा सहायताच्छले आमार काजे हात देय किन्तु से हात शून्य। एओ याक, एकटा दुःख मलेओ घुचबे ना, से हच्चे, एइ बांलादेशे आमाके अपमानित करा यत निरापद एमन आर काउकेइ ना—महात्माजि चित्तरञ्जनके छेड़ेइ देओया याक—बङ्किम, शरत्, हेम बाँडुय्ये, नवीन सेन काउके आमार मतो गाल दिते केउ साहसइ करे ना। यादेर व्यवसा गाल देओया तारा जाने, आमाके गाल दिले तादेर व्यवसार क्षति हय ना, वरञ्च ताते लाभ आछे। अथच विदेशे एसे यखन सम्मान पाइ तखन ओरा बलते छाड़े ना ये, उनि केवल विदेशेर लोकेर काछेइ सम्मान कुड़ोते यान। कुड़ोते हय ना, अजस्र वर्षण ह'ते थाके। तार प्रधान कारण, देशेर लोकेर मतो एरा आमाके एत अत्यन्त वेशि जाने ना। ताइ होक, यथालाभ। एकथा सत्य समुद्रेर एपारे ओपारे घुरते घुरते आमार देहग्रन्थि शिथिल हये एल—एखानकार सब डाक्तारइ वले वातिर दुइ प्रान्ते आलो ज्वालिये आमि हूहू करे आयुक्षय करचि—उपाय नेइ। घरेर अन्न थेके यदि वञ्चित ह'तेइ हय तबे वनेर फल खुँजे बेड़ाते हबे—सेटा आरामेर नय बटे, किन्तु फल दुर्लभ नय। अवशेषे आमार शेष वक्तव्य एइ ये आमार

मृत्युर परे देशेर लोक आमार स्मृति निये येन शोकसभासृष्टिर विडम्बना ना करे। बेंचे थाकते थाकते आमि यार काछ थेके या–किछु पेयेचि तार जन्येइ आमि कृतज्ञ। एकेबारे किछु पाइने ए कथा बला अन्याय। किन्तु यारा देबार मतो जिनिष दियेचे तारा लोक डेके शोकसभा करबे ना––यारा किछुइ करेनि, तारा सभा करबे, यारा गाल दियेचे तारा हाततालि देबे––एटा कोनोमते याते ना हय एइ आमार एकान्त कामना! आमार श्राद्ध येन छातिमगाछेर तलाय बिना आडम्बरे बिना जनताय हय––शान्तिनिकेतनेर शालवनेर मध्ये आमार सारणेर सभा मर्मरित हबे मञ्जरित हबे, येखाने––येखाने आमार भालोबासा आछे सेइ सेइखानेइ आमार नाम थाकबे। इति–– २५ अक्टोबर १९३०

रविकाका––

ॐ

(श्री प्रतिमा देवीके लिखित)

कल्याणीयासु

बौमा, वृष्टि, वृष्टि, वृष्टि! दिनेर पर दिन। सबाइ बलचे एमन काण्ड हय ना कखनो। आमि मने-मने भावचि एटा आमारइ कीर्त्ति। आमि वर्षार कवि। श्रावण मासे वर्षामङ्गल आमार पिछने-पिछने समुद्रपार हये एसे हाजिर। किन्तु सत्यि कथा बलतेइ हबे, "हृदय आमार नाचेरे आजिके" ए कविताटि ठिक खाटचे ना। हृदय नाचछे ना––दमे आछे। आरो दमेचे येहेतु एण्ड्रुज एसे उत्पात आरम्भ करेचे। तार मते चलते हबे। आमि प्रमाण करते चाच्चि ये आमि नाबालक नइ। याक गे––आगामी मङ्गलवार याब जेनिभाय येखाने आर एक पाला। शुनचि आयोजन करेचे खुब बड़ो रकमेर। आदर अभ्यर्थनार अभाव हबे ना। किन्तु सेखाने नानाविध श्रेणीर मानुष आछे––तार मध्ये आछे आमार स्वदेशेर लोक।

एखनकार न्याशनाल ग्यालारिते आमार पाँचखाना छवि नियेचे शुनेच। तार माने पौंचेचे छविर अमरातीते। ओरा दामेर जन्ये भावछिल ––टाका नेइ कि करबे। आमि लिखे दियेछि ये आमि जार्मानिके दान करलुम, दान चाइने। भारि खुसि हयेचे। आरो अनेक जायगा थेके एकजिबिशनेर जन्ये आवेदन आसचे। एकटा एसेचे स्पेन थेके––तारा चाय नवेम्बरे। भियेना चाय, इत्यादि इत्यादि। आमि ये पोटो सेइ नामटाइ छड़िये पड़चे कवि नामके छापिये। थेके थेके मने

आसचे तोमार सेइ स्टुडियोर कथाटा। मयूराक्षी नदीर धारे, शालवनेर छायाय खोला जानलार काछे। बाइरे एकटा तालगाछ--खाड़ा दाँड़िये, तारइ पातागुलोर कम्पमान छाया सङ्गे निये रोद्‌दुर एसे पड़ेचे आमार देयालेर उपर,--जामेर डाले ब'से घुघु डाकचे समस्त दुपुर बेला; नदीर धार दिये एकटा छाया बीथि च'ले गेछे--कुड़चि फुले छेये गेछे गाछ, बाताबि नेबुर फुलेर गन्धे बातास घन हये उठेचे, जारुँल पलाश मादारे चलेचे प्रतियोगिता, सजने फुलेर झुरि दुलचे हाओयाय; अशथ गाछेर पातागुलो झिल्‌मिल् झिल्‌मिल् करचे--आमार जानलार काछ पर्यन्त उठेचे चामेलि लता। नदीते नेबेचे एकटि छोट घाट, लाल पाथरे बाँधानो तारि एक पाशे एकटि चाँपार गाछ। एकटिर बेशि घर नेइ। शोबार खाट देयालेर गह्वरेर मध्ये ठेले देओया याय। घरे एकटिमात्र आछे आराम केदारा--मेझेते घन लाल रक्तेर जाजिम पाता, देयाल बसन्ती रङेर, ताते घोर कालो रेखार पाड़ आँका। घरेर पूबदिके एकटुखानि बारान्दा, सूर्योदयेर आगेइ सेइखाने चुप करे गिये बसब, आर खाबार समय हले लीलमनि सेइखाने एने देये। एकजन केउ थाक्‌बे यार गला खुब मिष्टि, ये आपन मने गान गाइते भालो बासे। पाशेर कुटीरे तार बासा--यखन खुसि से गान करबे, आमार घरेर थेके शुन्ते पाब। तार स्वामी भालोमानुष एवं बुद्धिमान्, आमार चिठिपत्र लिखे देय, अबकाश काले साहित्य आलोचना करे, एवं ठाट्टा करले ठाट्टा बुझते पारे एवं यथोचित हासे। नदीर उपरे दुटि साँको थाकबे--नाम दिते पारव जोड़ासाँको--सेइ साँकोर दुइ प्रान्त बेये, जुंइ बेल रजनीगन्धा रक्तकरवी! नदीर माझे माझे गभीर जल, सेइखाने भास्चे राजहाँस आर ढालु नदीतटे चरे बेड़ाच्छे आमार पाटल रक्तेर गाइ गोरु, तार बाछुर निये। शाकसबजिर क्षेत आछे, बिघे दुइयेके जमिते धानओ किछु हय। खाओया दाओया निरामिष, घरे तोला माखन दइ छाना क्षीर, कुकारे या बाँधा येते पारे ताइ यथेष्ट रान्नाघर नेइ। थाक् एइ पर्य्यन्त। बाइरेर दिके चेये मने पड़चे आछि बार्लिने--बड़ो लोक सेजे --बड़ो कथा बलते हबे--बड़ो ख्यातिर बोझा चल्‌ते हबे दिनेर पर दिन--जगत् जोड़ा सब समस्या रयेचे तर्ज्जनी तुले, तार जबाब चाइ, ओदिके भारतसागरेर तीरे अपेक्षा करे आछे विश्वभारती तार अनेक दाबी, अनेक दाय--भिक्षा करते हबे देशे देशान्तरे। अतएव थाक् आमार स्टुडियो। कत दिनइ वा बाँचब--इतिमध्ये कर्त्तव्य करते करते घोरा याक्--रेले चड़े, मोटरे चड़े, जाहाजे चड़े, व्योमयाने चड़े--सभ्य भव्य हये। अतएव आर समय नेइ।

इति १८ अगस्त १९३०

बाबामशाय।

(श्री मीरा देवीके लिखित)

शान्तिनिकेतन

मीरु

अन्धकारे आमरा हात्ड़े बेड़ाइ यादेर भालोबासि तादेर ना—जेने क्षति करि, ना—बुझे कष्ट पाइ। किन्तु सेइटेइ तो शेष कथा नय, सेइ समस्त भुल चुक दुःखकष्टेर मध्ये बड़ो कथाटा एइ ये, आमरा भालोबेसेछि। बाइरे थेके बन्धन छिन्न हये याय, किन्तु भितरदिकेर ये सम्बन्ध तार थेके यदि वञ्चित हतुम ता हले से अभाव गभीर शून्यता। एसेछि संसारे, मिलेचि, तारपरे आबार कालेर टाने सरे येते हयेचे, एमन कत बारबार होलो, बार बार होलो, बार बार हबे—एर सुख एर कष्ट नियेइ जीवनटा सम्पूर्ण हये उठचे। यतबार यत फाँक होक आमार संसारे, बृहत् संसारटा रयेछे, से चलचे, अविचलित मने तार यात्रार सङ्गे आमार यात्रा मेलाते हबे। लज्जा हय यदि आमार शोक निये एकटुओ स'रे पड़ि सकलेर संसार थेके, लेशमात्र भार चापाइ निजेर अचल वेदना दिये विश्व संसारेर सचल चाकार उपरे। कत असह्य दुःख वेदना घरे आछे, काल प्रतिदिन ता—एकटु-एकटु करे मुछे मुछे दिच्छे। आमार जीवनेर उपरेओ सेइ विश्वव्यापी कालेर हात काज करचे। आर सेइ जगत् जोड़ा आरोग्येर काजके येन एकटुओ कठिन ना करि शोकदुःखेर चलाचल सहज हये याक, प्रात्यहिक दिनयात्राके बाधा ना दिक।—नीतुके खुब भालोबासतुम ता छाड़ा तोर कथा भेबे प्रकाडण दुःख चेपे बसेछिल बुकेर मध्ये। किन्तु सर्वलोकेर सामने निजेर गभीरतम दुःखके क्षुद्र करते लज्जा करे। क्षुद्र हय यखन सेइ शोक सहज जीवनयात्राके विपर्यस्त क'रे सकलेर दृष्टि आकर्षण करे। आमि काउके बलिने आमाके रास्ता छेड़े दाओ, सकले येमन चलचे चलुक, एवं सबार सङ्गे आमिओ चलब। अनेके बलले एबारे वर्षामङ्गल बन्ध थाक,—आमार शोकेर खातिरे—आमि बललुम से हतेइ पारे ना। आमार शोकेर दाय आमिइ नेब—बाइरेर लोके की बुझबे तार ठिक मानेटा। अन्तत तादेर एइटुकु बोझा उचित, बाइरे थेके कोनो रकम सान्त्वनार चिह्न, कोनोरकम आनुष्ठानिक शोक एकटुओ दरकार नेइ ताते आमार अमर्यादा हय। भय हयेछिल पाछे सबाइ आमाके सान्त्वना दिते आसे, ताइ किछुदिनेर जन्ये वारण करेछिलुम सबाइके आमार काछे आसते। किन्तु आमार सकल काजमर्मइ आमि सहजभावे क'रे गेछि। लोक देखिये कोनो किछुइ बाद दिते चाइनि। व्यक्तिगत जीवनटाकेइ अन्य सब किछुर उपरे प्रत्यक्ष क'रे तोलाइ सब चेये आत्मावमानना। अनेकदिन धरे एकान्तमने कामना करेछिलुम ये एइ विश्वब्रह्माण्डे यदि आमार विशेष बन्धु केउ थाकेन तिनि आमाके दया करुन। किछु जानिने, हयतो दयाइ करेछेन।

हयतो आरो बेशि दुःखेर हात थेके रक्षाइ पेयेछि। एमन तरो प्रार्थना कराइ दुर्बलता। आमार जन्ये विश्वनियमेर विशेष व्यतिक्रम हबे एमनतरो आशा करि यखन मन अत्यन्त मूढ़ हये पड़े। कष्ट यखन सकलकेइ पेते हय तखन आमिइ ये प्रश्रय पाब एत बड़ो दाबी करबार मध्ये लज्जा आछे। ये रात्रे शमी गियेछिल से रात्रे समस्त मन दिये बलेछिलुम विराट विश्वसत्तार मध्ये तार अबाध गति होक, आमार शोक ताके एकटुओ येन पिछने ना टाने। तेमनि नीतुर च'ले याओयार कथा यखन शुनलुम तखन अनेकदिन धरे बारबार क'रे बलेचि, आर तो अमार कोनो कर्तव्य नेइ, केवल कामना करते पारि एर परे ये––विराटेर मध्ये तार गति सेखाने तार कल्याण होक। सेखाने आमादेर सेवा पौंछाय ना। किन्तु भालोबासा हयतो बा पौंछय––नइले भालोबासा एखनो टिके थाके केन? शमी ये––रात्रे गेल तार परेर रात्रे रेले आसते-आसते देखलुम ज्योत्सनाय आकाश भेसे याच्चे, कोथाओ किछु कम पड़ेचे तार लक्षण नेइ। मन बलले कम पड़ेनि––समस्तर मध्ये सबइ रये गेछे, आमिओ तारइ मध्ये। समस्तर जन्ये आमार काजओ बाकि रइल। यतदिन आछि सेइ काजेर धारा चलते थाकबे। साहस येन थाके, अवसाद येन ना आसे, कोनोखाने कोनो सूत्र येन छिन्न हये ना याय––या घटेचे ताके येन सहजे स्वीकार करि, या-किछु रये गेल ताकेओ येन सम्पूर्ण सहज मने स्वीकार करते त्रुटि ना घटे। एडेने ए-चिठि पाठाले तुइ पावि किना जानिने, ताइ बम्बाइयेतेइ पाठाब मने करचि। इति २८ अगस्त १९३२

बाबा––

'Uttarayan'
Santiniketan, Bengal

(श्री नन्दिनी देवीके लिखित)

मे, १९४१।

पुपुदिदि

आङुल ये चले ना की करि बलो।'

तुमि आछ पाहाड़े ठाण्डाय आर आमादेर पोड़ो कपाल केवलि तेते––उठचे––ताकिये थाकि आकाशेर दिके मेघ आसे जल आसे ना। यदि आसे जल से आसे चापीदेर चोखेर कोणे।

भावतेओ कष्ट लिखतेओ कष्ट अतएव एइ पर्यन्त।

आशीर्वाद
दादामशाय––

तृतीय खण्ड

भ्रमण

1. युरोप-यात्रीर डायारी
2. जापान यात्री
3. पश्चिमयात्रीर डायारी
4. जाभायात्रीर डायारी
5. पारस्ये

युरोप-यात्रीर डायारी

१९ सेप्टेम्बर।

एखाने रास्ताय बेरिये सुख आछे। सुन्दर मुख चोखे पड़बेइ। श्रीयुक्त् देशानुराग यदि पारेन तो आमाके क्षमा करबेन। नवनीर मतो सुकोमल शुभ्र रङेर उपरे एकखानि पातला टुकटुके ठोंट, सुगठित नासिका एवं दीर्घपल्लवविशिष्ट निर्मल नीलनेत्र—देखे प्रवास दुःख दूर हये याय। शुभानुध्यायीरा शङ्कित एवं चिन्तित हबेन, प्रिय वयस्करा परिहास करबेन किन्तु ए-कथा आमाके स्वीकार करतेइ हबे सुन्दर मुख आमार सुन्दर लागे। सुन्दर हओया एवं मिष्ट करे हासा मानुषेर येन एकटि परमाश्चर्य क्षमता। किन्तु दुःखेर विषय आमार भाग्यक्रमे ओइ हासिटा एदेशे किछु बाहुल्य परिमाणे पेये थाकि। अनेक समये राजपथे कोनो नीलनयना पान्थरमणीर सम्मुखवर्ती हवामात्र से आमार मुखेर दिके चेये आर हासि संवरण करते पारे ना। तखन ताके डेके बले दिते इच्छा करे, "सुन्दरी, आमि हासि भालोवासि बटे, किन्तु एतटा नय। ता छाड़ा बिम्बाधर-संलग्न यतइ सुमिष्ट होक ना केन, तारो एकटा युक्तिसङ्गत कारण थाका चाइ; कारण, मानुष केवलमात्र ये सुन्दर ता नय, मानुष बुद्धिमान जीव। हे नीलाञ्जनयने, आमि तो इङ्‌रेजेर मतो असभ्य खाटो कुर्ति एवं असङ्गत लम्बा धुचुनि टुपि परि ने, तबे हास की देखे? आमि सुश्री कि कुश्री से-विषये कोनो प्रसङ्ग उत्थापन करा रुचिविरुद्ध किन्तु एटा आमि जोर करे बलते पारि विद्रुपेर तुलि दिये विधाता-पुरुष आमार मुखमण्डल अङ्कित करेन नि। तबे यदि रङटा कालो एवं चुलगुलो किछु लम्बा देखे हासि पाय, ता हले एइ पर्यन्त बलते पारि, प्रकृतिभेदे हास्यरस सम्बन्धे अदभुत रुचिभेद लक्षित हय। तोमरा याके 'हिउमार' बल, आमार मते कालो रङेर सङ्गे तार कोनो कार्यकारण सम्बन्ध नेइ। देखछि बटे, तोमादेर देशे मुखे कालि मेखे काफ्रि सेजे नृत्यगीत करा एकटा कौतुकेर मध्ये गण्य हये थाके। किन्तु, कनककेशिनि. सेटा आमार काछे नितान्त हृदयहीन बर्बरता बले बोध हय।"[1]

२५ सेप्टेम्बर।

आज एखानकार एकटि छोटोखाटो एक्सिबिशन देखते गियेछिलुम। शुनलूम, एटा प्यारिस एक्सिबिशनेर अत्यन्त सुलभ एवं संक्षिप्त द्वितीय संस्करण। सेखाने चित्रशालाय प्रवेश करे कारोलु ड्युराँ-नामक एकजन विख्यात फरासि चित्रकर-रचित एकटि वसनहीना मानवीर छबि देखलुम। आमरा प्रकृतिर सकल शोभाइ देखि, किन्तु मर्त्येर एइ चरम सौन्दर्येर उपर, जीवअभिव्यक्तिर एइ सर्वशेष कीर्तिखानिर उपर, मानुष स्वहस्ते एकटि चिर-अन्तराल टेने रेखे दियेछे। एइ देहखानिर स्निग्ध शुभ्र कोमलता एवं प्रत्येक सुठाम सुनिपुण भङ्गिमार उपरे असीम सुन्दरेर सयत्न अंगुलिर सद्यस्पर्श देखा याय येन। ए केवलमात्र देहेर सौन्दर्य नय, यदिओ देहेर सौन्दर्य ये बड़ो सामान्य एवं साधुजनेर उपेक्षणीय ता बलते पारि ने—किन्तु एते आरओ अनेकखानि गभीरता आछे। एकटि प्रीति-रमणीय सुकोमल नारी-प्रकृति, एकटि अमर सुन्दर मानवात्मा एर मध्ये बास करे, तारइ दिव्य लावण्य एर सर्वत्र उद्भासित। दूर थेके चकितेर मतो सेइ अनिर्वचनीय चिर-रहस्यके देहेर स्फटिक वातायने एकटुखानि येन देखा गेल।

१० अक्टोबर।

सुन्दर प्रातःकाल। समुद्र स्थिर। आकाश परिष्कार। सूर्य उठेछे। भोरेर बेला कुयाशार मध्ये दिये आमादेर डान दिक थेके अल्प अल्प तीरेर चिह्न देखा याच्छे। अल्पे अल्पे कुयाशार यवनिका उठे गिये ओयाइट द्वीपेर पार्वत्य तीर एवं भेण्टनर शहर क्रमे क्रमे प्रकाशित हये पड़ल।

ए जाहाजे बड़ो भिड़ निरिविलि कोणे चौकि टेने ये एकटू लिखब तार जो नेइ, सुतरां सम्मुखे या किछु चोखे पड़े ताइ चेये चेये देखि।

इङ्‌रेज मेयेर चोख निये आमादेर देशेर लोक प्रायइ ठाट्टा करे, विड़ालेर चोखेर सङ्गे तार तुलना करे थाके। किन्तु एमन सर्वदाइ देखा याय, ताराइ यखन आबार बिलेते आसे तखन स्वदेशेर हरिणनयनेर कथाटा आर बड़ो मने करे ना। यतक्षण दूरे आछि कोनो बालाइ नेइ, किन्तु लक्षपथे प्रवेश करलेइ इङ्‌रेज सुन्दरीर दृष्टि आमादेर अभ्यासेर आवरण विद्ध क'रे अन्तरेर मध्ये प्रवेश करे। इङ्‌रेज सुनयनार चोख मेघमुक्त नीलाकाशेर मतो परिष्कार, हीरकेरमतो उज्ज्वल एवं घन पल्लवे आच्छन्न, ताते आवेशेर छाया नेइ। एमन भारत सन्तान आमार जाना आछे ये नीलनेत्रेर काछेओ अभिभूत एवं हरिणनयनकेओ किछुतेइ उपेक्षा करते पारे ना। कृष्ण केशपाशओ से मूढ़ेर पक्षे बन्धन एवं कनककुन्तलओ सामान्य दृढ़ नय।

सङ्गीत सम्बन्धेओ देखा याय, पूर्वे ये इङ्रेजि सङ्गीतके परिहास करे आनन्द लाभ करा गेछे, एखन तार प्रति मनोयोग करे ततोधिक बेशि आनन्दलाभ करा याय। एखन अभ्यासक्रमे युरोपीय सङ्गीतेर एतटुकु आस्वाद पाओया गेछे यार थेके निदेन एइटुकु बोझा गेछे ये यदि चर्चा करा याय ता हले युरोपीय सङ्गीतेर मध्ये थेके परिपूर्ण रस पाओया येते पारे। आमादेर देशी सङ्गीत ये आमार भालो लागे से-कथार विशेष उल्लेख करा बाहुल्य। अथच दुयेर मध्ये ये सम्पूर्ण जातिभेद आछे तार आर सन्देह नेइ।

१३ अक्टोबर।

एकटि रमणी गल्प करछिलेन, तिनि पूर्वेकार कोन् एक समुद्रयात्राय काप्तेन अथवा कोनो कोनो पुरुषयात्रीर प्रति कठिन परिहास ओ उत्पीड़न करतेन—तार मध्ये एकटा हच्छे चौकिते पिन फुटिये राखा। शुने आमार तेमन मजाओ मने हल ना एवं सेइ सकल विशेष अनुगृहीत पुरुषदेर स्थलभिषिक्त हतेओ एकान्त वासनार उद्रेक हल ना। देखा याच्छे, एखाने पुरुषदेर प्रति मेयेरा अनेकटा दूर पर्यन्त रुढ़ाचरण करते पारेन। येमन बालकेर काछ थेके उपद्रव अनेक समय आमोदजनक लीलार मतो मने हय स्त्रीलोकदेर अत्याचारेर प्रतिओ पुरुषेरा सेइ-रकम स्नेहमय उपेक्षा प्रदर्शन करे एवं अनेक समय सेटा भालोबासे। पुरुषदेर मुखेर उपरे रूढ़ समालोचना शुनिये देओया स्त्रीलोकदेर एकटा अधिकारेर मध्ये। सेइ लघुगति तीव्रतार द्वारा ताँरा पुरुषेर श्रेष्ठताभिमान बिद्ध करे गौरव अनुभव करेन। सामाजिक प्रथा एवं आनिवार्य कारणवशत नाना विषये ताँरा पुरुषेर अधीन बलेइ लौकिकता एवं शिष्टाचार सम्बन्धे अनेक समये ताँरा पुरुषदेर लङ्घन करे आनन्द पान। कार्यक्षेत्रे येखाने प्रतियोगिता नेइ सेखाने दुर्बल किञ्चित दुरन्त एवं सबल सम्पूर्ण सहिष्णु एटा देखते मन्द हय ना। बलाभिमानी पुरुषेर पक्षे ए एकटा शिक्षा। अबलार दुर्बलता पुरुषेर इच्छातेइ बल प्राप्त हयेछे, एइ जन्य ये-पुरुषेर पौरुष आछे स्त्रीलोकेर उपद्रव से विना विद्रोहे आनन्देर सहित सह्य करे, एवं सहिष्णुताय तार पौरुषेरइ चर्चा हते थाके। ये देशेर पुरुषेर कापुरुष ताराइ निर्लज्जभावे पुरुष-पूजाके, पुरुषेर प्राणपण सेवाकेइ, स्त्रीलोकेर सर्वोच्च धर्म बले प्रचार करे; सेइ देशेइ देखा याय स्वामी रिक्तहस्ते आगे आगे याच्छे यार स्त्री तार बोझाटि वहन करे पिछने चलेछे, स्वामीर दल फार्स्ट क्लासे चड़े यात्रा करछे आर कतकगुलि जड़ोसड़ो घोमटाच्छन्न स्त्रीगणके निम्नश्रेणीते पुरे देओया हयेछे, सेइ देशेइ देखा याय आहारे विहारे व्यवहारे सकल विषयेइ सुख एवं आराम केवल

पुरुषेर, उच्छिष्ट ओ उद्वृत्त केवल स्त्रीलोकेर, ताइ निये बेहाया कापुरुषेरा असंकोचे गौरव करे थाके एवं तार तिलमात्र व्यत्यय ह्ले सेटाके तारा खूब एकटा प्रहसनेर विषय बले ज्ञान करे। स्वभावदुर्बल सुकुमार स्त्रीलोकदेर सर्वप्रकार आराम-साधन एवं कष्टलाघवेर प्रति सयत्न मनोयोग ये कठिनकाय बलिष्ठ पुरुषदेर एकटि स्वभावसिद्ध गुण हओया उचित ए तारा कल्पना करते पारे ना—तारा केवल एइटुकुमात्र जाने शासनभीता, स्नेहशालिनी रमणी तादेर चरणे तैल लेपन करबे, तादेर वदने अन्न जुगिये देबे, तादेर तप्त कलेवरे पाखार व्यजन करबे, तादेर आलस्यचर्चार आयोजन करे देबे, पङ्किल पथे पाये जुतो देबे ना, शीतेर समय गाये कापड़ देबे ना, रौद्रेर समय माथाय छाता देबे ना, क्षुधार समय कम करे खाबे, आमोदेर समय यवनिकार आड़ाले थाकबे एवं एइ बृहत् मुक्त प्रकृतिर मध्ये ये आलोक आनन्द सौन्दर्य स्वास्थ्य आछे तार थेके वञ्जित हये थाकबे। स्वार्थपरता पृथिवीर सर्वत्रइ आछे किन्तु निर्लज्ज निःसंकोच स्वार्थपरता केवल सेइ देशेइ आछे ये देशे पुरुषरा षोलो आना पुरुष नय।

मेयेरा आपनार स्नेहपरायण सहृदयता थेके पुरुषेर सेवा करे थाके एवं पुरुषेरा आपनार उदार दुर्बलवत्सलता थेके स्त्रीलोकेर सेवा करे थाके; ये देशे स्त्रीलोकेरा सेइ सेवा पाय ना, केवल सेवा करे, सेदेशे तारा अपमानित एवं से देशओ लक्ष्मीछाड़ा।

किन्तु कथाटा हच्छिल स्त्रीलोकेर दौरात्म्य सम्बन्धे। गोलापेर ये-कारणे काँटा थाका आवश्यक, येखाने स्त्रीपुरुषे विच्छेद नेइ सेखाने स्त्रीलोकेरओ सेइ कारणे प्रखरता थाका चाइ, तीक्ष्ण कथाय मर्मच्छेद करबार अभ्यास अबलार पक्षे अनेक समयेइ काजे लागे।

आमादेर गोलापगुलिइ कि एकेबारे निष्कण्टक? किन्तु से-विषये समधिक समालोचना करते विरत थाका गेल।

२६ अक्टोबर।

जाहाजेर एकटा दिन वर्णना करा याक।

सकाले डेक धुये गेछे, एखनो भिजे रयेछे। दुइ धारे डेकचेयार विशृङ्खल भावे परस्परेर उपर राशीकृत। खालिपाये रात-कापड़ परा पुरुषगण केउ बा-बन्धु-सङ्गे केउ बा एकला मध्यपथ दिये हुहु करे बेड़ाच्छे। क्रमे यखन आटटा बाजल एवं एकटि-आधटि करे मेये उपरे उठते लागल तखन एके एके एइ विरलवेश पुरुषदेर अन्तर्धान।

स्नानेर घरेर सम्मुखे विषम भिड़। तिनटि मात्र स्नानागार। आमरा

अनेकगुलि द्वारस्थ। तोयाले एवं स्पन्ज हाते द्वारमोचनेर अपेक्षाय दाँड़िये आछि। दश मिनिटेर अधिक स्नानेर घर अधिकार करबार नियम नेइ।

स्नान एवं वेशभूषा समापनेर पर उपरे गिये देखा याय डेकेर उपर पदचारणशील प्रभातवायुसेवी अनेकगुलि स्त्रीपुरुषेर समागम हयेछे। घन घन टुपि उद्घाटन करे महिलादेर एवं शिरःकम्पे परिचित बन्धुवान्धवदेर सङ्गे शुभप्रभात अभिवादन करे ग्रीष्मेर तारतम्य सम्बन्धे परस्परेर मत व्यक्त करा गेल।

न-टार घण्टा बाजल। ब्रेकफास्ट प्रस्तुत। वुभुक्ष नरनारीगण सोपान-पथ दिये निम्नकक्षे भोजन विबरे प्रवेश करले। डेकेर उपरे आर जनप्राणी अवशिष्ट नेइ, केवल सारि सारि शून्य चौकि ऊर्ध्वमुखे प्रभुदेर जन्य प्रतीक्षमान।

भोजनशाला प्रकाण्ड घर। माझे दुइ सार लम्बा टेबिल; एवं तार दुइ पार्श्वे खण्ड खण्ड छोटो छोटो टेबिल। आमरा दक्षिण पार्श्वे एकटि क्षुद्र टेबिल अधिकार करे सातटि प्राणी दिनेर मध्ये तिन बार क्षुधा निवृत्त करे थाकि। मांस रुटि फलमूल मिष्टान्न मदिराय एवं हास्यकौतुक गल्पगुजबे एइ अनति-उच्च सुप्रशस्त घर कानाय कानाय परिपूर्ण हये उठे।

आहारेर पर उपरे गिये ये यार निज निज चौकि अन्वेषण एवं सेटा यथास्थाने स्थापने व्यस्त। चौकि खुंजे पाओया दाय। डेक धोवार समय कार चौकि कोथाय फेलेछे तार ठीक नेइ।

तार पर येखाने एकटु कोण, येखाने एकटु वातास, येखाने एकटु रोदेर तेज कम, येखाने यार अभ्यास, सेइखाने ठेलेठुले टेनेटुने पाश काटिये पथ करे आपनार चौकिटि राखते पारले समस्त दिनेर मतो निश्चिन्त।

देखा याय कोनो चौकिहारा म्लानमुखी रमणी कातरभावे इतस्तत दृष्टिपात करछे, किंवा कोनो विपदग्रस्त अबला एइ चौकि अरण्येर मध्ये थेके निजेरटि विश्लिष्ट करे निये अभिप्रेत स्थाने स्थापन करते पारछे ना—तखन पुरुषगण नारीसहायव्रते चौकि-उद्धारकार्ये नियुक्त हये सुशिष्ट ओ सुमिष्ट धन्यवाद अर्जन करे थाके।

तार पर ये यार चौकि अधिकार करे बसे याओया याय। धूमसेविगण, हय धूमसेवनकक्षे नय डेकेर पश्चाद्भागे समवेत हये परितृप्तमने धूमपान करछे। मेयेरा अर्धनिलीन अवस्थाय केउवा नभेल पड़छे, केउवा सेलाइ करछे, माझे-माझे दुइ-एकजन युवक क्षणेकेर जन्ये पाशे बसे मधुकरेर मतो कानेर काछे गुन गुन करे आवार चले याच्छे।

आहार किञ्चित् परिपाक हवामात्र एक दलेर मध्ये क्कयेट्स् खेला आरम्भ हल। दुइ वालति परस्पर हते हात दशेक दूरे स्थापित हल। दुइ जुड़ि स्त्रीपुरुष विरोधी पक्ष अवलम्बन करे पालाक्रमे स्व स्व स्थान थेके कलसीर बिड़ेर मतो कतक-

गुलो रज्जुचक्र विपरीत बालतिर मध्ये फेलबार चेष्टा करते लगल। ये पक्ष सर्वाग्रे एकुश करते पारबे तारइ जित। मेये-खेलोयाड़ेरा कखनो जयोच्छ्वासे कखनो नैराश्ये ऊर्ध्वकण्ठे चीत्कार करे उठछे। केउबा दाँड़िये देखछे, केउबा गणना करछे, केउबा खेलाय योग दिच्छे, केउबा आपन आपन पड़ाय किंवा गल्पे निविष्ट।

एकटार समय आबार घण्टा। आबार आहार। आहारान्ते उपरे फिरे एसे दुइ स्तर खाद्येर भारे एवं मध्याह्नेर उत्तापे आलस्य अत्यन्त घनीभूत हये आसे। समुद्र प्रशान्त, प्रकाश सुनील मेघमुक्त, अल्प अल्प बातास दिच्छे। केदाराय हेलान दिये नीरवे नभेल पड़ते पड़ते अधिकांश आनील नयन निद्राविष्ट। केवल दुइ-एकजन दावा, व्याक्‌ग्यामन किंवा ड्राफ्ट् खेलछे एवं दुइ-एकजन अश्रान्त अध्यवसायी युवक समस्त दिनइ क्कयेट्स खेलाय नियुक्त। कोनो रमणी कोलेर उपर कागज कलम निये एकाग्रमने चिठि लिखछे एवं कोनो शिल्प कुशला कौतुकप्रिया युवती निद्रित सहयात्रीर छवि आँकते चेष्टा करछे।

क्रमे रौद्रेर प्रखरता ह्रास हये एल। तापक्लिष्ट क्लान्तकायगण नीचे नेमे गिये रुटि माखन मिष्टान्न सहयोगे चा-रस पाने शरीरेर जड़ता परिहार करे पुनर्बार डेके उपस्थित। पुनर्बार युगलमूर्तिर सोत्साह पदचारणा एवं मृदुमन्द हास्यालाप आरम्भ हल। केवल दु-चार जन पाठिका उपन्यासेर शेष परिच्छेद थेके किछुतेइ आपनाके विच्छिन्न करते पारछेन ना, दिवावसानेर म्लान क्षीणालोके एकाग्रनिविष्ट दृष्टिते नायक-नायिकार परिणाम अनुसरण करछे।

दक्षिण आकाशे तप्त स्वर्णवर्णेर प्रलेप, तरल आग्निर मतो जलराशिर मध्ये सुर्य अस्तमित, एवं बामे सूर्यास्तेर किछु पूर्व हतेइ चन्द्रोदयेर सूचना। जाहाज थेके पूर्वदिगन्त पर्यन्त ज्योत्स्नारेखा झिक्‌झिक् करछे।

जाहाजेर डेकेर उपरे एवं कक्षे कक्षे विद्युद्दीप ज्वले उठल। छटार समय बाजल डिनारेर प्रथम घण्टा। वेश परिवर्तन उपलक्षे सकले स्व स्व कक्षे प्रवेश करले। आध घण्टा परे द्वितीय घण्टा। भोजनगृहे प्रवेश करा गेल। सारि सारि नरनारी वसे गेछे। कारो बा कालो कापड़, कारो रङ्गिन कापड़, कारो वा शुभ्र वक्ष अर्ध-अनावृत। माथार उपरे श्रेणीबद्ध विद्युत-आलोक। गुन्‌गुन, आलापेर सङ्गे काँटाचामचेर टुं टां ठुं ठां मुखरित एवं विचित्र खाद्येर पर्याय परिचारकदेर हाते हाते निःशब्द स्रोतेर मतो यातायात करछे।

आहारेर पर डेके गिये शीतल वायु-सेवन। कोथाओ वा युवकयुवती अन्धकार कोणर मध्ये चौकि टेने निये गिये गुन्‌गुन् करछे, कोथाओ, वा दु-जने जाहाजेर बारान्दा धरे झुंके पड़े रहस्यालापे निमग्न, कोनो कोनो जुड़ि गल्प करते करते डेकेर आलोक

ओ अन्धकारेर मध्ये दिये द्रुतपदे एकबार देखा दिच्छे एकबार अदृश्य हये याच्छे, कोथाओ बा पाँच-सातजन स्त्रीपुरुष एवं जाहाजेर कर्मचारी जटला करे उच्चहास्ये प्रमोदकल्लोल उच्छ्वसित करे तुलछे। अलस पुरुषेरा केउबा बसे केउबा दाँड़िये केउबा अर्धशयान अवस्थाय चुरट टानछे, केउबा सेलुने केउबा नीचे खाबार घरे हुइस्कि सोडा पाशे रेखे चारजने दल बेंधे बाजि रेखे तास खेलछे। ओ दिके सङ्गीतशालाय सङ्गीतप्रिय दु-चारजनेर समावेशे गानबाजना एवं माझे माझे करतालि शोना याच्छे।

क्रमे साड़े दशटा बाजे, मेयेरा नेबे याय, डेकेर उपरे आलो हठात् याय निबे, डेक निःशब्द निर्जन अन्धकार हये आसे। चारिदिके निशीथेर निस्तब्धता, चन्द्रालोक, एवं अनन्त समुद्रेर आश्रान्त कलध्वनि।

जापान यात्रो

१

बोम्बइ थेके यतबार यात्रा करेछि जाहाज चलते देरि करे नि। कलकातार जाहाजे यात्रार आगेर रात्रे गिये बसे थाकते हय। एटा भालो लागे ना। केनना, यात्रा करबार मानेइ मनेर मध्ये चलार वेग सञ्चय करा। मन यखन चलबार मुखे ताके दाँड़ करिये राखा, तार एक शक्तिर सङ्गे तार आर-एक शक्तिर लड़ाइ बाधानो। मानुष यखन घरेर मध्ये जमिये बसे आछे तखन बिदायेर आयोजनटा एइजन्येइ कष्टकर, केनना, थाकार सङ्गे याओयार सन्धिस्थलटा मनेर पक्षे मुशकिलेर जायगा—सेखाने ताके दुइ उलटो दिक सामलाते हय, से एक रकमेर कठिन व्यायाम।

बाड़िर लोकेरा सकलेइ जाहाजे चड़िये दिये बाड़ि फिरे गेल, बन्धुरा फुलेर माला गलाय परिये दिये विदाय दिले, किन्तु जाहाज चलल ना। अर्थात्, यारा थाकबार ताराइ गेल, आर येटा चलबार सेटाइ स्थिर हये रइल; बाड़ि गेल सरे, आर तरी रइल दाँड़िये।

विदायमात्रेरइ एकटा व्यथा आछे; से व्यथाटार प्रधान कारण एइ, जीवने या कछुके सबचेये निर्दिष्ट करे पाओया गेछे ताके अनिर्दिष्टेर आड़ाले समर्पण करे याओया। तार बदले हाते हाते आर-एकटा किछुके पाओया ना गेले एइ शून्यताटाइ मनेर मध्ये बोझा हये दाँड़ाय। सेइ पोओनाटा हच्छे अनिर्दिष्टके क्रमे क्रमे निर्दिष्ट भाण्डारेर मध्ये पेये चलते थाका। अपरिचयके क्रमे क्रमे परिचयेर कोठार मध्ये भुक्त करे निते थाका। सेइजन्य यात्रार मध्ये ये दुःख आछे चलाटाइ हच्छे तार ओषुध। किन्तु, यात्रा करलुम अथच चललुम ना, एटा सह्य करा शक्त।

अचल जाहाजेर क्याबिन हच्छे बन्धनदशार द्विगुण-चोलाइ-करा कड़ा आरक। जाहाज चले बलेइ तार कामरार संकीर्णताके आमरा क्षमा करि। किन्तु, जाहाज यखन स्थिर थाके तखन क्याबिने स्थिर थाका, मृत्युर ढाकनाटार नीचे आबार गोरेर ढाकनार मतो।

चेष्टा करेछिलेन, किन्तु कर्तृपक्षेर घाड़ नड़ल, से घटे उठल ना। सकाले ब्रेक्-फास्टेर समय तिनि ये टेबिले बसेछिलेन सेखाने पाखा छिल ना; आमादेर टेबिले जायगा छिल, सेइ देखे तिनि आमादेर टेबिले बसबार इच्छा जानालेन। अनुरोधटा सामान्य, किन्तु काप्तेन बललेन, ए बेलाकार मतो बन्दोबस्त हये गेछे, डिनरेर समय देखा याबे। आमादेर टेबिले चौकि खालि रइल, किन्तु तबु नियमेर व्यत्यय हल ना। बेश बोझा याच्छे, अति अल्पमात्रओ ढिलेढाला किछु हते पारबे ना।

रात्रे बाइरे शोओया गेल, किन्तु ए केमनतरो बाइरे? जाहाजेर मास्तुले मास्तुले आकाशटा येन भीष्मेर मतो शरशय्याय शुये मृत्युर अपेक्षा करछे। कोथाओ शून्यराज्येर फांका नेइ। अथच वस्तुराज्येर स्पष्टताओ नेइ। जाहाजेर आलोगुलो मस्त एकटा आयतनेर सूचना करछे, किन्तु कोनो आकारके देखते दिच्छे ना।

कोनो एकटि कविताय प्रकाश करेछिलुम ये, आमि निशीथरात्रिर सभा-कवि। आमार बराबर ए कथाइ मने हय ये, दिनेर बेलाटा मर्तलोकेर, आर रात्रि बेलाटा सुरलोकेर। मानुष भय पाय, मानुष काजकर्म करे, मानुष तार पायेर काछेर पथटा स्पष्ट करे देखते चाय, एइजन्ये एत बड़ो एकटा आलो ज्वालते हयेछे। देवतार भय नेइ, देवतार काज निःशब्दे गोपने, देवतार चलार सङ्गे स्तब्धतार कोनो विरोध नेइ, एइजन्येइ असीम अन्धकार देवसभार आस्तरण। देवता रात्रेइ आमादेर वातायने एसे देखा देन।

किन्तु मानुषेर कारखाना यखन आलो ज्वालिये सेइ रात्रिकेओ अधिकार करते चाय तखन केवल ये मानुषइ क्लिष्ट हय ता नय, देवताकेओ क्लिष्ट करे तोले। आमरा यखन थेके बाति ज्वेले रात जेगे एग्जामिन पास करते प्रवृत्त हयेछि तखन थेके सूर्येर आलोय सुस्पष्ट निर्दिष्ट निजेर सीमाना लंघन करते लेगेछि, तखन थेकेइ सुरमानवेर युद्ध बेधेछे। मानुषेर कारखाना-घरेर चिमनि-गुलो फूं दिये दिये निजेर अन्तरेर कालीके द्युलोके विस्तार करछे,से अपराध तेमन गुरुतर नय—केनना, दिनटा मानुषेर निजेर, तार मुखे से काली माखलेओ देवता ता निये नालिश करबेन ना। किन्तु, रात्रिर अखण्ड अन्धकारके मानुष यखन निजेर आलो दिये फुटो करे देय तखन देवतार अधिकारे से हस्तक्षेप करे। से येन निजेर दखल अतिक्रम करे आलोकेर खुँटि गेड़े देवलोके आपन सीमाना चिह्नित करते चाय!

सेदिन रात्रे गङ्गार उपरे सेइ देवविद्रोहेर विपुल आयोजन देखते पेलुम। ताइ मानुषेर क्लान्तिर उपर सुरलोकेर शान्तिर आशीर्वाद देखा गेल ना। मानुष

बलते चाच्छे, 'आमिओ देवतार मतो, आमार क्लान्ति नेइ।' किन्तु सेटा मिथ्या कथा, एइजन्ये से चारि दिकेर शान्ति नष्ट करछे। एइजन्ये अन्धकारकेओ से अशुचि करे तुलेछे।

दिन आलोकेर द्वारा आविल, अन्धकारइ परम निर्मल। अन्धकार रात्रि समुद्रेर मतो; ता अञ्जनेर मतो कालो, किन्तु तबु निरञ्जन। आर दिन नदीर मतो; ता कालो नय, किन्तु पङ्किल। रात्रिर सेइ अतलस्पर्श अन्धकारकेओ सेदिन सेइ खिदिरपुरेर जेटिर उपर मलिन देखलुम। मने हल, देवता स्वयं मुख मलिन करे रयेछेन।

एमनि खाराप लेगेछिल एडेनेर बन्दरे। सेखाने मानुषेर हाते बन्दी हये समुद्रओ कलुषित। जलेर उपरे तेल भासछे, मानुषेर आवर्जनाके स्वयं समुद्रओ विलुप्त करते पारछे ना। सेइ रात्रे जाहाजेर डेकेर उपर शुये असीम रात्रिकेओ यखन कलङ्कित देखलुम तखन मने हल, एकदिन इन्द्रलोक दानवेर आक्रमणे पीड़ित हये ब्रह्मार काछे नालिश जानियेछिलेन—आज मानवेर अत्याचार थेके देवतादेर कोन् रुद्र रक्षा करबेन।

३

* * *

काप्तेन बले रेखेछेन, आज सन्ध्याबेलाय झड़ हबे, व्यारोमिटार नावछे। किन्तु, शान्त आकाशे सूर्य अस्त गेल। बातासे ये-परिमाण वेग थाकले ताके मन्दपवन बले, अर्थात् युवतीर मन्दगमनेर सङ्गे कविरा तुलना करते पारे, ए तार चेये बेशि; किन्तु ढेउगुलोके निये रुद्रतालेर करताल बाजाबार मतो आसर जमे नि, येटुकु खोलेर बोल दिच्छे ताते झड़ेर गौरचन्द्रिका वलेओ मने हय नि। मने करलुम, मानुषेर कुष्ठिर मतो वातासेर कुष्ठि गणनार सङ्गे ठिक मेले ना, ए यात्रा झड़ेर फाँड़ा केटे गेल। ताइ पाइलटेर हाते आमादेर डाङार चिठिपत्र समर्पण करे दिये प्रसन्न समुद्रके अभ्यर्थना करबार जन्ये डेक-चेयार टेने निये पश्चिममुखो हये बसलुम।

होलिर रात्रे हिन्दुस्थानि दरोयानदेर खचमचिर मतो वातासेर लयटा क्रमेइ द्रुत हये उठल। जलेर उपर सूर्यास्तेर आलपना-आँका आसनटि आच्छन्न क'रे नीलाम्बरीर घोमटा-परा सन्ध्या एसे बसल। आकाशे तखनो मेघ नेइ, आकाश-समुद्रेर फेनार मतोइ छायापथ ज्वल् ज्वल् करते लागल।

डेकेर उपर बिछाना करे यखन शुलुम तखन बातासे एवं जले बेश एकटा कविर लड़ाइ चलछे; एक दिके सों सों शब्दे तान लागियेछे, आर-एक दिके छल् छल्

शब्दे जवाब दिच्छे, किन्तु झड़ेर पाला ब'ले मने हल ना। आकाशेर तारादेर सङ्गे चोखोचोखि करे कखन एक समये चोख बुजे एल।

रात्रे स्वप्न देखलुम, आमि येन मृत्यु सम्बन्धे कोन्-एकटि वेदमन्त्र आवृत्ति करे सेइटे काके बुझिये बलछि। आश्चर्य तार रचना, येन एकटा विपुल आर्त-स्वरेर मतो, अथच तार मध्ये मरणेर एकटा विराट वैराग्य आछे। एइ मन्त्रेर माझखाने जेगे उठे देखि, आकाश एवं जल तखन उन्मत्त हये उठेछे। समुद्र चामुण्डार मतो फेनार जिव मेले प्रचण्ड अट्टहास्ये नृत्य करछे।

आकाशेर दिके ताकिये देखि, मेघगुलो मरिया हये उठेछे येन तादेर काण्डज्ञान नेइ—बलछे 'या थाके कपाले'। आर, जले ये विषम गर्जन उठछे ताते मनेर भावनाओ येन शोना याय ना, एमनि बोध हते लागल। माल्लारा छोटो छोटो लण्ठन हाते व्यस्त हये ए दिके ओ दिके चलाचल करछे, किन्तु निःशब्दे। माझे माझे एञ्जिनेर प्रति कर्णधारेर संकेत घण्टाध्वनि शोना याच्छे।

एवार बिछानाय शुये घुमोबार चेष्टा करलुम। किन्तु, बाइरे जल-बातासेर गर्जन आर आमार मनेर मध्ये सेइ स्वप्नलब्ध मरणमन्त्र क्रमागत बाजते लागल। आमार घुमेर सङ्गे जागरण ठिक येन ओइ झड़ एवं ढेउयेर मतोइ एलोमेलो मतामाति करते थाकल, घुमोच्छि कि जेगे आछि बुझते पारछि ने।

रागी मानुष कथा कइते ना पारले येमन फुले फुले ओठे, सकाल-बेलाकार मेघगुलोके तेमनि बोध हल। बातास केवलइ श ष स एवं जल केवलइ बाकि अन्त्यस्थ वर्ण य र ल व ह निये चण्डीपाठ बाधिये दिल, आर मेघगुलो जटा दुलिये भ्रूकुटि करे वेड़ाते लागल। अवशेषे मेघेर वाणी जलधाराय नेमे पड़ल। नारदेर वीणाध्वनिते विष्णु गङ्गाधाराय विगलित हयेछिलेन एकबार, आमार सेइ पौराणिक कथा मने एसेछिल। किन्तु, ए कोन् नारद प्रलयवीणा बाजाच्छे—एर सङ्गे नन्दीभृङ्गीर ये मिल देखि, आर ओ दिके विष्णुर सङ्गे रुद्रेर प्रभेद घुचे गेछे।

ए-पर्यन्त जाहाजेर नित्यक्रिया एकरकम चले याच्छे, एमन-कि आमादेर प्रात-राशेरओ व्याघात हल ना। काप्तेनेर मुखे कोनो उद्वेग नेइ। तिनि बललेन, एइ समयटाते एमन एकटु-आधटु हये थाके; आमरा येमन यौवनेर चाञ्चल्य देखे बले थाकि 'ओटा वयसेर धर्म'।

क्याबिनेर मध्ये थाकले झुम्झुमिर भितरकार कड़ाइगुलोर मतो नाड़ा खेते हबे, तार चेये खोलाखुलि झड़ेर सङ्गे मोकाबिला कराइ भालो। आमरा शाल कम्बल मुड़ि दिये जाहाजेर डेकेर उपर गियेइ बसलुम। झड़ेर झापट पश्चिम दिक थेके आसछे, सेइजन्ये पूर्व दिकेर डेके बसा दुःसाध्य छिल ना।

झड़ क्रमेइ बेड़े चलल। मेघेर सङ्गे ढेउयेर सङ्गे कोनो भेद रइल ना। समद्रेर से नील रङ्ग नेइ, चारि दिक झापसा विवर्ण। छेलेबेलाय अरब्य-उपन्यासे पड़ेछिलुम, जेलेर जाले ये घड़ा उठेछिल तार ढाकना खुलतेइ तार भितर थेके धोँओयार मतो पाकिये पाकिये प्रकाण्ड दैत्य बेरिये पड़ल। आमार मने हल, समुद्रेर नील ढाकनाटा के खुले फेलेछे, आर भितर थेके धोँओयार मतो लाखो लाखो दैत्य परस्पर ठेलाठेलि करते करते आकाशे उठे पड़छे।

जापानि माल्लारा छुटोछुटि करछे, किन्तु तादेर मुखे हासि लेगेइ आछे। तादेर भाव देखे मने हय, समुद्र येन अट्टहास्ये जाहाजटाके ठाट्टा करछे मात्र; पश्चिम दिकेर डेकेर दरजा प्रभृति समस्त बन्ध, तबु से-सब भेद करे एक-एकबार जलेर ढेउ लुड़् मुड़् करे एसे पड़छे, आर ताइ देखे ओरा हो हो करे उठछे। काप्तेन आमादेर बारबार बललेन, छोटो झड़, सामान्य झड़। एकसमय आमादेर स्टुयार्ड् एसे टेबिलेर उपर आंगुल दिये एके झड़ेर खातिरे जाहाजेर किरकम पथ बदल हयेछे, सेइटे बुझिये देबार चेष्टा करले। इतिमध्ये वृष्टिर झापट लेगे शाल कम्बल समस्त भिजे शीते काँपुनि धरिये दियेछे। आर कोथाओ सुविधा ना देखे काप्तेनेर घरे गिये आश्रय निलुम। काप्तेनेर ये कोनो उत्कण्ठा आछे, बाइरे थेके तार कोनो लक्षण देखते पेलुम ना।

घरे आर बसे थाकते पारलुम ना। भिजे शाल मुड़ि दिये आबार बाइरे एसे बसलुम। एत तुफानेओ ये आमादेर डेकेर उपर आछड़े आछड़े फेलछे ना तार कारण, जाहाज आकण्ठ बोझाइ। भितरे यार पदार्थ नेइ तार मतो दोलायित अवस्था आमादेर जहाजेर नय। मृत्युर कथा अनेकबार मने हल। चारि दिकेइ तो मृत्यु, दिगन्त थेके दिगन्त पर्यन्त मृत्यु; आमार प्राण एर मध्ये एतटुकु। एइ अतिछोटोटार उपरेइ कि समस्त आस्था राखब, आर एइ एत बड़ोटाके किछु विश्वास करब ना?—बड़ोर उपरे भरसा राखाइ भालो।

डेके बसे थाका आर चलछे ना। नीचे नाबते गिये देखि सिँड़ि पर्यन्त जुड़े समस्त रास्ता ठेसे भर्ति करे डेक प्यासेन्जार बसे। बहु कष्टे तादेर भितर दिये पथ करे क्याबिनेर मध्ये गिये शुये पड़लुम। एइबार समस्त शरीर मन घुलिये उठल। मने हल, देहेर सङ्गे प्राणेर आर बन्ति हच्छे ना; दुध मथन करले माखनटा येरकम छिन्न हये आसे प्राणटा येन तेमनि हये एसेछे। जाहाजेर उपरकार दोला सह्य करा याय, जाहाजेर भितरकार दोला सह्य करा शक्त। काँकरेर उपर दिये चला आर जुतार भितरे काँकर निये चलार ये तफात, ये येन तेमनि। एकटाते मार आछे बन्धन नेइ, आर एकटाते बेँधे मार।

क्याबिने शुये शुये शुनते पेलुम, डेकेर उपर की येन मुड़् मुड़् करे भेङे भेङे

पड़छे। क्याबिनेर मध्ये हाओया आसबार जन्ये ये फानेलगुलो डेकेर उपर हाँ करे निश्वास नेय, ढाका दिये तादेर मुख बन्ध करे देओया हयेछे; किन्तु, ढेउयेर प्रबल चोटे तार भितर दियेओ झलके झलके क्याबिनेर मध्ये जल एसे पड़छे। बाइरे ऊनपञ्चाश वायुर नृत्य, अथच क्याबिनेर मध्ये गुमट। एकटा इलेक्ट्रिक पाखा चलछे, ताते टापटा येन गायेर उपर घुरे घुरे लेजेर झापटा दिते लागल।

हठात् मने हय, ए एकेबारे असह्य। किन्तु, मानुषेर मध्ये शरीर मन प्राणेर चेयेओ बड़ो एकटा सत्ता आछे। झड़ेर आकाशेर उपरेओ येमन शान्त आकाश, तुफानेर समुद्रेर नीचे येमन शान्त समुद्र, सेइ आकाश सेइ समुद्रइ येमन बड़ो, मानुषेर अन्तरेर गभीरे एवं समुच्चे सेइरकम एकटि विराट शान्त पुरुष आछे—विपद एवं दुःखेर भितर दिये ताकिये देखले ताके पाओया याय—दुःख तार पायेर तलाय, मृत्यु ताके स्पर्श करे ना।

सन्ध्यार समय झड़ थेमे गेल। उपरे गिये देखि, जाहाजटा समुद्रेर काछे एतक्षण धरे ये चड़चापड़ खेयेछे तार अनेक चिह्न आछे। काप्तेनेर घरेर एकटा प्राचीर भेङे गिये ताँर आसबाबपत्र समस्त भिजे गेछे। एकटा बाँधा लाइफ-बोट जखम हयेछे। डेके प्यासेञ्जारदेर एकटा घर एवं भाण्डारेर एकटा अंश भङे पड़ेछे। जापानि मल्लारा एमन-सकल काजे प्रवृत्त छिल याते प्राणसंशय छिल। जाहाज ये बराबर आसन्न सङ्कटेर सङ्गे लड़ाइ करेछे तार एकटा स्पष्ट प्रमाण पाओया गेल—जाहाजेर डेकेर उपर कर्कें तैरि साँतार देबार जामागुलो साजानो। एक समये एगुलो बेर करबार कथा काप्तेनेर मने एसेछिल। किन्तु, झड़ेर पालार मध्ये सब-चेये स्पष्ट करे आमार मने पड़छे जापानि माल्लादेर हासि।

शनिवार दिने आकाश प्रसन्न, किन्तु समुद्रेर आक्षेप एखनो घोचे नि। आश्चर्य एइ, झड़ेर समय जाहाज एमन दोले नि झड़ेर पर येमन तार दोला। कालकेकार उत्पातके किछुतेइ येन से क्षमा करते पारछे ना, क्रमागतइ फुंपिये फुंपिये उठछे। शरीरेर अवस्थाटाओ अनेकटा सेइरकम; झड़ेर समय से एकरकम शक्त छिल, किन्तु परेर दिन भुलते पारछे ना तार उपर दिये झड़ गियेछे।

आज रविवार। जलेर रङ फिके हये उठेछे। एत दिन परे आकाशे एकटि पाखि देखते पेलुम—एइ पाखिगुलिइ पृथिवीर वाणी आकाशे वहन करे निये याय; आकाश देय तार आलो, पृथिवी देय तार गान। समुद्रेर या-किछु गान से केवल तार निजेर ढेउयेर—तार कोले जीव आछे यथेष्ट, पृथिवीर चेये अनेक बेशि, किन्तु तादेर कारो कण्ठे सुर नेइ; सेइ असंख्य बोवा जीवेर हये समुद्र निजेइ कथा कच्छे। डाङार जीवेरा प्रधानत शब्देर द्वाराइ मनेर भाव प्रकाश करे,

जलचरदेर भाषा हच्छे गति। समुद्र हच्छे नृत्यलोक, आर पृथिवी हच्छे शब्दलोक।

आज विकेले चारटे-पाँचटार समय रेङ्गुने पौँछिबार कथा। मङ्गलवार थेके शनिवार पर्यन्त पृथिवीते नाना खबर चलाचल करछिल, आमादेर जन्ये सेगुलो समस्त जमे रयेछे; वाणिज्येर धनेर मतो नय प्रतिदिन यार हिसाब चलछे, कोम्पानिर कागजेर मतो अगोचरे यार सुद जमछे।

२४ वैशाख १३२३

१३

* * *

सेदिन एकजन धनी जापानि ताँर बड़िते चा-पान-अनुष्ठाने आमादेर निमन्त्रण करेछिलेन। तोमरा ओकाकुरार Book of Tea पड़ेछ, ताते एइ अनुष्ठानेर वर्णना आछे। सेदिन एइ अनुष्ठान देखे स्पष्ट बुझते पारलुम, जापानिर पक्षे एटा धर्मानुष्ठानेर तुल्य। ए ओदेर एकटा जातीय साधना। ओरा कोन् आइडियाल के लक्ष्य करछे, एर थेके ता बेश बोझा याय।

कोबे थेके दीर्घ पथ मोटरयाने करे गिये प्रथमेइ एकटि बागाने प्रवेश करलुम—से बागान छायाते सौन्दर्ये एवं शान्तिते एकेबारे निविड़भावे पूर्ण। बागान जिनिसटा ये की ता एरा जाने। कतकगुलो काँकर फेले आर गाछ पुँते माटिर उपरे जियोमेट्रि कषाकेइ ये बागान करा बले ना, ता जापानि बागाने ढुकलेइ बोझा याय; जापानि चोख एवं हात दुइइ प्रकृतिर काछ थेके सौन्दर्येर दीक्षालाभ करेछे; येमन ओरा देखते जाने तेमनि ओरा गड़ते जाने। छायापथ दिये गिये, एक जायगाय गाछेर तलाय गर्त-करा एकटा पाथरेर मध्ये स्वच्छ जल आछे, सेइ जले आमरा प्रत्येके हात मुख धुलुम। तार परे, एकटा छोट्ट घरेर मध्ये निये गिये बेञ्चिर उपरे छोटो छोटो गोल गोल खड़ेर आसन पेते दिले, तार उपरे आमरा बसलुम। नियम हच्छे, एइखाने किछुकाल नीरव हये बसे थाकते हय। गृहस्वामीर सङ्गे यावामात्रइ देखा हय ना। मनके शान्त करे स्थिर करबार जन्ये क्रमे क्रमे निमन्त्रण करे निये याओया हय। आस्ते आस्ते दुटो-तिनटे घरेर मध्ये विश्राम करते करते, शेषे आसल जायगाय याओया गेल। समस्त घरइ निस्तब्ध, येन चिरप्रदोषेर छायावृत; कारओ मुखे कथा नेइ। मनेर उपर एइ छायाघन निःशब्द निस्तब्धतार सम्मोहन घनिये उठते थाके। अवशेषे धीरे धीरे गृहस्वामी एसे नमस्कारेर द्वारा आमादेर अभ्यर्थना करलेन।

घरगुलिते आसबाब नेइ बललेइ हय, अथच मने हय येन ए-समस्त घर की-एकटाते पूर्ण, गम्‌गम् करछे। एकटिमात्र छवि किम्बा एकटिमात्र पात्र कोथाओ आछे। निमन्त्रितेरा सेइटि बहुयत्ने देखे देखे नीरवे तृप्ति लाभ करेन। ये जिनिस यथार्थ सुन्दर तार चारि दिके मस्त एकटि विरलतार अवकाश थाका चाइ। भालो जिनिसगुलिके घेँषाघेँषि करे राखा तादेर अपमान करा—से येन सती स्त्रीके सतिनेर घर करते देओयार मतो। क्रमे क्रमे अपेक्षा क'रे क'रे, स्तब्धता ओ निःशब्दतार द्वारा मनेर क्षुधाके जाग्रत क'रे तुले, तार परे एइ रकम दुटि-एकटि भालो जिनिस देखाले से ये की उज्ज्वल हये ओठे, एखाने एसे ता स्पष्ट बुझते पारलुम। आमार मने पड़ल, शान्तिनिकेतन आश्रमे यखन आमि एक-एकदिन एक-एकटि गान तैरि करे सकलके शोनातुम, तखन सकलेरइ काछे सेइ गान तार हृदय सम्पूर्ण उद्‌घाटित करे दित। अथच सेइ सब गानकेइ तोड़ा बेँधे कलकताय एने यखन बान्धवसभाय धरेछि, तखन तारा आपनार यथार्थ श्रीके आवृत करे रेखेछे। तार मानेइ कलकतार बाड़िते गानेर चारि दिके फाँका नेइ—समस्त लोकजन, घरबाड़ि, काजकर्म, गोलमाल, तार घाड़ेर उपर गिये पड़ेछे। ये आकाशेर मध्ये तार ठिक अर्थटि बोझा याय, सेइ आकाश नेइ।

तार परे गृहस्वामी एसे बललेन, चा तैरि एवं परिवेशनेर भार विशेष कारणे तिनि ताँर मेयेर उपरे दियेछेन। ताँर मेये एसे नमस्कार क'रे चा-तैरिते प्रवृत्त हलेन। ताँर प्रवेश थेके आरम्भ करे चा-तैरिर प्रत्येक अङ्ग येन छन्देर मतो। धोओया मोछा, आगुन ज्वाला, चादानिर ढाका खोला, गरम जलेर पात्र नामानो, पेयालाय चा ढाला, अतिथिर सम्मुखे एगिये देओया, समस्त एमन संयम एवं सौन्दर्ये मण्डित ये से ना देखले बोझा याय ना। एइ चा-पानेर प्रत्येक आसबाबटि दुर्लभ ओ सुन्दर। अतिथिर कर्तव्य हच्छे, एइ पात्रगुलिके घुरिये घुरिये एकान्त मनोयोग दिये देखा। प्रत्येक पात्रेर स्वतन्त्र नाम एवं इतिहास। कत ये तार यत्न, से बला याय ना।

समस्त व्यापारटा एइ। शरीरके मनके एकान्त संयत करे निरासक्त-प्रशान्त-मने सौन्दर्यके निजेर प्रकृतिर मध्ये ग्रहण करा। भोगीर भोगोन्माद नय; कोथाओ लेशमात्र उच्छृंखलता वा अमिताचार नेइ; मनेर उपरतलाय सर्वदा येखाने नाना स्वार्थेर आघाते, नाना प्रयोजनेर हाओयाय, केवलइ ढेउ उठछे, तार थेके दूरे सौन्दर्येर गभीरतार मध्ये निजेके समाहित करे देओयाइ हच्छे एइ चा-पान अनुष्ठानेर तात्पर्य।

एइ थेके बोझा याय, जापानेर ये सौन्दर्यबोध से तार एकटा साधना, एकटा प्रबल शक्ति। विलास जिनिसटा अन्तरे बाहिरे केवल खरच कराय, तातेइ

दुर्वल करे। किन्तु, विशुद्ध सौन्दर्यबोध मानुषेर मनके स्वार्थ एवं वस्तुर सङ्घात थेके रक्षा करे। सेइजन्येइ जापानिर मने एइ सौन्दर्यरसबोध पौरुषेर सङ्गे मिलित हते पेरेछे।

एइ उपलक्ष्ये आर-एकटि कथा बलबार आछे। एखाने मेये पुरुषेर समीप्येर मध्ये कोनो ग्लानि देखते पाइ ने; अन्यत्र मेये पुरुषेर माझखाने ये-एकटा लज्जा-सङ्कोचेर आबिलता आछे ता नेइ। मने हय, एदेर मध्ये मोहेर एकटा आवरण येन कम। तार प्रधान कारण, जापाने स्त्री-पुरुषेर एकत्र विवस्त्र हये स्नान करार प्रथा आछे। एइ प्रथार मध्ये ये लेशमात्र कलुष नेइ तार प्रमाण एइ—निकटतम आत्मीयेराओ एते कोनो बाधा अनुभव करे ना। एमनि क'रे एखाने स्त्रीपुरुषेर देह परस्परेर दृष्टिते कोनो मायाके पालन करे ना। देह सम्बन्धे उभय पक्षेर मन खुब स्वाभाविक। अन्य देशेर कलुषदृष्टि ओ दुष्टवुद्धिर खातिरे आजकाल शहरे एइ नियम उठे याच्छे। किन्तु, पाड़ागाँये एखनो एइ नियम चलित आछे। पृथिवीते यत सभ्य देश आछे तार मध्ये केवल जापान मानुषेर देह सम्बन्धे ये मोहयुक्त, एटा आमार काछे खुब एकटा बड़ो जिनिस बले मने हय।

अथच आश्चर्य एइ ये, जापानेर छबिते उलङ्ग स्त्रीमर्ति कोथाओ देखा याय ना। उलङ्गतार गोपनीयता ओदेर मने रहस्यजाल विस्तार करे नि ब'लेइ एटा सम्भवपर हयेछे। आरओ एकटा जिनिस देखते पाइ। एखाने मेयेदेर कापड़ेर मध्ये निजेके स्त्रीलोक बले विज्ञापन देबार किछुमात्र चेष्टा नेइ। प्राय सर्वत्रइ मेयेदेर बेशेर मध्ये एमन किछु भङ्गी थाके याते बोझा याय, तारा विशेषभावे पुरुषेर मोहदृष्टिर प्रति दाबि रेखेछे। एखानकार मेयेदेर कापड़ सुन्दर, किन्तु से कापड़े देहेर परिचयके इङ्गितेर द्वारा देखाबार कोनो चेष्टा नेइ। जापानिदेर मध्ये चरित्रदौर्बल्य ये कोथाओ नेइ ता आमि बलछि ने, किन्तु स्त्री-पुरुषेर सम्बन्धके घिरे तुले प्राय सकल सभ्यदेशेइ मानुष ये-एकटा कृत्रिम मोह-परिवेष्टन रचना करेछे जापानिर मध्ये अन्तत तार एकटा आयोजन कम ब'ले मने हल, एवं अन्तत सेइ परिमाणे एखाने स्त्रीपुरुषेर सम्बन्ध स्वाभाविक एवं मोहमुक्त।

आर-एकटि जिनिस आमाके बड़ो आनन्द देय, से हच्छे जापानेर छोटो छोटो छेलेमेये। रास्ताय घाटे सर्वत्र एत बेशि परिमाणे एत छोटो छेलेमेये आमि आर कोथाओ देखि नि। आमार मने हल, ये कारणे जापानिरा फुल भालोबासे सेइ कारणेइ ओरा शिशु भालोबासे। शिशुर भालोबासाय कोनो कृत्रिम मोह नेइ; आमरा ओदेर फुलेर मतोइ निःस्वार्थ निरासक्तभावे भालोबासते पारि।

काल सकालेइ भारतवर्षेर डाक याबे, एवं आमराओ टोकिओ यात्रा करब।

एकटि कथा तोमरा मने रेखो—आमि येमन येमन देखछि तेमनि तेमनि लिखे चलेछि। ए केवल एकटा नतुन देशेर उपर चोख बुलिये याबार इतिहास मात्र। एर मध्ये थेके तोमरा केउ यदि अधिक परिमाणे, एमन-कि, अल्प परिमाणेओ 'वस्तुतन्त्रता' दाबि कर तो निराश हबे। आमार एइ चिठिगुलि जापानेर भूवृत्तान्तरूपे पाठ्यसमिति निर्वाचन करबेन ना, निश्चय जानि। जापान सम्बन्धे आमि या-किछु मतामत प्रकाश करे चलेछि तार मध्ये जापान किछु परिमाणे आछे, आमिओ किछु परिमाणे आछि, एइटे तोमरा यदि मने निये पड़ ता हलेइ ठकबे ना। भूल बलब ना, एमन आमार प्रतिज्ञा नय; या मने हच्छे ताइ बलब, एइ आमार मत्लब।

कोबे
२२ ज्येष्ठ १३२३

१५

* * *

आमि यखन जापाने छिलुम तखन एकटा कथा बारबार आमार मने एसेछे। आमि अनुभव करछिलुम,भारतवर्षेर मध्ये बाङालिर सङ्गे जापानिर एक जायगाय येन मिल आछे। आमादेर एइ बृहत् देशेर मध्ये बाङालिइ सब-प्रथमे नूतनके ग्रहण करेछे, एवं एखनो नूतनके ग्रहण ओ उद्भावन करबार मतो तार चित्तेर नमनीयता आछे।

तार एकटा कारण, बाङालिर मध्ये रक्तेर अनेक मिशल घटेछे; एमन मिश्रण भारतेर आर-कोथाओ हयेछे किना सन्देह। तार परे, बाङालि भारतेर ये प्रान्ते बास करे सेखाने बहुकाल भारतेर अन्य प्रदेश थेके विच्छिन्न हये आछे। बांला छिल पाण्डववर्जित देश। बांला एकदिन दीर्घकाल बौद्धप्रभावे अथवा अन्य ये कारणेइ होक आचारभ्रष्ट हये नितान्त एकघरे हये छिल, ताते करे तार एकटा सङ्कीर्ण स्वातन्त्र्य घटेछिल। एइ कारणेइ बाङालिर चित्त अपेक्षाकृत बन्धनमुक्त, एवं नूतन शिक्षा ग्रहण करा बाङालिर पक्षे यत सहज हयेछिल एमन भारतवर्षेर अन्य कोनो देशेर पक्षे हय नि। युरोपीय सभ्यतार पूर्ण दीक्षा जापानेर मतो आमादेर पक्षे अबाध नय; परेर कृपण हस्त थेके आमरा येटुकु पाइ तार बेशि आमादेर पक्षे दुर्लभ। किन्तु, युरोपीय शिक्षा आमादेर देशे यदि सम्पूर्ण सुगम हत ता हले कोनो सन्देह नेइ, बाङालि सकल दिक थेकेइ ता सम्पूर्ण आयत्त करत। आज नाना दिक थेके विद्याशिक्षा आमादेर पक्षे क्रमशइ दुर्मूल्य हये

उठछे, तबु विद्यालयेर सङ्कीर्ण प्रवेशद्वारे बाङालिर छेले प्रतिदिन माथा खोँड़ाखुँड़ि करे मरछे। वस्तुत, भारतेर अन्य सकल प्रदेशेर चेये बांलादेशे ये-एकटा असन्तोषेर लक्षण अत्यन्त प्रबल देखा याय तार एकमात्र कारण—आमादेर प्रतिहत गति। या-किछु इंरेजि तार दिके बाङालिर उद्‌बोधित चित्त एकान्त प्रबल वेगे छुटेछिल, इंरेजेर अत्यन्त काछे याबार जन्ये आमरा प्रस्तुत हयेछिलुम—ए सम्बन्धे सकल रकम संस्कारेर बाधा लङ्घन करबार जन्ये बाङालिइ सर्वप्रथमे उद्यत हये उठेछिल। किन्तु, एइखाने इंरेजेर काछेइ यखन बाधा पेल तखन बाङालिर मने ये प्रचण्ड अभिमान जेगे उठल सेटा हच्छे तार अनुरागेरइ विकार।

एइ अभिमानइ आज नवयुगेर शिक्षाके ग्रहण करबार पक्षे बाङालिर मने सकलेर चेये बड़ो अन्तराय हये उठेछे। आज आमरा ये-सकल कटतर्क ओ मिथ्या युक्ति द्वारा पश्चिमेर प्रभावके सम्पूर्ण अस्वीकार करबार चेष्टा करछि सेटा आमादेर स्वाभाविक नय। एइजन्येइ सेटा एमन सुतीव्र, सेटा व्याधिर प्रकोपेर मतो पीड़ार द्वारा एमन करे आमादेर सचेतन करे तुलेछे।

बाङालिर मनेर एइ प्रबल विरोधेर मध्येओ तार चलन-धर्मइ प्रकाश पाय। किन्तु, विरोध कखनो किछु सृष्टि करते पारे ना। विरोधे दृष्टि कलुषित ओ शक्ति विकृत हये याय। यत बड़ो वेदनाइ आमादेर मने थाक् ए कथा आमादेर भुलले चलबे ना ये, पूर्व ओ पश्चिमेर मिलनेर सिंहद्वार-उद्‌घाटनेर भार बाङालिर उपरेइ पड़ेछे। एइजन्येइ बांलार नवयुगेर प्रथम पथप्रवर्तक राममोहन राय। पश्चिमके सम्पूर्ण ग्रहण करते तिनि भीरुता करेन नि, केनना पूर्वेर प्रति ताँर श्रद्धा अटल छिल। तिनि ये पश्चिमके देखते पेयेछिलेन से तो शस्त्रधारी पश्चिम नय, वाणिज्यजीवी पश्चिम नय, से हच्छे ज्ञाने प्राणे उद्‌भासित पश्चिम।

जापान युरोपेर काछ थेके कर्मेर दीक्षा आर अस्त्रेर दीक्षा ग्रहण करेछे। तार काछ थेके विज्ञानेर शिक्षाओ से लाभ करते बसेछे। किन्तु, आमि यतटा देखेछि ताते आमार मने हय, युरोपेर सङ्गे जापानेर एकटा अन्तरतर जायगाय अनैक्य आछे। ये गूढ़ भित्तिर उपरे यरोपेर महत्त्व प्रतिष्ठित सेटा आध्यात्मिक। सेटा केवलमात्र कर्मनैपुण्य नय, सेटा तार नैतिक आदर्श। एइखाने जापानेर सङ्गे युरोपेर मूलगत प्रभेद। मनुष्यत्वेर ये साधना अमृतलोकके माने एवं सेइ अभिमुखे चलते थाके, ये साधना केवलमात्र सामाजिक व्यवस्थार अङ्ग नय, ये साधना सांसारिक प्रयोजन वा स्वजातिगत स्वार्थकेओ अतिक्रम क'रे आपनार लक्ष्य स्थापन करेछे, सेइ साधनार क्षेत्रे भारतेर सङ्गे यूरोपेर मिल यत सहज जापानेर सङ्गे तार मिल तत सहज नय। जापानि सभ्यतार सौध एक-महला—सेइ हच्छे तार समस्त शक्ति एवं दक्षतार निकेतन। सेखानकार भाण्डारे सब-चेये

बड़ो जिनिस या सञ्चित हय से हच्छे कृतकर्मता; सेखानकार मन्दिरे सब-चेये बड़ो देवता स्वादेशिक स्वार्थ। जापान ताइ समस्त युरोपेर मध्ये सहजेइ आधुनिक जर्मनिर शक्ति-उपासक नवीन दार्शनिकदेर काछ थेके मन्त्र ग्रहण करते पेरेछे; नीट्झेर ग्रन्थ तादेर काछे सब-चेये समादृत। ताइ आज पर्यन्त जापान भालो करे स्थिर करतेइ पारले ना—कोनो धर्मे तार प्रयोजन आछे कि ना, एवं धर्मटा की। किछुदिन एमनओ तार सङ्कल्प छिल ये, खृस्टानधर्म ग्रहण करबे। तखन तार विश्वास छिल ये, युरोप ये धर्मके आश्रय करेछे सेइ धर्म हयतो ताके शक्ति दियेछे, अतएव खृस्टानिके कामान-बन्दुकेर सङ्गे सङ्गेइ संग्रह करा दरकार हबे। किन्तु, आधुनिक युरोपे शक्ति-उपासनार सङ्गे सङ्गे किछुकाल थेके एइ कथाटा छड़िये पड़ेछे ये, खृस्टानधर्म स्वभावदुर्बलेर धर्म, ता वीरेर धर्म नय। युरोप बलते शुरू करेछिल, ये मानुष क्षीण तारइ स्वार्थ—नम्रता क्षमा ओ त्यागधर्म प्रचार करा। संसारे यारा पराजित से धर्मे तादेरइ सुबिधा; संसारे यारा जयशील से धर्मे तादेर बाधा। एइ कथाटा जापानेर मने सहजेइ लेगेछे। एइजन्ये जापानेर राजशक्ति आज मानुषेर धर्मबुद्धिके अवज्ञा करछे। एइ अवज्ञा आर-कोनो देश चलते पारत ना। किन्तु जापाने चलते पारछे तार कारण, जापाने एइ बोधेर विकाश छिल ना एवं सेइ बोधेर अभाव नियेइ जापान आज गर्व बोध करछे—से जानछे, परकालेर दाबि थेके से मुक्त एइजन्यइ इहकाले से जयी हबे।

जापानेर कर्तृपक्षेरा ये धर्मके विशेषरूपे प्रश्रय दिये थाकेन से हच्छे शिन्तो धर्म। तार कारण, एइ धर्म केवलमात्र संस्कारमूलक, आध्यात्मिकतामूलक नय। एइ धर्म राजाके एवं पूर्वपुरुषदेर देवता ब'ले माने। सुतरां स्वदेशासक्तिके सुतीव्र करे तोलबार उपाय-रूपे एइ संस्कारके व्यवहार करा येते पारे।

किन्तु, युरोपीय सभ्यता मङ्गोलीय सभ्यतार मतो एक-महला नय। तार एकटि अन्तर-महल आछे। से अनेक दिन थेकेइ Kingdom of Heaven के स्वीकार करे आसछे। सेखाने नम्र ये से जयी हय, पर ये से आपनार चेये बेशि हये ओठे। कृतकर्मता नय परमार्थइ सेखाने चरम सम्पदा। अन्तरेर क्षेत्रे संसार सेखाने आपनार सत्य मूल्य लाभ करे।

युरोपीय सभ्यतार एइ अन्तर-महलेर द्वार कखनो कखनो बन्ध हये याय, कखनो कखनो सेखानकार दीप ज्वले ना। ता होक, किन्तु ए महलेर पाका भित; बाइरेर कामान गोला एर देयाल भाङ्ते पारबे ना; शेष पर्यन्तइ ए टिंके थाकबे एवं एइ खानेइ सभ्यतार समस्त समस्यार समाधान हबे।

आमादेर सङ्गे युरोपेर आर-कोथाओ मिल यदि ना थाके, एइ बड़ो जायगाय मिल आछे। आमरा अन्तरतर मानुषके मानि—ताके बाइरेर मानुषेर चेये

बेशि मानि। ये जन्म मानुषेर द्वितीय जन्म तार जन्ये आमरा वेदना अनुभव करि। एइ जायगाय मानुषेर एइ अन्तर-महले युरोपेर सङ्गे आमादेर यातायातेर एकटा पदचिह्न देखते पाइ। एइ अन्तर-महले मानुषेर ये मिलन सेइ मिलनइ सत्य मिलन। एइ मिलनेर द्वार उद्घाटन करबार काजे बाङालिर आह्वान आछे, तार अनेक चिह्न अनेक दिन थेकेइ देखा याच्छे।

[सन् १९१६ में अमेरिका जाते समय रवीन्द्रनाथ ने कुछ महीने जापान में बिताये। ये पत्र इसी यात्रा-प्रवास में ३ मई से ७ सितम्बर, १९१६ तक लिखे गये। 'सबुजपत्र' मासिक में मई १९१६ से मई १९१७ तक प्रकाशित। रामानन्द चटर्जी को समर्पित पुस्तकाकार प्रकाशन जुलाई १९१९ में।]

पश्चिमयात्रीर डायारि

हारुना-मारु जाहाज
२४शे सेप्टेम्बर, १९२४

सकाल आटटा। आकाशे घन मेघ, दिगन्त वृष्टिते झापसा, बादलार हाओया खुँतखुँते छेलेर मतो किछुतेइ शान्त हते चाच्छे ना। बन्दरेर शानबाँधानो बाँधेर ओपारे दुरन्त समुद्र लाफिये लाफिये गर्जे उठछे, काके येन झुँटि धरे पेड़े फेलते चाय, नागाल पाय ना। स्वप्नेर आक्रोशे समस्त मनटा येमन बुकेर काछे गुमरे ठेले ठेले उठते थाके, आर रुद्ध कण्ठेर बद्धवाणी कान्ना हये हा हा करे फेटे पड़ते चाय, ऐ फेनिये-ओठा बोवार गर्जन शुने वृष्टिधाराय-पाण्डुवर्ण समुद्रके तेमनि बोध हच्छे एकटा अतलस्पर्श अक्षम क्षोभेर दुःस्वप्न।

यात्रार मुखे एइरकम दुर्योगके कुलक्षण बले मनटा म्लान हये याय। आमादेर बुद्धिटा पाका, से एकेले लक्षण-अलक्षण माने ना; आमादेर रक्तटा काँचा, से आदिमकालेर—तार भयभावनागुलो तर्कविचारके डिङिये डिङिये भेँके ओठे, ऐ पाथरेर बेड़ार ओपारेर अबुझ ढेउगुलोरइ मतो। बुद्धि आपन युक्तिर केल्लार मध्ये विश्वप्रकृतिर यत रकम भाषाहीन आभास-इङ्गितेर स्पर्श थेके सरे बसे थाके। रक्त थाके आपन बुद्धिर बेड़ार बाइरे; तार उपर मेघेर छाया पड़े, ढेउयेर दोला लागे; बातासेर बाँशिते ताके नाचाय, आलो-आँधारेर इशारा थेके से कत की माने बेर करे; आकाशे यखन अप्रसन्नता तखन तार आर शान्ति नेइ।

अनेकबार दूरदेशे यात्रा करेछि, मनेर नोङरटा तुलते खुब बेशि टानाटानि करते हयनि। एबार से किछु येन जोरे डाङा आँकड़े आछे। तार थेके बोध हच्छे, एतदिन परे आमार वयस हयेछे। ना-चलते चाओया प्राणेर कृपणता, सञ्चय कम हले खरच करते संकोच हय।

तबु मने जानि, घाटेर थेके किछु दूरे गेलेइ एइ पिछुटानेर बाँधन खसे यावे। तरुण पथिक बेरिये आसबे राजपथे। एइ तरुण एकदिन गान गेये छिल, "आमि चञ्चल हे, आमि सुदूरेर पियासि।" आजइ सेइ गान कि उजान हाओयाय फिरे गेल। सागरपारे ये-अपरिचिता आछे तार अवगुण्ठन मोचन करबार जन्ये कि कोनो उत्कण्ठा नेइ।

किछुदिन आगे चीन थेके आमार काछे निमन्त्रण एसेछिल। सेखानकार लोके आमार काछ थेके किछु शुनते चेयेछिल--कोनो पाका कथा। अर्थात्, से निमन्त्रण प्रवीणके निमन्त्रण।

दक्षिण आमेरिका थेके एबार आमार निमन्त्रण एल, तादेर शतवार्षिक उत्सवे योग देबार जन्ये। ताइ हालका हये चलेछि, आमाके प्रवीण साजते हबे ना। वक्तृता यत करि तार कुयाशार मध्ये आमि आपनि ढाका पड़े याइ। से तो आमार कविर परिचय नय।

गुटिर थेके प्रजापति बेरय तार निजेर स्वभावे। गुटिर थेके रेशमेर सुतो बेरते थाके वस्तुतत्वविदेर टानाटानिते। तखन थेके प्रजापतिर अवस्था शोकावह। आमार माझवयस पेरिये गेले पर आमि आमेरिकार युक्तराज्ये गेलुम; सेखाने आमाके धरे-बेँधे वक्तृता कराले, तबे छाड़ले। तार पर थेके हितकथार आसरे आमार आनागोनार आर अन्त नेइ। आमार कविर परिचयटा गौण हये गेल। पञ्चाश बछर काटियेछिलुम संसारेर बेदरकारि महले बेसरकारि भावे; मनुर मते यखन वने याबार समय तखन हाजिर हते हल दरकारेर दरबारे। सभा समिति आमार काछे सरकारि काज आदाय करते लेगे गेल। एतेइ बोध हच्छे आमार शनिर दशा।

कवि हन बा कलावित् हन ताँरा लोकेर फरमाश टेने आनेन—राजार फरमाश, प्रभुर फरमाश, बहु प्रभुर समावेशरूपी साधारणेर फरमाश। फरमाशेर आक्रमण थेके ताँदेर सम्पूर्ण निष्कृति नेइ। तार एकटा कारण, अन्दरे ताँरा मानेन सरस्वतीके, सदरे ताँदेर मेने चलते हय लक्ष्मीके। सरस्वती डाक देन अमृतभाण्डारे, लक्ष्मी डाक देन अन्नेर भाण्डारे। श्वेतपद्मेर अमरावती आर सोनार पद्मेर अलकापुरी ठिक पाशापाशि नेइ। उभयत्रइ यादेर टयाक्सो दिते हय, एक जायगाय खुशि हये आरेक जायगाय दाये पड़े, तादेर बड़ो मुशकिल। जीविका अर्जनेर दिके समय दिले भितर महलेर काज चले ना। येखाने ट्रामेर लाइन बसाते हबे सेखाने फुलेर बागानेर आशा करा मिथ्ये। एइ कारणे फुलबागानेर सङ्गे आपिसेर रास्तार एकटि आपोश हयेछे एइ ये, मालि जोगाबे फुल आर ट्रामलाइनेर मालेक जोगाबे अन्न। दुर्भाग्यक्रमे ये-मानुष अन्न जोगाय मर्त्यलोके तार प्रताप बेशि। कारण, फुलेर शख पेटेर ज्वालार सङ्गे जबरदस्तिते समकक्ष नय।

शुधु केवल अन्न-वस्त्र-आश्रयेर सुयोगटाइ बड़ो कथा नय। धनीदेर ये-टाका तार जन्ये तादेर निजेर घरेइ लोहार सिन्दुक आछे, किन्तु गुणीदेर ये-कीर्ति तार खनि येखानेइ थाक् तार आधार तो तादेर निजेर मनेर मध्येइ नय। से-कीर्ति सकल कालेर, सकल मानुषेर। एइजन्य तार एमन एकटि जायगा पाओया

चाइ येखाने थेके सकल देश-कालेर से गोचर हते पारे। विक्रमादित्येर राजसभार मञ्चेर उपर ये-कवि छिलेन सेदिनकार भारतवर्षे तिनि सकल रसिकमण्डलीर सामने दाँड़ाते पेरेछिलेन; गोड़ातेइ ताँर प्रकाश आच्छन्न हयनि। प्राचीनकाले अनेक भालो काव्यओ दैव्यक्रमे एइरकम उँचु डाङाते आश्रय पायनि ब'ले कालेर वन्यास्रोते भेसे गेछे, ताते कोनो सन्देह नेइ।

एकथा मने राखते हबे, याँरा यथार्थ गुणी ताँरा एकटि सहज कवच निये पृथिवीते आसेन। फरमाश ताँदेर गाये एसे पड़े, किन्तु मर्मे एसे विद्ध हय ना। एइजन्येइ ताँरा मारा यान ना, भावीकालेर जन्ये टिँके थाकेन। लोभे पड़े फरमाश यारा सम्पूर्ण स्वीकार करे नेय तारा तखनइ बाँचे, परे मरे। आज विक्रमादित्येर नवरत्नेर अनेकगुलिकेइ कालेर भाङाकुलो थेके खुँटे बेर करबार जो नेइ। ताँरा राजार फरमाश पुरोपुरि खेटेछिलेन, एइजन्ये तखन हाते हाते ताँदेर नगद पाओना निश्चयइ आर-सकलेर चेये बेशि छिल। किन्तु, कालिदास फरमाश खाटते अपटु छिलेन ब'ले दिङ्नागेर स्थुल हस्तेर मार ताँके विस्तर खेते हयेछिल। ताँकेओ दाये पड़े माझे माझे फरमाश खाटते हयेछे, तार प्रमाण पाइ मालविकाग्निमित्रे। ये दुइ तिनटि काव्ये कालिदास राजाके मुखे बलेछिलेन "ये आदेश, महाराज! या बलछेन ता-इ करब" अथच सम्पूर्ण आरेकटा किछु करेछेन, सेइगुलिर जोरेइ सेदिनकार राजसभार अवसाने ताँर कीर्तिकलापेर अन्त्येष्टि सत्कार हये यायनि—चिरदिनेर रसिकसभाय ताँर प्रवेश अवारित हयेछे।

मानुषेर काजेर दुटो क्षेत्र आछे—एकटा प्रयोजनेर, आर-एकटा लीलार। प्रयोजनेर तागिद समस्तइ बाइरेर थेके, अभावेर थेके; लीलार तागिद भितर थेके, भावेर थेके। बाइरेर फरमाशे एइ प्रयोजनेर आसर सरगरम हये ओठे, भितरेर फरमाशे लीलार आसर जमे। आजकेर दिने जनसाधारण जेगे उठेछे; तार क्षुधा विराट, तार दावि विस्तर। सेइ बहुरसनाधारी जीव तार बहुतरो फरमाशे मानवसंसारके रात्रिदिन उद्यत करे रेखेछे; कत तार आसबार आयोजन, पाइक बरकन्दाज, काड़ा-नाकड़ा-ढाकढोलेर तुमुल कलरव—तार "चाइ चाइ" शब्देर गर्जने स्वर्गमर्त्य विक्षुब्ध हये उठल। एइ गर्जनटा लीलार आसरेओ प्रवेश करे दावि प्रचार करते थाके ये, "तोमादेर वीणा, तोमादेर मृदङ्गओ आमादेर जययात्रार व्याण्डेर सङ्गे मिले आमादेर कल्लोलके घनीभूत करे तुलुक।" सेजन्ये से खुव बड़ो मजुरि आर जाँकालो शिरोपा दितेओ राजि आछे। आगेकार राजसभार चेये से हाँकओ देय बेशि, दामओ देय बेशि। सेइजन्ये ढाकिर पक्षे ए समयटा सुसमय, किन्तु वीणकारेर पक्षे नय। ओस्ताद हात जोड़ करे बले, "तोमादेर हट्टगोलेर काजे आमार स्थान नेइ; अतएव वरञ्च आमि चुप करे

थाकते राजि आछि, वीणाटा गलाय बेँधे जले झाँप दिये पड़े मरतेओ राजि आछि, किन्तु आमाके तोमादेर सदररास्ताय गड़ेर वाद्येर दले डेको ना। केनना, आमादेर उपरओयालार काछ थेके ताँर गानेर आसरेर जन्ये पूर्व हतेइ बायना पेये बसे आछि।" एते जनसाधारण नानाप्रकार कटु सम्भाषण करे, से बले, "तुमि लोकहित मान ना, देशहित मान ना, केवल आपन खेयालकेइ मान।" वीणकार बलते चेष्टा करे, "आमि आमार खेयालकेओ मानिने, तोमार गरजकेओ मानिने, आमार उपरओयालाके मानि।" सहस्ररसनाधारी गर्जन करे बले ओठे, "चुप"।

जनसाधारण बलते ये प्रकाण्ड जीवके बोझाय स्वभावतइ तार प्रयोजन प्रवल एवं प्रभूत। एइजन्ये स्वभावतइ प्रयोजनसाधनेर दाम तार काछे अनेक बेशि, लीलाके से अवज्ञा करे। क्षुधार समये बकुलेर चेये वार्ताकुर दाम बेशि हय। सेजन्ये क्षुधातुरके दोष दिइने; किन्तु बकुलके यखन वार्ताकुर पद ग्रहण करबार जन्ये फरमाश आसे तखन सेइ फरमाशकेइ दोष दिइ। विधाता क्षुधातुरेर देशेओ बकुल फुटियेछेन, एते बकुलेर कोनो हात नेइ। तार एकटिमात्र दायित्व आछे एइ ये, येखाने या-इ घटुक, ताके कारो दरकार थाक् बा ना थाक्, ताके बकुल हये उठतेइ हबे। झरे पड़े तो पड़बे, मालाय गाँथा हयतो ता-इ सइ। एइ कथाटाकेइ गीता बलेछेन, "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।" देखा गेछे, स्वधर्मे जगते खुब महत् लोकेरओ निधन हयेछे, किन्तु से निधन बाइरेर, स्वधर्म भितरेर दिक् थेके ताँके बाँचियेछे। आर एओ देखा गेछे, परधर्मे खुब क्षुद्र लोकेओ हठात् बड़ो हये उठेछे, किन्तु तार निधन भितरेर थेके, याके उपनिषद बलेन "महती विनष्टिः"।

ये-व्यक्ति छोटो तारओ स्वधर्म ब'ले एकटि सम्पद आछे। तार सेइ छोटो कौटोटिर मध्येइ सेइ स्वधर्मेर सम्पदटिके रक्षा करे से परित्राण पाय। इतिहासे तार नाम थाके ना, हयतो तार बदनाम थाकतेओ पारे, किन्तु तार अन्तर्यामीर खास-दरबारे तार नाम थेके याय। लोभे पड़े स्वधर्म बिकिये दिये से यदि परधर्मे डङ्का बाजाते याय तबे हाटे बाजारे तार नाम हबे। किन्तु, तार प्रभुर दरबार थेके तार नाम खोओया याबे।

एइ भुमिकार मध्ये आमार निजेर कैफियत आछे। कखनो अपराध करिनि ता नय। सेइ अपराधेर लोकसान ओ परिताप तीव्र वेदनाय अनुभव करेछि बलेइ सावधान हइ। झड़ेर समय ध्रुवताराके देखा याय ना ब'ले दिक्‌भ्रम हय। एक एक समये बहिरेर कल्लोले उद्भ्रान्त हये स्वधमर वाणी स्पष्ट करे शोना याय ना। तखन 'कर्तव्य' नामक दशमुख-उच्चारित एकटा शब्देर हुङ्कारे मन अभिभूत हये याय; भुले याइ ये, कर्तव्य ब'ले एकटा अवच्छिन्न पदार्थ नेइ,

आमार 'कर्तव्य'इ हच्छे आमार पक्षे कर्तव्य। गाड़िर चलाटा हच्छे एकटा साधारण कर्तव्य, किन्तु घोरतर प्रयोजनेर समयेओ घोड़ा यदि बले "आमि सारथिर कर्तव्य करब," बा चाका बले "घोड़ार कर्तव्य करब", तबे सेइ कर्तव्यइ भयावह हये ओठे। डिमक्रेसिर युगे एइ उड़े-पड़ा पड़े-पाओया कर्तव्येर भयावहता चारिदिके देखते पाइ। मानवसंसार चलबे, तार चलाइ चाइ; किन्तु तार चलार रथेर नाना अङ्ग—कर्मीराओ एकरकम करे ताके चालाच्छे, गुणीराओ एकरकम करे ताके चालाच्छे, उभयेर स्वानुवर्तितातेइ परस्परेर सहायता एवं समग्र रथेर गतिवेग; उभयेर कर्म एकाकार हये गेलेइ मोट कर्मटाइ पंगु हये याय।

एइ उपलक्ष्ये एकटि कथा आमार मने पड़छे। तखन लोकमान्य टिलक बेँचे छिलेन। तिनि ताँर कोनो एक दूतेर योगे आमाके पञ्चाश हाजार टाका दिये बले पाठियेछिलेन, आमाके युरोप येते हबे। से समये नन्-को-अपारेशन आरम्भ हयनि बटे किन्तु पोलिटिकाल आन्दोलनेर तुफान बइछे। आमि बललुम, 'राष्ट्रिक आन्दोलनेर काजे योग दिये आमि) युरोपे येते पारब ना।" तिनि बले पाठाइलेन, आमि राष्ट्रिक चर्चाय थाकि, ए ताँर अभिप्रायविरुद्ध। भारतवर्षेर ये-वाणी आमि प्रचार करते पारि सेइ वाणी वहन कराइ आमार पक्षे सत्य काज, एवं सेइ सत्य काजेर द्वाराइ आमि भारतेर सत्य सेवा करते पारि। आमि जानतुम, जनसाधारण टिलकके पोलिटिकाल नेतारूपेइ वरण करेछिल एवं सेइ काजेइ ताँके टाका दियेछिल। एइजन्य आमि तार पञ्चाशहाजार टाका ग्रहण करते पारिनि। तार परे, बोम्बाइ-शहरे ताँर सङ्गे आमार देखा हयेछिल। तिनि आमाके पुनश्च बललेन, "राष्ट्रनीतिक व्यापार थेके निजेके पृथक राखले तबेइ आपनि निजेर काज सुतरां देशेर काज करते पारबेन; एर चेये बड़ो आर-किछु आपनार काछे प्रत्याशाइ करिनि।" आमि बुझते पारलुम, टिलक ये गीतार भाष्य करेछिलेन से-काजेर अधिकार ताँर छिल; सेइ अधिकार महत् अधिकार।

अनेक धनी आछे यारा निजेर भोगेइ निजेर अर्थेर व्यय ओ अपव्यय करे थाके। साधारणेर दाबि तादेर भोगेर तहबिले यदि भाङन धराते पारे ताते दुःखेर कथा किछुइ नेइ। अवकाश पदार्थटा हच्छे समयधन—संसारी एइ धनटाके निजेर घरसंसारेर चिन्ताय ओ काजे लागाय, आर कुँड़े ये से कोनो काजे लागाय ना। एइ संसारी बा कुँड़ेर अवकाशेर उपर लोकहितेर दोहाइ दिये उपद्रव करले दोषेर हय ना। आमार अवकाशेर अनेकटा अंश आमि कुँड़ेमितेइ खाटाइ, बाइरे थेके केउ केउ एमन सन्देह करे। ए कथाटा जाने ना ये, कुँड़ोमिटाइ आमार काजेर प्रधान अङ्ग। पेयालार यतटा चीनेमाटि दिये गड़ा ततटाइ तार प्रधान अंश नय, वस्तुत सेटाइ तार गौण; यतटा तार फाँक ततटाइ तार

मुख्य अंश। ऐ फाँकटाइ रसे भरति हय, पोड़ा चीनेमाटि उपलक्ष्य मात्र। घरेर खुँटिटा येमन गाछ ठिक तेमन जिनिस नय। अर्थात् से केवलमात्र निजेर तलाटार माटितेइ दाँड़िये थाके ना। तार दृश्यमान गुँड़ि यतटुकु माटि जुड़े थाके तार अदृश्य शिकड़ तार चेये अनेक बेशि माटि अधिकार करे ब'लेइ गाछटा रसेर जोगान पाय। आमादेर काजओ सेइ गाछेर मतो; फाँका अवकाशेर तला थेके गोपने से रस आदाय करे नेय। दशे मिले तार सेइ विधिदत्त अवकाशेर लाखेराजेर उपर यदि खाजना बसाय ताहले तार सेइ काजटाकेइ निःस्व करा हते थाके। एइजन्येइ देशेर समस्त सामयिक पत्रे हरिर लुठेर जोगान देबार जन्ये अन्य कोनो देशेइ कविके निये एमनतरो टाना हे चड़ा करे ना।

२ रा अक्टोबर, १९२४

आमि बलछिलुम, मेयेरा पर्दानशिन। ये कृत्रिम पर्दा दिये कृपण पुरुष तादेर अदृश्य करे लुकिये राखे आमि सेइ बर्बर पर्दाटार कथा बलछिने; निजेके सुसमाप्तभावे प्रकाश करबार जन्येइ तारा ये-सब आवरणके सहजपटुत्वे आभरण करे तुलेछे आमि तार कथाइ बलछि। एइ ये निजेर देहके, गृहके, आचरणके, मनके नाना वर्ण दिये, भङ्गी दिये, संयम दिये, अनुष्ठान दिये, निजेर विचित्र एकटि वेष्टनके तारा सुसज्जित करते पेरेछे, एर कारण, तारा स्थितिर अवकाश पेयेछे। स्थितिर मूल्यइ हच्छे तार आवरणेर ऐश्वर्ये, तार चारिदिकेर दाक्षिण्ये, तार आभासे, व्यञ्जनाय, तार हते ये-समय आछे सेइ समयटार मनोहर वैचित्र्ये। सबुरे मेओया फले, केनना, मेओया ये प्राणेर जिनिस, कलेर फरमाशे ताके ताड़ाहुड़ो करे गड़े तोला याय ना। सेइ बहुमूल्य सबुरटा हच्छे स्थितिर घरेर जिनिस। एइ सबुरटाके यदि सरस एवं सफल करते ना पारा गेल तबे तार मतो आपद आर नेइ। मरुभूमि अनावृत, तार अवकाशेर अभाव नेइ अथच सेइ अवकाश रिक्त; एइ कठिन नग्नता पीड़ा देय, किन्तु, येखाने पोड़ो जमि पोड़ो हय नेइ, सेखाने से फसले ढाका, फुले विचित्र; सेखाने तार सबुज ओड़ना बातासे दुले उठछे। ये-पथिक पथे चले सेखानेइ से पाय तार तृष्णार जल, क्षुधार अन्न, तार आरामेर छाया, क्लान्तिर शुश्रुषा। सेखानकार स्थितिर पूर्णताइ तार गतिर सहाय; अवारित मरुभूमि सबचेये बाधा। नारी स्वभावतइ ये-स्थिति पेयेछे बसे बसे

धीरे धीरे सेइ स्थितिके राङ्गिये तुले आपन हृदयरसे रसिये निये ताइ दिये आपन बुकेर काँचलि आपन मुखेर घोमटा बानियेछे। एइ ढाकातेइ से आपनार ऐश्वर्य प्रकाश करेछे, पुष्पपल्लवेर आवरणेइ येमन लतार ऐश्वर्य।

किन्तु हठात् आजकाल पाश्चात्त्यसमाजे शुनते पाच्छि, नारी बलछे, "आमि मायार आवरण राखब ना, पुरुषेर सङ्गे व्यवधान घुचिये देब। आमि हब विज्ञानेर चाँद; तार चारदिके वायुमण्डल नेइ, रङ नेइ, कोमल श्यामलेर चञ्चल विचित्रता नेइ, तार कालो कालो क्षतगुलोर उपरे पर्दा नेइ, आमिओ हब तेमनि। एतदिन याके बले एसेछि लज्जा याके बले एसेछि श्री, आज ताते आमार पराभव घटछे; से सब बाधा वर्जन करब। पुरुषेर चाले तार समान ताले पा फेले तार समान रास्ताय चलब।" एमन कथा ये एकदल स्त्रीलोकेर मुख दिये बेर हल, एटा सम्भव हल की करे। एते बोझा याय, पुरुषेर प्रकृतिर मध्ये एकटा परिवर्तन एसेछे। मेयेके से चाच्छे ना। एमन नय ये से हठात् सन्न्यासी हये उठेछे; ठिक तार उलटो—से हयेछे विषयी; मेयेके से कड़ाय गण्डाय बुझे निते चाय; कड़ाय गण्डाय यार हिसाब मेले ना ताके से मने करे बाजे जिनिस, ताके से मने करे ठका। से बले, "आमि चोख खुले तन्न तन्न करे देखब।" अर्थात्, ध्यानेर देखाय या मनके भरिये तोले सेटाके से जाने फाँकि। किन्तु, पुरुषेर संसारे सत्यकार मेये तो केवलमात्र चोखेर देखार नय, से तो ध्यानेर जिनिसओ बटे। से ये शरीरी अशरीरी दुये मिलिये, पृथिवी येमन निजेर माटि धुलो एवं निजेर चारदिकेर असीम आकाश ओ वायुमण्डल मिलिये। मेयेर या अशरीरी ता ये शरीरी मेयेके घिरे आछे; तार ओजन नेइ किन्तु तार वर्ण आछे, भङ्गी आछे; ता ढाके अथच ता प्रकाश करे।

पाश्चात्त्य सभ्यताय यारा उन्नतिर बड़ाइ करे, तारा बलबे, एइ मेयेलिर प्रति असहिष्णुताय चलार उत्साह प्रकाश पाय। आमार मने हय, एटाइ थामबार पूर्वलक्षण। चलार छन्दइ थाके ना यदि स्थितिर सङ्गे तार समस्त आपोष एकेबारे मिटे याय। गाड़िटार घोड़ाओ चलछे, सारथियो चलछे, यात्रीराओ चलछे, गाड़िर जोड़ खुले गिये तार अंशप्रत्यंशगुलोओ चलछे, एके तो चला बले ना; ए हच्छे मरणोन्मुख चलार उन्मत्त प्रलाप, सांघातिक थामार भूमिका। मेयेरा समाजेर चलाकेइ स्थितिर छन्द देय—से सुन्दर।

एकदल मेये बलते शुरु करेछे ये, "मेये हओयाते आमादेर अगौरव, आमादेर क्षति। अर्थात्, आमादेर आत्मप्रकाशेर धाराय पुरुषेर सङ्गे प्रभेदटाते पीड़ा पाच्छि।" एर थेके बोध हच्छे, एकदिन ये पुरुष साधक छिल एखन से हयेछे वणिक। वणिक बाइरेर दिके यदिबा चले, अन्तरेर दिके आपनार सञ्चयेर

बोझार काछे सतर्क हये पड़े आछे। तार स्थिति सारबान किन्तु सुन्दर नय। तार कारण मानुषेर सम्बन्धके हृदयमाधुर्ये सत्य क'रे पूर्ण क'रे तोला तार स्थितिर धर्म नय; धनसञ्चयेर तलाय मानुषेर सम्बन्धके चापा दिये च्यापटा करे देओयाइ हयेछे तार काज। सुतारां, से ये केवल चले ना ता नय, आपन स्थितिके भावग्रस्त नीरस असुन्दर करे। अंकेर कोठार मध्ये याके धरे ना ताके से आवर्जनार मध्ये फेले देय।

पुरुष एकदिन छिल मिस्टिक, छिल अतल रसेर डुबारि, छिल ध्यानी। एखन से हयेछे मेयेदेर मतोइ संसारी। केवल प्रभेद एइ ये, तार संसारे आलो नेइ, बातास नेइ, आकाश नेइ, वस्तुपिण्डे समस्त निरेट। से भारि व्यस्त। एइ व्यस्ततार मध्ये सेइ आकाश से पाय ना ये-आकाशे आपन कल्पनाके रूपे रसे मुक्ति दिते पारे।

आजकालकार कवि आपन काव्ये, शिल्पी आपन कारुते, अनिर्वचनीयके सुन्दरके अवज्ञा प्रकाश करते आरम्भ करेछे। एटा कि पौरुषेर उलटो नय। पुरुषइ तो चिरदिन सुन्दरेर काछ थेके आपन शक्तिर जयमाल्य कामना करेछे। मिस्टिक् पुरुष ध्यानशक्तिते, तार फलाशक्तिविहीन साधनाय, वास्तवेर आवरण एकटार पर एकटा यतइ मोचन करेछे ततइ रसेर लोके, अध्यात्मलोके से भूमार परिचय पेयेछे। आज केवलइ से थलिर पर थलिर मुख बाँधछे, सिन्दुकेर पर सिन्दुके ताला लागाच्छे; आज तार सेइ मुक्ति नेइ ये-मुक्तिर मध्ये सुन्दर आपन सिंहासन रचना करे। ताइ तार मेयेरा बलछे, "आमरा पुरुष साजब।" ताइ तार काव्यसरस्वती बलछे, वीणार तारगुलोके यत्न करे ना बाँधले ये-सुरटा झन् झन् करते थाके सेइटेइ खाँटि वास्तवेर सुर, उपेक्षार उच्छृङ्खल दुरन्तपनाय रूपेर मध्ये ये-विपर्यय ये-छिन्नभिन्नता घटे सेइटेइ आर्ट।

७इ फेब्रुयारि, १९२५
क्राकोभिया जाहाज

मास्येल्स् बन्दरे नेमे रेले चड़लेम। पश्चिमदेशेर एकटा परिचय पेलेम भोजन-कामराय। आकाशेर ग्रहमालार आवर्तनेर मतो थालार पर थाला घुरे घुरे आसछे, आर भोज्येर पर भोज्य।

घरेर दाबि पथेर उपर चले ना। घरे आछे समयेर अवसर, घरे आछे स्थानेर अवकाश। सेखाने जीवनयात्रार आयोजनेर भार बेशि करे जमे ओठबार बाधा नेइ। चलति पथेर उपकरणभार यथासम्भव हालका कराइ साधारण

लोकेर पक्षे सङ्गत। हरिणेर शिङ बटगाछेर डाल-आवडालेर मतो अत अधिक, अत बड़ो, अत भारि हले सेटा जङ्गम प्राणीर पक्षे बेहिसाबि हय।

चिरकाल, विशेषत पूर्वकाले, राजा-राजड़ा आमीर-ओमराओरा भोगेर ओ ऐश्वर्येर बोझाके सर्वत्र सकल अवस्थातेइ भरपूरभावे टेने बेड़ियेछे। संसारेर उपर तादेर आबदार अत्यन्त बेशि। से आबदार संसार मेने नियेछे, केनना एदेर संख्या तेमन बेशि नय। रेलगाड़िर भोजनशालाय खालार संख्या, भोज्येर परिमाण ओ वैचित्र्य, परिचर्यार व्यवस्था, एत बाहुल्यमय ये, पूर्व कालेर राजकीय सम्प्रदायइ पथिक-अवस्थातेओ ता दाबि करते पारत। एखन जनसाधारणेर सकलेर जन्ये एइ आयोजन।

भोगेर एत बड़ो बाहुल्य सकल मानुषेरइ अधिकार आछे, एइ कथाटार आकर्षण अति भयानक एइ आकर्षणे देशजोड़ो मानुषेर सिंधकाठि विश्वभाण्डारेर देयाल फुटो करते उद्यत हय; लुब्ध सभ्यतार एइ उपद्रव सर्वनेशे।

येटा बाहुल्य ताते छोटो बड़ो कोनो मानुषेर कोनो अधिकार नेइ, एइ कथाटा गत युद्धेर समय इंलण्ड फ्रान्स जर्मनि प्रभृति युद्धरत देशके अनेकदिन धरेइ स्वीकार करते हल। तखन तारा आपनार सहज आयोजनेर अनुपाते निजेर भोगके संयम करेछिल। तखन तारा बुझेछिल, मानुषेर आसल प्रयोजनेर भार खुब बेशि नय। युद्ध-अवसाने से-कथाटा भुलते देरि हयनि।

अनतिप्रयोजनीयके प्रयोजनीय करे तोला यखन देशबन्धु सकल लोकेरइ नित्य साधना हय तखन विश्वव्यापी दस्युवृत्ति अपरिहार्य हये ओठे। लोकसंख्या-वृद्धिर समस्या निये पाश्चात्येरा अनेकेइ उद्वेग प्रकाश करे थाकेन। समस्याटि कठिन हबार प्रधान कारण हच्छे, सर्वसाधारणेरइ भोगबाहुल्येर प्रति दाबि। एत बड़ो व्यापक दाबि मेटाते गेले धर्मरक्षा करा चले ना, मानुषके मानुषपीड़क हतेइ हय। सेइ पीड़नकार्ये भालो करे हात पाकानो हय दूरस्थ अनात्मीय जातिर उपर दिये। एर विपद एइ ये, जीवनक्षेत्रेर ये-किनारातेइ धर्मबुद्धिते आगुन लागानो होक ना, से-आगुन सेइखानेइ थेमे थाके ना। भोगी स्वभावतइ ये-निष्ठुरतार साधना करे तार सीमा नेइ, कारण, आत्म-भरिता कोथाओ एसे बलते जाने ना, "एइबार बस् हयेछे।" वस्तुगत आयोजनेर असङ्गत बाहुल्यकेइ ये-सभ्यतार प्रधान लक्षण बले माना हय से-सभ्यता अगत्याइ नरभुक्। नररक्त-शोषणेर विश्वव्यापी चर्चा एकदिन आत्महत्याय ठेकबेइ, एते आर सन्देह करा चले ना।

रेलगाड़िर भोजनशालाय एकदिके येमन देखा गेल भोगेर बाहुल्य, आर-एकदिके तेमनि देखलेम कर्मेर गतिवेग। समय अल्प, आरोही अनेक, भोज्येर

वैचित्र्य प्रचुर, भोजेर उपकरण विस्तर—ताइ परिवेषणकर्मेर अभ्यास अति आश्चर्य द्रुत हये उठेछे। परिवेषणेर यन्त्रटाते खुबइ प्रबल जोरे दम देओया हयेछे। येटा एइ परिवेषणे देखा गेल पाश्चात्येर समस्त कर्मचालनार मध्येइ सेइ क्षिप्रवेग।

ये-यन्त्र बाहिरेर व्यवहारेर जन्य तार गतिर छन्द दम दिये अनेकदूर पर्यन्त बाड़िये तोला चले। किन्तु, आमादेर प्राणेर, आमादेर हृदयेर छन्देर एकटा स्वाभाविक लय आछे; तार उपरे द्रुत प्रयोजनेर जबरदस्ति खाटे ना। द्रुत चलाइ ये द्रुत एगनो से कथा सत्य हते पारे कलेर गाड़िर पक्षे, मानुषेर पक्षे ना। मानुषेर चलार सङ्गे हओया आछे; सेइ चलाते हओयाते मिल क'रे चलाइ मानुषेर चला, कलेर गाड़िर से-उपसर्ग नेइ। आपिसेर जागिदे मुहूर्तेर मध्ये एक ग्रासेर जायगाय चार ग्रास खाओया असम्भव नय। किन्तु, सेइ चार ग्रास घड़ि धरे हजम करा कलेर मनिबेर हुकुमे हते पारे ना। ग्रामोफोनेर कान यदि मले देओया याय तबे ये-गान गाइते चार मिनिट लेगेछिल ताके शुनते आध मिनिटेर बेशि ना लागते पारे, किन्तु सङ्गीत हये ओठे चीत्कार। रसभोग करबार जन्ये रसनार निजेर एकटा निर्धारित समय आछे; सन्देशके यदि कुइनिनेर बड़िर मतो टप् करे गेला याय ताहले वस्तुटाके पाओया याय, वस्तुर रस पाओया याय ना। तीरवेगे बाइसिक्ल् छुटिये यदि पदातिक बन्धुर चादर धरि ताहले बाइसिक्लेर जयपताका हाते आसबे, किन्तु बन्धुके बुके पाबार उपाय सेटा नय। कलेर वेग बाइरेर दरकारे काजे लागे, अन्तरेर दाबि मेटाबार बेलाय अन्तरेर छन्द ना। मानले चले ना।

बाइरेर वेग अन्तरेर छन्दके अत्यन्त बेशि पेरोय कखन्। यखन बाह्य प्रयोजनेर बड़ो बाड़ बाड़े। तखन मानुष पड़े पिछिये, कलेर सङ्गे से ताल राखते पारे ना। युरोपे सेइ मानुष-व्यक्तिटि दिने बहु दूरे पड़े गेल; कल गेल एगिये; ताकेइ सेखानकार लोके बले अग्रसरता, प्रोग्रेस्।

सिद्धि, याके इंरेजिते बले साक्सेस्, तार वाहन यत दौड़े चले ताइ फल पाय। युरोपेर देशे देशे राष्ट्रनीतिर युद्धनीतिर वाणिज्यनीतिर तुमुल घोड़दौड़ चलछे जले स्थले आकाशे। सेखाने बाह्य प्रयोजनेर गरज अत्यन्त बेशि हये उठल, ताइ मनुष्यत्वेर डाक शुने केउ सबुर करते पारछे ना। वीभत्स सर्वभुक् पेटुकतार उद्योगे पलिटिक्स नियत व्यस्त। तार गाँट-काटा व्यवसायेर परिधि पृथिवीमय छड़िये पड़ेछे। पूर्वकाले युद्धविग्रहेर युपद्धतिते धर्मबुद्धि येखाने माझे माझे बाधा खाड़ा करे रेखेछिल, डिप्लमासि सेखाने आज लाफ-मारा हार्ड्ल रेस् खेले चलेछे। सबुर सय ना ये। विषवायुवाण युद्धेर अस्त्ररूपे यखन एक पक्ष व्यवहार करले

तखन अन्य पक्ष धर्मबुद्धिर दोहाइ पाड़ले। आज सकल पक्षइ विषेर सन्धाने उठे पड़े लेगेछे; युद्धकाले निरस्त्र पुरवासीदेर प्रति आकाश थेके अग्निवाण वर्षण निये प्रथमे शोना गेल धर्मबुद्धिर निन्दावाणी। आज देखि, धार्मिकेर स्वयं सामान्य कारणे पल्लीवासीदेर प्रति कथाय कथाय पापवज्र सन्धान करछे। गत युद्धेर समय शत्रुर सम्बन्धे नाना उपाये सज्ञाने सचेष्टभावे सत्यगोपन ओ मिथ्याप्रचारेर शयतानि अस्त्र व्यवहार प्रकाण्डभावे चलल। युद्ध थेमेछे किन्तु सेइ शयतानि आजओ थामेनि। एमनकि, अक्षम भारतवर्षकेओ प्रबलेर प्रपागाण्डा रेयात करे ना। एइसब नीति हच्छे सबुर-ना-करा-नीति; एरा हल पापेर द्रुत चाल; एरा प्रति पदेइ बाहिरे जितछे बटे किन्तु से जित अन्तरेर मानुषके हारिये दिये। मानुष आज निजेर माथा थेके जयमाल्य खुले निये कलेर गलाय परिये दिले। रसातल थेके दानव बलछे, "बाहबा!"—

क्राकोभिया जाहाज

११इ फेब्रुयारि, १९२५

वैष्णवी आमाके बलेछिल, "कार बाड़िते वैरागिर कखन अन्न जोटे तार ठिकाना नेइ; से-अन्ने निजेर जोर दाबि खाटे ना, ताइ तो बुझि ए अन्न तिनिइ जुगिये दिलेन।" एइ कथाइ काल बलछिलेम, बाँधा पाओयाय पाओयार सत्य म्लान हये याय। ना-पाओयार रसटा ताके घिरे थाके ना। भोगेर मध्ये केवलमात्रइ पाओया, पशुर पाओया; आर सम्भोगेर मध्ये पाओया ना-पाओया दुइ-इ मिलेछे, से हल मानुषेर।

छेलेबेला हतेइ विधार पाका बासा थेके विधाता आमाके पथे बेर करे दियेछेन। अकिञ्चन वैरागिर मतो अन्तरेर रास्ताय एका चलते चलते मनेर अन्न यखन-तखन हठात् पेयेछि। आपन-मने केवलइ कथा बले गेछि, सेइ हल लक्ष्मीछाड़ार चाल। बलते बलते एमन किछु शुनते पाओया याय या पूर्वे शुनिनि। बलार स्रोते यखन जोयार आसे तखन कोन् गुहार भितरकार अजाना सामग्री भेसे भेसे घाटे एसे लागे। मने हय ना, ताते आमार बाँधा बराद्दर जोर आछे। सेइ आचमका पाओयार विस्मयइ ताके उज्ज्वल करे तोले, उल्का येमन हठात् पृथिवीर वायुमण्डले एसे आगुन हये ओठे।

पृथिवीते आमार प्रेयसीदेर मध्ये यिनि सर्वकनिष्ठ ताँर वयस तिन। इनिये विनिये कथा बले येते ताँर एक मुहूर्त विराम नेइ। श्रोता यारा, तारा उपलक्ष्य;

वस्तुत कथागुलो निजेकेइ निजे शोनानो; येमन वाष्पराशि घुरते घुरते ग्रहतारारूपे दाना बेंधे ओठे तेमनि कथाबलार वेगे आपनिइ तार सजाग मने चिन्तार सृष्टि हते थाके। बाइरे थेके मास्टारेर वाचालता यदि एइ स्रोतके ठेकाय ताहले तार आपन चिन्ताधारार सहज पथ बन्ध हये याय। शिशुर पक्षे अतिमात्राय पुँथिगत विद्याटा भावनार स्वाभाविक गतिके आटकिये देओया। विश्वप्रकृति दिनरात्रि कथा कइछे, सेइ कथा यखन शिशुर मनके कथा कओयाय तखन तार सेइ आपन कथाइ तार सब चेये भालो शिक्षा प्रणाली। मास्टार निजे कथा बले, आर छेलेके बले "चुप"। शिशुर चुप-करा मनेर उपर बाइरेर कथा बोझार मतो एसे पड़े, खाद्येर मतो नय। ये-शिशुशिक्षाविभागे मास्टारेर गलाइ शोना याय, शिशुरा थाके नीरव, सेखाने आमि बुझि मरुभूमिर उपर शिलवृष्टि हच्छे।

याइ होक, मास्टारेर हाते बेशि दिन छिलेम ना बले आमि या-किछु शिखेछि से केवल बलते-बलते। बाइरे थेकेओ कथा शुनेछि, बइ पड़ेछि; से कोनोदिनइ सञ्चय करबार मतो शोना नय, मुखस्थ करबार मतो पड़ा नय। किछु-एकटा विशेष करे शेखबार जन्ये आमार मनेर धारार मध्ये कोथाओ बांध बांधिनि। ताइ सेइ धारार मध्ये या एसे पड़े ता केवलइ चलाचल करे, ठांइ बदल करते करते विचित्र आकारे तारा मेले मेशे। एइ मनोधारार मध्ये रचनार घूर्णि यखन जागे तखन कोथा हते कोन् सब भासा कथा कोन् प्रसङ्गमूर्ति धरे एसे पड़े ता कि आमि जानि।

अनेके हयतो भावेन, इच्छा करलेइ विशेष विषय अवलम्बन करे आमि विशेष-भावे बलते वा लिखते पारि। याँरा पाका वक्ता वा पाका लेखक ताँरा पारेन; आमि पारिने। यार आछे गोयाल, फरमाश करलेइ विशेष बाँधा गोरुटाके बेछे एने से दुइते पारे। आर यार आछे अरण्य, ये-गोरुटा यखन एसे पड़े ताके नियेइ तार उपस्थितमतो कारबार। आशु मुखुज्जे मशाय बललेन, विश्व-विद्यालये वक्तृता करते हबे। तखन तो भये भये बललेम, आच्छा। तार परे यखन जिज्ञासा करलेन विषयटा की, तखन चोख बुजे बले दिलेम, साहित्य सम्बन्धे। साहित्य सम्बन्धे की-ये बलब आगेभागे ता जानबार शक्तिइ छिल ना। एकटा अन्ध भरसा छिल ये, बलते बलतेइ विषय गड़े उठबे। तिनदिन धरे बकेछिलेम। शुनेछि अनेक अध्यापकेर पछन्द हल ना। विषय एवं विश्वविद्यालय दुइयेरइ मर्यादा राखते पारिनि। ताँदेर दोष नेइ, सभास्थले यखन एसे दाँड़ालेम तखन मनेर मध्ये विषय बले कोनो बालाइ छिल ना। विषय नियेइ याँदेर प्रतिदिनेर कारबार विषयहीनेर अकिञ्चनता ताँदेर काछे फस् करे धरा पड़े गेल।

एबार इटालिते मिलान शहरे आमाके वक्तृता दिते हयेछिल। अध्यापक फर्मिकि बारबार जिज्ञासा करलेन, विषयटा की? की करे ताँके बलि ये, ये-अन्तर्यामी ता जानेन ताँके प्रश्न करले जबाब देन ना। ताँर इच्छा छिल, यदि एकटा चुम्बक पाओया याय तबे आगेइ सेटा तर्जमा करे छापिये राखबेन। आमि बलि, सर्वनाश। विषय यखन देखा देबे चुम्बक तार परेइ सम्भव। फल धरबार आगेइ तार आँठि खुँजे पाइ की उपाये। वक्तृता सम्बन्धे आमार भद्र अभ्यास नेइ, आमार अभ्यास लक्ष्मीछाड़ा। भेवे बलते पारिने, बलते बलते भावि, मौमाछिर पाखा येमन उड़ते गिये गुन्गुन् करे। सुतरां, अध्यापक हबार आशा आमार नेइ, एमन कि, छात्र हबारओ क्षमतार अभाव।

एमनि करे दैवक्रमे वैरागिर तत्त्वकथाटा बुझे नियेछि। यारा विषयी तारा विश्वके बाद दिये विशेषके खोँजे। यारा वैरागि तारा पथे चलते चलतेइ विश्वेर सङ्गे मिलिये विशेषके चिने नेय। उपरि-पाओना छाड़ा तादेर कोनो बांधापाओनाइ नेइ। विश्वप्रकृति स्वयं ये एइ लक्ष्यहीन वैरागि—चलते चलतेइ तार या-किछु पाओया। जड़ेर रास्ताय चलते चलते से हठात् पेयेछे प्राणके, प्राणेर रास्ताय चलते चलते से हठात् पेयेछे मानुषके। चला बन्ध करे यदि से जमाते थाके ताहलेइ सृष्टि हये ओठे जञ्जाल। तखनइ प्रलयेर झाँटार तलब पड़े।

विश्वेर मध्ये एकटा दिक आछे येटा तार स्थावर वस्तुर अर्थात् विषयसम्पत्तिर दिक नय; येटा तार चलच्चित्तेर नित्य प्रकाशेर दिक। येखाने आलो छाया सुर, येखाने नृत्य गीत वर्ण गन्ध, येखाने आभास इङ्गित। येखाने विश्वबाउलेर एकतारार झंकार पथेर बाँके बाँके बेजे बेजे ओठे, येखाने सेइ वैरागिर उत्तरीयेर गेरुया रङ बातासे बातासे ढेउ खेलिये उड़े याय। मानुषेर भितरकार वैरागिओ आपन काव्ये गाने छविते तारइ जबाब दिते दिते पथे चले, तेमनि तरोइ गानेर नाचेर रूपेर रसेर सङ्गीते। विषयी लोक आपन खाताञ्चिखानाय बसे यखन ता शोने तखन अवाक हये जिज्ञासा करे, "विषयटा की। एते मुनफा की आछे। एते की प्रमाण करे।" अधरके धरार जायगा से खोंजे तार मुखबांधा थलिते, तार चामड़ा-बाधानो खाताय। निजेर मनटा यखन वैरागि हयनि तखन विश्व-वैरागिर वाणी कोनो काजे लागे ना। ताइ देखेछि, खोला रास्तार बाँशिते हठात्-हाओयाय ये-गान बनेर मर्मरे नदीर कल्लोलेर सङ्गे सङ्गे बेजेछे, ये-गान भोरेर शुकतारार पिछे पिछे अरुण-आलोर पथ दिये चले गेल, शहरेर दरबारे झाड़लण्ठनेर आलोते तारा ठांइ पेल ना; ओस्तादेरा बलल्लो, "ए किछुइ ना", प्रवीणेरा बलले, "एर माने नेइ"! किछु नयइ तो बटे; कोनो माने नेइ, से-कथा

खाँटि; सोनार मतो निकषे कषा याय ना, पाटेर बस्तार मतो दाँड़िपाल्लाय ओजन चले ना। किन्तु, वैरागि जाने अधर रसेइ ओर रस। कतबार भावि, गान तो एसेछे गलाय किन्तु शोनाबार लग्न रचना करते तो पारिने; कान यदि-बा खोला थाके आन्मनार मन पाओया याबे कोथाय। से-मन यदि तार गदि छेड़े रास्ताय बेरिये पड़ते पारे तबेइ-तो या बला याय ना ताइ से शुनबे, या जाना याय ना ताइ से बुझबे।

हारुना-मारु जाहाज थेके नेमे प्यारिसे कयेक दिन मात्र भूमिमातार शुश्रुषा भोग करते पेरेछिलाम। हठात् खबर एल, यथासमये पेरुते पौँछते हले अविलम्बे जाहाज धरा चाइ। ताड़ाताड़ि शेरबुर्ग-बन्दर थेके आण्डेस् जाहाजे उठे पड़लुम। लम्बाय चओड़ाय जाहाजटा खुब मस्त किन्तु आमार शरीरेर वर्तमान अवस्थाय आरामेर पक्षे ये-सब सुबिधार प्रयोजन छिल, ता पाओया गेल ना। जापानी जाहाजे आतिथ्येर प्रचुर दाक्षिण्ये आमार अभ्यासटाओ किछु खाराप करे दिये छिल। सेइजन्ये एखाने क्याबिने प्रवेश करेइ मनटा अप्रसन्न हल। किन्तु येटा अनिवार्य, निजेर गरजेइ मन तार सङ्गे यत शीघ्र पारे रफा करे निते चाय। अत्यन्त दुष्पाच्य जिनिसओ पेटे पड़ले पाकयन्त्र हाल छेड़े दिये जारकरस प्रयोग बन्ध करे ना। मनेरओ जारकरस आछे; अभ्यस्त कोनो दुःखके हजम करे निये ताके से आपनार अभ्यस्त विश्वेर सामिल करे निश्चिन्त हते चाय। असुविधा-गुलो एकरकम सह्य हये एल, आर दिनेर-पर-दिन चरकार एकघेये सुतो काटार मतो एकटाने चलते लागल।

विषुवरेखा पार हये चलेछि, एमन समय हठात् कथन शरीर गेल बिगड़े; बिछाना छाड़ा गति रइल ना। क्याबिन जिनिसटाइ एकटा स्थायी व्याधि, इन्द्रियगुलो यदि तार सङ्गे योग दिये जुलुम शुरु करे ताहले पुलिसेर आकस्मिक बन्धनेर विरुद्ध उच्च आदालते पर्यन्त आपिल बन्ध हय, कोथाओ किछुइ सान्त्वना थाके ना। शान्तिहीन दिन आर निद्रःहीन रात आमाके पिठमोड़ा करे शिकल कषते लागल। विद्रोहेर चेष्टा करते गेले शासनेर परिमाण बाड़तेइ थाके। रोग-गारदेर दारोगा आमार बुकेर उपर दुर्बलतार विषम एकटा बोझा चापिये रेखे दिले; माझे माझे मने हत, एटा स्वयं यमराजेर पायेर चाप। दुःखेर अत्याचार यखन अतिमात्राय च'ड़े ओठे तखन ताके पराभूत करते पारिने; किन्तु, ताके अवज्ञा करबार अधिकार तो केउ काड़ते पारे ना—आमार हाते तार एकटा उपाय आछे, से हच्छे कविता-लेखा। तार विषयटा या-इ होक-ना केन, लेखाटाइ दुःखेर विरुद्धे सिडिशन-विशेष। सिडिशनेर द्वारा प्रतापशालीर विशेष अनिष्ट हय ना, ताते पीड़ित चित्तेर आत्मसम्भ्रम रक्षा हय।

आमि सेइ काजे लागलुम, बिछानाय पड़े पड़े कविता लेखा चलल। व्याधिटा-ये ठिक की ता निश्चित बलते पारिने, केवल एइ जानि, से एकटा अनिर्वचनीय पीड़ा। से-पीड़ा शुधु आमार अङ्ग प्रत्यङ्गे नय, क्याबिनेर समस्त आसबाबपत्रेर मध्ये सर्वत्र सञ्चारित—आमि आर आमार क्याबिन समस्तटा मिले येन एकटा अखण्ड रुग्नता।

एमनतरो असुखेर समय स्वभावतइ देशेर जन्ये व्याकुलता जन्मे। क्याबिनेर जठरेर मध्ये दिवारात्रि जीर्ण हते हते आमारओ मन भारतवर्षेर आकाशेर उद्देशे उत्सुक हये उठल! किन्तु, अन्ध उत्तापेर परिमाण बेड़े बेड़े क्रमे येमन ता आलोकित हय, दुःखेरओ तेमनि परिमाणभेदे प्रकाशभेद हये थाके। ये-दुःख प्रथमे कारागारेर मतो विश्व थेके पृथक करे मनके केवलमात्र निजेर व्यथार मध्येइ बद्ध करे, सेइ दुःखरइ वेग बाड़ते बाड़ते अवशेषे अवरोध भेङे पड़े एवं विश्वेर दुःखसमुद्रेर कोटालेर बानके अन्तरे प्रवेश करबार पथ छेड़े देय। तखन निजेर क्षणिक छोटो दुःखटा मानुषेर चिरकालीन बड़ो दुःखेर सामने स्तब्ध हये दाँड़ाय; तार छट्फटानि चले याय। तखन दुःखेर दण्डटा एकटा दीप्त आनन्देर मशाल हये ज्वले ओठे। प्रलयके भय येइ ना-करा याय अमनि दुःखवीणार सुर बांधा साङ्ग हय। गोड़ाय ऐ सुर-बांधबार समयटाइ हच्छे बड़ो कर्कश, केनना, तखनो ये द्वन्द्व घोचेनि। एइ अभिज्ञतार साहाय्ये युद्धक्षेत्रे सैनिकेर अवस्था कल्पना करते पारि। बोध हय, प्रथम अवस्थाय भये भरसाय यतक्षण टानाटानि चलते थाके ततक्षण भारि कष्ट। यतक्षण भीषणकेइ एकमात्र करे देखिने, यतक्षण ताके अतिक्रम करेओ जीवनेर चिरपरिचित क्षेत्रटा देखा याय, ततक्षण सेइ द्वन्द्वेर टाने भय किछुतेइ छाड़ते चाय ना। अवशेषे तापेर तीव्रता बाड़ते बाड़ते रुद्र यखन अद्वितीय हये देखा देन, प्रलयेर गर्जन तखन सङ्गीत हये ओठे; तखन तार सङ्गे निर्विचारे सम्पूर्ण-भावे योग देवार निरतिशय आग्रहे भरिया करे तोले। मृत्युके तखन सत्य बले जेने ग्रहण करि; तार एकटा पूर्णात्मक रूप देखते पाइ बले तार शून्यात्मकतार भय चले याय।

कय दिन रुद्धकक्षे सङ्कीर्ण शय्याय पड़े पड़े मृत्युके खुब काछे देखते पेयेछिलाम, मने हयेछिल प्राणके वहन करबार योग्य शक्ति आमार शेष हये गेछे। एइ अवस्थाय प्रथम इच्छार धक्काटा छिल देशेर आकाशे प्राणटाके मुक्त करे देओया। क्रमे सेइ इच्छार बन्धन शिथिल हये एल। तखन मृत्युर पूर्वेइ घरेर बाइरे निये याबार ये-प्रथा आमादेर देशे आछे, तार अर्थटा मने जेगे उठल। घरेर भितरकार समस्त अभ्यस्त जिनिस हच्छे प्राणेर बन्धनजाल। तारा सकले मिले मृत्युके तीव्रभावे प्रतिवाद करते थाके। जीवनेर शेष क्षणे मनेर मध्ये एइ द्वन्द्वेर कोलाहल

यदि जेगे ओठे तबे तातेइ बेसुर कर्कश हय; मृत्युर सम्पूर्ण सङ्गीत शुनते पाइने, मृत्के सत्य बले स्वीकार करे नेबार आनन्द चले याय।

बहुकाल हय आमि यखन प्रथम काशीते गियेछिलाम तखन मृत्युकालेर ये-एकटि मनोहर दृश्य चोखे पड़ेछिल, ता आमि कोनोदिन भुलते पारब ना। ठिक मने नेइ, बोध करि तखन शरत्काल; निर्मल आकाश थेके प्रभातसूर्य जीवधात्री वसुन्धराके आलोके अभिसिक्त करे दियेछे। एपारेर लोकालयेर विचित्र चाञ्चल्य. ओपारेर प्रान्तरेर सुदूरविस्तीर्ण निस्तब्धता, माझखाने जलधारा—समस्तके देवतार परशमणि छोँयानो हल। नदीर ठिक माझखाने देखि एकटि डिङि नौका खरस्रोते छुटे चलेछे। आकाशेर दिके मुख करे मुमूर्ष स्तब्ध हये शुये आछे, तारइ माथार काछे करताल बाजिये उच्चस्वरे कीर्तन चलछे। निखिल विश्वेर वक्षेर माझे मृत्युर ये-परम आह्वान, आमार काछे तारइ सुगम्भीर सुरे आकाश पूर्ण हये उठल। येखाने तार आसन सेखाने तार शान्तरूपे देखते पेले मृत्यु ये कत सुन्दर ता स्पष्ट प्रत्यक्ष हय। घरेर मध्ये समस्तइ ताके उच्चैः स्वरे अस्वीकार करे; सेइजन्य सेखानकार खाटपालङ सिन्दुक चौकि देओयाल कड़ि बड़गा, सेखानकार प्रात्यहिक क्षुधातृष्णा कर्म ओ विश्रामेर छोटोखाटो समस्त दाविते मुखर चञ्चल घरकरनार व्यस्ततार माझखाने समस्त भिड़ ठेले, समस्त आपत्ति अतिक्रम करे, मृत्यु यखन चिरन्तनेर लिपि हाते निये प्रवेश करे तखन ताके दस्यु बले भ्रम हय; तखन तार हाते मानुष आत्मसमर्पण करबार आनन्द पाय ना। मृत्यु बाँधन छिन्न करे देबे, एइटेइ कुत्सित; आपनि बाँधन आलगा करे दिये सम्पूर्ण विश्वासेर सङ्गे तार हात धरब, एइटेइ सुन्दर।

हिन्दु काशीके पृथिवीर बाहिरेर स्थान बलेइ विश्वास करे। तार काछे काशीर भौगोलिक सीमाना एकटा माया, परमार्थत सेखाने निखिल विश्वेर परिचय, सेखाने विश्वेश्वरेर आसन। अतएव, विशेष देशवासीर काछे विशेष देशेर ये आकर्षण-वेग तार प्राणके सेखानकार माटि जल आकाशेर सङ्गे नाना विशेष सूत्रे बाँधे, काशीर मध्ये येन पृथिवीर सेइ विशेष देशगत बन्धनओ नेइ। अतएव, यथार्थ हिन्दुर काने मृत्युर मुक्तिवाणी काशीते विशुद्ध सुरे प्रवेश करे।

वर्तमान युगे न्याशनाल वैषयिकता विश्वव्यापी हये स्वदेशगत अहमिकाके सुतीव्रभावे प्रबल करे तुलेछे। आमार दृढ़ विश्वास, एइ सङ्ग-आश्रित अति प्रकाण्डकाय रिपुइ वर्तमान युगेर समस्त दुःख ओ बन्धनेर कारण। ताइ, सेदिन बिछानाय शुये शुये आमार मने हल, आमिओ येन मुक्तिर तीर्थक्षेत्रे मरते पारि; शेष मुहूर्ते येन बलते पारि, सकल देशइ आमार एक देश, सर्वत्रइ एक विश्वेश्वरेर

मन्दिर, सकल देशेर मध्य दियेइ एक मानवप्राणेर पवित्र जाह्नवीधारा एक महा-समुद्रेर अभिमुखे नित्यकाल प्रवाहित।

[८ दिसम्बर १९२४ को पीरू में स्वातंत्र्य शताब्दी के अवसर पर रवीन्द्रनाथ को आमंत्रित किया गया था। ये पत्र उन्होने दक्षिणी अमेरिका की यात्रा पर जाते समय जाहाज में लिखे थे। इसी काल में 'पूरबी' की कुछ कवितायें लिखी गई।

'प्रवासी' के नवम्बर १९२४ से जन १९२५ तक के अंको में धारावाहिक रूप से छपे। 'यात्री' नामक पुस्तक के रूप में इनका प्रकाशन १९२९ में हुआ]

जाभायात्रीर पत्र

श्रीमती निर्मलकुमारी महलानबीशके लिखित

बुनो हाति मूर्तिमान उत्पात, वज्रबृंहित झड़ेर मतो। एतटुकु मानुष, हातिर एकटा पायेर सङ्गेओ यार तुलना हय ना से ओके देखे खामखा बले उठल, "आमि एर पिठे चड़े बेड़ाव।" एइ प्रकाण्ड दुर्दभि प्राणपिण्डटाके गाँ गाँ करे शुँड तुले आसते देखेओ एमन असम्भवप्राय कथा कोनो एकजन क्षीणकाय मानुष कोनो एककाले भावतेओ पेरेछे, एइटेइ आश्चर्य। तारपरे "पिठे चड़ब" बला थेके आरम्भ करे पिठे-चड़े-बसा पर्यन्त ये-इतिहास सेटाओ अति अद्‌भुत। अनेकदिन पर्यन्तइ सेइ असम्भवेर चेहारा सम्भवेर काछ दियेओ आसेनि—परम्पराक्रमे कत विफलता कत अपघात मानुषेर सङ्कल्पके विद्रूप करेछे तार संख्या नेइ; सेटा गणना करे करे मानुष बलते पारत, एटा हबार नय। किन्तु ता बलेनि। अवशेषे एकदिन से हातिर मतो जन्तुरओ पिठे चड़े फसलखेतेर धारे लोकालयेर रास्ताय-घाटे घुरे बेड़ालो। एटा साङ्घातिक अध्यवसाय, सेइ जन्येइ गणेशेर हातिर मुण्डे मानुषेर सिद्धिर मूर्ति। एइ सिद्धिर रहस्यसन्धानकारी सूक्ष्म घ्राण तीक्ष्ण-दृष्टि खरदन्त चञ्चल कौतूहल, सेटा इंदुर, सेइटेइ वाहन; आर-एकदिके बन्धने वशीभूत वन्यशक्ति, या दुर्गमेर उपर दिये बाधा डिङिये चले, सेइ हल यान—सिद्धिर यान-वाहनयोगे मानुष केवलइ एगिये चलछे। तार ल्याबरेटरिते छिल इँदुर, आर तार योरोप्लेनेर मोटरे आछे हाति। इँदुरटा चुपिचुपि सन्धान बातलिये देय, किन्तु ऐ हातिटाके कायदा करे निते मानुषेन अनेक दुःख। ता होक, मानुष दुःखके देखे हार माने ना, ताइ से आज द्युलोकेर रास्ताय यात्रा आरम्भ करले। कालिदास राघवदेर कथाय बलेछेन, ताँरा 'आनाकरथवर्त्मनाम्'—स्वर्ग पर्यन्त ताँदेर रथेर रास्ता। यखन एकथा कवि बलेछेहें तखन माटिर मानुषेर माथाय एइ अद्‌भुत चिन्ता छिल ये, आकाशे ना चलले मानुषेर सार्थकता नेइ। सेइ चिन्ता क्रमे आज रूप धरे बाइरेर आकाशे पाखा छड़िये दिले। किन्तु, रूप ये धरल से मृत्मुजयकारी भीषण तपस्याय। मानुषेर विज्ञानबुद्धि सन्धान करते जाने, एइ यथेष्ट नय; मानुषेर कीर्तिबुद्धि साहस करते जाने, एइटे तार सङ्गे यखन मिलेछे तखनइ साधकदेर तपःसिद्धिर पथे पथे इन्द्रदेव ये-सब बाधा देखे देन सेगुलो धुलिसात् हय।

तीरे दाँड़िये मानुष सामने देखले समुद्र। एत बड़ो बाधा कल्पना कराइ याय ना। चोखे देखते पाय ना एर पार, तलिये पाय ना एर तल। यमेर मोषेर मतो कालो दिगन्तप्रसारित विराट एकटा निषेध केवलइ तरङ्गतर्जनी तुलछे। चिरविद्रोही मानुष बलले, "निषेध मानव ना।" वज्रगर्जने जवाब एल, "ना मान तो मरबे।" मानुष तार एतटुकुमात्र वृद्धांगुष्ठ तुले बलले, "मरि तो मरव !" एइ हल जात-विद्रोहीदेर उपयुक्त कथा। जात-विद्रोहीदेराइ चिरदिन जिते एसेछे। एकेवारे गोड़ा थेकेइ प्रकृतिर शासनतन्त्रे विरुद्ध मानुष नाना भावेइ विद्रोह घोषणा करे दिल। आज पर्यन्त ताइ चलछे। मानुषदेर मध्ये यारा यत खांटि विद्रोही, यारा बाह्य शासनेर सीमागण्डि यतइ मानते चाय ना, तादेर अधिकार ततइ बेड़े चलते थाके।

येदिन साड़े तिनहात मानुष स्पर्धा करे बलले, "एइ समुद्रेर पिठे चड़व" सेदिन देवतारा हासलेन ना; ताँरा एइ विद्रोहीर काने जयमन्त्र पड़िये दिये अपेक्षा करे रइलेन। समुद्रेर पिठ आज आयत्त हयेछे, समुद्रेर तजटाकेओ कायदा करा गुरु हल। साधनार पथे भय बारबार व्यङ्ग करे उठछे; विद्रोहीर अन्तरेर मध्ये उत्तरसाधक अविचलित बसे प्रहरे प्रहरे हाँक दिच्छ, "मा भैः"।

कालकेर चिठिते क्रन्दसीर कथा बलेछि, अन्तरीक्षे उच्छ्वसित हये उठछे सत्तार क्रन्दन ग्रहे नक्षत्रे। एइ सत्ता विद्रोही, असीम अव्यक्तेर सङ्गे तार निरन्तर लड़ाइ। विराट अप्रकाशेर तुलनाय से अति सामान्य, किन्तु अन्धकारेर अन्तहीन पारावारेर उपर दिये छोटो छोटो कोटि कोटि आलोर तरी से भासिये दियेछे—दशकालेर बुक दिरे अतलस्पर्शेर उपर दिये तार अभियान। किछु डुबछे, किछु भासछे, तबु यात्रार शेष नेइ।

प्राण तार विद्रोहेर ध्वजा निये पृथिवीते अति दुर्बलरूपे एकदिन देखा दियेछिल। अति प्रकाण्ड, अति कठिन, अतिगुरुभार अप्राण चारिदिके गदा उद्यत करे दाँड़िये आपन धुलोर कयेदखानाय ताके द्वार जानला वन्ध करे प्रचण्ड शासने राखते चाय। किन्तु, विद्रोही प्राण किछुतेइ दमे ना; देयाले देयाले कत जायगाय कत फुटोइ करछे तार संख्या नेइ, केवलइ आलोर पथ नाना दिक दियेइ खुले दिच्छे।

सत्तार एइ विद्रोह-मन्त्रेर साधनाय मानुष यतदूर एगियेछे एमन आर-कोनो जीव ना। मानुषेर मध्ये यार विद्रोह-शक्ति यत प्रबल, यत दुर्दमनीय, इतिहासके ततइ से युग हते युगान्तरे अधिकार करछे, शुधु सत्तार व्याप्ति द्वारा नय, सत्तार ऐश्वर्य द्वारा।

एइ विद्रोहेर साधना दुःखेर साधना; दुःखइ हच्छे हाति, दुःखइ हच्छे समुद्र। वीर्येर दर्पे एर पिठे यारा चड़ल ताराइ बाँचल; भये अभिभूत हये एर तलाय यारा

पड़छ तारा मरेछे। आर, यारा एके एड़िये सस्ताय फल लाभ करते चाय तारा नकल फलेर छद्मवेशे फाँकिर बोझार भारे माथा हेंट करे बेड़ाय। आमादेर घरेर, काछ सेइ जातेर मानुष अनेक देखा याय। वीरत्वेर हाँकडाक करते तारा शिखेछे किन्तु सेटा यथासम्भव निरापदे करते चाय। यखन मार आसे तखन नालिश करे बले, बड़ो लागछे। एरा पौरुषेर परीक्षाशालाय बसे बिलिति बइ थेके तार बुलि चुरि करे, किन्तु कागजेर परीक्षा थेके यखन हातेर परीक्षार समय आसे तखन प्रतिपक्षेर अनौदार्य निये मामला तुले बले, "ओदेर स्वभाव भालो नय, ओरा बाधा देय।"

मानुषके नारायन सखा बले तखनइ सम्मान करेछेन यखन ताके देखियेछन तांर उग्ररूप, ताके दिये यखन बलियेछेन : दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रं तदेवं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्—यखन मानुष प्राणमन दिये एइ स्तव करते पेरेछे :

अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वम्
सर्वं समाप्नोपि ततोहसि सर्वः।

तुमिइ अनन्तवीर्य, तुमिइ अमितविक्रम, तुमइ समस्तके ग्रहण कर, तुमइ समस्त। इति ३रा श्रावण, १३३४।

एखानकार ये-सरकारि जाहाजे सिङ्गपुरे याबार कथा से-जाहाजे अत्यन्त भिड़, ताइ एकटि छोटो जाहाजे आमि आर सुरेन स्थान करे नियेछि। काल शक्रवार सकाले रओना हओया गेछे। सुनीति ओ धीरेन एकदिनेर जन्य पिछिये रये गेल; केनना, काल रात्रे भारतीय सभ्यता सम्बन्धे सुनीतिर एकटा वक्तृतार व्यवस्था छिल। जाभार पण्डितमण्डलीर मध्ये सुनीति यथेष्ट प्रतिष्ठा लाभ करेछन। तार कारण, तांर पाण्डित्ये कोनो फाँकि नेइ, या-किछु बलेन ता तिनि भालो करेइ जानेन।

आमादेर जाहाज दुटि द्वीप घुरे याबे, ताइ दुदिनेर पथे तिन दिन लागबे। एइ जायगायटाते विश्वकर्मार माटिर व्याग छिंड़े अनेकगुलो छोटो छोटो द्वीप समुद्रेर मध्ये छिटके पड़ेछे। सेगुलो ओलन्दाजदेर दखले। एखन ये-द्वीपे जाहाज नोङर फलेछे तार नाम बिलिटन। मानुष बेशि नेइ; आछे टिनेर खनि, आर आछे सेइ-सब खनिर म्यानेजार ओ मजुर। आश्चर्य हये बसे बसे भावछि, एरा समस्त पृथिवीटाके किरकम दोहन करे निच्छे। एकदिन एरा सब झाँके झाँके पालेर जाहाजे चड़े अजाना समुद्रे बेरिये पड़ेछिल। पृथिवीटाके घुरे घुरे

देखे निले, चिने निले, मेपे निले। सेइ जेने नेओयार सुदीर्घ इतिहास कत साङ्घातिक सङ्कटे आकीर्ण। मने मने भावि, ओदेर स्वदेश थेके अति दूर समुद्रकूले एइसब द्वीपे येदिन ओरा प्रथम एसे पाल नामाले, से कत आशङ्काय अथच प्रत्याशाय भरा दिन। गाछपाला जीवजन्तु मानुषजन सेदिन समस्तइ नूतन। आर आज ! समस्तइ सम्पूर्ण परिज्ञात, सम्पूर्ण अधिकृत।

एदेर काछे आमादेर हार मानते हयेछे। केन, सेइ कथा भावि। तार प्रधान कारण, आमरा स्थितिवान जात, आर ओरा गतिवान। अन्योन्यतन्त्र समाजबन्धने आमरा आबद्ध, व्यक्तिगत स्वातन्त्र्ये ओरा वेगवान। सेइ जन्येइ एत सहजे ओरा घुरते पारल। घुरछे जेनेछे आर पेयेछे। सेइ कारणेइ जानबार ओ पाबार आकांक्षा ओदेर एत प्रबल। स्थिर हये बसे बसे थेके आमादेर सेइ आकांक्षाटाइ क्षीण हये गेछे। घरेर काछेइ के आछे, की हच्छे, भालो करे ता जानिने, जानबार इच्छाओ हय ना; केनना, घर दिये आमरा अत्यन्त घेरा। जानबार जोर नेइ यादेर, पृथिवीते बाँचबार जोर तादेर कम। एइ ओलन्दाजरा ये-शक्तिते जाभाद्वीप सकल रकमे अधिकार करे नियेछे, सेइ शक्तितेइ जाभाद्वीपेर पुरातत्त्व अधिकार करवार जन्ये तादेर एत पण्डितेर एत एकाग्रमने तपस्या। अथच, ए पुरातत्त्व अजाना नतुन द्वीपेरइ मतो तांदेर सङ्गे सम्पूर्ण सम्बन्धशून्य। निकटसम्पर्कीय ज्ञानेर विषय सम्बन्धेओ आमरा उदासीन, दूरसम्पर्कीय ज्ञान सम्बन्धेओ एदेर आग्रहेर अन्त नेइ। केवल बाहुबले नय, एइ जिज्ञासार प्रबलताय एरा जगतटाके अन्तरे बाइरे जिते निच्छे। आमरा एकान्तभावे गृहस्थ। तार माने आमरा प्रत्येके आपन गार्हस्थ्येर अंशमात्र, दायित्वेर हाजार बन्धने बाँधा। जीविकागत दायित्वेर सङ्गे अनुष्ठानगत दायित्व विजड़ित। क्रियाकर्मेर निरर्थक बोझा एत असह्य बेशि ये, अन्य सकल यथार्थ कर्म तारइ भारे अचलप्राय। जातकर्म थेके आरम्भ करे श्राद्ध पर्यन्त ये-समस्त कृत्य इहलोक परलोक जुड़े आमादेर स्कन्धे चेपेछे तादेर निये नड़ाचड़ा असम्भव, आर तारा आमादेर शक्तिके केवलइ शोषण करे निच्छे। एइ समस्त घरेर छेलेरा परेर हाते मार खेते बाध्य। ए कथाटा आमरा भितरे भितरे बुझते पारछि। एइजन्ये आमादेर नेतारा संन्यासेर दिके एतटा झोक दियेछेन। अथच, ताँरा सनातन धर्मकेओ ध्रुव सत्य बले घोषणा करेन। किन्तु, आमादेर सनातनधर्म गार्हस्थ्येर उपरे प्रतिष्ठित। सस्त्रीकं धर्माचरेत्। आमादेर देशे विस्त्रीके धर्मेर कोनो माने नाइ।

याँरा सनातनधर्मेर दोहाइ देन ना, ताँरा बलेन, क्षति की ! किन्तु, बहु युगेर समाजव्यवस्थार पुरातन भित्ति यदि-वा भाङा सहज हय तार जायगाय नतुन भित्ति गड़बे कतदिने कर्तव्य-अकर्तव्य सम्बन्धे प्रत्येक समाज कतकगुलि नीतिके

संस्कारगत करे नियेछे—तर्क करे, विचार करे, अल्प लोक सिधे थाकते पारे—संस्कारेर जोरेइ तारा संसारेर पथे चले। एक संस्कारेर जायगाय आर-एक संस्कार गड़ा तो सोजा कथा नय। आमादेर समाजेर समस्त संस्कारइ आमादेर बहुदायग्रन्थिल गार्हस्थ्यके दृढ़प्रतिष्ठ राखबार जन्ये। युरोपीयदेर काछ थेके विज्ञान शेखा सहज, किन्तु तादेर समाजेर संस्कारके आपन करा सहज नय।

आमादेर जाहाजे छिलेन टिनखनिर एक कर्ता; बललेन, षोलो वत्सर एइखानेइ लेगे आछेन। टिन छाड़ा एखाने आर किछुइ नेइ। तबु एइखानेइ ताँर बासा बाँधा। बाटाभियाते सिन्धि वणिकेरा दोकान करेछेन। दु बछर अन्तर बाड़ि याबार नियम। जिज्ञासा करलुम, स्त्रीपुत्र निये एखाने बासा बाँधते दोष की। बललेन स्त्रीके निये एले चलबे केन, स्त्री-ये समस्त परिवारेर सङ्गे बाँधा, ताँके सरिये आनते गेले सेखाने भाङन धरे। बोध करि रामायणेर युगे एत तर्क छिल ना। टिनेर कर्ता बालककाल काटियेछिलेन साश्रम विद्यालये, वयःप्राप्त हतेइ काजेर सन्धाने फिरेछेन, विवाह करबामात्र निजेर शक्तिर 'परेइ सम्पूर्ण भार दिये बसेछेन। बासेर तबिलेर उपरे तागिद नेइ, मा-मासि-पिशेमशायेर जन्येओ मन खाराप हय ना। सेइ जन्येइ एइ जनविरल निर्वासनेओ टिनेर खनि चलछे। समस्त पृथिवी जुड़े एरा घर बाँधते पारल तार कारण, एरा घरछाड़ा। तारपरे मङ्गलग्रहेर दिके दूरबीन तुले-ये एरा रातेर पर रात काटिये दिच्छे तारओ कारण, एदेर जिज्ञासावृत्ति घरछाड़ा। सनातन गृहस्थेरा एदेर सङ्गे केमन करे पारबे। तादेर प्रचण्ड गतिवेगे एदेर घरेर खुँटिगुलो पड़छे भेङे; किछुते बाधा दिते पारछे ना। यतक्षण चुप करे आछि ततक्षण यत राज्येर अहेतुक बोझा जमे जमे पर्वत-प्रमाण हये उठलेओ तेमन दुःख बोध हय ना, एमन कि, ठेस दिये आराम पाओया याय। किन्तु, घाड़े तुले निये चलते गेलेइ मेरुदण्ड बाँके। यारा सचल जात, बोझाइ सम्बन्धे तादेर केवलइ सूक्ष्म विचार करते हय। कोन्‌टा राखबार, कोन्‌टा फेलबार, ए तर्क तादेर प्रति मुहूर्तेर; एतेइ आवर्जना दूर करबार बुद्धि पाका हय। किन्तु, सनातन गृहस्थ चण्डीमण्डपे आसन पेते बसे आछेन; ताइ ताँर पञ्जिका थेके तिनशोपाँयषटि दिनभरा मूढ़ताय आज पर्यन्त किछुइ बाद पड़ल ना। एइसमस्त राशिर यादेर अन्तरे बाइरे कानाय कानाय भरपुर, हठात् कंग्रेसेर माचार उपर थेके तादेर 'परे हुकुम एल, लघुभार मानुषेर सङ्गे समान पा फेले चलते हबे, केनना दु-चार दिनेर मध्येइ स्वराज चाइ। जवाब देवार भाषा तादेर मुखे नेइ, किन्तु तादेर पाँजर-भाङा बुकेर व्यथाय एइ मूक मिनति थेके याय, "ताइ चलबार चेष्टा करब, किन्तु कर्तारा आमादेर बोझा नामिये देन।"

तखन कर्तारा शिउरे उठे बलेन, "सर्वनाश, ओ-ये सनातन बोझा।" इति।

मायर जाहाज
१ला अक्टोबर, १९२७

[रवीन्द्रनाथ सन् १९२७ में मलय प्रायद्वीप और इन्दोनेसिया गये। ये पत्र 'विचित्रा' मासिक में अक्टूबर १९२७ से अप्रल १९२८ तक (आश्विन-चैत्र १३३४) धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए। सन् १९२९ में 'पश्चिम यात्रीर डायरि' के साथ 'यात्री' में पुस्तकाकार प्रकाशित]

पारस्य

आज एकजन बेदुयिन दलपतिर ताँबुते आमार निमन्त्रण आछे। प्रथमटा भाबलुम पारब ना, शरीरटार प्रति करुणा करे ना याओयाइ भालो। तार परे मने पड़ल, एकदा आस्फालन करे लिखेछिलुम, 'इहार चेये हतेम यदि आरब बेदुयिन।' तखन वयस छिल तिरिशेर काछ घेंषे, से तिरिश आज पिछनेर दिगन्त विलीनप्राय। ता होक, कविताटाके किछु परिमाणे परख करे ना एले मने परिताप थाकबे। सकाले बेरिये पड़लुम। पथेर मध्ये हठात् निये गेल ट्रेनिं स्कुलेर छेलेदेर माझखाने, हठात् तादेर किछु बलतेओ हल। पथे पथे कत कथाइ छड़ाते हय, से पाका फल नय, से झरा पाता, केवलमात्र धुलोर दाबि मेटाबार जन्ये।

तार परे गाड़ि चलल मरुभूमिर मध्ये दिये। बालुमरु नय, शक्त माटि। माझे माझे नदी थेके जल एनेछे नाला केटे, ताइ एखाने ओखाने किछु किछु फसलेर आभास देखा दियेछे। पथेर मध्ये देखा गेल निमन्त्रणकर्ता आर-एक मोटरे करे चलेछेन, ताँके आमादेर गाड़िते तुले नेओया हल। शक्त मानुष, तीक्ष्ण चक्षु; बेदुयिनी पोशाक।

अर्थात् माथाय एकखण्ड सादा कापड़ घिरे आछे कालो बिड़ेर मतो वस्त्र-वेष्टनी। भितरे सादा लम्बा आङिया,—तार उपरे कालो पातला जोब्बा। आमार सङ्गीरा बललेन, यदिओ इनि पड़ाशुनो करेन नि बललेइ हय, किन्तु तीक्ष्ण-बुद्धि। तिनि एखानकार पार्लामेण्टेर एकजन मेम्बर।

रौद्र धू धू करछे धूसर माटि, दूरे कोथाओ कोथाओ मरीचिका देखा दिल। कोथाओ मेषपालक निये चलेछे भेड़ार पाल, कोथाओ चरछे उट, कोथाओ-बा घोड़ा। हु हु करे बातास बइछे, माझे माझे घुर खेते खेते छुटेछे धूलिर आवर्त। अनेक दूर पेरिये एंदेर क्याम्पे एसे पौंछलुम एकटा बड़ो खोला ताँबुर मध्ये दलेर लोक बसे गेछे, कफि सिद्ध हच्छे, खाच्छे ढेले ढेले।

आमरा गिये बसलुम एकटा मस्त माटिर घरे। वेश ठाण्डा। मेझेते कार्पेट, एक प्रान्ते तक्तपोशेर उपर गदि पाता। घरेर माझखाने बेये काठेर थाम, तार उपरे भर दिये लम्बा खुंटिर 'परे माटिर छाद। आत्मीय बान्धवेरा सब एदिके-ओदिके, कटा बड़ो काँचेर गुड़गुड़िते एकजन तामाक टानछे। छोटो

आयतनेर पेयाला आमादेर हाते दिये ताते अल्प एकटु करे कफि ढाल्ले, घन कफि, कालो तेतो। दलपति जिज्ञासा करलेन आहार इच्छा करि कि ना, 'ना' बलले आनबार रीति नय। इच्छा करलेम, अभ्यान्तरे तागिदओ छिल। आहार आसबार पूर्वे शुरु हल एकटु सङ्गीतेर भूमिका। गोटाकतक काठिर उपरे कोनो-मतो चामड़ा-जड़ानो एकटा तेड़ाबाँका एकतारा यन्त्र बाजिये एकजन गान धरले। तार मध्ये वेदुयिनी तेज किछुइ छिल ना। अत्यन्त मिहिचड़ा गलाय नितान्त कान्नार सुरे गान। एकटा बड़ो आतेर पतङ्गेर रागिणी बललेइ हय। अवशेषे सामने चिलिम्चि ओ जलपात्र एल। साबान दिये हात धुये प्रस्तुत हये बसलुम। मेझेर उपर जाजिम पेते दिले। पूर्णचन्द्रेर डबल आकारेर मोटा मोटा रुटि, हाताओयाला अति प्रकाण्ड पितलेर थालाय भातेर पर्वत आर तार उपर मस्त एवं आस्त एकटा सिद्ध भेड़ा। दु-तिनजन जोयान वहन करे मेझेर उपर राखले। पूर्ववर्ती मिहिकरुण रागिणीर सङ्गे एइ भोजेर आकृति ओ प्रकृतिर कोनो मिल पाओया याय ना। आहारार्थीरा सब बसल थाला घिरे। सेइ एक थाला थेके सबाइ हाते करे मुठो मुठो भात प्लेटे तुले निये आर मांस छिड़े खेते लागल। घोल दिये गेल पानीयरूपे। गृहकर्ता बललेन, आमादेर नियम एइ ये, अतिथिरा यतक्षण आहार करते थाके आमरा अभुवत दाँड़िये थाकि, किन्तु समयाभावे आज से नियम राखा चलबे ना। ताइ अदूरे आर-एकटा प्रकाण्ड थाला पड़ल। ताते ताँरा स्वजनवर्ग बसे गेलेन। ये अतिथिदेर सम्मान अपेक्षाकृत कम आमादेर भुक्तावशेष ताँदेर भागे पड़ल। एइबार हल नाचेर फरमाश। एकजन एकघेये सुरे बाँशि बाजिये चलल, आर एरा तार ताल राखले लाफिये लाफिये। एके नाच बलले बेशि बला हय। ये व्यक्ति प्रधान, हाते एकखाना रुमाल निये सेइटे घुरिये घुरिये आगे आगे नाचते लागल, तारइ किञ्चित् भङ्गिर वैचित्र्य छिल। इतिमध्ये बउमा गेलेन एदेर अन्तःपुरे। सेखाने मेयेरा ताँके नाच देखालेन, तिनि बलेन से नाचेर मतो नाच बटे—बोझा गेल युरोपीय नटीरा प्राच्य नाचेर कायदाय एदेर अनुकरण करे, किन्तु सम्पूर्ण रस दिते पारे ना।

तार परे बाइरे एसे युद्धेर नाच देखलुम। लाठि छुरि बन्दुक तलोयार निये आस्फालन करते करते, चित्कार करते करते, चक्राकारे घुरते घुरते, ताँदेर मातुनि—ओ दिके अन्तःपुरेर द्वार थेके मेयेरा दिच्छे तादेर उत्साह। बेला चारटे पेरिये गेल, आमरा फेरबार पथे गाड़िते उठलुम, सङ्गे चललेन आमादेर निमन्त्रणकर्ता।

एरा मरुर सन्तान, कठिन एइ जात, जीवनमृत्युर द्वन्द्व निये एदेर नित्य

व्यवहार। एरा कारओ काछे प्रश्रयेर प्रत्याशा राखे ना, केनना पृथिवी एदेर प्रश्रय देय नि। जीवविज्ञाने प्रकृति कर्तृक बाछाइयेर कथा बले; जीवनेर समस्या सुकठोर करे दिये एदेरइ माझे यथार्थ कड़ा बाछाइ हये गेछे, दुर्बलेरा बाद प'ड़े यारा नितान्त टिँके गेल एरा सेइ जात। मरण एदेर बाजिये नियेछे। एदेर ये एक-एकटि दल तारा अत्यन्त घनिष्ठ, एदेर मातृभूमिर कोलेर परिसर छोटो; नित्य विपदे वेष्ठित जीवनेर स्वल्प दान एरा सकले मिले भाग क'रे भोग करे। एक बड़ो थाले एदेर सकलेर अन्न, तार मध्ये शौखिन रुचिर स्थान नेइ; तारा परस्परेर मोटा रुटि अंश करे नियेछे, परस्परेर जन्ये प्राण देबार दाबि एइ एक रुटि भाङार मध्येइ। बांङ्लादेशेर नदीबाहुवेष्ठित सन्तान आमि, एदेर माझखाने बसे खाच्छिलुम आर भाबछिलुम, सम्पूर्ण आलादा छाँचे तैरि मानुष आमरा उभये। तबुओ मनुष्यत्वेर गभीरतार वाणीर ये भाषा से भाषाय आमादेर सकलेरइ मन साय देय। ताइ एइ अशिक्षित बेदुयिन-दलपति यखन बललेन 'आमादेर आदि-गुरु बलेछेन यार वाक्ये ओ व्यवहारे मानुषेर विपदेर कोनो आशङ्का नेइ सेइ यथार्थ मुसलमान', तखन से कथा मनके चमकिये दिले। तिनि बललेन, भारतवर्षे हिन्दू-मुसलमाने ये विरोध चलछे ए पापेर मूल रयेछे सेखानकार शिक्षित लोकदेर मने। एखाने अल्पकाल पूर्वे भारतवर्ष थेके कोनो-कोनो शिक्षित मुसलमान गिये इसलामेर नामे हिंस्रभेदबुद्धि प्रचार करबार चेष्टा करेछिलेन; तिनि बललेन, आमि ताँदेर सत्यताय विश्वास करि ने, ताइ ताँदेर भोजेर निमन्त्रणे येते अस्वीकार करेछिलेम, अन्तत अरबदेशे ताँरा श्रद्धा पान नि। आमि एँके बललेम, एकदिन कविताय लिखेछि 'इहार चेये हतेम यदि आरब बेदुयिन'—आज आमार हृदय बेदुयिन-हृदयेर अत्यन्त काछे एसेछे, यथार्थइ आमि तादेर सङ्गे एक अन्न खेयेछि अन्तरेर मध्ये।

तार परे यखन आमादेर मोटर चलल, दुइ पाशेर माठे एदेर घोड़सओयाररा घोड़ा छोटाबार खेला देखिये दिले। मने हल मरुभूमिर घूर्णा-हाओयार दल शरीर नियेछे।

बोध हच्छे आमार भ्रमण एइ 'आरब बेदुयिने' एसेइ शेष हल। देशे यात्रा करबार आर दु-तिन दिन बाकि, किन्तु शरीर एत क्लान्त ये एर मध्ये आर-कोनो देखाशोना चलबे ना। ताइ एइ मरुभूमिर बन्धुत्वेर मध्ये भ्रमणेर उपसंहारटा भालोइ लागछे। आमार बेदुयिन निमन्त्रणकर्ताकि बललुम ये, बेदुयिन-आतिथ्येर परिचय पेयेछि, किन्तु बेदुयिन-दस्युतार परिचय ना पेले तो अभिज्ञता शेष करे याओया हबे ना। तिनि हेसे बललेन, तार एकटु बाधा आछे। आमादेर दस्युरा प्राचीन ज्ञानीलोकदेर गाये हस्तक्षेप करे ना। एइजन्ये महाजनरा यखन

आमादेर मरुभूमिर मध्ये दिये पण्य निये आसे तखन अनेक समय विज्ञ चेहारार प्रवीण लोकके उटेर 'परे चड़िये तादेर कर्ता साजिये आने। आमि ताँके बललुम, चीने भ्रमण करबार समय आमार कोनो चैनिक बन्धुके बलेछिलेम, 'एकबार चीनेर डाकातेर हाते प'ड़े आमार चीन भ्रमणेर विवरणटाके जमिये तुलते इच्छा करे।' तिनि बललेन, 'चीनेर डाकातेरा आपनार मतो वृद्ध कविर 'परे अत्याचार करबे ना, तारा प्राचीनके भक्ति करे।' सत्तर बछर वयसे यौवनेर परीक्षा चलबे ना। नाना स्थाने घोरा शेष हल, विदेशीर काछ थेके किछु भक्ति निये, श्रद्धा नियेइ देशे फिरे याब, तार परे आशा करि कर्मेर अवसाने शान्तिर अवकाश आसबे। युवके युवके द्वन्द्व घटे, सेइ द्वन्द्वेर आलोड़ने संसारप्रवाहेर विकृति दूर हय। दस्यु यखन वृद्धके भक्ति करे तखन से ताके आपन जगत् थेके दूर सरिये देय। युवकेर सङ्गइ तार शक्तिर परीक्षा, सेइ द्वन्द्वेर आघाते शक्ति प्रबल थाके, अतएव भक्तिर सुदूर अन्तराले पञ्चाशोर्ध्वं वनं व्रजेत्।

[सन् १९३२ में रवीन्द्रनाथ हवाई जहाज से ईरान गये, शाह के निमंत्रण पर। ये पत्र मुख्यतः 'विचित्रा' मासिक में जुलाई १९३२ से अप्रेल १९३३ तक (श्रावण १३३९ से वैशाख १३४० तक) प्रकाशित हुए।]

चतुर्थ खण्ड

भाषा ओ साहित्य

१. बाङ्ला भाषा परिचय
२. संज्ञा विचार
३. छन्देर अर्थ
४. साहित्येर तात्पर्य
५. साहित्येर सामग्री
६. साहित्येर विचारक
७. सौन्दर्यबोध
८. विश्व-साहित्य
९. बाङ्ला जातीय साहित्य

बाङ्लाभाषा परिचय

(१)

जीवेर मध्ये सबचेये सम्पूर्णता मानुषेर। किन्तु सबचेये असम्पूर्ण हये से जन्मग्रहण करे। बाघ भालुक तार जीवनयात्रार पनेरो आना मूलधन निये आसे प्रकृतिर मालखाना थेके। जीवरङ्गभूमिते मानुष एसे देखा देय दुइ शून्य हाते मुठो बेँधे।

मानुष आसबार पूर्वेइ जीवसृष्टियज्ञे प्रकृतिर भूरिव्ययेर पाला शेष हये एसेछे। विपुल मांस, कठिन वर्म, प्रकाण्ड लेज निये जले स्थले पृथुल देहेर ये अमिताचार प्रबल हये उठेछिल ताते धरित्रीके दिले क्लान्त करे। प्रमाण हल आतिशय्येर पराभव अनिवार्य। परीक्षाय एटाओ स्थिर हये गेल ये, प्रश्रयेर परिमाण यत बेशि हय दुर्बलतार बोझाओ तत दुर्वह हये ओठे। नूतन पर्वे प्रकृति यथासम्भव मानुषेर बराद्द कम करे दिये निजे रइल नेपथ्ये।

मानुषके देखते हल खुब छोटो, किन्तु सेटा एकटा कौशल मात्र। एबारकार जीवयात्रार पालाय विपुलताके करा हल बहुतलाय परिणत। महाकाय जन्तु छिल प्रकाण्ड एकला, मानुष हल दूर प्रसारित अनेक।

मानुषेर प्रधान लक्षण एइ ये, मानुष एकला नय। प्रत्येक मानुष बहु मानुषेर सङ्गे युक्त, बहु मानुषेर हाते तैरि।

कखनो कखनो शोना गेछे, वनेर जन्तु मानुषेर शिशुके चुरि करे निये गिये पालन करेछे। किछुकाल परे लोकालये यखन ताके फिर पाओया गेछे तखन देखा गेल जन्तुर मतोइ तार व्यवहार। अथच सिंहेर बाच्छाके जन्मकाल थेके मानुषेर काछे रेखे पुषले से नरसिंह हयना।

एर माने, मानुष थेके विच्छिन्न हले मानवसन्तान मानुषइ हय ना, अथ च तखन तार जन्तु हते बाधा नेइ। एर कारण बहु युगेर बहु कोटि लोकेर देह मन मिलिये मानुषेर सत्ता। सेइ बृहत् सत्तार सङ्गे ये परिमाणे सामञ्जस्य घटे व्यक्तिगत मानुष सेइ परिमाणे यथार्थ मानुष हये ओठे। सेइ सत्ताके नाम देओया येते पारे महामानुष।

एइ बृहत् सत्तार मध्ये एकटा अपेक्षाकृत छोटो विभाग आछे। ताके बला येते पारे जातिक सत्ता। धारावाहिक बहु कोटि लोक पुरुषपरम्पराय मिले एक-एकटा सीमानाय बाँधा पड़े।

एदेर चेहारार एकटा विशेषत्व आछे। एदेर मनेर गड़नटाओ किछु विशेष धरनेर। एइ विशेषत्वेर लक्षण अनुसारे दलेर लोक परस्परके विशेष आत्मीय बले अनुभव करे। मानुष आपनाके सत्य बले पाय एइ आत्मीयतार सूत्रे गाँथा बहुदूरव्यापी बृहत् ऐक्यजाले।

मानुषके मानुष करे तोलबार भार एइ जातिक सत्तार उपरे। सेइजन्ये मानुषेर सबचेये बड़ो आत्मरक्षा एइ जातिक सत्ताके रक्षा करा। एइ तार बृहत् देह, तार बृहत् आत्मा। एइ आत्मिक ऐक्यबोध यादेर मध्ये दुर्बल, सम्पूर्ण मानुष हये ओठबार शक्ति तादेर क्षीण। जातिर निविड़ सम्मिलित शक्ति तादेर पोषण करे ना, रक्षा करे ना। तारा परस्पर विश्लिष्ट हये थाके, एइ विश्लिष्टता मानवधर्मेर विरोधी। विश्लिष्ट मानुष पदे पदे पराभूत हय, केनना, तारा सम्पूर्ण मानुष नय।

येहेतु मानुष सम्मिलित जीव एइजन्ये शिशुकाल थेके मानुषेर सबचेये प्रधान शिक्षा—परस्पर मेलबार पथे चलबार साधना। येखाने तार मध्ये जन्तुर धर्म प्रबल सेखाने स्वेच्छा एवं स्वार्थेर टाने ताके स्वतन्त्र करे, भालोमतो मिलते देय बाधा; तखन समष्टिर मध्ये ये इच्छा, ये शिक्षा, ये प्रवर्तना दीर्घकाल धरे जमे आछे से जोर क'रे बले, 'तोमाके मानुष हते हबे कष्ट क'रे; तोमार जन्तुधर्मेर उल्टो पथे गिये।' जातिक सत्तार अन्तर्गत प्रत्येकेर मध्ये नियत एइ क्रिया चलछे ब'ले एकटा बृहत् सीमानार मध्ये एकटा विशेष छाँदेर मनुष्यसंघ तैरि हये उठछे। एकटा विशेष जातिक नामेर ऐक्य तारा परस्पर परस्परके चेने, तारा परस्परेर काछ थेके विशेष अवस्थाय विशेष आचरण निश्चिन्त मने प्रत्याशा करते पारे। मानुष जन्माय जन्तु हये, किन्तु एइ संघबद्ध व्यवस्थार मध्ये अनेक दुःख करे से मानुष हये ओठे।

एइ-ये बहुकालक्रमागत व्यवस्था याके आमरा समाज नाम दिये थाकि, या मनुष्यत्वेर प्रेरयिता ताकेओ सृष्टि करे चलेछे मानुष प्रतिनियत —प्राण दिये, त्याग दिये, चिन्ता दिये, नव नव अभिज्ञता दिये, काले काले तार संस्कार क'रे। एइ अविश्राम देओया-नेओयार द्वाराइ से प्राणवान हये ओठे, नइले से जड़यन्त्र हये थाकत एवं तार द्वारा पालित एवं चालित मानुष हत कलेर पुतुलेर मतो; सेइ-सब यान्त्रिक नियमे बाँधा मानुषेर मध्ये नतुन उद्भावना थाकत ना, तादेर मध्ये अग्रसरगति हत अवरुद्ध।

समाज एवं समाजेर लोकदेर मध्ये एइ प्राणगत मनोगत मिलनेर ओ आदान-प्रदानेर उपायस्वरूपे मानुषेर सबचेये श्रेष्ठ ये सृष्टि से हच्छे तार भाषा। एइ भाषार निरन्तर क्रियाय समस्त जातके एक करे तुलेछे; नइले मानुष विच्छिन्न हये मानवधर्म थेके वञ्चित हत।

ज्योतिर्विज्ञानी बलेन, एमन-सब नक्षत्र आछे यारा दीप्तिहारा, तादेर प्रकाश नइ, ज्योतिष्कमण्डलीर मध्ये तारा अख्यात। जीवजगते मानुष ज्योतिष्क-जातीय। मानुष दीप्त नक्षत्रेर मतो केवलइ आपन प्रकाशशक्ति विकीर्ण करछे। एइ शक्ति तार भाषार मध्ये।

ज्योतिष्कनक्षेत्रेर मध्ये परिचयेर वैचित्र्य आछे; कारओ दीप्ति बेशि, कारओ दीप्ति म्लान, कारओ दीप्ति बाधाग्रस्त। मानवलोकेओ ताइ। कोथाओ भाषार उज्ज्वलता आछे, कोथाओ नेइ। एइ प्रकाशवान नाना जातिर मानुष इतिहासेर आकाशे आलोक विस्तीर्ण करे आछे। आबार कादेरओ बा आलो निबे गियेछे आज तादेर भाषा लुप्त।

जातिक सत्तार सङ्गे सङ्गे एइ-ये भाषा अभिव्यक्त हये उठेछे ए एतइ आमादेर अन्तरङ्ग ये, ए आमादेर विस्मित करे ना, येमन विस्मित करे ना आमादेर चोखेर दृष्टि शक्ति—ये चोखेर द्वार दिये नित्यनियत आमादेर परिचय चलछे विश्व-प्रकृतिर सङ्गे। किन्तु एकदिन भाषार दृष्टिशक्तिके मानुष दैवशक्ति बले अनुभव करेछे से कथा आमरा बुझते पारि यखन देखि यिहुदि पुराणे बलेछे, सृष्टिर आदिते छिल वाक्य; यखन शुनि ऋग्वेदे वाग्देवता आपन महिमा घोषणा क'रे बलछेन—

आमि राज्ञी। आमार उपासकदेर आमि धनसमूह दिये थाकि। पूजनीया-देर मध्ये आमि प्रथमा। देवतारा आमाके बहु स्थाने प्रवेश करते दियेछेन।

प्रत्येक मानुष, यार दृष्टि आछे, प्राण आछे, श्रुति आछे, आमार काछ थेकेइ से अन्न ग्रहण करे। यारा आमाके जाने ना तारा क्षीण हये याय।

आमि स्वयं या बले थाकि ता देवता एवं मानुषदेर द्वारा सेवित। आमि याके कामना करि ताके बलवान करि, सृष्टिकर्ता करि, ऋषि करि, प्रज्ञावान करि।

(३)

मानुषेर एकटा गुण एइ ये से प्रतिमूर्ति गड़े; ता से पटे होक, पाथरे होक, माटिते धातुते होक। अर्थात् एकटि वस्तुर अनुरूपे आर-एकटिके बानाते से आनन्द पाय। तार आर-एकटि गुण प्रतीक तैरि करा, खेलार आनन्दे बा काजेर

सुविधेर जन्ये। प्रतीक कोनो-किछुर अनुरूप हबे, एमन कथा नेइ। मुखोष प'रे बड़ोलाटसाहेबेर पक्षे अविकल राजार चेहारार नकल करा अनावश्यक। भारतवर्षेर गदिते तिनि राजार स्थान दखल करे काज चालान—तिनि राजार प्रतीक बा प्रतिनिधि। प्रतीकटा मेने नेओयार व्यापार। छेलेबेलाय मास्टारि-खेला खेलबार समय मेने नियेछिलुम बारान्दार रेलिंगुलो आमार छात्र। मास्टारि शासनेर निष्ठुर गौरव अनुभव करबार जन्ये सत्यिकार छेले संग्रह करबार दरकार हय नि। एक टुकरो कागजेर सङ्गे दश टाकार चेहारार कोनो मिल नेइ, किन्तु सबाइ मिले मेने नियेछे दश टाका तार दाम, दश टाकार से प्रतीक। एते दलेर लोकेर देनापाओनाके सोजा क'रे देओया हल।

भाषा निये मानुषेर प्रतीकेर कारबार। बाघेर खबर आलोचना करबार उपलक्ष्ये स्वयं बाघके हाजिर करा सहजओ नय, निरापदओ नय। बाघे मानुषके खाय, एइ संवादटाके प्रत्यक्ष करानोर चेष्टा नाना कारणेइ असंगत। 'बाघ' ब'ले एकटा शब्दके मानुष बानिये छे बाघ जन्तुर प्रतीक। बाघेर चरित्रे जानबार विषय थाकते पारे विस्तर, से समस्तइ व्यवहार करा एवं जमा करा याय भाषार प्रतीक दिये। मानुषेर ज्ञानेर सङ्गे भावेर सङ्गे अभिव्यक्त हये चलेछे एइ तार एकटि विराट प्रतीकेर जगत्। एइ प्रतीकेर जाले जल स्थल आकाश थेके असंख्य सत्य से आकर्षण करछे, एवं सञ्चारण करते पारछे दूर देशे ओ दूर काले। भाषा गड़े तोला मानुषेर पक्षे सहज हयेछे ये प्रतीकरचनार शक्तिते, प्रकृतिर काछ थेके सेइ दानटाइ मानुषेर सकल दानेर सेरा।

ध्वनिते गड़ा विशेष विशेष प्रतीक केवल ये विशेष विशेष वस्तुर नामधारी हये काज चालाच्छे ता नय, आरओ अनेक सूक्ष्म तार काज। भाषाके ताल रेखे चलते हय मनेर सङ्गे। सेइ मनेर गति केवल तो चोखेर देखार सीमानार मध्ये सङ्कीर्ण नय। यादेर देखा याय ना, छोंओया याय ना, केवलमात्र भावा याय, मानुषेर सबचेये बड़ो देनापाओना तादेरइ निये। खुब एकटा सामान्य दृष्टान्त देओया याक।

बलते चाइ, तिनटे सादा गोरु। ए 'तिन' शब्दटा सहज नय, आर 'सादा' शब्दटाओ ये खूब सादा अर्थात् सरल ता बलते पारि ने। पृथिवीते तिन-जन मानुष, तिन-तला बाड़ि, तिन-सेर दुध प्रभृति तिनेर परिमाणओयाला जिनिस विस्तर आछे, किन्तु जिनिसमात्रइ नेइ अथच तिन ब'ले एकटा संख्या आछे ए असम्भव। ए यदि भावते याइ ता हले हयतो तिन संख्यार एकटा अक्षर भाबि, सेइ अक्षरटाके मुखे बलि तिन; किन्तु तिन अक्षर तो तिन नय। ए तिन अक्षर एवं तिन शब्देर मध्ये निःशब्दे लुकोनो रयेछे अगण्य तिन-संख्यक जिनिसेर निर्देश।

तादेर नाम करते हय ना। भाषार एइ सुविधा निये मानुष संख्या बोझबार शब्द बानियेछे विस्तर। तिनटे तिन संख्यार गोरु एकत्र करले ९टा गोरु हय, ए कथा स्मरण करावार जन्ये गोयालघरे टेने निये येते हय ना। गोरु प्रभृति सब-किछु बाद दिये मानुष भाषार एकटा कौशल बानिये दिले, बलले तिन-त्रिक्खे नय। ओ एकटा फाँद। ताते धरा पड़ते लागल केवल गोरु नय तिन-संख्या-बाँधा ये-कोनो तिन जिनिसेर परिमाप। भाषा यार नेइ एइ सहज कथाटा धरे राखबार उपाय तार हाते नेइ।

एइ उपलक्ष्ये एकटा घटना आमार मने पड़ल। इस्कुले-पड़ा एकटि छोटो मेयेर काछे आमार नामतार अज्ञता प्रमाण करबार जन्ये परिहास क'रे बलेछिलुम, तिन-पाँचे पँचिश।

चोखदुटो एत बड़ो क'रे से बलले, 'आपनि कि जानेन ना तिन-पाँचे पनेरो।' आमि बललुम, 'केमन करे जानब बलो, सब तिनइ कि एक मापेर। तिनटे हातिके पाँचगुण करलेओ पनेरो, तिनटो टिकटिकिकेओ ?' शुने तार मने विषम धिक्कार उपस्थित हल, बलले, 'तिन ये तिनटे एकक, हाति-टिकटिकिर कथा तोलेन केन।' शुने आमार आश्चर्य बोध हल। ये एकक सरुओ नय मोटाओ नय, भारिओ नय हाल्काओ नय, ये आछे केवल भाषा आँकड़िये, सेइ निर्गुण एकक ओर काछे एत सहज हये गेछे ये, आस्त हाति-टिकटिकिकेओ बाद दिये फेलते तार बाधे ना। एइ तो भाषार गुण।

'सादा' कथाटाओ एइरकम सृष्टिछाड़ा। से एकटा विशेषण, विशेष्य नइले एकेवारे निरर्थक। सादा वस्तु थेके ताके छाड़िये निले जगते कोथाओ ताके राखबार जायगा पाओया याय ना, एक ए भाषार शब्दटाते छाड़ा। एइ तो गेल गुणेर कथा, एखन वस्तुर कथा।

मने आछे आमार वयस यखन अल्प आमार एकजन मास्टार बलेछिलेन, एइ टेबिलेर गुणगुलि सब बाद दिले हये यावे शून्य। शुने मन मानतेइ चाइल ना। टेबिलेर गाये येमन बार्निश लागानो हय तेमनि टेबिलेर सङ्गे तार गुणगुलो लेगे थाके, एइ रकमेर एकटा धारणा बोध करि आमार मने छिल। येन टेबिलटाके बाद दिते गेले मुटे डाकार दरकार, किन्तु गुणगुलो धुये मुछे फेला सहज। सेदिन एइ कथा निये हां करे अनेकक्षण भेवेछिलुम। अथच मानुषेर भाषा गुणहीनके निये अनेक बड़ो बड़ो कारबार करेछे। एकटा दृष्टान्त दिइ।

आमादेर भाषाय एकटा सरकारि शब्द आछे, 'पदार्थ'। बला बाहुल्य, जगते पदार्थ ब'ले कोनो जिनिस नेइ; जल माटि पाथर लोहा आछे। एमनतरो

अनिर्दिष्ट भावनाके मानुष तार भाषाय बाँधे केन। जरुरि दरकार आछे बलेइ बाधे।

विज्ञानेर गोड़ातेइ ए कथाटा बला चाइ ये, पदार्थ मात्रइ किछु ना किछु जायगा जोड़े। ऐ एकटा शब्द दिये कोटि कोटि शब्द बाँचानो गेल। अभ्यास हये गेछे ब'ले ए सृष्टिर मूल्य भुले आछि। किन्तु भाषार मध्ये एइ-सब अभावनीयके धरा मानुषेर एकटा मस्त कीर्ति।

बोझा-हाल्का-करा एइ-सब सरकारि शब्द दिये विज्ञान दर्शन भरा। साहित्येओ तार कमति नेइ। एइ मने करो, 'हृदय' शब्दटा बलि अत्यन्त सहजेइ। कारओ हृदय आछे बा हृदय नेइ, यत सहजे बलि तत सहजे व्याख्या करते पारि ने। कारओ 'मनुष्यत्व' आछे बलते की आछे ता समस्तटा स्पष्ट करे बला असाध्य। ए क्षेत्रे ध्वनिर प्रतीक ना दिये अन्यरकम प्रतीकओ देओया येते पारे। मनुष्यत्व ब'ले एकटा आकारहीन पदार्थके कोनो-एकटा मूर्ति दिये बलाओ चले। किन्तु मूर्तिते जायगा जोड़े, तार भार आछे, ताके बये निये येते हय। ता छाड़ा ताके वैचित्र्य देओया याय ना। शब्देर प्रतीक आमादेर मनेर सङ्गे मिलिये थाके, अभिज्ञातेर सङ्गे सङ्गे तार अर्थेर विस्तार हतेओ बाधा घटे ना।

ए कथाटा जेने राखा भालो ये, सेइ-सब भार-लाघव-करा सरकारि अर्थेर शब्दगुलिके इङरेजिते बले अचाब्स्ट्राक्ट् शब्द। बाङलाय, एक एकटा नतुन प्रति-शब्देर दरकार। बोध करि 'निर्वस्तुक' बलले काज चलते पारे। वस्तु थेके-गुणके निष्क्रान्त करे नेओया ये भावमात्र ताके बलबार ओ बोझाबार जन्ये निर्वस्तुक शब्दटा हयतो व्यवहारेर योग्य। एइ अचाब्स्ट्राक्ट् शब्दगुलोके आश्रय करे मानुषेर मन एत दूरे चले येते पेरेछे यत दूरे तार इन्द्रिय शक्ति येते पारे ना, यत दूरे तार कोँनो यानवाहन पौँछय ना।

(४)

मानुष येमन जानबार जिनिस भाषा दिये जानाय तेमनि ताके जानाते हय सुख-दुःख, भालो लागा, मन्द लागा, निन्दा-प्रशंसार संवाद। भावे भङ्गीते, भाषाहीन आओयाजे, चाहनिते, हासिते, चोखेर जले एइ-सब अनुभूतिर अनेकखानि बोझानो येते पारे। एइगुलि हल मानुषेर प्रकृतिदत्त बोवार भाषा, ए भाषाय मानुषेर भावप्रकाश प्रत्यक्ष। किन्तु सुख दुःख भालोबासार बोध अनेक सूक्ष्मे याय, ऊर्ध्वे याय; तखन ताके इशाराय आना याय ना, वर्णनाय पाओया याय ना, केवल भाषार नैपुण्ये यतदूर सम्भव नाना इङ्गिते बुझिये देओया येते पारे। भाषा हृदयबोधेर गभीरे निये येते पेरेछे ब'लेइ मानुषेर हृदयावेगेर उपलब्धि उत्कर्ष

लाभ करेछे। संस्कृति-मानदेर बोधशक्तिर रूढ़ता याय क्षय हये, तादिर अनुभूतिर मध्ये सूक्ष्म सुकुमार भावेर प्रवेश घटे सहजे। गोँयार हृदय हच्छे अशिक्षित हृदय। अवश्य स्वभावदोषे रुचि ओ अनुभूतिर परुषता यादेर मज्जागत तादेर आशा छेड़े दिते हय। ज्ञानेर शक्ति नियेओ ए कथा खाटे। स्वाभाविक मूढ़ता यादेर दुर्भेद्य, ज्ञानविज्ञानेर चर्चाय तादेर बुद्धिके बेशि दूर पर्यन्त सार्थकता दिते पारे ना।

मानुषेर बुद्धिसाधनार भाषा आपन पूर्णता देखियेछे दर्शने विज्ञाने। हृदय-वृत्तिर चूड़ान्त प्रकाश काव्ये। दुइयेर भाषाय अनेक तफात। ज्ञानेर भाषा यतदूर सम्भव परिष्कार हओया चाइ; ताते ठिक कथाटार ठिक माने थाका दरकार, साजसज्जार बाहुल्ये से येन आच्छन्न ना हय। किन्तु भावेर भाषा किछु यदि अस्पष्ट थाके, यदि सोजा क'रे ना बला हय, यदि ताते अलङ्कार थाके उपयुक्त-मतो, तातेइ काज देय बेशि। ज्ञानेर भाषाय चाइ स्पष्ट अर्थ; भावेर भाषाय चाइ इशारा, हयतो अर्थ बाँका क'रे दिये।

भालो लागा बोझाते कवि बललेन, 'पाषाण मिलाये याय गायेर वातासें। बललेन, 'ढल ढल काँचा अङ्गेर लावणि अवनि बहिया याय।' एखाने कथा-गुलोर ठिक माने निले पागलामि हये दाँड़ाबे। कथागुलो यदि विज्ञानेर बइये थाकत ता हले बुझतुम, विज्ञानी नतुन आविष्कार करेछेन एमन एकटि दैहिक हाओया यार रासायनिक क्रियाय पाथर कठिन थाकते पारे ना, ग्यास रूपे हय अदृश्य, किंवा कोनो मानुषेर शरीरे एमन एकटि रश्मि पाओया गेछे यार नाम देओया हयेछे लावणि, पृथिवीर टाने यार विकिरण माटिर उपर दिये छड़िये येते थाके। शब्देर अर्थके एकान्त विश्वास करले एइरकम एकटा व्याख्या छाड़ा उपाय थाके ना। किन्तु ए-ये प्राकृत घटनार कथा नय, ए-ये मने-हय-येन'र कथा। शब्द तैरि हयेछे ठिकटा-की जानाबार जन्ये; सेइजन्ये ठिक-येन-की बलते गेले तार अर्थके बाड़ाते हय, बाँकाते हय। ठिक-येन-की'र भाषा अभिधाने बँधे देओया नेइ, ताइ साधारण भाषा दियेइ कविके कौशले काज चालाते हय। ताकेइ बला याय कवित्व। वस्तुत कवित्व एत बड़ो जायगा पेयेछे तार प्रधान कारण, भाषार शब्द केवल आपन सादा अर्थ दिये सब भाव प्रकाश करते पारे ना। ताइ कवि लावण्य शब्देर यथार्थ संज्ञा त्यास क'रे बानिये बललेन, येन लावण्य एकटा झरना, शरीर थेके झ'रे पड़े माटिते। कथार अर्थटाके सम्पूर्ण नष्ट क'रे दिये ए हल व्याकुलता; एते बलार सङ्गे सङ्गेइ बला हच्छे 'बलते पारछि ने'। एइ अनिर्वचनीयतार सुयोग निये नाना कवि नाना रकम अत्युक्तिर चेष्टा करे। सुयोग नय तो की; याके बला याय ना ताके बलबार सुयोगइ कविर

सौभाग्य। एइ सुयोगेइ केउ लावण्यके फुलेर गन्धेर सङ्गे तुलना करते पारे, केउ बा निःशब्द वीणाध्वनिर सङ्गे—असङ्गतिके आरओ बहु दूरे टेने निये गिये। लावण्यके कवि ये लावणि बलेछेन सेओ एकटा अधीरता। प्रचलित शब्दके अप्रचलितेर चेहारा दिये भाषार आभिधानिक सीमानाके अनिर्दिष्ट भावे बाड़िये देओया हल।

हृदयावेगे यार सीमा पाओया-याय ना ताके प्रकाश करते गेले सीमाबद्ध भाषार बेड़ा भेङे दिते हय। कवित्वे आछे सेइ बेड़ा भाङार काज। एइजन्येइ मा तार सन्तानके या नय ताइ ब'ले एकके आर क'रे जानाय। बले चाँद, बले मानिक, बले सोना। एक दिके भाषा स्पष्ट कथार वाहन, आर-एक दिके अस्पष्ट कथारओ। एक दिके विज्ञान चलेछे भाषार सिँड़ि बेये भाषासीमार प्रत्यन्ते गिये भाषातीत संकेतचिह्न; आर-एक दिके काव्यओ भाषार धापे धापे भावनार दूरप्रान्ते पौँछिये अवशेषे आपन बाँधा अर्थेर अन्यथा क'रेइ भावेर इशारा तैरि करते बसेछे।

[सन् १९३८ के ग्रीष्म में मोंपू में लिखित। कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा अक्टबर १९३८ में प्रकाशित। भास्कराचार्य सुनीति कुमार चटर्जी को समर्पित]

संज्ञा-विचार

पौषमासेर बालके उत्कृष्ट संज्ञा बाहिर करिबार जन्य 'हुजुग', न्याकामि', एवं 'आह्लादे' एइ तिनटि शब्द निर्दिष्ट करिया दियाछिलाम, पाठकदेर निकट हइते अनेकगुलि संज्ञा आमादेर हाते आसियाछे।[1]

कथागुलि सम्पूर्ण प्रचलित। आमरा परस्पर कथोपकथने ओइ कथागुलि यखन व्यवहार करि तखन काहाराओ बुझिबार भुल हय ना, अथच स्पष्ट करिया अर्थ जिज्ञासा करिले भिन्न लोके भिन्न अर्थ बलिया थाकेन। इहा हइते एमन बुझाइतेछे ना ये, वास्तविकइ ओइ कथागुलि भिन्न लोके भिन्न अर्थ बुझिया थाकेन—कारण, ताहा हइले तो ओ-कथा लइया कोनो काजइ चलित ना। प्रकृत कथा एइ, आमरा अनेक जिनिस बुझिया थाकि, किन्तु की बुझिलाम सेटा भालो करिया बुझिते अनेक चिन्ता आवश्यक करे। येमन आमरा अनेके सहजेइ साँतार दिते पारि, किन्तु की उपाये साँतार दितेछि ताहा बुझाइया बलिते पारि ना। अथवा, एकजन मानुष रागिले ताहार मुखभङ्गी देखिले आमरा सहजेइ बलिते पारि मानुषटा रागियाछे; किन्तु आमि यदि पाँचजनके डाकिया जिज्ञासा करि, आच्छा बलो देखि रागिले मानुषेर मुखेर किरूप परिवर्तन हय, मुखेर कोन् कोन् मांसपेशीर किरूप विकार हय, मुखेर कोन् अंशेर किरूप अवस्थान्तर हय, ताहा हइले पाँचजनेर वर्णनाय प्रभेद लक्षित हइबे। अथच क्रुद्ध मनुष्यके देखिलेइ पाँचजने विना मतभेदे समस्वरे बलिया उठिबे लोकटा भारि चटिया उठियाछे। पाठकदेर निकट हइते ये-सकल संज्ञा पाइयाछि ताहार कतकगुलि एइ स्थाने परे परे आलोचना करिया देखिलेइ परस्परेर मध्ये अनेक प्रभेद देखा याइबे।

---

१. पाठकदेर प्रति : बालकेर ये-कोनो ग्राहक 'हुजुग', 'न्याकामि' ओ 'आह्लादे' शब्देर सर्वोत्कृष्ट संक्षेप संज्ञा (definition) लिखिया पौषमासेर २०शे तारिखेर मध्ये अमादिगेर निकट पाठाइबेन ताँहाके एकटि भालो ग्रन्थ पुरस्कार देओया हइबे। एकेकटि संज्ञा पाँचटि पदेर अधिक ना हय। बालक, १२९२ पौष।

एकजन बलितेछेन, 'हुजुक--जनसाधारणेर हृदयोन्मादक आन्दोलन।' ता यदि हय तो, बुद्ध चैतन्य यिशु क्रमोयेल ओयाशिँटन प्रभृति सकलेइ हुजुक करियाछिलेन।

इनिइ बलितेछेन, 'न्याकामि--अभिमानवशत किछुते अनिच्छा प्रकाश अथवा इच्छासत्त्वे अभिमानीर अनिच्छा प्रकाश।''

स्थलविशेषे अभिमानच्छले कोनो व्यक्ति न्याकामि करितेओ पारे, किन्तु ताइ बलिया अभिमानवशत अनिच्छा प्रकाश कराकेइ ये न्याकामि बले ताहा नहे।

आह्लादे शब्देर व्याख्या करिते गिया इनि बलेन, 'दशजनेर आह्लाद पाइय अहङ्कृत।' प्रशयप्राप्त, अहङ्कृत एवं 'आह्लादे'-र मध्ये ये अनक प्रभेद बला बाहुल्य।

हुजुग शब्देर निम्नलिखित प्राप्त संज्ञागुलि परे परे प्रकाश करिलाम।

हुजुग

१. विस्मयजनक संवाद याहा सत्य कि मिथ्या निर्णय करा कठिन।

२. अकारण विषये उद्योग ओ उात्सह (अकारण शब्देर दुइ अर्थ--१ अनिर्दिष्ट; २ तुच्छ, सामान्य)।

३. अल्पेते नेचे ओठार नाम।

४. अतिरञ्जित जनरव।

*

६. फल अनिश्चित एरूप विषये माता।

७. कोनो-एक घटना, लोके याहार ह्यापाय प'ड़े स्रोते भासे। 'राजारदरे नेचे बेड़ानो।' 'झड़ेर आगे धुला उड़ा।'

८. फस् कथाय नेचे ओठा।

९. देशव्यापी कोनो नूतन (सत्य एवं मिथ्या) आन्दोलन।

१०. बाह्याडम्बेर मत्तता।

प्रथम संज्ञाटि ये ठिक हय नाइ ताहा व्यक्त करिया बलाइ बाहुल्य।

द्वितीय संज्ञा सम्बन्धे वक्तव्य एइ ये, लेखक निजेइ अकारण शब्देर ये-अर्थ निर्देश करियाछेन ताहा परिष्कार नहे। अनिर्दिष्ट अर्थात् याहार लक्ष स्थिर हय नाइ एमन कोनो तुच्छ सामान्य विषयकेइ बोध करि तिनि अकारण विषय बलितेछेन--ताँहार मते एइरूप विषये उद्योग ओ उत्साहकेइ हुजुक बले। केह यदि

---

* मूले मुद्राकरप्रमाद।

विशेष उद्योगेर सहित एकटा बालुकार स्तुप निर्माण करिया समस्त दिन धरिया परमोत्साहे ताहा आबार भाङ्गिते थाके तबे ताहाके हुजुके बलिबे ना पागल बलिबे ?

तृतीय संज्ञा। राम यदि घुड़ि उड़ाइबार प्रस्ताव शुनिबामात्र उत्साहे नाचिया उठे तबे रामके कि हुजुके बलिबे।

चतुर्थ संज्ञा। अतिरञ्जित जनरवके ये हुजुक बले ना ताहा आर काहाकेओ बुझाइया बलिते हइबे ना। श्याम ताहार कन्यार विवाहोपलक्षे पाँच श टाका खरच करियाछे; लोके यदि रटाय ये से पाँच हाजार टाका खरच करियाछे, तबे सेइ जनरव केइ कि हुजुक बलिबे।

पञ्चम संज्ञा। माझे माझे संवादपत्रे असम्भव संवाद राष्ट्र हइया थाके, ताहाके केह हुजुक बले ना।

षष्ठ संज्ञा। लाभ अनिश्चित एमनतरो व्यवसाये अनेके अर्थलोभे प्रवृत्त हइया थाकेन, सेरूप व्यवसायके केह हुजुक बले ना।

सप्तम। ए संज्ञाटि परिष्कार नहे। ये-घटनार स्रोते लोके भासिते थाके ताहाके हुजुक बला याय ना; तबे लेखक ह्यापा शब्देर योग करिया इहार मध्ये आर-एकटि नूतन भाव प्रवेश कराइयाछेन। किन्तु ह्यापा शब्देर ठिक अर्थटि की से सम्बन्धे तर्क उठिते पारे, अतएव हुजुग शब्देर न्याय ह्यापा शब्दओ संज्ञा-निर्देशयोग्य। सुतरां ह्यापा शब्देर साहाय्ये हुजुग शब्द बोझाइबार चेष्टा संगत हय ना। 'राजारदरे नेचे बेड़ानो', 'झड़ेर आगे धुला उड़ा'—दुटि व्याख्याओ सुस्पष्ट नहे।

अष्टम। हरि यदि माधवके बले, तुइ टयाँकशालेर दाओयान हइबि,—अमनि यदि माधव नाचिया उठे—तबे माधवेर सेइ उत्साह-उल्लासके हुजुग बला याय ना।

नवम। आन्दोलन नूतन हइलेइ ताहाके हुजुग बला याइते पारे ना।

दशम। बाह्याडम्बरे मत्तता मात्रइ हुजुग बलिते पारि ना। कोनो राय बहादुर यदि ताहार खेताब ओ गाड़िजुड़ि लइया मातिया थाके, ताहार सेइ मत्तताके कि हुजुग बला याय।

आमरा ये-लेखकके पुरस्कार दियाछि तिनि हुजुग शब्देर निम्नलिखित मतो व्याख्या करेन :

'माथा नाइ माथा व्यथा' गोछेर कतकगुला नाचुने जिनिस लइया ये-नाचन आरम्भ हय सेइ नाचनेर अवस्थाकेइ हुजुग बले। विशेष किछुइ हय नाइ अथवा अति सामान्य एकटा किछु हइया छे आर सेइटाके लइया सकले नाचिया उठियाछे, एइ अवस्थार नाम हुजुग।

आमरा देखितेछि हुजुगे प्रथमत एमन एकटा विषय थाका चाइ याहार प्रतिष्ठा-भूमि नाइ––याहार डालपाला खुब विस्तृत, किन्तु शिकड़ेर दिकेर अभाव। मने करो आमि 'सार्वजनीनता' वा 'विश्वप्रेम' प्रचारेर जन्य एक सम्प्रदाय सृष्टि करिया बसियाछि; ताहार कत मन्त्रतन्त्र कत अनुष्ठान ताहार ठिक नाइ, किन्तु आमार क्षुद्र सम्प्रदायेर बहिर्भूत लोकदेर प्रति आमादेर जात विद्वेष प्रकाश पाइतेछे––मूलेइ प्रेमेर अभाव अथच प्रेमेर अनुष्ठानेर त्रुटि नाइ। द्वितीयत, इहार सङ्गे एकटा नाचनेर योग थाका चाइ, अर्थात् काजेर प्रति ततटा नहे यतटा मत्ततार प्रति लक्ष। अर्थात् हो-हो करिया बेश समय काटिया याइते छे, खुब एकटा हाङ्गामा हइतेछे एवं ताहाते इ एकटा आनन्द पाइतेछि। यदि स्थिर हइया स्तब्धभावे काज करिते बलो तबे ताहाते मन लागे ना, कारण नाचानो एवं नाचा, ए दुटोइ मुख्य आवश्यक। तृतीयत, केवल एकजनके लइया हुजुग हय ना––साधारणके आवश्यक––साधारणके लइया एकटा हट्टगोल बाधाइबार चेष्टा। चतुर्थत, हुजुग केवल एकटा खबरमात्र रटानो नहे; कोनो अनुष्ठाने प्रवृत्त हइबार जन्य समारोहेर सहित उद्योग करा, तार परे सेटा हउक बा ना-हउक।

आमादेर पुरस्कृत संज्ञालेखकेर संज्ञा ये सर्वाङ्गसम्पूर्ण ओ यथेष्ट संक्षिप्त हइयाछे ताहा बलिते पारि ना। तिनि ताँहार संज्ञार दुइटि पदके संक्षेप करिया अनायासेइ एकपदे परिणत करिते पारितेन।

संज्ञा रचना करा ये दुरूह ताहार प्रधान एकटा एइ देखितेछि ये, एकटि कथार सहित अनेकगुलि जटिल भाव जड़ित हइया थाके, लेखकेरा संक्षिप्त संज्ञार मध्ये ताहार सकलगुलि गुछाइया लइते पारेन ना––अनवधानतादोषे एकटा ना एकटा बाद पड़िया याय। उद्धृत संज्ञागुलिर मध्ये पाठकेरा ताहार दृष्टान्त पाइयाछेन।

न्याकामि

१. जानिया ना-जानार भान।
२. जानिया ना-जानार भाव प्रकाश करा।
३. जेनेओ जानि ना, एइ भाव प्रकाश करा।
४. जानियाओ ना-जानार भान।
५. अवगत थाकिया अज्ञता देखानो।
६. विलक्षण जानियाओ अज्ञानतार लक्षण प्रकाश करा।
७. बुझेओ निजेके अबुझेर न्याय प्रतिपन्न करा।
८. सेयाना हये बोका साजा।

९. जेनेशुने छेलेमि।

१०. बुझे अबुझ हओया। जेने शुने हाबा हओया।

११. इच्छाकृत अज्ञता एवं मिथ्या सरलता।

प्रथम हइते सप्तम संज्ञा पर्यन्त सकलगुलिर भाव प्राय एकइ रकम। अर्थात् सकलगुलितेइ जानियाओ ना-जानार भान, एइ अर्थइ प्रकाश पाइते छे; किन्तु एरूप भावके असरलता मिथ्याचरण वा कपटता बला याय। किन्तु कपटता ओ न्याकामि ठिक एकरूप जिनिस नहे। अष्टम संज्ञाय लेखक श्रीयुक्त महेन्द्रनाथ राय ये बलियाछेन, सेयाना हइया बोका साजा, इहाई आमार ठिक बोध हय। जानिया ना-जानार भाव प्रकाश करिलेइ हइबे ना, सेइ सङ्गे प्रकाश करिते हइबे आमि येन निर्बोध, आमार येन बुझिबार शक्तिइ नाइ। षष्ठ एव सप्तम संज्ञातेओ कतकटा एइ भाव प्रकाश पाइया छे, किन्तु तेमन स्पष्ट हय नाइ। नवम ओ दशम संज्ञा ठिक हइयाछे। किन्तु अष्टम हइते दशम संज्ञाते बोका, छेलेमि, हाबा शब्द हइयाछे; एइ शब्दगुलि संज्ञानिर्देश योग्य। अर्थात् हाबामि, बोकामि ओ छेलेमिर विशेष लक्षण की ताहा मनोयोगसहकारे आलोचना करिया देखिबार विषय। एइजन्य एकादश संज्ञार लेखक ये इच्छाकृत अज्ञतार भानेर सङ्गे 'मिथ्या सरलता' शब्द योग करिया दियाछेन, ताहाते न्याकामि शब्देर अर्थ परिष्कार हइयाछे। अज्ञता एवं सरलता उभयेर भान थाकिले तवे न्याकामि हइते पारे। आमादेर पुरस्कृत संज्ञालेखक लिखियाछेन, 'न्याकामि बलिते साधारणत जानिया शुनिया बोका साजार भाव बुझाय" परे द्वितीय पदे ताहार व्याख्या करिया बलियाछेन, "येन किछु जाने ना, येन किछु बुझे ना एइ भावेर नाम न्याकामि।" यन किछु बुझे ना बलिते लोकटा येन नेहात हारा, नितान्त बोका एइरूप बुझाय, लोकटा येन किछु बुझेइ ना, एवं ताहाके बुझाइबार उपायओ नाइ।

आह्लादे

१. स्वार्थेर जन्य विवेचनारहित।

२. याहारा परिमाणाधिक आह्लादे सर्वदाइ मत्त।

३. ये सकल ता'तेइ अन्यायरूपे आमोद चाय, अथवा ये हक् ना-हक् दाँत बेर करे।

४. अथवा आनन्द बा अभिमान-प्रकाशक।

५. अन्यके असन्तुष्ट करिया ये निजे हासे।

६. ये सर्वदा आह्लाद करिया बेड़ाय।

७. की समये की असमये ये आह्लाद प्रकाश करे।

आमरा देखितेछि हुजुगे प्रथमत एमन एकटा विषय थाका चाइ याहार प्रतिष्ठा-भूमि नाइ––याहार डालपाला खुब विस्तृत, किन्तु शिकड़ेर दिकेर अभाव। मने करो आमि 'सार्वजनीनता' वा 'विश्वप्रेम' प्रचारेर जन्य एक सम्प्रदाय सृष्टि करिया बसियाछि; ताहार कत मन्त्रतन्त्र कत अनुष्ठान ताहार ठिक नाइ, किन्तु आमार क्षुद्र सम्प्रदायेर बहिर्भूत लोकदेर प्रति आमादेर जात विद्वेष प्रकाश पाइतेछे–– मूलेइ प्रेमेर अभाव अथच प्रेमेर अनुष्ठानेर त्रुटि नाइ। द्वितीयत, इहार सङ्गे एकटा नाचनेर योग थाका चाइ, अर्थात् काजेर प्रति ततटा नहे यतटा मत्ततार प्रति लक्ष। अर्थात् हो-हो करिया बेश समय काटिया याइते छे, खुब एकटा हाङ्गामा हइतेछे एवं ताहाते इ एकटा आनन्द पाइतेछि। यदि स्थिर हइया स्तब्धभावे काज करिते बलो तबे ताहाते मन लागे ना, कारण नाचानो एवं नाचा, ए दुटोइ मुख्य आवश्यक। तृतीयत, केवल एकजनके लइया हुजुग हय ना––साधारणके आवश्यक––साधारणके लइया एकटा हट्टगोल बाधाइबार चेष्टा। चतुर्थत, हुजुग केवल एकटा खबरमात्र रटानो नहे; कोनो अनुष्ठाने प्रवृत्त हइबार जन्य समारोहेर सहित उद्योग करा, तार परे सेटा हउक बा ना-हउक।

आमादेर पुरस्कृत संज्ञालेखकेर संज्ञा ये सर्वाङ्गसम्पूर्ण ओ यथेष्ट संक्षिप्त हइयाछे ताहा बलिते पारि ना। तिनि ताँहार संज्ञार दुइटि पदके संक्षेप करिया अनायासेइ एकपदे परिणत करिते पारितेन।

संज्ञा रचना करा ये दुरूह ताहार प्रधान एकटा एइ देखितेछि ये, एकटि कथार सहित अनेकगुलि जटिल भाव जड़ित हइया थाके, लेखकेरा संक्षिप्त संज्ञार मध्ये ताहार सकलगुलि गुछाइया लइते पारेन ना––अनवधानतादोषे एकटा ना एकटा बाद पड़िया याय। उद्धृत संज्ञागुलिर मध्ये पाठकेरा ताहार दृष्टान्त पाइयाछेन।

न्याकामि

१. जानिया ना-जानार भान।
२. जानिया ना-जानार भाव प्रकाश करा।
३. जेनेओ जानि ना, एइ भाव प्रकाश करा।
४. जानियाओ ना-जानार भान।
५. अवगत थाकिया अज्ञता देखानो।
६. विलक्षण जानियाओ अज्ञानतार लक्षण प्रकाश करा।
७. बुझेओ निजेके अबुझेर न्याय प्रतिपन्न करा।
८. सेयाना हये बोका साजा।

९. जेनेशुने छेलेमि।

१०. बुझे अबुझ हओया। जेने शुने हाबा हओया।

११. इच्छाकृत अज्ञता एवं मिथ्या सरलता।

प्रथम हइते सप्तम संज्ञा पर्यन्त सकलगुलिर भाव प्राय एकइ रकम। अर्थात् सकलगुलितेइ जानियाओ ना-जानार भान, एइ अर्थइ प्रकाश पाइते छे; किन्तु एरूप भावके असरलता मिथ्याचरण वा कपटता बला याय। किन्तु कपटता ओ न्याकामि ठिक एकरूप जिनिस नहे। अष्टम संज्ञाय लेखक श्रीयुक्त महेन्द्रनाथ राय ये बलियाछेन, सेयाना हइया बोका साजा, इहाई आमार ठिक बोध हय। जानिया ना-जानार भाव प्रकाश करिलेइ हइबे ना, सेइ सङ्गे प्रकाश करिते हइबे आमि येन निर्बोध, आमार येन बुझिबार शक्तिइ नाइ। षष्ठ एव सप्तम संज्ञातेओ कतकटा एइ भाव प्रकाश पाइया छे, किन्तु तेमन स्पष्ट हय नाइ। नवम ओ दशम संज्ञा ठिक हइयाछे। किन्तु अष्टम हइते दशम संज्ञाते बोका, छेलेमि, हाबा शब्द हइयाछे; एइ शब्दगुलि संज्ञानिर्देश योग्य। अर्थात् हाबामि, बोकामि ओ छेलेमिर विशेष लक्षण की ताहा मनोयोगसहकारे आलोचना करिया देखिबार विषय। एइजन्य एकादश संज्ञार लेखक ये इच्छाकृत अज्ञतार भानेर सङ्गे 'मिथ्या सरलता' शब्द योग करिया दियाछेन, ताहाते न्याकामि शब्देर अर्थ परिष्कार हइयाछे। अज्ञता एवं सरलता उभयेर भान थाकिले तबे न्याकामि हइते पारे। आमादेर पुरस्कृत संज्ञालेखक लिखियाछेन, 'न्याकामि बलिते साधारणत जानिया शुनिया बोका साजार भाव बुझाय" परे द्वितीय पदे ताहार व्याख्या करिया बलियाछेन, "येन किछु जाने ना, येन किछु बुझे ना एइ भावेर नाम न्याकामि।" यन किछु बुझे ना बलिते लोकटा येन नेहात हारा, नितान्त खोका एइरूप बुझाय, लोकटा येन किछु बुझेइ ना, एवं ताहाके बुझाइबार उपायओ नाइ।

आह्लादे

१. स्वार्थेर जन्य विवेचनारहित।

२. याहारा परिमाणाधिक आह्लादे सर्वदाइ मत्त।

३. ये सकल ता'तेइ अन्यायरूपे आमोद चाय, अथवा ये हक् ना-हक् दाँत बेर करे।

४. अथवा आनन्द बा अभिमान-प्रकाशक।

५. अन्यके असन्तुष्ट करिया ये निजे हासे।

६. ये सर्वदा आह्लाद करिया वेड़ाय।

७. की समये की असमये ये आह्लाद प्रकाश करे।

८. ये अभिमानी अल्पे अधैर्य हय।

९. ये अनुपयुक्त समयेओ आबदारी।

१०. साधेर गोपाल नीलमणि।

आमार बोध हय, ये-व्यक्ति निजेके जगतेर आदुरे छेले मने करे ताहाके आह्लादे बले; प्रश्रयदात्री मायेर काछे आदुरे छेलेरा येरूप व्यवहार करे ये-व्यक्ति सकल जायगातेइ कतकटा सेइरूप व्यवहार करिते याय। अर्थात् ये-व्यक्ति समय-असमय पात्रापात्र विचार ना करिया सर्वत्र आवदार करिते याय, सर्वत्रइ दाँत बाहिर करे, मने करे सकलेइ ताहार सकल बाड़ाबाड़ि माप करिबे, से-इ आह्लादे। ताहाके के चाय ना-चाय, ताहाके के की-भावे देखे, से-विषय विवेचना ना करिया से दुलिते दुलिते गाये पड़िया सकलेर गा घेंषिया बसे, सकलेर आदर काड़िते चेष्टा करे। संज्ञालेखकगण अनेकइ आह्लादे व्यक्तिर एक-एकटि लक्षणमात्र निर्देश करियाछेन, किन्तु याहा बलिले ताहार सकल लक्षण व्यक्त हय एमन कोनो कथा बलेन नाइ। दशम संज्ञाके ठिक संज्ञा बलाइ याय ना।

याँहाके पुरस्कार देओया गियाछे ताँहार आह्लादे शब्देर संज्ञाह ठियक नाइ। तिनि बलेन :

भातेर फेनेर मतो टगवगे। याहादिगेर प्राय सकल कार्येइ 'एकेर मरण अन्येर आमोद' कथार सत्यता प्रमाण हय, अर्थात् तुमि बाँच आर मर आमार आमोद हइलेइ हइल, इहाइ याहादिगेर मत ओ कार्य, ताहादिगके आह्लादे' बला याय।

आमादेर पुरस्कृत संज्ञालेखक दुटि संज्ञार उत्तर दियाछेन। तृतीयटिते कृतकार्य हन नाई। श्री ब :—बलिया तिनि आत्मपरिचय दियाछेन, बोध-करि नाम प्रकाश करिते असम्मत। आमरा बलियाछिलाम। संज्ञा पाँच पदेर अधिक ना हय, केह केह पद बलिते शब्द बुझियाछेन। आमरा इंरेजि sentence अर्थे पद व्यवहार करियाछि।

१२९२

[सन् १९०९ में प्रकाशित। संज्ञाविचार मार्च १८८६ में (फाल्गुन १२९२) 'बालक' मासिक में प्रकाशित]

छन्देर अर्थ

शुधु कथा यखन खाड़ा दाँड़िय थाके तखन केवलमात्र अर्थके प्रकाश करे। किन्तु सेइ कथाके यखन तिर्यक भङ्गि ओ विशेष गति देओया याय तखन से आपन अर्थेर चेय आरओ किछु बशि प्रकाश करे। सेइ बशिटुकु ये की ता बलाइ शक्त। केनना ता कथार अतीत, सुतरां अनिर्वचनीय। या आमरा देखछि शुनछि जानछि तार सङ्गे यखन अनिर्वचनीयर योग हय तखन ताकेइ आमरा बलि रस। अर्थात् से जिनिसटाके अनुभव करा याय, व्याख्या करा याय ना। सकले जानेन, एइ रसइ हच्छे काव्येर विषय।

एइखान एकटा कथा मने राखा दरकार, अनिर्वचनीय शब्दटार माने अभावनीय नय। ता यदि हत ताहले ओटा काव्ये अकाव्ये कुकाव्ये कोथाओ कोनो काजे लागत ना। वस्तु-पदार्थेर संज्ञा निर्णय करा याय किन्तु रस-पदार्थेर करा याय ना। अथच रस आमादेर एकान्त अनुभूतिर विषय। गोलापके आमरा वस्तुरूपे जानि, आर गोलापके आमरा रसरूपे पाइ। एर मध्ये वस्तु-जानाके आमरा सादा कथाय तार आकार आयतन भार कोमलता प्रभृति बहुविध परिचयेर द्वारा व्याख्या करते पारि, किन्तु रस-पाओया एमन एकटि अखण्ड व्यापार ये ताके तेमन करे सादा कथाय वर्णना करा याय ना; किन्तु ताइ बलेइ सेटा अलौकिक अद्भुत असामान्य किछुइ नय। वरञ्च रसेर अनुभूति वस्तुज्ञानेर चेय आरो निकटतर प्रबलतर गभीरतर। एइजन्य गोलापेर आनन्दके आमरा यखन अन्येर मने सञ्चार करते चाइ तखन एकटा साधारण अभिज्ञतार रास्ता दियेइ करि थाकि। तफात एइ वस्तु-अभिज्ञतार भाषा सादा कथार विशेषण, किन्तु रसअभिज्ञतार भाषा आकार इङ्गित सुर एवं रूपक। पुरुषमानुषेर ये-परिचये तिनि आपिसेर बड़ो बाबु सेटा आपिसेर खातापत्र देखलेइ जाना याय, किन्तु मेयेर ये-परिचये तिनि गृहलक्ष्मी सेटा प्रकाशेर जन्ये ताँर सिँथेय सिँदुर, ताँर हाते कङ्कण। अर्थात्, एटार मध्ये रूपक चाइ, अलंकार चाइ, केनना केवलमात्र तथ्येर चेये ए ये बेशि; एर परिचय शुधु ज्ञान नय, हृदय। ओइ ये गृहलक्ष्मीके लक्ष्मी बला गेल एइटेइ तो हल एकटा कथार इशारामात्र; अथच आपिसेर बड़ोबाबुके तो आमादेर केरानि

नारायण बलबार इच्छाओ हय ना, यदिओ धर्मतत्त्वे बले थाके सकल नरेर मध्येइ नारायणेर आविर्भाव आछे। ताहलेइ बोझा याच्छे, आपिसेर बड़ोबाबुर मध्ये अनिर्वचनीयता नेइ। किन्तु येखाने ताँर गृहिणी साध्वी सेखाने ताँर मध्ये आछे। ताइ बले एमन कथा बला याय ना ये, ओइ बाबुटिकेइ आमरा सम्पूर्ण बुझि आर मालक्ष्मीके बुझि ने, वरञ्च उलटो। केवल कथा एइ ये, बोझबार बेलाय मा-लक्ष्मी यत सहज बोझाबार बेलाय तत नय।

'केबा सुनाइल श्यामनाम।' व्यापारटा घटना हिसाबे सहज। कोनो एक व्यक्ति द्वितीय व्यक्तिर काछे तृतीय व्यक्तिर नाम उच्चारण करेछे। एमन काण्ड दिनेर मध्ये पञ्चाशबार घटे। एइटुकु बलबार जन्ये कथाके बेशि नाड़ा देबार दरकार हय ना। किन्तु नाम कानेर भितर दिये यखन मरमे गिये पशे, अर्थात् एमन जायगाय काज करते थाके ये-जायगा देखा-शोनार अतीत, एवं एमन काज करते थाके याके मापा याय ना, ओजन करा याय ना, चोखेर सामने दाँड़-करिये यार साक्ष्य नेओया याय ना, तखन कथागुलोके नाड़ा दिये तादेर पुरो अर्थेर चेये तादेर काछ थेके आरो अनेक बेशि आदाय करे निते हय। अर्थात्, आवेगके प्रकाश करते गेले कथार मध्ये सेइ आवेगेर धर्म सञ्चार करते हय। आवेगेर धर्म हच्छे वेग। कथा यखन सेइ वेग ग्रहण करे तखनइ आमादेर हृदयभावेर सङ्गे तार मिल घटे।

एइ वेगेर कत वैचित्र्यइ ये आछे तार ठिकाना नेइ। एइ वेगेर वैचित्र्यइ तो आलोकेर रङ बदल हच्छे, शब्देर सुर बदल हच्छे, एवं लीलामयी सृष्टि रूप थेके रूपान्तर ग्रहण करछे। एमन कि सृष्टिर बाइरेर पर्दा सरिये भितरेर रहस्य-निकेतने यतइ प्रवेश करा याय ततइ वस्तुत्व घुचे गिये केवल वेगइ प्रकाश पेते थाके। शेषकाले एइ कथाइ मने हय, प्रकाशवैचित्र्येर मले बुझि एइ वेगवैचित्र्य। यदिदं सर्वं प्राण एजति निःसृतम्।

मानुषेर सत्तार मध्ये एइ अनुभूतिलोकइ हच्छे सेइ रहस्यलोक येखाने बाहिरेर रूपजगतेर समस्त वेग अन्तरे आवेग हये उठछे, एवं सेइ अन्तरेर आवेग आवार बाहिरे रूप ग्रहण करबार जन्ये उत्सुक हच्छे। एइजन्ये वाक्य यखन आमादेर अनुभूतिलोकेर वाहनेर काजे भर्ति हय तखन तार गति ना हले चले ना। से तार अर्थेर द्वारा बाहिरेर घटनाके व्यक्त करे, गतिर द्वारा अन्तरेर गतिके प्रकाश करे।

श्यामेर नाम राधा शनेछे। घटनाटा शेष हये गेछे। किन्तु ये-एकटा अदृश्य वेग जन्माले तार आर शेष नेइ। आसल व्यापारटाइ हल ताइ। सेइजन्ये कवि छन्देर झंकारेर मध्ये एइ कथाटाके दुलिये दिलेन। यतक्षण छन्द थाकबे

ततक्षण एइ दोला आर थामबे ना। 'सइ, केबा शुनाइल श्यामनाम।' केवलइ ढेउ उठते लागल। ओइ कटि कथा छापार अक्षरे यदिओ भालोमानुषेर मतो दाँड़िये थाकार भान करे, किन्तु ओदेर अन्तरेर स्पन्दन आर कोनो दिनइ शान्त हबे ना। ओरा अस्थिर हयेछे, एवं अस्थिर कराइ ओदेर काज।

आमादेर पुराणे छन्देर उत्पत्तिर कथा या बलेछे ता सबाइ जानेन। दुटि पाखिर मध्ये एकटिके यखन बाध्य मारले तखन वाल्मीकि मने ये-व्यथा पेलेने सेइ व्यथाके श्लोक दिये ना जानिये ताँर उपाय छिल ना। ये-पाखिटा मारा गेल एवं आर ये-एकटि पाखि तार जन्ये काँदल तारा कोन्‌काले लुप्त हये गेछे। किन्तु एइ निदारुणतार व्यथाटिके तो केवल कालेर मापकाठि दिये मापा याय ना। से ये अनन्तेर बुके बेजे रइल। सेइ जन्ये कविर शाप छन्देर वाहनके निये काल थेके कालान्तरे छुटते चाइले। हाय रे, आजओ सेइ व्याध नाना अस्त्र हाते नाना वीभत्सतार मध्ये नाना देशे नाना आकारे घुरे बेड़ाच्छे। किन्तु सेइ आदिकविर शाप शाश्वतकालेर कण्ठे ध्वनित हये रइल। एइ शाश्वतकालेर कथाके प्रकाश से करवार जन्येइ तो छन्द।

आमरा भाषाय बले थाकि, कथाके छन्दे बाँधा। किन्तु ए केवल बाइरे बाँधन, अन्तरे मुक्ति। कथाके तार जड़धर्म थेके मुक्ति देबार जन्येइ छन्द। सेतारेर तार बाँधा थाके बटे किन्तु तार थेके सुर पाय छाड़ा। छन्द हच्छे सेइ तार-बाँधा सेतार, कथार अन्तरेर सुरके से छाड़ा दिते थाके। धनुकेर से छिला, कथाके से तीरेर मतो लक्ष्येर मर्मेर मध्ये प्रक्षेप करे।

गोड़ातेइ छन्द सम्बन्धे एतखानि ओकालति करा हयतो बाहुल्य बले अनेकेर मने हते पारे। किन्तु आमि जानि, एमन लोक आछेन याँरा छन्दके साहित्येर एकटा कृत्रिम प्रथा बले मने करेन। ताइ आमाके एइ गोड़ार कथाटा बुझिये बलते हल ये, पृथिवी ठिक चब्बिश घण्टार घूर्णिलये तिनशो पँयषटि मात्रार छन्दे सूर्यके प्रदक्षिण करे, सेओ येमन कृत्रिम नय, भावावेग तेमनि छन्दके आश्रय करे आपन गतिके प्रकाश करबार ये चेष्टा करे सेओ तेमनि कृत्रिम नय।

एइखाने काव्येर सङ्गे गानेर तुलना करे आलोच्य विषयटाके परिष्कार करबार चेष्टा करा याक।

सुर पदार्थटाइ एकटा वेग। से आपनार मध्ये आपनि स्पन्दित हच्छे। कथा येमन अर्थेर मोक्तारि करबार जन्ये, सुर तेमन नय, से आपनाके आपनिइ प्रकाश करे। विशेष सुरेर सङ्गे विशेष सुरेर संयोगे ध्वनिवेगेर एकटा समवाय उत्पन्न हय। ताल सेइ समवेत वेगटाके गतिदान करे। ध्वनिर एइ गतिवेगे आमादेर हृदयेर मध्ये ये गति सञ्चार करे से एकटा विशुद्ध आवेग मात्र, तार

येन कोनो अवलम्बन नेइ। साधारणत संसारे आमरा कतकगुलि विशेष घटना आश्रय करे सुखे दुःखे विचलित हइ। सेइ घटना सत्यओ हते पारे, काल्पनिकओ हते पारे अर्थात् आमादेर काछे सत्येर मतो प्रतिभात हते पारे। तारइ आघाते आमादेर चेतना नाना रकमे नाड़ा पाय, सेइ नाड़ार प्रकारभेदे आमादेर आवेगेर प्रकृतिभेद घटे। किन्तु गानेर सुरे आमादेर चेतनाके ये नाड़ा देय से कोनो घटनार उपलक्ष दिये नय, से एकेबारे अव्यवहित भावे। सुतरां ताते ये आवेग उत्पन्न हय से अहैतुक आवेग। ताते आमादेर चित्त निजेर स्पन्दनवेगेइ निजेके जाने, बाइरेर सङ्गे कोनो व्यवहारेर योगे नय।

संसारे आमादेर जीवने ये सब घटना घटे तार सङ्गे नाना दाय जड़ानो आछे। जैविक दाय, वैषयिक दाय, सामाजिक दाय, नैतिक दाय। तार जन्ये नाना चिन्ताय नाना काजे आमादेर चित्तके बाइरे विक्षिप्त करते हय। शिल्पकलाय, काव्ये एवं रससाहित्यमात्रेइ आमादेर चित्तके सेइ-समस्त दाय थेके मुक्ति देय। तखन आमादेर चित्त सुखदुःखेर मध्ये आपनारइ विशुद्ध प्रकाश देखते पाय। सेइ प्रकाशइ आनन्द। प्रकाशके आमरा चिरन्तन बलि एइ जन्ये ये, बाइरेर घटना-गुलि संसारेर जाल बुनते बुनते, नाना प्रयोजन साधन करते करते, सरे याय, चले याय—तादेर निजेर मध्ये निजेर कोनो चरम मूल्य नेइ। किन्तु आमादेर चित्तेर ये आत्मप्रकाश तार आपनातेइ आपनार चरम, तार मूल्य तार आपनार मध्येइ पर्याप्त। तमसातीरे क्रौञ्चविरहिणीर दुःख कोनोखानेइ नेइ, किन्तु आमादेर चित्तेर आत्मानुभूतिर मध्ये सेइ वेदनार तार बाँधा हयेइ आछे। से घटना एखन घटछे ना, बा से घटना कोनो कालेइ घटे नि, ए कथा तार काछे प्रमाण करे कोनो लाभ नाइ।

याहोक, देखा याच्छे गानेर स्पन्दन आमादेर चित्तेर मध्ये ये-आवेग जन्मिये देय से कोनो सांसारिक घटनामूलक आवेग नय। ताइ मने हय, सृष्टिर गभीरतार मध्ये ये एकटि विश्वव्यापी प्राणकम्पन चलछे, गान शुने सेइटेरइ वेदनावेग येन आमरा चित्तेर मध्ये अनुभव करि। भैरवी येन समस्त सृष्टिर अन्तरतम विरह-व्याकुलता, देशमल्लार येन अश्रुगङ्गोत्रीर कोन् आदिनिर्झरेर कलकल्लोल। एते करे आमादेर चेतना देशकालेर सीमा पार हये निजेर चञ्चल प्राणधाराके विराटेर मध्ये उपलब्धि करे।

काव्येओ आमरा आमादेर चित्तेर एइ आत्मानुभूतिके विशुद्ध एवं मुक्तभावे अथच विचित्र आकारे पेते चाइ। किन्तु काव्येर प्रधान उपकरण हल कथा। से तो सुरेर मतो स्वप्रकाश नय। कथा अर्थके जानाच्छे। अतएव काव्ये एइ अर्थके निये कारबार करतेइ हवे। ताइ गोड़ाय दरकार, एइ अर्थटा येन रस-

मूलक हय। अर्थात् सेटा एमन किछु हय या स्वतइ आमादेर मने स्पन्दन सञ्चार करे, याके आमरा बलि आवेग।

किन्तु येहेतु कथा जिनिसटा स्वप्रकाश नय, एइ जन्ये सुरेर मतो कथार सङ्गे आमादेर चित्तेर साधर्म्य नेइ। आमादेर चित्त वेग्‌वान, किन्तु कथा स्थिर। ए प्रबन्धेर आरम्भेइ आमरा एइ विषयटार आलोचना करेछि। बलेछि, कथाके वेग दिये आमादेर चित्तेर सामग्री करे तोलबार जन्ये छन्देर दरकार। एइ छन्देर वाहनयोगे कथा केवल ये द्रुत आमादेर चित्ते प्रवेश करे ता नय, तार स्पन्दने निजेर स्पन्दन योग करे देय।

एइ स्पन्दनेर योगे शब्देर अर्थ ये की अपरूपता लाभ करे ता आगे थाकते हिसाबे करे बला याय ना। सेइजन्ये काव्यरचना एकटा विस्मयेर व्यापार। तार विषयटा कविर मने बाँधा, किन्तु काव्येर लक्ष्य हच्छे विषयके अतिक्रम करा; सेइ विषयेर चेये वेशिटुकुइ हच्छे अनिर्वचनीय। छन्देर गति कथार मध्य थेके सेइ अनिर्व्वचनीयके जागिये तोले।

रजनी शाङनघन, घन देया-गरजन,
रिमिझिमि शबदे बरिषे।
पालङ्कें शयान रङ्गे, विगलित चीर अङ्गे.
निन्द याइ मनेर हरिषे।

बादलार रात्रे एकटि मेये बिछानाय शुये घुमोच्छे, विषयटा एइमात्र किन्तु छन्द एइ विषयटिके आमादेर मने काँपिये तुलतेइ एइ मेयेर घुमोनो व्यापारटि येन नित्यकालके आश्रय करे एकटि परम व्यापार हये उठल--एमन कि, जर्मन काइजार आज ये चार बछर धरे एमन दुर्दान्त प्रतापे लड़ाइ करछे सेओ एर तुलनाय तुच्छ एवं अनित्य। ओइ लड़ाइयेर तथ्यटाके एकदिन बहुकष्टे इतिहासेर बइ थेके मुखस्थ करे छेलेदेर एक्‌जामिन पाश करते हबे; किन्तु 'पालङ्कें शयान रङ्गे, विगलित चीर अङ्गे, निन्द याइ मनेर हरिषे', ए पड़ा-मुखस्थ करार जिनिस नय। ए आमरा आपनार प्राणेर मध्ये देखते पाब, एवं या देखब सेटा मेयेर बिछानाय शुये घुमोनोर चेय अनेक बेशि। एइ कथाटाकेइ आरेक छन्दे लिखले विषयटा ठिकइ थाकबे, किन्तु विषयेर चेय वशि येटा तार अनेकखानि बदल हबे।

[जुलाई १९३६ में प्रकाशित। 'छंदेर अर्थ' मार्च १९१८ में मासिक सबुजपत्र में प्रकाशित हुआ था]

साहित्येर तात्पर्य

बाहिरेर जगत् आमादेर मनर मध्ये प्रवेश करिया आर-एकटा जगत् हइया उठितेछे। ताहाते ये केवल बाहिरेर जगतेर रङ आकृति ध्वनि प्रभृति आछे ताहा नहे; ताहार सङ्गे आमादेर भालोलागा मन्द-लागा, आमादेर भय-विस्मय, आमादेर सुख-दुःख जड़ित——ताहा आमादेर हृदयवृत्तिर विचित्र रसे नाना भावे आभासित हइया उठितेछे।

एइ हृदयवृत्तिर रसे जारिया तुलिया आमरा बाहिरेर जगत्के विशषरूपे आपनार करिया लइ।

येमन जठरे जारक रस अनेकेर पर्याप्तपरिमाण ना थाकाते बाहिरेर खाद्यके ताहारा भालो करिया आपनार शरीरेर जिनिस करिया लइते पारे ना तेमनि हृदयवृत्तिर जारक रस याहारा पर्याप्तरूपे जगते प्रयोग करिते पारे ना ताहारा बाहिरेर जगतटाके अन्तरेर जगत्, आपनार जगत्, मानुषेर जगत् करिया लइते पारे ना।

एक-एकटि जड़प्रकृति लोक आछे जगतेर खुब अल्प विषयइ याहादेर हृदयेर औत्सुक्य, ताहारा जगते जन्मग्रहण करियाओ अधिकांश जगत् हइते वञ्चित। ताहादेर हृदयेर गवाक्षगुलि संख्याय अल्प एवं विस्तृतिते संकीर्ण बलिया विश्वेर माझखाने ताहारा प्रवासी हइया आछे।

एमन सौभाग्यवान लोकओ आछेन याँहादेर विस्मय, प्रेम एवं कल्पना सर्वत्र सजाग, प्रकृतिर कक्षेकक्षे ताँहादेर निमन्त्रण, लोकालयेर नाना आन्दोलन ताँहादेर चित्तविणाके नाना रागिणीते स्पन्दित करिया राखे।

बाहिरेर विश्व इँहादेर मनेर मध्ये हृदयवृत्तिर नाना रसे, नाना रङे, नाना छाँचे, नाना रकम करिया तैरि हइया उठितेछे।

भावुकेर मनेर एइ जगत्टि बाहिरेर जगतेर चेये मानुषेर बेशि आपनार। ताहा हृदयेर साहाय्ये मानुषेर हृदयेर पक्षे बेशि सुगम हइया उठे। ताहा आमादेर चित्तेर प्रभावे ये विशषत्व लाभ करे ताहाइ मानुषर पक्षे सर्वापेक्षा उपादेय।

अतएव देखा याइतेछे, बाहिरेर जगतेर सङ्गे मानवेर जगतेर प्रभेद आछे।

कोन्टा सादा, कोन्टा कालो, कोन्टा बड़ो, कोन्टा छोटो, मानवेर जगत् सेइ खबरटुकुमात्र देय ना। कोन्टा प्रिय, कोन्टा अप्रिय, कोन्टा सुन्दर, कोन्टा असुन्दर, कोन्टा भालो, कोन्टा मन्द, मानुषेर जगत् सेइ कथाटा नाना सुरे बले।

एइ-ये मानुषेर जगत् इहा आमादेर हृदये हृदये बहिया आसितेछे। एइ प्रवाह पुरातन एवं नित्यनूतन। नव नव इन्द्रिय नव नव हृदयेर भितर दिया एइ सनातन स्रोत चिरदिनइ नवीभूत हइया चलियाछे।

किन्तु इहाके पाओया याय केमन करिया? इहाके धरिया राखा याय की उपाये? एइ अपरूप मानस-जगत्के रूप दिया पुनर्वार बाहिरे प्रकाश करिते ना पारिले इहा चिरदिनइ सृष्ट एवं चिरदिनइ नष्ट हइते थाके।

किन्तु ए जिनिस नष्ट हइते चाय ना। हृदयेर जगत् आपनाके व्यक्त करिबार जन्य व्याकुल ताइ चिरकालइ मानुषेर मध्ये साहित्येर आवेग।

साहित्येर विचार करिबार समय दुइटा जिनिस देखिते हय। प्रथम विश्वेर उपर साहित्यकारेर हृदयेर अधिकार कतखानि; द्वितीय, ताहा स्थायी आकारे व्यक्त हइयाछे कतटा।

सकल एइ दुइयेर मध्ये सामञ्जस्य थाके ना। येखाने थाके सेखानेइ सोनाय सोहागा।

कविर कल्पनासचेतन हृदय यतइ विश्वव्यापी हय ततइ ताँहार रचनाय गभीरताय आमादेर परितृप्ति बाड़े। ततइ मानव विश्वेर सीमा विस्तारित हइया आमादेर चिरन्तन विहारक्षेत्र विपुलता लाभ करे।

किन्तु रचनाशक्तिर नैपुण्यओ साहित्ये महामूल्य। कारण, याहाके अव-लम्बन करिया से शक्ति प्रकाशित हय ताहा अपेक्षाकृत तुच्छ हइलेओ एइ शक्तिटि एकेबारे नष्ट हय ना। इहा भाषार मध्ये, साहित्येर मध्ये, सञ्चित हइते थाके। इहाते मानवेर प्रकाशक्षमता वृद्धि करिया देय। एइ क्षमताटि लाभेर जन्य मानुष चिरदिन व्याकुल। ये कृतिगणेर साहाय्ये मानुषेर एइ क्षमता परिपुष्ट हइते थाके मानुष ताँहादिगके यशस्वी करिया ऋणशोधेर चेष्टा करे।

ये मानसजगत् हृदयभावेर उपकरणे अन्तरेर मध्ये सृष्ट हइया उठितेछे ताहाके बाहिरे प्रकाश करिबार उपाय की?

ताहाके एमन करिया प्रकाश करिते हइबे याहाते हृदयेर भाव उद्रिक्त हय।

हृदयेर भाव उद्रेक करिते साज सरञ्जाम अनेक लागे।

पुरुष-मानुषेर आपिसेर कापड़ सादासिधा; ताहा यतइ बाहुल्यवर्जित हय ततइ काजेर उपयोगी हय। मेयेदेर वेशभूषा, लज्जाशरम, भावभङ्गि समस्त सभ्यसमाजेइ प्रचलित।

मेयेदेर काज हृदयेर काज। ताहादिगके हृदय दिते हय ओ हृदय आकर्षण करिते हय; एइजन्य ताहादिगके नितान्त सोजासुजि, सादासिधा, छाँटा-छोंटा हइले चले ना। पुरुषदेर यथायथ हओया आवश्यक, किन्तु मेयेदेर सुन्दर हओया चाइ। पुरुषेर व्यवहार मोटेर उपर सुस्पष्ट हइलेइ भालो, किन्तु मेयेदेर व्यवहारे अनेक आवरण आभास-इङ्गित थाका चाइ।

साहित्यओ आपन चेष्टाके सफल करिबार जन्य अलङ्कारेर, रूपकेर छन्देर, आभासेर, इङ्गितेर आश्रय ग्रहण करे। दर्शन-विज्ञानेर मतो निरलङ्कार हइले ताहार चले ना।

अपरूपके रूपेर द्वारा व्यक्त करिते गेले वचनेर मध्ये अनिर्वचनीयताके रक्षा करिते हय। नारीर येमन श्री एवं ह्री साहित्येर अनिर्वचनीयताटिओ सेइरूप। ताहा अनुकरणेर अतीत। ताहा अलङ्कारके अतिक्रम करिया उठे, ताहा अलङ्कारेर द्वारा आच्छन्न हय ना।

भाषार मध्ये एइ भाषातीतके प्रतिष्ठित करिबार जन्य साहित्य प्रधानत भाषार मध्ये दुइटि जिनिस मिशाइया थाके, चित्र एवं सङ्गीत।

कथार द्वारा याहा बला चले ना छबिर द्वारा ताहा बलिते हय। साहित्ये एइ छबि आँकार सीमा नाइ। उपमा-तुलना-रूपकेर द्वारा भावगुलि प्रत्यक्ष हइया उठिते चाय। 'देखिबारे' आँखि-पाखि धाय' एइ एक कथाय बलरामदास की ना बलियाछेन? व्याकुल दृष्टिर व्याकुलता केवलमात्र वर्णनाय केमन करिया व्यक्त हइबे? दृष्टि पाखिर मतो उड़िया छुटियाछे, एइ छबिटुकुते प्रकाश करिबार बहुतर व्याकुलता मुहूर्ते शान्तिलाभ करियाछे।

ए छाड़ा छन्दे शब्दे वाक्यविन्यासे साहित्यके सङ्गीतेर आश्रय तो ग्रहण करितेइ हय। याहा कोनोमते बलिबार जो नाइ एइ सङ्गीत दियाइ ताहा बला चले। अर्थविश्लेष करिया देखिले ये कथाटा यत्सामान्य एइ सङ्गीतेर द्वाराइ ताहा असामान्य हइया उठे। कथार मध्ये वेदना एइ सङ्गीतइ सञ्चार करिया देय।

अतएव चित्र एवं सङ्गीतइ साहित्येर प्रधान उपकरण। चित्र भावके आकार देय एवं सङ्गीत भावके गतिदान करे। चित्र देह एवं संगीत प्राण।

किन्तु केवल मानुषेर हृदयइ ये साहित्ये धरिया राखिबार जिनिस ताहा नहे। मानुषेर चरित्रओ एमन एकटि सृष्टि याहा जड़सृष्टिर न्याय आमादेर इन्द्रियेर द्वारा आयत्तगम्य नहे। ताहाके दाँड़ाइते बलिले दाँड़ाय ना। ताहा मानुषेर पक्षे परम औत्सुक्यजनक, किन्तु ताहाके पशुशालार पशुर मतो बाँधिया खाँचार मध्ये पुरिया ठाहर करिया देखिबार सहज उपाय नाइ।

एइ धराबाँधार अतीत विचित्र मानवचरित्र, साहित्य इहाकेओ अन्तरलोक

हइते बाहिरे प्रतिष्ठित करिते चाय। अत्यन्त दुरूह काज। कारण, मानव-चरित्र स्थिर नहे, सुसङ्गत नहे; ताहार अनेक अंश, अनेक स्तर; ताहार सदर-अन्दरे अवारित गतिविधि सहज नय। ता छाड़ा ताहार लीला एत सूक्ष्म, एत अभावनीय, एत आकस्मिक ये, ताहाके पूर्ण आकारे आमादेर हृदयगम्य करा असाधारण क्षमतार काज। व्यास-वाल्मीकि-कालिदासगण एइ काज करिया आसियाछेन।

एइबार आमादेर समस्त आलोच्य विषयके एक कथाय बलिते गेले एइ बलिते हय, साहित्येर विषय मानवहृदय एवं मानवचरित्र।

किन्तु, मानवचरित्र एटुकुओ येन बाहुल्य बला हइल। वस्तुत बहिःप्रकृति एवं मानवचरित्र मानुषेर हृदयेर मध्ये अनुक्षण ये आकार धारण करितेछे, ये सङ्गीत ध्वनित करिया तुलितेछे, भाषारचित सेइ चित्र एवं सेइ गानइ साहित्य।

भगवानेर आनन्द प्रकृतिर मध्ये, मानवचरित्रेर मध्ये, आपनाके आपनि सृष्टि करितेछे। मानुषेर हृदयओ साहित्ये आपनाके सृजन करिबार, व्यक्त करिबार, चेष्टा करितेछे। एइ चेष्टार अन्त नाइ, इहा विचित्र। कविगण मानवहृदयेर एइ चिरन्तन चेष्टार उपलक्षमात्र।

भगवानेर आनन्दसृष्टि आपनार मध्य हइते आपनि उत्सारित; मानव-हृदयेर आनन्दसृष्टि ताहारइ प्रतिध्वनि। एइ जगत्सृष्टिर आनन्दगीतेर झङ्कार आमादेर हृदयवीणातन्त्रीके अहरह स्पन्दित करितेछे; सेइ-ये मानस सङ्गीत, भगवानेर सृष्टिर प्रतिघाते आमादेर अन्तरेर मध्ये सेइ-ये सृष्टिर आवेग, साहित्य ताहारइ विकाश। विश्वेर निश्वास आमादेर चित्तवंशीर मध्ये की रागिणी बाजाइतेछे साहित्य ताहाइ स्पष्ट करिया प्रकाश करिबार चेष्टा करितेछे। साहित्य व्यक्तिविशेषेर नहे, ताहा रचयितार नहे, ताहा दैववाणी। बहिःसृष्टि येमन ताहार भालोमन्द ताहार असम्पूर्णता लइया चिरदिन व्यक्त हइबार चेष्टा करितेछे, एइ वाणीओ तेमनि देशे देशे, भाषाय भाषाय, आमादेर अन्तर हइते बाहिर हइबार जन्य नियत चेष्टा करितेछे।

अग्रहायण १३१०

[नवम्बर, दिसम्बर १९०३ (अग्रहायण १३१०) में मासिक 'बंगदर्शन' में प्रकाशित]

साहित्येर सामग्री

एके बारे खाँटिभावे निजेर आनन्देर जन्यइ लेखा साहित्य नहे। अनेके कवित्व करिया बलेन ये, पाखि येमन निजेर उल्लासेइ गान करे, लेखकेर रचनार उच्छ्वासओ सेइरूप आत्मगत, पाठकेरा येन ताहा आड़ि पातिया शुनिया थाकेन।

पाखिर गानेर मध्ये पक्षिसमाजेर प्रति ये कोनो लक्ष नाइ, ए कथा जोर करिया बलिते पारि ना। ना थाके तो ना'इ रहिल, ताहा लइया तर्क करा बृथा, किन्तु लेखकेर प्रधान लक्ष्य पाठकसमाज।

ता बलियाइ ये सेटाके कृत्रिम बलिते हइबे एमन कोनो कथा नाइ। मातार स्तन्य एकमात्र सन्तानेर जन्य, ताइ बलियाइ ताहाके स्वतःस्फूर्त बलिबार कोनो बाधा देखि ना।

नीरव कवित्व एवं आत्मगत भावोच्छ्वास, साहित्ये एइ दुटो बाजे कथा कोनो कोनो महले चलित आछे। ये काठ ज्वले नाइ ताहाके आगुन नाम देओयाओ येमन, ये मानुष आकाशेर दिके ताकाइया आकाशेरइ मतो नीरव हइया थाके ताहाकेओ कवि बला सेइरूप। प्रकाशइ कवित्व, मनेर तलार मध्ये की आछे वा ना आछे ताहा आलोचना करिया बाहिरेर लोकेर कोनो क्षतिवृद्धि नाइ। कथाय बले 'मिष्टान्नमितरे जनाः'; भाण्डारे की जमा आछे ताहा आन्दाजे हिसाब करिया बाहिरेर लोकेर कोनो सुख नाइ, ताहादेर पक्षे मिष्टान्नटा हाते हाते पाओया आवश्यक।

साहित्ये आत्मगत भावोच्छ्वासओ सेइ रकमेर एकटा कथा। रचना रचयितार निजेर जन्य नहे इहाइ धरिया लइते हइबे, एवं सेइटे धरिया लइयाइ विचार करिते हइबे।

आमादेर मनेर भावेर एकटा स्वाभाविक प्रवृत्तिइ एइ, से नाना मनेर मध्ये निजेके अनुभूत करिते चाय। प्रकृतिते आमरा देखि, व्याप्त हइबार जन्य, टिकिया थाकिबार जन्य, प्राणीदेर मध्ये सर्वदा एकटा चेष्टा चलितेछ। ये जीव सन्तानेर द्वारा आपनाके यत बहुगुणित करिया यत बेशि जायगा जुड़िते पारे ताहार जीवनेर अधिकार तत बेशि बाड़िया याय, निजेर अस्तित्वके से येन तत अधिक सत्य करिया तोले।

मानुषेर मनोभावेर मध्येओ सेइ रकमेर एकटा चेष्टा आछे। तफातेर मध्ये एइ ये, प्राणेर अधिकार देशे ओ काले, मनोभावेर अधिकार मने एवं काले। मनोभावेर चेष्टा बहुकाल धरिया बहु मनके आयत्त करा।

एइ एकान्त आकांक्षाय कत प्राचीन काल धरिया कत इङ्गित, कत भाषा, कत लिपि, कत पाथरे खोदाइ, धातुते ढालाइ, चामड़ाय बाँधाइ—कत गाछेर छाले, पाताय, कागजे, कत तुलिते, खोन्ताय, कलमे, कत आँकजोक, कत प्रयास—बाँ दिक हइते डाहिने, डाहिन दिक हइते बाँये, उपर हइते नीचे, एक सार हइते अन्य सारे ; की ? ना, आमि याहा चिन्ता करियाछि, आमि याहा अनुभव करियाछि, ताहा मरिबे ना ; ताहा मन हइते मने, काल हइते काले चिन्तित हइया, अनुभूत हइया, प्रवाहित हइया चलिबे। आमार बाड़िघर, आमार आसबाबपत्र, आमार शरीर मन, आमार सुखदुःखेर सामग्री, समस्तइ याइबे ; केवल आमि याहा भावियाछि, याहा बोध करियाछि, ताहा चिरदिन मानुषेर भावना, मानुषेर बुद्धि आश्रय करिया सजीव संसारेर माझखाने बाँचिया थाकिबे।

मध्य एसियाय गोबि-मरुभूमिर बालुकास्तूपेर मध्य हइते यखन विलुप्त मानव समाजेर विस्मृत प्राचीनकालेर जीर्ण पुंथि बाहिर हइया पड़े तखन ताहार सेइ अजाना भाषार अपरिचित अक्षरगुलिर मध्ये की एकटि वेदना प्रकाश पाय। कोन् कालेर कोन् सजीव चित्तेर चेष्टा आज आमादेर मनेर मध्ये प्रवेश-लाभेर जन्य आँकुबाँकु करितेछे ! ये लिखियाछिल से नाइ, ये लोकालये लेखा हइयाछिल ताहाओ नाइ ; किन्तु मानुषेर मनेर भावटुकु मानुषेर सुखदुःखेर मध्ये लालित हइबार जन्य युग हइते युगान्तरे आसिया आपनार परिचय दिते पारितेछेना, दुइ बाहु बाड़ाइया मुखेर दिके चाहितेछे।

जगतेर मध्ये सर्वश्रेष्ठ सम्राट अशोक आपनार ये कथागुलिके चिरकालेर श्रुतिगोचर करिते चाहियाछिलेन ताहादिगके तिनि पाहाड़ेर गाये खुदिया दियाछिलेन। भावियाछिलेन, पाहाड़ कोनोकाल मरिबे ना, सरिबे ना, अनन्तकालेर पथेर धारे अचल हइया दाँड़ाइया नव नव युगेर पथिकदेर काछे एक कथा चिरदिन धरिया आवृत्ति करिते थाकिबे। पाहाड़के तिनि कथा कहिबार भार दियाछिलेन।

पाहाड़ कालाकालेर कोनो विचार ना करिया ताँहार भाषा वहन करिया आसियाछे। कोथाय अशोक, कोथाय पाटलिपुत्र, कोथाय धर्मजाग्रत भारतवर्षेर सेइ गौरवेर दिन ! किन्तु पाहाड़ सेदिनकार सेइ कथा-कयटि विस्मृत अक्षरे अप्रचलित भाषाय आजओ उच्चारण करितेछे। कतदिन अरण्य रोदन करियाछे। अशोकेर सेइ महावाणीओ कत शत वत्सर मानवहृदयके बोबार मतो केवल इशाराय आह्वान करियाछे ! पथ दिया राजपुत्र गेल, पाठान गेल, मोगल गेल, बर्गिर

तरवारि विद्युतेर मतो क्षिप्रवेगे दिग्दिगन्ते प्रलयेर कशाघात करिया गेल——केह ताहार इशाराय साड़ा दिल ना। समुद्रपारेर ये क्षुद्र द्वीपेर कथा अशोक कखनो कल्पनाओ करेन नाइ, ताँहार शिल्पीरा पाषाणफलके यखन ताँहार अनुशासन उत्कीर्ण करितेछिल तखन ये द्वीपेर अरण्यचारी 'द्रुयिद' गण आपनादेर पूजार आवेग भाषाहीन प्रस्तरस्तूपे स्तम्भित करिया तुलितेछिल, बहु सहस्र वत्सर परे सेइ द्वीप हइते एकटि विदेशी आसिया कालान्तरेर सेइ मूक इङ्गितपाश हइते ताहार भाषाके उद्धार करिया लइलेन। राजचक्रवर्ती अशोकेर इच्छा एत शताब्दी-परे एकटि विदेशीर साहाय्ये सार्थकता लाभ करिल। से इच्छा आर किछुइ नहे, तिनि यत बड़ो सम्राट्इ हउन, तिनि की चान की ना चान, ताँहार काछे कोन्टा भालो कोन्टा मन्द, ताहा पथेर पथिककेओ जानाइते हइबे। ताँहार मनेर भाव एत युग धरिया सकल मानुषेर मनेर आश्रय चाहिया पथप्रान्ते दाँड़ाइया आछे। राजचक्रवर्तीर सेइ एकाग्र आकांक्षार दिके पथेर लोक केह बा चाहितेछे, केह बा ना चाहिया चलिया याइतेछे।

ताइ बलिया अशोकेर अनुशासनगुलिके आमि ये साहित्य बलितेछि ताहा नहे। उहाते एइटुकु प्रमाण हइतेछे, मानवहृदयेर एकटा प्रधान आकांक्षा की। आमरा ये मूर्ति गड़ितेछि, छबि आँकितेछि, कविता लिखितेछि, पाथरेर मन्दिर निर्माण करितेछि, देशे विदेशे चिरकाल धरिया अविश्राम एइ-ये एकटा चेष्टा चलितेछे, इहा आर-किछुइ न, मानुषेर हृदय मनुषेर हृदयेर मध्ये अमरता प्रार्थना करितेछे।

याहा चिरकालीन मानुषेर हृदये अमर हइते चेष्टा करे साधारणत ताहा आमादेर क्षणकालीन प्रयोजन ओ चेष्टा हइते नाना प्रकारेर पार्थक्य अवलम्बन करे। आमरा सांवत्सरिक प्रयोजनेर जन्यइ धान यब गम प्रभृति ओषधिर बीज वपन करिया थाकि, किन्तु अरण्येर प्रतिष्ठा करिते चाइ यदि तबे वनस्पतिर बीज संग्रह करिते हय।

साहित्ये सेइ चिरस्थायित्वेर चेष्टाइ मानुषेर प्रिय चेष्टा। सेइजन्य देशहितैषी समालोचकेरा यतइ उत्तेजना करेन ये, सारवान साहित्येर अभाव हइतेछे, केवल नाटक नभेल काव्ये देश छाइया याइतेछे, तबु लेखकदेर हुँश हय ना। कारण, सारवान साहित्ये उपस्थित प्रयोजन मिटे, किन्तु अप्रयोजनीय साहित्ये स्थायित्वेर सम्भावना बेशि।

याहा ज्ञानेर कथा ताहा प्रचार हइया गेलेइ ताहार उद्देश्य सफल हइया शेष हइया याय। मानुषेर ज्ञान सम्बन्धे नूतन आविष्कारेर द्वारा पुरातन आविष्कार आच्छन्न हइया याइतेछे। काल याहा पण्डितेर

अगम्य छिल, आज ताहा अर्वाचीन बालकेर काछेओ नूतन नहे। ये सत्य नूतन वेशे विप्लव आनयन करे सेइ सत्य पुरातन वेशे विस्मयमात्र उद्रेक करे ना। आज ये सकल तत्त्व मूढ़ेर निकटे परिचित कोनो काले ये ताहा पण्डितेर निकटेओ विस्तर बाधा प्राप्त हइयाछिल, इहाइ लोकेर काछे आश्चर्य बलिया मने हय। किन्तु हृदयभावेर कथा प्रचारेर द्वारा पुरातन हय ना।

ज्ञानेर कथा एकबार जानिले आर जानिते हय ना। आगुन गरम, सूर्य गोल, जल तरल, इहा एकबार जानिलेइ चुकिया याय; द्वितीयबार केह यदि ताहा आमादेर नूतन शिक्षार मतो जानाइते आसे तबे धैर्य रक्षा करा कठिन हय। किन्तु भावेर कथा बारबार अनुभव करिया श्रान्तिबोध हय ना। सूर्य ये पूर्वदिके ओठे ए कथा आर आमादेर मन आकर्षण करे ना। किन्तु सूर्योदयेर ये सौन्दर्यओ आनन्द ताहा जीवसृष्टिर पर हइते आज पर्यन्त आमादेर काछे अम्लान आछे। एमन-कि, अनुभूति यत प्राचीन काल हइते यत लोकपरम्परार उपर दिया प्रवाहित हइया आसे ततइ ताहार गभीरता-वृद्धि हय, ततइ ताहा आमादिगके सहजे आविष्ट करिते पारे।

अतएव चिरकाल यदि मानुष आपनार कोनो जिनिस मानुषेर काछे उज्ज्वल नवीन भावे अमर करिया राखिते चाय तबे ताहाके भावेर कथाइ आश्रय करिते हय एइजन्य साहित्येर प्रधान अवलम्बन ज्ञानेर विषय नहे, भावेर विषय।

ताहा छाड़ा याहा ज्ञानेर जिनिस ताहा एक भाषा हइते आर एक भाषाय स्थानान्तर करा चले। मूल रचना हइते ताहाके उद्धार करिया अन्य रचनार मध्ये निविष्ट करिले अनेक समय ताहार उज्ज्वलता वृद्धि हय। ताहार विषयटि लइया नाना लोके नाना भाषाय नाना रकम करिया प्रचार करिते पारे; एइरूपेइ ताहार उद्देश्य यथार्थभावे सफल हइया थाके।

किन्तु भावेर विषय सम्बन्धे ए कथा खाटे ना। ताहा ये मूर्तिके आश्रय करे ताहा हइते आर विच्छिन्न हइते पारे ना।

ज्ञानेर कथाके प्रमाण करिते हय, आर भावेर कथाके सञ्चार करिया दिते हय। ताहार जन्य नानाप्रकार आभास-इङ्गित, नानाप्रकार छलाकलार दरकार हय। ताहाके केवल बुझाइया बलिलेइ हय ना, ताहाके सृष्टि करिया तुलिते हय।

एइ कलाकौशलपूर्ण रचना देहेर मतो। एइ देहेर मध्ये भावेर प्रतिष्ठाय साहित्यकारेर परिचय। एइ देहेर प्रकृति ओ गठन अनुसारेइ ताहार आश्रित भाव मानुषेर काछे आदर पाय, इहार शक्ति-अनुसारेइ ताहा हृदये ओ काले व्याप्ति-लाभ करिते पारे।

प्राणेर जिनिस देहेर उपरे एकान्त निर्भर करिया थाके। जलेर मतो ताहाके एक पात्र हइते आर-एक पात्रे ढाला याय ना। देह एवं प्राण परस्परके गौरवान्वित करिया एकात्म हइया विराज करे।

भाव, विषय, तत्त्व साधारण मानुषेर। ताहा एकजन यदि बाहिर ना करे तो कालक्रमे आर-एकजन बाहिर करिबे। किन्तु रचना लेखकेर सम्पूर्ण निजेर। ताहा एकजनेर येमन हइबे आर-एकजनेर तेमन हइबे ना। सेइजन्य रचनार मध्येइ लेखक यथार्थरूपे बाँचिया थाके; भावेर मध्ये नहे, विषयेर मध्ये नहे।

अवश्य, रचना बलिते गेले भावेर सहित भावप्रकाशेर उपाय दुइ सम्मिलित-भावे बुझाय; किन्तु विशेष करिया उपायटाइ लेखकेर।

दिघि बलिते जल एवं खनन-करा आधार दुइ एकसङ्गे बुझाय। किन्तु कीर्ति कोन्‌टा? जल मानुषेर सृष्टि नहे, ताहा चिरन्तन। दुइ जलके विशेष-भावे सर्वसाधारणेर भोगेर जन्य सुदीर्घकाल रक्षा करिबार ये उपाय ताहाइ कीर्तिमान मानुषेर निजेर। भाव सेइरूप मनुष्यसाधारणेर, किन्तु ताहाके विशेष मूर्तिते सर्वलोकेर विशेष आनन्देर सामग्री करिया तुलिबार उपायरचनाइ लेखकेर कीर्ति।

अतएव देखितेछि, भावके निजेर करिया सकलेर करा इहाइ साहित्य, इहाइ ललितकला। अङ्गार-जिनिसटा जले स्थले वातासे नाना पदार्थे साधारणभावे साधारणेर आछे; गाछपाला ताहाके निगूढ़ शक्तिबले विशेष आकारे प्रथमत निजेर करिया लया, एवं सेइ उपायेइ ताहा सुदीर्घकाल विशेषभावे सर्वसाधरणेर भोगेर द्रव्य हइया उठे। शधु ये ताहा आहार एवं उत्तापेर काजे लागे, ताहा नहे; ताहा हइते सौन्दर्य छाया स्वास्थ्य विकीर्ण हइते थाके।

अतएव देखा याइतेछे, साधारणेर जिनिसके विशेषभावे निजेर करिया, सेइ उपायेइ ताहाके पुनश्च विशेषभावे साधारणेर करिया तोला साहित्येर काज।

ता यदि हय, तबे ज्ञानेर जिनिस साहित्य हइते आपनि बाद पड़िया याय। कारण, इंराजिते याहाके ट्रुथ बले एवं बांलाते याहाके आमरा सत्य नाम दियाछि, अर्थात् याहा आमादेर बुद्धिर अधिगम्य विषय, ताहाके व्यक्तिविशेषे निजत्व-वर्जित करिया तोलाइ एकान्त दरकार। सत्य सर्वांशइ व्यक्तिनिरपेक्ष, शुभ्र-

निरञ्जन। माध्याकर्षणतत्त्व आमार काछे एकरूप, अन्येर काछे अन्यरूप नहे। ताहार उपरे विचित्र हृदयेर नूतन नूतन रङेर छाया पड़िबार जो नाइ।

ये-सकल जिनिस अन्येर हृदये सञ्चारित हइबार जन्य प्रतिभाशाली हृदयेर काछे सुर रङ इङ्गित प्रार्थना करे, याहा आमादेर हृदयेर द्वारा सृष्ट ना हइया उठिले अन्य हृदयेर मध्ये प्रतिष्ठालाभ करिते पारे ना, ताहाइ साहित्येर सामग्री। ताहा आकारे प्रकारे, भावे भाषाय, सुरे छन्दे मिलिया तबेइ बाँचिते पारे; ताहा मानुषेर एकान्त आपनार; ताहा आविष्कार नहे, अनुकरण नहे, ताहा सृष्टि। सुतरां ताहा एकबार प्रकाशित हइया उठिले ताहार रूपान्तर अवस्थान्तर करा चले ना; ताहार प्रत्येक अंशेर उपरे ताहार समग्रता एकान्तभावे निर्भर करे। येखाने ताहार व्यत्यय देखा याय सेखाने साहित्य-अंशे ताहा हेय।

कार्तिक १३१०

[अक्टूबर नवम्बर १९०३ (कार्तिक १३१०) में 'बंगदर्शन' में प्रकाशित।]

साहित्येर विचारक

घरे बसिया आनन्दे यखन हासि एवं दुःखे यखन काँदि तखन ए कथा कखनो मने उदय हय ना ये, आरओ एकटु बेशि करिया हासा दरकार बा कान्नाटा ओजने कम पड़ियाछे। किन्तु परेर काछे यखन आनन्द बा दुःख देखानो आवश्यक हइया पड़े तखन मनेर भावटा सत्य हइलेओ बाहिरेर प्रकाशटा सम्पूर्ण ताहार अनुयायी ना हइते पारे।

एमन-कि, मा'ओ यखन सशब्द विलापे पल्लीर निद्रातन्द्रा दूर करिया देय तखन से ये शुद्धमात्र पुत्रशोक प्रकाश करे ताहा नय, पुत्रशोकेर गौरव प्रकाश करितेओ चाय। निजेर काछे दुःखसुख प्रमाण करिबार प्रयोजन हय ना; परेर काछे ताहा प्रमाण करिते हय। सुतरां शोकप्रकाशेर जन्य येटुकु कान्ना स्वाभाविक शोकप्रमाणेर जन्य ताहार चेये सुर चड़ाइया ना दिले चले ना।

इहाके कृत्रिमता बलिया उड़ाइया दिले अन्याय हइबे। शोकप्रमाण शोक-प्रकाशेर एकटा स्वाभाविक अङ्ग। आमार छेलेर मूल्य ये केवल आमारइ काछे बेशि, ताहार विच्छेद ये कतखानि मर्मान्तिक व्यापार ताहा पृथिवीर आर-केहइ ये बुझिबे ना, ताहार अभावसत्त्वेओ पृथिवीर आर सकलेइ ये अत्यन्त स्वच्छन्दचित्ते आहार निद्रा ओ आपिस यातायाते प्रवृत्त थाकिबे, शोकातुर माताके ताहार पुत्रेर प्रति जगतेर एइ अवज्ञा आघात करिते थाके। तखन से निजेर शोकेर प्रबलतार द्वारा एइ क्षतिर प्राचुर्यके विश्वेर काछे घोषणा करिया ताहार पुत्रके येन गौरवान्वित करिते चाय।

ये अंशे शोक निजेर से अंशे ताहार एकटि स्वाभाविक संयम थाके, ये अंशे ताहा परेर काछे घोषणा ताहा अनेक समयेइ संगतिर सीमा लङ्घन करे। परेर असाड़ चित्तके निजेर शोकेर द्वारा विचलित करिबार स्वाभाविक इच्छाय ताहार चेष्टा अस्वाभाविक उद्यम अवलम्बन करे।

केवल शोक नहे, आमादेर अधिकांश हृदयभावेरइ एइ दुइटा दिकइ आछे; एकटा निजेर जन्य, एकटा परेर जन्य। आमार हृदयभावके साधारणेर हृदयभाव करिते पारिले ताहार एकटा सान्त्वना एकटा गौरव आछे। 'आमि याहाते विचलित तुमि ताहाते उदासीन' इहा आमादेर काछे भालो लागे ना।

कारण, नाना लोकेर काछे प्रमाणित ना हइले सत्यतार प्रतिष्ठा हय ना। आमिइ यदि आकाशके हलदे देखि, आर दशजने ना देखे तबे ताहाते आमार व्याधिइ सप्रमाण हय। सेटा आमारइ दुर्बलता।

आमार हृदयवेदनाय पृथिवीर यत बेशि लोक समवेदना अनुभव करिबे ततइ ताहार सत्यता प्रतिष्ठित हइबे। आमि याहा एकान्तभावे अनुभव करितेछि ताहा ये आमार दुर्बलता, आमार व्याधि, आमार पागलामि नहे, ताहा ये सत्य, ताहा सर्वसाधारणेर हृदयेर मध्ये प्रमाणित करिया आमि विशेषभावे सान्त्वना ओ सुख पाइ।

याहा नील ताहा दश जनेर काछे नील बलिया प्रचार करा कठिन नहे; किन्तु याहा आमार काछे सुख बा दुःख, प्रिय बा अप्रिय, ताहा दशजनेर काछे सुख बा दुःख, प्रिय बा अप्रिय बलिया प्रतीत करा दुरूह। से अवस्थाय निजेर भावके केवल मात्र प्रकाश करियाइ खालास पाओया याय ना; निजेर भावके एमन करिया प्रकाश करिते हय याहाते परेर काछेओ ताहा यथार्थ बलिया अनुभूत हइते पारे। सुतरां एइखानेइ बाड़ाबाड़ि हइबार सम्भावना। दूर हइते ये जिनिसटा देखाइते हय ताहा कतकटा बड़ो करिया देखानो आवश्यक। सेटुकु बड़ो सत्येर अनुरोधेइ करिते हय। नहिले जिनिसटा ये परिमाणे छोटो देखाय सेइ परिमाणेइ मिथ्या देखाय। बड़ो करियाइ ताहाके सत्य करिते हय।

आमार सुखदुःख आमार काछे अव्यवहित, तोमार काछे ताहा अव्यवहित हय। आमि हइते तुमि दूरे आछ। सेइ दूरत्वटुकु हिसाब करिया आमार कथा तोमार काछे किछु बड़ो करियाइ बलिते हय।

सत्यरक्षापूर्वक एइ बड़ो करिया तुलिबार क्षमताय साहित्यकारेर यथार्थ परिचय पाओया याय। येमनटि ठिक तेमनि लिपिबद्ध करा साहित्य नहे।

कारण, प्रकृतिते याहा देखि ताहा आमार काछे प्रत्यक्ष, आमार इन्द्रिय ताहार साक्ष्य देय। साहित्ये याहा देखाय ताहा प्राकृतिक हइलेओ ताहा प्रत्यक्ष नहे। सुतरां साहित्ये सेइ प्रत्यक्षतार अभाव पूरण करिते हय।

प्राकृत सत्ये एवं साहित्यसत्ये एइखानेइ तफात आरम्भ हय। साहित्येर मा येमन करिया काँदे प्राकृत मा तेमन करिया काँदे ना। ताइ बलिया साहित्येर मा'र कान्ना मिथ्या नहे। प्रथमत, प्राकृत रोदन एमन प्रत्यक्ष ये ताहार वेदना आकारे-इङ्गिते, कण्ठस्वरे, चारि दिकेर दृश्ये एवं शोकघटनार निश्चय प्रमाणे आमादेर प्रतीति ओ समवेदना उद्रेक करिया दिते विलम्ब करे ना। द्वितीयत, प्राकृत मा आपनार शोक सम्पूर्ण व्यक्त करिते पारे ना, से क्षमता ताहार नाइ, से अवस्थाओ ताहार नय।

एइजन्यइ साहित्य ठिक प्रकृतिर आर्शि नहे। केवल साहित्य केन, कोनो कलाविद्याइ प्रकृतिर यथायथ अनुकरण नहे। प्रकृतिते प्रत्यक्षके आमरा प्रतीति करि, साहित्ये एवं ललितकलाय अप्रत्यक्ष आमादेर काछे प्रतीयमान। अतएव ए स्थले एकटि अपरटिर आर्शि हइया कोनो काज करिते पारे ना।

एइ प्रत्यक्षतार अभाव-वशत साहित्ये छन्दोबन्ध-भाषाभङ्गिर नानाप्रकार कल-बल आश्रय करिते हय। एइरूप रचनार विषयटि बाहिरे कृत्रिम हइया अन्तरे प्राकृत अपेक्षा अधिकतर सत्य हइया उठे।

एखाने 'अधिकतर सत्य' एइ कथाटा व्यवहार करिबार विशेष तात्पर्य आछे। मानुषेर भावसम्बन्धे प्राकृत सत्य जड़ितमिश्रित, भग्नखण्ड, क्षणस्थायी। संसारेर ढेउ क्रमागतइ ओठापड़ा करितेछे, देखिते देखिते एकटार घाड़े आर-एकटा आसिया पड़ितेछे, ताहार मध्ये प्रधान-अप्रधानेर विचार नाइ—तुच्छ ओ असामान्य गाये गाये ठेलाठेलि करिया बेड़ाइतेछे। प्रकृतिर एइ विराट रङ्गशालाय यखन मानुषेर भावाभिनय आमरा देखि तखन आमरा स्वभावतइ अनेक बादसाद दिया बाछिया लइया, आन्दाजेर द्वारा अनेकटा भर्ति करिया, कल्पनार द्वारा अनेकटा गड़िया तुलिया थाकि। आमादेर एकजन परमात्मीयओ ताँहार समस्तटा लइया आमादेर काछे परिचित नहेन। आमादेर स्मृति निपुण साहित्यरचयितार मतो ताँहार अधिकांशइ बाद दिया फेले। ताँहार छोटोबड़ो समस्त अंशइ यदि ठिक समान अपक्षपातेर सहित आमादेर स्मृति अधिकार करिया थाके तबे एइ स्तूपेर मध्ये आसल चेहाराटि मारा पड़े ओ सबटा रक्षा करिते गेले आमादेर परमात्मीयके आमरा यथार्थभावे देखिते पाइ ना। परिचयेर अर्थइ एइ ये, याहा वर्जन करिबार ताहा वर्जन करिया याहा ग्रहण करिबार ताहा ग्रहण करा।

एकटु बाड़ाइतेओ हय। आमादेर परमात्मीयकेओ आमरा मोटेर उपरे अल्पइ देखिया थाकि। ताँहार जीवनेर अधिकांश आमादेर अगोचर। आमरा ताँहार छाया नहि, आमरा ताँहार अन्तर्यामीओ नइ। ताँहार अनेकखानिइ ये आमरा देखिते पाइ ना, सेइ शून्यतार उपरे आमादेर कल्पना काज करे। फाँक-गुलि पुराइया लइया आमरा मनेर मध्ये एकटा पूर्ण छबि आँकिया तुलि। ये लोकेर सम्बन्धे आमादेर कल्पना खेले ना, याहार फाँक आमादेर काछे फाँक थाकिया याय, याहार प्रत्यक्षगोचर अंशइ आमादेर काछे वर्तमान, अप्रत्यक्ष अंश आमादेर काछे अस्पष्ट अगोचर, ताहाके आमरा जानि ना, अल्पइ जानि। पृथिवीर अधिकांश मानुषइ एइरूप आमादेर काछे छाया, आमादेर काछे असत्यप्राय। ताहादेर अनेककेइ आमरा उकिल बलिया जानि, डाक्तार बलिया जानि, दोकान-दार बलिया जानि—मानुष बलिया जानि ना। अर्थात् आमादेर सङ्गे ये बहि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषये ताहादेर संस्रव सेइटेकेइ सर्वापेक्षा बड़ो करिया जानि, ताहादेर मध्ये तदपेक्षा बड़ो याहा आछे ताहा आमादेर काछे कोनो आमल पाय ना।

साहित्य याहा आमादिगके जानाइते चाय ताहा सम्पूर्णरूपे जानाय; अर्थात् स्थायीके रक्षा करिया, अवान्तरके बाद दिया, छोटोके छोटो करिया, बड़ोके बड़ो करिया, फाँकके भराट करिया, आलगाके जमाट करिया दाँड़कराय। प्रकृतिर अपक्षपात प्राचुर्येर मध्ये मन याहा करिते चाय साहित्य ताहाइ करिते थाके। मन प्रकृतिर आर्शि नहे, साहित्यओ प्रकृतिर आर्शि नहे। मन प्राकृतिक जिनिसके मानसिक करिया लय; साहित्य सेइ मानसिक जिनिसके साहित्यक करिया तुले।

दुयेर कार्यप्रणाली प्राय एकइ रकम। केवल दुयेर मध्ये कयेकटा विशेष कारणे तफात घटियाछे। मन याहा गड़िया तोले ताहा निजेर आवश्यकेर जन्य, साहित्य याहा गड़िया तोले ताहा सकलेर आनन्देर जन्य। निजेर जन्य एकटा मोटामुटि नोट करिया राखिलेओ चले, सकलेर जन्य आगागोड़ा सुसम्बद्ध करिया तुलिते हय एवं ताहाके एमन जायगाय एमन आलोके एमन करिया धरिते हय याहाते सम्पूर्णभावे सकलेर दृष्टिगोचर हय। मन साधारणत प्रकृतिर मध्य हइते संग्रह करे, साहित्य मनेर मध्य हइते सञ्चय करे। मनेर जिनिसके बाहिरे फलाइया तुलिते गेले विशेषभावे सृजनशक्तिर आवश्यक हय। एइरूप प्रकृति हइते मने ओ मन हइते साहित्ये याहा प्रतिफलित हइया उठे ताहा अनुकरण हइते बहुदूरवर्ती।

प्रकृत साहित्ये आमरा आमादेर कल्पनाके, आमादेर सुख दुःखके, शुद्ध वर्तमान काल नहे, चिरन्तन कालेर मध्ये प्रतिष्ठित करिते चाहि। सुतरां सेइ सुविशाल प्रतिष्ठाक्षेत्रेर सहित ताहार परिणामसामञ्जस्य करिते हय। क्षणकालेर मध्य हइते उपकरण संग्रह करिया ताहाके यखन चिरकालेर जन्य गड़िया तोला याय तखन क्षणकालेर मापकाठि लइया काज चले ना। एइ कारणे प्रचलित कालेर सहित, संकीर्ण संसारेर सहित, उच्चसाहित्येर परिमाणेर प्रभेद थाकिया याय।

अन्तरेर जिनिसके बाहिरेर, भावेर जिनिसके भाषार, निजेर जिनिसके विश्वमानवेर एवं क्षणकालेर जिनिसके चिरकालेर करिया तोला साहित्येर काज।

जगतेर सहित मनेर ये सम्बन्ध मनेर सहित साहित्यकारेर प्रतिभार सेइ सम्बन्ध। एइ प्रतिभाके विश्वमानवमन नाम दिले क्षति नाइ। जगत् हइते मन आपनार जिनिस संग्रह करितेछे, सेइ मन हइते विश्वमानवमन पुनश्च निजेर जिनिस निर्वाचन करिया निजेर जन्य गड़िया लइतेछे।

बुझितेछि कथाटा बेश झापसा हइया आसियाछे। आर-एकटु परिस्फुट करिते चेष्टा करिब। कृतकार्य हइब कि ना जानि ना।

आमरा आनादेर अन्तरेर मध्ये दुइटा अंशेर अस्तित्व अनुभव करिते पारि। एकटा अंश आमार निजत्व, आर-एकटा अंश आमार मानवत्व। आमार घरटा यदि सचेतन हइत तबे से निजेर भितरकार खण्डाकाश ओ ताहारइ सहित परिव्याप्त महाकाश एइ दुटाके ध्यानेर द्वारा उपलब्धि करिते पारित। आमादेर भितरकार निजत्व ओ मानवत्व सेइ प्रकार। यदि दुयेर मध्ये दुर्भेद्य देयाल तोला थाके तबे आत्मा अन्धकूपेर मध्ये बास करे।

प्रकृत साहित्यकारेर अन्तःकरणे यदि ताहार निजत्व ओ मानवत्वेर मध्ये कोनो व्यवधान थाके तबे ताहा कल्पनार काचेर शार्सिर स्वच्छ व्यवधान। ताहार मध्य दिया परस्परेर चेना-परिचयेर व्याघात घटे ना। एमन-कि, एइ काच दूरवीक्षण ओ अणुवीक्षणेर काचेर काज करिया थाके; इहा अदृश्यके दृश्य, दूरके निकट करे।

साहित्यकारेर सेइ मानवत्वेइ सृजनकर्ता। लेखकेर निजत्वके से आपनार करिया लय, क्षणीकके से अमर करिया तोले, खण्डके से सम्पूर्णता दान करे।

जगतेर उपरे मनेर कारखाना बसियाछे एवं मनेर उपरे विश्वमनेर कारखाना —सेइ उपरेर तला हइते साहित्येर उत्पत्ति।

पूर्वेइ बलियाछि, मनोराज्येर कथा आसिया पड़िले सत्यताविचार करा कठिन हइया पड़े। कालोके कालो प्रमाण करा सहज, कारण अधिकांशेर काछेइ ताहा निश्चय कालो; किन्तु भालोके भालो प्रमाण करा तेमन सहज नहे, कारण एखाने अधिकांशेर एकमत साक्ष्य संग्रह करा कठिन।

एखाने अनेकगुलि मुशकिलेर कथा आसिया पड़े। अधिकांशेर काछेइ याहा भालो ताहाइ कि सत्य भालो, ना, विशिष्ट सम्प्रदायेर काछे याहा-भालो ताहाइ सत्य भालो ?

यदि विज्ञानेर कथा छाड़िया देओया याय तबे प्राकृत वस्तुसम्बन्धे ए कथा निश्चय बलिते हय ये, अधिकांशेर काछे याहा कालो ताहाइ सत्य कालो। परीक्षार द्वारा देखा गेछे, ए सम्बन्धे मतभेदेर सम्भावना एत अल्प ये अधिक साक्ष्य संग्रह करिबार कोनो प्रयोजन हय ना।

किन्तु भालो ये भालोइ एवं कत भालो ताहा लइया मतेर एत अनैक्य घटिया थाके ये, से सम्बन्धे किरूप साक्ष्य लओया उचित ताहा स्थिर करा कठिन हय।

विशेष कठिन एइजन्ये, साहित्यकारदेर श्रेष्ठ चेष्टा केवल वर्तमान कालेर जन्य नहे। चिरकालेर मनुष्यसमाजइ ताँहादेर लक्ष्य। याहा वर्तमान ओ भविष्यत् कालेर जन्य लिखित ताहार अधिकांश साक्षी ओ विचारक वर्तमान काल हइते केमन करिया मिलिबे ?

इहा प्रायइ देखा याय ये, याहा तत्सामयिक ओ तत्स्थानिक ताहाइ अधिकांश लोकेर काछे सर्वप्रधान आसन अधिकार करे। कोनो-एकटि विशेष समयेर साक्षिसंख्या गणना करिया साहित्येर विचार करिते गेले अविचार हइबार सम्पूर्ण सम्भावना आछे। एइजन्य वर्तमान कालके अतिक्रम करिया सर्वकालेर दिकेइ साहित्यके लक्षनिवेश करिते हय।

काले काले मानुषेर विचित्र शिक्षा भाव ओ अवस्थार परिवर्तन-सत्त्वेओ ये-सकल रचना आपन महिमा रक्षा करिया चलियाछे ताहादेरइ अग्निपरीक्षा हइया गेछे। मन आमादेर सहजगोचर नय एवं अल्प समयेर मध्ये आवद्ध करिया देखिले अविश्राम गतिर मध्ये ताहार नित्यानित्य संग्रह करिया लओया आमादेर पक्षे दुःसाध्य हय। एइजन्य सुविपुल कालेर परिदर्शनशालार मध्येइ मानुषेर मानसिक वस्तुर परीक्षा करिया देखिते हय; इहा छाड़ा निश्चय अवधारणेर चूडान्त उपाय नाइ।

किन्तु काज चलिबार मतो उपाय ना थाकिले साहित्ये अराजकता उपस्थित हइत। हाइकोर्टेर आपिल-आदालते ये जज-आदालतेर समस्त विचारइ पर्यस्त हइया याय ताहा नहे। साहित्येओ सेइरूप जज आदालतेर काज वन्ध थाकिते पारे ना। आपिलेर शेषमीमांसा अतिदीर्घकालसापेक्ष; ततक्षण मोटामुटि विचार एकरकम पाओया याय एवं अविचार पाइलेओ उपाय नाइ।

येमन साहित्येर स्वाधीन रचनाय एक एकजनेर प्रतिभा सर्वकालेर प्रतिनिधित्व ग्रहण करे, सर्वकालेर आसन अधिकार करे, तेमनि विचारेर प्रतिभाओ आछे; एक-एकजनेर परख करिबार शक्तिओ स्वभावतइ असामान्य हइया थाके। याहा क्षणिक, याहा सङ्कीर्ण, ताहा ताँहादिगके फांकि दिते पारे ना; याहा ध्रुव, याहा चिरन्तन, एक मुहूर्तेइ ताहा ताँहारा चिनिते पारेन। साहित्येर नित्यवस्तुर सहित परिचयलाभ करिया नित्यत्वेर लक्षणगुलि ताँहारा ज्ञातसारे एवं अलक्ष्ये अन्तःकरणेर सहित मिलाइया लइयाछेन; स्वभावे एवं शिक्षाय ताँहारा सर्वकालीन विचारकेर पद ग्रहण करिबार योग्य।

आवार व्यावसादार विचारकओ आछे। ताहादेर पुंथिगत विद्या। ताहारा सारस्वतप्रासादेर देउड़िते बसिया हाँकडाक, तर्जनगर्जन, घुष ओ घुषिर कारवार करिया थाके; अन्तःपुरेर सहित ताहादेर परिचय नाइ। ताहारा अनेक समयेइ गाड़िजुड़ि ओ घड़िर चेन देखियाइ मोले। किन्तु वीणापाणिर अनेक अन्तःपुरचारी आत्मीय विरलवेशी दीनेर मतो मा'र काछे याय एवं तिनि ताहादिगके कोले लइया मस्तकाघ्राण करेन। ताहारा कखनो—कखनो ताँहार शुभ्र अञ्चले किछु-किछु धूलिक्षेपओ करे; तिनि ताहा हासिया झाड़िया फलेन। एइ-समस्त

धुलामाटि सत्त्वेओ देवी याहादिगके आपनार बलिया कोले तुलिया लन देउड़िर दरोयान--गुला ताहादिगके चिनिबे कोन् लक्षण देखिया ? ताहारा पोषाक चेने, ताहारा मानुष चेने ना। ताहारा उत्पात करिते पारे, किन्तु विचार करिबार भार ताहादेर उपर नाइ। सारस्वतदिगके अभ्यर्थना करिया लइबार भार याँहादेर उपरे आछे ताँहाराओ निजे सरस्वतीर सन्तान; ताँहारा घरेर लोक. घरेर लोकेर मर्यादा बोझेन।

आश्विन १३१०

[सितम्बर-अक्टूबर १९०३ (आश्विन १३१०) में 'वंगदर्शन ५' में प्रकाशित ।]

सौन्दर्यबोध

प्रथम-वयसे ब्रह्मचर्यपालन करिया नियमे संयमे जीवनके गड़िया तुलिते हइबे, भारतवर्षेर एइ प्राचीन उपदेशेर कथा तुलिते गेले अनेकेर मने एइ तर्क उठिबे, ए ये बड़ो कठोर साधना। इहार द्वारा नाहय खुब एकटा शक्त मानुष तैरि करिया तुलिले, नाहय वासनार दड़िदड़ा छिड़िया मस्त एकजन साधुपुरुष हइया उठिले, किन्तु ए साधनाय रसेर स्थान कोथाय? कोथाय गेल साहित्य, चित्र, सङ्गीत? मानुषके यदि पूरा करिया तुलिते हय तबे सौन्दर्यचर्चाके फाँकि देओया चले ना।

ए तो ठिक कथा। सौन्दर्य तो चाइ। आत्महत्या तो साधनार विषय हइते पारे ना, आत्मार विकाशइ साधनार लक्ष्य। वस्तुत शिक्षाकाले ब्रह्मचर्य-पालन शुष्कतार साधना नय। क्षेत्रके मरुभूमि करिया तुलिवार जन्य चाषा खाटिया मरे ना। चाषा यखन लाङल दिया माटि विदीर्ण करे, मइ दिया ढेला दलिया गुंड़ा करिते थाके, निड़ानि दिया समस्त घास ओ गुल्म उपड़ाइया क्षेत्रटाके एकेबारे शून्य करिया फेले, तखन आनाड़ि लोकेर मने हइते पारे, जमिटार उपर उत्पीड़न चलितेछे। किन्तु एमनि करियाइ फल फलाइते हय। तेमनि यथार्थ-भावे रसग्रहणेर अधिकारी हइते गेले गोड़ाय कठिन चाषेरइ दरकार। रसेर पथे पथ भुलाइवार अनेक उपसर्ग आछे। से पथे समस्त विपद एड़ाइया पूर्णता-लाभ करिते ये चाय नियमसंयम ताहारइ बेशि आवश्यक। रसेर जन्यइ एइ नीरसता स्वीकार करिया लइते हय।

मानुषेर दुर्भाग्य एइ ये, उपलक्षेर द्वारा लक्ष्य प्रायइ चापा पड़े; से गान शिखिते चाय, ओस्तादि शिखिया वसे; धनी हइते चाय, टाका जमाइया कृपापात्र हइया ओठे; देशेर हित चाय, कमिटिते रेजोल्युशन पास करियाइ निजेके कृतार्थ मने करे।

तेमनि नियमसंयमटाइ चरम लक्ष्येर समस्त जायगा जुड़िया बसिया आछे, ए आमरा प्रायइ देखिते पाइ। नियमटाकेइ याहारा लाभ, याहारा पुण्य मने करे, ताहारा नियमेर लोभे एकेबारे लुब्ध हइया उठे। नियमलोलुपता षड्‌रिपुर जायगाय सप्तम रिपु हइया देखा देय।

एटा मानुषेर जड़त्वेर एकटा लक्षण। सञ्चय करिते शुरु करिले मानुष आर थामिते चाय ना। बिलातेर कथा शुनिते पाइ, सेखाने कत लोक पागलेर

मतो केवल देश-विदेशेर छाप-मारा डाकेर टिकिट संग्रह करितेछे, सेजन्य सन्धानेर एवं खरचेर अन्त नाइ। एइरूप संग्रह वायुद्वारा खेपिया उठिया केह वा चीनेर वासन, केह वा पुरातन जुता संग्रह करिया मरितेछे। उत्तरमेरुर ठिक केन्द्रस्थान-टिते गिया कोनोमते एकटा ध्वजा पुंतिया आसिते हइबे, सेओ एमनि एकटा व्यापार। सेखाने बरफेर क्षेत्र छाड़ा आर-किछु नाइ, किन्तु मन निवृत हइतेछे ना—के सेइ मेरुमरुर केन्द्रविन्दुटिर कत माइल याइतेछे ताहारइ अङ्कपातेर नेशा पाइया बसियाछे। पाहाड़े ये यत फुट उच्चे उठियाछे से ततटाकेइ एकटा लाभ बलिया गण्य करितेछे; एइ शून्य लाभेर जन्य निजे मरितेछे एवं कत अनिच्छुक मजुरदिगके जोर करिया मारितेछे, तबु थामिते चाहितेछे ना।

अपव्यय एवं क्लेश यतइ बेशि प्रयोजनहीन, सञ्चय ओ परिणामहीन जय-लाभेर गौरवओ तत बेशि बलिया बोध हय। नियमसाधनार लोभओ क्लेशेर परिमाण खताइया आनन्दभोग करे। कठिन शय्याय शुइया यदि शुरू करा याय तबे माटिते बिछाना पातिया, परे एकखानिमात्र कम्बल बिछाइया, परे कम्बल छाड़िया शुधु माटिते शुइबार लोभ क्रमेइ वाड़िया उठिते थाके। कृच्छ्रसाधनटा-केइ लाभ मने करिया शेषकाले आत्मघाते आसिया दाँड़ि टानिते हय। इहा आर-किछु नय, निवृत्तिकेइ एकटा प्रचण्ड प्रवृत्ति करिया तोला, गलार फाँस छिंड़िबार चेष्टातेइ गलाय फाँस आँटिया मरा।

अतएव केवलमात्र नियम पालन कराटाकेइ यदि लोभेर जिनिस करिया तोला याय तबे कठोरतार चाप केवलइ वाड़ाइया तुलिया स्वभाव हइते सौन्दर्य-बोधके एकेबारे पिषिया बाहिर करा याइते पारे, सन्देह नाइ। किन्तु पूर्णतालाभेर प्रतिइ लक्ष राखिया संयमचर्चाकेओ यदि ठिकमत संयत करिया राखिते पारि तबे मनुष्यत्वेर कोनो उपादानइ आघात पाय ना, वरञ्च परिपुष्ट हइया उठे।

कथाटा एइ ये, भित-मात्रइ शक्त हइया थाके, ना हइले ताहा आश्रय दिते पारे ना। या-किछु धारण करिया थाके, याहा आकृतिदान करे, ताहा कठिन। मानुषेर शरीर यतइ नरम होक-ना केन, यदि शक्त हाड़ेर उपरे ताहार पत्तन ना हइत तबे से एकटा पिण्ड हइया थाकित, ताहार चेहारा खुलितइ ना। तेमनि ज्ञानेर भित्तिटाओ शक्त, आनन्देर भित्तिटाओ शक्त। ज्ञानेर भित्ति यदि शक्त ना हइत तबे तो से केवल खापछाड़ा स्वप्न हइत, आर आनन्देर भित्ति यदि शक्त ना हइत तबे ताहा नितान्तइ पागलामि मात्लामि हइया उठित।

एइ-ये शक्त भित्ति इहाइ संयम। इहार मध्ये विचार आछे, बल आछे, त्याग आछे; इहार मध्ये निर्मम दृढ़ता आछे। इहा देवतार मतो एक हाते वर देय, आर-एक हाते संहार करे। एइ संयम गड़िबार बेलाओ येमन दृढ़ भाङिबार

बेलाओ तेमनि कठिन। सौन्दर्यके पूरामात्राय भोग करिते गेले एइ संयमेर प्रयोजन; नतुबा प्रवृत्ति असंयत थाकिले शिशु भातेर थाला लइया येमन अन्न-व्यन्जन केवल गाये माखिया माटिते छड़ाइया विपरीत काण्ड करिया तोले, अथच अल्पइ ताहार पेटे याय, भोगेर सामग्री लइया आमादेर सेइ दशा हय; आमरा केवल ताहा गायेइ माखि, लाभ करिते पारि ना।

सौन्दर्यसृष्टि कराओ असंयत कल्पना वृत्तिर कर्म नहे। समस्त घरे आगुन लागाइया दिया केह सन्ध्याप्रदीप ज्वालाय ना। एकटुतेइ आगुन हातेर बाहिर हइया याय बलियाइ घर आलो करिते आगुनेर उपरे दखल राखा चाइ। प्रवृत्ति-सम्बन्धेओ से कथा खाटे। प्रवृत्तिके यदि एकेबारे पूरामात्राय ज्वलिया उठिते दिइ तबे ये सौन्दर्यके केवल राङाइया तुलिबार जन्य ताहार प्रयोजन ताहाके ज्वालाइया छाइ करिया तबे से छाड़े; फुलके तुलिते गिया ताहाके छिंड़िया धुलाय लुटाइया देय।

ए कथा सत्य, संसारे आमादेर क्षुधित प्रवृत्ति येखाने पात पाड़िया बसे ताहार काछाकाछि प्रायइ एकटा सौन्दर्येर आयोजन देखिते पाओया याय। फल ये केवल आमादेर पेट भराय ताहा नहे, ताहा स्वादे गन्धे दृश्ये सुन्दर। किछुमात्र सुन्दर यदि नाओ हइत तबु आमरा ताहाके पेटेर दायेइ खाइताम। आमादेर एतबड़ो एकटा गरज थाका सत्त्वेओ केवल पेट भराइबार दिक हइते नय, सौन्दर्य-भोगेर दिक हइतेओ से आमादिगके आनन्द दितेछे। एटा आमादेर प्रयोजनेर अतिरिक्त लाभ।

जगते सौन्दर्य बलिया एइ-ये आमादेर एकटा उपरि-पाओना इहा आमादेर मनके कोन् दिके चालाइते छे? क्षुधातृप्तिर झोंकटाइ याहाते एकेश्वर हइया ना ओठे, याहाते आमादेर मन हइते ताहार फाँस एकटु आलगा हय, सौन्दर्येर सेइ चेष्टा देखिते पाइ। चण्डी क्षुधा अग्निमूर्ति हइया बलितेछे, तोमाके खाइतेइ हइबे—इहार उपरे आर कोनो कथा नाइ। अमनि सौन्दर्यलक्ष्मी हासिमुखे सुधावर्षण करिया अत्युग्र प्रयोजनेर चोखराङानिके आड़ाल करिया दितेछेन, पेटेर ज्वालाके नीचेर तलाय राखिया उपरेर महाले आनन्दभोजेर मनोहर आयोजन करितेछेन। अनिवार्य प्रयोजनेर मध्ये मानुषेर एकटा अवमानना आछे; किन्तु सौन्दर्य नाकि प्रयोजनेर बाड़ा, एइजन्य से आमादेर अपमान दूर करिया देय। सौन्दर्य आमादेर क्षुधातृप्तिर सङ्गे सङ्गेइ सर्वदा एकटा उच्चतर सुर लागाइतेछे बलियाइ, याहारा एकदिन असंयत बर्बर छिल ताहारा आज मानुष हइया उठियाछे, ये केवल इन्द्रियेरइ दोहाइ मानित से आज प्रेमेर वश मानियाछे। आज क्षुधा लागिलेओ आमरा पशुर मतो, राक्षसेर मतो, येमन-तेमन करिया खाइते बसिते

पारि ना; शोभनताटुकु रक्षा न करिले आमादेर खाइबार प्रवृत्तिइ चलिया याय। अतएव एखन आमादेर खाइबार प्रवृत्तिइ एकमात्र नहे, शोभनता ताहाके नरम करिया आनियाछे। आमरा छेलेके लज्जा दिया बलि छि छि, अमन लोभीर मतो खाइते आछे! सेरूप खाओया देखिते कुश्री। सौन्दर्य आमादेर प्रवृत्तिके संयम करिया आनियाछे। जगतेर सङ्गे आमादेर केवलमात्र प्रयोजनेर सम्वन्ध ना राखिया आनन्देर सम्बन्ध पाताइयाछे। प्रयोजनेर सम्बन्धे आमादेर दैन्य, आमादेर दासत्व; आनन्देर सम्बन्धेइ आमादेर मुक्ति।

तबेइ देखा याइतेछे, परिणामे सौन्दर्य मानुषके संयमेर दिकेइ टानितेछे। मानुषके से एमन एकटि अमृत दितेछे याहा पान करिया मानुष क्षुधार रूढ़ताके दिने दिने जय करितेछे। असंयमके अमङ्गल बलिया परित्याग करिते याहार मने विद्रोह उपस्थित हय से ताहाके असुन्दर बलिया इच्छा करिया त्याग करिते चाहितेछे।

सौन्दर्य येमन आमादिगके क्रमे क्रमे शोभनतार दिके, संयमेर दिके, आकर्षण करिया आनितेछे, संयमओ तेमनि आमादेर सौन्दर्यभोगेर गभीरता बाड़ाइया दितेछे। स्तब्धभावे निविष्ट हइते ना जानिले आमरा सौन्दर्यँर मर्मस्थान हइते रस उद्धार करिते पारि ना। एकपरायणा सती स्त्रीइ तो प्रेमेर यथार्थ सौन्दर्य उपलब्धि करिते पारे, स्वैरिणी तो पारे ना। सतीत्व सेइ चाञ्चल्यविहीन संयम याहार द्वारा गभीरभावे प्रेमेर निगूढ़ रस लाभ करा सम्भव हय। आमादेर सौन्दर्यप्रियतार मध्येओ यदि सेइ सतीत्वेर संयम ना थाके तबे की हय? से केवलइ सौन्दर्येर बाहिरे बाहिरे चञ्चल हइया घुरिया बेड़ाय; मत्ततारेइ आनन्द बलिया भुल करे; याहाके पाइले से एकेबारे सब छाड़िया स्थिर हइया बसिते पारित ताहाके पाय ना। यथार्थ सौन्दर्य समाहित साधकेर काछेइ प्रत्यक्ष, लोलुप भोगीर काछे नहे। ये लोक पेटुक से भोजनेर रसज्ञ हइते पारे ना।

पौष्यराजा ऋषिकुमार उतङ्कके कहिलेन, याओ, अन्तःपुरे याओ, सेखाने महीषीके देखिते पाइबे। उतङ्क अन्तःपुरे गेलेन, किन्तु महिषीके देखिते पाइलेन ना। अशुचि हइया केह सतीके देखिते पाइत ना; उतङ्क तखन अशुचि छिलेन।

विश्वेर समस्त सौन्दर्येर समस्त महिमार अन्तःपुरे ये सती लक्ष्मी विराज करितेछेन तिनिओ आमादेर सम्मुखेइ आछेन, किन्तु शुचि ना हइले देखिते पाइब ना। यखन विलासे हाबुडुबु खाइ, भोगेर नेशाय मतिया बेड़ाइ, तखन विश्व-जगतेर आलोकवसना सतीलक्ष्मी आमादेर दृष्टि हइते अन्तर्धान करेन।

ए कथा धर्मनीतिप्रचारेर दिक हइते बलितेछि ना; आनन्देर दिक हइते, याहाके इंरेजिते आर्ट बले ताहारइ तरफ हइते बलितेछि। आमादेर शास्त्रेओ बले, केवल धर्मेर जन्य नय, सुखेर जन्यओ संयत हइबे। सुखार्थी संयतो भवेत्। अर्थात् इच्छार यदि चरितार्थता चाओ तबे इच्छाके शासने राखो, यदि सौन्दर्य-भोग करिते चाओ तबे भोगलालसाके दमन करिया शुचि हइया शान्त हओ। प्रवृत्तिके यदि दमन करिते ना जानि तबे प्रवृत्तिरइ चरितार्थताके आमरा सौन्दर्य-बोधेर चरितार्थता बलिया भुल करि, याहा चित्तेर जिनिस ताहाके दुइ हाते करिया दलिया मने करि येन ताहाके पाइलाम। एइजन्यइ बलियाछि, सौन्दर्येर ठिकमत-उद्बोधनेर जन्य ब्रह्मचर्येर साधनइ आवश्यक।

याँहादेर चोखे धुला देओया शक्त ताँहारा हठात् सन्दिग्ध हइया बलिया उठिबेन, ए ये एकेबारे कवित्व आसिया पड़िल। ताँहारा बलिबेन, संसारे तो आमरा प्रायइ देखिते पाइ, ये-सकल कलाकुशल गुणी सौन्दर्यसृष्टि करिया आसियाछेन ताँहारा अनेकेइ संयमेर दृष्टान्त राखिया यान नाइ। ताँहादेर जीवनचरितटा पाठ्य नहे।

अतएव कवित्व राखिया एइ वास्तव सत्यटार आलोचना करा दरकार। आमार वक्तव्य एइ ये, वास्तव के आमरा एत बेशि विश्वास करि केन? कारण, से प्रत्यक्ष-गोचर। किन्तु अनेक स्थलेइ मानुषेर सम्बन्धे आमरा याहाके वास्तव बलि ताहार बेशिर भागइ आमादेर अप्रत्यक्ष। एकटुखानि देखिते पाइ बलिया मने करि सबटाइ येन देखिते पाइलाम, एइजन्य मानुष-घटित वास्तव वृत्तान्त लइया एकजन याहाके सादा बले आर-एकजन ताहाके मेटे बलिलेओ बाँचिताम, ताहाके एकेबारे कालो बलिया बसे। नेपोलियनके केह बले देवता, केह बले दानव। आकबरके केह बले उदार प्रजाहितैषी, केह बले ताँहार हिन्दु-प्रजार पक्षे तिनिइ यत नष्टेर गोड़ा। केह बलेन वर्णभेदेइ आमादेर हिन्दुसमाज रक्षा करियाछे, केह बले वर्णभेदेर प्रथाइ आमादिगके एकेबारे माटि करिया दिल। अथच उभय पक्षेइ वास्तव सत्येर दोहाइ देय।

वस्तुत मानुष-घटित व्यापारे एकइ जायगाय आमरा अनेक उल्टा काण्ड देखिते पाइ। मानुषेर देखा-अंशेर मध्ये ये-सकल वैपरीत्य प्रकाश पाय मानुषेर ना-देखा अंशेर मध्येइ निश्चय ताहार एकटा निगूढ़ समन्वय आछे; अतएव आसल सत्यटा ये प्रत्यक्षेर उपरेइ भासिया बेड़ाइतेछे ताहा नहे, अप्रत्यक्षेर मध्येइ डुबिया आछे—एकजन्यइ ताहाके लइया एत तर्क, एत दलादलि एवं एइजन्यइ एकइ इतिहासके दुइ विरुद्ध पक्षे ओकालत्नामा दिया थाके।

जगतेर कलानिपुण गुणीदेरा सम्बन्धेओ येखाने आमरा उल्टा काण्ड देखिते पाइ सेखानेओ वास्तव सत्येर बड़ाइ करिया हठात् किछु विरुद्ध कथा बलिया बसा

याय ना। सौन्दर्यसृष्टि दुर्बलता हइते, चञ्चलता हइते घटितेछे, एकटा अत्यन्त विरुद्ध कथा। वास्तव सत्य साक्ष्य दिलेओ आमरा बलिब, निश्चय सकल साक्षीके हाजिर पाओया याय नाइ; आसल साक्षीटि पालाइया बसिया आछे। यदि देखि कोनो डाकातेर दल खुबइ उन्नति करितेछे तबे सेइ वास्तव सत्येर सहाये एरूप सिद्धान्त करा याय ना ये, दस्युवृत्तिइ उन्नतिर उपाय। तखन एइ कथा बिना प्रमाणेइ बला याइते पारे ये, दस्युदेर आपातत येटुकु उन्नति देखा याइतेछे ताहार मूल कारण निजेदेर मध्ये ऐक्य, अर्थात् दलेर मध्ये परस्परेर प्रति धर्मरक्षा; आबार एइ उन्नति यखन नष्ट हइबे तखन एइ ऐक्यकेइ नष्ट हइबार कारण बलिया बसिब ना, तखन बलिब अन्येर प्रति अधर्माचरणइ ताहादेर पतनेर कारण। यदि देखि एकइ लोक वाणिज्ये प्रचुर टाका करिया भोगे ताहा उड़ाइया दियाछेन तबे ए कथा बलिब ना ये, याहारा टाका नष्ट करिते पारे टाका उपार्जनेर पन्था ताहाराइ जाने; बरं एइ कथाइ बलिब, टाका रोजगार करिबार व्यापारे एइ लोकटि हिसाबी छिलेन, सेखाने ताँर संयम ओ विवेचनाशक्ति साधारण लोकेर चेये अनेक बेशि छिल, आर टाका उड़ाइवार बेला ताँहार उड़ाइबार झोंक हिसाबेर बुद्धिके छाड़ाइया गियाछे।

कलावान् गुणीराओ येखाने वस्तुत गुणी सेखाने तपस्वी; सेखाने यथेच्छाचार चलिते पारे ना, सेखाने साधन ओ संयम आछेइ। अल्प लोकइ एमन पुरापुरि बलिष्ठ ये ताँहादेर धर्मबोधके षोलो आना काजे लागाइते पारेन। किछु-ना-किछु भ्रष्टता आसिया पड़े। कारण, आमरा सकलेइ हीनता हइते पूर्णतार दिके अग्रसर हइया चलियाछि, चरमे आसिया दाँड़ाइ नाइ। किन्तु जीवने आमरा ये-कोनो स्थायी बड़ो जिनिस गड़िया तुलि, ताहा आमादेर अन्तरेर धर्मबुद्धिर साहाय्येइ घटे, भ्रष्टतार साहाय्ये नहे। गुणी व्यक्तिराओ येखाने ताँहादेर कलारचना स्थापन करियाछेन सेखाने ताँहादेर चरित्रइ देखाइयाछेन, येखाने ताँहादेर जीवनके नष्ट करियाछेन सेखाने चरित्रेर अभाव प्रकाश पाइयाछे। सेखाने ताँहादेर मनेर भितरे धर्मेर ये एकटि सुन्दर आदर्श आछे रिपुर टाने ताहार विरुद्धे गिया पीड़ित हइयाछेन। गड़िया तुलिते संयम दरकार हय, नष्ट करिते असंयम। धारणा करिते संयम चाइ, आर मिथ्या बुझितेइ असंयम।

पौष १३१३

[दिसम्बर १९०६ (पौष १३१३) में 'बंगदर्शन' में प्रकाशित। नेशनल कांउसिल आफ एज्युकेशन के समक्ष दिये चार भाषणों में से एक।]

विश्व-साहित्य

आमार उपरे ये आलोचनार भार देओया हइयाछे इंरेजिते आपनारा ताहाके Comparative Literature नाम दियाछेन। बांलाय आमि ताहाके विश्व-साहित्य बलिब।

कर्मेर मध्ये मानुष कोन् कथा बलितेछे, ताहार लक्ष्य की, ताहार चेष्टा की, इहा यदि बुझिते हय तबे समग्र इतिहासेर मध्ये मानुषेर अभिप्रायेर अनुसरण करिते हय। आकबरेर राजत्व बा गुजराटेर इतिवृत्त बा एलिजाबेथेर चरित्र, एमन करिया अलादा-अलादा देखिले केवल खबर जानार कौतूहलनिवृत्ति हय मात्र। ये जाने आकबर बा एलिजाबेथ उपलक्ष्यमात्र, ये जाने मानुष समस्त इतिहासेर मध्य दिया निजेर गभीरतम अभिप्रायके नाना साधनाय नाना भुल ओ नाना संशोधने सिद्ध करिबार जन्य केवलइ चेष्टा करितेछे, ये जाने मानुष सकल दिकेइ सकलेर सहित बृहत्भावे युक्त हइया निजेके मुक्ति दिबार प्रयास पाइतेछे, ये जाने स्वतन्त्र निजेके राजतन्त्रे ओ राजतन्त्र हइते गणतन्त्रे सार्थक करिबार जन्य युझिया मरितेछे—मानव विश्वमानवेर मध्ये आपनाके व्यक्त करिबार जन्य, व्यष्टि समष्टिर मध्ये आपनाके उपलब्धि करिबार जन्य निजेके लइया केवलइ भाङागड़ा करितेछे—से व्यक्ति मानुषेर इतिहास हइते, लोकविशेष के नहे, सेइ नित्यमानुषेर नित्यसचेष्टा अभिप्रायके देखिबारइ चेष्टा करे। से केवल तीर्थेर यात्रीदेर देखियाइ फिरिया आसे ना; समस्त यात्रीरा ये एकमात्र देवताके देखिबार जन्य नाना दिक हइते आसितेछे ताँहाके दर्शन करिया तबे से घरे फेरे।

तेमनि साहित्येर मध्ये मानुष आपनार आनन्दके केमन करिया प्रकाश करितेछे, एइ प्रकाशेर विचित्रमूर्तिर मध्ये मानुषेर आत्मा आपनार कोन् नित्यरूप देखाइते चाय, ताहाइ विश्वसाहित्येर मध्ये यथार्थ देखिबार जिनिस। से आपनाके रोगी ना भोगी ना योगी कोन् परिचये परिचित करिते आनन्दबोध करितेछे, जगतेर मध्ये मानुषेर आत्मीयता कतदूर पर्यन्त सत्य हइया उठिल, अर्थात् सत्य कतदूर पर्यन्त ताहार आपनार हइया उठिल, इहाइ जानिबार जन्य एइ साहित्येर जगते प्रवेश करिते हइबे। इहाके कृत्रिम रचना बलिया जानिले हइबे ना; इहा एकटि जगत्; इहार तत्त्व आमादेर कोनो व्यक्तिविशेषेर आयताधीन नहे;

वस्तुजगतेर मतो इहार सृष्टि चलियाछेइ, अथच सेइ असमाप्त सृष्टिर अन्तरतम स्थाने एकटि समाप्तिर आदर्श अचल हइया आछे।

सूर्येर भितरेर दिके वस्तुपिण्ड आपनाके तरल कठिन नाना भावे गड़ितेछे, से आमरा देखिते पाइना, किन्तु ताहाके घिरिया आलोकेर मण्डल सेइ सूर्यके केवलइ विश्वेर काछे व्यक्त करिया दितेछे। एइखानेइ से आपनाके केवलइ दान करितेछे सकलेर सङ्गे निजेके युक्त करितेछे। मानुषके यदि आमरा समग्रभावे एमनि करिया दृष्टिर विषय करिते पारिताम तब ताहाके एइरूप सूर्येर मतोइ देखिताम। देखिताम, ताहार वस्तुपिण्ड भितरे भितरे धीरे धीरे नाना स्तरे विन्यस्त हइया उठितेछे, आर ताहाके घिरिया एकटि प्रकाशेर ज्योतिर्मण्डली नियतइ आपनाके चारि दिके विकीर्ण करियाइ आनन्द पाइतेछे। साहित्यके मानुषेर चारि दिके सेइ भाषारचित प्रकाशमण्डलीरूपे एकबार देखो। एखाने ज्योतिर झड़ बहितेछे, ज्योतिर उत्स उठितेछे, ज्योतिर्वाष्पेर संघात घटितेछे।

लोकालयेर पथ दिया चलिते चलिते यखन देखिते पाओ मानुषेर अवकाश नाइ—मुदि दोकान चालाइतेछे, कामार लोहा पिटितेछे, मजुर बोझा लइया चलियाछे, विषयी आपनार खातार हिसाब मिलाइतेछे—सेइ सङ्गे आर-एकटा जिनिस चोखे देखिते पाइतेछे ना, किन्तु एकबार मने मने देखो : एइ रास्तार दुइ धारे घरे-घरे दोकाने-बाजारे अलिते-गलिते कत शाखाय-प्रशाखाय रसेर धारा कत पथ दिया कत मलिनता कत सङ्कीर्णता कत दारिद्र्येर उपरे केवलइ आपनाके प्रसारित करिया दितेछे; रामायण-महाभारत कथा-काहिनी कीर्तन-पाँचालि विश्वमानवेर हृदयसुधाके प्रत्येक मानवेर काछे दिनरात बाँटिया दितेछे; नितान्त तुच्छ लोकेर क्षुद्र काजेर पिछने राम लक्ष्मण आसिया दाँड़ाइतेछेन; अन्धकार बासार मध्ये पञ्चवटीर करुणामिश्रित हाओया बहितेछे; मानुषेर हृदयेर सृष्टि हृदयेर प्रकाश मानुषेर कर्मक्षेत्रेर काठिन्य ओ दारिद्र्य के ताहार सौन्दर्य ओ मङ्गलेर कङ्कण-परा दुटि हात दिया बेड़िया रहियाछे। समस्त साहित्यके समस्त मानुषेर चारि दिके एकबार एमनि करिया देखिते हइबे। देखिते ह बे, मानुष आपनार वास्तव सत्ताके भावेर सत्ताय निजेर चतुर्दिके आरओ अनेक दूर पर्यन्त बाड़ाइया लइया गेछे। ताहार वर्षार चारि दिके कत गानेर वर्षा, काव्येर वर्षा, कत मेघदूत, कत विद्यापति विस्तीर्ण हइया आछे; ताहार छोटो घरटिर सुख दुःखके से कत चन्द्रसूर्यवंशीय राजादेर सुखदुःखेर काहिनीर मध्ये बड़ो करिया तुलियाछे। ताहार घरेर मेयेटिके घिरिया गिरिराजकन्यार करुणा सर्वदा सञ्चरण करितेछे; कैलासेर दरिद्रदेवतार महिमार मध्ये से आपनार दारिद्र्य-दुःखके प्रसारित करिया दियाछे। एइरूपे अनवरत मानुष आपनार

चारि दिके ये विकिरण सृष्टि करितेछे ताहाते बाहिरे येन निजेके निजे छाड़ाइया, निजेके निजे बाड़ाइया चलितेछे। ये मानुष अवस्थार द्वारा सङ्कीर्ण सेइ मानुष निजेर भावसृष्टिद्वारा निजेर एइ-ये विस्तार रचना करितेछे, संसारेर चारि दिके याहा एकटि द्वितीय संसार, ताहाइ साहित्य।

एइ विश्वसाहित्ये आमि आपनादेर पथप्रदर्शक एमन कथा मनेओ करिबेन ना। निजेर निजेर साध्य-अनुसारे ए पथ आमादेर सकलके काटिया चलिते हइबे। आमि केवल एइटुकु बलिते चाहियाछिलाम ये पृथिवी येमन आमार खेत एवं तोमार खेत एवं ताँहार खेत नहे, पृथिवीके तेमन करिया जाना अत्यन्त ग्राम्यभावे जाना, तेमनि साहित्य आमार रचना, तोमार रचना एव ताँहार रचना नहे। आमरा साधारणत साहित्यके एमनि करियाइ ग्राम्यभावेइ देखिया थाकि। सेइ ग्राम्य सङ्कीर्णता हइते निजेके मुक्ति दिया विश्वसाहित्येर मध्ये विश्वमानवके देखिबार लक्ष्य आमरा स्थिर करिब प्रत्येक लेखकेर रचनार मध्ये एकटि समग्रताके ग्रहण करिब एवं सेइ समग्रतार मध्ये समस्त मानुषेर प्रकाशचेष्टार सम्बन्ध देखिब, एइ सङ्कल्प स्थिर करिवार समय उपस्थित हइयाछे।

माघ १३१३

[जनवरी १९०७ (माघ १३१३) में 'बंगदर्शन' में प्रकाशित। नेशनल कांउसिल आफ एज्यूकेशन के समक्ष दिये गये चार भाषणों में से एक।]

बांला जातीय साहित्य

बङ्गीय-साहित्य-परिषत् सभार वार्षिक अधिवेशने पठित

सहित शब्द हइते साहित्य शब्देर उत्पत्ति। अतएव धातुगत अर्थ धरिले साहित्य शब्देर मध्ये एकटि मिलनेर भाव देखिते पाओया याय। से ये केवल भावे-भावे भाषाय-भाषाय ग्रन्थे-ग्रन्थे मिलन ताहा नहे; मानुषेर सहित मानुषेर, अतीतेर सहित वर्तमानेर, दूरेर सहित निकटेर अत्यन्त अन्तरङ्ग योगसाधन साहित्य व्यतीत आर-किछुर द्वाराइ सम्भवपर नहे। ये देशे साहित्येर अभाव से देशेर लोक परस्पर सजीव बन्धने संयुक्त नहे; ताहारा विच्छिन्न।

पूर्वपुरुषदेर सहितओ ताहादेर जीवन्त योग नाइ। केवल पूर्वापर-प्रचलित जड़प्रथाबन्धनेर द्वारा ये योगसाधन हय ताहा योग नहे, ताहा बन्धन मात्र। साहित्येर धारावाहिकता व्यतीत पूर्वपुरुषदिगेर सहित सचेतन मानसिक योग कखनो रक्षित हइते पारे ना।

आमादेर देशेर प्राचीन कालेर सहित आधुनिक कालेर यदिओ प्रथागत बन्धन आछे, किन्तु एक जायगाय कोथाय आमादेर मनेर मध्ये एमन एकटा नाड़ीर विच्छेद घटियाछे ये, सेकाल हइते मानसिक प्राणरस अव्याहतभावे प्रवाहित हइया एकाल पर्यन्त आसिया पौंछितेछे ना। आमादेर पूर्वपुरुषेरा केमन करिया चिन्ता करितेन, कार्य करितेन, नव तत्व उद्भावन करितेन—समस्त श्रुति स्मृति पुराण काव्यकला धर्मतत्त्व राजनीति समाजतन्त्रेर मर्मस्थले ताँहादेर जीवतशक्ति ताँहादेर चित्शक्ति जाग्रत थाकिया की भावे समस्तके सर्वदा सृजन एवं संयमन करित—की भावे समाज प्रतिदिन वृद्धिलाभ करित, परिवर्तनप्राप्त हइत, आपनाके केमन करिया चतुर्दिके विस्तार करित, नूतन अवस्थाके केमन करिया आपनार सहित सम्मिलित करित—ताहा आमरा सम्यक्‌रूपे जानि ना। महा रतेर काल एवं आमादेर वर्तमान कालेर माझखानकार अपरिसीम विच्छेदके आमरा पूरण करिब की दिया? यखन भुवनेश्वर ओ कनारक मन्दिरेर स्थापत्य ओ भास्कर्य देखिया विस्मये अभिभूत हओया याय तखन मने हय, एइ आश्चर्य शिल्पकौशलगुली कि बाहिरेर कोनो आकस्मिक आन्दोलने कतकगुलि प्रस्तरमय बुद्बुदेर मतो हठात् जागिया उठियाछिल? सेइ शिल्पीदेर सहित आमादेर योग कोन्‌खाने? याहारा एत अनुराग एत धैर्य एत नैपुण्येर सहित एइ-सकल अभ्रभेदी सौन्दर्य सृजन

करिया तुलियाछिल, आर आमरा याहारा अर्ध-निमीलित उदासीन चक्षे सेइ-सकल भुवनमोहिनी कीर्तिर एक एकटि प्रस्तरखण्ड खसिते देखितेछि अथच कोनोटा यथास्थाने पुनःस्थापन करिते चेष्टा करितेछि ना एवं पुनःस्थापन करिबार क्षमताओ राखि ना, आमादेर माझखाने एमन की एकटा महाप्रलय घटियाछिल याहाते पूर्वकालेर कार्यकलाप एखनकार कालेर निकट प्रहेलिका बलिया प्रतीयमान हय? आमादेर जातीय-जीवन-इतिहासेर माझखानेर कयेकखानि पाता के एकेबारे छिड़िया लइया गेल, याहाते आमरा तखनकार सहित आपनादिगेर अर्थ मिलाइते पारितेछि ना? एखन आमादेर निकट विधानगुलि रहियाछे, किन्तु से विधाता नाइ; शिल्पी नाइ, किन्तु ताहादेर, शिल्पनैपुण्ये देश आच्छन्न हइया आछे। आमरा येन कोन् एक परित्यक्त राजधानीर भग्नावशेषेर मध्ये वास करितेछि; सेइ राजधानीर इष्टक येखाने खसियाछे आमरा सेखाने केवल कर्दम एवं गोमयपङ्क लेपन करियाछि; पुरी निर्माण करिबार रहस्य आमादेर निकट सम्पूर्ण अविदित।

प्राचीन पूर्वपुरुषदेर सहित आमादेर एतइ विच्छेद घटिया गेछे ये, ताँहादेर सहित आमादेर पार्थक्य उपलब्धि करिबार क्षमताओ आमरा हाराइयाछि। आमरा मने करि, सेकालेर भारतवर्षेर सहित एखनकार कालेर केवल नूतन-पुरातनेर प्रभेद। सेकाले याहा उज्ज्वल छिल एखन ताहा मलिन हइयाछे, सेकाले याहा दृढ़ छिल एखन ताहाइ शिथिल हइयाछे। अर्थात् आमादिगकेइ यदि केह सोनार जल दिया पालिश करिया किञ्चित झक्झके करिया देय ताहा हइलेइ सेइ अतीत भारतवर्ष सशरीरे फिरिया आसे। आमरा मने करि, प्राचीन हिन्दुगण रक्तमांसेर मनुष्य छिलेन ना, ताँहारा केवल सजीव शास्त्रेर श्लोक छिलेन, ताँहारा केवल विश्वजगत्के माया मने करितेन एवं समस्त दिन जपतप करितेन। ताँहारा ये युद्ध करितेन, राज्यरक्षा करितेन, शिल्पचर्चा ओ काव्या-लोचना करितेन, समुद्र पार हइया वाणिज्य करितेन—ताँहादेर मध्ये ये भालो-मन्देर संघात छिल, विचार छिल, विद्रोह छिल, मतवैचित्र्य छिल, एक कथाय जीवन छिल, ताहा आमरा ज्ञाने जानि बटे किन्तु अन्तरे उपलब्धि करिते पारि ना। प्राचीन भारतवर्षके कल्पना करिते गेलेइ नूतन पञ्जिकार वृद्ध ब्राह्मण संक्रान्तिर मूर्तिटि आमादेर मने उदय हय।

एइ आत्यन्तिक व्यवधानेर अन्यतम प्रधान कारण एइ ये, आमादेर देशे तखन हइते एखन पर्यन्त साहित्यिकेर मनोरम प्राणमय धारा अविच्छेदे बहिया आसे-नाइ। साहित्येर याहा-किछु आछे ताहा माझे माझे दूरे दूरे विक्षिप्तभावे अवस्थित। तखनकार कालेर चिन्तास्रोत भावस्रोत प्राणस्रोतेर आदिगङ्गा शुकाइया गेछे, केवल ताहार नदीखातेर मध्ये मध्ये जल बाधिया आछे; ताहा कोनो एकटि वहमान

आदिम धारार द्वारा परिपुष्ट नहे, ताहार कतखानि प्राचीन जल कतटा आधुनिक लोकाचारेर वृष्टि-सञ्चित बला कठिन। एखन आमरा साहित्येर धारा अवलम्बन करिया हिन्दुत्वेर सेइ बृहत् प्रबल नानाभिमुख सचल तटगठनशील सजीव स्रोत बाहिया एकाल हइते सेकालेर मध्ये याइते पारि ना। एखन आमरा सेइ शुष्क पथेर माझे माझे निजेर अभिरुचि ओ आवश्यक अनुसारे पुष्करिणी खनन करिया ताहाके हिन्दुत्व नामे अभिहित करितेछि। सेइ बद्ध क्षुद्र विच्छिन्न हिन्दुत्व आमादेर व्यक्तिगत सम्पत्ति; ताहार कोनोटा बा आमार हिन्दुत्व, कोनोटा बा तोमार हिन्दुत्व; ताहा सेइ कण्व-कणाद राघव-कौरव नन्द-उपनन्द एवं आमादेर सर्वसाधारणेर तरङ्गित प्रवाहित अखण्डविपुल हिन्दुत्व किना सन्देह।

एइरूपे साहित्येर अभावे आमादेर मध्ये पूर्वापरेर सजीव योगबन्धन विच्छिन्न हइया गेछे। किन्तु साहित्येर अभाव घटिवार एकटा प्रधान कारण, आमादेर मध्ये जातीय योगबन्धनेर असद्भाव। आमादेर देशे कनोज कोशल काशी काञ्ची प्रत्येकेइ स्वतन्त्र भावे आपन आपन पथे चलिया गियाछे; एवं माझे माझे अश्वमेधेर घोड़ा छाड़िया दिया परस्परके संक्षिप्त करितेओ छाड़े नाइ। महाभारतेर इन्द्रप्रस्थ, राजतरङ्गिणीर काश्मीर, नन्दवंशीयदेर मगध, विक्रमादित्येर उज्जयिनी, इहादेर मध्ये जातीय इतिहासेर कोनो धारावाहिक योग छिल ना। सेइजन्य सम्मिलित जातीय हृदयेर उपर जातीय साहित्य आपन अटल भित्ति स्थापन करिते पारे नाइ। विच्छिन्न देशे विच्छिन्न काले गुणज्ञ राजार आश्रये एक-एक जन साहित्यकार आपन कीर्ति स्वतन्त्र भावे प्रतिष्ठित करिया गियाछेन। कालिदास केवल विक्रमादित्येर, चाँदवर्दि केवल पृथ्वीराजेर, चाणक्य केवल चन्द्रगुप्तेर। ताँहारा तत्कालीन समस्त भारतवर्षेर नहेन, एमन-कि तत्प्रदेशेओ ताँहादेर पूर्ववर्ती ओ परवर्ती कोनो योग खुँजिया पाओया याय ना।

सम्मिलित जातीय हृदयेर मध्ये यखन साहित्य आपन उत्तप्त सुरक्षित नीड़टि बाँधिया बसे तखनइ से आपनार वंश रक्षा करिते, धारावाहिक भावे आपनाके बहुदूर पर्यन्त प्रसारित करिया दिते पारे। सेइजन्य प्रथमेइ वलियाछि सहितत्वइ साहित्येर प्रधान उपादान; से विच्छिन्न के एक करे, एवं येखाने ऐक्य सेइखाने आपन प्रतिष्ठाभूमि स्थापन करे। येखाने एकेर सहित अन्येर, कालेर सहित कालान्तरेर, ग्रामेर सहित भिन्न ग्रामेर विच्छेद, सेखाने व्यापक साहित्य जन्मिते पारे ना। आमादेर देशे किसे अनेक लोक एक हय? धर्मे। सेइजन्य आमादेर देशे केवल धर्मसाहित्यइ आछे। सेइजन्य प्राचीन बङ्गसाहित्य केवल शाक्त एवं वैष्णव काव्येरइ समष्टि। राजपुतगणके वीरगौरवे एक करित, एइजन्य वीरगौरव ताहादेर कविदेर गानेर विषय छिल।

आमादेर क्षुद्र बंगदेशेओ एकटा साधारण साहित्येर हाओया उठियाछे। धर्मप्रचार हइतेइ इहार आरम्भ। प्रथमे याँहारा इंराजि शिखितेन ताँहारा प्रधानत आमादेर वणिक इंराज-राजेर निकट उन्नतिलाभेर प्रत्याशातेइ ए कार्ये प्रवृत्त हइतेन; ताँहादेर अर्थकरी विद्या साधारणेर कोनो काजे लागित ना। तखन सर्वसाधरणके एक शिक्षाय गठित करिबार सङ्कल्प काहारओ माथाय उठे नाइ; तखन कुलीपुरुषगण ये याहार आपन आपन पन्था देखित।

बांलार सर्वसाधारणके आपनादेर कथा शुनाइबार अभाव खृष्टीय मिशनरिगण सर्वप्रथमे अनुभव करेन, एइजन्य ताँहारा सर्वसाधारणेर भाषाके शिक्षावहनेर ओ ज्ञानवितरणेर योग्य करिया तुलिते प्रवृत्त हइलेन। किन्तु ए कार्य विदेशीदेर द्वारा सम्पूर्णरूपे सम्भवपर नहे। नव्यवङ्गेर प्रथम सृष्टिकर्ता राजा राममोहन रायइ प्रकृतपक्षे बांलादेशे गद्यसाहित्येर भूमिपत्तन करिया देन।

इतिपूर्वे आमादेर साहित्य केवल पद्येइ बद्ध छिल। किन्तु राममोहन रायेर उद्देश्यसाधनेर पक्षे पद्य यथेष्ट छिल ना। केवल भावेर भाषा, सौन्दर्येर भाषा, रसज्ञेर भाषा नहे; युक्तिर भाषा, विवृतिर भाषा, सर्वविषयेर एवं सर्वसाधरणेर भाषा ताँहार आवश्यक छिल। पूर्वे केवल भावुकसभार जन्य पद्य छिल, एखन जन सभार जन्य गद्य अवतीर्ण हइल। एइ गद्यपद्यर सहयोग-व्यतीत कखनो कोनो साहित्य सम्पूर्णता प्राप्त हइते पारे ना। खास दरबार एवं आम दरबार व्यतीत साहित्येर राज-दरबार सरस्वती महारानीर समस्त प्रजासाधारणेर उपयोगी हय ना। राममोहन राय आसिया सरस्वतीर सेइ आम दरबारेर सिंहद्वार स्वहस्ते उद्घाटित करिया दिलेन।

आमरा आशैशवकाल गद्य बलिया आसितेछि, किन्तु गद्य ये की दुरूह व्यापार ताहा आमादेर प्रथम गद्यकारदेर रचना देखिलेइ बुझा याय। पद्ये प्रत्येक छत्रेर प्रान्ते एकटि करिया विश्रामेर स्थान आछे, प्रत्येक दुइ छत्र वा चारि छत्रेर पर एकटा करिया नियमित भावेर छेद पाओया याय। किन्तु गद्ये एकटा पदेर सहित आर-एकटा पदके बाँधिया दिते हय, माझे फाँक राखिबार जो नाइ; पदेर मध्ये कर्ता कर्म क्रियाके एवं पदगुलिके परस्परेर सहित एमन करिया साजाइते हय याहाते गद्यप्रबन्धेर अद्यन्तमध्ये युक्तिसम्बन्धेर निविड़ योग घनिष्टरूपे प्रतीयमान हय। छन्देर एकटा अनिवार्य प्रवाह आछे; सेइ प्रवाहेर माझखाने एकबार फेलिया दिते पारिले कविता सहजे नाचिते नाचिते भासिया चलिया याय; किन्तु गद्ये निजे पथ देखिया पाये हाँटिया निजेर भावसामञ्जस्य करिया चलिते हय, सेइ पदव्रजविद्याटि रीतिमत अभ्यास ना थाकिले चाल अत्यन्त आँकाबाँका एलोमेलो

एवं टल्मल् हइया थाके। गद्येर सुप्रणालीबद्ध नियमटि आजकाल आमादेर अभ्यस्त हइया गेछे, किन्तु अनधिककाल-पूर्वे एरूप छिल ना।

तखन ये गद्य रचना कराइ कठिन छिल ताहा नहे, तखन लोके अनभ्यासवशत गद्य प्रबन्ध सहजे बुझिते पारित ना। देखा याइतेछे, पृथिवीर आदिम अवस्थाय येमन केवल जल छिल तेमनि सर्वत्रइ साहित्येर आदिम अवस्थाय केवल छन्द-तरङ्गिता प्रवाहशालिनी कविता छिल। आमि बोध करि, कविताय ह्रस्व पद, भावेर नियमित छेद ओ छन्द एवं मिलेर झंकार-वशत कथागुलि अति शीघ्र मने अङ्कित हइया याय एवं श्रोतागण ताहा सत्वर धारणा करिते पारे। किन्तु छन्दोबन्धहीन बृहत्काय गद्येर प्रत्येक पदटि एवं प्रत्येक अंशटि परस्परेर सहित योजना करिया ताहार अनुसरण करिया याइते विशेष एकटा मानसिक चेष्टार आवश्यक करे। सेइजन्य राममोहन राय यखन वेदान्तसूत्र बांलाय अनुवाद करिते प्रवृत्त हइलेन तखन गद्य बुझिबार की प्रणाली तत्सम्वन्धे भमिका रचना करा आवश्यक बोध करियाछिलेन। सेइ अंशटि उद्‌वृत करिते इच्छा करि—

'ए भाषाय गद्यते अद्यापि कोन शास्त्र किंवा काव्य वर्णने आइसे ना इहाते एतद्देशीय अनेक लोक अनभ्यासप्रयुक्त दुइ तिन वाक्येर अन्वय करिया गद्य हइते अर्थ बोध करिते हठात् पारेन ना इहा प्रत्यक्ष कानुनेर तरजमार अर्थबोधेर समय अनुभव हय'

अतःपर की करिले गद्य बोध जन्मे तत्सम्बन्धे लेखक उपदेश दितेछेन—

> 'वाक्येर प्रारम्भ आर समाप्ति एइ दुइयेर विवेचना विशेष मतो करिते उचित हय। ये २ स्थाने यखन याहा येमन इत्यादि शब्द आछे ताहार प्रतिशब्द तखन ताहा से रूप इत्यादिके पूर्व्वेर सहित अन्वित करिया वाक्येर शेष करिबेन। यावत् क्रिया ना पाइबेन तावत् पर्यन्त वाक्येर शेष अङ्गीकार करिया अर्थ करिबार चेष्टा ना पाइबेन' इत्यादि।

पुराण-इतिहास पड़ा गियाछे, राजगण सहसा कोनो ऋषिर तपोवने अतिथि हइले ताँहारा योगबले मद्यमांसेर सृष्टि करिया राजा ओ राजानुचरवर्ग के भोजन कराइतेन। बेश देखा याइतेछे, तपोवनेर निकट दोकान-बाजारेर संस्रव छिल ना एवं शालपत्रपुटे केवल हरीतकी आमलकी संग्रह करिया राजयोग्य भोजेर आयोजन करा याय ना, सेइजन्य ऋषिदिगके तपःप्रभाव प्रयोग करिते हइत। राममोहन राय येखाने छिलेन सेखानेओ किछुइ प्रस्तुत छिल ना; गद्य छिल ना, गद्यबोध-शक्तिओ छिल ना। ये समये ए कथा उपदेश करिते हइत ये, प्रथमेर सहित शेषेर योग, कर्तार सहित क्रियार अन्वय अनुसरण करिया गद्य पाठ करिते हय, सेइ आदिमकाले राममोहन पाठकदेर जन्य की उपहार प्रस्तुत करितेछिलेन? वेदान्त-

सार, ब्रह्मसूत्र, उपनिषत् प्रभृति दुरूह ग्रन्थेर अनुवाद तिनि सर्वसाधारणके अयोग्य ज्ञान करिया ताहादेर हस्ते उपस्थितमत सहजप्राप्य आमलकी हरीतकी आनिया दिलेन ना। सर्वसाधारणेर प्रति ताँहार एमन एकटि आन्तरिक श्रद्धा छिल। आमादेर देशे अधुनातन कालेर मध्ये राममोहन रायइ सर्वप्रथमे मानवसाधारणके राजा बलिया जानियाछिलेन। तिनि मने मने बलियाछिलेन : साधारण-नामक एइ महाराजके आमि यथोचित अतिथिसत्कार करिब; आमार अरण्ये इँहार उपयुक्त किछुइ नाइ, किन्तु आमि कठिन तपस्यार द्वारा राजभोगेर सृष्टि करिया दिब।

केवल पण्डितदेर निकट पाण्डित्य करा, ज्ञानीदेर निकट ख्याति अर्जन करा, राममोहन रायेर न्याय परमविद्वान व्यक्तिर पक्षे सुसाध्य छिल। किन्तु तिनि पाण्डित्येर निर्जन अत्युच्चशिखर त्याग करिया सर्वसाधारणेर भूमितले अवतीर्ण हइलेन एवं ज्ञानेर अन्न ओ भावेर सुधा समस्त मानव-सभार मध्ये परिवेशन करिते उद्यत हइलेन।

एइरूपे बांलादेशे एक नूतन राजार राजत्व, एक नूतन युगेर अभ्युदय हइल। नव्यवङ्गेर प्रथम बाङालि, सर्वसाधारणके राजटिका पराइया दिलेन एवं एइ राजार बासेर जन्य समस्त बांलादेशे विस्तीर्ण भूमिर मध्ये सुगभीर भित्तिर उपरे साहित्यके सुदृढ़रूपे प्रतिष्ठित करिलेन। काले काले सेइ भित्तिर उपर नव नव तल निर्मित हइया साहित्यहर्म्य अभ्रभेदी हइया उठिबे एवं अतीत-भविष्यतेर समस्त बङ्गहृदयके स्थायी आश्रय दान करिते थाकिबे, अद्य आमादेर निकट इहा दुराशार स्वप्न बलिया मने हय ना।

अतएव देखा याइतेछे, बड़ो एकटि उन्नत भावेर उपर बङ्गसाहित्येर भित्ति प्रतिष्ठित हइयाछे। यखन एइ निर्माणकार्येर आरम्भ हय तखन बङ्गभाषार ना छिल कोनो योग्यता, ना छिल समादर; तखन बङ्गभाषा काहाके ख्यातिओ दित ना अर्थओ दित ना; तखन बङ्गभाषाय भाव-प्रकाश कराओ दुरूह छिल एवं भाव प्रकाश करिया ताहा साधारणेर मध्ये प्रचार कराओ दुःसाध्य छिल। ताहार आश्रयदाता राजा छिल ना, ताहार उत्साहदाता शिक्षित साधारण छिल ना। याँहारा इंराजि चर्चा करितेन ताँहारा बांलाके उपेक्षा करितेन एवं याँहारा बांला जानितेन ताँहाराओ एइ नूतन उद्यमेर कोनो मर्यादा बुझितेन ना।

तखन बङ्गसाहित्येर प्रतिष्ठातादेर सम्मुखे केवल सुदूर भविष्यत् एवं सुवृहत् जनमण्डली उपस्थित छिल—ताहाइ यथार्थ साहित्येर स्थायी प्रतिष्ठाभूमि। स्वार्थओ नहे, ख्यातिओ नहे, प्रकृत साहित्येर ध्रुव लक्ष्यस्थल केवल निरवधि काल एवं विपुला पृथिवी। सेइ लक्ष्य थाके बलियाइ साहित्य मानवेर सहित

मानवके, युगेर सहित युगान्तरके प्राणबन्धने बाँधिया देय। बङ्गसाहित्येर उन्नति ओ व्याप्ति-सहकारे केवल-ये समस्त बाङालिर हृदय अन्तरतम योगे बद्ध हइबे ताहा नहे, एक समय भारतवर्षेर अन्यान्य जातिकेओ बङ्गसाहित्य आपन ज्ञानान्न-वितरणेर अतिथिशालाय, आपन भावामृतेर अवारित सदाव्रते आकर्षण करिया आनिबे ताहार लक्षण एखन हइतेइ अल्पे अल्पे परिस्फुट हइया उठितेछे।

एपर्यन्त बङ्गसाहित्येर उन्नतिर जन्य याँहारा चेष्टा करियाछेन ताँहारा एकक भावेइ काज करियाछेन। एककभावे सकल काजइ कठिन, विशेषत साहित्येर काज। कारण, पूर्वेइ बलियाछि साहित्येर एकटि प्रधान उपादान सहितत्व। ये समाजे जनसाधारणेर मनेर मध्ये अनेकगुलि भाव सञ्चित एवं सर्वदा आन्दोलित हइतेछे, येखाने परस्परेर मानसिक संस्पर्श नाना आकारे परस्पर अनुभव करिते पारितेछे, सेखाने सेइ मनेर संघाते भाव एवं भावेर संघाते साहित्य स्वतइ जन्मग्रहण करे एवं चतुर्दिके सञ्चारित हइते थाके। एइ मानवमनेर सजीव संस्रव हइते वञ्चित हइया केवलमात्र दृढ़ सङ्कल्पेर आघाते सङ्गिहीन मनके जनशून्य कठिन कर्तव्यक्षेत्रेर मध्य दिया चालना करा, एकला बसिया चिन्ता करा, उदासीनदेर मनोयोग आकर्षण करिबार एकान्त चेष्टा करा, सुदीर्घकाल एकमात्र निजेर अनुरागेर उत्तापे निजेर भावपुष्पगुलिके प्रस्फुटित करिया तुलिबार प्रयास करा एवं चिरजीवनेर प्राणपण उद्यमेर सफलता सम्बन्धे चिरकाल सन्दिहान हइया थाका—एमन निरानन्देर अवस्था आर की आछे? ये व्यक्ति काज करितेछे केवल ये ताहारइ कष्ट ताहा नय, इहाते काजेरओ असम्पूर्णता घटे। एइरूप उपवासदशाय साहित्येर फुलगुलिते सम्पूर्ण रङ धरे ना, ताहारा फलगुलिते परिपूर्णमात्राय पाक धरिते पाय ना। साहित्येर समस्त आलोक ओ उत्ताप सर्वत्र सर्वतोभावे सञ्चारित हइते पारे ना।

वैज्ञानिकेरा बलेन, पृथिवीवेष्टनकारी वायुमण्डलेर एकटि प्रधान काज सूर्यालोकके भाङिया वण्टन करिया चारि दिके यथासम्भव समानभावे विकीर्ण करिया देओया। बातास ना थाकिले मध्याह्नकालेओ कोथाओ वा प्रखर आलोक कोथाओ वा निविड़तम अन्धकार विराज करित।

आमादेर ज्ञानराज्येर मनोराज्येर चारि दिकेओ सेइरूप एकटा वायुमण्डलेर आवश्यकता आछे। समाजेर सर्वत्र व्याप्त करिया एमन एकटा अनुशीलनेर हाओया बहा चाइ याहाते ज्ञान एवं भावेर रश्मि चतुर्दिके प्रतिफलित, विकीर्ण हइते पारे।

यखन बङ्गदेशे प्रथम इंराजिशिक्षा प्रचलित हय, यखन आमादेर समाजे सेइ मानसिक वायुमण्डल सृजित हय नाइ, तखन शतरञ्जेर सादा एवं कालो

घरेर मतो शिक्षा एवं अशिक्षा परस्पर संलिप्त ना हइया ठिक पाशापाशि बास करित। याहारा इंराजि शिखियाछे एवं याहारा शेखे नाइ ताहारा सुस्पष्ट-रूपे विभक्त छिल; ताहादेर परस्परेर मध्ये कोनोरूप संयोग छिल ना, केवल संघात छिल। शिक्षित भाइ आपन अशिक्षित भाइके मनेर सहित अवज्ञा करिते पारित, किन्तु कोनो सहज उपाये ताहाके आपन शिक्षार अंश दान करिते पारित ना।

किन्तु दानेर अधिकार ना थाकिले कोनो जिनिसे पूरा अधिकार थाके ना। केवल भोगस्वत्व एवं जीवनस्वत्व नाबालक एवं स्त्रीलोकेर असम्पूर्ण अधिकार मात्र। एक समये आमादेर इंराजि-पण्डितेरा मस्त पण्डित छिलेन, किन्तु ताँहादेर पाण्डित्य ताँहादेर निजेर मध्येइ बद्ध थाकित, देशेर लोकके दान करिते पारितेन ना—एइजन्य से पाण्डित्य केवल विरोध एवं अशान्तिर सृष्टि करित। सेइ असम्पूर्ण पाण्डित्य केवल प्रचुर उत्ताप दित किन्तु यथेष्ट आलोक दित ना।

एइ क्षुद्र सीमाय बद्ध व्याप्तिहीन पाण्डित्य किछु अत्युग्र हइया उठे; केवल ताहाइ नहे, ताहार प्रधान दोष एइ ये नवशिक्षार मुख्य एवं गौण अंश से निर्वाचन करिया लइते पारे ना। सेइजन्य प्रथम-प्रथम याँहारा इंराजि शिखियाछिलेन ताँहारा चतुष्पार्श्ववर्तीदेर प्रति अनावश्यक उत्पीड़न करियाछिलेन एवं स्थिर करियाछिलेन मद्य मांस ओ मुखरताइ सभ्यतार मुख्य उपकरण।

चालेर बस्तार चाल एवं काँकर पृथक बाछिते हइले एकटा पात्रे समस्त छड़ाइया फेलिते हय; तेमनि नवशिक्षा अनेकेर मध्ये विस्तारित करिया ना दिले ताहार शस्य एवं कङ्कर-अंश निर्वाचन करिया फेला दुःसाध्य हइया थाके। अतएव प्रथम-प्रथम यखन नूतन शिक्षाय सम्पूर्ण भालो फल ना दिया नानाप्रकार असंगत आतिशय्येर सृष्टि करे तखन अतिमात्र भीत हइया से शिक्षाके रोध करिबार चेष्टा सकल समये सद्‌विवेचनार काज नहे। याहा स्वाधीनभावे व्याप्त हइते पारे ताहा आपनाके आपनि संशोधन करिया लय, याहा बद्ध थाके ताहाइ दूषित हइया उठे।

एइ कारणे इंराजि शिक्षा यखन संकीर्ण सीमाय निरुद्ध छिल तखन सेइ क्षुद्र सीमार मध्ये इंराजि सभ्यतार त्याज्य अंश सञ्चित हइया समस्त कलुषित करिया तुलितेछिल। एखन सेइ शिक्षा चारि दिके विस्तृत हओयातेइ ताहार प्रतिक्रिया आरम्भ हइयाछे।

किन्तु इंराजि शिक्षा ये इंराजि भाषा अवलम्बन करिया विस्तृत हइयाछे ताहा नहे। बांला साहित्यइ ताहार प्रधान सहाय हइयाछे। भारतवर्षेर मध्ये

बाङालि एक समये इंराज-राज्य स्थापनेर सहायता करियाछिल; भारतवर्षेर मध्ये बङ्गसाहित्य आज इंराजि भावराज्य एवं ज्ञानराज्य-विस्तारेर प्रधान सहकारी हइयाछे। एइ बांलासाहित्ययोगे इंराजिभाव यखन घरे बाहिरे सर्वत्र सुगम हइल तखनइ इंराजि सभ्यतार अन्ध दासत्व हइते मुक्तिलाभेर जन्य आमरा सचेतन हइया उठिलाम। इंराजि शिक्षा एखन आमादेर समाजे ओतप्रोतभावे मिश्रित हइया गियाछे, एइजन्य आमरा स्वाधीनभावे ताहार भालोमन्द ताहार मुख्यगौण-विचारेर अधिकारी हइयाछि; एखन नाना चित्त नाना अवस्थाय ताहाके परीक्षा करिया देखितेछे; एखन सेइ शिक्षार द्वारा बाङालिर मन सजीव हइयाछे एवं बाङालिर मनके आश्रय करिया सेइ शिक्षाओ सजीव हइया उठियाछे।

आमादेर ज्ञानराज्येर चतुर्दिके मानसिक वायुमण्डल एमनि करिया सृजित हय। आमादेर मन यखन सजीव छिल ना तखन एइ वायुमण्डलेर अभाव आमरा तेमन करिया अनुभव करिताम ना, एखन आमादेर मानसप्राण यतइ सजीव हइया उठितेछे ततइ एइ वायुमण्डलेर जन्य आमरा व्याकुल हइतेछि।

एतदिन आमादिगके जलमग्न डुबारिर मतो इंराजि-साहित्याकाश हइते नले करिया हाओया आनाइते हइत। एखनो से नल सम्पूर्ण त्याग करिते पारि नाइ। किन्तु अल्पे अल्पे आमादेर जीवनसञ्चारेर सङ्गे सङ्गे आमादेर चारि दिके सेइ वायुसञ्चारओ आरम्भ हइयाछे। आमादेर देशीय भाषाय देशीय साहित्येर हाओया उठियाछे।

यतक्षण बांलादेशे साहित्येर सेइ हाओया बहे नाइ, सेइ आन्दोलन उपस्थित हय नाइ, यतक्षण बङ्गसाहित्य एक-एकटि स्वतंत्र सङ्गिहीन प्रतिभा-शिखर आश्रय करिया विच्छिन्नभावे अवस्थित करितेछिल, ततक्षण ताहार दावि करिवार विषय बेशि-किछु छिल ना। ततक्षण केवल बलवान व्यक्तिगण ताहाके निज वीर्यबले निज बाहुयुगलेर उपर धारणपूर्वक पालन करिया आसितेछिलेन। एखन से साधारणेर हृदयेर मध्ये आसिया वासस्थान स्थापन करियाछे, एखन बांलादेशेर सर्वत्रइ से अबाध अधिकार प्राप्त हइयाछे। एखन अन्तःपुरेओ से परिचित आत्मीयेर न्याय प्रवेश करे एवं विद्वत्सभातेओ से समादृत अतिथिर न्याय आसन प्राप्त हय। एखन याँहारा इंराजिते शिक्षालाभ करियाछेन ताँहारा बांला भाषाय भावप्रकाश कराके गौरव ज्ञान करेन; एखन अतिबड़ो बिलाति-विद्याभिमानीओ बांलापाठकदिगेर निकट ख्याति अर्जन कराके आपन चेष्टार अयोग्य बोध करेन ना।

प्रथमे यखन इंराजि शिक्षार प्रवाह आमादेर समाजे आसिया उपस्थित हइल तखन केवल बिलाति विद्यार एकटा बालिर चर बांधिया दियाछिल; से बालुका-

राशि परस्पर असंसक्त; ताहार उपरे ना आमादेर स्थायी वासस्थान निर्माण करा याय, ना ताहा साधारणेर प्राणधारणयोग्य शस्य उत्पादन करिते पारे। अवशेषे ताहारइ उपरे यखन बङ्गसाहित्येर पलिमृत्तिका पड़िल तखन ये केवल दृढ़ तट बाँधिया गेल, तखन ये केवल बांलार विच्छिन्न मानवेरा एक हइबार उपक्रम करिल ताहा नहे, तखन बांला-हृदयेर चिरकालेर खाद्य एवं आश्रयेर उपाय हइल। एखन एइ जीवनशालिनी जीवनदायिनी मातृभाषा सन्तानसमाजे आपन अधिकार प्रार्थना करितेछे।

पौष १३०२

[बंगीय साहित्य परिषद के प्रथम वार्षिक अधिवेशन में ७ अप्रेल १८९५ (चैत्र १३०१) को दिया गया भाषण। मासिक 'साधना' में (वैशाख १३०२) प्रकाशित ।]

पञ्चम खण्ड

साहित्येर पथे

वास्तव

लोकेरा किछुइ ठिकमत करितेछे ना, संसारे येमन हओया उचित छिल तेमन हइतेछे ना, समय खाराप पड़ियाछे—एइ समस्त दुश्चिन्ता प्रकाश करिया मानुष आरामे थाके, ताहार आहारनिद्रार किछुमात्र व्याघात हय ना, एटा प्रायइ देखिते पाओया याय। दुश्चिन्ता-आगुनटा शीतेर आगुनेर मतो उपादेय, यदि सेटा पाशे थाके किन्तु निजेर गाये ना लागे।

अतएव, यदि एमन कथा केह बलित ये, आजकाल बांलादेशे कविरा ये साहित्येर सृष्टि करितेछे ताहाते वास्तवता नाइ, ताहा जनसाधारणेर उपयोगी नहे, ताहाते लोकशिक्षार काज चलिबे ना, तबे खुब सम्भव आमिओ देशेर अवस्था सम्बन्धे उद्वेग प्रकाश करिया बलिताम, कथाटा ठिक बटे; एवं निजेके एइ दलेर बाहिरे फेलिताम।

किन्तु एकेबारे आमारइ नाम धरिया एइ कथागुलि प्रयोग करिले अन्येर ताहाते यतइ आमोद होक, आमि से आमोदे खोला मने योग दिते पारि ना।

तबे कि ना, बासरघरे वर एवं पाठकसभाय लेखकेर प्राय एकइ दशा। कर्ण-मूले अनेक कठिन कौतुक उभयके निःशब्दे सह्य करिते हय। सह्य ये करे ताहार कारण एइ, एकटा जायगाय ताहादेर जित आछे। ये यतइ उत्पीड़न करुक, ये वर ताहार कनेटिके केह हरण करिबे ना; एवं ये लेखक ताहार लेखाटा तो रइलइ।

अतएव निजेर सम्बन्धे किछु बलिब ना। किन्तु एइ अवकाशे साधारण-भावे साहित्य सम्बन्धे किछु बला याइते पारे। ताहा नितान्त अप्रासङ्गिक हइबे ना। केनना यदिच प्रथम नम्बरेइ आमार लेखाटाकेइ सेसने सोपरद्द करा हइयाछे तबु ए खबरटारओ आभास आछे ये, आजकालकार प्राय सकल लेखकेरइ एइ एकइ अपराध।

वास्तवता ना थाका निश्चयइ एकटा मस्त फाँकि। वस्तु किछुइ पाइल ना अथच दाम दिल एवं खुशि हइया हासिते हासिते गेल एमनसब हतबुद्धि लोकेर

जन्य पाका अभिभावक नियुक्त हओया उचित। सेइ लोकेइ अभिभावकेर उपयुक्त, कविरा फस् करिया याहादिगके कलाकौशले ठकाइते ना पारे, कटाक्षे याहारा बुझिते पारे वस्तु कोथाय आछे एवं कोथाय नाइ। अतएव याँहारा अवास्तव साहित्य सम्बन्धे देशके सतर्क करिया दितेछेन ताँहारा नाबालक ओ नालायेक पाठकदेर जन्य कोर्ट आफ ओयार्डस् खुलिबार काज करितेछेन।

किन्तु समालोचक यत बड़ो विचक्षण होन-ना केन चिरकालइ ताँहारा पाठकदेर कोले तुलिया सामलाइबेन सेटा तो धात्री एवं धृत काहारओ पक्षे भालो नय। पाठकदिगके स्पष्ट करिया समजाइया देओया उचित कोन्‌टा वस्तु एवं कोन्‌टा वस्तु नय।

मुशकिल एइ ये, वस्तु एकटा नहे एवं सब जायगाय आमरा एकइ वस्तुर तत्त्व करि ना। मानुषेर बहुधा प्रकृति, ताहार प्रयोजन नाना, एवं विचित्र वस्तुर सन्धाने ताहाके फिरिते हय।

एखन कथा एइ, साहित्येर मध्ये कोन् वस्तुके आमरा खुंजि। ओस्तादेरा बलिया थाकेन सेटा रसवस्तु। बला बाहुल्य, एखाने रससाहित्येर कथाइ हइतेछे। एइ रसटा एमन जिनिस याहार वास्तवता सम्बन्धे तर्क उठिले हाताहाति पर्यन्त गड़ाय एवं एक पक्ष अथवा उभय पक्ष भूमिसात् हइलेओ कोनो मीमांसा हय ना।

रस जिनिसटा रसिकेर अपेक्षा राखे, केवलमात्र निजेर जोरे निजेके से सप्रमाण करिते पारे ना। संसारे विद्वान, बुद्धिमान, देशहितैषी, लोकहितैषी प्रभृति नाना प्रकारेर भालो भालो लोक आछेन किन्तु दमयन्ती येमन सकल देवताके छाड़िया नलेर गलाय माला दियाछिलेन तेमनि रसभारती स्वयम्बरसभाय आर सकलकेइ बाद दिया केवल रसिकेर सन्धान करिया थाकेन।

समालोचक बुक फुलाइया ताल ठुकिया बलेन, 'आमिइ सेइ रसिक'। प्रतिवाद करिते साहस हय ना, किन्तु अरसिक आपनके अरसिक बलिया जानियाछे संसारे एइ अभिज्ञताटा देखा याय ना। आमार कोन्‌टा भालो लागिल एवं आमार कोन्‌टा भालो लागिल ना सेइटेइ ये रसपरीक्षार चूड़ान्त मीमांसा, पनेरो आना लोक से सम्बन्धे निःसंशय। एइजन्यइ साहित्य-समालोचनाय विनय नाइ। मूलधन ना थाकिलेओ दलादलिर काजे नामिते काहारओ बाधे ना, तेमनि साहित्यसमालोचनाय कोनोप्रकार पुंजिर जन्य केह सबुर करे ना। केनना समालोचकेर पदटा सम्पूर्ण निरापद।

साहित्येर याचाइ-व्यापारटा एतइ यदि अनिश्चित तबे साहित्य याहारा रचना करे ताहादेर उपाय की। आशु उपाय देखि ना। अर्थात् ताहारा यदि निश्चित फल जानिते चाय तबे सेइ जानिबार बरात ताहादेर प्रपौत्रेर उपर

दिते हय। नगद-विदाय येटा ताहादेर भाग्ये जोटे सेटार उपर अत्यन्त भर देओया चलिबे ना।

रसविचारे व्यक्तिगत एवं कालगत भुल संशोधन करिया लइबार जन्य बहु व्यक्ति ओ दीर्घ समयेर भितर दिया विचार्य पदार्थटिके बहिया लइया गेले तबे सन्देह मेटे।

कोनो कविर रचनार मध्ये साहित्यवस्तुटा आछे कि ना ताहार उपयुक्त समजदार कविर समसामयिकदेर मध्ये निश्चयइ अनेक आछे, किन्तु ताहाराइ उपयुक्त कि ना ताहार चूड़ान्त निष्पत्ति दावि करिले ठका असम्भव नय।

एमन अवस्थाय लेखकेर एकटा सुविधा आछे एइये, ताँहार लेखा ये लोक पछन्द करे सेइ से समजदार ताहा धरिया लइते बाधा नाइ। अपर पक्षके तिनि यदि उपयुक्त बलिया गण्यइ ना करेन तबे एमन विचारालय हातेर काछे नाइ येखाने ताहारा नालिश रुजु करिते पारे। अवश्य कालेर आदालते इहार विचार चलितेछे, किन्तु एइ देओयानि आदालतेर मतो दीर्घसूत्री आदालत इंरेजेर मुल्लुकेओ नाइ। ए स्थले कविरइ जित रहिल, केनना आपातत दखल ये ताहारइ! कालेर पेयादा येदिन ताहार ख्याति-सीमानार खुटि उपड़ाइते आसिबे सेदिन समालोचक सेइ तामासा देखिबार जन्य सबुर करिते पारिबे ना।

याँहारा आधुनिक बङ्गसाहित्ये वास्तवतार तल्लास करिया एकेबारे हताश्वास हइया पड़ियाछेन ताँहारा आमार कथार उत्तरे बलिबेन, 'दाँडिपाल्लाय चाड़ाइया रस-जिनिसटार वस्तुपरिमाण करा याय ना ए कथा सत्य, किन्तु रसपदार्थ कोनो-एकटा वस्तुके आश्रय करिया तो प्रकाश पाय। सेइखानेइ आमरा वास्तवतार विचार करिबार सुयोग पाइया थाकि।'

निश्चयइ रसेर एकटा आधार आछे। सेटा मापकाठिर आयत्ताधीन सन्देह नाइ। किन्तु सेइटेरइ वस्तुपिण्ड ओजन करिया कि साहित्येर दर याचाइ हय।

रसेर मध्ये एकटा नित्यता आछे। मान्धातार आमले मानुष ये रसटि उपभोग करियाछे आजओ ताहा बातिल हय नाइ। किन्तु वस्तुर दर राजार-अनुसारे एबेला-ओबेला बदल हइते थाके।

आच्छा, मने करा याक्, कविताके वास्तव करिबार लोभ आमि आर सामलाइते पारितेछि ना। खुजिते लागिलाम, देशे सबचेये कोन् व्यापारटा वास्तव हइया उठियाछे। देखिलाम, ब्राह्मणसभाटा देशेर मध्ये रेलोये-सिग्नालेर स्तम्भटार मतो चक्षु रक्तवर्ण करिया आपनार एकटिमात्र पाये भर दिया खुब उँचु हइया दाँड़ाइयाछे। कायस्थेरा पैता लइबेइ आर ब्राह्मणसभा ताहार पैता काड़िबे, एइ घटनाटा बांलादेशे विश्वव्यापारेर मध्ये सबचेये बड़ो। अतएव

बाङालि कवि यदि इहाके ताहार रचनाय आमल ना देय तबे बुझिते हइबे वास्तवता सम्बन्धे ताहार बोधशक्ति अत्यन्त क्षीण। एइ बुझिया लिखिलाम पैतासंहार-काव्य। ताहार वस्तुपिण्डटा ओजने कम हइल ना, किन्तु हाय रे, सरस्वती कि वस्तुपिण्डेर उपरे ताँहार आसन राखियाछेन ना पद्मेर उपरे।

एइ दृष्टान्तटि दिबार एकटु हेतु आछे। विचारकदेर मते वास्तवता जिनिसटा की, ताहार एकटा सूत्र धरिते पारियाछि। आमार विरुद्धे एकजन फरियादि बलियाछेन, आमार समस्त रचनार मध्ये वास्तवतार उपकरण एकटु येखाने जमा हइयाछे से केवल 'गोरा' उपन्यासे।

गोरा उपन्यासे की वस्तु आछे ना आछे उक्त उपन्यासेर लेखक ताहा सबचेये कम बोझे। लोकमुखे शुनियाछि, प्रचलित हिंदुयानिर भालो व्याख्या ताहार मध्ये पाओया याय। इहा हइते आन्दाज करितेछि, ओटाइ एकटा वास्तवतार लक्षण।

वर्तमान समये कतकगुलि विशेष कारणे हिन्दु आपनार हिन्दुत्व लइया भयंकर रुखिया उठियाछे। सेटा सम्बन्धे ताहार मनेर भाव बेश सहज अवस्थाय नाइ। विश्वरचनाय एइ हिन्दुत्वइ विधातार चरम कीर्ति एवं एइ सृष्टितेइ तिनि ताँहार समस्त शक्ति निःशेष करिया आर किछुतेइ अग्रसर हइते पारितेछेन ना। एइटे आमादेर बुलि। साहित्येर वास्तवता-ओजनेर समये एइ बुलिटा हय बाटखारा। कालिदासके आमरा भालो बलि, केनना ताँहार काव्ये हिन्दुत्व आछे। बङ्किमके आमरा भालो बलि, केनना स्वामीर प्रति हिन्दु रमणीर येरूप मनोभाव हिन्दु-शास्त्रसम्मत ताहा ताँहार नायिकादेर मध्ये देखा याय; अथवा निन्दा करि, सेटा यथेष्ट परिमाणे नाइ बलिया।

अन्य देशेओ एमन घटे। इंलण्डे इम्पीरियालिज्मेर ज्वरोत्ताप यखन घण्टाय घण्टाय चड़िया उठियाछिल तखन एकदल इंरेज कविर काव्ये ताहारइ रक्तवर्ण वास्तवता प्रलाप बकितेछिल।

ताहार सङ्गे यदि तुलना करा याय तबे उयार्डस्वार्थेर कविताय वास्तवता कोथाय। तिनि विश्वप्रकृतिर मध्ये ये-एकटि आनन्दमय आविर्भाव देखिते पाइयाछिलेन ताहार सङ्गे ब्रिटिश जनसाधारणेर शिक्षा दीक्षा अभ्यास आचार विचारेर योग छिल कोथाय। ताँहार भावेर रागिणीटि निर्जनवासी एकला-कविर चित्त-बाँशिते बाजियाछिल—इंरेजेर स्वदेशी हाटे ओजनदरे याहा बिक्रि हय एमनतरो वस्तुपिण्ड ताहार मध्ये की आछे जानिते चाइ।

आर कीट्स शेलि—इँहादेर काव्येर वास्तवता की दिया निर्धारण करिब। इंगजेर जातीय चित्तेर सुरेर सङ्गे सुर मिलाइया कि इँहारा बकशिश ओ बाहवा

पाइयाछिलेन। ये-समस्त समालोचक साहित्येर हाटे वास्तवतार दालालि करिया थाकेन ताँहारा ओयार्डस्वार्थेर कवितार किरूप समादर करियाछिलेन ताहा इतिहासे आछे। शेलिके अस्पृश्य अन्त्यजेर मतो ताँहार देश सेदिन घरे ढुकिते देय नाइ एवं कीट्सके मृत्युवाण मारियाछिल।

आरओ आधुनिक दृष्टान्त टेनिसन। तिनि भिक्टोरीय युगेर प्रचलित लोकधर्मेर कवि। ताइ ताँहार प्रभाव देशेर मध्ये सर्वव्यापी छिल। किन्तु भिक्टोरीय युगेर वास्तवता यत क्षीण हइतेछे टेनिसनेर आसनओ तत संकीर्ण हइया आसितेछे। ताँहार काव्य ये गुणे टिंकिबे ताहा नित्यरसेर गुणे, ताहाते भिक्टोरीय ब्रिटिश-वस्तु बहुल परिमाणे आछे बलिया नहे—सेइ स्थूल वस्तुटाइ प्रतिदिन ध्वसिया पड़ितेछे।

आमादेर कालेर लेखकदेर मोटा अपराधटा एइये, आमरा इंरेजि पड़ियाछि। इंरेजि शिक्षा बाङालिर पक्षे वास्तव नहे, अतएव ताहा वास्तवतार कारणओ नहे, आर सेइजन्यइ एखनकार साहित्य देशेर लोकसाधारणके शिक्षा ओ आनन्द दिते पारे ना।

उत्तम कथा। किन्तु देशेर ये-सब लोक इंरेजि शेखे नाइ ताहादेर तुलनाय आमादेर संख्या तो नगण्य। केह ताहादेर तो कलम काड़िया लय नाइ। आमरा केवल आमादेर अवास्तवतार जोरे देशेर समस्त वास्तविकदेर चेये जितिया याइबे, इहा स्वभावेर नियम नहे।

हयतो उत्तरे शुनिब, आमरा हारितेछि। इंरेजि याहारा शेखे नाइ ताहाराइ देशेर वास्तव साहित्य सृष्टि करितेछे, ताहाइ टिंकिबे एवं ताहातेइ लोकशिक्षा हइबे।

ताइ यदि हय तबे आर भावना किसेर। वास्तव साहित्येर बिपुल क्षेत्र ओ आयोजन देश जुड़िया रहियाछे, ताहार मध्ये छिटाफोंटा अवास्तव मुहूर्त-कालओ टिंकिते पारिबे ना।

किन्तु सेइ वृहत् वास्तव साहित्यके चोखे देखिले काजे लागित, एकटा आदर्श पाओया याइत। यतक्षण ताहार परिचय नाइ ततक्षण यदि गायेर जोरे ताहाके मानिया लइ तबे सेटा वास्तविक हइबे ना, काल्पनिक हइबे।

अथच एदिके इंरेजि-पोड़ोरा ये साहित्य सृष्टि करिल, रागिया ताहाके गालि दिलेओ से बाड़िया उठितेछे; निन्दा करिलेओ ताहाके अस्वीकार करिवार जो नाइ। इहाइ वास्तवेर प्रकृत लक्षण। एइ-ये कोनो कोनो मानुष खामखा रागिया इहाके उड़ाइया दिबार चेष्टा करितेछे ताहारओ कारण, ए स्वप्न नय, माया नय, ए वास्तव। देख नाइ कि, अ्यांलो-इण्डियान कागजरा कथाय कथाय

बलिया थाके, भारतवर्षेर मध्ये बाङालि जातटा गण्यइ नहे। ताहादेर कथार झाँज देखिलेइ बुझा याय, ताहारा बाङालिकेइ विशेषभावे गण्य करियाछे, कोनो-मतेइ भुलिते पारितेछे ना।

इंराजि शिक्षा सोनार काठिर मतो आमादेर जीवनके स्पर्श करियाछे, से आमादेर भितरकार वास्तवकेइ जागाइल। एइ वास्तवके ये लोक भय करे, ये लोक बांधा नियमेर शिकलटाकेइ श्रेय बलिया जाने, ताहारा इंरेजइ हउक आर बाङालिइ हउक, एइ शिक्षाके भ्रम एवं एइ जागरणके अवास्तव बलिया उड़ाइया दिबार भान करिते थाके। ताहादेर बाँधा तर्क एइ ये, एक देशेर आघात आर-एक देशके सचेतन करे ना। किन्तु दूर देशेर दक्षिणे हाओयाय देशान्तरे साहित्यकुञ्जे फुलेर उत्सव जागाइयाछे, इतिहासे ताहार प्रमाण आछे। येखान हइते येमन करियाइ हउक, जीवनेर आघाते जीवन जागिया उठे, मानवचित्ततत्त्वे इहा एकटि चिरकालेर वास्तव व्यापार।

किन्तु लोकशिक्षार की हइबे।

से कथार जबाबदिहि साहित्येर नहे।

लोक यदि साहित्य हइते शिक्षा पाइते चेष्टा करे तबे पाइतेओ पारे किन्तु साहित्य लोकके शिक्षा दिबार जन्य कोनो चिन्ताइ करे ना। कोनो देशेइ साहित्य इस्कुल-मास्टारिर भार लय नाइ। रामायण महाभारत देशेर सकल लोके पड़े, ताहार कारण ए नय ये ताहा कृषाणेर भाषाय लेखा बा ताहाते दुःखी-काङालेर घरकन्नार कथा वर्णित। ताहाते बड़ो बड़ो राजा, बड़ो बड़ो राक्षस, बड़ो बड़ो वीर एवं बड़ो बड़ो बानरेर बड़ो बड़ो लेजेर कथाइ आछे। आगागोड़ा समस्तइ असाधारण। साधारण लोक आपनार गरजे एइ साहित्यके पड़िते शिखियाछे।

साधारण लोक मेघदूत कुमारसम्भव शकुन्तला पड़े ना। खुब सम्भव दिङ्नागाचार्य एइ क'टा बइयेर मध्ये वास्तवेर अभाव देखियाछिलेन। मेघदूतेर तो कथाइ नाइ। कालिदास स्वयं एइ वास्तववादीदेर भये एक जायगाय नितान्त अकविजनोचित कैफियत दिते बाध्य हइयाछिलेन--कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।

आमि अकविजनोचित एइजन्य बलितेछि ये, कविमात्रइ चेतन अचेतनेर मिल घटाइया थाकेन, केनना ताँहारा विश्वेर मित्र, ताँहारा न्यायेर अध्यापक नहेन; शकुन्तलार चतुर्थ अङ्क पड़िलेइ सेटा बुझिते बाकि थाकिबे ना।

किन्तु आमि बलितेछि, यदि कालिदासेर काव्य भालो हय तबे समस्त मानुषेर जन्यइ ताहा सकल कालेर भाण्डारे सञ्चित रहिल—आजकेर साधारण मानुष

बुझिल ना कालकेर साधारण मानुष हयतो ताहा बुझिबे, अन्तत सेइरूप आशा करि। किन्तु कालिदास यदि कवि ना हइया लोकहितैषी हइतेन तबे सेइ पञ्चम शताब्दीर उज्जयिनीर कृषाणदेर जन्य हयतो प्राथमिक शिक्षार उपयोगी कयेकखाना बइ लिखितेन—ताहा हइले तार पर हइते एतगुला शताब्दीर की दशा हइत।

तुमि कि मने कर लोकहितैषी तखन केह छिल ना। लोकसाधारणेर नैतिक ओ जाठरिक उन्नति की करिया हइते पारे से कथा भाविया केह कि तखन कोनो बइ लेखे नाइ। किन्तु से कि साहित्य। क्लासेर पड़ा शेष हइलेइ वत्सर-अन्तर इस्कुलेर बइयेर ये दशा हय ताहादेरओ सेइ दशा हइयाछे, अर्थात् स्वेद-कम्प-रोमाञ्चेर भितर दिया एकेबारेइ दशम दशा।

याहा भालो ताहाके पाइबार जन्य साधना करितेइ हइबे—राजार छेलेकेओ करिते हइबे, कृषाणेर छेलेकेओ। राजार छेलेर सुविधा एइ ये, ताहार साधना करिबार समय आछे, कृषाणेर छेलेर नाइ। किन्तु सेटा सामाजिक व्यवस्थार तर्क—यदि प्रतिकार करिते पारो, करिया दाओ, काहारओ आपत्ति हइबे ना। तान्‌सेन ताइ बलिया मेठो सुर तैरि करिते बसिबेन ना। ताँहार सृष्टि आनन्देर सृष्टि, से याहा ताहाइ; आर-कोनो मतलबे से आर-किछु हइते पारेइ ना। याहारा रसपिपासु ताहारा यत्न करिया शिक्षा करिया सेइ ध्रुवपदगुलिर निगूढ़ मधुकोषेर मध्ये प्रवेश करिबे। अवश्य लोकसाधारण यतक्षण सेइ मधुकोषेर पथ ना जानिबे ततक्षण तानसेनेर गान ताहादेर काछे सम्पूर्ण अवास्तव, ए कथा मानितेइ हइबे। ताइ बलितेछिलाम, कोथाय कोन् वस्तुर खोंज करिते हइबे, केमन करिया खोंज करिते हइबे, के ताहार खोंज पाइबार अधिकारी, सेटा तो निजेर खेयालमत एक कथाय प्रमाण वा अप्रमाण करा याय ना।

तबे कविदेर अवलम्बनटा की। एकटा-किछुर परे जोर करिया ताँहारा तो भर दियाछेन। निश्चयइ सेटा अन्तरेर अनुभूति एवं आत्मप्रसाद। कवि यदि एकटि वेदनामय चैतन्य लइया जन्मिया थाकेन, यदि तिनि निजेर प्रकृति दियाइ विश्वप्रकृति ओ मानवप्रकृतिर सहित आत्मीयता करिया थाकेन, यदि शिक्षा अभ्यास प्रथा शास्त्र प्रभृति जड़ आवरणेर भितर दिया केवलमात्र देशेर नियमे तिनि विश्वेर सङ्गे व्यवहार ना करेन, तबे तिनि निखिलेर संस्रवे याहा अनुभव करिबेन ताहार एकान्त वास्तवता सम्बन्धे ताँहार मने कोनो सन्देह थाकिबे ना। विश्ववस्तु ओ विश्वरसके एकेबारे अव्यवहित भावे तिनि निजेर जीवने उपलब्धि करियाछेन, एइखानेइ ताँहार जोर। पूर्वेइ बलियाछि, बाहिरेर हाटे वस्तुर दर केवलइ उठा-नामा करितेछे—सेखाने नाना मुनिर नाना मत, नाना लोकेर नाना

फर्माशि, नाना कालेर नाना फ्याशान। वास्तवेर सेइ हटगोलेर मध्ये पड़िले कविर काव्य हाटेर काव्य हइबे। ताँहार अन्तरेर मध्ये ये ध्रुव आदर्श आछे ताहारइ परे निर्भर करा छाड़ा अन्य उपाय नाइ। से आदर्श हिन्दुर आदर्श वा इंरेजेर आदर्श नय, ताहा लोकहितेर एवं स्कुलमास्टारिर आदर्श नहे। ताहा आनन्दमय, सुतरां अनिर्वचनीय। कवि जानेन, येटा ताँहार काछे एतइ सत्य सेटा काहारओ काछे मिथ्या नहे। यदि काहारओ काछे ताहा मिथ्या हय तवे सेइ मिथ्याटाइ मिथ्या—ये लोक चोख बुजिया आछे ताहार काछे आलोक येमन मिथ्या एओ तेमनि मिथ्या। काव्येर वास्तवता सम्बन्धे कविर निजेर मध्ये ये प्रमाण, तिनि जानेन, विश्वेर मध्येइ सेइ प्रमाण आछे। सेइ प्रमाणेर अनुभूति सकलेर नाइ—सुतरां चिरकालेर आसने ये-खुशि बसिया येमन-खुशि राय दिते पारेन, किन्तु डिक्रिजारिर बेलाय ये ताहा खाटिबेइ एमन कोनो कथा नाइ।

कविर आत्मानुभूतिर ये उपादानटार कथा बलिलाम एटा सकल कविर सकल समयेइ ये बिशुद्ध थाके ताहा नहे। ताहा नाना कारणे कखनओ आवृत हय, कखनओ विकृत हय, नगद मल्येर प्रलोभने कखनओ ताहार उपर बाजारे-चलित आदर्शेर नकले कृत्रिम नकशा काटा हय—एइजन्य ताहार सकल अंश नित्य नहे एवं सकल अंशेर समान आदर हइतेइ पारे ना। अतएव कवि रागइ करुन आर खुशिइ हउन, ताँहार काव्येर एकटा विचार करितेइ हइबे—एवं ये-केह ताँहार काव्य पड़िबे सकलेइ ताँहार विचार करिबे—से विचारे सकले एकमत हइबे ना। मोटेर उपरे यदि निजेर मने तिनि यथार्थ आत्मप्रसाद पाइया थाकेन तबे ताँहार प्राप्यटि हाते-हाते चुकाइया लइयाछेन। अवश्य, पाओनार चेये उपरि-पाओनाय मानुषेर लोभ बेशि। सेइजन्यइ बाहिरे आशे-पाशे आड़ाले-आवडाले एत करिया हात पातिते हय। ऐखानेइ विपद। केनना लोभे पाप, पापे मृत्यु।

१३२१ श्रावण।

[जुलाई-अगस्त १९१४ (श्रावण १३२१) के 'सबुज पत्र' में प्रकाशित। उन दिनों बंगला पत्रिकाओं में यथार्थवाद पर चर्चा छिड़ी हुई थी। चर्चा के केन्द्र थे रवीन्द्रनाथ। यह लेख उन्होंने अपनी पक्ष पुष्टि में लिखा था।]

सभापतिर अभिभाषण

साहित्य साधनार भिन्न भिन्न मार्ग आछे। एकटि हच्छे कर्मकाण्ड। सभा-समितिर सभापतित्व करे दरबार जमानो, ग्रन्थावली सम्पादन करा, संवादपत्र परिचालना करा, एगुलि हल कर्मकाण्डेर अन्तर्गत। एइ मार्गेर याँरा पथिक ताँरा जानेन केमन करे स्वच्छन्दे साहित्यसंसारेर काज चालाते हय। तार परेर मार्ग हच्छे ज्ञानकाण्ड, येमन इतिहास, पुरातत्त्व, दर्शन प्रभृतिर आलोचना। एर द्वाराओ साहित्यिक सभा जमिये तुले कीर्तिख्याति हाततालि लाभ करा याय।

आमि शिशुकाल थेकेइ एइ उभय मार्ग थेके भ्रष्ट। एखन बाकि रइल आर-एक मार्ग, सेटि हच्छे रसमार्ग। एइ मार्ग अवलम्बन करे रससाहित्येर आलोचना, आमि पारि बा ना पारि, करे ये एसेछि से कथा आर गोपन रइल ना। बहुकाल पूर्वे निर्जने विरलपथे एइ रसाभिसारे बार हयेछिलुम, दूरे वंशीध्वनि शुनते पेये। किन्तु, एइ अभिसारपथ ये निकटेर लोकनिन्दा ओ लाञ्छनार द्वारा दुर्गम ता याँरा रसचर्चा करेछेन ताँराइ जानेन।

घरेर सीमा हते, प्रयोजनेर शासन थेके, अनेक दूरे बेर करे निये याय ये तान सेइ तान काने एसे पौंचेछिल, ताइ निकटेर बाधा सत्त्वेओ बाहिर हते हयेछिल। ताइ आज एत वयस पर्यन्त वंशीध्वनि ओ गञ्जना दुइ-इ शुने एसेछि। ये पथे चलेछिलाम ता हाट-घाटेर पथ नय। ताइ आमि नियमेर राज्येर व्यवस्था भालो बुझि ने। रसमार्गेर पथिकके पदे पदे नियम लङ्घन करे चलते हय, सेइ कु-अभ्यासटि आमार अस्थिमज्जागत। ताइ नियमेर क्षेत्रे आमाके टेने आनले आमि कर्मेर सौष्ठव रक्षा करते पारि ने।

तबे केन सभापतिर पद ग्रहण करते राजि हओया। एर प्रथम कारण हच्छे ये, यिनि आमाके एइ पदे आह्वान करेन तिनि आमार सम्मानार्ह, ताँर निमन्त्रण आमि प्रत्याख्यान करते पारि नि।

द्वितीय कारण हच्छे ये, बांलार बाइरे बाङालिर आह्वान यखन आमार काछे पौंछल, तखन आमि से आमन्त्रण नाड़ीर टाने अस्वीकार करते पारि नि। एइ डाक शुने आमार मन की बलेछिल, आजकार अभिभाषणे सेइ कथाटाइ सविस्तारे जानाब।

आज येमन बसन्त-उत्सवेर दिने दक्षिणसमीरणेर अभ्यर्थनाय विश्वप्रकृति पुलकित हये उठेछे, धरणीर वक्षे नवकिशलयेर उत्स उत्सारित हयेछे, आजकार साहित्यसम्मिलनेर उत्सवे तेमनि एकटि बसन्तेरइ डाक आछे। एक डाक आजकेर डाक नय।

कत काल हल एकदा एकटि प्राणसमीरणेर हिल्लोल बङ्गदेशेरचित्तेर उपर दिये बये गेल, आर देखते देखते साहित्येर मुद्रित दलगुलि बाधाबन्ध विदीर्ण करे विकशित हये उठल। बाधाओ छिल विस्तर। इंराजि साहित्येर रसमत्तताय नूतन माताल इंराजिशिक्षित छात्रेरा सेदिन बङ्गभाषाके अवज्ञा करेछिल। आबार संस्कृतसाहित्येर ऐश्वर्यगर्वे गर्वित संस्कृत पण्डितेराओ मातृभाषाके अवहेला करते त्रुटि करेन नि। किन्तु, बहुकालेर उपेक्षित भिखारि मेये येमन बाहिरेर समस्त अकिञ्चनता सत्त्वेओ हठात् एकदिन निजेर अन्तर हते उन्मेषित यौवनेर परिपूर्णताय अपरूप गौरवे विश्वेर सौन्दर्यलोके आपन आसन अधिकार करे, अनाहत बांला-भाषा तेमनि करे एकदिन सहसा कोन भावावेगेर औत्सुक्ये आपन बहुदिनेर दीनतार कूल छापिये दिये महिमान्वित हये उठल। तार सेदिनकार सेइ दैन्यविजयी भावयौवनेर स्वरूपटिकेइ आजकार निमन्त्रणपत्र आमार स्मृतिमन्दिरे वहन करे एनेछे।

मानुषेर परिचय तखनइ सम्पूर्ण हय यखन से यथार्थभावे आपनाके प्रकाश करते पारे। किन्तु प्रकाश तो एकान्त निजेर मध्ये हते पारे ना। प्रकाश हच्छे निजेर सङ्गे अन्य-सकलेर सत्य सम्बन्धे। ऐक्य एकेर मध्ये नय, अनेकेर मध्ये सम्बन्धेर ऐक्यइ ऐक्य। सेइ ऐक्येर व्याप्ति ओ सत्यता नियेइ की व्यक्ति-विशेषेर की समूहविशेषेर यथार्थ परिचय। एइ ऐक्यके व्यापक क'रे, गभीर क'रे पेलेइ आमादेर सार्थकता।

भूविवरणेर अर्थगत ये बांला तार मध्ये कोनो गभीर ऐक्यके पाइ ना, केनना बांलादेश केवल मृण्मय पदार्थ नय, ता चिन्मयओ बटे। ता ये केवल विश्व-प्रकृतिते आछे ता नय, तार चेये सत्यरूपे आमादेर चित्-लोके आछे। मने राखते हबे ये, अनेक पशुपक्षीओ बांलार माटिते जन्मेछे। अथच रयेल बेङ्गल टाइगरेर हृदयेर मध्ये बाङालिर सङ्गे एकात्मिकतार बोध आत्मीयतार रसयुक्त नय ब'लेइ बाङालिके भक्षण करते तार येमन आनन्द तेमन आर किछुते नय। कोनो साधारण भूखण्डे जन्मलाभ-नामक व्यापारेर मध्य दियेइ कोनो मानुषेर यथार्थ परिचय पाओया याय ना।

तार पर, मानुष जातिगत ऐक्येर मध्य दियेओ आपन परिचयके व्यक्त करते चेये छे। ये-सब मानुष स्वनियन्त्रित राष्ट्रीय विधिविधानेर योगे एमन एकटि

राजतन्त्र रचना करे यार द्वारा परराज्येर सङ्गे स्वराज्येर स्वातन्त्र्य रक्षा करते पारे, एवं सेइ स्वराज्यसीमार शासन ओ परस्पर सहकारितार द्वारा निजेदेर सर्वजनीन स्वार्थके नियमे विधृत ओ विस्तीर्ण करते पारे, ताराइ हल एक नेशन। तादेर मध्ये अन्य यतरकम भेद थाक् ताते किछुइ आसे याय ना। बाङालिके नेशन बला याय ना, केनना बाङालि एखनो आपन राष्ट्रीय भाग्यविधाता हये ओठे नि। अपर दिके सामाजिक धर्म-सम्प्रदाय-गत ऐक्येर मध्येओ विशेष देशेर अधिवासी आत्मपरिचय दिते पारे; येमन, बलते पारे, आमरा हिन्दु, बा मुसलमान। किन्तु बला बाहुल्य, ए सम्बन्धेओ बांलाय अनैक्य रयेछे। तेमनि वर्णभेद हिसाबे ये जाति, सेखानेओ बांलाय भेदेर अन्त नेइ। तार परे विज्ञान-वाद—अनुसारे वंशगत ये जाति, तार निर्णय करते गिये वैज्ञानिकेरा मानुषेर वर्ण, नाकेर उच्चता, माथार बेड़ प्रभृति नाना वैचित्र्येर मापजोख करे सूक्ष्मानुसूक्ष्म विचार निये माथा घामियेछेन। से हिसाबे आमरा बाङालिरा ये कोन् वंशे जन्मेछि, पण्डितेर मत निये ता भावते गेले दिशेहारा हये येते हबे।

जन्मलाभेर द्वारा आमरा एकटा प्रकाशलाभ करि। एइ प्रकाशेर पूर्णता जीवनेर पूर्णता। रोगताप दुर्बलता अनशन प्रभृति बाधा काटिये यतइ सम्पूर्ण-रूपे जीवधर्म पालन करते पारि ततइ आमार जैव व्यक्तित्वेर विकाश। आमार एइ जैव प्रकाशेर आधार हच्छे विश्वप्रकृति।

किन्तु, जलस्थल-आकाश-आलोकेर सम्बन्धसूत्रे विश्वलोके आमादेर ये प्रकाश सेइ तो आमादेर एकमात्र प्रकाश नय। आमरा मानुषेर चित्तलोकेओ जन्मग्रहण करेछि। सेइ सर्वजनीन चित्तलोकेर सङ्गे सम्बन्धयोगे व्यक्तिगत चित्तेर पूर्णता द्वारा आमादेर चिन्मय प्रकाश पूर्ण हय। एइ चिन्मय प्रकाशेर वाहन हच्छे भाषा। भाषा ना थाकले परस्परेर सङ्गे मानुषेर अन्तरेर सम्बन्ध अत्यन्त सङ्कीर्ण हत।

ताइ बलछि, बाङालि बांलादेशे जन्मेछे बलेइ ये बाङालि ता नय। बांला-भाषार भितर दिये मानुषेर चित्तलोके यातायातेर विशेष अधिकार पेयेछे बलेइ से बाङालि। भाषा आत्मीयतार आधार, ता मानुषेर जैव-प्रकृतिर चेये अन्तर-तर। आजकार दिने मातृभाषार गौरवबोध बाङालिर पक्षे अत्यन्त आनन्देर विषय हयेछे; कारण भाषार मध्ये दिये तादेर परस्परेर परिचयसाधन हते पेरेछे एवं अपरकेओ तारा आपनार यथार्थ परिचय दान करते पारछे।

मानुषेर प्रकाशेर दुइ पिठ आछे। एक पिठे तार स्वानुभूति; आर-एक पिठे अन्य सकलेर काछे आपनाके जानानो। से यदि अगोचर हय तबे से नितान्त अकिञ्चित्कर हये याय। यदि निजेर काछेइ तार प्रकाश क्षीण हल तबे से

अन्येर काछेओ निजेके गोचर करते पारल ना। येखाने तार अगोचरता सेखानेइ से क्षुद्र हये रइल। आर येखाने से आपनाके प्रकाश करते पारल सेखानेइ तार महत्व परिस्फुट हल।

एइ परिचयेर सफलता लाभ करते हले भाषा सबल ओ सतेज हओया चाइ। भाषा यदि अस्वच्छ हय, दरिद्र हय, जड़ताग्रस्त हय, ता हले मनोविश्वे मानुषेर ये प्रकाश ता असम्पूर्ण हय। बांलाभाषा एक समये गेंयो रकमेर छिल। तार सहयोगे तत्त्वकथा ओ गभीर भाव प्रकाश करबार अनेक बाधा छिल। ताइ बाङालिके सेदिन सकले ग्राम्य बले जेनेछिल। ताइ याँरा संस्कृतभाषार चर्चा करेछिलेन एवं संस्कृतशास्त्रेर मध्य दिये विश्वसत्येर सङ्ग परिचित हयेछिलेन ताँरा बङ्गभाषाय एकान्त-आबद्ध चित्तेर सम्मान करते पारेन नि। बांलार-पाँचालि साहित्य ओ पयारेर कथा ताँदेर काछे नगण्य छिल। अनादरेर फल की हय। अनाहत मानुष निजेके अनादरणीय बले विश्वास करे; मने करे; स्वभावतइ से ज्योतिर्हीन। किन्तु, ए कथाटा तो गभीर भावे सत्य नय; आत्म-प्रकाशेर अभावेइ तार आत्मविस्मृति। यखन से आपनाके प्रकाश करबार उपयुक्त उपलक्ष्य पाय तखन से आर आपनार काछे आपनि प्रच्छन्न थाके ना। उपयुक्त आधारटि ना पेले प्रदीप आपनार शिखा सम्बन्धे आपनि अन्ध थाके। अतएव, येहेतु मानुषेर आत्मप्रकाशेर प्रधान वाहन हच्छे तार भाषा ताइ तार सकलेर चेये बड़ो काज—भाषार दैन्य दूर करे आपनार यथार्थ परिचय लाभ करा एवं सेइ पूर्ण परिचयटि विश्वेर समक्षे उद्घाटित करा। आमार मने पड़े, आमादेर बाल्यकाले बालांदेशे एकदिन भावेर तापस बङ्किमचन्द्र कोन् एक उद्बोधनमन्त्र उच्चारण करेछिलेन, ताते हठात् येन बहु दिनेर कृष्णपक्ष तार कालो पृष्ठा उल्टिये दिये शुक्लपक्षरूपे आविर्भूत हल। तखन ये सम्पद आमादेर काछे उद्घाटित हयेछिल शुधु तार जन्येइ ये आमादेर आनन्द छिल ता नय। किन्तु, हठात् सम्मुखे देखा गेल, एकटि अपरिसीम आशार क्षेत्र विस्तारित। की ये हबे, कत ये पाब, भावीकाल ये कोन् अभावनीयके वहन करे आनबे, सेइ औत्सुक्ये मन भरे उठल।

एइ-ये मने अनुभूति जागे ये सौभाग्येर बुझि कोथाओ शेष नेइ, एइ-ये हृत्स्पन्दनेर मध्ये आगन्तुक असीमेर पदशब्द शुनते पाओया याय, एतेइ सृष्टिकार्य अग्रसर हय। सकल विभागेइ एइ व्यापारटि घटे थाके। राष्ट्रीय क्षेत्रे एकदिन बाङालिर एवं भारतवासीर आशा सङ्कीर्ण सीमाय बद्ध छिल। ताइ कंग्रेस मने करेछिल ये, यतटुकु इंराज हाते तुले देबे सेइ प्रसादटुकु लाभ करेइ बड़ो हओया याबे। किन्तु, एइ सीमाबद्ध आशा येदिन घुचे गेल सेदिन मने हल ये, आमार

आपनार मध्ये ये शक्ति आछे तार द्वाराइ देशेर सकल सम्पद्‌के आवाहन करे जानते पारब। एइरूप असीम आशार द्वाराइ असाध्यसाधन हय। आशाके निगड़बद्ध करले कोनो बड़ो काज हय ना। बाङालि कोथाय एइ असीमतार परिचय पेयेछे। सेखानेइ येखाने निजेर जगत्‌के निजे सृष्टि करे तार मध्ये विराज करते पेरेछे। मानुष निजेर जगते विहार करते ना पारले, परान्नभोजी परावसथशायी हले, तार आर दुःखेर अन्त थाके ना। ताइ तो कथा आछे; स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। आमार या धर्म ताइ आमार सृष्टिर मूलशक्ति, आमिइ स्वयं आमार आश्रयस्थल तैरि करे तार मध्ये विराज करब। प्रत्येक जातिर स्वकीय सृष्टि तार स्वकीय प्रकृति-अनुसारे विचित्र आकार धारण करे थाके। से राष्ट्र समाज साहित्य शिल्पकला प्रभृति नाना क्षेत्रे आपन जगत्‌के विशेषभावे रचना क'रे ताते सञ्चरण करार अधिकार लाभ करे थाके। बाङालिजाति तार आनन्दमय सत्ताके प्रकाश करबार एकमात्र क्षेत्र लाभ करेछे बांलाभाषार मध्ये। सेइ भाषाते एकदा एमन एक शक्तिर सञ्चार हयेछिल याते करे से नाना रचनारूपेर मध्ये येन असम्वृत हये उठेछिल; बीज येमन आपन प्राणशक्तिर उद्वेलताय निजेर आवरण विदीर्ण करे अंकुरके उद्‌भिन्न करे तेमनि आर-कि। यदि तार एइ शक्ति नितान्त क्षीण हत तबे तार साहित्य भालो करे आत्मसमर्थन करते पारत ना। विदेश थेके वन्यार स्रोतेर मतो आगत भावधारा ताके धुये मुछे दित।

एमन विलुप्तिर परिचय आमरा अन्यत्र पेयेछि। भारतवर्षेर अन्य अनेक जायगाय इंराजि चर्चा खुब प्रबल। सेखाने इंराजिभाषाय स्वजातीयेर मध्ये, परमात्मीयेर मध्ये पत्रव्यवहार हये थाके। एमन दैन्यदशा ये, पितापुत्रेर परस्परेर मध्ये शुधु भावेर नय सामान्य संवादेर आदानप्रदानओ विदेशी भाषार सहायताय घटे। राष्ट्रीय अधिकार लाभेर आग्रह प्रकाश करे ये मुखे बले वन्देमातरम् सेइ मुखे मातृदत्त परम अधिकार ये मातृभाषा तार असम्मान करते मने कोनो आक्षेप बोध करे ना।

बांलादेशेओ ये एइ आत्मावमाननार लक्षण एकेबारे नेइ ता बलते पारि ना। तबे किना ओ सम्बन्धे बाङालिर मने एकटा लज्जार बोध जन्मेछे। आजकेर दिने बाङालिर डाकघरेर रास्ताय बांला चिठिरइ भिड़ सब चेये बेशि।

वास्तविक मातृभाषार प्रति यदि सम्मान बोध जन्मे थाके तबे स्वदेशीके आत्मीयके इंराजि लेखार मतो कुकीर्ति केउ करते पारे ना।

एक समये बांलादेशे एमन हयेछिल ये, इंराजि काव्य लिखते लोकेर आग्रहेर सीमा छिल ना। तखन इंराजि रचना, इंराजि वक्तृता, असामान्य गौरवेर

विषय छिल। आजकाल आबार बांलादेशे तारइ पाल्टा व्यापार घटछे। एखन केउ केउ आक्षेप करे थाकेन ये, माद्राजिरा बाङालिदेर चेये भालो इंराजि बलते पारे। एइ अपवाद येन आमरा माथार मुकुट करे परि।

आजके प्रवासेर एइ बङ्गसाहित्यसम्मिलनी हठात् आत्मप्रकाशेर जन्य उत्सुक हयेछे, एइ आग्रहेर कारण हच्छे, बाङालि आपन प्राण दिये एकटि प्राणवान् साहित्यके गड़े तुलेछे। येखाने बांलार शुधु भौगोलिक अधिकार येखाने से मानचित्रेर सीमापरिधिके छाड़ाते पारे ना। सेखाने तार देश विधातार सृष्ट देश; सम्पूर्ण तार स्वदेश नय। किन्तु, भाषा-वसुन्धराके आश्रय करे ये मानसदेशे तार चित्त विराज करे से देश तार भू-सीमानार द्वारा बाधाग्रस्त नय, सेइ देश तार स्व-जातिर सृष्ट देश। आज बाङालि सेइ देशटिके नदी प्रान्तर पर्वत अतिक्रम करे सुदूरप्रसारितरूपे देखते पाच्छे, ताइ बांलार सीमार मध्य थेके बांलार सीमार बाहिर पर्यन्त तार आनन्द विस्तीर्ण हच्छे। खण्ड देशकालेर बाहिरे से आपन चित्तेर अधिकार के उपलब्धि करछे।

इतिहास पड़ले जाना याय ये, इंलण्डे ओ स्कट्लण्डे एक समये विरोधेर अन्त छिल ना। एइ द्वन्द्वेर समाधान केमन करे हयेछिल। शुधु कोनो एकजन स्कट्ल्याण्डेर राजपुत्रके सिंहासने बसिये ता हय नि। आसले यखन च्यसार प्रभृति कविदेर समये इंराजि भाषा साहित्यसम्पद्शाली हये उठल तखन तार प्रभाव विस्तृत हये स्कट्लण्डके आकृष्ट करेछिल। से भाषा आपन ऐश्वर्येर शक्तिते स्कट्ल्याण्डेर वरमाल्य अधिकार करे नियेछिल। एमनि करेइ दुइ विरोधी जाति भाषार क्षेत्रे एकत्र मिलित हल, ज्ञानेर भावेर एकइ पथे सहयात्री हये आत्मीयतार बन्धनके अन्तरे स्वीकार कराय तादेर बाहिरेर भेद दूर हल। दूर-प्रदेशवासी बाङालि ये बांलाभाषाके आँकड़े थाकते चाच्छे, प्रवासेर भाषाके ये स्वीकार करे निते इच्छे करछे ना, तारओ कारण एइ ये, साहित्यसम्पद्शाली बांलाभाषार शक्ति तार मनके जिते नियेछे। एइजन्येइ, से यत दूरेइ थाक्, आपन भाषार गौरवबोधेर सूत्रे बांलार बाङालिर सङ्गे तार योग सुगभीर हये रयेछे। एइ योगके छेदन करते तार व्यथा बोध हय, एके उपलब्धि करते तार आनन्द।

बाल्यकाले एमन आलोचनाओ आमि शुनेछि ये, बाङालि ये बङ्गभाषार चर्चाय मन दियेछे एते करे भारतीय ऐक्येर अन्तराय सृष्टि हच्छे। कारण, भाषार शक्ति बाड़ते थाकले तार दृढ़ बन्धनके शिथिल करा कठिन हय। तखन-कार दिने बङ्गसाहित्य यदि उत्कर्ष लाभ ना करत तबे आजके तार प्रति ममता छेड़े दिये आमरा निर्विकार चित्ते कोनो एकटि साधारण भाषा ग्रहण करे बसताम। किन्तु, भाषा जिनिसेर जीवनधर्म आछे। ताके छाँचे ढेले, कले फेले, फर्माशे

गड़ा याय ना। तार नियमके स्वीकार करे निये तबेइ तार काछ थेके सम्पूर्ण फल पाओया याय। तार विरुद्धगामी हले से बन्ध्या हय। एकदिन महा-फ्रेडरिकेर समय फ्रान्सेर भाषार प्रति जर्मानिर लोलुपता देखा गियेछिल, किन्तु से टिंकल ना। केनना, फ्रान्सेर प्रकृति थेके फ्रान्सेर भाषाके विच्छिन्न करे निये ताते प्राणेर काज चालानो याय ना। सिंहेर चामड़ा निये आसन बा गृहसज्जा करते पारि, किन्तु सिंहेर सङ्गे चामड़ा बदल करते पारि ना।

आमादेर स्वीकार करतेइ हबे ये, आमरा येमन मातृक्रोड़े जन्मेछि तेमनि मातृभाषार क्रोड़े आमादेर जन्म, एइ उभय जननीइ आमादेर पक्षे सजीव ओ अपरिहार्य।

मातृभाषाय आमादेर आपन व्यवहारेर अतीत आर-एकटि बड़ो सार्थकता आछे। आमार भाषा यखन आमार निजेर मनोभावेर प्रकृष्ट वाहन हय तखनइ अन्य भाषार मर्मगत भावेर सङ्गे आमार सहज ओ सत्य सम्बन्ध स्थापित हते पारे। आमि यदिच बाल्यकाले इस्कुल पालियेछि, किन्तु बुड़ो वयसे सेइ इस्कुल आबार आमाके फिरिये एनेछे। आमि ताइ छेले पड़िये किछु अभिज्ञता लाभ करेछि। आमार विद्यालये नाना श्रेणीर छात्र एसेछे, तार मध्ये इंरेजि-सेखा बाङालि छेलेओ कखनओ कखनओ आमरा पेयछि—आमि देखेछि तादेरइ इंरेजि शेखानो सब चेये कठिन व्यापार। ये बाङालिर छेले बांला जाने ना ताके इंरेजि सेखाइ की अवलम्बन करे। भिक्षुकेर सङ्गे दातार ये सम्वन्ध ता परस्परेर आन्तरिक मिलनेर सम्बन्ध नय। भाषा शिक्षाय सेइटे यदि घटे, अर्थात् एक दिके शून्य झुलि आर-एक दिके दानेर अन्न, ता हले ताते करे ग्रहीताके एकेवारे गोड़ा थेके शुरु करते हय। किन्तु, एइ भिक्षावृत्तिर उपर प्रतिष्ठित उपजीविकाते कखनओ कल्याण हय ना। निजेर भाषा थेके दाम दिये दिये तार प्रतिदाने अन्य भाषाके आयत्त कराइ सहज।

सुतरां प्रत्येक देश यखन तार स्वकीय भाषाते पूर्णता लाभ करबे तखनइ अन्य देशेर भाषार सङ्गे तार सत्यसम्बन्ध प्रतिष्ठित हते पारबे। भाषार एइ सहयोगिताय प्रत्येक जातिर साहित्य उज्ज्वलतर हये प्रकाशमान हबार सुयोग पाय। ये नदी आमार ग्रामेर काछ दिये वहमान ताते येमन ग्रामेर एपारे ओपारे खेया-पारापार चले, तेमनि आबार ताते पण्यद्रव्य वहन करे विदेशेर सङ्गे कारबार हते पारे। केनना, सेइ वहमान नदीर सङ्गे अन्यान्य नाना नदीर सम्बन्ध सचल।

युरोपे एक समये लाटिन भाषा ज्ञानचर्चार एकमात्र साधारण भाषा छिल। यतदिन ता छिल ततदिन युरोपेर ऐक्य छिल वाह्यिक आर अगभीर। किन्तु,

आजकार दिने युरोप नाना विद्याधारार सम्मिलनेर द्वारा ये महत्त्व लाभ करेछे सेटि आज पर्यन्त अन्य कोनो महादेशे घटे नि। एइ भिन्न-भिन्न-देशीय विद्यार निरन्तर सचल सम्मिलन केवलमात्र युरोपेर नाना देशेर नाना भाषार योगेइ घटेछे, एक भाषार द्वारा कखनओ घटते पारत ना। आजकार दिने युरोपे राष्ट्रीय आसाम्येर अन्त नेइ, किन्तु तार विद्यार साम्य आजओ प्रबल। एइ ज्ञान-सम्मिलनेर उज्ज्वलताय दिक्‌विदिक अभिभूत हये गेछे। सेइ महादेशे देयालि-उत्सवेर ये विराट आयोजन हयेछे ता समाधा करते सेखानकार प्रत्येक देश तार दीपशिखाटि ज्वलिये एनेछे। येखाने यथार्थ मिलन सेइखानेइ यथार्थ शक्ति। आजकेर दिने युरोपेर यथार्थ शक्ति तार ज्ञानसमवाये।

आमादेर देशेओ सेइ कथाटि मने राखते हबे। भारतवर्षे आजकाल परस्परेर भावेर आदानप्रदानेर भाषा हयेछे इंराजि भाषा। अन्य एकटि भाषाकेओ भारतव्यापी मिलनेर वाहन करबार प्रस्ताव हयेछे। किन्तु, एते करे यथार्थ समन्वय हते पारे ना; हय तो एकाकारत्व हते पारे, किन्तु एकत्व हते पारे ना। कारण, एइ एकाकारत्व कृत्रिम ओ अगभीर, एशुधु बाइरे दड़ि दिये बाँधा मिलनेर प्रयास मात्र। येखाने हृदयेर विनिमय हय, सेखाने स्वातन्त्र्य वा वैशिष्ठ्य थाकलेइ तबे यथार्थ मिलन हते पारे। किन्तु, यदि बाह्य बन्धनपाशेर द्वारा मानुषके मिलित करते बाध्य करा हय, तबे तार परिणाम हय परम शत्रुता। कारण, से मिलन श्रृंखलेर मिलन अथवा श्रृंखलार मिलन मात्र।

राशिया तार अधिकृत छोटो छोटो देशेर भाषाके मेरे राशीय भाषार अधिकार-भक्त करबार चेष्टा करेछिल, बेलजियान फ्लेमिशदेर भाषा भोलाते पारले बाँचे। किन्तु, भाषार अधिकार ये भौगोलिक अधिकारेर चेये बड़ो, ताइ एखाने जबर्दस्ति खाटे ना। बेलजियाम फ्लेमिशदेर अनैक्य सइते पारे नि, ताइ राष्ट्रीय ऐक्य-बन्धने तादेर बाँधते चेयेछे। किन्तु से ऐक्य अगभीर बले ता स्थायी भित्तिर उपर दाँड़ाते पारे ना। साम्राज्यबन्धनेर दोहाइ दिये ये ऐक्यसाधनेर चेष्टा ता विषम विडम्बना। आज युरोपेर बड़ो बड़ो दासव्यवसायी नेशनरा आपन अधीन गगवर्गके एक जोयाले जुड़े दिये विषम कषाघात करे तार इम्पीरियालिज्‌मेर रथ चालिये दियेछे। रथेर वाहन ये घोड़ाकयटि, तादेर परस्परेर मध्ये कोनो आत्मीयता नेइ। किन्तु, सारथिर ताते आसे याय ना। तार मन रयेछे एगिये चलार दिके, ताइसे रथेर घोड़ाकटाके कबे बेंधे टेने-हिंचड़े प्राणपणे चावकाच्छे। नइले तार गतिवेग ये थेमे याय। एमन वाह्य साम्यके यारा चाय तारा भाषा-वैचित्र्येर उपर स्टीम-रोलार चालिये दिये आपन राजपथेर पथ समभूम करते चाय। किन्तु, पाँचटि विभिन्न फुलके कुटे दला पाकालेइ ताके शतदल वला

येते पारे ना। अरण्येर विभिन्न पत्रपुष्पेर मध्ये ये ऐक्य आछे ता हल बसन्तेर ऐक्य। कारण, बसन्तसमागमे फाल्गुनेर समीरणे तादेर सकलेरइ मञ्जरी मुकुलित हये ओठे। तादेर वैचित्र्येर अन्तराले ये बसन्तेर एकइ वाणीर चलाचलेर पथ सेखानेइ तारा एक ओ मिलित। राष्ट्रीय क्षेत्रे जबर्दस्त लोकेरा बले थाके ये, मानुषके बड़ोरकमेर बाँधने बेंधेछेंदे मेरे केटेकुटे प्रयोजन साधन करते हबे—एमन दड़ादड़ि दिये बाँधलेइ नाकि ऐक्य साधित हते पारे। अद्वैतेर मध्ये ये परममुक्त शिव रयेछेन ताँके तारा चाय ना। तारा बेंधेछेंदे द्वैतके बस्ताबन्दी करे ये अद्वैतेर भान ताकेइ मेने थाके। किन्तु, याँरा यथार्थ अद्वैतके अन्तरे लाभ करेछेन ताँरा तो ताँके बाइरे खोंजेन ना। बाइरेर ये एक ता हच्छे प्रलय, ताइ एकाकारत्व; आर अन्तरेर ये एक ता हल सृष्टि, ताइ ऐक्य। एकटा हल पञ्चत्व, आर एकटा हल पञ्चायेत।

आजकार एइ साहित्यसम्मिलनेर बांलादेशेर प्रतिवेशी अनेक बन्धुओ समागत हयेछेन। ताँरा यदि एइ सम्मिलने समागत हये निमन्त्रणेर गौरव लाभे मनेर मध्ये कोनो बाधाबोध ना करे थाकेन तबे ताते अनेक काज हयेछे। आमरा येन बाङालिर स्वाजात्य-अभिमानेर अतिमात्राय मिलनयज्ञे विघ्न ना बाधाइ। दक्ष तो आपन आभिजात्येर अभिमानेइ शिवके रागिये दियेछिलेन।

ये देशे हिन्दि भाषार प्रचलन से देशे प्रवासी बाङालि बांलाभाषार क्षेत्र तैरि केरेछे, एते बाङालिदेर एइ प्रतिष्ठानेर दायित्व अनेक बेड़े गेछे। एइ उत्तर-भारते काशीते ताँरा की पेलेन, देखलेन, आत्मीयदेर सहयोगिताय की लाभ करलेन, ता आमादेर जानाते हबे। आमरा दूरे यारा बास करि तारा एखानकार ए-सबेर सङ्गे परिचित नइ। उत्तरभारतेर लोकके आमरा मानचित्र वा गेजि-टियारेर सहयोगे देखेछि। बाङालि यखन भाषार मध्य दिये ताँदेर सङ्गे परिचय विस्तार करे सौहार्देर पथ मुक्त करबेन ताते कल्याण हबे। भालोबासार साधनार एकटा प्रधान सोपान हच्छे ज्ञानेर साधना।

परस्परेर परिचयेर अभावइ मानुषेर प्रभेदके बड़ो करे तोले। यखन अन्तरेर परिचय ना हय तखन बाइरेर अनैक्यइ चोखे पड़े, आर ताते पदे पदे अवज्ञार सञ्चार हये थाके। आज बांलाभाषाके अवलम्बन करे उत्तरभारतेर सङ्गे सेइ आन्तरिक परिचयेर प्रवाह बांलार अभिमुखे धावित होक। एखानकार साहित्यकेरा आधुनिक ओ प्राचीन उत्तरभारतीय साहित्येर ये श्रेष्ठ सम्पद, या सकलेर श्रद्धा उत्पादन करबार योग्य, ता संग्रह करे दूरे बांलादेशे पाठाबेन—एमनिभावे भाषार मध्य दिये बांलार सङ्गे उत्तरभारतेर परिचय घनिष्ठतर हबे।

आमि हिन्दि जानि ना, किन्तु आमादेर आश्रमेर एकटि बन्धुर काछ थेके प्रथमे आमि प्राचीन हिन्दि साहित्येर आश्चर्य रत्नसमूहेर किछु किछु परिचय लाभ करेछि। प्राचीन हिन्दि कविदेर एमन-सकल गान ताँर काछे शुनेछि या शुने मने हय सेगुलि ये आधुनिक युगेर। तार माने हच्छे, ये काव्य सत्य ता चिरकालइ आधुनिक। आमि बुझलुम, ये हिन्दि भाषार क्षेत्रे भावेर एमन सोनार फसल फलेछे से भाषा यदि किछुदिन अकृष्ट हये पड़े थाके तबु तार स्वाभाविक उर्वरता मरते पारे ना; सेखाने आबार चाषेर सुदिन आसबे एवं पौषमासे नवान्न-उत्सव घटबे। एमनि करे एक समये आमार बन्धुर साहाय्ये ए देशेर भाषा ओ साहित्येर सङ्गे आमार श्रद्धार योग स्थापित हयेछिल। उत्तर-पश्चिमेर सङ्गे सेइ श्रद्धार सम्बन्धटि येन आमादेर साधनार विषय हय। मा विद्विषावहै।

आज बसन्तसमागमे अरण्येर पाताय पाताय पुलकेर सञ्चार हयेछे। गाछेर या शुकनो पाता छिल ता झरे गेल। एमन दिने यारा हिसाबेर नीरस पाता उल्टाते व्यस्त आछे तारा एइ देशव्यापी बसन्त-उत्सवेर छन्दे योग दिते पारल ना। तारा पिछने पड़े रइल। देशे आज ये पोलिटिकाल उद्दीपनार सञ्चार हयेछे—तार यतइ मूल्य थाक् 'एह-बाह्य'। एर समस्त लाभ-लोकसानेर हिसाबेर चेये अनेक बड़ो कथा रये गेछे सेइ सुगभीर आत्मिक-प्रेरणार मध्ये यार प्रभावे स्वाभाविक प्राणगत क्रिया आछे ता अगोचरे काज करे बले व्यस्तवागीश लोकेरा तार चेये दाओयाइखानार जयेण्ट्स्टक् कोम्पानिके ढेर बड़ो बले मने करे—एमन-कि, तार जन्ये स्वास्थ्य विसर्जन करतेओ राजि हय। सम्मानेर जन्ये मानुष शिरोपा प्रार्थना करे, एवं तार प्रयोजनओ थाकते पारे, किन्तु शिरोपा द्वारा मानुषेर माथा बड़ो हय ना। आसल गौरवेर वार्ता मस्तिष्केइ आछे, शिरोपाय नेइ; प्राणेर सृष्टिघरे आछे, दोकानेर कारखानाघरे नेइ। बसन्त बांलार चित्त उपवने प्राणदेवतार दाक्षिण्य निये एसे पौंचेछे, एहल एकेवारे भितर-कार खबर, खबरेर कागजेर खबर नय—एर घोषणार भार कविदेर उपर। आमि आज सेइ कविर कर्तव्य करते एसेछि; आमि बलते एसेछि, अहल्यापाषाणीर उपर रामचन्द्रेर पदस्पर्श हयेछे—एइ दृश्य देखा गेछे बांलासाहित्ये, एइटेइ आमादेर सकलेर चेये बड़ो आशार कथा। आज बांला हते दूरेओ बाङालिदेर हृदय-क्षेत्रे सेइ आशा ओ पुलकेर सञ्चार होक। खुबे बेशि दिनेर कथा नय, बड़ो जोर षाट बछरेर मध्ये बांलासाहित्य कथाय छन्दे गाने भावे शक्तिशाली हये उठेछे। एइ शक्तिर एइखानेइ शेष नय। आमादेर मने आशा ओ विश्वासेर सञ्चार होक। आमरा एइ शक्तिके चिरजीविनी करि। येखानेइ मानव-

शक्ति भाषाय ओ साहित्ये प्रकाशमान हयेछे सेइखानेइ मानुष अमरता लाभ करेछे ओ सर्वमानवसभाय आपन आसन ओ वरमाल्य पेयेछे।

अल्पकयेकदिन पूर्वेइ मार्वुर्ग विश्वविद्यालय थेके सेखानकार अध्यापक डाक्तार अटो आमाके लिखेछेन ये, ताँरा शान्तिनिकेतने बांलासाहित्येर चर्चा करबार जन्य एकजन अध्यापकके पाठाते चान। तिनि एखान थेके शिक्षा-लाभ करे फिरे गेले सेइ विश्वविद्यालये बांलाभाषार 'चेयार' सृष्टि करा हबे। एइ इच्छा दश बछर आगे कोनो विदेशीर मने जागे नि।

आज बंगवाणीर उत्स खुले गेल। यारा तार धारार सन्धाने छुटे एल तादेर परिवेषणेर भार आमादेर उपर रयेछे। आमादेर आशा ओ साहस थाकले एइ व्यापारटि निश्चयइ घटते पारबे। आमरा सकले मिलित हये सेइ भावीकालेर जन्य उन्मुख हये थाकब। एइ अध्यवसाये बांला यदि विशेष गौरव अर्जन करे सेकि समग्र भारतवर्षेर सामग्री हबे ना। गाछेर ये शाखातेइ फुल फुटुक से कि सकल गाछेर नय। अरण्येर ये वनस्पतिटि फुले फले भरे उठल यदि तारइ उद्देशे मधुकरेरा छुटे आसे तबे समग्र अरण्य तादेर समादरे वरण करे लय। आज बांलार प्राङ्गणेइ यदि अतिथिदेर समागम हये थाके तबे ताते क्षति की। ताँरा ये भारतवर्षेरइ क्षेत्रे एसे मिलित हयेछेन, भारतवासीदेर ता मानते हबे। बङ्गसाहित्य आज परम श्रद्धाय सेइ मधुव्रतदेर आह्वान करुक।

१३३० ज्येष्ठ

[जून १९२३ (ज्यष्ठ १३३०) में शान्तिनिकेतन पत्रिका में प्रकाशित। ३ मार्च १९२३ को वाराणसी में सम्पन्न प्रवासी बंग साहित्य सम्मेलन में दिया गया भाषण।]

साहित्यविचार

साहित्येर विषयटि व्यक्तिगत; श्रेणीगत नय। एखाने 'व्यक्ति' शब्दटाते तार धातुमूलक अर्थेर उपरेइ जोर दिते चाइ। स्वकीय विशेषत्वेर मध्ये या व्यक्त हये उठेछे ताइ व्यक्ति। सेइ व्यक्ति स्वतन्त्र। विश्वजगते तार सम्पूर्ण अनुरूप आर द्वितीय नेइ।

व्यक्तिरूपेर एइ व्यक्तता सकलेर समान नय, केउ-बा सुस्पष्ट, केउ-बा अस्पष्ट। अन्तत, ये मानुष उपलब्धि करे तार पक्षे। साहित्येर व्यक्ति केवल मानुष नय; विश्वेर ये-कोनो पदार्थइ साहित्ये सुस्पष्ट ताइ व्यक्ति—जीव जन्तु, गाछपाला, नदी, पर्वत, समुद्र, भालो जिनिस, मन्द जिनिस, वस्तुर जिनिस, भावेर जिनिस, समस्तइ व्यक्ति—निजेर ऐकान्तिकताय से यदि व्यक्त ना हल ता हले साहित्ये से लज्जित।

ये गुणे एरा साहित्ये सेइ परिमाणे व्यक्त हये ओठे याते आमादेर चित्त ताके स्वीकार करते बाध्य हय, सेइ गुणटि दुर्लभ—सेइ गुणटिइ साहित्यरचयितार। ता रजोगुणओ नय, तमोगुणओ नय, ता कल्पनाशक्तिर ओ रचनाशक्तिर गुण।

पृथिवीते असंख्य मानुषके, असंख्य जिनिसके, आमरा पुरोपुरि देखते पाइ ना। प्रयोजन हिसाबे बा सांसारिक प्रभाव हिसाबे तारा पुलिस इनस्पेक्टर बा डिसट्रिक्ट्-म्याजिस्ट्रेटेर मतोइ अत्यन्त परिदृष्ट एवं परिस्पृष्ट हते पारे, किन्तु व्यक्ति हिसाबे तारा हाजार हाजार पुलिस इन्सपेक्टर एवं डिस्ट्रिक्ट्-म्याजिस्ट्रेटेर मतोइ अकिञ्चितकर, एमन-कि, यादेर प्रति तारा कर्तृत्व करे तादेर अनेकेर चेये। सुतरां तारा अचिरकालीन वर्तमान अवस्थार बाइरे मानुषेर अन्तरङ्ग-रूपे प्रकाशमान नय।

किन्तु साहित्यरचयिता आपन सृष्टिशक्तिर गुणे तादेरओ चिरकालीन रूपे व्यक्त करे दाँड़ कराते पारे। तखन तारा ब्रिटिश साम्राज्येर दण्डविधाता-रूपे कोनो श्रेणी बा पदेर प्रतिनिधिरूपे नय, केवलमात्र आपन स्वतन्त्र व्यक्तित्वेर मूल्ये मूल्यवान। धनी बले नय, मानी बले नय, ज्ञानी बले नय, सत् बले नय, सत्त्व रज वा तमो-गुणान्वित बले नय, तारा स्पष्ट व्यक्त हते पेरेछे बलेइ समादृत।

एइ व्यक्त रूपेर साहित्यमूल्यटि निर्णय ओ व्याख्या करा सहज नय। एइजन्यइ साहित्यविचारे अनेकेइ व्यक्तिपरिचयेर दुरूह कर्तव्ये फाँकि दिये श्रेणीर परिचय दिये थाकेन। एइ सहज पन्थाके साधारणत आमादेर देशेर पाठकेरा अश्रद्धा करेन ना; बोध करि तार प्रधान कारण, आमादेर देश जात-मानार देश। मानुषेर परिचयेर चेये जातेर परिचये आमादेर चोख पड़े बेशि। आमरा बड़ो लोक बलि यार बड़ो पद, बड़ो मानुष बलि यार अनेक टाका। आमरा जातेर चाप, दीर्घकाल धरे पिठेर उपर सह्य करेछि; व्यक्तिगत मानुष पंक्तिपूजक समाजेर ताड़नाय आमादेर देशे चिरदिन संकुचित। बाँधा रीतिर बन्धन आमादेर देशे सर्वत्रइ। एइ कारणेइ ये साधु साहित्य आमादेर देशे एकदा प्रचलित छिल ताते व्यक्तिर वर्णना छिल शिष्टसाहित्य-प्रथासम्मत, श्रेणीगत। तखन छिल कुमुदकह्लारशोभित सरोवर, यूथीजातिमल्लिकामालतीविकशित वसन्तऋतु। तखनकार सकल सुन्दरीरइ गमन गजेन्द्रगमन, तादेर अङ्गप्रत्यङ्ग बिम्ब दाडिम्ब सुमेरुर बाँधा छाँदे। श्रेणीर कुहेलिकार मध्ये व्यक्ति अदृश्य। सेइ झापसा दृष्टिर मनोवृत्ति आमादेर चले गेछे ता बलते पारि ने। एइ झापसा दृष्टिइ साहित्यरचनाय ओ अनुभूतिते सकलेर चेये बड़ो शत्रु। केनना साहित्य रसरूपेर सृष्टि। सृष्टिमात्रेर आसल कथाइ हच्छे प्रकाश।

सेइजन्यइ देखि आमादेर देशेर साहित्यविचारे व्यक्तिर परिचय बाद दिये श्रेणीर परिचयेर दिकइ झोंक देओया हय।

साहित्ये भालो-लागा मन्द लागा हल शेष कथा। विज्ञाने सत्यमिथ्यार विचारइ शेष विचार। एइ कारणे विचारकेर व्यक्तिगत संस्कारेर उपरे वैज्ञानिकेर चरम आपिल आछे प्रमाणे। किन्तु भालोमन्द-लागाटा रुचि निये, एर उपरे आर-कोनो आपिल अयोग्यतम लोकओ अस्वीकार करते पारे। एइ कारणे जगते सकलेर चेये अरक्षित असहाय जीव हल साहित्यरचयिता। मृदुस्वभाव हरिण पालिये बाँचे, किन्तु कवि धरा पड़े छापार अक्षरेर कालो जालटाय। ए निये आक्षेप करे लाभ नाइ, निजेर अनिवार्य कर्मफलेर उपरे जोर खाटे ना।

रुचिर मार यखन खाइ तखन चुप करे सह्य कराइ भालो, केनना साहित्य-रचयितार भाग्यचक्रेर मध्येइ रुचिर कुग्रह-सुग्रहेर चिरनिर्दिष्ट स्थान। किन्तु बाइरे थेके यखन आसे उल्कावृष्टि, सम्मार्जनी हाते आसे धूमकेतु, आसे उपग्रहेर उपसर्ग, तखन माथा चापड़े बलि, ए ये मारेर उपरि-पाओना। बांलासाहित्येर अन्तःपुरे श्रेणीर याचनदार बाहिर हते ढुके पड़ेछे, केउ तादेर द्वाररोध करबार नेइ। बाउल-कवि दुःख करे बलेछे, फुलेर मने जहुरी ढुकेछे, से पद्मफुलके निकषे घषे घषे बेड़ाय, फुलके देय लज्जा।

आमरा सहजेइ भलि ये, जातिनिणय विज्ञाने, जातिर विवरण इतिहासे, किन्तु साहित्ये जातिविचार नेइ, सेखाने आर-समस्तइ भुले व्यक्तिर प्राधान्य स्वीकार करे निते हवे। अमुक कुलीन ब्राह्मण, एइ परिचयेइ अति अयोग्य मानुषओ घरे घरे वरमाल्य लुटे बेड़ाते पारे, किन्तु ताते व्यक्ति हिसाबे तार योग्यता सप्रमाण हय ना। लोकटा कुलीन कि ना कुलपञ्जिका देखलेइ सकलेइ सेटा बलते पारे, अथच व्यक्तिगत योग्यता निर्णय करते ये समजदारेर प्रयोजन ताँके खुंजे मेला भार। एइजन्ये समाजे साधारणत श्रेणीर काठामोतेइ मानुषके विभक्त करे; जातिकुलेर मर्यादा देओया, धनेर मर्यादा देओया सहज। सेइ विचारेइ व्यक्तिर प्रति सर्वदाइ समाजे अविचार घटे, श्रेणीर बेड़ार बाइरे योग्य-व्यक्तिर स्थान अयोग्यव्यक्तिर पंक्तिर नीचे पड़े। किन्तु साहित्ये जगन्नाथेर क्षेत्र, एखाने जातिर खातिरे व्यक्तिर अपमान चलवे ना। एमन-कि, एखाने वर्ण-संकरदोषओ दोष नय; महाभारतेर मतोइ उदारता। कृष्णद्वैपायनेर जन्म-इतिहास निये एखाने केउ ताँर सम्मान अपहरण करे ना, तिनि ताँर निजेर महिमा-तेइ महीयान। अथच आमादेर देशे देवमन्दिर-प्रवेशेओ येमन जातिविचारके केउ नास्तिकता मने करे ना, तेमनि साहित्येर सरस्वतीर मन्दिरेर पाण्डारा द्वारेर काछे कुलेर विचार करते सङ्कोच करे ना। हयतो बले बसे, ए लेखाटार चाल किम्बा स्वभाव विशुद्ध भारतीय नय, एर कुले यवनस्पर्श-दोष आछे। देवी भारती स्वयं एरकमेर मेल-बन्धन मानेन ना, किन्तु पाण्डारा एइ निये तुमुल तर्क तोले। चैनचित्र-विश्लेषणे प्रमाण हते पारे ये, तार कोनो अंशे भारतीय बौद्ध संस्रव घटेछे—किन्तु सेटा निछक इतिहासेर कथा, सारस्वत विचारेर कथा नय। से चित्रेर व्यक्तित्वटि देखो, यदि रूपव्यक्तताय कोनो दोष ना थाके ता हले सेइ-खानेइ तार इतिहासेर कलङ्कभञ्जन हये गेल। मानुषेर प्रभाव चारि दिक थेकेइ एसे थाके। यदि अयोग्य प्रभाव ना हय तबे ताके स्वीकार करबार ओ ग्रहण करबार क्षमता ना थाकाइ लज्जार विषय —ताते चित्तेर निर्जीवता प्रमाण हय। नीलनदीर तीर थेके वर्षार मेघ उठे आसे। किन्तु यथासमये से हय भारतेरइ वर्षा। ताते भारतेर मयूर यदि नेचे ओठे तबे कोनो शुचिवायुग्रस्त स्वादेशिक ताके येन भर्त्सना ना करेन—यदि से ना नाचत तबेइ बुझतुम, मयुरटा मरेछे बुझि। एमन मरुभूमि आछे ये सेइ मेघके तिरस्कार करे आपन सीमाना थेके बेर करे दियेछे। से मरु थाक् आपन विशुद्ध शुचिता निये एकेबारे शुभ्र आकारे, तार उपरे रसेर विधाता शाप दिये रेखेछेन, से कोनोदिन प्राणवान हये उठबे ना। बांलादेशेइ एमन मन्तव्य शुनते हयेछे ये, दाशुरायेर पाँचालि श्रेष्ठ, येहेतु ता विशुद्ध स्वादेशिक।

एटा अन्ध अभिमानेर कथा। एइ अभिमाने एकदिन श्रीमती बलेछिलेन, 'कालो मेघ आर हेरब ना गो दुती।' अवस्थावैगुण्ये एकरकम मनेर भाव घटे से कथा स्वीकार करा याक--ओटा हल खण्डिता नारीर मुखेर कथा, मनेर कथा नय। किन्तु यखन तत्त्वज्ञानी एसे बलेन, सात्त्विकता हल भारतीयत्व, राजसिकता हल युरोपीयत्व--एइ बले साहित्ये खानातल्लाशि करते थाकेन, लाइन चुने चुने राजसिकतार प्रमाण बेर करे काव्येर उपरे एकघरे करबार दाग दिये देन, काउके जाते राखेन काउके जाते ठेलेन--तखन एकेबारे हताश हते हय।

एक समये भारतीय प्रभाव यखन प्राणपूर्ण छिल तखन मध्य एवं पूर्व एशिया तार निकट-संस्पर्शे एसे देखते देखते प्रभूत शिल्पसम्पदे आश्चर्यरूपे चरितार्थ हयेछिल। ताते एशियाय एनेछिल नवजागरण। एजन्य भारतेर बहिर्वर्ती एशियार कोनोअंश येन किछुमात्र लज्जित ना हय। कारण, ये-कोनो दानेर मध्ये शाश्वतसत्य आछे ताके ये-कोनो लोक यदि यथार्थभावे आपन करे स्वीकार करते पारे तबे से दान सत्यइ तार आपनार हय। अनुकरणइ चुरि, स्वीकरण चुरि नय। मानुषेर समस्त बड़ो बड़ो सभ्यता एइ स्वीकरणशक्तिर प्रभावेइ पूर्ण माहात्म्य लाभ करेछे।

वर्तमान युगे युरोप सर्वविध विद्याय ओ सर्वविध कलाय महीयान। चारि दिके तार प्रभाव नाना आकारे विकीर्ण। एइ प्रभावेर प्रेरणाय योरोपेर बहिर्भागेओ देशे देशे चित्तजागरण देखा दियेछे। एइ जागरणके निन्दा करा अविमिस्र मूढ़ता। युरोप ये-कोनो सत्यके प्रकाश करेछे ताते सकल मानुषेरइ अधिकार। किन्तु सेइ अधिकारके आत्मशक्तिर द्वाराइ प्रमाण करते हय, ताके स्वकीय करे निजेर प्राणेर सङ्गे मिलिये नेओया चाइ। आमादेर स्वदेशानुभूति, आमादेर साहित्य युरोपेर प्रभावे उज्जीवित, बांलादेशेर पक्षे एटा गौरवेर कथा। शरत् चाटुज्जेर गल्प, वेतालपञ्चविंशति हातेम-ताइ गोलेब-काओयालि अथवा कादम्बरी-वासवदत्तार मतो ये हय नि, हयेछे युरोपीय कथासाहित्येर छाँदे, ताते करे अबाङालित्व बा रजोगुण प्रमाण हय ना, ताते प्रमाण हय प्रतिभार प्राणवत्ता। वातासे सत्येर ये प्रभाव भेसे बेड़ाय ता दूरेर थेकेइ आसुक बा निकटेर थेके, ताके सर्वाग्रे अनुभव करे एवं स्वीकार करे प्रतिभासम्पन्न चित्त; यारा निष्प्रतिभ ताराइ सेटाके ठेकाते चाय, एवं येहेतु तारा दले भारी एवं तादेर असाड़ता घुचते अनेक देरि हय एइ कारणेइ प्रतिभार भाग्ये दीर्घकाल दुःखभोग थाके। ताइ बलि, साहित्यविचारकाले विदेशी प्रभावेर बा विदेशी प्रकृतिर खोंटा दिये वर्णसंकरता बा व्रात्यतार तर्क येन ना तोला हय।

आरओ एकटा श्रेणीविचारेर कथा एइ उपलक्ष्ये आमार मने पड़ल। मने पड़बार कारण एइ ये, किछुदिन पूर्वेइ आमार योगायोग उपन्यासेर कुमुर चरित्र सम्बन्धे आलोचना करे कोनो लेखिका आमाके पत्र लिखेछेन। ताते बुझते पारा गेल, साहित्ये नारीकेओ एकटि स्वतन्त्र श्रेणीते दाँड़ करिये देखबार एकटा उत्तेजना सम्प्रति प्रबल हये उठेछे। येमन आजकाल तरुणवयस्केर दल हठात् व्यक्तिर सीमा अतिक्रम करे दलपतिदेर चाटूक्तिर चोटे विनामूल्ये एकटा अत्यन्त उच्च एवं विशेष श्रेणीते उत्तीर्ण हये गेछे, नारीदेरओ सेइ दशा। साहित्येर नारीते नारीत्व-नामक एकटा श्रेणीगत साधारण गुण आछे कि ना, एइ तर्कटा साहित्यविचारे प्राधान्यलाभेर चेष्टा करछे। एरइ फले कुमु व्यक्तिगतभावे सम्पूर्ण कुमु कि ना, एइ साहित्यसङ्गत प्रश्नटा कारओ कारओ लेखनीते बदले गिये दाँड़ाच्छे कुमु मानवसमाजे नारी-नामक जातिर प्रतिनिधिर पद निते पारछे कि ना—अर्थात्, ताके निये समस्त नारी-प्रकृतिर उत्कर्ष स्थापन करा हयेछे कि ना। मानवप्रकृतिर या-किछु साधारण गुण तारइ प्रति लक्ष मनोविज्ञानेर, आर व्यक्तिविशेषेर ये अनन्यसाधारण प्रकृति तारइ प्रति लक्ष साहित्येर। अवश्य ए कथा बलाइ बाहुल्य, नारीके आँकते गिये ताके अ-नारी करे आँका पागलामि। वस्तुत से कथा आलोचना कराइ अनावश्यक। साहित्ये कुमुर यदि कोनो आदर हय तो से व्यक्तिगत कुमु बलेइ, से नारीश्रेणीर प्रतिनिधि बले नय।

कथा उठेछे, साहित्यविचारे विश्लेषणमूलक पद्धति श्रद्धेय कि ना। ए प्रश्नेर उत्तर देबार पूर्वे आलोच्य एइ—की संग्रह करार जन्ये विश्लेषण। आलोच्य साहित्येर उपादान-अंशगुलि? आमि बलि सेटा अत्यावश्यक नय, कारण उपादानके एकत्र करार द्वारा सृष्टि हय ना। समग्र सृष्टि आपन समस्त अंशेर चेये अनेक बेशि। सेइ बेशिटुकु परिमाणगत नय। ताके मापा याय ना, ओजन करा याय ना, सेटा हल रूपरहस्य, सकल सृष्टिर मूले प्रच्छन्न। प्रत्येक सृष्टिर मध्ये सेटाइ हल अद्वैत, बहुर मध्ये से व्याप्त अथच बहुर द्वारा तार परिमाप हय ना। से-सकल अर्थात् तार मध्ये समस्त अंश आछे, तबु से निष्कल, ताके अंशे खण्डित करलेइ से थाके ना। अतएव साहित्ये समग्रके समग्रदृष्टि दियेइ देखते हबे। आजकाल साइको-अय्‌नालिसिसेर बुलि अनेकेर मनके पेये बसे। सृष्टिते अविश्लेष्य समग्रतार गौरव खर्व करबार मनोभाव जेगे उठेछे। मानुषेर चित्तेर उपकरणे नाना प्रकार प्रवृत्ति आछे—काम क्रोध अहङ्कार इत्यादि। छिन्न करे देखले ये वस्तुपरिचय पाओया याय, सम्मिलित आकारे ता पाओया याय ना। प्रवृत्तिगुलिर गूढ़ अस्तित्व द्वारा नय, सृष्टिप्रक्रियार अभावनीय योगसाधनेर द्वाराइ चरित्रेर विकाश। सेइ योगेर रहस्यके आजकाल अंशेर

विश्लेषण लङ्घन करबार उपक्रम करछे। बुद्धदेवेर चरित्रेर विचित्र उपादानेर मध्ये कामप्रवृत्तिओ छिल, ताँर यौवनेर इतिहास थेके सेटा प्रमाण करा सहज। येटा थाके सेटा याय ना, गेले ताते स्वभावेर असम्पूर्णता घटे। चरित्रेर परिवर्तन बा उत्कर्ष घटे वर्जनेर द्वारा नय, योगेर द्वारा। सेइ योगेर द्वारा ये परिचय समग्रभावे प्रकाशमान सेइटेइ हल बुद्धदेवेर चरित्रगत सत्य। प्रच्छन्नतार मध्य थेके विशेष उपकरण टेने बेर करे ताँर सत्य पाओया याय ना। विश्लेषणे हीरके अङ्गारे प्रभेद नेइ, सृष्टिर इन्द्रजाले आछे। सन्देशे कार्बन आछे, नाइट्रोजेन आछे, किन्तु सेइ उपकरणेर द्वारा सन्देशेर चरम विचार करते गेले बहुतर विसदृश ओ विस्वाद पदार्थेर सङ्गे ताके एकश्रेणीते फेलते हय; किन्तु एते करेइ सन्देशेर चरम परिचय आच्छन्न हय। कार्बन ओ नाइट्रोजेन उपादानेर मध्ये धरा पड़ा सत्त्वेओ जोर करे बलते हबे ये, सन्देश पचा मांसेर सङ्गे एकश्रेणीभुक्त हते पारे ना। केनना, उभये उपादाने एक किन्तु प्रकाशे स्वतन्त्र। चतुर लोक बलबे, प्रकाशटा चातुरी; तार उत्तरे बलते हय, विश्वजगत्टाइ सेइ चातुरी।

ता होक, तबु रसभोगके विश्लेषण करा चले। मने करा याक, आम। ये भावे सेटा भोग्य सेभावे उद्भिदविज्ञानेर से अतीत। भोग सम्बन्धे तार रमणीयता व्याख्या करबार उपलक्ष्ये बला चले ये, एइ फले सब-प्रथमे येटा मनके टाने से हच्छे ओर प्राणेर लावण्य; एइखाने सन्देशेर चेये तार श्रेष्ठता। आमेर ये वर्णमाधुरी ता जीवविधातार प्रेरणाय आमेर अन्तर थेके उद्भासित, समस्त फलटिर सङ्गे से अविच्छेदे एक। चोख भोलाबार जन्ये सन्देशे जाफरान दिये रङ फलानो येते पारे—किन्तु सेटा जड़पदार्थेर वर्णयोजन, पदार्थेर वर्ण-सम्भावना नय। तार सङ्गे आमेर आछे स्पर्शेर सौकुमार्य, सौरभेर सौजन्य। तार परे तार आच्छादन उद्घाटन करले प्रकाश पाय तार रसेर अकृपणता। एइरूपे आम सम्बन्धे रसभोगेर विशेषत्वटिके बुझिये बलाके बलब, आमेर रसविचार। एइखाने स्वादेशिक एसे परिचयपत्रे बलते पारेन, आम प्रकृत भारतवर्षीय, सेटा ओर प्रचुर त्यागेर दाक्षिण्यमूलक सात्त्विकताय प्रमाण हय; आर र्‍यास्पबेरि गुस्बेरि विलाति, केनना तार रसेर भाग तार बीजेर भागेर चेये बेशि नय। परेर तुष्टिर चेये ओरा आपन प्रयोजनकेइ बड़ो करेछे, अतएव ओरा राजसिक। एइ कथाटा देशात्मबोधेर कथा हते पारे; किन्तु एइरकमेर अमूलक कि समूलक तत्त्वालोचना रसशास्त्रे सम्पूर्णइ असंगत।

संक्षेपे आमार कथाटा दाँड़ालो एइ—साहित्येर विचार हच्छे साहित्येर व्याख्या, साहित्येर विश्लेषण नय। एइ व्याख्या मुख्यत साहित्य-विषयेर व्यक्तिके

निये, तार जातिकुल निये नय। अवश्य, साहित्येर ऐतिहासिक विचार किम्बा तात्त्विक विचार हते पारे। सेरकम विचारे शास्त्रीय प्रयोजन थाकते पारे, किन्तु तार साहित्यिक प्रयोजन नाइ।

१३३६ कार्तिक

[अक्टुबर-नवम्बर १९२९ (कार्तिक १३३६) के 'प्रवासी' में प्रकाशित। रवीन्द्र परिचय सभा के तत्वावधान में कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालेज में दिया गया भाषण। सभाके प्रधान थे प्रो० सुरेन्द्रनाथ दासगुप्त।]

बांलासाहित्येर क्रमविकाश

एकदिन कलिकाता छिल अख्यात असंस्कृत पल्ली; सेखाने बसल विदेशी वाणिज्येर हाट, ग्रामेर श्यामल आवेष्टन सरिये दिये शहरेर उद्धत रूप प्रकाश पेते लागल। सेइ शहर आधुनिक कालके दिल आसन पेते; वाणिज्य एवं राष्ट्रेर पथे दिगन्तेर पर दिगन्ते सेइ आसन विस्तृत हये चलल।

एइ उपलक्षे वर्तमान युगेर वेगवान चित्तेर संस्रव घटल बांलादेशे। वर्तमान युगेर प्रधान लक्षण एइ ये, से संकीर्ण प्रादेशिकताय बद्ध वा व्यक्तिगत मूढ़ कल्पनाय जड़ित नय। कि विज्ञाने कि साहित्ये, समस्त देशे समस्त काले तार भूमिका। भौगोलिक सीमाना अतिक्रम करार सङ्गे सङ्गे आधुनिक सभ्यता सर्वमानवचित्तेर सङ्गे मानसिक देना-पाओनार व्यवहार प्रशस्त करे चलेछे।

एक दिके पण्य एवं राष्ट्र-विस्तारे पाश्चात्यमानुष एवं तार अनुवर्तीदेर कठोर शक्तिते समस्त पृथिवी अभिभूत, अन्य दिके पूर्वपश्चिमे सर्वत्रइ आधुनिक कालेर प्रधान वाहन पाश्चात्यसंस्कृतिर अमोघ प्रभाव विस्तीर्ण। वैषयिक क्षेत्रे पाश्चात्येर आक्रमण आमरा अनिच्छासत्त्वेओ प्रतिरोध करते पारि नि, किन्तु पाश्चात्यसंस्कृतिके आमरा क्रमे क्रमे स्वतःइ स्वीकार करे निच्छि। एइ इच्छाकृत अङ्गीकारेर स्वभाविक कारण एइ संस्कृतिर बन्धनहीनता, चित्तलोके एर सर्वत्र-गामिता—नाना धाराय एर अवाध प्रवाह, एर मध्ये नित्य-उद्यमशील विकाशधर्म नियत उन्मुख, कोनो दुर्नम्य कठिन निश्चल संस्कारेर जाले ए पृथिवीर कोणे कोणे स्थाविरभावे बद्ध नय, राष्ट्रिक ओ मानसिक स्वाधीनतार गौरवके ए घोषणा करेछे—सकलप्रकार युक्तिहीन अन्धविश्वासेर अवमानना थेके मानुषेर मनके युक्त करवार जन्ये एर प्रयास। एइ संस्कृति आपन विज्ञाने दर्शने साहित्ये विश्व ओ मानव-लोकेर सकल विभागभुक्त सकल विषयेर सन्धाने प्रवृत्त, सकल-किछुइ परीक्षा करेछे, विश्लेषण संघटन वर्णन करेछे, मनोवृत्तिर गभीरे प्रवेश करे सूक्ष्म स्थूल यतकिछु रहस्यके अवारित करछे। तार अन्तहीन जिज्ञासा-वृत्ति प्रयोजन अप्रयोजने निर्विचार, तार रचना तुच्छ महत् सकल क्षेत्रेइ उपादान-संग्रहे निपुण। एइ विराट साधना आपन वेगवान प्रशस्त गतिर द्वाराइ आपन भाषा ओ भङ्गीके यथायथ, अत्युक्तिविहीन, एवं कृत्रिमतार-जञ्जाल-विमुक्त करे तोले।

एइ संस्कृतिर सोनार काठि प्रथम येइ ताके स्पर्श करल अमनि बांलादेश सचेतन हये उठल। ए निये बाङालि यथार्थइ गौरव करते पारे। सजल मेघ नीलनदीर तट थेकेइ आसुक आर पूर्वसमुद्रेर वक्ष थेकेइ बाहित होक, तार वर्षणे मुहूर्तेइ अन्तर थेके साड़ा देय उर्वरा भूमि--मरुक्षेत्र ताके अस्वीकार करार द्वारा ये अहंकार करे सेइ अहंकारेर निष्फलता शोचनीय। मानुषेर चित्तसम्भूत याकिछु ग्रहणीय ताके सम्मुखे आसबा मात्र चिनते पारा ओ अभ्यर्थना करते पारार उदारशक्तिके श्रद्धा करतेइ हबे। चित्तसम्पद्के संग्रह करार अक्षमताइ बर्बरता, सेइ अक्षमताकेइ मानसिक आभिजात्य बले ये मानुष कल्पना करे से कृपापात्र।

प्रथम आरम्भे इंरेजि शिक्षाके छात्ररूपेइ बाङालि युवक ग्रहण करेछे। सेटा धार-करा साजसज्जार मतोइ ताके अस्थिर करे राखले, बाइरे थेके पाओया जिनिसेर अहंकार नियत उद्यत हये रइल। इंरेजिसाहित्येर ऐश्वर्यभोगेर अधिकार तखन छिल दुर्लभ एवं अल्पसंख्यक लोकेर आयतगम्य, से कारणेइ एइ संकीर्ण-श्रेणीगत इंरेजि-पोड़ोर दल नूतनलब्ध शिक्षाके अस्वाभाविक आडम्बरेर सङ्गेइ व्यवहार करतेन।

कथाय-वार्ताय पत्रव्यवहारे साहित्यरचनाय इंरेजिभाषार बाइरे पा बाड़ानो तखनकार शिक्षितदेर पक्षे छिल अकौलीन्येर लक्षण। बांलाभाषा तखन संस्कृत-पण्डित ओ बांला-पण्डित दुइ दलेर काछेइ छिल अपाङ्क्तेय। ए भाषार दारिद्र्ये ताँरा लज्जाबोध करतेन। एइ भाषाके ताँरा एमन एकटि अगभीर शीर्ण नदीर मतो मने करतेन यार हाँटुजले पाड़ागेँये मानुषेर प्रतिदिनेर सामान्य घोरो काज चले मात्र, किन्तु देशविदेशेर पण्यवाही जाहाज चलते पारे ना।

तबु ए कथा मानते हबे, एइ अहंकारेर मूले छिल पश्चिम-महादेश हते आहरित नूतन-साहित्यरस-सम्भोगेर सहज शक्ति। सेटा विस्मयेर विषय, केनना, ताँदेर पूर्वतन संस्कारेर सङ्गे एर सम्पूर्ण विच्छेद छिल। अनेक काल मनेर जमि ठिकमत चाषेर अभावे भरा छिल आगाछाय, किन्तु तार अन्तरे अन्तरे सफलतार शक्ति छिल प्रच्छन्न; ताइ कृषिर सूचना हबा मात्रइ साड़ा दिते से देरि करले ना। पूर्वकालेर थेके तार वर्तमान अवस्थार ये प्रभेद देखा गेल ता द्रुत एवं बृहत्। तार एकटा विस्मयकर प्रमाण देखि राममोहन रायेर मध्ये। सेदिन तिनि ये बांला-भाषाय ब्रह्मसूत्रेर अनुवाद ओ व्याख्या करते प्रवृत्त हलेन से भाषार पूर्वपरिचय एमन किछुइ छिल ना याते करे तार उपरे एत बड़ो दुरूहभार-अर्पण सहजे सम्भव-पर मने हते पारत। बांलाभाषाय तखन साहित्यिक गद्य सबे देखा दिते आरम्भ करेछे, नदीर तटे सद्यशायित पलिमाटिर स्तरेर मतो। एइ अपरिणत गद्येइ दुर्बोध तत्त्वालोचनार भारवह भित्ति संघटन करते राममोहन कुण्ठित हलेन ना।

एइ येमन गद्ये, पद्ये तेमनि असम साहस प्रकाश करलेन मधुसूदन। पाश्चात्य होमर-मिल्टन-रचित महाकाव्यसञ्चारी मन छिल ताँर। तार रसे तिनि एकान्तभावे मुग्ध हयेछिलेन बलेइ तार भोगमात्रेइ स्तब्ध थाकते पारेन नि। आषाढ़ेर आकाशे सजलनील मेघपुञ्ज थेके गर्जन नामल, गिरिगुहा थेके तार अनुकरणे प्रतिध्वनि उठल मात्र, किन्तु आनन्दचञ्चल मयूर आकाशे माथा तुले साड़ा दिले आपन केकाध्वनितेइ। मधुसूदन संगीतेर दुर्निवार उत्साह घोषणा करबार जन्ये आपन भाषाकेइ वक्षे टेने निलेन। ये यन्त्र छिल क्षीणध्वनि एकतारा ताके अवज्ञा करे त्याग करलेन ना, तातेइ तिनि गम्भीर सुरेर नाना तार चड़िये ताके रुद्रवीणा करे तुललेन। ए यन्त्र एकेबारे नतुन, एकमात्र ताँरइ आपन-गड़ा। किन्तु, ताँर एइ साहस तो व्यर्थ हल ना। अपरिचित अमित्राक्षर छन्देर घनघर्घरमन्द्रित रथे चड़े बांलासाहित्ये सेइ प्रथम आविर्भूत हल आधुनिक काव्य 'राजवदुन्नतध्वनि'—किन्तु ताके समादरे आह्वान करे निते वांलादेशे अधिक समय तो लागे नि। अथच एर अनतिपूर्वकालवर्ती साहित्येर ये नमुना पाओया याय तार सङ्गे एर कि सुदूर तुलनाओ चले।

आमि जानि, एखनओ आमादेर देशे एमन मानुष पाओया याय यारा सेइ पुरातन कालेर अनुप्रासकण्टकित शिथिल भाषार पौराणिक पाँचालि प्रभृति गानकेइ विशुद्ध न्याशनाल साहित्य आख्या दिये आधुनिक साहित्येर प्रति प्रतिकल कटाक्षपात करे थाकेन। बला बाहुल्य, अधिकांश स्थलेइ सेटा एकटा भान मात्र। ताँरा ये स्वयं यथार्थतः सेइ साहित्येरइ रससम्भोगे एकान्त निविष्ट थाकेन, रचनाय वा आलोचनाय तार प्रमाण पाओया याय ना। भूनिर्माणेर कोनो एक आदिपर्वे हिमालयपर्वतश्रेणी स्थितिलाभ करेछिल, आज पर्यन्त से आर विचलित हय नि; पर्वतेर पक्षेइ एटा सम्भवपर। मानुषेर चित्त तो स्थाणु नय; अन्तरे बाहिरे चार दिक थेकेइ नाना प्रभाव तार उपर नियत काज करछे, तार अभिज्ञतार व्याप्ति एवं अवस्थार परिवर्तन घटछे निरन्तर; से यदि जड़वत् असाड़ ना हय ता हले तार आत्मप्रकाशे विचित्र परिवर्तन घटबेइ, 'न्याशनल आदर्श' नाम दिये कोनो-एकटि सुदूर-भूत-कालवर्ती आदर्शबन्धने निजेके निश्चल करे राखा तार पक्षे स्वाभाविक हतेइ पारे ना, येमन स्वाभाविक नय चीने मेयेदेर पायेर बन्धन। सेइ बन्धनके न्याशनाल नामेर छाप दिये गर्व करा विडम्बना। साहित्ये बाङालिर मन अनेक कालेर आचारसंकीर्णता थेके अविलम्बे मुक्ति ये पेयेछिल, ताते तार चित्तशक्तिर असामान्यताइ प्रमाण करेछे।

नवयुगेर प्राणवान साहित्येर स्पर्शे कल्पनावृत्ति येइ नवप्रभातेइ उद्बोधित हल अमनि मधुसूदनेर प्रतिभा तखनकार बांलाभाषार पायेचला पथके आधुनिक

कालेर रथयात्रार उपयोगी करे तोलाके दुराशा बले मने करले ना। आपन शक्तिर'परे श्रद्धा छिल बलेइ बांलाभाषार'परे कवि श्रद्धा प्रकाश करलेन; बांला-भाषाके निर्भीकभावे एमन आधुनिकताय दीक्षा दिलेन या तार पूर्वानुवृत्ति थेके सम्पूर्ण स्वतन्त्र। बङ्गवाणीके गम्भीर स्वरनिर्घोषे मन्द्रित करे तोलबार जन्ये संस्कृतभाण्डार थेके मधुसूदन निःसंकोचे ये-सब आहरण करते लागलेन सेओ नूतन, बांला पयारेर सनातन समद्विभक्त आल भेङे दिये तार उपर अमित्राक्षरेर ये वन्या बइये दिलेन सेओ नूतन, आर महाकाव्य-खण्डकाव्य-रचनाय ये रीति अवलम्बन करलेन ताओ बांलाभाषाय नूतन। एटा क्रमे क्रमे, पाठकेर मनके सइये, सावधाने घटल ना; शास्त्रिक प्रथाय मङ्गलाचरणेर अपेक्षा ना रेखे कविताके वहन करे निये एलेन एक मुहूर्ते झड़ेर पिठे—प्राचीन सिंहद्वारेर आगल गेल भेङे।

माइकेल साहित्ये ये युगान्तर आनलेन तार अनतिकाल परेइ आमार जन्म। आमार यखन वयस अल्प तखन देखेछि, कत युवक इंराजि-साहित्येर सौन्दर्ये भावविह्वल। शेक्स्पियर, मिल्टन, बाय्रन, मेकले, बार्क, तारा प्रबल उत्तेजनाय आवृत्ति करे येतेन पातार पर पाता। अथच ताँदेर समकालेइ बांलासाहित्ये ये नूतन प्राणेर उद्यम सद्य जेगे उठेछे से ताँरा लक्ष्यइ करेन नि। सेटा ये अवधानेर योग्य ताओ ताँरा मने करतेन ना। साहित्ये तखन येन भोरेर बेला कारओ घुम भेङ्छे, अनेकेरइ घुम भाङे नि। आकाशे अरुणालोकेर स्वाक्षरे तखनओ घोषित हय नि प्रभातेर ज्योतिर्मयी प्रत्याशा।

बङ्किमेर लेखनी तार किछु पूर्वेइ साहित्येर अभियाने यात्रा आरम्भ करेछे। तखन अन्तःपुरे बटतलार फाँके फाँके दुर्गेशनन्दिनी, मृणालिनी, कपालकुण्डला सञ्चरण करछे देखते पाइ। याँरा तार रस पेयेछेन ताँरा तखनकार कालेर नवीना हलेओ प्राचीनकालीन संस्कारेर बाहिरे ताँदेर गतिछिल अनभ्यस्त। आर किछु ना होक, इंराजि ताँरा पड़ेन नि। ए कथा माननतेइ हबे, बङ्किम ताँर नभेले आधुनिक रीतिरइ रूप ओ रस एनेछिलेन। ताँर भाषा पूर्ववर्ती प्राकृत बांला ओ संस्कृत बांला थेके अनेक भिन्न। ताँर रचनार आदर्श, कि विषये कि भावे कि भङ्गिते, पाश्चात्येर आदर्शेर अनुगत ताते कोनो सन्देह नेइ। सेकाले इंराजिभाषाय विद्वान बले याँदेर अभिमान ताँरा तखनओ ताँर लेखार यथेष्ट समादर करेन नि; अथच से लेखा इंराजिशिक्षाहीन तरुणीदेर हृदये प्रवेश करते बाधा पाय नि, ए आमरा देखेछि। ताइ साहित्ये आधुनिकतार आविर्भावके आर तो ठेकानो गेल ना। एइ नव्य रचनानीतिर भितर दिये सेदिनकार बाङालि-मन मानसिक चिराभ्यासेर अप्रशस्त वेष्टनके अतिक्रम करते पारले—येन असूर्यस्पर्श्यरूपा अन्तःपुरचारिणी आपन प्राचीर-घेरा प्राङ्गणेर बाइरे एसे दाँड़ाते

पेरेछिल। एइ मुक्ति सनातन रीतिर अनुकल ना हते पारे; किन्तु से ये चिरन्तन मानवप्रकृतिर अनुकूल, देखते देखते तार प्रमाण पड़ल छड़िये।

एमन समये बङ्गदर्शन मासिक पत्र देखा दिल। तखन थेके बाङालिर चित्ते नव्य बांलासाहित्येर अधिकार देखते देखते अवारित हल सर्वत्र। इंराजि-भाषाय याँरा प्रवीण ताँराओ एके सविस्मये स्वीकार करे निलेन। नवसाहित्येर हाओयाय तखनकार तरुणी पाठिकादेर मनःप्रकृतिर ये परिवर्तन हते आरम्भ हयेछिल, से कथा निःसन्देह। तरुणीरा सबाइ रोमाण्टिक हये उठेछे, एइटेइ तखनकार दिनेर व्यङ्गरसिकदेर प्रहसनेर विषय हये उठल। कथाटा सत्य। क्लासिकेर अर्थात् चिरागत रीतिर बाइरेइ रोमाण्टिकेर लीला। रोमाण्टिकेर मुक्त क्षेत्रे हृदयेर विहार। सेखाने अनभ्यस्त पथे भावावेगेर आतिशय्य घटते पारे। ताते करे पूर्ववर्ती बाँधा नियमानुवर्तनेर तुलनाय विपज्जनक एमन-कि हास्यजनक हये उठबार आशङ्का थाके। दाँड़ थेके छाड़ा पाओया कल्पनार पाये शिकल बाँधा ना थाकाते क्षणे क्षणे हयतो से झाँपिये पड़े अशोभनताय। किन्तु, बड़ो परिप्रेक्षणिकाय छड़िये देखले देखा याय, अभिज्ञतार विचित्र शिक्षार मुक्ति मोटेर उपरे सकलप्रकार स्खलनके अतिक्रतिके संशोधन करे चले।

याइ होक, आधुनिक बांलासाहित्येर गतिवेग बांलार छेलेमेयेके कोन् पथे निये चलेछे, ए सभाय तार आलोचनार उपलक्ष्य नेइ। एइ सभातेइ बांला-साहित्येर विशेष सफलतार ये प्रमाण स्पष्ट हयेछे, सभार कार्यारम्भेर पूर्वे सूत्र-धाररूपे आज तारइ कथा जानिये देओया आमार कर्तव्य बले मने करि।

एमन एकदिन छिल यखन बांलाप्रदेशेर बाइरे बाङालि-परिवार दुइ-एक पुरुष यापन करते करतेइ बांलाभाषा भुले येत। भाषार योगइ अन्तरेर नाड़ीर योग—सेइ योग एकेवारे विच्छिन्न हलेइ मानुषेर परम्परागत बुद्धिशक्ति ओ हृदयवृत्तिर सम्पूर्ण परिवर्तन हये याय। बाङालिचित्तेर ये विशेषत्व मानव-संसारे निःसन्देह तार एकटा विशेष मल्य आछे। येखानेइ ताके हाराइ सेखानेइ समस्त बाङालिजातिर पक्षे बड़ो क्षतिर कारण घटा सम्भव। नदीर धारे ये जमि आछे तार माटिते यदि बाँधन ना थाके तबे तट किछु किछु क'रे ध्वसे पड़े। फसलेर आशा हाराते थाके। यदि कोनो महावृक्ष सेइ माटिर गभीर अन्तरे दूरव्यापी शिकड़ दिये ताके एँटे धरे ता हले स्रोतेर आघात थेके से क्षेत्र रक्षा पाय। बांलादेशेर चित्रक्षेत्रके तेमनि करेइ छाया दियेछे, फल दियेछे, निविड़ ऐक्य ओ स्थायित्व दियेछे बांलासाहित्य। अल्प आघातेइ से खण्डित हय ना। एकदा आमादेर राष्ट्रपतिरा बांलादेशेर माझखाने बेड़ा तुले देबार ये प्रस्ताव करेछिलेन सेटा यदि आरओ पञ्चाश बछर पूर्वे घटत, तबे तार आशङ्का आमादेर एत तीव्र

आघाते विचलित करते पारत ना। इतिमध्ये बांलार मर्मस्थले ये अखण्ड आत्म-बोध परिस्फुट हये उठेछे तार प्रधानतम कारण बांलासाहित्ये। बांलादेशके राष्ट्रव्यवस्थाय खण्डित करार फले तार भाषा तार संस्कृति खण्डित हबे, एइ विपदेर सम्भावनाय बाङालि उदासीन थाकते पारि नि। बाङालिचित्तेर एइ ऐक्यबोध साहित्येर योगे बाङालिर चैतन्यके व्यापकभावे गभीरभावे अधिकार करेछे। सेइ कारणेइ आज बाङालि यत दूरे येखानेइ याक बांला भाषा ओ साहित्येर बन्धने बांलादेशेर सङ्गे युक्त थाके। किछुकाल पूर्वे बाङालिर छेले बिलाते गेले भाषाय भावे ओ व्यवहारे येमन स्पर्धापूर्वक अबाङालित्वेर आडम्बर करत, एखन ता नेइ बललेइ चले--केन-ना बांलाभाषाय ये संस्कृति आज उज्ज्वल तार प्रति श्रद्धा ना प्रकाश करा एवं तार सम्बन्धे अनभिज्ञताइ आज लज्जार विषय हये उठेछे।

राष्ट्रीय ऐक्यसाधनार तरफ थेके भारतवर्षे बङ्गेतर प्रदेशेर प्रति प्रवास शब्द प्रयोग कराय आपत्ति थाकते पारे। किन्तु, मुखेर कथा बाद दिये, वास्तविकतार युक्तिते भारतवर्षेर विभिन्न प्रदेशेर मध्ये अकृतिम आत्मीयतार साधारण भूमिका पाओया याय कि ना से तर्क छेड़े दियेओ, साहित्येर दिक थेके भारतेर अन्य प्रदेश बाङालिर पक्षे प्रवास से कथा मानते हबे। ए सम्बन्धे आमादेर पार्थक्य एत बेशि ये, अन्य प्रदेशेर वर्तमान संस्कृतिर सङ्गे बांलासंस्कृतिर सामञ्जस्यसाधन असम्भव। ए छाड़ा संस्कृतिर प्रधान ये वाहन भाषा से सम्बन्धे बांलार सङ्गे अन्यप्रदेशीय भाषार केवल व्याकरणेर प्रभेद नय, अभिव्यक्तिर प्रभेद। अर्थात् भावेर ओ सत्येर प्रकाशकल्पे बांलाभाषा नाना प्रतिभाशालीर साहाय्ये ये रूप एवं शक्ति उद्भावन करेछे, अन्य प्रदेशेर भाषाय ता पाओया याय ना, अथवा तार अभिमुखिता अन्य दिके। अथच से-सकल भाषार मध्ये हयतो नाना विषये बांलार चेये श्रेष्ठता आछे। अन्य प्रदेशवासीर सङ्गे व्यक्तिगतभावे बाङालि-हृदयेर मिलन असम्भव नय आमरा तार अति सुन्दर दृष्टान्त देखेछि, येमन परलोकगत अतुलप्रसाद सेन। उत्तरपश्चिमे येखाने तिनि छिलेन, मानुष हिसाबे सेखानकार लोकेर सङ्गे ताँर हृदये हृदये मिल छिल, किन्तु साहित्यरचयिता वा साहित्यरसिक हिसाबे सेखाने तिनि प्रवासीइ छिलेन ए कथा स्वीकार ना करे उपाय नेइ।

ताइ बलछि, आज प्रवासी-बङ्गसाहित्य-सम्मिलन बाङालिर अन्तरतम ऐक्यचेतनाके सप्रमाण करछे। नदी येमन स्रोतेर पथे नाना बाँके बाँके आपन नानादिक्‌गामी तटके एक करे नेय, आधुनिक बांलाभाषा ओ साहित्य तेमनि करेइ नाना देश-प्रदेशेर बाङालिर हृदयेर मध्य दिये प्रवाहित हये ताके एक प्राणधाराय

मिलियेछे। साहित्ये बाङालि आपनाके प्रकाश करेछे ब'लेइ, आपनार काछे आपनि से आर अगोचर नेइ ब'लेइ, येखाने याक आपनाके आर से भुलते पारे ना। एइ आत्मानुभूतिते तार गभीर आनन्द बत्सरे बत्सरे नाना स्थाने नाना सम्मिलनीते बारम्बार उच्छ्वसित हच्छे।

अथच साहित्य व्यापारे सम्मिलनीर कोनो प्रकृत अर्थ नेइ। पृथिवीते दशे मिले अनेक काज हये थाके, किन्तु साहित्य तार अन्तर्गत नय। साहित्य एकान्तइ एकला मानुषेर सृष्टि। राष्ट्रिक वाणिज्यिक सामाजिक बा धर्म-साम्प्रदायिक अनुष्ठाने दल बाँधा आवश्यक हय। किन्तु, साहित्यसाधना यार, योगीर मतो, तपस्वीर मतो से एका। अनेक समये तार काज दशेर मतेर विरुद्धे। मधुसूदन बलेछिलेन 'विरचिब मधुचक्र'। सेइ कविर मधुचक्र एकला मधुकरेर। मधुसूदन येदिन मौचाक मधुते भरछिलेन, सेदिन बांलाय साहित्येर कुञ्जवने मौमाछि छिलइ बा कयटि। तखन थेके नाना खेयालेर वशवर्ती एकला मानुषे मिले बांलासाहित्यके विचित्र करे गड़े तुलल। एइ बहु स्रष्टार निभृततपोजात साहित्यलोके बांलार चित्त आपन अन्तरतम आनन्दभवन पेयेछे, सम्मिलनीगुलि तारइ उत्सव। बांलासाहित्य यदि दलबाँधा मानुषेर सृष्टि हत ता हले आज तार की दुर्गतिइ घटत ता मने करलेओ बुक केँपे ओठे। बाङालि चिरदिन दलादलि करतेइ पारे, किन्तु दल गड़े तुलते पारे ना। परस्परेर विरुद्धे घोंट करते, चक्रान्त करते, जात मारते तार स्वाभाविक आनन्द—आमादेर सनातन चण्डीमण्डपेर उत्पत्ति सेइ 'आनन्दाद्धयेव'। मानुषेर सब-चेये निकटतम ये सम्बन्धबन्धन विवाहव्यापारे, गोड़ातेइ सेइ बन्धनके अहैतुक अपमाने जर्जरित करबार नरयात्रिक मनोवृत्तिइ तो बांलादेशेर सनातन विशेषत्व। तार परे कविर लड़ाइयेर प्रति-योगिता-क्षेत्रे परस्परेर प्रति व्यक्तिगत अश्राव्य गालिवर्षणके यारा उपभोग करबार जन्ये एकदा भिड़ करे समवेत ह'त, कोनो पक्षेर प्रति विशेष शत्रुतावशतइ ये तादेर सेइ दुयो देबार उच्छ्वसित उल्लास ता तो नय—निन्दार मादक रसभोगेर नैर्व्यक्तिक प्रवृत्तिइ एर मूले। आज वर्तमान साहित्येओ बाङालिर भाङन-धरानो मनेर कुत्सामुखरित निष्ठुर-पीड़न-नैपुण्य सर्वदाइ उद्यत। सेटा आमादेर क्रूर अट्टहास्योद्वेल ग्राम्य असौजन्यसम्भोगेर सामग्री। आज तो देखते पाइ—बांलादेशेर छोटो-बड़ो ख्यात-अख्यात गुप्त-प्रकाश्य नाना कण्ठेर तूण थेके शब्दभेदी रक्तपिपासु वाणे आकाश छेये फेलल। एइ अद्भुत आत्मलाघवकारी महोत्साहे बाङालि आपन साहित्यके खान खान करे फेलते पारत, परस्परके तारस्वरे दुयो दिते दिते साहित्येर महाश्मशाने भूतेर कीर्तन करते तार देरि लागत ना—किन्तु साहित्य येहेतु कोआपरेटिभ वाणिज्य नय, जयेण्ट्स्टक् कोम्पानि नय, मिउनिसिप्याल

कर्पोरेशन नय, येहेतु से निर्जनचर एकला मानुषेर, सेइजन्ये सकल प्रकार आघात एड़िये ओ बेँचे गेछे। एइ एकटा जिनिस ईर्षापरायण बाङालि सृष्टि करते पेरेछे, कारण सेटा बहुजने मिले करते हय नि। एइ साहित्यरचनाय बाङालि निजेर एकमात्र कीर्तिके प्रत्यक्ष देखते पाच्छे ब'लेइ एइ निये तार एत आनन्द। आपन सृष्टिर मध्ये बृहत् ऐक्यक्षेत्रे बाङालि आज एसेछे गौरव करबार जन्ये। विच्छिन्न यारा तारा मिलित हयेछे, दूर यारा तारा परस्परेर नैकटचे स्वदेशेर नैकटच अनुभव करछे। महत्साहित्य-प्रवाहिनीते बाङालिचित्तेर पङ्किलताओ मिश्रित हच्छे ब'ले दुःख ओ लज्जार कारण सत्त्वेओ भावनार कारण अधिक नाइ। कारण, सर्वत्रइ भद्रसाहित्य स्वभावतइ सकल देशेर सकल कालेर, या-किछु स्थायित्व-धर्मी ताइ आपनिइ बाछाइ हये तार मध्ये थेके याय; आर-समस्तइ क्षणजीवी, तारा ग्लानिजनक उत्पात करते पारे, किन्तु नित्यकालेर बासा बाँधबार अधिकार तादेर नेइ। गङ्गार पुण्यधाराय रोगेर वीजओ भेसे आसे विस्तर; किन्तु स्रोतेर मध्ये तार प्राधान्य देखते पाइ ने, आपनि तार शोधन एवं विलोप हते थाके। कारण, महानदी तो महानर्दमा नय। बाङालिर या-किछु श्रेष्ठ शाश्वत, या सर्वमानवेर वेदीमूले उत्सर्ग करबार उपयुक्त, ताइ आमादेर वर्तमानकाल रेखे दिये याबे भावीकालेर उत्तराधिकार रूपे। साहित्येर मध्ये बाङालिर ये परिचय सृष्ट हच्छे विश्वसभाय आपन आत्मसम्मान से राखबे, कलुषेर आवर्जना से वर्जन करबे, विश्वदेवतार काछे बांलादेशेर अर्घ्यरूपेइ से आपन समादर लाभ करबे। बाङालि सेइ महत्प्रत्याशाके आज आपन नाड़ीर मध्ये अनुभव करछे ब'लेइ वत्सरे वत्सरे नाना स्थाने सम्मिलनी-आकारे पुनः पुनः बङ्ग भारतीर जयध्वनि घोषणा करते से प्रवृत्त। तार आशा सार्थक होक, काले काले आसुक वाणीतीर्थपथ-यात्रीरा, बांलादेशेर हृदये वहन करे आनुक उदारतर मनुष्यत्वेर आकांक्षा, अन्तरे बाहिरे सकलप्रकार बन्धनमोचनेर साधनमन्त्र।

१३४१ माघ

[माघ १३४१ की 'विचित्रा' में प्रकाशित। २७ दिसम्बर १९३४ को कलकत्ते में सम्पन्न १२ वे प्रवासी बंग साहित्य सम्मेलन में दिया गया भाषण।]

उत्सर्गपत्र

(कल्याणीय श्रीमान अमियचन्द्र चक्रवर्तीके)

श्रीमान् अमियचन्द्र चक्रवर्ती कल्याणीयेषु

रससाहित्येर रहस्य अनेक काल थेकेइ आग्रहेर सङ्गे आलोचना करे एसेछि, भिन्न भिन्न तारिखेर एइ लेखागुलि थेके तार परिचय पाबे। एइ प्रसङ्गे एकटि कथा बार बार नानारकम करे बलेछि। सेटा एइ बइयेर भूमिकाय जानिये राखि।

मन दिये एइ जगत्टाके केवलइ आमरा जानछि। सेइ जाना दुइ जातेर। ज्ञाने जानि विषयके। एइ जानाय ज्ञाता थाके पिछने आर ज्ञेय थाके तार लक्ष्यरूपे सामने।

भावे जानि आपनाकेइ, विषयटा थाके उपलक्ष्यरूपे सेइ आपनार सङ्गे मिलित।

विषयके जानार काजे आछे विज्ञान। एइ जानार थेके निजेर व्यक्तित्वके सरिये राखार साधनाइ विज्ञानेर। मानुषेर आपनाके देखार काजे आछे साहित्य; तार सत्यता मानुषेर आपन उपलब्धिते, विषयेर याथार्थ्ये नय। सेटा अद्भुत होक, अतथ्य होक, किछुइ आसे याय ना। एमन-कि, सेइ अद्भुतेर, सेइ अतथ्येर उपलब्धि यदि निविड़ हय तबे साहित्ये ताकेइ सत्य ब'ले स्वीकार करे नेबे। मानुष शिशुकाल थकेइ नाना भावे आपन उपलब्धिर क्षुधाय क्षुधित, रूपकथार उद्भव तारइ थके। कल्पनार जगते चाय से हते नानाखाना—रामओ हय हनुमानओ हय, ठिकमत हते पारलेइ खुशि। तार मन गाछेर सङ्गे गाछ हय, नदीर सङ्गे नदी। मन चाय मिलते, मिले हय खुशि। मानुषेर आपनाके निये एइ वैचित्र्येर लीला साहित्येर काज। से लीलाय सुन्दरओ आछे असुन्दरओ आछे।

एकदिन निश्चित स्थिर करे रेखेछिलेम, सौन्दर्यरचनाइ साहित्येर प्रधान काज। किन्तु एइ मतेर सङ्ग साहित्येर ओ आर्टेर अभिज्ञताके मेलानो याय ना देखे मनटाते अत्यन्त खटका लेगेछिल। भाँड़ुदत्तके सुन्दर बला याय ना—साहित्येर सौन्दर्य के प्रचलित सौन्दर्येर धारणाय धरा गेल ना।

तखन मने एल, एतदिन या उल्टो करे बलछिलुम ताइ सोजा करे बलार दरकार। बलतुम, सुन्दर आनन्द देय ताइ साहित्ये सुन्दरके निये कारबार।

वस्तुत बला चाइ, या आनन्द देय ताकेइ मन सुन्दर बले, आर सेटाइ साहित्येर सामग्री। साहित्ये की दिये एइ सौन्दर्येर बोधके जागाय से कथा गौण, निविड़ बोधेर द्वाराइ प्रमाण हय सुन्दरेर। ताके सुन्दर बलि बा ना बलि ताते किछु आसे याय ना, विश्वेर अनेक उपेक्षितेर मध्ये मन ताकेइ अङ्गीकार करे नेय।

साहित्येर बाइरे एइ सुन्दरेर क्षेत्र संकीर्ण। सेखाने प्राणतत्त्वेर अधिकृत मानुषेर अनिष्टकर किछुते आनन्द देय ना। साहित्ये देय, नइले ओथेलो-नाटकके केउ छुँते पारत ना। एइ प्रश्न आमार मनके उद्वेलित करेछिल ये, साहित्ये दुःखकर काहिनी केन आनन्द देय एवं सेइ कारणे केन ताके सौन्दर्येर कोठाय गण्य करि।

मने उत्तर एल, चारि दिकेर रसहीनताय आमादेर चैतन्ये यखन साड़ थाके ना तखन सेइ अस्पष्टता दुःखकर। तखन आत्मोपलब्धि म्लान। आमि ये आमि, एइटे खुब करे यातेइ उपलब्धि कराय तातेइ आनन्द। यखन सामने बा चारि दिके एमन-किछु थाके यार सम्बन्धे उदासीन नइ, यार उपलब्धि आमार चैतन्यके उद्बोधित करे राखे, तार आस्वादने आपनाके निविड़ करे पाइ। एइ'र अभावे अवसाद। वस्तुत मन नास्तित्वेर दिके यतइ याय ततइ तार दुःख।

दुःखेर तीब्र उपलब्धिओ आनन्दकर, केनना सेटा निविड़ अस्मितासूचक; केवल अनिष्ठेर आशङ्का एसे बाधा देय। ये आशङ्का ना थाकले दुःखके बलतुम सुन्दर। दुःखे आमादेर स्पष्ट करे तोले, आपनार काछे आपनाके झापसा थाकते देय ना। गभीर दुःख भूमा, ट्र्याजेडिर मध्ये सेइ भूमा आछे, सेइ भूमैव सुखम्। मानुष वास्तव जगते भय दुःख विपदके सर्वतोभावे वर्जनीय बले जाने, अथच तार आत्म-अभिज्ञताके प्रबल एवं बहुल करबार जन्ये एदेर ना पेले तार स्वभाव वञ्चित हय; आपन स्वभावगत एइ चाओयाटाके मानुष साहित्ये आर्टे उपभोग करछे। एके बला याय लीला, कल्पनाय आपनार अविमिश्र उपलब्धि। रामलीलाय मानुष योग दिते याय खुशि हये, लीला यदि ना हत तबे बुक येत फेटे।

एइ कथाटा येदिन प्रथम स्पष्ट करे मने एल सेदिन कवि कीट्स्-एर वाणी मने पड़ल: Truth is beauty, beauty truth. अर्थात् ये सत्यके आमरा 'हृदा मनीषा मनसा' उपलब्धि करि ताइ सुन्दर। तातेइ आमरा आपनाके पाइ। एइ कथाइ याज्ञवल्क्य बलेछेन ये, ये-कोनो जिनिस आमार प्रिय तार मध्ये आमि आपनाकेइ सत्य करे पाइ बलेइ ता प्रिय, ताइ सुन्दर।

मानुष आपनार एइ प्रियेर क्षेत्रके, अर्थात् आपन सुस्पष्ट उपलब्धिर क्षेत्रके साहित्ये प्रतिदिन विस्तीर्ण करछे। तार बाधाहीन विचित्र बृहत् लीलार जगत् साहित्ये।

सृष्टिकर्ताके आमादेर शास्त्रे बलेछे लीलामय। अर्थात् तिनि आपनार रसविचित्र परिचय पाच्छेन आपन सृष्टिते। मानुषओ आपनार मध्ये थेके आपनाके सृष्टि करते करते नाना भावे, नाना रसे आपनाके पाच्छे। मानुषओ लीलामय। मानुषेर साहित्ये आर्टे सेइ लीलार इतिहास लिखित अङ्कित हये चलेछे।

इंरेजिते याके बले real, साहित्ये आर्टे सेटा हच्छे ताइ याके मानुष आपन अन्तर थेके अव्यवहितभावे स्वीकार करते बाध्य। तर्केर द्वारा नय, प्रमाणेर द्वारा नय, एकान्त उपलब्धिर द्वारा। मन याके बले 'एइ तो निश्चित देखलुम —अत्यन्त बोध करलुम', जगतेर हाजार अचिह्नितेर मध्ये यार उपर से आपन स्वाक्षरेर शिलमोहर दिये देय, याके आपन चिरस्वीकृत संसारेर मध्ये भुक्त करे नेय, से असुन्दर हलेओ मनोरम; से रसस्वरूपेर सनद निये एसेछे।

सौन्दर्यप्रकाशइ साहित्येर बा आर्टेर मुख्य लक्ष्य नय। ए सम्बन्धे आमादेर देशे अलंकारशास्त्रे चरम कथा बला हयेछे: वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।

मानुष नानारकम आस्वादनेइ आपनाके उपलब्धि करते चेयेछे बाधाहीन लीलार क्षेत्रे। सेइ बृहत् विचित्र लीलाजगतेर सृष्टि साहित्य।

किन्तु एर मध्ये मूल्यभेदेर कथा आछे, केनना ए तो विज्ञान नय। सकल उपलब्धिरइ निर्विचारे एक मूल्य नय। आनन्दसम्भोगे मानुषेर निर्वाचनेर कर्तव्य तो आछे। मनस्तत्त्वेर कौतूहल चरितार्थ करा वैज्ञानिक बुद्धिर काज। सेइ बुद्धिते मात्लामिर असंलग्न एलोमेलो असंयम एवं अप्रमत्त आनन्देर गभीरता प्राय समान आसन पाय। किन्तु आनन्दसम्भोगे स्वभावतइ मानुषेर बाछविचार आछे। कखनओ कखनओ अतितृप्तिर अस्वास्थ्य घटले मानुष एइ सहज कथाटा भुलब भुलब करे। तखन से विरक्त हये स्पर्धार सङ्गे कुपथ्य दिये मुख बदलाते चाय। कुपथ्येर झाँज वेशि, ताइ मुख यखन मरे तखन ताकेइ मने हय भोजेर चरम आयोजन। किन्तु मन एकदा सुस्थ हय, मानुषेर चिरकालेर स्वभाव फिरे आसे, आबार आसे सहज सम्भोगेर दिन, तखनकार साहित्य क्षणिक आधुनिकतार भङ्गिमा त्याग करे चिरकालीन साहित्येर सङ्गे सरलभावे मिशे याय। इति।

शान्तिनिकेतन
८ आश्विन, १३४३

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

[सितम्बर १९३६ (शान्तिनिकेतन, ८ आश्विन १३४३) को श्री अमिय चक्रवर्ती को समर्पित।]

षष्ठ खण्ड

साहित्येर स्वरूप

१. काव्य ओ छन्द
२. गद्य काव्य
३. साहित्येर ऐतिहासिकता

काव्य ओ छन्द

गद्यकाव्य निये सन्दिग्ध पाठकेर मने तर्क चलछे। एते आश्चर्येर विषय नेइ।

छन्देर मध्ये ये वेग आछे सेइ वेगेर अभिघाते रसगर्भ वाक्य सहजे हृदयेर मध्ये प्रवेश करे, मनके दुलिये तोले--ए कथा स्वीकार करते हबे।

शुधु ताइ नय। ये संसारेर व्यवहारे गद्य नाना विभागे नाना काजे खेटे मरछे काव्येर जगत् तार थेके पृथक्। पद्येर भाषाविशिष्टता एइ कथाटाके स्पष्ट करे; स्पष्ट हलेइ मनटा ताके स्वक्षेत्रे अभ्यर्थना करबार जन्ये प्रस्तुत हते पारे। गेरुयावेशे सन्न्यासी जानान देय, से गृहीर थेके पृथक्; भक्तेर मन सेइ मुहूर्तेर तार पायेर काछे एगिये आसे--नइले सन्न्यासीर भक्तिर व्यवसाये क्षति हबार कथा।

किन्तु बला बाहुल्य, सन्न्यासधर्मेर मुख्य तत्त्वटा तार गेरुया कापड़े नय, सेटा आछे तार साधनार सत्यताय। एइ कथाटा ये बोझे, गेरुया कापड़ेर अभावेइ तार मन आरओ बेशि करे आकृष्ट हय। से बले, आमार, बोधशक्तिर द्वाराइ सत्यके चिनब, सेइ गेरुया कापड़ेर द्वारा नय--ये कापड़े बहु असत्यके चापा दिये राखे।

छन्दटाइ ये ऐकान्तिकभावे काव्य ता नय। काव्येर मूल कथाटा आछे रसे; छन्दटा एइ रसेर परिचय देय आनुषङ्गिक हये।

सहायता करे दुइ दिक थेके। एक हच्छे, स्वभावतइ तार दोला देबार शक्ति आछे; आर-एक हच्छे, पाठकेर चिराभ्यस्त संस्कार। एइ संस्कारेर कथाटा भाबबार विषय। एकदा नियमित अंशे विभक्त छन्दइ असाधु काव्य-भाषाय एकमात्र पांक्तेय बले गण्य छिल। सेइ समये आमादेर कानेर अभ्यासओ छिल तार अनुकूले। तखन छन्दे मिल राखाओ अपरिहार्य।

एमन समये मधुसूदन बांला साहित्ये आमादेर संस्कारेर प्रतिकूले आनलेन अमित्राक्षर छन्द। ताते रइल ना मिल। ताते लाइनेर बेड़ागुलि समान भागे साजानो बटे, किन्तु छन्देर पदक्षेप चले क्रमागतइ बेड़ा डिङिये। अर्थात्, एर भङ्गि पद्येर मतो किन्तु व्यवहार गद्येर चाले।

संस्कारेर अनित्यतार आर-एकटा प्रमाण दिइ। एक समये कुलवधूर संज्ञा छिल, से अन्तःपुरचारिणी। प्रथम ये कुलस्त्रीरा अन्तःपुर थेके असंकोचे

बेरिये एलेन ताँरा साधारणेर संस्कारके आघात कराते ताँदेरके सन्देहेर चोखे देखा ओ अप्रकाश्ये बा प्रकाश्ये अपमानित करा, प्रहसनेर नायिकारूपे ताँदेरके अटहास्येर विषय करा, प्रचलित हये एसेछिल। सेदिन ये मेयेरा साहस करे विश्वविद्यालये पुरुषछात्रदेर सङ्गे एकत्रे पाठ नितेन ताँदेर सम्बन्धे कापुरुष आचरणेर कथा जाना आछे।

क्रमशइ संज्ञार परिवर्तन हये आसछे। कुलस्त्रीरा आज असंशयितभावे कुलस्त्रीइ आछेन, यदिओ अन्तःपुरेर अवरोध थेके ताँरा मुक्त।

तेमनि अमित्राक्षर छन्देर मिलवर्जित असमानताके केउ काव्यरीतिर विरोधी बले आज मने करेन ना। अथच पूर्वतन विधानके एइ छन्दे बहु दूरे लङ्घन करे गेछे।

काजटा सहज हयेछिल, केनना तखनकार इंरेजि-शेखा पाठकेरा मिल्टन-शेक्स्पीयरेर छन्दके श्रद्धा करते वाध्य हयेछिलेन।

अमित्राक्षर छन्दके जाते तुले नेबार प्रसङ्गे साहित्यिक सनातनीरा एइ कथा बलबेन ये, यदिओ एइ छन्द चौद्द अक्षरेर गण्डिटा पेरिये चले तबु से पयारेर लयटाके अमान्य करे ना।

अर्थात्, लयके रक्षा करबार द्वारा एइ छन्द काव्येर धर्म रक्षा करेछे, अमित्राक्षर सम्बन्धे एइटुकु विश्वास लोके आँकड़े रयेछे। तारा बलते चाय, पायारेर सङ्गे एइ नाड़िर सम्बन्धटुकु ना थाकले काव्य काव्यइ हते पारे ना। की हते पारे एवं हते पारे ना ता हओयार उपरेइ निर्भर करे, लोकेर अभ्यासेर उपर करे ना— ए कथाटा अमित्राक्षर छन्दइ पूर्वे प्रमाण करेछे। आज गद्यकाव्येर उपरे प्रमाणेर भार पड़ेछे ये, गद्येओ काव्येर सञ्चरण असाध्य नय।

अश्वारोही सैन्यओ सैन्य, आवार पदातिक सैन्यओ सैन्य—कोन्खाने तादेर मूलगत मिल? येखाने लड़ाइ क'रे जेताइ तादेर उभयेरइ साधनार लक्ष्य।

काव्येर लक्ष्य हृदय जय करा—पद्येर घोड़ाय चड़ेइ होक, आर गद्ये पा चालियेइ होक। सेइ उद्देश्यसिद्धिर सक्षमतार द्वाराइ ताके विचार करते हबे। हार हले हार, ता से घोड़ाय चड़ेइ होक आर पाये हेंटेइ होक। छन्दे-लेखा रचना काव्य हय नि, तार हाजार प्रमाण आछे; गद्यरचनाओ काव्य नाम धरलेओ काव्य हबे ना, तार भूरि भूरि प्रमाण जुटते थाकबे।

छन्देर एकटा सुविधा एइ ये, छन्देर स्वतइ एकटा माधुर्य आछे; आर किछु ना हय तो सेटाइ एकटा लाभ। सस्ता सन्देशे छानार अंश नगण्य हते पारे किन्तु अन्तत चिनिटा पाओया याय।

किन्तु सहजे सन्तुष्ट नय एमन एकगुँये मानुष आछे, यारा चिनि दिये आपनाके भोलाते लज्जा पाय। मन-भोलानो मालमसला बाद दियेओ केवल मात्र खाँटि माल दियेइ तारा जितबे, एमनतरो तादेर जिद। तारा एइ कथाइ बलते चाय, आसल काव्य जिनिसटा एकान्तभावे छन्द-अछन्द निये नय, तार गौरव तार आन्तरिक सार्थकताय।

गद्यइ होक, पद्यइ होक, रचनामात्रेइ एकटा स्वाभाविक छन्द थाके। पद्ये सेटा सुप्रत्यक्ष, गद्ये सेटा अन्तर्निहित। सेइ निगूढ़ छन्दटिके पीड़न करलेइ काव्यके आहत करा हय। पद्यछन्दबोधेर चर्चा बाँधा नियमेर पथे चलते पारे किन्तु गद्यछन्देर परिमाणबोध मनेर मध्ये यदि सहजे ना थाके तबे अलङ्कार शास्त्रेर साहाय्ये एर दुर्गमता पार हओया याय ना। अथच अनेकेइ मने राखेन ना ये, येहेतु गद्य सहज, सेइ कारणेइ गद्यछन्द सहज नय। सहजेर प्रलोभनेइ मारात्मक विपद घटे, आपनि एसे पड़े असतर्कता। असतर्कताइ अपमान करे कलालक्ष्मीके, आर कलालक्ष्मी तार शोध तोलेन अकृतार्थता दिये। असतर्क लेखकदेर हाते गद्यकाव्य अवज्ञा ओ परिहासेर उपादान स्तूपाकार करे तुलबे, एमन आशङ्कार कारण आछे। किन्तु एइ सहज कथाटा बलतेइ हबे, येटा यथार्थ काव्य सेटा पद्य हलेओ काव्य, गद्य हलेओ काव्य।

सबशेषे एइ एकटि कथा बलबार आछे, काव्य प्रात्यहिक संसारेर अपरिमार्जित वास्तवता थेके यत दूरे छिल एखन ता नेइ। एखन समस्तकेइ से आपन रसलोके उत्तीर्ण करते चाय—एखन से स्वर्गारोहण करबार समयेओ सङ्गेर कुकुरटिके छाड़े ना।

वास्तव जगत् ओ रसेर जगतेर समन्वयसाधने गद्य काजे लागबे; केनना गद्य शुचिवायुग्रस्त नय।

१२ नभेम्बर १९३६

[११ नवम्बर १९३९ को कवि मोंपु (दार्जीलिंग) में दो महीने बिताकर लौटे थे। यह वार्ता अगले दिन १२ नवम्बर को दी गई।]

গদ্যকাব্য

কতকগুলি বিষয় আছে যার আবহাওয়া অত্যন্ত সূক্ষ্ম, কিছুতেই সহজে প্রতিভাত হতে চায় না। ধরা-ছোঁওয়ার বিষয় নিয়ে তর্ক আঘাত-প্রতিঘাত করা চলে। কিন্তু বিষয়বস্তু যখন অনির্বচনীয়ের কোঠায় এসে পড়ে তখন কী উপায়ে বোঝানো চলে তা হৃদ্য কি না। তাকে ভালো-লাগা মন্দ-লাগার একটা সহজ ক্ষমতা ও বিস্তৃত অভিজ্ঞতা থাকা চাই। বিজ্ঞান আয়ত্ত করতে হলে সাধনার প্রয়োজন। কিন্তু রুচি এমন একটা জিনিস যাকে বলা যেতে পারে সাধন-দুর্লভ, তাকে পাওয়ার বাঁধা পথ ন মেধয়া ন বহুনা শ্রুতেন। সহজ ব্যক্তিগত রুচি-অনুযায়ী বলতে পারি যে, এই আমার ভালো লাগে।

সেই রুচির সঙ্গে যোগ দেয় নিজের স্বভাব, চিন্তার অভ্যাস, সমাজের পরিবেষ্টন ও শিক্ষা। এগুলি যদি ভদ্র ব্যাপক ও সূক্ষ্মবোধশক্তিমান হয় তা হলে সেই রুচিকে সাহিত্যপথের আলোক ব'লে ধরে নেওয়া যেতে পারে। কিন্তু রুচির শুভসম্মিলন কোথাও সত্য পরিণামে পৌঁচেছে কি না তাও মেনে নিতে অন্য পক্ষে রুচিচর্চার সত্য আদর্শ থাকা চাই। সুতরাং রুচিগত বিচারের মধ্যে একটা অনিশ্চয়তা থেকে যায়। সাহিত্যক্ষেত্রে যুগে যুগে তার প্রমাণ পেয়ে আসছি। বিজ্ঞান দর্শন সম্বন্ধে যে মানুষ যথোচিত চর্চা করে নি। সে বেশ নম্রভাবেই বলে, 'মতের অধিকার নেই আমার।' সাহিত্য ও শিল্পে রসসৃষ্টির সভায় মতবিরোধের কোলাহল দেখে অবশেষে হতাশ হয়ে বলতে ইচ্ছা হয়, ভিন্নরুচির্হি লোকঃ। সেখানে সাধারণ বালাই নেই ব'লে স্পর্ধা আছে অবারিত, আর সেই জন্যেই রুচিভেদের তর্ক নিয়ে হাতাহাতিও হয়ে থাকে। তাই বররুচির আক্ষেপ মনে পড়ে, অরসিকেষু রসস্য নিবেদনং শিরসি মা লিখ মা লিখ। স্বয়ং কবির কাছে অধিকারীর ও অনধিকারীর প্রসঙ্গ সহজ। তাঁর লেখা কার ভালো লাগল, কার লাগল না, শ্রেণীভেদ এই যাচাই নিয়ে। এই কারণেই চিরকাল ধরে যাচনদারের সঙ্গে শিল্পীদের ঝগড়া চলেছে। স্বয়ং কবি কালিদাসকেও এ নিয়ে দুঃখ পেতে হয়েছে, সন্দেহ নেই; শোনা যায় নাকি, মেঘদূত স্থূলহস্তাবলেপের প্রতি ইঙ্গিত আছে। যে-সকল কবিতায় প্রথাগত ভাষা ও ছন্দের অনুসরণ করা হয় সেখানে অন্তত বাইরের দিক থেকে পাঠকদের চলতে ফিরতে বাধে না। কিন্তু কখনও কখনও বিশেষ কোনো রসের অনুসন্ধানে কবি অভ্যাসের পথ অতিক্রম করে থাকে। তখন অন্তত কিছুকালের

जन्य पाठकेर व्याघात घटे ब'ले तारा नूतन रसेर आमदानिके अस्वीकार क'रे शास्ति ज्ञापन करे। चलते चलते ये पर्यन्त पथ चिह्नित हये ना याय से पर्यन्त पथकर्तार विरुद्धे पथिकदेर एकटा झगड़ार सृष्टि हये ओठे। सेइ अशान्तिर समयटाते कवि स्पर्धा प्रकाश करे; बले, 'तोमादेर चेये आमार मतइ प्रामाणिक।' पाठकरा बलते थाके, ये लोकटा जोगान देय तार चेये ये लोक भोग करे तारइ दाबिर जोर बेशि। किन्तु इतिहासे तार प्रमाण हय ना। चिरदिनइ देखा गेछे, नूतनके उपेक्षा करते करतेइ नूतनेर अभ्यर्थनार पथ प्रशस्त हयेछे।

किछुदिन थेके आमि कोनो कविता गद्ये लिखते आरम्भ करेछि। साधारणेर काछ थेके एखनइ ये ता समादर लाभ करबे एमन प्रत्याशा करा असङ्गत। किन्तु सद्य समादर ना पाओयाइ ये तार निष्फलतार प्रमाण ताओ मानते पारि ने। एइ द्वन्द्वेर स्थले आत्मप्रत्ययके सम्मान करते कवि बाध्य। आमि अनेक दिन धरे रससृष्टिर साधना करेछि, अनेकके हयतो आनन्द दिते पेरेछि, अनेकके हयतो-बा दिते पारि नि। तबु एइ विषये आमार बहु दिनेर सञ्चित ये अभिज्ञता तार दोहाइ दिये दुटो-एकटा कथा बलब; आपनारा ता सम्पूर्ण मेने नेबेन, एमन कोनो माथार दिव्य नेइ।

तर्क एइ चलेछे, गद्येर रूप निये काव्य आत्मरक्षा करते पारे कि ना। एतदिन ये रूपेते काव्यके देखा गेछे एवं से देखार सङ्गे आनन्देर ये अनुषङ्ग, तार व्यतिक्रम हयेछे गद्यकाव्ये। केवल प्रसाधनेर व्यत्यय नय, स्वरूपेते तार व्याघात घटेछे। एखन तर्केर विषय एइ ये, काव्येर स्वरूप छन्दोबद्ध सज्जार 'परे एकान्त निर्भर करे कि ना। केउ मने करेन, करे; आमि मने करि, करे ना। अलंकरणेर वहिरावरण थेके मुक्त क'रे काव्य सहजे आपनाके प्रकाश करते पारे, ए विषये आमार निजेर अभिज्ञता थेके एकटि दृष्टान्त देब। आपनारा सकलेइ अवगत आछेन, जवालापुत्र सत्यकामेर काहिनी अवलम्बन क'रे आमि एकटि कविता रचना करेछि। छान्दोग्य उपनिषदे एइ गल्पटि सहज पड़ेछिलाम, तखन ताके सत्यिकार काव्य ब'ले मेने निते एकटुओ बाधे नि। उपाख्यानमात्र—काव्य-विचारक एके बाहिरेर दिके ताकिये काव्येर पर्याये स्थान दिते असम्मत हते पारेन; कारण ए तो अनुष्टुभ त्रिष्टुभ बा मन्दाक्रान्ता छन्दे रचित हय नि। आमि बलि, हय नि ब'लेइ श्रेष्ठ काव्य हते पेरेछे; अपर कोनो आकस्मिक कारणे नय। एइ सत्यकामेर गल्पटि यदि छन्दे बेँधे रचना करा हत तबे हालका हये येत।

सप्तदश शताब्दीते नाम-ना-जाना कयेकजन लेखक इंरेजिते ग्रीक ओ हिब्रु बाइबेल अनुवाद करेछिलेन। ए कथा मानतेइ हबे ये, सलोमनेर गान, डेभिडेर

गाथा सत्यिकार काव्य। एइ अनुवादेर भाषार आश्चर्य शक्ति एदेर मध्ये काव्येर रस ओ रूपके निःसंशये परिस्फुट करेछे। एइ गानगुलिते गद्यछन्देर ये मुक्त पदक्षेप आछे ताके यदि पद्यप्रथार शिकले बाँधा हत तबे सर्वनाशइ हत।

यजुर्वेदे ये उदात्त छन्देर साक्षात् आमरा पाइ ताके आमरा पद्य बलि ना, बलि मन्त्र। आमरा सबाइ जानि ये, मन्त्रेर लक्ष्य हल शब्देर अर्थके ध्वनिर भितर दिये मनेर गभीरे निये याओया। सेखाने से ये केवल अर्थवान ता नय, ध्वनिमानओ बटे। निःसन्देहे बलते पारि ये, एइ गद्यमन्त्रेर सार्थकता अनेके मनेर भितर अनुभव करेछेन, कारण तार ध्वनि थामलेओ अनुरणन थामे ना।

एकदा कोनो-एक असतर्क मुहूर्ते आमि आमार गीताञ्जलि इंरेजि गद्ये अनुवाद करि। सेदिन विशिष्ट इंरेज साहित्यिकेरा आमार अनुवादके ताँदेर साहित्येर अङ्गस्वरूप ग्रहण करलेन। एमनकि, इंरेजि गीताञ्जलिके उपलक्ष्य क'रे एमन-सब प्रशंसावाद करलेन याके अत्युक्ति मने करे आमि कुण्ठित हयेछिलाम। आमि विदेशी, आमार काव्ये मिल बा छन्देर कोनो चिह्नइ छिल ना, तबु यखन ताँरा तार भितर सम्पूर्ण काव्येर रस पेलेन तखन से कथा तो स्वीकार ना करे पारा गेल ना। मने हयेछिल, इंरेजि गद्ये आमार काव्येर रूप देओयाय क्षति हय नि, वरञ्च पद्ये अनुवाद करले हयतो ता धिक्कृत हत, अश्रद्धेय हत।

मने पड़े, एकबार श्रीमान सत्येन्द्रके बलेछिलुम, 'छन्देर राजा तुमि, अ-छन्देर शक्तिते काव्येर स्रोतके तार बाँध भेङे प्रवाहित करो देखि।' सत्येनेर मतो विचित्र छन्देर स्रष्टा बांलाय खुब कमइ आछे। हयतो अभ्यास ताँर पथे बाधा दियेछिल, ताइ तिनि आमार प्रस्ताव ग्रहण करेन नि। आमि स्वयं एइ काव्य-रचनार चेष्टा करेछिलुम 'लिपिका'य; अवश्य पद्येर मतो पद भेङे देखाइ नि। 'लिपिका' लेखार पर बहुदिन आर गद्यकाव्य लिखि नि। बोध करि साहस हय नि ब'लेइ।

काव्यभाषार एकटा ओजन आछे, संयम आछे; ताकेइ बले छन्द। गद्येर बाछविचार नेइ, से चले बुक फुलिये। सेइजन्येइ राष्ट्रनीति प्रभृति प्रात्यहिक व्यापार प्राञ्जल गद्ये लेखा चलते पारे। किन्तु गद्यके काव्येर प्रवर्तनाय शिल्पित करा याय। तखन सेइ काव्येर गतिते एमन-किछु प्रकाश पाय या गद्येर प्रात्यहिक व्यवहारेर अतीत। गद्य बलेइ एर भितरे अतिमाधुर्य-अतिलालित्येर मादकता थाकते पारे ना। कोमले कठिने मिले एकटा संयत रीतिर आपना-आपनि उद्भव हय। नटीर नाचे शिक्षितपटु अलंकृत पदक्षेप। अपर पक्षे, भालो चले एमन कोनो तरुणीर चलने ओजनरक्षार एकटि स्वाभाविक नियम आछे। एइ सहज सुन्दर चलार भङ्गिते एकटा अशिक्षित छन्द आछे, ये छन्द तार रक्तेर

मध्ये, ये छन्द तार देहे। गद्यकाव्येर चलन हल सेइरकम---अनियमित उच्छृंखल गति नय, संयत पदक्षेपे।

आजकेइ मोहाम्मदी पत्रिकाय देखछिलुम के-एकजन लिखेछेन ये, रवि-ठाकुरेर गद्यकवितार रस तिनि ताँर सादा गद्येइ पेयेछेन। दृष्टान्तस्वरूप लेखक बलेछेन ये 'शेषेर कविता'य मूलत काव्यरसे अभिषिक्त जिनिस एसे गेछे। ताइ यदि हय तबे कि जेनाना थेके बार हबार जन्ये काव्येर जात गेल। एखाने आमार प्रश्न एइ, आमरा कि एमन काव्य पड़ि नि या गद्येर वक्तव्य बलेछे, येमन धरुन ब्राउनिङे। आबार धरुन, एमन गद्यओ कि पड़ि नि यार माझखाने कविकल्पनार रेश पाओया गेछे। गद्य ओ पद्येर भाशुर-भाद्रबउ सम्पर्क आमि मानि ना। आमार काछे तारा भाइ आर बोनेर मतो, ताइ यखन देखि गद्ये पद्येर रस ओ पद्ये गाम्भीर्येर सहज आदान-प्रदान हच्छे तखन आमि आपत्ति करि ने।

रुचिभेद निये तर्क करे किछु लाभ हय ना। एइमात्रइ बलते पारि, आमि अनेक गद्यकाव्य लिखेछि यार विषयवस्तु अपर कोनो रूपे प्रकाश करते पारतुम ना। तादेर मध्ये एकटा सहज प्रात्यहिक भाव आछे; हयतो सज्जा नेइ किन्तु रूप आछे एवं एइजन्येइ तादेरके सत्यकार काव्यगोत्रीय ब'ले मने करि। कथा उठते पारे, गद्यकाव्य की। आमि बलब, की ओ केमन जानि ना, जानि ये एर काव्यरस एमन एकटा जिनिस या युक्ति दिये प्रमाण करबार नय। या आमाके वचनातीतेर आस्वाद देय ता गद्य वा पद्य रुपेइ आसुक, ताके काव्य ब'ले ग्रहण करते परांमुख हब ना।

शान्तिनिकेतन। २९ आगस्ट १९३९

२९ अगस्त १९३९ को विश्वभारती के छात्रों के समक्ष दिया गया भाषण। दिसम्बर (पौष १३४६) के 'प्रवासी' में प्रकाशित।]

साहित्ये ऐतिहासिकता

आमरा ये इतिहासेर द्वाराइ एकान्त चालित, ए कथा बार बार शुनेछि एव् बार बार भितरे भितरे खुब जोरेर सङ्गे माथा नेड़ेछि। ए तर्केर मीमांसा आमार निजेर अन्तरेइ आछे, येखाने आमि आर-किछु नइ, केवलमात्र कवि। सेखाने आमि सृष्टिकर्ता, सेखाने आमि एकक, आमि मुक्त; बाहिरेर बहुतर घटना-पुञ्जेर द्वारा जालबद्ध नइ। ऐतिहासिक पण्डित आमार सेइ काव्यसृष्टिर केन्द्र थेके आमाके टेने एने फेले यखन, आमार सेटा असह्य हय। एकबार याओया याक कविजीवनेर गोड़ाकार सूचनाय।

शीतेर रात्रि—भोरबेला, पाण्डुवर्ण आलोक अन्धकार भेद करे देखा दिते शुरु करेछे। आमादेर व्यवहार गरिबेर मतो छिल। शीतवस्त्रेर बाहुल्य एकेबारेइ छिल ना। गाये एकखानामात्र जामा दिये गरम लेपेर भितर थेके बरिये आसतुम। किन्तु एमन ताड़ाताड़ि बेरिये आसवार कोनो प्रयोजन छिल ना। अन्यान्य सकलेर मतो आमि आरामे अन्तत बेला छटा पर्यन्त गुटिसुटि मेरे थाकते पारतुम। किन्तु आमार उपाय छिल ना। आमादेर बाड़िर भितरेर बागान सेओ आमारइ मतो दरिद्र। तार प्रधान सम्पद छिल पुबदिकेर पाँचिल घेषे एक सार नारकेल गाछ। सेइ नारकेल गाछेर कम्पमान पाताय आलो पड़बे, शिशिरबिन्दु झलमल करे उठबे, पाछे आमार एइ दैनिक देखार व्याघात हय एइजन्य आमार छिल एमन ताड़ा। आमि मने भावतुम, सकालबेलाकार एइ आनन्देर अभ्यर्थना सकल बालकेरइ मने आग्रह जागात। एइ यदि सत्य हत ता हले सर्वजनीन बालकस्वभावेर मध्ये एर कारणेर सहज निष्पत्ति हये येत। आमि ये अन्यदेर थेके एइ अत्यन्त औत्सुक्येर वेगे विच्छिन्न नइ, आमि ये साधारण, एइटे जानते पारले आर कोनो व्याख्यार दरकार हत ना। किन्तु किछु वयस हलेइ देखते पेलुम, आर कोनो छेलेर मने केवलमात्र गाछपालार उपरे आलोकेर स्पन्दन देखबार जन्य एमन व्यग्रता एकेबारेइ नेइ। आमार सङ्गे यारा एकत्रे मानुष हयेछे तारा ए पागलामिर कोठाय कोनोखानेइ पड़त ना ता आमि देखलुम। शुधु तारा केन, चार दिके एमन केउ छिल ना ये असमये शीतेर कापड़ छेड़े आलोर खेला एकदिनओ देखते ना पेले निजेके वञ्चित मने करत। एर पिछने कोनो

इतिहासेर कोनो छाँद नेइ। यदि थाकत ता हले सकालबेलाय सेइ लक्ष्मीछाड़ा बागाने भिड़ जमे येत, एकटा प्रतियोगिता देखा दित के सर्वाग्रे एसे समस्त दृश्यटाके अन्तरे ग्रहण करेछे। कवि ये से एइखानेइ। स्कुल थेके एसेछि साड़े चारटेर समय। एसेइ देखेछि आमादेर बाड़िर तेतलार ऊर्ध्वे घननील मेघपुञ्ज, से ये की आश्चर्य देखा। से एकदिनेर कथा आमार आजओ मने आछे, किन्तु सेदिनकार ऐतिहासे आमि छाड़ा कोनो द्वितीय व्यक्ति सेइ मेघ सेइ चक्षे देखे नि एवं पुलकित हये याय नि। एइखाने देखा दियेछिल एकला रवीन्द्रनाथ। एकदिन स्कुल थेके एसे आमादेर पश्चिमेर बारान्दाय दाँड़िये एक अति आश्चर्य व्यापार देखेछिलुम। धोपार बाड़ि थेके गाधा एसे चरे खाच्छे घास—एइ गाधागुलि ब्रिटिश साम्राज्यनीतिर बानानो गाधा नय, ए आमादेर समाजेर चिर-कालेर गाधा, एर व्यवहारे कोनो व्यतिक्रम हय नि आदिकाल थेके—आर-एकटि गाभी सस्नेहे तार गा चेटे दिच्छे। एइये प्राणर दिके प्राणेर टान आमार चोखे पड़ेछिल आज पर्यन्त से अविस्मरणीय हये रइल। किन्तु ए कथा आमि निश्चित जानि, सेदिनकार समस्त इतिहासेर मध्ये एक रवीन्द्रनाथ एइ दृश्य मुग्ध चोखे देखेछिल। सेदिनकार इतिहास आर कोनो लोकके ओइ लेखार गभीर तात्पर्य एमन करे बले देय नि। आपन सृष्टिक्षेत्रे रवीन्द्रनाथ एका, कोनो इतिहास ताके साधारणेर सङ्गे बाँधे नि। इतिहास येखाने साधारण ब्रिटिश सब्‌जेक्ट छिल, किन्तु रवीन्द्रनाथ छिल ना। सेखाने राष्ट्रिक परिवर्तनेर विचित्र लीला चलछिल, किन्तु नारकेल गाछेर पाताय ये आलो झिलमिल करछिल सेटा ब्रिटिश गवर्मेण्टेर राष्ट्रिक आमदनि नय। आमार अन्तरात्मार कोनो रहस्यमय इतिहासेर मध्ये से विकशित हयेछिल एवं आपनाके आपनार आनन्दरूपे नाना भावे प्रत्यह प्रकाश करछिल। आमादेर उपनिषदे आछे : न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति—आत्मा पुत्र-स्नेहेर मध्ये सृष्टिकर्तारूपे आपनाके प्रकाश करते चाय, ताइ पुत्रस्नेह तार काछे मूल्यवान। सृष्टिकर्ता ये ताके सृष्टिर उपकरण किछु-बा इतिहास जोगाय, किछु-बा तार सामाजिक परिवेष्टन जोगाय, किन्तु एइ उपकरण ताके तैरि करे ना। एइ उपकरणगुलि व्यवहारेर, द्वारा से आपनाके स्रष्टारूपे प्रकाश करे। अनेक घटना आछे या जानार अपेक्षा करे, सेइ जानाटा आकस्मिक। एक समये आमि यखन बौद्ध काहिनी एवं ऐतिहासिक काहिनीगुलि जानलुम तखन तारा स्पष्ट छबि ग्रहण क'रे आमार मध्ये सृष्टिर प्रेरणा निये एसेछिल। अकस्मात् 'कथा ओ काहिनी'र गल्प धारा उत्सेर मतो नाना शाखाय उच्छ्वसित हये उठल। सेइ समयकार शिक्षाय एइसकल इतिवृत्त जानबार अवकाश छिल, सुतरां बलते

पारा याय 'कथा ओ काहिनी' सेइ कालेरइ विशेष रचना। किन्तु एइ 'कथा ओ काहिनी'र रूप ओ रस एकमात्र रवीन्द्रनाथेर मने आनन्देर आन्दोलन तुलेछिल, इतिहास तार कारण नय। रवीन्द्रनाथेर अन्तरात्माइ तार कारण—ताइ तो बलेछे, आत्माइ कर्ता। ताके नेपथ्ये रेखे ऐतिहासिक उपकरणेर आडम्बर करा कोनो कोनो मनेर पक्षे गर्वेर विषय, एवं सेइखाने सृष्टिकर्त्तार आनन्दके से किछु परिमाणे आपनार दिके अपहरण करे आने। किन्तु ए समस्तइ गौण; सृष्टिकर्ता जाने। सन्न्यासी उपगुप्त बौद्ध इतिहासेर समस्त आयोजनेर मध्ये एकमात्र रवीन्द्रनाथेर काछे ए की महिमाय, ए की करुणाय, प्रकाश पेयेछिल। ए यदि यथार्थ ऐतिहासिक हत ता हले समस्त देश जुड़े 'कथा ओ काहिनी'र हरिर लुट पड़े येत। आर द्वितीय कोनो व्यक्ति तार पूर्वे एवं तार परे ए-सकल चित्र ठिक एमन करे देखते पाय नि। वस्तुत, तारा आनन्द पेयेछे एइ कारणे, कविर एइ सृष्टिकर्तृत्वेर वैशिष्ट्य थेके। आमि एकदा यखन बांलादेशेर नदी वेये तार प्राणेर लीला अनुभव करेछिलुम तखन आमार अन्तरात्मा आपन आनन्दे सेइ-सकल सुख-दुःखेर विचित्र आभास अन्तःकरणेर मध्ये संग्रह करे मासेर पर मास बांलार ये पल्लीचित्र रचना करेछिल, तार पूर्वे आर केउ ता करे नि। कारण, सृष्टिकर्ता ताँर रचनाशालाय एकला काज करेन। से विश्वकर्मारइ मतन आपनाके दिये रचना करे। सेदिन कवि ये पल्लीचित्र देखेछिल निःसन्देह तार मध्ये राष्ट्रिक इतिहासेर आघात-प्रतिघात छिल। किन्तु तार सृष्टिते मानवजीवनेर सेइ सुखदुःखेर इतिहास या सकल इतिहासके अतिक्रम क'रे बराबर चले एसेछे कृषिक्षेत्रे, पल्लीपार्वणे, आपन प्रात्यहिक सुखदुःख निये—कखनो-बा मोगलराजत्वे, कखनो-बा इंरेजराजत्वे तार अति सरल मानवत्वप्रकाश नित्य चलेछे—सेइटेइ प्रतिबिम्बित हयेछिल 'गल्पगुच्छे', कोनो सामन्ततन्त्र नय, कोनो राष्ट्रतन्त्र नय। एखनकार समालोचकेरा ये विस्तीर्ण इतिहासेर मध्ये अबाधे सञ्चरण करेन तार मध्ये अन्तत बारो-आना परिमाण आमि जानिइ ने। बोध करि, सेइजन्यइ आमार विशेष करे राग हय। आमार मन बले, 'दूर होग गे तोमार इतिहास।' हाल धरे आछ आमार सृष्टिर तरीते सेइ आत्मा यार निजेर प्रकाशेर जन्य पुत्रेर स्नेह प्रयोजन, जगतेर नाना दृश्य नाना सुखदुःखके ये आत्मसात् क'रे विचित्र रचनार मध्ये आनन्द पाय ओ आनन्द वितरण करे। जीवनेर इतिहासेर सब कथा तो बला हल ना, किन्तु से इतिहास गौण। केवलमात्र सृष्टिकर्ता-मानुषेर आत्मप्रकाशेर कामनाय एइ दीर्घ युगयुगान्तर तारा प्रवृत्त हयेछे। सेइटेकेइ बड़ो करे देखो ये इतिहास सृष्टिकर्ता-मानुषेर सारथ्ये चलेछे विराटेर मध्ये—इतिहासेर अतीते से, मानवेर आत्मार केन्द्रस्थले। आमादेर

उपनिषदे ए कथा जेनेछिल एवं सेइ उपनिषदेर काछ थेके आमि ये वाणी ग्रहण करेछि से आमिइ करेछि, तार मध्ये आमारइ कर्तृत्व।

शान्तिनिकेतन। मे १९४१

[१९४१ के ग्रीष्म में प्रो० बुद्धदेव ने कवि से अपनी बातचीत के नोट ले लिए थे। रवीन्द्रनाथ ने बाद में इन्हे देखकर उनकी पुष्टी कर दी थी। ज्यैष्ट और आषाढ़ १३४८ के 'प्रवासी' में प्रकाशित।]

सप्तम खण्ड

प्राचीन साहित्य

१. रामायण

२. शकुन्तला

३. काव्ये उपेक्षिता

रामायण

श्रीयुक्त दीनेशचन्द्र सेन महाशयेर 'रामायणी कथा' र
भूमिका-स्वरूपे रचित

मोटामुटि काव्यके दुइ भाग करा याक। कोनो काव्य बा एकला कविर कथा, कोनो काव्य बा बृहत् सम्प्रदायेर कथा।

एकला कविर कथा बलिते एमन बुझाय ना ये ताहा आर-कोनो लोकेर अधिगम्य नहे, तेमन हइले ताहाके पागलामि बला याइत। ताहार अर्थ एइ ये, कविर मध्ये सेइ क्षमताटि आछे याहाते ताहार निजेर सुखदुःख निजेर कल्पना निजेर जीवनेर अभिज्ञतार भितर दिया विश्वमानवेर चिरन्तन हृदयावेग ओ जीवनेर मर्मकथा आपनि बाजिया उठे।

एइ येमन एक श्रेणीर कवि हइल, तेमनि आर-एक श्रेणीर कवि आछे याहार रचनार भितर दिया एकटि समग्र देश, एकटि समग्र युग, आपनार हृदयके, आपनार अभिज्ञताके व्यक्त करिया ताहाके मानवेर चिरन्तन सामग्री करिया तोले।

एइ द्वितीय श्रेणीर कविके महाकवि बला याय। समग्र देशेर समग्र जातिर सरस्वती इँहादिगके आश्रय करिते पारेन; इँहारा याहा रचना करेन ताहाके कोनो व्यक्तिविशेषेर रचना बलिया मने हय ना। मने हय, येन ताहा बृहत् वनस्पतिर मतो देशेर भूतलजठर हइते उद्भूत हइया सेइ देशकेइ आश्रयच्छाया दान करियाछे। कालिदासेर शकुन्तला-कुमारसम्भवे विशेषभावे कालिदासेर निपुण हस्तेर परिचय पाइ। किन्तु रामायण-महाभारतके, मने हय, येन जाह्नवी ओ हिमाचलेर न्याय ताहारा भारतेरइ, व्यास-वाल्मीकि उपलक्ष्य मात्र।

वस्तुत व्यास वाल्मीकि तो काहारओ नाम छिल ना। ओ तो एकटा उद्देशे नामकरण मात्र। एत बड़ो बृहत दुइटि ग्रन्थ, आमादेर समस्त भारतवर्ष-जोड़ा दुइटि काव्य, ताहादेर निजेर रचयिता कविदेर नाम हाराइया बसिया आछे—कवि आपन काव्येर एतइ अन्तराले पड़िया गेछे।

आमादेर देशे येमन रामायण-महाभारत, प्राचीन ग्रीसे तेमनि इलियड (ओ अडिसी) छिल। ताहारा समस्त ग्रीसेर हृत्पद्मसम्भव ओ हृदयपद्मवासी छिल।

कवि होमर आपन देशकालेर कण्ठे भाषा दान करियाछिलेन। सेइ वाक्य उत्सेर मतो स्व स्व-देशेर निगूढ़ अन्तस्तल हइते उत्सारित हइया चिरकाल धरिया ताहाके प्लावित करियाछे।

आधुनिक कोनो काव्येर मध्येइ एमन व्यापकता देखा याय ना। मिल्टनेर प्याराडाइस लस्ट्'एर भाषार गाम्भीर्य, छन्देर माहात्म्य, रसेर गभीरता यतइ थाक्-ना-केन, तथापि ताहा देशेर धन नहे, ताहा लाइब्रेरिर आदरेर सामग्री।

अतएव एइ गुटिकयेक मात्र प्राचीन काव्यके एक कोठाय फेलिया एक नाम दितेहइले महाकाव्य छाड़ा आर की नाम देओया याइते पारे? इँहारा प्राचीन-कालेर देवदैत्येर न्याय महाकाय छिलेन, इँहादेर जाति एखन लुप्त हइया गेछे।

प्राचीन आर्यसभ्यतार एक धारा युरोपे एवं एक धारा भारते प्रवाहित हइयाछे। युरोपेर धारा दुइ महाकाव्ये एवं भारतेर धारा दुइ महाकाव्ये आपनार कथा ओ संगीतके रक्षा करियाछे।

आमरा विदेशी, आमरा निश्चय बलिते पारि ना ग्रीस ताहार समस्त प्रकृतिके ताहार दुइ काव्ये प्रकाश करिते पारियाछे कि ना, किन्तु इहा निश्चय ये, भारतवर्ष रामायण-महाभारते आपनाके आर किछुइ बाकि राखे नाइ।

एइ जन्यइ शताब्दीर पर शताब्दी याइतेछे, किन्तु रामायण-महाभारतेर स्रोत भारतवर्षे आर लेशमात्र शुष्क हइतेछे ना। प्रतिदिन ग्रामे ग्रामे घरे घरे ताहा पठित हइतेछे; मुदिर दोकान हइते राजार प्रासाद पर्यन्त सर्वत्रइ ताहार समान समादर। धन्य सेइ कवि-युगलके, कालेर महाप्रान्तरेर मध्ये याँहादेर नाम हाराइया गेछे, किन्तु याँहादेर वाणी बहुकोटि नरनारीर द्वारे द्वारे आजिओ अजस्र धाराय शक्ति ओ शान्ति वहन करितेछे, शत शत प्राचीन शताब्दीर पलिमृत्तिका अहरह आनयन करिया भारतवर्षेर चित्तभूमिके आजिओ उर्वरा करिया राखितेछे।

एमन अवस्थाय रामायण महाभारतके केवलमात्र महाकाव्य बलिले चलिबे ना, ताहा इतिहासओ बटे। घटनावलीर इतिहास नहे ; कारण, सेरूप इतिहास समयविशेषके अवलम्बन करिया थाके, रामायण-महाभारत भारतवर्षेर चिर-कालेर इतिहास। अन्य इतिहास काले काले कतइ परिवर्तित हइल, किन्तु ए इतिहासेर परिवर्तन हय नाइ। भारतवर्षेर याहा साधना, याहा आराधना, याहा संकल्प, ताहारइ इतिहास एइ दुइ विपुल काव्यस्तम्भर मध्ये चिरकालेर सिंहासने विराजमान।

एइ कारणे रामायण-महाभारतेर ये समालोचना ताहा अन्य काव्य समालोचनार आदर्श हइते स्वतन्त्र। रामेर चरित्र उच्च कि नीच, लक्ष्मणेर चरित्र आमार भालो लागे कि मन्द लागे, एइ आलोचनाइ यथेष्ट नहे। स्तब्ध हइया श्रद्धार सहित विचार करिते हइबे समस्त भारतवर्ष अनेक सहस्र वत्सर इहादिगके किरूप-भावे ग्रहण करियाछे। आमि यत बड़ समालोचकइ हइ ना केन एकटि समग्र प्राचीन देशेर इतिहास प्रवाहित समस्त कालेर विचारेर निकट यदि आमार शिर नत ना हय तबे सेइ औद्धत्य लज्जारइ विषय।

रामायणे भारतवर्ष की बलितेछे, रामायणे भारतवर्ष कोन् आदर्शके महत् बलिया स्वीकार करियाछे, इहाइ वर्तमान क्षेत्रे आमादेर सविनये विचार करिबार विषय।

वीररसप्रधान काव्यकेइ एपिक बले, एइरूप साधारणेर धारणा। ताहार कारण, ये देशे ये काले वीररसेर गौरव प्राधान्य पाइयाछे से देशे से काले स्वभावतइ एपिक वीररसप्रधान हइया पड़ियाछे। रामायणेओ युद्धव्यापार यथेष्ट आछे, रामेर बाहुबलओ सामान्य नहे, किन्तु तथापि रामायणे ये रस सर्वापेक्षा प्राधान्य लाभ करियाछे ताहा वीररस नहे। ताहाते बाहुबलेर गौरव घोषित हय नाइ, युद्धघटनाइ ताहार मुख्य वर्णनार विषय नहे।

देवतार अवतारलीला लइयाइ ये ए काव्य रचित ताहाओ नहे। कवि वाल्मीकिर काछे राम अवतार छिलेन ना, तिनि मानुषइ छिलेन, पण्डितेरा इहार प्रमाण करिबेन। एइ भूमिकाय पाण्डित्येर अवकाश नाइ, एखाने एइटुकु संक्षेपे बलितेछि ये, कवि यदि रामायणे नरचरित्र वर्णना ना करिया देवचरित्र वर्णना करितेन तबे ताहाते रामायणेर गौरव ह्रास हइत। सुतरां ताहा काव्यांशे क्षतिग्रस्त हइत। मानुष बलियाइ रामचरित्र महिमान्वित।

आदिकाण्डेर प्रथम सर्गे वाल्मीकि ताँहार काव्येर उपयुक्त नायक सन्धान करिया यखन बहु गुणेर उल्लेख करिया नारदके जिज्ञासा करिलेन—

समग्रा रूपिणी लक्ष्मीः कमेकं संश्रिता नरम्।

कोन् एकटिमात्र नरके आश्रय करिया समग्रा लक्ष्मी रूप ग्रहण करियाछेन, तखन नारद कहिलेन—

देवेष्वपि न पश्यामि कश्चिदेभिर्गुणैर्युतम्

श्रूयतां तु गुणैरेभिर्योयुक्तो नरचन्द्रमाः।

एत गुणयुक्त पुरुष तो देवतादेर मध्ये देखि ना, तब ये नरचन्द्रमार मध्ये एइ-सकल गुण आछे ताँहार कथा शुन। रामायण सेइ नरचन्द्रमारइ कथा, देवतार

कथा नहे। रामायणे देवता निजेके खर्व करिया मानुष करेन नाइ, मानुषइ निजगुणे देवता हइया उठियाछेन।

मानुषेरइ चरम आदर्श-स्थापनार जन्य भारतेर कवि महाकाव्य रचना करियाछेन, एवं से दिन हइते आज पर्यन्त मानुषेर एइ आदर्शचरित-वर्णना भारतेर पाठक-मण्डली परमाग्रहेर सहित पाठ करिया आसितेछेन।

रामायणेर प्रधान विशेषत्व एइ ये, ताहा घरेर कथाकेइ अत्यन्त बृहत् करिया देखाइयाछे। पिता-पुत्रे भ्राताय-भ्राताय स्वामी-स्त्रीते ये धर्मेर बन्धन, ये प्रीति-भक्तिर सम्बन्ध, रामायण ताहाके एत महत् करिया तुलियाछे ये ताहा अति सहजेइ महाकाव्येर उपयुक्त हइयाछे। देशजय, शत्रुविनाश, दुइ प्रबल विरोधीपक्षेर प्रचण्ड आघात-संघात, एइ-समस्त व्यापारइ साधारणत महाकाव्येर मध्ये आन्दोलन ओ उद्दीपन सञ्चार करिया थाके। किन्तु रामायणेर महिमा राम-रावणेर युद्धके आश्रय करिया नाइ, से युद्धघटना राम ओ सीतार दाम्पत्य प्रीतिकेइ उज्ज्वल करिया देखाइबार उपलक्षमात्र। पितार प्रति पुत्रेर वश्यता, भ्रातार जन्य भ्रातार आत्मत्याग, पतिपत्नीर मध्ये परस्परेर प्रति निष्ठा ओ प्रजार प्रति राजार कर्तव्य कत दूर पर्यन्त याइते पारे रामायण ताहाइ देखाइयाछे। एइरूप व्यक्ति-विशेषेर प्रधानत घरेर सम्पर्कगुलि कोनो देशेर महाकाव्ये एमनभावे वर्णनीय विषय बलिया गण्य हय नाइ।

इहाते केवल कविर परिचय हय ना, भारतवर्षेर परिचय हय। गृह ओ गृहधर्म ये भारतवर्षेर पक्षे कतखानि इहा हइते ताहा बुझा याइबे। आमादेर देशे गार्हस्थ्य-आश्रमेर ये अत्यन्त उच्च स्थान छिल, एइ काव्ये ताहा सप्रमाण करितेछे। गृहाश्रम आमादेर निजेर सुखेर जन्य, सुविधार जन्य छिल ना; गृहाश्रम समस्त समाजके धारण करिया राखित ओ मानुषके यथार्थभावे मानुष करिया तुलित। गृहाश्रम भारतवर्षीय आर्यसमाजेर भित्ति। रामायण सेइ गृहाश्रमेर काव्य। एइ गृहाश्रमधर्मकेइ रामायण विसदृश अवस्थार मध्ये फेलिया वनवासदुःखेर मध्ये विशेष गौरव दान करियाछे। कैकेयी-मन्थरार कुचक्रान्तेर कठिन आघाते अयोध्यार राजगृहके विश्लिष्ट करिया दिया, तत्सत्त्वेओ एइ गृह-धर्मेर दुर्भेद्य दृढ़ता रामायण घोषणा करियाछे। बाहुबल नहे, जिगीषा नहे, राष्ट्रगौरव नहे, शान्त-रसास्पद गृहधर्मकेइ रामायण करूणार अश्रुजले अभिषिक्त करिया ताहाके सुमहत् वीर्येर उपर प्रतिष्ठित करियाछे।

श्रद्धाहीन पाठकेरा बलिते पारेन, एमन अवस्थाय चरित्रवर्णना अतिशयोक्तिते परिणत हइया उठे। यथायथेर सीमा कोन्खाने एवं कल्पनार कोन् सीमा लङ्घन करिले काव्य-कला अतिशये गिया पौंछे, एक कथाय ताहार मीमांसा

हइते पारे ना। विदेशी ये समालोचक बलियाछेन ये 'रामायणे चरित्रवर्णना' अतिप्राकृत हइयाछे' ताँहाके एइ कथा बलिब ये, प्रकृतिभेदे एकेर काछे याहा अतिप्राकृत अन्येर काछे ताहाइ प्राकृत। भारतवर्ष रामायणेर मध्ये अतिप्राकृतेर आतिशय्य देखे नाइ।

येखाने ये आदर्श प्रचलित ताहाके अतिमात्राय छाड़ाइया गेले सेखानकार लोकेर काछे ताहा ग्राह्यइ हय ना। आमादेर श्रुतियन्त्रे आमरा यतसंख्यक शब्दतरङ्गेर आघात उपलब्धि करिते पारि ताहार सीमा आछे, सेइ सीमार उपरेर सप्तके सुर चड़ाइले आमादेर कर्ण ताहाके ग्रहणइ करे ना। काव्य चरित्र एवं भाव-उद्भावन सम्बन्धेओ से कथा खाटे।

ए यदि सत्य हय तबे ए कथा सहस्र बत्सर धरिया प्रमाण हइया गेछे ये, रामायणकथा भारतवर्षेर काछे कोनो अंशे अतिमात्र हय नाइ। एइ रामायण-कथा हइते भारतवर्षेर आबालवृद्धवनिता आपामर साधारण केवल ये शिक्षा पाइयाछे ताहा नहे, आनन्द पाइयाछे; केवल ये इहाके शिरोधार्य करियाछे ताहा नहे, इहाके हृदयेर मध्ये राखियाछे; इहा ये केवल ताहादेर धर्मशास्त्र ताहा नहे, इहा ताहादेर काव्य।

राम ये एकइ काले आमादेर काछे देवता एवं मानुष, रामायण ये एकइ काले आमादेर काछे भक्ति एवं प्रीति पाइयाछे, इहा कखनोइ सम्भव हइत ना यदि एइ महाग्रन्थेर कवित्व भारतवर्षेर पक्षे केवल सुदूर कल्पलोकेरइ सामग्री हइत— यदि ताहा आमादेर संसारसीमार मध्येओ धरा ना दित।

एमन ग्रन्थके यदि अन्यदेशी समालोचक ताँहादेर काव्यविचारेर आदर्श-अनुसारे अप्राकृत बलेन, तबे ताँहादेर देशेर सहित तुलनाय भारतवर्षेर एकटि विशेषत्व आरओ परिस्फुट हइया उठे। रामायणे भारतवर्ष याहा चाय ताहा पाइयाछे।

रामायण, एवं महाभारतकेओ, आमि विशेषत एइ भावे देखि। इहार सरल अनुष्टप् छन्दे भारतवर्षेर सहस्र वत्सरेर हृत्पिण्ड स्पन्दित हइया आसियाछे।

सुहृद्वर श्रीयुक्त दीनेशचन्द्र सेन महाशय यखन ताँहार एइ रामायण-चरित्र-समालोचनार एकटि भूमिका लिखिया दिते आमाके अनुरोध करेन तखन आमार अस्वास्थ्य ओ अनवकाश-सत्त्वेओ ताँहार कथा आमि अमान्य करिते पारि नाइ। कविकथाके भक्तेर भाषाय आवृत्ति करिया तिनि आपन भक्तिर चरितार्थता साधन करियाछेन। एइरूप पूजार आवेगमिश्रित व्याख्याइ आमार मते प्रकृत समालोचना; एइ उपायेइ एक हृदयेर भक्ति आर-एक हृदये सञ्चारित हय। अथवा येखाने पाठकेर हृदयेओ भक्ति आछे सेखाने पूजाकारकेर भक्तिर हिल्लोल

तरंग जागाइया तोले। आमादेर आजकालकार समालोचना बाजार-दर याचाइ करा; कारण साहित्य एखन हाटेर जिनिस। पाछे ठकिते हय बलिया चतुर याचनदारेर आश्रय ग्रहण करिते सकले उत्सुक। एरूप याचाइ-व्यापारेर उपयोगिता अवश्य आछे, किन्तु तबु बलिब यथार्थ समालोचना पूजा, समालोचक पूजार पुरोहित, तिनि निजेर अथवा सर्व साधारणेर भक्तिविगलित विस्मयके व्यक्त करेन मात्र।

भक्त दीनेशचन्द्र सेइ पूजामन्दिरेर प्राङ्गणे दाँड़ाइया आरति आरम्भ करियाछेन। आमाके हठात् तिनि घण्टा नाड़िबार भार दिलेन। एक पार्श्वे दाँड़ाइया आमि सेइ कार्ये प्रवृत्त हइयाछि। आमि अधिक आडम्बर करिया ताँहार पूजा आच्छादन करिते कुण्ठित; आमि केवल एइ कथाटुकु मात्र जानाइते चाहि ये, वाल्मीकिर रामचरित-कथाके पाठकगण केवलमात्र कविर काव्य बलिया देखिबेन ना, ताहाके भारतवर्षेर रामायण बलिया जानिबेन। ताहा हइले रामायणेर द्वारा भारतवर्षके ओ भारतवर्षेर द्वारा रामायणके यथार्थभावे बुझिते पारिबेन। इहा स्मरण राखिबेन ये, कोनो ऐतिहासिक गौरवकाहिनी नहे, परन्तु परिपूर्ण मानवेर आदर्श चरित भारतवर्ष शुनिते चाहियाछिल, एवं आज पर्यन्त ताहा अश्रान्त आनन्देर सहित शुनिया आसितेछे। ए कथा बले नाइ ये, बड़ो बाड़ाबाड़ि हइतेछे; ए कथा बले नाइ ये, ए केवल काव्यकथा मात्र। भारतवासीर घरेर लोक एत सत्य नहे, राम लक्ष्मण सीता ताहार पक्षे यत सत्य।

परिपूर्णतार प्रति भारतवर्षेर एकटि प्राणेर आकांक्षा आछे। इहाके से वास्तव सत्येर अतीत बलिया अवज्ञा करे नाइ, अविश्वास करे नाइ। इहाकेओ से यथार्थ सत्य बलिया स्वीकार करियाछे एवं इहातेइ से आनन्द पाइयाछे। सेइ परिपूर्णतार आकांक्षाकेइ उद्बोधित ओ तृप्त करिया रामायणेर कवि भारतवर्षेर भक्तहृदयके चिरदिनेर जन्य किनिया राखियाछेन।

ये जाति खण्ड सत्यके प्राधान्य देन, याँहारा वास्तव सत्येर अनुसरणे क्लान्तिबोध करेन ना, काव्यके याँहारा प्रकृतिर दर्पणमात्र बलेन, ताँहारा जगते अनेक काज करितेछेन; ताँहारा विशेषभावे धन्य हइयाछेन; मानवजाति ताँहादेर काछे ऋणी। अन्य दिके याँहारा बलियाछेन 'भूमैव सुखं भूमात्वेव विजिज्ञासितव्यः' —याँहारा परिपूर्ण परिणामेर मध्ये समस्त खण्डतार सुषमा, समस्त विरोधेर शान्ति, उपलब्धि करिबार जन्य साधन करियाछेन—ताँहादेरओ ऋण कोनो काले परिशोध हइबार नहे। ताँहादेर परिचय विलुप्त हइले, ताँहादेर उपदेश विस्मृत हइले, मानवसभ्यता आपन धूलिधूमसमाकीर्ण कारखाना घरेर जनतामध्ये निश्वासकलुषित बद्ध आकाशे पले पले पीड़ित हइया, कृश हइया मरिते

थाकिबे। रामायण सेइ अखण्ड अमृतपिपासुदेरइ चिरपरिचय वहन करितेछे। इहाते ये सौभ्रात्र, ये सत्यपरता, ये पातिव्रत्य, ये प्रभुभक्ति वर्णित हइयाछे ताहार प्रति यदि सरल श्रद्धा ओ अन्तरेर भक्ति रक्षा करिते पारि तबे आमादेर कारखाना-घरेर वातायन-मध्ये महासमुद्रेर निर्मल वायु प्रवेशेर पथ पाइबे।

ब्रह्मचर्याश्रम। बोलपुर

५ पौष १३१०

[जनवरी १९०४ (पौष १३१०) के 'वङ्गदर्शन' में प्रकाशित। डा० दिनेशचन्द्र सेन की 'रामायणी कथा' की भूमिका के रूप में लिखित।]

शकुन्तला

शेक्स्पीयरेर टम्पेस्ट-नाटकेर सहित कालिदासेर शकुन्तलार तुलना मने सहजेइ उदय हइते पारे। इहादेर बाह्य सादृश्य एवं आन्तरिक अनैक्य आलोचना करिया देखिबार विषय।

निर्जनलालिता मिरान्दार सहित राजकुमार फार्दिनान्देर प्रणय तापस-कुमारी शकुन्तलार सहित दुष्मन्तेर प्रणयेर अनुरूप। घटनारस्थलटिरओ सादृश्य आछे; एक पक्षे समुद्रवेष्टित द्वीप, अपर पक्षे तपोवन।

एइरूपे उभयेर आख्यानमूले ऐक्य देखिते पाइ; किन्तु काव्यरसेर स्वाद सम्पूर्ण विभिन्न, ताहा पड़िलेइ अनुभव करिते पारि।

युरोपेर कविकुलगुरु गेटे एकटिमात्र श्लोके शकुन्तलार समालोचना लिखिया-छेन; तिनि काव्यके खण्डखण्ड, विच्छिन्न करेन नाइ। ताँहार श्लोकटि एकटि दीपवर्तिकार शिखार न्याय क्षुद्र, किन्तु ताहा दीपशिखार मतोइ समग्र शकुन्तलाके एक मुहूर्ते उद्भासित करिया देखाइबार उपाय। तिनि एक कथाय बलियाछेन, केह यदि तरुण वत्सरेर फुल ओ परिणत वत्सरेर फल, केह यदि मर्त ओ स्वर्ग एकत्रे देखिते चाय, तबे शकुन्तलाय ताहा पाइबे।

अनेके एइ कथाटि कविर उच्छ्वासमात्र मने करिया लघुभावे पाठ करिया थाकेन। ताँहारा मोटामुटि मने करेन, इहार अर्थ एइ ये, गेटेर मते शकुन्तला-काव्यखानि अति उपादेय। किन्तु ताहा नहे। गेटेर एइ श्लोकटि आनन्देर अभ्युक्ति नहे, इहा रसज्ञेर विचार। इहार मध्ये विशेषत्व आछे। कवि विशेषभावेइ बलियाछेन शकुन्तलार मध्ये एकटि गभीर परिणतिर भाव आछे, से परिणति फुल हइते फले परिणति, मर्त हइते स्वर्गे परिणति, स्वभाव हइते धर्मे परिणति। मेघदूते येमन पूर्वमेघ ओ उत्तरमेघ आछे—पूर्वमेघे पृथिवीर विचित्र सौन्दर्य पर्यटन करिया उत्तरमेघे अलकापुरीर नित्य सौन्दर्य उत्तीर्ण हइते हय—तेमनि शकुन्तलाय एकटि पूर्वमिलन ओ एकटि उत्तरमिलन आछे। प्रथम-अङ्क-वर्ती सेइ मर्तेर चञ्चल सौन्दर्यमय विचित्र पूर्वमिलन हइते स्वर्गतपोवने शाश्वत आनन्दमय उत्तरमिलने यात्राइ अभिज्ञानशकुन्तल नाटक। इहा केवल विशेष कोनो भावेर अवतारणा नहे, विशष कोनो चरित्रेर विकाश नहे; इहा समस्त काव्यके एक लोक हइते अन्य लोके लइया याओया—प्रेमके स्वभावसौन्दर्येर

देश हइते मङ्गलसौन्दर्येर अक्षय स्वर्गधामे उत्तीर्ण करिया देओया। एइ प्रसङ्गटि आमरा अन्य एकटि प्रबन्धे विस्तारितभावे आलोचना करियाछि, सुतरां एखाने ताहार पुनरुक्ति करिते इच्छा करि ना।

स्वर्ग ओ मर्तेर एइ-ये मिलन, कालिदास इहा अत्यन्त सहजेइ करियाछेन। फुलके तिनि एमनि स्वभावत फले फलाइयाछेन, मर्तेर सीमाके तिनि एमनि करिया स्वर्गेर सहित मिशाइया दियाछेन ये, माझे कोनो व्यवधान काहारओ चोखे पड़े ना। प्रथम अङ्के शकुन्तलार पतनेर मध्ये कवि मर्तेर माटि किछुइ गोपन राखेन नाइ। ताहार मध्ये वासनार प्रभाव ये कतदूर विद्यमान ताहा दुष्मन्त शकुन्तला उभयेर व्यवहारेइ कवि सुस्पष्ट देखाइयाछेन। यौवनमत्ततार हावभाव-लीलाचाञ्चल्य, परम लज्जार सहित प्रबल आत्मप्रकाशेर संग्राम, समस्तइ कवि व्यक्त करियाछेन। इहा शकुन्तलार सरलतार निदर्शन। अनुकूल अवसरे एइ भावावेशेर आकस्मिक आविर्भावेर जन्य से पूर्वे हइते प्रस्तुत छिल ना। से आपनाके दमन करिबार, गोपन करिबार उपाय करिया राखे नाइ। ये हरिणी व्याधके चेने ना ताहार कि बिद्ध हइते विलम्ब लागे? शकुन्तला पञ्चशरके ठिकमत चिनित ना, एइजन्यइ ताहार मर्मस्थान अरक्षित छिल। से ना कन्दर्पके, ना दुष्यन्तके, काहाकेओ अविश्वास करे नाइ। येमन, ये अरण्ये सर्वदाइ शिकार हइया थाके सेखाने व्याधके अधिक करिया आत्मगोपन करिते हय, तेमनि ये समाजे स्त्रीपुरुषेर सर्वदाइ सहजेइ मिलन हइया थाके सेखाने मीनकेतुके अत्यन्त सावधाने निजेके प्रच्छन्न राखिया काज करिते हय। तपोवनेर हरिणी येमन अशङ्कित तपोवनेर बालिकाओ तेमनि असतर्क।

शकुन्तलार पराभव येमन अति सहजे चित्रित हइयाछे तेमनि सेइ पराभवसत्त्वेओ ताहार चरित्रेर गभीरतर पवित्रता, ताहार स्वाभाविक अक्षुण्ण सतीत्व अति अनायासेइ परिस्फुट हइयाछे। इहाओ ताहार सरलतार निदर्शन। घरेर भितरे ये कृत्रिम फुल साजाइया राखा याय ताहार धुला प्रत्यह ना झाड़िले चले ना। किन्तु अरण्यफुलेर धुला झाड़िवार जन्य लोक राखिते हय ना—से अनावृत थाके, ताहार गाये धुलाओ लागे, तबु से केमन करिया सहजे आपनार सुन्दर निर्मलताटुकु रक्षा करिया चले। शकुन्तलाकेओ धुला लागियाछिल, किन्तु ताहा से निजे जानितेओ पारे नाइ; से अरण्येर सरला मृगीर मतो, निर्झरेर जलधारार मतो, मलिनतार संस्रवेओ अनायासेइ निर्मल।

कालिदास ताँहार एइ आश्रमपालिता उद्भिन्ननवयौवना शकुन्तलाके संशयविरहित स्वभावेर पथे छाड़िया दियाछेन, शेष पर्यन्त कोथाओ ताहाके बाधा देन नाइ। आबार अन्य दिके ताहाके अप्रगल्भा, दुःखशीला, नियमचारिणी, सतीधर्मेर

आदर्शरूपिणी करिया फुटाइया तुलियाछेन। एक दिके तरुलताफलपुष्पेर न्याय से आत्मविस्मृत, स्वभावधर्मेर अनुगता, आबार अन्य दिके ताहार अन्तरतर नारी-प्रकृति संयत, सहिष्णु, से एकाग्रतपःपरायणा, कल्याणधर्मेर शासने एकान्त नियन्त्रिता। कालिदास अपरूप कौशले ताँहार नायिकाके लीला ओ धैर्येर, स्वभाव ओ नियमेर, नदी ओ समुद्रेर ठिक मोहनार उपर स्थापित करिया देखाइयाछेन। ताहार पिता ऋषि, ताहार माता अप्सरा; व्रतभङ्गे ताहार जन्म, तपोवने ताहार पालन। तपोवन स्थानटि एमन येखाने स्वभाव एवं तपस्या, सौन्दर्य एवं संयम एकत्र मिलित हइयाछे। सेखाने समाजेर कृत्रिम विधान नाइ, अथच धर्मेर कठोर नियम विराजमान। गान्धर्व विवाह व्यापारटिओ तेमनि—ताहाते स्वभावेर उद्दामता-ओ आछे, अथच विवाहेर सामाजिक बन्धनओ आछे। बन्धन ओ अबन्धनेर सङ्गमस्थले स्थापित हइयाइ शकुन्तला-नाटकटि एकटि विशेष अपरूपत्व लाभ करियाछे। ताहार सुखदुःख मिलनविच्छेद समस्तइ एइ उभयेर घात-प्रतिघाते। गेटे ये केन ताँहार समालोचनाय शकुन्तलार मध्ये दुइ विसदृशेर एकत्र समावेश घोषणा करियाछेन ताहा अभिनिवेशपूर्वक देखिलेइ बुझा याय।

टेम्पेस्टे ए भावटि नाइ। केनइ बा थाकिबे? शकुन्तलाओ सुन्दरी मिरान्दाओ सुन्दरी, ताइ बलिया उभयेर नासाचक्षुर अविकल सादृश्य के प्रत्याशा करिते पारे? उभयेर मध्ये अवस्थार, घटनार, प्रकृतिर सम्पूर्ण प्रभेद। मिरान्दा ये निर्जनताय शिशुकाल हइते पालित शकुन्तलार से निर्जनता छिल ना। मिरान्दा एकमात्र पितार साहचर्ये बड़ो हइया उठियाछे, सुतरां ताहार प्रकृति स्वाभाविक-भावे विकशित हइबार आनुकूल्य पाय नाइ। शकुन्तला समानवयसी सखीदेर सहित वर्धित; ताहारा परस्परेर उत्तापे, अनुकरणे, भावेर आदान-प्रदाने, हास्य परिहासे कथोपकथने स्वाभाविक विकाश लाभ करितेछिल। शकुन्तला यदि अहरह कण्वमुनिर सङ्गेइ थाकित तबे ताहार उन्मेष बाधा पाइत, तबे ताहार सरलता अज्ञतार नामान्तर हइया ताहाके स्त्री-ऋष्यश्रृङ्ग करिया तुलिते पारित। वस्तुत शकुन्तलार सरलता स्वभावगत एवं मिरान्दार सरलता वहिर्घटनागत। उभयेर मध्ये अवस्थार ये प्रभेद आछे ताहाते एइरूपइ सङ्गत। मिरान्दार न्याय शकुन्तलार सरलता अज्ञानेर द्वारा चतुर्दिके परिरक्षित नहे। शकुन्तलार यौवन सद्य विकशित हइयाछे एवं कौतुकशीला सखीरा से सम्बन्धे ताहाके आत्म-विस्मृत थाकिते देय नाइ, ताहा आमरा प्रथम अंकेइ देखिते पाइ। से लज्जा करितेओ शिखियाछे। किन्तु ए सकलइ बाहिरेर जिनिस। ताहार सरलता गभीरतर, ताहार पवित्रता अन्तरतर। बाहिरेर कोनो अभिज्ञता ताहाके स्पर्श करिते पारे नाइ कवि ताहा शेष पर्यन्त देखाइयाछेन। शकुन्तलार सरलता

आभ्यन्तरिक। से ये संसारेर किछुइ जाने ना ताहा नहे; कारण, तपोवन समाजेर एकेबारे वहिर्वर्ती नहे, तपोवनेओ गृहधर्म पालित हइत। बाहिरेर सम्बन्धे शकुन्तला अनभिज्ञ बटे, तबु अज्ञ नहे। किन्तु ताहार अन्तरेर मध्ये विश्वासेर सिंहासन। सेइ विश्वासनिष्ठ सरलता ताहाके क्षणकालेर जन्य पतित करियाछे, किन्तु चिरकालेर जन्य उद्धार करियाछे; दारुणतम विश्वास-घातकतार आघातेओ ताहाके धैर्ये क्षमाय कल्याण स्थिर राखियाछे। मिरान्दार सरलतार अग्निपरीक्षा हय नाइ, संसारज्ञानेर सहित ताहार आघात घटे नाइ—आमरा ताहाके केवल प्रथम अवस्थार मध्ये देखियाछि, शकुन्तलाके कवि प्रथम हइते शेष अवस्था पर्यन्त देखाइयाछेन।

एमन स्थले तुलनाय समालोचना वृथा। आमराओ ताहा स्वीकार करि। एइ दुइ काव्यके पाशापाशि राखिले उभयेर ऐक्य अपेक्षा वैसादृश्यइ बेशि फुटिया उठे। सेइ वैसादृश्येर आलोचनातेओ दुइ नाटकके परिष्कार करिया बुझिबार सहायता करिते पारे। आमरा सेइ आशाय एइ प्रबन्धे हस्तक्षेप करियाछि।

मिरान्दाके आमरा तरङ्गघातमुखर शैलबन्धुर जनहीन द्वीपेर मध्ये देखियाछि, किन्तु सेइ द्वीपप्रकृतिर सहित ताहार कोनो घनिष्ठता नाइ। ताहार सेइ आ-शैशवधात्री भूमि हइते ताहाके तुलिया आनिते गेले ताहार कोनो जायगाय टान पड़िबे ना। सेखाने मिरान्दा मानुषेर सङ्ग पाय नाइ, एइ अभावटुकुइ केवल ताहार चरित्रे प्रतिफलित हइयाछे; किन्तु सेखानकार समुद्र-पर्वतेर सहित ताहार अन्तःकरणेर कोनो भावात्मक योग आमरा देखिते पाइ ना। निर्जन द्वीपके आमरा घटनाच्छले कविर वर्णनाय देखि मात्र, किन्तु मिरान्दार भितर दिया देखि ना। एइ द्वीपटि केवल काव्येर आख्यानेर पक्षेइ आवश्यक, चरित्रेर पक्षे अत्यावश्यक नहे।

शकुन्तला सम्बन्ध से कथा बला याय ना। शकुन्तला तपोवनेर अङ्गीभूत। तपोवनके दूरे राखिले केवल नाटकेर आख्यानभाग व्याघात पाय ताहा नहे, स्वयं शकुन्तलाइ असम्पूर्ण हय। शकुन्तला मिरान्दार मतो स्वतन्त्र नहे, शकुन्तला ताहार चतुर्दिकेर सहित एकात्मभावे विजड़ित। ताहार मधुर चरित्रखानि अरण्येर छाया ओ माधवीलतार पुष्पमञ्जरिर सहित व्याप्त ओ विकसित, पशु-पक्षीदेर अकृत्रिम सौहार्द्येर सहित निविड़भावे आकृष्ट। कालिदास ताँहार नाटके य बहिःप्रकृतिर वर्णना करियाछेन ताहाके बाहिरे फेलिया राखेन नाइ; ताहाके शकुन्तलार चरित्रेर मध्ये उन्मेषित करिया तुलियाछेन। सेइजन्य बलितेछिलाम, शकुन्तलाके ताहार काव्यगत परिवेष्टन हइते बाहिर करिया आना कठिन।

फार्दिनान्देर सहित प्रणय-व्यापारेइ मिरान्दार प्रधान परिचय। आर झड़ेर समय भग्नतरी हतभाग्यदेर जन्य व्याकुलताय ताहार व्यथित हृदयेर करुणा प्रकाश पाइयाछे। शकुन्तलार परिचय आरओ अनेक व्यापक। दुष्मन्त ना देखा दिलेओ ताहार माधुर्य विचित्रभावे प्रकाशित हइया उठित। ताहार हृदय-लतिका चेतन अचेतन सकलकेइ स्नेहेर ललित वेष्ठने सुन्दर करिया बाँधियाछे। से तपोवनेर तरुगुलिके जलसेचनेर सङ्गे सङ्गे सोदरस्नेहे अभिषिक्त करियाछे। से नवकुसुमयौवना वनज्योत्सनाके स्निग्ध दृष्टिर द्वारा आपनार कोमल हृदयेर मध्ये ग्रहण करियाछे। शकुन्तला यखन तपोवन त्याग करिया पतिगृहे याइतेछे तखन पदे पदे ताहार आकर्षण, पदे पदे ताहार वेदना। वनेर सहित मानुषेर विच्छेद ये एमन मर्मान्तिक सकरुण हइते पारे ताहा जगतेर समस्त साहित्येर मध्ये केवल अभिज्ञान-शाकुन्तलेर चतुर्थ अङ्के देखा याय। एइ काव्ये स्वभाव ओ धर्मनियमेर येमन मिलन मानुष ओ प्रकृतिर तेमनि मिलन। विसदृशेर मध्ये एमन एकान्त मिलनेर भाव बोध करि भारतवर्ष छाड़ा अन्य कोनो देशे सम्भवपर हइते पारे ना।

टेम्पेस्टे बहिःप्रकृति एरियेलेर मध्ये मानुष-आकार धारण करियाछे, किन्तु तबु से मानुषेर आत्मीयता हइते दूरे रहियाछे। मानुषेर सङ्गे ताहार अनिच्छुक भृत्येर सम्बन्ध। से स्वाधीन हइते चाय, किन्तु मानवशक्तिर द्वारा पीड़ित आबद्ध हइया दासेर मतो काज करितेछे। ताहार हृदये स्नेह नाइ, चक्षे जल नाइ। मिरान्दार नारीहृदयओ ताहार प्रति स्नेह विस्तार करे नाइ। द्वीप हइते यात्राकाले प्रस्पेरो ओ मिरान्दार सहित एरियेलेर स्निग्ध विदायसम्भाषण हइल ना। टेम्पेस्टे पीड़न, शासन, दमन; शकुन्तलाय प्रीति, शान्ति, सद्भाव। टम्पेस्टे प्रकृति मानुषेर आकार धारण करियाओ ताहार सहित हृदयेर सम्बन्धे बद्ध हय नाइ; शकुन्तलाय गाछपाला पशुपक्षी आत्मभाव रक्षा करियाओ मानुषेर सहित मधुर आत्मीयभावे मिलित हइया गेछे।

शकुन्तलार आरम्भेइ यखन धनुर्वाणधारी राजार प्रति एइ करुण निषेध उत्थित हइल 'भो भो राजन् आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः', तखन काव्येर एकटि मूल सुर बाजिया उठिल। एइ निषेधटि आश्रममृगेर सङ्गे सङ्गे तापस-कुमारी शकुन्तलाकेओ करुणाच्छादने आवृत करितेछे। ऋषि बलितेछेन—

मृदु ए मृगदेहे
मेरो ना शर।
आगुन देबे के हे
फुलेर 'पर!

कोथा हे महाराज,
मृगेर प्राण,
कोथाय येन बाज
तोमार वाण !

ए कथा शकुन्तला सम्बन्धेओ खाटे। शकुन्तलार प्रतिओ राजार प्रणयशर-निक्षेप निदारुण ! प्रणयव्यवसाये राजा परिपक्व ओ कठिन——कत कठिन, अन्यत्र ताहार परिचय आछे——आर एइ आश्रमपालिता बालिकार अनभिज्ञता ओ सरलता बड़ोइ सुकुमार ओ सकरुण। हाय, मृगटि येमन कातर वाक्ये रक्षणीय शकुन्तलाओ तेमनि। द्वौ अपि अत्र आरण्यकौ।

मृगेर प्रति एइ करुणावाक्येर प्रतिध्वनि मिलाइते ना मिलाइतेइ देखि, वल्कलवसना तापसकन्या सखीदेर सहित आलबाले जलपूरणे नियुक्त, तरु-सोदर ओ लता-भगिनीदेर मध्ये ताहार प्रात्यहिक स्नेहसेवार कर्मे प्रवृत्त। केवल वल्कलवसने नहे, भावे भङ्गीतेओ शकुन्तला येन तरुतलार मध्येइ एकटि। ताइ दुष्मन्त बलियाछेन——

अधर किसलय-राङिमा-आँका,
युगल बाहु येन कोमल शाखा,
हृदयलोभनीय कुसुम-हेन
तनुते यौवन फुटेछे येन !

नाटकेर आरम्भेइ शान्तिसौन्दर्यसंवलित एमन एकटि सम्पूर्ण जीवन निभृत पुष्प-पल्लवेर माझखाने प्रात्यहिक आश्रमधर्म, अतिथिसेवा, सखीस्नेह ओ विश्ववात्सल्य लइया आमादेर सम्मुखे देखा दिल। ताहा एमनि अखण्ड, एमनि आनन्दकर ये, आमादेर केवलइ आशङ्का हय, पाछे आघात लागिलेइ इहा भाङिया याय। दुष्मन्तके दुइ उद्यत बाहुर द्वारा प्रतिरोध करिया बलिते इच्छा हय, वाण मारियो ना, मारियो ना——एइ परिपूर्ण सौन्दर्यटि भाङियो ना !

यखन देखिते देखिते दुष्मन्त शकुन्तलार प्रणय प्रगाढ़ हइया उठितेछे तखन प्रथम अङ्केर शेषे नेपथ्ये अकस्मात् आर्तरव उठिल, 'भो भो तपस्विगण, तोमरा तपोवनप्राणीदेर रक्षार जन्य सतर्क हओ। मृगयाविहारी राजा दुष्मन्त प्रत्यासन्न हइयाछेन।'

इहा समस्त तपोवनभूमिर क्रन्दन, एवं सेइ तपोवनप्राणीदेर मध्ये शकुन्तलाओ एकटि। किन्तु ताहाके केह रक्षा करिते पारिल ना।

सेइ तपोवन हइते शकुन्तला यखन याइतेछे तखन कण्व डाक दिया बलिलेन, 'ओगो सन्निहित तपोवनतरुगण,—

तोमादेर जल ना करि दान
ये आगे जल ना करित पान,
साध छिल यार साजिते तबु
स्नेहे पाताटि ना छिँड़ित कभु,
तोमादेर फुल फुटित यबे
ये जन मातित महोत्सवे,
पतिगृहे सेइ बालिका याय,
तोमरा सकले देह विदाय !'

चेतन अचेतन सकलेर सङ्गे एमनि अन्तरङ्ग आत्मीयता, एमनि प्रीति ओ कल्याणेर बन्धन !

शकुन्तला कहिल, 'हला प्रियंवदे, आर्यपुत्रके देखिबार जन्य आमार प्राण आकुल, तबु आश्रम छाड़िया याइते आमार पा येन उठितेछे ना।'

प्रियंवदा कहिल, 'तुमिइ ये केवल तपोवनेर विरहे कातर ताहा नहे, तोमार आसन्नवियोगे तपोवनेरओ सेइ एकइ दशा—

मृगेर गलि पड़े मुखेर तृण,
मयूर नाचे ना ये आर,
खसिया पड़े पाता लतिका हते
येन से आँखिजलधार।'

शकुन्तला कण्वके कहिल, 'तात, एइ-ये कुटिरप्रान्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगबधू ए यखन निर्विघ्ने प्रसव करिबे तखन सेइ प्रिय संवाद निवेदन करिबार जन्य एकटि लोकके आमार काछे पाठाइया दियो।'

कण्व कहिलेन, 'आमि कखनओ भुलिब ना।'

शकुन्तला पश्चात् हइते बाधा पाइया कहिल, 'आरे, के आमार कापड़ धरिया टाने।'

कण्व कहिलेन, 'वत्से,—

इंगुदिर तैल दिते स्नेहसहकारे
कुशक्षत हले ुख यार,
श्यामाधान्यमुष्टि दिये पालियाछ यारे
एइ मृग पुत्र से तोमार।'

शकुन्तला ताहाके कहिल, 'ओरे बाछा, सहवासपरित्यागिनी आमाके आर केन अनुसरण करिस ! प्रसव करियाइ तोर जननी यखन मरियाछिल तखन

हइते आमिइ तोके बड़ो करिया तुलियाछि। एखन आमि चलिलाम, तात तोके देखिबेन, तुइ फिरिया या।'

एइरूपे समुदय तरुलता-गृहपक्षीर निकट हइते विदाय लइया काँदिते काँदिते शकुन्तला तपोवन त्याग करियाछे।

लतार सहित फुलेर येरूप सम्बन्ध तपोवनेर सहित शकुन्तलार सेइरूप स्वाभाविक सम्बन्ध।

अभिज्ञान-शकुन्तल नाटके अनसूया-प्रियंवदा येमन, कण्व येमन, दुष्मन्त येमन, तपोवनप्रकृतिओ तेमनि एकजन विशेष पात्र। एइ मूक प्रकृतिके कोनो नाटकेर भितरे ये एमन प्रधान एमन अत्यावश्यक स्थान देओया याइते पारे ताहा बोध करि संस्कृतसाहित्य छाड़ा आर कोथाओ देखा याय नाइ। प्रकृतिके मानुष करिया तुलिया ताहार मुखे कथावार्ता बसाइया रूपकनाटच रचित हइते पारे; किन्तु प्रकृतिके प्रकृत राखिया ताहाके एमन सजीव, एमन प्रत्यक्ष, एमन व्यापक, एमन अन्तरङ्ग करिया तोला, ताहार द्वारा नाटकेर एत कार्य साधन कराइया लओया, ए तो अन्यत्र देखि नाइ। बहिःप्रकृतिके येखाने दूर करिया, पर करिया भाबे—सेखाने मानुष आपनार चारि दिके प्राचीर तुलिया जगतेर सर्वत्र केवल व्यवधान रचना करिते थाके, सेखानकार साहित्ये एरूप सृष्टि सम्भवपर हइते पारे ना।

उत्तररामचरितेओ प्रकृतिर सहित मानुषेर आत्मीयवत् सौहार्द एइरूप व्यक्त हइयाछे। राजप्रासादे थाकियाओ सीतार प्राण सेइ अरण्येर जन्य काँदितेछे। सेखाने नदी तमसा ओ वसन्तवनलक्ष्मी ताँहार प्रियसखी, सेखाने मयूर ओ करिशिशु ताँहार कृतकपुत्र, तरुलता ताँहार परिजनवर्ग।

टेम्पेस्ट् नाटके मानुष आपनाके विश्वेर मध्ये मङ्गलभावे प्रीतियोगे प्रसारित करिया बड़ो हइया उठे नाइ; विश्वके खर्व करिया, दमन करिया, आपनि अधिपति हइते चाहियाछे। वस्तुत आधिपत्य लइया द्वन्द्व विरोध ओ प्रयासइ टेम्पेस्टेर मूलभाव। सेखाने प्रस्पेरो स्वराज्येर अधिकार हइते विच्युत हइया मन्त्रबले प्रकृतिराज्येर उपर कठोर आधिपत्य विस्तार करितेछेन। सेखाने आसन्न मत्युर हस्त हइते कोनोमते रक्षा पाइया ये कयजन प्राणी तीरे उत्तीर्ण हइयाछे ताहादेर मध्येओ एइ शून्यप्राय द्वीपेर भितरे आधिपत्य लइया षड़यन्त्र विश्वास-घातकताओ ओ गोपन हत्यार चेष्टा। परिनामे ताहार वृत्त हइल, किन्तु शेष हइल ए कथा केहइ बलिते पारे ना। दानवप्रकृति भये शासने ओ अवसरेर अभावे पीड़ित क्यालिवानेर मतो स्तब्ध रहिल मात्र, किन्तु ताहार दन्तमूले ओ नखाग्रे विष रहिया गेल। याहार याहा प्राप्य सम्पत्ति से ताहा पाइल। किन्तु

सम्पत्तिलाभ तो बाह्य लाभ, ताहा विषयीसम्प्रदायेर लक्ष्य हइते पारे, काव्येर ताहा चरम परिणाम नहे।

टेम्पेस्ट् नाटकेर नामओ येमन ताहार भितरकार व्यापारओ सेइरूप। मानुष प्रकृतिते विरोध, मानुषे मानुषे विरोध—एवं से विरोधेर मूले क्षमतालाभेर प्रयास। इहार आगागोड़ाइ विक्षोभ।

मानुषेर दुर्बाध्य प्रवृत्ति एइरूप झड़ तुलिया थाके। शासन-दमन-पीड़नेर द्वारा एइ-सकल प्रवृत्तिके हिंस्र पशुर मतो संयत करियाओ राखिते हय। किन्तु एइरूप बलेर द्वारा बलके ठकाइया राखा, इहा केवल एकटा उपस्थितमत काज चालाइबार प्रणाली मात्र। आमादेर आध्यात्मिक प्रकृति इहाकेइ परिणाम बलिया स्वीकार करिते पारे ना; सौन्दर्येर द्वारा, पाप एकेबारे भितर हइते विलुप्त विलीन हइया याइबे, इहाइ आमादेर आध्यात्मिक प्रकृतिर आकांक्षा। संसारे ताँहार सहस्र बाधा व्यतिक्रम थाकिलेओ इहार प्रति मानवेर अन्तरतर लक्ष एकटि आछे। साहित्य सेइ लक्ष्यसाधनेर निगूढ़ प्रयासके व्यक्त करिया थाके। से भालोके सुन्दर, से श्रेयके प्रिय, से पुण्यके हृदयेर धन करिया तोले। फलाफल-निर्णय ओ विभीषिका द्वारा आमादिगके कल्याणेर पथे प्रवृत्त राखा बाहिरेर काज--ताहा दण्डनीति ओ धर्मनीतिर आलोच्य हइते पारे--किन्तु उच्चसाहित्य अन्तरात्मार भितरेर पथटि अवलम्बन करिते चाय। ताहा स्वभावनिःसृत अश्रुजलेर द्वारा कलङ्क क्षालन करे, आन्तरिक घृणार द्वारा पापके दग्ध करे एवं सहज आनन्देर द्वारा पुण्यके अभ्यर्थना करे।

कालिदासओ ताँहार नाटके दुरन्त प्रवृत्तिर दावदाहके अनुतप्त चित्तेर अश्रुवर्षणे निर्वापित करियाछेन। किन्तु तिनि व्याधिके लइया अतिमात्राय आलोचना करेन नाइ; तिनि ताहार आभास दियाछेन, एवं दिया ताहार उपरे एकटि आच्छादन टानियाछेन। संसारे एरूप स्थले याहा स्वभावत हइते पारित ताहाके तिनि दुर्वासार शापेर द्वारा घटाइयाछेन। नतुबा ताहा एमन एकान्त निष्ठुर ओ क्षोभजनक हइत ये, ताहाते समस्त नाटकेर शान्ति ओ सामञ्जस्य भङ्ग हइया याइत। शकुन्तलाय कालिदास ये रसेर प्रति लक्ष्य करियाछेन एरूप अत्युत्कट आन्दोलने ताहा रक्षा पाइत ना। दुःखवेदनाके तिनि समानइ राखियाछेन, केवल वीभत्स कदर्यताके कवि आवृत करियाछेन।

किन्तु कालिदास सेइ आवरणेर मध्ये एतटुकु छिद्र राखियाछेन याहाते पापेर आभास पाओया याय। सेइ कथार उत्थापन करि।

पञ्चम अङ्के शकुन्तलार प्रत्याख्यान। सेइ अङ्केर आरम्भेइ कवि राजार प्रणयरङ्गभूमिर यवनिका क्षणकालेर जन्य एकटुखानि सराइया देखाइयाछेन।

राजप्रेयसी हंसपदिका नेपथ्ये संगीतशालाय आपनमने बसिया गान गाहितेछेन—

नवमधुलोभी ओगो मधुकर,
चतमञ्जरि चुमि
कमलनिवासे ये प्रीति पेयेछ
केमने भुलिले तुमि !

राजअन्तःपुर हइते व्यथित हृदयेर एइ अश्रुसिक्त गान आमादिगके बड़ो आघात करे। विशेष आघात करे एइजन्य ये, ताहार पूर्वेइ शकुन्तलार सहित दुष्मन्तेर प्रेमलीला आमादेर चित्त अधिकार करिया आछे। इहार पूर्व अङ्केइ शकुन्तला ऋषिवृद्ध कण्वेर आशीर्वाद ओ समस्त अरण्यानीर मङ्गलाचरण ग्रहण करिया बड़ो स्निग्धकरुण बड़ो पवित्रमधुर भावे पतिगृहे यात्रा करियाछे। ताहार जन्य ये प्रेमेर, ये गृहेर चित्र आमादेर आशापटे अङ्कित हइया उठे परवर्ती अङ्केर आरम्भेइ से चित्रे दाग पड़िया याय।

विदूषक यखन जिज्ञासा करिल 'एइ गानटिर अक्षरार्थ बुझिले कि' राजा ईषत् हासिया उत्तर करिलेन, 'सकृत्कृतप्रणयोऽयं जनः—आमरा एकबार मात्र प्रणय करिया ताहार परे छाड़िया दिइ, सेइजन्य देवी वसुमतीके लइया आमि इँहार महत् भर्त्सनेर योग्य हइयाछि। सखे माधव्य, तुमि आमार नाम करिया हंसपदिकाके बलो, बड़ो निपुणभावे तुमि आमाके भर्त्सना करियाछ।...... याओ, बेश नागरिकवृत्ति-द्वारा एइ कथाटि ताँहाके बलिबे।'

पञ्चम अङ्केर प्रारम्भे राजार चपल प्रणयेर एइ परिचय निरर्थक नहे। इहाते कवि निपुण कौशले जानाइयाछेन, दुर्वासार शापे याहा घटाइयाछे स्वभावेर मध्ये ताहार बीज छिल। काव्येर खातिरे याहाके आकस्मिक करिया देखानो हइयाछे ताहा प्राकृतिक।

चतुर्थ अङ्क हइते पञ्चम अङ्के आमरा हठात् आर-एक बातासे आसिया पड़िलाम। एतक्षण आमरा येन एकटि मानसलोके छिलाम; सेखानकार ये नियम एखानकार से नियम नहे। सेइ तपोवनेर सुर एखानकार सुरेर सङ्गे मिलिबे की करिया! सेखाने ये व्यापारटि सहज सुन्दर भावे अति अनायासे घटियाछिल एखाने ताहार की दशा हइबे ताहा चिन्ता करिले आशङ्का जन्मे। ताइ पञ्चम अङ्केर प्रथमे नागरिकवृत्तिर मध्ये यखन देखिलाम ये, एखाने हृदय बड़ो कठिन, प्रणय बड़ो कुटिल, एवं मिलनेर पथ सहज नहे, तखन आमादेर सेइ वनेर सौन्दर्यस्वप्न भाङिबार मतो हइल। ऋषिशिष्य शारङ्गरव राजभवने प्रवेश करिया कहिलेन, 'येन अग्निवेष्टित गृहेर मध्ये आसिया पड़िलाम!'

शारद्वत कहिलेन, 'तैलाक्तके देखिया स्नात व्यक्तिर, अशुचिके देखिया शुचि व्यक्तिर, सुप्तके देखिया जाग्रत जनेर, एवं बद्धके देखिया स्वाधीन पुरुषेर ये भाव मने हय, एइ-सकल विषयी लोकके देखिया आमार सेइरूप मने हइतेछे।' — एकटा ये सम्पूर्ण स्वतन्त्र लोकेर मध्ये आसिया पड़ियाछेन, ऋषिकुमारगण ताहा सहजेइ अनुभव करिते पारिलेन। पञ्चम अङ्केर आरम्भ कवि नानाप्रकार आभासेर द्वारा आमादिगके एइभावे प्रस्तुत करिया राखिलेन, याहाते शकुन्तलार प्रत्याख्यान-व्यापार अकस्मात् अतिमात्र आघात ना करे। हंसपदिकार सरल करुण गीते एइ क्रूरकाण्डेर भूमिका हइया रहिल।

ताहार परे प्रत्याख्यान यखन अकस्मात् वज्रेर मतो शकुन्तलार माथार उपरे भाङिया पड़िल तखन ए तपोवनेर दुहिता, विश्वस्त हस्त हइते वाणाहत मृगीर मतो, विस्मये त्रासे वेदनाय विह्वल हइया व्याकुल नेत्रे चाहिया रहिल। तपोवनेर पुष्पराशिर उपर अग्नि आसिया पड़िल। शकुन्तलाके अन्तरे बाहिरे छायाय-सौन्दर्ये आच्छन्न करिया ये-एकटि तपोवन लक्ष्ये अलक्ष्ये विराज करितेछिल ऐइ वज्राघाते ताहा शकुन्तलार चतुर्दिक हइते चिरदिनेर जन्य विश्लिष्ट हइया गेल; शकुन्तला एकेबारे अनावृत हइया पड़िल। कोथाय तात कण्व, कोथाय माता गौतमी, कोथाय अनसूया-प्रियंवदा, कोथाय सेइ-सकल तरुलता पशुपक्षीर सहित स्नहेर सम्बन्ध, माधुर्येर योग, सेइ सुन्दर शान्ति, सेइ निर्मल जीवन! एइ-एक मुहूर्तेर प्रलयाभिघाते शकुन्तलार ये कतखानि विलुप्त हइया गेल ताहा देखिया आमरा स्तम्भित हइया याइ। नाटकेर प्रथम चारि अङ्क ये सङ्गीतध्वनि उठिया-छिल ताहा एक मुहूर्तेइ निःशब्द हइया गेल।

ताहार परे शकुन्तलार चतुर्दिके की गभीर स्तब्धता, की विरलता। ये शकुन्तला कोमल हृदयेर प्रभावे ताहार चारि दिकेर विश्व जुड़िया सकलके आपनार करिया थाकित से आज की एकाकिनी! ताहार सेइ बृहत् शून्यताके शकुन्तला आपनार एकमात्र महत् दुःखेर द्वारा पूर्ण करिया विराज करितेछे। कालिदास ये ताहाके कण्वेर तपोवने फिराइया लइया यान नाइ, इहा ताँहार असामान्य कवित्वेर परिचय। पूर्वपरिचित वनभूमिर सहित ताहार पूर्वेर मिलन आर सम्भवपर नहे। कण्वाश्रम हइते यात्राकाले तपोवनेर सहित शकुन्तलार केवल बाह्यविच्छेदमात्र घटियाछिल, दुष्मन्तभवन हइते प्रत्याख्यात हइया से विच्छेद सम्पूर्ण हइल; से शकुन्तला आर रहिल ना। एखन विश्वेर सहित ताहार सम्बन्ध-परिवर्तन हइया गेछे, एखन ताहाके ताहार पुरातन सम्बन्धेर मध्ये स्थापन करिले असामञ्जस्य उत्कट निष्ठुरभावे प्रकाशित हइत। एखन एइ दुःखिनीर जन्य ताहार महत् दुःखेर उपयोगी विरलता आवश्यक। सखीविहीन नूतन

तपोवने कालिदास शकुन्तलार विरहदुःखेर प्रत्यक्ष अवतारणा करेन नाइ। कवि नीरव थाकिया शकुन्तलार चारिदिकेर नीरवता ओ शून्यता आमादेर चित्तेर मध्ये घनीभूत करिया दियाछेन। कवि यदि शकुन्तलाके कण्वाश्रमेर मध्ये फिराइया लइया एइरूप चुप करियाओ थाकितेन, तबु सेइ आश्रम कथा कहित। सेखानकार तरुलतार क्रन्दन, सखीजनेर विलाप, आपनि आमादेर अन्तरेर मध्ये ध्वनित हइते थाकित। किन्तु अपरिचित मारीचेर तपोवने समस्तइ आमादेर निकट स्तब्ध, नीरव; केवल विश्वविरहित शकुन्तलार नियमसंयत धैर्यगम्भीर अपरिमेय दुःख आमादेर मानस नेत्रेर सम्मुखे ध्यानासने विराजमान। एइ ध्यानमग्न दुःखेर सम्मुखे कवि एकाकी दाँड़ाइया आपन औष्ठाधरेर उपर तर्जनी स्थापन करियाछेन; एवं सेइ निषेधेर संकेते समस्तप्रश्नके नीरव ओ समस्त विश्वके दूरे अपसारित करिया राखियाछेन।

दुष्मन्त एखन अनुतापे दग्ध हइतेछेन। एइ अनुताप तपस्या। एइ अनुतापेर भितर दिया शकुन्तलाके लाभ ना करिले शकुन्तलार-लाभेर कोनो गौरव छिल ना। हाते पाइलेइ ये पाओया ताहा पाओया नहे; लाभ करा अत सहज व्यापार नय। यौवनमत्ततार आकस्मिक झड़े शकुन्तलाके एक मुहूर्ते उड़ाइया लइले ताहाके सम्पूर्णभावे पाओया याइत ना। लाभ करिबार प्रकृष्ट प्रणाली साधना, तपस्या। याहा अनायासेइ हस्तगत हइयाछिल ताहा अनायासेइ हाराइया गेल। याहा आवेशेर मुष्टिते आहृत हय ताहा शिथिलभावेइ स्खलित हइया पड़े। सेइजन्य कवि परस्परके यथार्थभावे चिरन्तनभावे लाभेर जन्य दुष्मन्त-शकुन्तलाके दीर्घ दुःसह तपस्याय प्रवृत्त करिलेन। राजसभाय प्रवेश करिबामात्र दुष्मन्त यदि तत्क्षणात् शकुन्वलाके ग्रहण करितेन तवे शकुन्तला हंसपदिकार दलवृद्धि करिया ताँहार अवरोधेर एक प्रान्ते स्थान पाइत। बहु-बल्लभ राजार एमन कत सुखलब्ध प्रेयसी क्षणकालीन सौभाग्येर स्मृतिटुकु मात्र लइया अनादरेर अन्धकारे अनावश्यक जीवन यापन करितेछे। सकृत्कृतप्रण-योऽयं जनः।

शकुन्तलार सौभाग्यवशतइ दुष्मन्त निष्ठुर कठोरतार सहित ताहाके परिहार करियाछिलेन। निजेर उपर निजेर सेइ निष्ठुरतार प्रत्यभिघातेइ दुष्मन्तके शकुन्तला सम्बन्धे आर अचेतन थाकिते दिल ना, अहरह परमवेदनार उत्तापे शकुन्तला ताँहार विगलित हृदयेर सहित मिश्रित हइते लागिल, ताहार अन्तर-बाहिरके ओतप्रोत करिया दिल। एमन अभिज्ञता राजार जीवने कखनओ हय नाइ; तिनि यथार्थ प्रेमेर उपाय ओ अवसर पान नाइ। राजा बलिया ए सम्बन्धे तिनि हतभाग्य। इच्छा ताहार अनायासेइ मिटे बलियाइ साधनार

धन ताहार अनायत्त छिल। एबारे विधाता कठिन दुःखर मध्य फेलिया राजाके प्रकृत प्रेमेर अधिकारी करियाछेन——एखन हइते ताँहार नागरिकवृत्ति एकेबारे बन्ध।

एइरूपे कालिदास पापके हृदयेर भितर दिक हइते आपनार अनले आपनि दग्ध करियाछेन; बाहिर हइते ताहाके छाइ-चापा दिया राखेन नाइ। समस्त अमङ्गलेर निःशेषे अग्निसत्कार करिया तबे नाटकखानि समाप्त हइयाछे, पाठकेर चित्त एकटि संशयहीन परिपूर्ण परिणतिर मध्ये शान्ति लाभ करियाछे। बाहिर हइते अकस्मात् बीज पड़िया ये विषवृक्ष जन्मे, भितर हइते गभीरभावे ताहाके निर्मूल ना करिलै ताहार उच्छेद हय ना। कालिदास दुष्मन्त-शकुन्तलार बाहिरेर मिलनके दुःखे-काटा पथ दिया लइया गिया अभ्यन्तरेर मिलने सार्थक करिया तुलियाछेन। एइजन्यइ कवि गेटे बलियाछेन, तरुण वत्सरेर फुल ओ परिणत वत्सरेर फल। मर्त एवं स्वर्ग, यदि केह एकाधारे पाइते चाय तबे शकुन्तलाय ताहा पाओया याइबे।

टेम्पेस्ट फार्दिनान्देर प्रेमके प्रस्पेरो कृच्छ्र साधन-द्वारा परीक्षा करिया लइयाछेन। किन्तु से बाहिरेर क्लेश। केवल कठोर बोझा वहन करिया परीक्षार शेष हय ना। आभ्यन्तरिक की उत्तापे ओ पेषणे अङ्गार हीरक हइया उठे कालिदास ताहा देखाइयाछेन। तिनि कालिमाके निजेर भितर हइतेइ उज्ज्वल करिया तुलियाछेन, तिनि भंगुरताके चाप-प्रयोगे दृढ़ता दान करियाछेन। शकुन्तलाय आमरा अपराधेर सार्थकता देखिते पाइ; संसारे विधातार विधाने पापओ ये की मङ्गलकर्मे नियुक्त आछे, कालिदासेर नाटके आमरा ताहार सुपरिणत दृष्टान्त देखिते पाइ। अपराधेर अभिघात व्यतीत मङ्गल ताहार शाश्वत दीप्ति ओ शक्ति लाभ करे ना।

शकुन्तलाके आमरा काव्येर आरम्भे एकटि निष्कलुष सौन्दर्यलोकेर मध्ये देखिलाम; सेखाने सरल आनन्दे से आपन सखीजन ओ तरुलतामृगेर सहित मिशिया आछे। सेइ स्वर्गेर मध्ये अलक्ष्ये अपराध आसिया प्रवेश करिल एवं सौन्दर्य कीटदष्ट पुष्पेर न्याय विदीर्ण स्रस्त हइया पड़िया गेल। ताहार परे लज्जा, संशय, दुःख, विच्छेद, अनुताप। एवं सर्वशेषे विशुद्धतर उन्नततर स्वर्गलोके क्षमा, प्रीति ओ शान्ति। शकुन्तलाके एकत्रे Paradise Lost एवं Paradise regained बला याइते पारे।

प्रथम स्वर्गटि बड़ो मृदु एव अरक्षित। यदिओ ताहा सुन्दर एवं सम्पूर्ण बटे, किन्तु पद्मपत्रे शिशिरेर मतो ताहा सद्यःपाती। एइ सङ्कीर्ण सम्पूर्णतार हइते मुक्ति पाओयाइ भालो; इहा चिरदिनेर नहे एवं इहाते आमादेर सर्वाङ्गीण

तृप्ति नाइ; अपराध मत्त गजेर न्याय आसिया एखानकार पद्मपत्रर वेड़ा भाङ्गिया दिल; आलोड़नेर विक्षोभे समस्त चित्तके उन्मथित करिया तुलिल। सहज स्वर्ग एइरूपे सहजेइ नष्ट हइल। बाकि रहिल साधनार स्वर्ग। आनुतापेर द्वारा, तपस्यार द्वारा, सेइ स्वर्ग यखन जित हइल तखन आर-कोनो शङ्का रहिल ना। ए स्वर्ग शाश्वत।

मानुषेर जीवन एइरूप। शिशु ये सरल स्वर्गे थाके ताहा सुन्दर, ताहा सम्पूर्ण, किन्तु क्षुद्र। मध्यवयसेर समस्त विक्षेप ओ विक्षोभ, समस्त अपराधेर आघात ओ अनुतापेर दाह, जीवनेर पूर्णविकाशेर पक्षे आवश्यक। शिशुकालेर शान्तिर मध्य हइते बाहिर हइया संसारेर विरोधविप्लवेर मध्ये ना पड़िले परिणत वयसेर परिपूर्ण शान्तिर आशा वृथा। प्रभातेर स्निग्धताके मध्याह्नतापे दग्ध करिया तबेइ सायाह्नेर लोकलोकान्तरव्यापी विराम। पापे अपराधे क्षणभंगुरके भाङ्गिया देय एवं अनुतापे वेदनाय चिरस्थायीके गड़िया तोले। शकुन्तला-काव्ये कवि सेइ स्वर्गच्युति हइते स्वर्गप्राप्ति पर्यन्त समस्त विवृत करियाछेन।

विश्वप्रकृति येमन बाहिरे प्रशान्त सुन्दर, किन्तु ताहार प्रचण्ड शक्ति अहरह अभ्यन्तरे काज करे, अभिज्ञान-शकुन्तल नाटकखानिर मध्ये आमरा ताहार प्रतिरूप देखिते पाइ। एमन आश्चर्य संयम आमरा आर कोनो नाटकेइ देखि नाइ। प्रवृत्तिर प्रवलता-प्रकाशेर अवसरमात्र पाइलेइ युरोपीय कविगण येन उद्दाम हइया उठेन। प्रवृत्ति ये कत दूर पर्यन्त याइते पारे ताहा अतिशयोक्तिद्वारा प्रकाश करिते ताँहारा भालोवासेन। शेक्स्पियरेर रोमियो-जुलियेट प्रभृति नाटके ताहार भूरि भूरि दृष्टान्त पाओया याय। शकुन्तलार मतो एमन प्रशान्तगभीर, एमन संयतसम्पूर्ण नाटक शेक्स्पियरेर नाट्यावलीर मध्ये एकखानिओ नाइ। दुष्मन्त-शकुन्तलार मध्ये येटुकु प्रेमालाप आछे ताहा अत्यन्त संक्षिप्त, ताहार अधिकांशइ आभासे इङ्गिते व्यक्त हइयाछे; कालिदास कोथाओ राश आल्गा करिया देन नाइ। अन्य कवि येखाने लेखनीके दौड़ दिबार अवसर अन्वेषण करित तिनि सेइखानेइ ताहाके हठात् निरस्त करियाछेन। दुष्मन्त तपोवन हइते राजधानीते फिरिया गिया शकुन्तलार कोनो खोंज लइतेछेन ना। एइ उपलक्ष्ये विलाप-परितापेर कथा अनेक हइते पारित, तबु शकुन्तलार मुखे कवि एकटि कथाओ देन नाइ। केवल दुर्वासार प्रति आतिथ्ये अनवधान लक्ष्य करिया हतभागिनीर अवस्था आमरा यथासम्भव कल्पना करिते पारि। शकुन्तलार प्रति कण्वेर एकान्त स्नेह विदाय काले की सकरुण गाम्भीर्य ओ संयमेर सहित कत अल्प कथातेइ व्यक्त हइयाछे।-अनुसूया-प्रियंवदार सखीविच्छेदवेदना क्षणे क्षणे दुटि-एकटि कथाय येन बाँध लङ्घन करिबार चेष्टा करिया तखनइ आबार अन्तरेर मध्ये निरस्त हइया याइतेछे।

प्रत्याख्यानदृश्ये भय लज्जा अभिमान अनुनय भर्त्सना विलाप समस्तइ आछे, अथच कत अल्पेर मध्ये ये शकुन्तला सुखेर समय सरल असंशये आपनाके विसर्जन दियाछिल दुःखेर समय दारुण अपमान-काले से ये आपन हृदयवृत्तिर अप्रगल्भ मर्यादा एमन आश्चर्य संयमेर सहित रक्षा करिबे, ए के मने करियाछिल। एइ प्रत्याख्यानेर परवर्ती नीरवता की व्यापक की गभीर! कण्व नीरव, अनुसूया-प्रियंवदा नीरव, मालिनीतीरतपोवन नीरव, सर्वापेक्षा नीरव शकुन्तला। हृदय-वृत्तिके आलोड़न करिया तुलिबार एमन अवसर कि आर-कोनो नाटके एमन निःशब्दे उपेक्षित हइयाछे? दुष्मन्तेर अपराधके दुर्वासार शापेर आच्छादने आवृत करिया राखा, सेओ कविर संयम। दुष्ट प्रवृत्तिर दुरन्तपनाके आवारित-भावे उच्छृंखलभावे देखाइबार ये प्रलोभन ताहा ो कवि संवरण करियाछेन। ताँहार काव्यलक्ष्मी ताँहाके निषेध करिया बलिलेन--

न खलु न खलु वाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे पुष्पराशाविवाग्निः।

दुष्मन्त यखन काव्येर मध्ये विपुल विक्षोभेर कारण लइया मत्त हइया प्रवेश करिलेन तखन कविर अन्तरेर मध्ये एइ ध्वनि उठिल।

मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयुथो
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः।

तपस्यार मूर्तिमान विघ्नेर न्याय गजराज धर्मारण्ये प्रवेश करियाछे—एइ-बार बुझि काव्येर शान्तिभङ्ग हय। कालिदास तखनइ धर्मारण्येर, काव्य-काननेर, एइ मूर्तिमान विघ्नके शापेर बन्धने संयत करिलेन; इहाके दिया ताँहार पद्मवनेर पङ्क आलोड़ित करिया तुलिते दिलेन ना।

युरोपीय कवि हइले एइखाने सांसारिक सत्येर नकल करितेन; संसारे ठिक येमन, नाटके ताहाइ घटाइतेन। शाप बा अलौकिक व्यापारेर द्वारा किछुइ आवृत्त करितेन ना। येन ताँहादेर 'परे समस्त दाबि केवल संसारेर, काव्येर कोनो दाबि नाइ। कालिदास संसारके काव्येर चेये बेशि खातिर करेन नाइ। पथे-घाटे याहा घटिया थाके ताहाके नकल करितेइ हइबे, एमन दासखत तिनि काहाकेओ लिखिया देन नाइ। किन्तु काव्येर शासन कविके मानितेइ हइबे। काव्येर प्रत्येक घटनाटिके समस्त काव्येर सहित ताँहाके खाप खाओयाइया लइतेइ हइबे। तिनि सत्येर आभ्यन्तरिक मूर्तिके अक्षुण्ण राखिया सत्येर बाह्य मूर्तिके ताँहार काव्यसौन्दर्येर सहित सङ्गत करिया लइयाछेन। तिनि अनताप ओ तपस्याके समुज्ज्वल करिया देखाइयाछेन, किन्तु पापके तिरस्करिणीर द्वारा किञ्चित प्रच्छन्न करियाछेन। शकुन्तला-नाटक प्रथम हइते शेष पर्यन्त ये एकटि शान्ति

सौन्दर्य ओ संयमेर द्वारा परिवेष्ठित, एरूप ना करिले ताहा विपर्यस्त हइया याइत। संसारेर नकल ठिक हइते, किन्तु काव्यलक्ष्मी सुकठोर आघात पाइतेन। कवि कालिदासेर करुणनिपुण लेखनीर द्वारा ताहा कखनोइ सम्भवपर हइत ना।

कवि एइरूपे बाहिरेर शान्ति ओ सौन्दर्यके कोथाओ अतिमात्र क्षुब्ध ना करिया ताँहार काव्येर आभ्यन्तरिक शक्तिके निस्तब्धतार मध्ये सर्वदा सक्रिय ओ सबल करिया राखियाछेन। एमन-कि, ताँहार तपोवनेर बहिःप्रकृतिओ सर्वत्र अन्तरेर काजेइ योग दियाछे। कखनओ-बा ताहा शकुन्तलार यौवन लीलाय आपनार लीला माधुर्य अर्पण करियाछे; कखनओ बा मङ्गल-आशीर्वादेर सहित आपनार कल्याण-मर्मर मिश्रित करियाछे; कखनओ-बा विच्छेद-कालीन व्याकुलतार सहित आपनार मूक विदायवाक्ये करुणा जड़ित करिया दियाछे एवं अपरूप मन्त्रबले शकुन्तलार चरित्रेर मध्ये एकटि पवित्र निर्मलता, एकटि स्निग्ध माधुर्येर रश्मि, नियत विकीर्ण करिया राखियाछे। एइ शकुन्तला-काव्ये निस्तब्धता यथेष्ट आछे, किन्तु सकलेर चेये निस्तब्धभावे अथच व्यापकभावे कविर तपोवन एइ काव्येर मध्ये काज करियाछे। से काज टेम्पेस्टेर एरियेलेर न्याय शासनबद्ध दासत्वेर बाह्य काज नहे; ताहा सौन्दर्येर काज, प्रीतिर काज, आत्मीयतार काज, अभ्यन्तरेर निगूढ़ काज।

टेम्पेस्टे शक्ति, शकुन्तलाय शान्ति। टेम्पेस्टे बलेर द्वारा जय, शकुन्तलाय मङ्गलेर द्वारा सिद्धि। टेम्पेस्टे अर्धपथे छेद, शकुन्तलाय सम्पूर्णताय अवसान। टेम्पेस्टेर मिरान्दा सरल माधुर्ये गठित, किन्तु से सरलतार प्रतिष्ठा अज्ञता अनभिज्ञतार उपरे, शकुन्तलार सरलता अपराधे, दुःखे, अभिज्ञताय धैर्ये ओ क्षमाय परिपक्व, गम्भीर ओ स्थायी। गेटेर समालोचनार अनुसरण करिया पुनर्बार बलि, शकुन्तलाय आरम्भेर तरुण सौन्दर्य मङ्गलमय परम परिणतिते सफलता लाभ करिया मर्तके स्वर्गेर सहित सम्मिलित करिया दियाछे।

आश्विन १३०९

[अक्टूबर १९०२ (आश्विन १३०९) के 'बंगदर्शन' में प्रकाशित]

काव्येर उपेक्षिता

कवि ताँहार कल्पना उत्सेर यत करुणावारि समस्तइ केवल जनकतनयार पुण्य अभिषेके निःशेष करियाछेन। किन्तु आर-एकटि ये म्लानमुखी ऐहिकेर-सर्वसुख-वञ्चिता राजबधू सीतादेवीर छायातले अवगुण्ठिता हइया दांड़ाइया आछेन कविकमण्डलु हइते एकबिन्दु अभिषेकबारिओ केन ताहार चिरदुःखाभितप्त नम्र ललाटे सिञ्चित हइल ना ! हाय अव्यक्तवेदना देवी उर्मिला, तुमि प्रत्युषेर तारार मतो महाकाव्येर सुमेरुशिखरे एकबारमात्र उदित हइयाछिले, तार परे अरुणालोके आर तोमाके देखा गेल ना। कोथाय तोमार उदयाचल, कोथाय बा तोमार अस्तशिखरी, ताहा प्रश्न करितेओ सकले विस्मृत हइल। काव्य-संसारे एमन दुटि-एकटि रमणी आछे याहारा कविकर्तृक सम्पूर्ण उपेक्षित हइयाओ अमरलोक हइते भ्रष्ट हय नाइ। पक्षपातकृपण काव्य ताहादेर जन्य स्थान-संकोच करियाछे बलियाइ पाठकेर हृदय अग्रसर हइया ताहादिगके आसन दान करे।

किन्तु एइ कविपरित्यक्तादेर मध्ये काहाके के हृदये आश्रय दिबेन ताहा पाठकविशेषेर प्रकृति एवं अभिरुचिर उपर निर्भर करे। आमि बलिते पारि, संस्कृत साहित्ये काव्ययज्ञशालार प्रान्तभूमिते ये-कयटि अनादृतार सहित आमार परिचय हइयाछे ताहार मध्ये ऊर्मिलाके आमि प्रधान स्थान दिइ।

बोध करि ताहार एकटा कारण, एमन मधुर नाम संस्कृत काव्ये आर द्वितीय नाइ। नामके याँहारा नाममात्र मने करेन, आमि ताँहादेर दले नइ। शेक्स्पीयर बलिया गेछेन, गोलापके ये-कोनो नाम देओया याक ताहार माधुर्येर तारतम्य हय ना। गोलाप सम्बन्धे हयतो ताहा खाटितेओ पारे; कारण, गोलापेर माधुर्य सङ्कीर्णसीमाबद्ध, ताहा केवल गुटिकतक सुस्पष्ट प्रत्यक्षगम्य गुणेर उपर निर्भर करे। किन्तु मानुषर माधुर्य एमन सर्वांशे सुगोचर नहे, ताहार मध्ये अनेकगुलि सूक्ष्म सुकुमार समावेश अनिर्वचनीयतार उद्रेक करे। ताहाके आमरा केवल इन्द्रियद्वारा पाइ ना, कल्पना-द्वारा सृष्टि करि। नाम सेइ सृष्टिकार्येर सहायता करे। एकबार मने करिया देखिलेइ हय, द्रौपदीर नाम यदि ऊर्मिला हइत तबे सेइ पञ्चवीरपति गर्विता क्षत्रनारीर दीप्त तेज एइ तरुण कोमल नामटिर द्वारा पदे पदे खण्डित हइत।

अतएव एइ नामटिर जन्य बाल्मीकिर निकट कृतज्ञ आछि। कविगुरु इहार प्रति अनेक अविचार करियाछेन, किन्तु दैवक्रमे इहार नाम ये माण्डवी अथवा श्रुतकीर्ति राखेन नाइ से एकटा विशेष सौभाग्य। माण्डवी ओ श्रुतकीर्ति सम्बन्धे आमरा किछु जानि ना, जानिबार कौतूहलओ राखि ना।

ऊर्मिलाके केवल आमरा देखिलाम बधूबेशे, विदेहनगरीर विवाहसभाय। तार परे यखन हइते से रघुराजकुलेर सुविपुल अन्तःपुरेर मध्ये प्रवेश करिल तखन हइते आर ताहाके एक दिनओ देखियाछि बलिया मने हय ना। सेइ ताहार विवाहसभार बधूबेशेर छबिटिइ मने रहिया गेल। ऊर्मिला चिरवधू—निर्वाक्-कुण्ठिता, निःशब्दचारिणी। भवभूतिर काव्येओ ताहार सेइ छबिटुकुइ मुहूर्तेर जन्य प्रकाशित हइयाछिल। सीता केवल सस्नेहकौतुके एकटिबारमात्र ताहार उपरे तर्जनी राखिया देवरके जिज्ञासा करिलेन, 'वत्स, इनि के?' लक्ष्मण लज्जित हास्ये मने मने कहिलेन, 'अहो, ऊर्मिलार कथा आर्या जिज्ञासा करितेछेन।' एइ बलिया तत्क्षणात् लज्जाय से छबि ढाकिया फेलिलेन; ताहार पर रामचन्द्रेर एत विचित्र सुखदुःखचित्रश्रेणीर मध्ये आर एकटिबारओ काहारओ कौतूहल-अंगुलि एइ छबिटिर उपरे पड़िल ना। से तो केवल बधू ऊर्मिला मात्र।

तरुण शुभ्र भाले ये दिन प्रथम सिन्दुरबिन्दुटि परियाछिलेन, ऊर्मिला चिर-दिनइ सेदिनकार नवबधू। किन्तु रामेर अभिषेक-मङ्गलाचरणेर आयोजने ये दिन अन्तःपुरिकागण व्यापृत छिल से दिन एइ बधूटिओ कि सीमान्तेर उपर अर्धावगुण्ठन टानिया रघुकुल-लक्ष्मीदेर सहित प्रसन्नकल्याणमुखे माङ्गल्यरचनाय निरतिशय व्यस्त छिल ना! आर, ये दिन अयोध्या अन्धकार करिया दुइ किशोर राजभ्राता सीतादेवीके सङ्गे लइया तपस्वीवेशे पथे बाहिर हइलेन से दिन बधू ऊर्मिला राजहर्म्येर कोन् निभृत शयनकक्षे धूलिशय्याय वृन्तच्यत मुकुलटिर मतो लुण्ठित हइया पड़ियाछिल ताहा कि केह जाने! सेदिनकार सेइ विश्वव्यापी विलापेर मध्ये एइ विदीर्यमान क्षुद्र कोमल हृदयेर असह्य शोक के देखियाछिल! ये ऋषि कवि क्रौञ्चविरहिणीर वैधव्यदुःख मुहूर्तेर जन्य सह्य करिते पारेन नाइ तिनिओ एकबार चाहिया देखिलेन ना।

लक्ष्मण रामेर जन्य सर्वप्रकारे आत्मविलोप साधन करियाछिलेन, से गौरव भारतवर्षेर गृहे गृहे आजओ घोषित हइतेछे। किन्तु सीतार जन्य ऊर्मिलार आत्मविलोप केवल संसारे नहे, काव्येओ। लक्ष्मण ताँहार देवतायुगलेर जन्य केवल निजेके उत्सर्ग करियाछिलेन; ऊर्मिला निजेर चेये अधिक निजेर स्वामीके दान करियाछिलेन, से कथा काव्ये लेखा हइल ना। सीतार अश्रुजले ऊर्मिला एकेबारे मुछिया गेल।

लक्ष्मण तो बारोबत्सर धरिया ताँहार उपास्य प्रियजनेर प्रियकार्ये नियुक्त छिलेन; नारीजीवनेर सेइ बारोटि श्रेष्ठ बत्सर ऊर्मिलार केमन करिया काटिया-छिल ! सलज्ज नवप्रेमे आमोदित विकाशोन्मुख हृदयमुकुलटि लइया स्वामीर सहित यखन प्रथमतम मधुरतम परिचयेर आरम्भसमय सेइ मुहूर्ते लक्ष्मण सीतादेवीर रक्तचरणक्षेपेर प्रति नतदृष्टि राखिया बने गमन करिलेन; यखन फिरिलेन तखन नववधूर सुचिरप्रणयालोकवञ्चित हृदये आर कि सेइ नवीनता छिल ! पाछे सीतार सहित ऊर्मिलार परम दुःख केह तुलना करे, ताइ कि कवि सीतार स्वर्णमन्दिर हइते एइ शोकोज्ज्वला महादुःखिनीके एकेबारे बाहिर करिया दियाछेन—जानकीर पादपीठ पार्श्वेओ बसाइते साहस करेन नाइ ?

संस्कृत काव्येर आर दुइटि तपस्विनी आमादेर चित्तक्षेत्रे तपोवन रचना करिया बास करितेछे। प्रियंवदा आर अनुसूया। ताहारा भर्तृगृहगामिनी शकुन्तलाके विदाय दिया पथेर मध्ये हइते काँदिते काँदिते फिरिया आसिल; नाटकेर मध्ये आर प्रवेश करिल ना, एकेबारे आमादेर हृदयेर मध्ये आसिया आश्रय ग्रहण करिल।

जानि, काव्येर मध्ये सकलेर समान अधिकार थाकिते पारे ना। कठिनहृदय कवि ताँहार नायक-नायिकार जन्य कत अक्षय प्रतिमा गड़िया गड़िया निर्ममचित्ते विसर्जन देन। किन्तु तिनि येखाने याहाके काव्येर प्रयोजन बुझिया निःशेष करिया फेलेन सेइखानेइ कि ताहार सम्पूर्ण शेष हय ? दीप्तरोष ऋषिशिष्यद्वय एवं हतबुद्धि रोरुद्यमाना गौतमी यखन तपोवने फिरिया आसिया उत्सुक उत्कण्ठित सखी-दुइटिके राजसभार वृत्तान्त जानाइल तखन ताहादेर की हइल से कथा शकुन्तला नाटकेर पक्षे एकेबारेइ अनावश्यक, किन्तु ताइ बलिया कि सेइ अकथित अपरिमेय वेदना सेइखानेइ क्षान्त हइया गेल ? आमादेर हृदयेर मध्ये कि विना छन्दे बिना भाषाय चिरदिन ताहा उद्भ्रान्त हइया फिरिते लागिल ना ?

काव्य हीरार टुकरार मतो कठिन। यखन भाबिया देखि प्रियंवदा-अनसूया शकुन्तलार कतखानि छिल, तखन सेइ कण्वदुहितार परमतम दुःखेर समयेइ सेइ सखीदिगके एकेबारेइ अनावश्यक अपवाद दिया सम्पूर्णरूपे वर्जन करा काव्येर पक्षे न्यायविचारसङ्गत हइते पारे, किन्तु ताहा निरतिशय निष्ठुर।

शकुन्तलार सुखसौन्दर्य गौरवगरिमा वृद्धि करिबार जन्यइ एइ दुटि लावण्य-प्रतिमा निजेर समस्त दिया ताहाके वेष्ठन करिया छिल। तिनटि सखी यखन जलेर घट लइया अकालविकशित नवमालतीर तले आसिया दाँड़ाइल तखन दुष्मन्त कि एका शकुन्तलाके भालोबासियाछिलेन ? तखन हास्ये कौतुके नव-यौवनेर विलोलमाधुर्ये काहारा शकुन्तलाके सम्पूर्ण करिया तुलियाछिल ? एइ

दुटि तापसी सखी। एका शकुन्तला शकुन्तलार एकतृतीयांश। शकुन्तलार अधिकांशइ अनसूया एवं प्रियम्वदा, शकुन्तलाइ सर्वापेक्षा अल्प। बारो-आना प्रेमालाप तो ताहाराइ सुचारुरूपे सम्पन्न करिया दिल। तृतीय अङ्के येखाने एकाकिनी शकुन्तलार सहित दुष्मन्तेर प्रेमाकुलता वर्णित आछे सेखाने कवि अनेकटा हीनबल हइयाछिलेन—कोनोमते अचिरे गौतमीके आनिया तिनि रक्षा पाइलेन—कारण, शकुन्तलाके याहारा आवृत करिया सम्पूर्ण करियाछिल ताहारा सेखाने छिल ना। वृन्तच्युत फुलेर उपर दिवसेर समस्त प्रखर आलोक सह्य हय ना; वृन्तेर बन्धन एवं पल्लवेर ईषत् अन्तराल व्यतीत से आलोक ताहार उपर तेमन कमनीय कोमल भावे पड़े ना। नाटकेर ओइ क'टि पत्रे सखीविरहिता शकुन्तला एतइ सुस्पष्टरूपे असहाय असम्पूर्ण अनावृत-भावे चोखे पड़े ये ताहार दिके येन भालो करिया चाहिते संकोच बोध हय; माझखाने आर्या गौतमीर आकस्मिक आविर्भावे पाठकमात्रेइ मने मने आराम लाभ करे।

आमि तो मने करि, राजसभाय दुष्मन्त शकुन्तलाके ये चिनिते पारेन नाइ ताहार प्रधान कारण, सङ्गे अनसूया प्रियम्बदा छिल ना। एके तपोवनेर बाहिरे, ताहाते खण्डिता शकुन्तला—चेना कठिन हइते पारे।

शकुन्तला विदाय लइलेन, ताहार परे सखीरा यखन शून्य तपोवने फिरिया आसिल तखन कि ताहादेर शैशवसहचरीर विरहइ ताहादेर एकमात्र दुःख? शकुन्तलार अभाव छाड़ा इतिमध्ये तपोवनेर आर कि कोनो परिवर्तन हय नाइ? हाय, ताहारा ज्ञानवृक्षेर फल खाइयाछे, याहा जानित ना ताहा जानियाछे। काव्येर काल्पनिक नायिकार विवरण पड़िया नहे, ताहादेर प्रियतमा सखीर विदीर्ण हृदयेर मध्ये अवतरण करिया। एखन हइते अपराह्णे आलवाले जल सेचन करिते कि ताहारा माझे माझे विस्मृत हइबे ना? एखन कि ताहारा माझे माझे पत्रमर्मरे सचकित हइया अशोकतरुर अन्तराले प्रच्छन्न कोनो आगन्तुकेर आशङ्का करिबे ना? मृगशिशु आर कि ताहादेर परिपूर्ण आदर पाइबे!

एखन सेइ सखीभावनिर्मुक्ता स्वतन्त्रा अनसूया एवं प्रियम्वदाके मर्मरित तपोवने ताहादेर निजेर जीवनकाहिनीसूत्रे अन्वेषण करिया फिरितेछि। ताहारा तो छाया नहे; शकुन्तलार सङ्गे सङ्गे ताहारा एक दिगन्त हइते अन्य दिगन्ते अस्त याय नाइ तो। ताहारा जीवन्त, मूर्तिमती। रचित काव्येर बहिर्देशे, अनभिनीत नाटचेर नेपथ्ये एखन ताहारा बाड़िया उठियाछे; अतिपिनद्ध बल्कले एखन ताहादेर यौवनके आर बाँधिया राखिते पारितेछे ना; एखन ताहादेर कलहास्यर उपर अन्तर्घन भावेर आवेग नववर्षार प्रथम मेघमालार मतो अश्रुगम्भीर छाया

फेलियाछे। एखन एक-एक दिन सेइ अन्यमनस्कादेर उटजप्राङ्गण हइते अतिथि आसिया फिरिया याय। आमराओ फिरिया आसिलाम ।

संस्कृत साहित्ये आर एकटि अनादृता आछे। ताहार सहित पाठकेर परिचयसाधन कराइते आमि कुण्ठित। से बड़ो केहइ नहे, से कादम्बरी-काहिनीर पत्रलेखा। से येखाने आसिया अति स्वल्प स्थाने आश्रय लइयाछे सेखान ताहार आसिबार कोनोप्रकार प्रयोजन छिल ना। स्थानटि ताहार पक्षे बड़ो सङ्कीर्ण, एकटु एदिके ओ दिके पा फेलिलेइ संकट।

एइ आख्यायिकाय पत्रलेखा ये सुकुमार सम्बन्धसूत्रे आवद्ध हइया आछे सेरूप सम्बन्ध आर कोनो साहित्ये कोथाओ देखि नाइ। अथच कवि अति सहजे सरलचित्ते एइ अपूर्व सम्बन्धबन्धनेर अवतारणा करियाछेन, कोनोखाने एइ ऊर्णातन्तुर प्रति एतटुकु टान पड़े नाइ याहाते मुहूर्तेकेर जन्य छिन्न हइबार आशङ्का-मात्र घटिते पारे।

युवराज चन्द्रापीड़ यखन अध्ययन सम्पूर्ण करिया प्रासादे फिरिया आसिलेन तखन एकदिन प्रभातकाले ताँहार गृहे कैलास नामे एक कञ्चुकी प्रवेश करिल —ताहार पश्चाते एकटि कन्या—अनतियौवना, मस्तके इन्द्रगोपकीटेर मतो रक्ताम्बरेर अवगुण्ठन, ललाटे चन्दनतिलक, कटिते हेममेखला, कोमलतनुलतार प्रत्येक रेखाटि येन सद्य नूतन अङ्कित, एइ तरुणी लावण्यप्रभाप्रभावे भवन पूर्ण करिया क्वणितमणिनूपुराकुलित चरणे कञ्चुकीर अनुगमन करिल।

कञ्चुकी प्रणाम करिया क्षितितले दक्षिण कर राखिया ज्ञापन करिल, कुमार आपनार माता महादेवी विलासवती जानाइतेछेन : एइ कन्या पराजित कुलुतेश्वरेर दुहिता, बन्दिनी, इहार नाम पत्रलेखा। एइ अनाथा राजदुहिताके आमि दुहिता-निर्विशेषे एतकाल पालन करियाछि, एक्षणे इहाके तोमार ताम्बुलकरङ्कवाहिनी करिया प्रेरण करिलाम। इहाके सामान्य परिजनेर मतो देखियो ना, बालिकार मतो लालन करिया निजेर चित्तवृत्तिर मतो चापल्य हइते निवारण करियो, शिष्यार न्याय देखियो, सुहृदेर न्याय समस्त विश्रम्भव्यापारे इहाके अभ्यन्तरे लइयो, एवं एइ कल्याणीके एमत-सकल कार्ये नियुक्त करियो याहाते ए तोमार अतिचिरपरिचारिका हइते पारे।'

कैलास एइ कथा बलितेइ पत्रलेखा ताँहाके अभिजात प्रणाम करिल एवं चन्द्रपीड़ ताहाके अनिमेष लोचने सुचिरकाल निरीक्षण करिया 'अम्बा येमन आज्ञा करिलेन ताहाइ हइबे' बलिया दूतके विदाय करिया दिलेन।

पत्रलेखा पत्नी नहे, प्रणयिनी ओ नहे, किंकरीओ नहे, पुरुषेर सहचरी। एइप्रकार अपरूप सखित्व दुइ समुद्रेर मध्यवर्ती एकटि बालुतटेर मतो। केमन

करिया ताहा रक्षा पाय ! नवयौवन कुमार-कुमारीर मध्ये अनादिकालेर ये चिरन्तन प्रबल आकर्षण आछे ताहा दुइ दिक हइतेइ एइ संकीर्ण बाँधटुकुके क्षय करिया लङ्घन करे ना केन !

किन्तु कवि सेइ अनाथा राजकन्याके चिरदिनइ एइ अप्रशस्त आश्रयेर मध्ये बसाइया राखियाछेन, एइ गण्डिर रेखामात्र बाहिरे ताहाके कोनो दिन टानेन नाइ। हतभागिनी बन्दिनीर प्रति कविर इहा अपेक्षा उपेक्षा आर की हइते पारे ? एकटि सूक्ष्म यवनिकार आड़ाले बास करियाओ से आपनार स्वाभाविक स्थान पाइल ना। पुरुषेर हृदयेर पार्श्वे से जागिया रहिल, किन्तु भितरे पदार्पण करिल ना। कोनोदिन एकटा असतर्क वसन्तेर बातासे एइ सखित्व-पर्दार एकटि प्रान्तओ उड़िया पड़िल ना !

अथच सखित्वेर मध्ये लेशमात्र अन्तराल छिल ना। कवि बलितेछेन, पत्रलेखा सेइ प्रथम दिन हइते चन्द्रापीड़ेर दर्शनमात्रेइ सेवारस-समुपजातानन्दा हइया, दिन नाइ, रात्रि नाइ, उपवेशने उत्थाने भ्रमणे, छायार मतो राजपुत्रेर पार्श्व परित्याग करिल ना। चन्द्रापीड़ेरओ ताहाके देखा अवधि प्रतिक्षणे-उपचीयमाना महती प्रीति जन्मिल। प्रतिदिन इहार प्रति प्रसाद रक्षा करिलेन एवं समस्त विश्वासकार्ये इहाके आत्महृदय हइते अव्यतिरिक्त मने करिते लागिलेन।

एइ सम्बन्धटि अपूर्व सुमधुर, किन्तु इहार मध्ये नारी-अधिकारेर पूर्णता नाइ। नारीर येरूप लज्जाबोधहीन सखीसम्पर्क थाकिते पारे पुरुषेर सहित ताहार सेइरूप असंकोच अनवच्छिन्न नैकट्ये पत्रलेखार नारीमर्यादार प्रति कादम्बरी-काव्येर ये-एकटा अवज्ञा प्रकाश पाय ताहाते कि पाठकके आघात करे ना ? किसेर आघात ? आशङ्कार नहे, संशयेर नहे। कारण, कवि यदि आशङ्का-संशयेरओ लेशमात्र स्थान राखितेन तबे सेटा आमरा पत्रलेखार नारीत्वेर प्रति कथञ्चित बलिया ग्रहण करिताम। किन्तु एइ दुटि तरुण-तरुणीर मध्ये लज्जा आशङ्का एवं सन्देहेर दोदुल्यमान स्निग्ध छायाटुकु पर्यन्त नाइ। पत्रलेखा ताहार अपूर्वसम्बन्धवशत अन्तःपुर तो त्यागइ करियाछे, किन्तु स्त्री पुरुष परस्पर समीपवर्ती हइले स्वभावतइ ये-एकटि संकोचे साध्वसे एमन-कि सहास्य छलनाय एकटि लीलान्वित कम्पमान मानसिक अन्तराल आपनि विरचित हइते पारे इहाँदेर मध्ये सेटुकुओ हय नाइ। सेइ कारणेइ एइ अन्तःपुरविच्युता अन्तःपुरिकार जन्य सर्वदाइ क्षोभ जन्मिते थाके।

चन्द्रापीड़ेर सहित पत्रलेखार नैकट्यओ असामान्य। दिग्‌विजययात्रार समय एकाइ हस्तिपृष्ठे पत्रलेखाके सम्मुखे बसाइया राजपुत्र आसन ग्रहण करेन। शिविरे रात्रिकाले चन्द्रापीड़ यखन निज शय्यार अनतिदूरे शयननिषण्ण पुरुषसखा

वैशम्पायनेर सहित आलाप करिते थाकेन तखन निकटे क्षितितलविन्यस्त कुथार उपर सखी पत्रलेखा प्रसुप्त थाके।

अवशेषे कादम्बरीर सहित चन्द्रापीड़ेर यखन प्रणयसङ्घटन हइल तखनओ पत्रलेखा आपन क्षुद्र स्थानटुकुर मध्ये अव्याहतभावे रहिल, कारण पुरुषचित्ते नारी यतटा आसन पाइते पारे ताहार सङ्कीर्णतम प्रान्तटुकुमात्र से अधिकार करियाछिल; सेखाने यखन महामहोत्सवेर जन्य स्थान करिते हइल तखन एटुकु प्रान्त हइते वञ्चित करा' आवश्यक हइल ना।

पत्रलेखार प्रति कादम्बरीर ईर्षार आभासमात्रओ छिल ना। एमन-कि चन्द्रापीड़ेर सहित पत्रलेखार प्रीतिसम्बन्ध बलियाइ कादम्बरी ताहाके प्रिय-सखीज्ञाने सादरे ग्रहण करिल। कादम्बरी काव्येर मध्ये पत्रलेखा ये अपरूप भूखण्डेर मध्ये आछे सेखाने ईर्षा संशय संकट वेदना किछुइ नाइ; ताहा स्वर्गेर न्याय निष्कण्टक, अथच सेखाने स्वर्गेर अमृतबिन्दु कइ!

प्रेमेर उच्छ्वसित-अमृत-पान ताहार सम्मुखेइ चलितेछे। घ्राणेओ कि कोनो दिनेर जन्य ताहार कोनो-एकटा शिरार रक्त चञ्चल हइया उठे नाइ! से कि चन्द्रापीड़ेर छाया! राजपुत्रेर तप्त यौवनेर तापटुकुमात्र कि ताहाके स्पर्श करे नाइ। कवि से प्रश्नेर उत्तरटुकुओ दिते उपेक्षा करियाछेन। काव्य-सृष्टिर मध्ये से एत उपेक्षिता।

पत्रलेखा यखन कियत्काल कादम्बरीर सहित एकत्रवासेर पर वार्तासह चन्द्रापीड़ेर निकट फिरिया आसिल, यखन स्मितहास्येर द्वारा दूर हइतेइ चन्द्रापीड़ेर प्रति प्रीति प्रकाश करिया से नमस्कार करिल, तखन पत्रलेखा प्रकृतिवल्लभा हइलेओ कादम्बरीर निकट हइते प्रसादलब्ध आर-एकटि सौभाग्येर न्याय वल्लभतरता प्राप्त हइल एवं ताहाके अतिशय आदर देखाइया युवराज आसन हइते उत्थित हइया आलिङ्गन करिलेन।

चन्द्रापीड़ेर एइ आदर सह आलिङ्गनेर द्वाराइ पत्रलेखा कविकर्तृक अनादृता। आमरा बलि, कवि अन्ध। कादम्बरी एवं महाश्वेतार दिकेइ क्रमागत एक-दृष्टे चाहिया ताँहर चक्षु झलसिया गेछे, एइ क्षुद्र वन्दिनीटिके तिनि देखिते पान नाइ। इहार मध्ये ये प्रणयतृषार्त चिरवञ्चित एकटि नारीहृदय रहिया गेछे, से कथा तिनि एकेबारे विस्मृत हइयाछेन। वाणभट्टेर कल्पना मुक्तहस्त; अस्थाने अपात्रेओ तिनि अजस्र वर्षण करिया चलियाछेन। केवल ताँहार समस्त कृपणता एइ विगतनाथा राजदुहितार प्रति। तिनि पक्षपातदुषित परम अन्धता-वशत पत्रलेखार हृदयेर निगूढ़तम कथा किछुइ जानितेन ना। तिनि मने करितेछेन, तरङ्गलीलाके तिनि येपर्यन्त आसिबार अनुमति करियाछेन से सेइ पर्यन्त आसियाइ

थामिया आछे, पूर्णचन्द्रोदयेओ से ताँहार आदेश अग्राह्य करे नाइ। ताइ कादम्बरी पड़िया केवलइ मने हय, अन्य समस्त नायिकार कथा अनावश्यक बाहुल्येर सहित वर्णित हइयाछे, किन्तु पत्रलेखार कथा किछुइ बला हय नाइ।

ज्यैष्ठ १३०७

[अक्टूबर-नवम्बर १८९९ (आश्विन-कार्तिक १३०६) के 'प्रदीप' में प्रकाशित]

अष्टम खण्ड

लोक साहित्य

१. छेले भुलानो छड़ा

छेले भुलानो छड़ा

बांला भाषाय छेले भुलाइबार जन्य ये-सकल मेयेलि छड़ा प्रचलित आछे, किछुकाल हइते आमि ताहा संग्रह करिते प्रवृत्त छिलाम। आमादेर भाषा एवं समाजेर इतिहास-निर्णयेर पक्षे सेइ छड़ागुलिर विशेष मूल्य थाकिते पारे, किन्तु ताहादेर मध्ये ये एकटि सहज स्वाभाविक काव्यरस आछे सेइटिइ आमार निकट अधिकतर आदरणीय बोध हइयाछिल।

आमार काछे कोन्‌टा भालो लागे बा ना लागे सेइ कथा बलिया समालोचनार मुखबन्ध करिते भय हय। कारण, याँहारा सुनिपुण समालोचक एरूप रचनाके ताँहारा अहमिका बलिया अपराध लइया थाकेन।

ताँहादेर निकट आमार सविनय निवेदन एइ ये, ताँहारा विवेचना करिया देखिबेन एरूप अहमिका अहंकार नहे, परन्तु ताहार विपरीत। याँहारा उपयुक्त समालोचक ताँहादेर निकट एकटा दाँड़िपाल्ला आछे; ताँहारा साहित्येर एकटा बाँधा ओजन एवं सेइ सङ्गे अनेकगुलि बाँधि बोल बाहिर करियाछेन; ये-कोनो रचना ताँहादेर निकट उपस्थित करा याय निःसंकोचे ताहार पृष्ठे उपयुक्त नम्बर एवं छाप मारिया दिते पारेन।

किन्तु अक्षमता एवं अनभिज्ञता-वशत सेइ ओजनटि याँहारा पान नाइ, समालोचनास्थले ताँहादिगके एकमात्र निजेर अनुराग-विरागेर उपर निर्भर करिते हय। अतएव सेरूप लोकेर पक्षे साहित्य सम्बन्धे वेदवाक्य प्रचलित करिते याओयाइ स्पर्धार कथा। कोन् लेखा भालो अथवा मन्द ताहा प्रचार ना करिया कोन् लेखा आमार भालो लागे बा मन्द लागे सेइ कथा स्वीकार कराइ ताँहादेर उचित।

यदि केह प्रश्न करेन, से कथा के सुनिते चाय, आमि उत्तर करिब, साहित्ये सेइ कथा सकल मानुष शुनिया आसितेछे। साहित्येर समालोचनाकेइ बला हइया थाके, किन्तु अधिकांश साहित्यइ प्रकृति ओ मानवजीवनेर समालोचना मात्र। प्रकृति सम्बन्धे, मनुष्य सम्बन्धे, घटना सम्बन्धे कवि यखन निजेर आनन्द विषाद विस्मय प्रकाश करेन एवं ताँहार निजेर सेइ मनोभाव केवलमात्र आवेगेर द्वारा ओ रचना-कौशले अन्येर मने सञ्चारित करिया दिवार चेष्टा करेन; तखन ताँहाके केह अपराधी करे ना। तखन पाठक ओ अहमिका-सहकारे

केवल एकटुकु देखेन ये 'कविर कथा आमार मनेर सहित मिलितेछे कि ना'। काव्य-समालोचकओ यदि युक्तितर्क एवं श्रेणीनिर्णयेर दिक छाड़िया दिया काव्य-पाठ-जात मनोभाव पाठकगणके उपहार दिते उद्यत हन तबे सेजन्य ताँहाके दोषी करा उचित हय ना।

विशेषत आज आमि ये कथा स्वीकार करिते बसियाछि ताहार मध्ये आत्म-कथार किञ्चित् अंश थाकितेइ हइबे। छेलेभुलानो छड़ार मध्ये आमि ये रसा-स्वाद करि छेलेबेलाकार स्मृति हइते ताहाके विच्छिन्न करिया देखा आमार पक्षे असम्भव। सेइ छड़ागुलिर माधुर्य कतटा निजेर बाल्यस्मृति एवं कतटा साहित्येर चिरस्थायी आदर्शेर उपर निर्भर करितेछे ताहा निर्णय करिबार उपयुक्त विश्लेषण-शक्ति वर्तमान लेखकेर नाइ। ए कथा गोड़ातेइ कबुल करा भालो।

'वृष्टि पड़े टापुर-टुपुर नदी एल बान' एइ छड़ाटि बाल्यकाले आमार निकट मोहमन्त्रेर मतो छिल एवं सेइ मोह एखनो आमि भुलिते पारि नाइ। आमि आमार सेइ मनेर मुग्ध अवस्था स्मरण करिया ना देखिले स्पष्ट बुझिते पारिब ना छड़ार माधुर्य एवं उपयोगिता की। बुझिते पारिब ना, केन एत महाकाव्य, एत तत्त्वकथा एवं नीतिप्रचार, मानवेर एत प्राणपण प्रयत्न, एत गलद्धर्म व्यायाम प्रतिदिन व्यर्थ एवं विस्मृत हइतेछे, अथच एइ-सकल असंगत अर्थहीन यदृच्छाकृत श्लोकगुलि लोकस्मृतिते चिरकाल प्रवाहित हइया आसितेछे।

एइ सकल छड़ार मध्ये एकटि चिरत्व आछे। कोनोटिर कोनो काले कोनो रचयिता छिल बलिया परिचय मात्र नाइ एवं कोन् शकेर कोन् तारिखे कोन्टा रचित हइयाछिल एमन प्रश्नओ काहारओ मने उदय हय ना। एइ स्वाभाविक चिरत्वगुणे इहारा आज रचित हइलेओ पुरातन एवं सहस्र वत्सर पूर्वे रचित हइलेओ नूतन।

भालो करिया देखिते गेले शिशुर मतो पुरातन आर किछुइ नाइ। देश काल शिक्षा प्रथाअनुसारे वयस्क मानवेर कत नूतन परिवर्तन हइयाछे, किन्तु शिशु शत सहस्र वत्सर पूर्वे येमन आजओ तेमनि आछे; सेइ अपरिवर्तनीय पुरातन बारम्बार मानवेर घरे शिशुमूर्ति धरिया जन्मग्रहण करितेछे, अथच सर्वप्रथम दिन से येमन नवीन, येमन सुकुमार, येमन मूढ़, येमन मधुर छिल आजओ ठिक तेमनि आछे। एइ नवीन चिरत्वेर कारण एइ ये, शिशु प्रकृतिर सृजन; किन्तु वयस्क मानुष बहुलपरिमाणे मानुषेर निजकृत रचना। तेमनि छड़ागुलिओ शिशु-साहित्य; ताहारा मानवमने आपनि जन्मियाछे।

आपनि जन्मियाछे ए कथा बलिबार एकटु विशेष तात्पर्य आछे। स्वभावत आमादेर मनेर मध्ये विश्वजगतेर प्रतिबिम्ब एवं प्रतिध्वनि छिन्नविच्छिन्नभावे

घुरिया बेड़ाय। ताहारा विचित्र रूप धारण करे एवं अकस्मात् प्रसङ्ग हइते प्रसङ्गान्तरे गिया उपनीत हय। येमन वातासेर मध्ये पथेर धूलि, पुष्पेर रेणु, असंख्य गन्ध, विचित्र शब्द, विच्छिन्न पल्लव, जलेर शीकर, पृथिवीर वाष्प—एइ आवर्तित आलोड़ित जगतेर विचित्र उत्क्षिप्त उड्डीन खण्डांशसकल सर्वदाइ निरर्थकभावे घुरिया फिरिया बेड़ाइतेछे, आमादेर मनेर मध्येओ सेइरूप। सेखानेओ आमादेर नित्यप्रवाहित चेतनार मध्ये कत वर्ण गन्ध शब्द, कत कल्पनार वाष्प, कत चिन्तार आभास, कत भाषार छिन्न खण्ड, आमादेर व्यवहारजगतेर कत शत परित्यक्त विस्मृत विच्युत पदार्थसकल अलक्षित अनावश्यक भावे भासिया भासिया बेड़ाय।

यखन आमरा सचेतन भावे कोनोएकटा विशेष दिके लक्ष करिया चिन्ता करि तखन एइ-समस्त गुञ्जन थामिया याय, एइ-समस्त रेणुजाल उड़िया याय, एइ-समस्त छायामयी मरीचिका मुहूर्तेर मध्ये अपसारित हय; आमादेर कल्पना, आमादेर बुद्धि एकटा विशेष ऐक्य अवलम्बन करिया एकाग्रभावे प्रवाहित हइते थाके। आमादेर मन-नामक पदार्थटि एत अधिक प्रभुत्वशाली ये, से यखन सजाग हइया बाहिर हइया आसे तखन ताहार प्रभावे आमादेर अन्तर्जगतेर एवं बहिर्जगतेर अधिकांशइ समाच्छन्न हइया याय—ताहारइ शासने, ताहारइ विधाने, ताहारइ कथाय, ताहारइ अनुचर-परिचरे निखिल संसार आकीर्ण हइया थाके। भाविया देखो, आकाशे पाखिर डाक, पातार मर्मर, जलेर कल्लोल, लोकालयेर मिश्रित ध्वनि, छोटो बड़ो कत सहस्रप्रकार कलशब्द निरन्तर ध्वनित हइतेछे—एवं आमादेर चतुर्दिके कत कम्पन, कत आन्दोलन, कत गमन, कत आगमन, छाया-लोकेर कतइ चञ्चल लीलाप्रवाह प्रतिनियत आवर्तित हइतेछे—अथच ताहार मध्ये कतइ यत्सामान्य अंश आमादेर गोचर हइया थाके; ताहार प्रधान कारण एइ ये, धीवरेर न्याय आमादेर मन ऐक्यजाल फेलिया एकेबारे एक क्षेपे यतखानि धरिते पारे सेइ-टुकु ग्रहण करे, बाकि समस्तइ ताहाके एड़ाइया याय। से यखन देखे तखन भालो करिया शोने ना, यखन शोने तखन भालो करिया देखे ना एवं से यखन चिन्ता करे तखन भालो करिया देखेओ ना, शोनेओ ना। ताहार उद्देश्येर पथ हइते समस्त अनावश्यक पदार्थके से अनेकटा परिमाणे दूर करिया दिते पारे। एइ क्षमताबलेइ से एइ जगतेर असीम वैचित्र्येर मध्येओ आपनार निकटे आपनार प्राधान्य रक्षा करिते पारियाछे। पुराणे पाठ करा याय, पुराकाले कोनो कोनो महात्मा इच्छामृत्युर क्षमता लाभ करियाछिलेन; आमादेर मनेर इच्छान्धता इच्छाबधिरतार शक्ति आछे; एवं एइ शक्ति ताहाके प्रति पदेइ व्यवहार करिते हय बलिया जन्म हइते मृत्युकाल पर्यन्त जगतेर अधिकांशइ

ताहार चेतनार बहिर्भाग दिया चलिया याय। से निजे विशेष उद्योगी हइया याहा ग्रहण करे एवं निजेर आवश्यक ओ प्रकृति-अनुसारे गठित करिया लय ताहाइ से उपलब्धि करे; चतुर्दिके, एमनकि मानसप्रदेशेओ याहा घटितेछे, याहा उठितेछे, ताहार से भालोरूप खोंज राखे ना।

सहज अवस्थाय आमादेर मानसाकाशे स्वप्नेर मतो ये सकल छाया एवं शब्द येन कोन् अलक्ष्य वायुप्रभावे दैवचालित हइया कखनो संलग्न कखनो विच्छिन्न भावे विचित्र आकार ओ वर्ण-परिवर्तन-पूर्वक क्रमागत मेघरचना करिया बेड़ाइतेछे ताहार यदि कोनो अचेतन पटेर उपर निजेर प्रतिबिम्बप्रवाह चिह्नित करिया याइते पारित तबे ताहार सहित आमादेर आलोच्य एइ छड़ागुलिर अनेक सादृश्य देखिते पाइताम। एइ छड़ागुलि आमादेर नियतपरिवर्तित अन्तराकाशेर छायामात्र, तरल स्वच्छ सरोवरेर उपर मेघक्रीड़ित नभोमण्डलेर छायार मतो। सेइ-जन्यइ बलियाछिलाम, इहारा आपनि जन्मियाछे।

उदाहरणस्वरूपे एइखाने दुइ एकटि छड़ा उद्धृत करिबार पूर्वे पाठकदेर निकट मार्जना भिक्षा करि। प्रथमत, एइ छड़ागुलिर सङ्गे चिरकाल ये स्नेहार्द्र सरल मधुर कण्ठ ध्वनित हइया आसियाछे आमार मतो मर्यादाभीरु गम्भीर-स्वभाव वयस्क पुरुषेर लेखनी हइते से ध्वनि केमन करिया क्षरित हइबे? पाठक-गण आपन गृह हइते, आपन बाल्यस्मृति हइते, सेइ सुधास्निग्ध सुरटुकु मने मने संग्रह करिया लइबेन। इहार सहित ये स्नेहटि, ये संगीतटि, ये सन्ध्याप्रदीपा-लोकित सौन्दर्यच्छबिटि चिरदिन एकात्मभावे मिश्रित हइया आछे से आमि कोन् मोहमन्त्रे पाठकदेर सम्मुखे आनिया उपस्थित करिब! भरसा करि, एइ छड़ा-गुलिर मध्येइ सेइ मोहमन्त्रटि आछे।

द्वितीयत, आट-घाट-बाँधा रीतिमय साधुभाषार प्रबन्धेर माझखाने एइ समस्त गृहचारिणी अकृतवेशा असंस्कृता मेयलि छड़ागुलिके दाँड़ कराइया दिले ताहादेर प्रति किछु अत्याचार करा हय—येन आदालतेर साक्ष्यमञ्चे घरेर बधूके उपस्थित करिया जेरा करा। किन्तु उपाय नाइ। आदालतेर नियमे आदालतेर काज हय, प्रबन्धेर नियमानुसारे प्रबन्ध रचना करिते हय—निष्ठुरता-टुकु अपरिहार्य।

यमुनावती सरस्वती काल यमुनार बिये।
यमुना याबेन श्वशुरबाड़ि काजितला दिये॥
काजि-फुल कुड़ते पेय गेलुम माला।
हात-झुमझुम् पा-झुमझुम् सीतारामेर खेला॥

नाचो तो सीताराम काँकाल बेंकिये।
आलोचाल देब टापाल भरिये॥
आलोचाल खेते खेते गला हल काठ।
कोथाय तो जल नेइ त्रिपूर्णिर घाट॥
त्रिपूर्णिर घाटे दुटो माछ भेसेछे।
एकटि निलेन गुरुठाकुर एकटि निलेन के
तार बोनके बिये करि ओड़फुल दिये॥
ओड़फुल कुड़ते हये गेल बेला।
तार बोनके बिये करि ठिक दुक्षुर बेला॥

इहार मध्ये भावेर परस्पर सम्बन्ध नाइ से कथा नितान्तइ पक्षपाती समालोचककेओ स्वीकार करिते हइबे। कतकगुलि असंलग्न छवि नितान्त सामान्य प्रसङ्गसूत्र अवलम्बन करिया उपस्थित हइयाछे। एकटा एइ देखा याइतेछे कोनो प्रकार बाछ-विचार नाइ। येन कवित्वेर सिंहद्वारे निस्तब्ध शारद मध्याह्नेर मधुर उत्तापे द्वारवान बेटा दिव्य पा छड़ाइया दिया घुमाइया पड़ियाछे। कथागुलो भावगुलो कोनोप्रकार परिचय-प्रदानेर अपेक्षा ना राखिया, कोनोरूप उपलक्ष्य अन्वेषण ना करिया, अनायासे ताहार पा डिङाइया, एमनकि माझे माझे लघु-करस्पर्शे ताहार कान मलिया दिया, कल्पनार अभ्रभेदी मायाप्रासादे इच्छासुखे आनागोना करितेछे; द्वारबानटा यदि ढुलिते ढुलिते हठात् एकबार चमक खाइया जागिया उठित तबे सेइ मुहूर्तेइ ताहारा के कोथाय दौड़ दित ताहार आर ठिकाना पाओया याइत ना।

यमुनावती सरस्वती यिनिइ हउन, आगामी कल्य ये ताँहार शुभ-विवाह से कथार स्पष्टइ उल्लेख देखा याइतेछे। अवश्य, विवाहेर पर यथाकाले काजितला दिया ये ताँहाके श्वशुरबाड़ि याइते हइबे सेकथा आपातत उत्थापन ना करिलेओ चलित; याहा हउक, तथापि कथाटा नितान्तइ अप्रासङ्गिक हय नाइ। किन्तु विवाहेर जन्य कोनोप्रकार उद्योग अथवा सेजन्य काहारओ तिलमात्र औत्सुक्य आछे एमन किछुइ परिचय पाओया याय ना। छड़ार राज्य तेमन राज्यइ नहे। सेखाने सकल व्यापारइ एमन अनायासे घटिते पारे एवं एमन अनायासे ना घटितेओ पारे ये, काहाकेओ कोनो-किछुर जन्यइ किछुमात्र दुश्चिन्ताग्रस्त बा व्यस्त हइते हय ना। अतएव आगामी कल्य श्रीमती यमुनावतीर विवाहेर दिन स्थिर हइलेओ से घटनाटाके बिन्दुमात्र प्राधान्य देओया हय नाइ। तबे से कथाटा आदौ केन उत्थापित हइल ताहार जबाबदिहिर जन्यओ केह व्यस्त नहे। काजि-फुल ये की फुल आमि नगरवासी ताहा ठिक

करिया बलिते पारि ना, किन्तु इहा स्पष्ट अनुमान करितेछि ये यमुनावती-नामक कन्याटिर आसन्न विवाहेर सहित उक्त पुष्पसंग्रहेर कोनो योग नाइ। एवं हठात् माझखान हइते सीताराम केन ये हातेर बलय एवं पायेर नूपुर झुमझुम् करिया नृत्य आरम्भ करिया दिल आमरा ताहार विन्दुविसर्ग कारण देखाइते पारिब ना। आलो चालेर प्रलोभन एकटा मस्त कारण हइते पारे, किन्तु सेइ कारण आमादिगके सीतारामेर आकस्मिक नृत्य हइते भुलाइया हठात् त्रिपूर्णिर घाटे आनिया उपस्थित करिल। सेइ घाटे दुटि मत्स्य भासिया उठा किछुइ आश्चर्य नहे बटे, किन्तु विशेष आश्चर्येर विषय एइ ये, दुटि मत्स्येर मध्ये एकटि मत्स्य ये लोक लइया गेछे ताहार कोनोरूप उद्देश ना पाओया सत्त्वेओ आमादेर दृढ़-प्रतिज्ञ रचयिता की कारणे ताहारइ भगिनीके विवाह करिबार जन्य हठात् स्थिर संकल्प हइया बसिलेन, अथच प्रचलित विवाहेर प्रथा सम्पूर्ण उपेक्षा करिया एकमात्र ओड़फुल संग्रह-द्वाराइ शुभकर्मेर आयोजन यथेष्ट विवेचना करिलेन एवं ये लग्नटि स्थिर करिलेन ताहाओ नूतन अथवा पुरातन कोनो पञ्जिकाकारेर मतेइ प्रशस्त नहे।

एइ तो कवितार बाँधुनि। आमादेर हाते यदि रचनार भार थाकित तबे निश्चय एमन कौशले प्लट बाँधिताम याहाते प्रथमोक्त यमुनावतीइ ग्रन्थेर शेष परिच्छेदे सेइ त्रिपूर्णिर घाटेर अनिर्दिष्ट व्यक्तिर अपरिज्ञात भग्नीरूपे दाँड़ाइया याइत एवं ठिक मध्याह्नकाले ओड़फुलेर माला-बदल करिया ये गान्धर्व विवाह घटित ताहाते सहृदय पाठकमात्रेइ तृप्तिलाभ करितेन।

किन्तु बालकेर प्रकृतिते मनेर प्रताप अनेकटा क्षीण। जगत्-संसार एवं ताहार निजेर कल्पनागुलि ताहाके विच्छिन्नभावे आघात करे; एकटार पर आर-एकटा आसिया उपस्थित हय। मनेर बन्धन ताहार पक्षे पीड़ाजनक। सुसंलग्न कार्यकारणसूत्र धरिया जिनिसके प्रथम हइते शेष पर्यन्त अनुसरण करा ताहार पक्षे दुःसाध्य। बहिर्जगते समुद्रतीरे वसिया बालक बालिर घर रचना करे, मानसजगतेर सिन्धुतीरेओ से आनन्दे बसिया बालिर घर बाँधिते थाके। बालिते बालिते जोड़ा लागे ना, ताहा स्थायी हय ना—किन्तु, बालुकार मध्ये एइ योजन-शीलतार अभाव-वशतइ बाल्यस्थापत्येर पक्षे ताहा सर्वोत्कृष्ट उपकरण। मुहूर्तेर मध्येइ मुठा मुठा करिया ताहाके एकटा उच्च आकारे परिणत करा याय—मनोनीत ना हइले अनायासे ताहाके संशोधन करा सहज एवं श्रान्ति बोध हइलेइ तत्क्षणात् पदाघाते ताहाके समभूम करिया दिया लीलामय सृजनकर्ता लघुहृदये बाड़ि फिरिते पारे। किन्तु, येखाने गाँथिया गाँथिया काज करा आवश्यक सेखाने कर्ताकेओ अविलम्बे काजेर नियम मानिया चलिते हय। बालक नियम

मानिया चलिते पारे ना——से सम्प्रतिमात्र नियमहीन इच्छानन्दमय स्वर्गलोक हइते आसियाछे। आमादेर मतो सुदीर्घकाल नियमेर दासत्वे अभ्यस्त हय नाइ, एइजन्य से क्षुद्र शक्ति-अनुसारे समुद्रतीरे बालिर घर एवं मनेर मध्ये छड़ार छबि स्वेच्छामत रचना करिया मर्तलोके देवतार जगत्-लीलार अनुकरण करे। एइजन्यइ आमादेर शास्त्रे ईश्वरेर कार्येर सहित बालकेर लीलार सर्वदा तुलना देओया हइया थाके, उभयेर मध्येइ एकटा इच्छामय आनन्देर सादृश्य आछे।

पूर्वोद्धृत छड़ाटिते संलग्नता नाइ, किन्तु छबि आछे। काजितला, त्रिपूर्णिर घाट एवं ओड़बनेर घटनागुलि स्वप्नेर मतो अद्भुत, किन्तु स्वप्नेर मतो सत्यवत्।

स्वप्नेर मतो सत्य बलते पाठकगण आमार बुद्धिर सजागता सम्बन्धे सन्दिहान हइबेन ना। अनक दार्शनिक पण्डित प्रत्यक्ष जगत्टाके स्वप्न बलिया उड़ाइया दियाछेन। किन्तु, सेइ पण्डित स्वप्नके उड़ाइते पारेन नाइ। तिनि बलेन, प्रत्यक्ष सत्य नाइ तबे की आछे? ना, स्वप्न आछे। अतएव देखा याइतेछे, प्रबल युक्तिर द्वारा——सत्यके अस्वीकार करा सहज, किन्तु स्वप्नके अस्वीकार करिबार जो नाइ। केवल सजाग स्वप्न नहे, निद्रागत स्वप्न सम्बन्धेओ एइ कथा खाटे। सुतीक्ष्णबुद्धि पण्डितेरओ साध्य नाइ स्वप्नावस्थाय स्वप्नके अविश्वास करेन। जाग्रत अवस्थाय ताँहारा सम्भव सत्यकेओ सन्देह करिते छाड़ेन ना, किन्तु स्वप्नावस्थाय ताँहारा चरमतम असम्भवके असंशये ग्रहण करेन। अतएव विश्वासजनकतानामक ये गुणटि सत्येर सर्वप्रधान गुण हओया उचित सेटा येमन स्वप्नेर आछे एमन आर किछुरइ नाइ।

एतद्द्वारा पाठक एइ कथा बुझिबेन ये, प्रत्यक्ष जगत आमादेर काछे यतटा सत्य, छड़ार स्वप्नजगत् नित्यस्वप्नदर्शी बालकेर निकट तदपेक्षा अनेक अधिक सत्य। एइजन्य अनेक समय सत्यकेओ आमरा असम्भव बलिया त्याग करि, एवं ताहारा असम्भवकेओ सत्य बलिया ग्रहण करे।

वृष्टि पड़े टापुर-टुपुर नदी एल बान।
शिबु ठाकुरेर बिये हल तिन कन्ये दान॥
एक कन्ये राँधेन बाड़ेन एक कन्ये खान।
एक कन्ये ना खेये बापेर बाड़ि यान॥

ए वयसे एइ छड़ाटि शुनिबामात्र बोध करि प्रथमेइ मने हय, शिबु ठाकुर ये तिनटि कन्याके विवाह करियाछेन तन्मध्ये मध्यमा कन्याटिइ सर्वापेक्षा बुद्धिमती। किन्तु एक वयस छिल यखन एतादृश चरित्रविश्लेषणेर क्षमता छिल ना। तखन एइ चारिटि छत्र आमार बाल्यकालेर मेघदूतेर मतो छिल। आमार मानस-पटे एकटि घनमेघान्धकार बादलार दिन एवं उत्तालतरङ्गित नदी मूर्तिमान हइया

देखा दित। ताहर पर देखिते पाइताम सेइ नदीर प्रान्ते बालुर चरे गुटिदुयेक पानसि नौका बाँधा आछे एवं शिबु ठाकुरेर नवविवाहिता बधूगण चड़ाय नामिया राँधाबाड़ा करितेछेन। सत्य कथा बलिते कि, शिबु ठाकुरेर जीवनटिके बड़ो सुखेर जीवन मने करिया चित्त किछु व्याकुल हइत। एमनकि, तृतीया वधू-ठाकुरानी मर्मान्तिक राग करिया द्रुतचरणे बापेर बाड़ि-अभिमुखे चलियाछेन सेइ छबितेओ आमार एइ सुखचित्रेर किछुमात्र व्याघातसाधन करिते पारे नाइ। एइ निर्बोध तखनओ बुझिते पारित ना, ओइ एकटिमात्र छत्रे हतभाग्य शिबु ठाकुरेर जीवन की एक हृदयविदारक शोकावह परिणाम सूचित हइयाछे। किन्तु पूर्वेइ बलियाछि, चरित्रविश्लेषण अपेक्षा चित्रविरचनेर दिकेइ तखन मनेर गतिटा छिल। एखन बुझिते पारितेछि, हतबुद्धि शिबु ठाकुर तदीय कनिष्ठ जायार अकस्मात् पितृगृहप्रयाण-दृश्यटिके ठिक मनोरम चित्र हिसाबे देखेन नाइ।

एइ शिबु ठाकुर कि कस्मिन् काले केह छिल एक-एक बार ए कथाओ मने उदय हय। हयतो बा छिल। हयतो एइ छड़ार मध्ये पुरातन विस्मृत इतिहासेर अति क्षुद्र एक भग्न अंश थाकिया गियाछे। आर-कोनो छड़ाय हयतो बा इहार आर-एक टुकरा थाकिते पारे।

> ए पार गङ्गा, ओ पार गङ्गा, मध्यिखाने चर।
> तारि मध्ये बसे आछे शिव सदागर॥
> शिव गेल श्वशुरबाड़ि, बसते दिल पिँड़े।
> जलपान करिते दिल शालिधानेर चिँड़े॥
> शालिधानेर चिँड़े नय रे, बिन्निधानेर खइ।
> मोटा मोटा सबरि कला, कागमारे दइ॥

भावे-गतिके आमार सन्देह हइतेछे शिबु ठाकुर एवं शिबु सदागर लोकटि एकइ हइबेन। दाम्पत्यसम्बन्धे उभयेरइ एकटु विशेष शख आछे एवं बोध करि आहार सम्बन्धेओ अवहेला नाइ। उपरन्तु गङ्गार माझखानटिते ये स्थान-टुकु निर्वाचन करिया लओया हइयाछे ताहाओ नवपरिणीतेर प्रथमप्रणययापनेर पक्षे अति उपयुक्त स्थान।

एइ स्थले पाठकगण लक्ष्य करिया देखिबेन, प्रथमे अनवधानताक्रमे शिबु सदागरेर जलपानेर स्थले शालिधानेर चिँड़ार उल्लेख करा हइयाछिल, किन्तु परक्षणेइ संशोधन करिया बला हइयाछे 'शालिधानेर चिँड़े नय रे, बिन्निधानेर खइ'। येन घटनार सत्य सम्बन्धे तिलमात्र स्खलन हइबार जो नाइ। अथच एइ संशोधनेर द्वारा वर्णित फलाहारेर खुब ये एकटा इतर-विशेष हइयाछे, जामाइ-आदर सम्बन्धे श्वशुरबाड़ির गौरव खुब उज्ज्वल-तररूपे परिस्फुट हइया उठियाछे,

ताहाओ बलिते पारि ना। किन्तु ए क्षेत्रे श्वशुरबाड़िर मर्यादा अपेक्षा सत्येर मर्यादा रक्षार प्रति कविर अधिक लक्ष देखा याइतेछे। ताओ ठिक बलिते पारि ना। बोध करि इहाओ स्वप्नेर मतो। बोध करि शालिधानेर चिँड़ा देखिते देखितेइ परमुहूर्ते बिन्निधानेर खइ हइया उठियाछे? बोध करि शिबु ठाकुरओ कखन एमनि करिया शिबु सदागरे परिणत हइयाछे केह बलिते पारे ना।

शुना याय मङ्गल ओ बृहस्पतिर कक्षमध्ये कतकगुलि टुकरा ग्रह आछे। केह केह बलेन, एकखाना आस्त ग्रह भाङिया खण्ड खण्ड हइया गियाछे। एइ छड़ागुलिकेओ सेइरूप टुकरा जगत् बलिया आमार मने हय। अनेक प्राचीन इतिहास प्राचीन स्मृतिर चूर्ण अंश एइ-सकल छड़ार मध्ये विक्षिप्त हइया आछे, कोनो पुरातत्त्वविद् आर ताहादिगके जोड़ा दिया एक करिते पारेन ना, किन्तु आमादेर कल्पना एइ भग्नावशेषगुलिर मध्ये सेइ विस्मृत प्राचीन जगतेर एकटि सुदूर अथच निकट परिचय लाभ करिते चेष्टा करे।

अवश्य, बालकेर कल्पना एइ ऐतिहासिक ऐक्य-रचनार जन्य उत्सुक नहे। ताहार निकट समस्तइ वर्तमान एवं ताहार निकट वर्तमानेरइ गौरव। से केवल प्रत्येक्ष छबि चाहे एवं सेइ छबिके भावेर अश्रुवाष्पे झापसा करिते चाहे ना।

निम्नोद्धृत छड़ाटिते असंलग्न छबि येन पाखिर झाँकेर मतो उड़िया चलियाछे। इहादेर प्रत्येकेर एइ स्वतन्त्र द्रुतगतिते बालकेर चित्त उपर्युपरि नव नव आघात पाइया विचलित हइते थाके।—

नोटन नोटन पायरागुलि झोंटन रेखेछे।
बड़ो साहेबेर बिबिगुलि नाइते एसेछे॥

दु पारे दुइ रुइ कात्ला भेसे उठेछे।
दादार हाते कलम छिल छुँड़े मेरेछे॥

ओ पारेते दुटि मेये नाइते नेबेछे।
झुन झुनु चुलगाछटि झाड़ते नेगेछे॥

के रेखेछे के रेखेछे, दादा रेखेछे।
आज दादार ढेला फेला, काल दादार बे॥

दादा याबे कोन्खान दे। बकुलतला दे।
बकुलफुल कुड़ते कुड़ते पेये गेलुम माला॥

रामधुनके बाद्दि बाजे सीतेनाथेर खेला।
सीतेनाथ बले रे भाइ चालकड़ाइ खाब॥

चालकड़ाइ खेते खेते गला हल काठ।
हेथा होथा, जल पाव चित्पुरेर माठ॥

चित्पुरेर माठते बालि चिक् चिक् करे।
सोना-मुखे रोद नेगे रक्त फेट पड़े॥

इहार मध्ये कोनो छबिइ अमादिगके धरिया राखे ना, आमराओ कोनो छबिके धरिया राखिते पारि ना। झोंटनविशिष्ट नोटन पायरागुलि, बड़ो साहेबेर बिबिगण, दुइ पारे भासमान दुइ रुइ कात्ला, परपारे स्नाननिरत दुइ मेये, दादार विवाह, रामधनुकेर वाद्य-सहकारे सीतानाथेर खेला, एवं मध्याह्न रौद्रे तप्तबालुचिक्कण माठेर मध्ये खरतापक्लिष्ट रक्तमुखच्छबि—ए समस्तइ स्वप्नेर मतो। ओ पारे ये दुइटि मेये नाहिते बसियाछे एवं दुइ हातेर चुड़िते चुड़िते झुन् झुन् शब्द करिया चुल झाड़ितेछे ताहारा छबिर हिसाबे प्रत्यक्ष सत्य, किन्तु प्रासङ्गिकता हिसाबे अपरूप स्वप्न।

ए कथाओ पाठकदेर स्मरणे राखा कर्तव्य ये, स्वप्न रचना करा बड़ो कठिन। हठात् मने हइते पारे ये, येमन-तेमन करिया लिखिलेइ छड़ा लेखा याइते पारे। किन्तु सेइ येमन-तेमन भावटि पाओया सहज नहे। संसारेर सकल कार्येइ आमादेर एमनि अभ्यास हइया गेछे ये, सहज भावेर अपेक्षा सचेष्ट भावटाइ आमादेर पक्षे सहज हइया दाँड़ाइयाछे। ना डाकिलेओ व्यस्तवागीश चेष्टा सकल काजेर मध्ये आपनि आसिया हाजिर हय। एवं से येखानेइ हस्तक्षेप करे सेखानेइ भाव आपन लघु मेघाकार त्याग करिया दाना बाँधिया उठे, ताहार आर वातासे उड़िबार क्षमता थाके ना। एइजन्य छड़ा जिनिसटा याहार पक्षे सहज ताहार पक्षे निरतिशय सहज, किन्तु याहार पक्षे किछुमात्र कठिन ताहार पक्षे एकेबारेइ असाध्य। याहा सर्वापेक्षा सरल ताहा सर्वापेक्षा कठिन; सहजेर प्रधान लक्षणइ एइ।

पाठक बोध करि इहाओ लक्ष्य करिया देखिया थाकिबेन, आमादेर प्रथमोद्धृत छड़ाटिर सहित एइ छड़ा केमन करिया मिशिया गियाछे। येमन मेघे मेघे स्वप्ने स्वप्ने मिलाइया याय एइ छड़ागुलिओ तेमनि परस्पर जड़ित मिश्रित हइते थाके, सेजन्य कोनो कवि चुरिर अभियोग करे ना एवं कोनो समालोचक-ओ भावविपर्ययेर दोष देन ना। वास्तविकइ एइ छड़ागुलि मानसिक मेघराज्येर लीला, सेखाने सीमा वा आकार वा अधिकार-निर्णय नाइ। सेखाने पुलिस वा आइन-कानुनेर कोनो सम्पर्क देखा याय ना। अन्यत्र हइते प्राप्त नम्नेर छड़ाटिर प्रति मनोयोग करिया देखुन।

ओ पारे जन्तिगाछटि जन्ति बड़ो फले।
गो जन्तिर माथा खेये प्राण केमन करे॥
प्राण करे हाइढाइ गला हल काठ।
कतक्षणे याब रे भाइ हरगौरीर माठ॥
हरगौरीर माठे रे भाइ पाका पाका पान।
पान किनलाम, चुन किनलाम, ननदे भाजे खेलाम।
एकटि पान हाराले दादाके ब'ले देलाम॥
दादा दादा डाक छाड़ि दादा नाइको बाड़ि।
सुबल सुबल डाक छाड़ि सुबल आछे बाड़ि॥
आज सुबलेर अधिवास काल सुबलेर बिये।
सुबलके निये याब आमि दिग्‌नगर दिये॥
दिग्‌नगरेर मेयेगुलि नाइते बसेछे।
मोटा मोटा चुलगुलि गो पेते बसेछे।
चिकन चिकन चुलगुलि झाड़ते नेगेछे॥
हाते तादेर देवशाँखा मेघ नेगेछे।
गलाय तादेर तक्तिमाला रक्त छुटेछे।
परने तार डुरे शाड़ि घुरे पड़ेछे॥
दुइ दिके दुइ कात्ला माछ भेसे उठेछे।
एकटि निलेन गुरुठाकुर एकटि निलेन टिये॥
टियेर मार बिये
नाल गामछा दिये।
अशथेर पाता धने।
गौरी बेटि कने॥
नका बेटा बर।
ढ्याम् कुड़ कुड़ बाद्दि बाजे, चड़क-डाङाय घर॥

एइ-सकल छड़ार मध्य हइते सत्य अन्वेषण करिते गेले विषम विभ्राटे पड़िते हइबे। प्रथम छड़ाय देखियाछि आलोचाल खाइया सीतारामनामक नृत्य-प्रिय लुब्ध बालकटिके, त्रिपूर्णिर घाटे जल खाइते याइते हइयाछिल; द्वितीय छड़ाय देखिते पाइ सीतानाथ चाल कड़ाइ खाइया जलेर अन्वेषणे चित्पुरेर माठे गिया उपस्थित हइयाछिल; किन्तु तृतीय छड़ाय देखा याइतेछे, सीतारामओ नहे, सीतानाथओ नहे, परन्तु कोनोएक हतभागिनी भ्रातृजायार विद्वेषणपरायणा ननदिनी जन्तिफल-भक्षणेर पर तृषातुर हइया हरगौरीर माठे पान खाइते गिया-

छिल एवं परे असावधाना भ्रातृवधूर तुच्छ अपराधटुकु दादाके बलिया दिबार जन्य पाड़ा तोलपाड़ करिया तुलियाछिल।

एइ तो तिन छड़ार मध्ये असङ्गति। तार पर प्रत्येक छड़ार निजेर मध्येओ घटनार धारावाहिकता देखा याय ना। बेश बुझा याय, अधिकांश कथाइ बानानो। किन्तु इहाओ देखिते पाइ, कथा बानाइते गेले लोके प्रमाणेर प्राचुर्य-द्वारा सेटाके सत्येर अपेक्षा अधिकतर विश्वासयोग्य करिया तोले, अथच ए क्षेत्रे से पक्षे खेयालमात्र नाइ। इहादेर कथा सत्यओ नहे, मिथ्याओ नहे, दुइयेर बार। ओइ-ये छड़ार एक जायगाय सुबलेर विवाहेर उल्लेख आछे सेटा किछु असम्भव घटना नहे। किन्तु सत्य बलियाओ बोध हय ना।

दादा दादा डाक छाड़ि, दादा नाइको बाड़ि।
सुबल सुबल डाक छाड़ि, सुबल आछे बाड़ि।।

येमनि सुबलेर नामटा मुखे आसिल अमनिइ बाहिर हइया गेल, 'आज सुबलेर अधिबास, काल सुबलेर बिये।' से कथाटाओ स्थायी हइल ना, अनतिविलम्बेइ दिग्‌नगरेर दीर्घकेशा मेयेदेर कथा उठिल। स्वप्नेओ ठिक एइ रूप घटे। हयतो शब्दसादृश्य अथवा अन्य कोनो अलीक तुच्छ सम्बन्ध अवलम्बन करिया मुहूर्ते मुहूर्ते एकटा कथा हइते आर एकटा कथा रचित हइया उठिते थाके। मुहूर्तकाल पूर्वे ताहादेर सम्भावनार कोनोइ कारण छिल ना, मुहूर्तकाल परेओ ताहारा सम्भावनार राज्य हइते बिना चेष्टाय अपसृत हइया याय। सुबलेर विवाहके यदि बा पाठकगण तत्कालीन ओ तत्स्थानीय कोनो सत्य घटनार आभास बलिया ज्ञान करेन तथापि सकलेइ एकवाक्ये स्वीकार करिबेन 'नाल गामछा दिये टियेर मार बिये' किछुतेइ सामयिक इतिहासेर मध्ये स्थान पाइते पारे ना। कारण, विधवाविवाह टिये-जातिर मध्ये प्रचलित थाकिलेओ नाल गामछार व्यवहार उक्त सम्प्रदायेर मध्ये कस्मिन् काले शुना याय नाइ। किन्तु याहादेर काछे छन्देर ताले ताले सुमिष्ट एइ-सकल असंलग्न असम्भव घटना उपस्थित करा हइया थाके ताहारा विश्वासओ करे ना सन्देहओ करे ना. ताहारा मनश्चक्षे स्वप्नवत् प्रत्यक्षवत् छबि देखिया याय।

['मेयेलि छड़ा' नाम से आश्विन-कार्तिक १३०१ की 'साधना' में प्रकाशित। रवीन्द्रनाथ ने इन बैतों का संग्रह करके माघ १३०१ में बंगीय साहित्य परिषद के मुख-पत्र में प्रकाशित कराया था। इस काय के वे ही प्रवर्तक थे।]

नवम खण्ड

आधुनिक साहित्य

१. बङ्किमचन्द्र

बङ्किमचन्द्र

येकाले बङ्किमेर नवीना प्रतिभा लक्ष्मीरूपे सुधाभाण्ड हस्ते लइया बाला-देशेर सम्मुखे आविर्भूत हइलेन तखनकार प्राचीन लोकेरा बङ्किमेर रचनाके ससम्माने आनन्देर सहित अभ्यर्थना करेन नाइ।

सेदिन बङ्किमके विस्तर उपहास विद्रूप ग्लानि सह्य करिते हइयाछिल। ताँहार उपर एकदल लोकेर सुतीव्र विद्वेष छिल, एवं क्षुद्र ये लेखक सम्प्रदाय ताँहार अनुकरणेर वृथा चेष्टा करित ताहाराइ आपन ऋण गोपन करिबार प्रयासे ताँहाके सर्वापेक्षा अधिक गालि दित।

आबार एखनकार ये नूतन पाठक ओ लेखक-सम्प्रदाय उद्भूत हइयाछेन ताँहाराओ बङ्किमेर परिपूर्ण प्रभाव हृदयेर मध्ये अनुभव करिबार अवकाश पान नाइ। ताँहारा बङ्किमेर गठित साहित्यभूमितेइ एकेबारे भूमिष्ठ हइयाछेन, बङ्किमेर निकट ये ताँहारा कत रूपे कत भावे ऋणी ताहार हिसाब विच्छिन्न करिया लइया ताँहारा देखिते पाइतेछेन ना।

किन्तु वर्तमान लेखकेर सौभाग्यक्रमे, आमादेर सहित यखन बङ्किमेर प्रथम साक्षात्कार हय तखन साहित्य प्रभृति सम्बन्धे कोनोरूप पूर्वसंस्कार आमादेर मने बद्धमूल हइया याय नाइ एवं वर्तमान कालेर नूतन भावप्रवाहओ आमादेर निकट अपरिचित अनभ्यस्त छिल। तखन बङ्गसाहित्येर येमन प्रातःसन्ध्या उपस्थित आमादेरओ सेइरूप वयःसन्धिकाल। बङ्किम बङ्गसाहित्येर प्रभातेर सूर्योदय विकाश करिलेन, आमादेर हृत्पद्म सेइ प्रथम उद्घाटित हइल।

पूर्वे की छिल एवं परे की पाइलाम ताहा दुइ कालेर सन्धिस्थले दाँड़ाइया आमरा एक मुहूर्तेइ अनुभव करिते पारिलाम। कोथाय गेल सेइ अन्धकार, सेइ एकाकार, सेइ सुप्ति—कोथाय गेल सेइ 'विजय-वसन्त', सेइ 'गोलेबकाओलि', सेइ सब बालक-भुलानो कथा—कोथा हइते आसिल एत आलोक, एत आशा, एत संगीत, एत वैचित्र्य! बङ्गदर्शन येन तखन आषाढ़ेर प्रथम वर्षार मतो 'समागतो राजवदुन्नतध्वनिः'। एवं मुषलधारे भाववर्षणे बङ्गसाहित्येर पूर्व-वाहिनी पश्चिमवाहिनी समस्त नदी निर्झरिणी अकस्मात् परिपूर्णता प्राप्त हइया यौवनेर आनन्दवेगे धावित हइते लागिल। कत काव्य नाटक उपन्यास, कत

प्रबन्ध, कत समालोचना, कत मासिकपत्र, कत संवादपत्र बङ्गभूमिके जाग्रत प्रभात-कलरवे मुखरित करिया तुलिल। बङ्गभाषा सहसा बाल्यकाल हइते यौवने उपनीत हइल।

आमार किशोरकाले बङ्गसाहित्येर मध्ये भावेर सेइ नवसमागमेर महोत्सव देखियाछिलाम; समस्त देश व्याप्त करिया ये-एकटि आशार आनन्द नूतन हिल्लोलित हइयाछिल ताहा अनुभव करियाछिलाम; सेइजन्य आज मध्ये मध्ये नैराश्य उपस्थित हय। मने हय, सेदिन हृदये ये अपरिमेय आशार सञ्चार हइयाछिल तदनुरूप फललाभ करिते पारि नाइ से जीवनेर वेग आर नाइ। किन्तु ए नैराश्य अनेकटा अमूलक। प्रथम समागमेर प्रबल उच्छ्वास कखनो स्थायी हइते पारे ना। सेइ नव-आनन्द नवीन-आशार स्मृतिर सहित वर्तमानेर तुलना कराइ अन्याय। विवाहेर प्रथम दिने ये रागिणीते वंशीध्वनि हय से रागिणी चिरदिनेर नहे। सेदिन केवल अविमिश्र आनन्द एवं आशा, ताहार पर हइते विचित्र कर्तव्य, मिश्रित दुःखसुख, क्षुद्र बाधाविघ्न, आवर्तित विरह-मिलन—ताहार पर हइते गभीर गम्भीर भावे नाना पथ बाहिया नाना शोकताप अतिक्रम करिया संसारपथे अग्रसर हइते हइबे, प्रतिदिन आर से नहबत बाजिबे ना। तथापि सेइ एक दिनेर उत्सवेर स्मृति कठोर कर्तव्यपथे चिरदिन आनन्द सञ्चार करे।

बङ्किमचन्द्र स्वहस्ते बङ्गभाषार सहित येदिन नवयौवनप्राप्त भावेर परिणय साधन कराइयाछिलेन सेइ दिनेर सर्वव्यापी प्रफुल्लता एवं आनन्द-उत्सव आमादेर मने आछे। से दिन आर नाइ। आज नाना लेखा नाना मत नाना आलोचना आसिया उपस्थित हइयाछ। आज कोनोदिन बा भावेर स्रोत मन्द हइया आसे, कोनोदिन बा अपेक्षाकृत परिपुष्ट हइया उठे।

एइरूप हइया थाके एवं एइरूपइ हओया आवश्यक। किन्तु काहार प्रसादे एरूप हओया सम्भव हइल से कथा स्मरण करिते हइबे। आमरा आत्माभिमाने सर्वदाइ ताहा भुलिया याइ।

भुलिया ये याइ ताहार प्रथम प्रमाण, राममोहन रायके आमादेर वर्तमान बङ्गदेशेर निर्माणकर्ता बलिया आमरा जानि ना। की राजनीति, की विद्या-शिक्षा, की समाज, की भाषा, आधुनिक बङ्गदेशे एमन किछुइ नाइ राममोहन राय स्वहस्ते याहार सूत्रपात करिया यान नाइ। एमन-कि, आज प्राचीन शस्त्रालोचनार प्रति देशेर ये एक नूतन उत्साह देखा याइतेछे, राममोहन राय ताहारओ पथ-प्रदर्शक। यखन नवशिक्षाभिमाने स्वभावतइ पुरातन शास्त्रेर प्रति अवज्ञा जन्मिबार सम्भावना तखन राममोहन राय साधारणेर अनधिगम्य

विस्मृतप्राय वेद-पुराण-तन्त्र हइते सारोद्धार करिया प्राचीन शास्त्रेर गौरव उज्ज्वल राखियाछिलेन ।

बङ्गदेश अद्य सेइ राममोहन रायेर निकट किछुतेइ हृदयेर सहित कृतज्ञता स्वीकार करिते चाहे ना। राममोहन बङ्गसाहित्यके ग्रानिटस्तरेर उपर स्थान करिया निमज्जनदशा हइते उन्नत करिया तुलियाछिलेन, बङ्किमचन्द्र ताहारइ उपर प्रतिभार प्रवाह ढालिया स्तरबद्ध पलि-मृत्तिका क्षेपण करिया गियाछेन। आज बांलाभाषा केवल दृढ़ वासयोग्य नहे, उर्वरा शस्यश्यामला हइया उठियाछे। बासभूमि यथार्थ मातृभुमि हइयाछे। एखन आमादेर मनेर खाद्य प्राय घरेर द्वारेइ फलिया उठितेछे ।

मातृभाषार बन्ध्यदशा घुचाइया यिनि ताहाके एमन गौरवशालिनी करिया तुलियाछेन तिनि बाङालिर ये की महत् की चिरस्थायी उपकार करियाछेन से कथा यदि काहाकेओ बुझाइबार आवश्यक हय तबे तदपेक्षा दुर्भाग्य आर-किछुइ नाइ। तत्पूर्वे बांलाके केह श्रद्धासहकारे देखित ना। संस्कृत-पण्डितेरा ताहाके ग्राम्य एवं इंराजि-पण्डितेरा ताहाके बर्बर ज्ञान करितेन। बांलाभाषाय ये कीर्ति उपार्जन करा याइते पारे, से कथा ताँहादेर स्वप्नेर अगोचर छिल। एइ-जन्य केवल स्त्रीलोक ओ बालकदेर जन्य अनुग्रहपूर्वक देशीय भाषाय ताँहारा सरल पाठ्यपुस्तक रचना करितेन। सेइ-सकल पुस्तकेर सरलता ओ पाठ-योग्यता सम्बन्धे याँहादेर जानिबार इच्छा आछे ताँहारा रेभारेण्ड कृष्णमोहन बन्दोपाध्याय-रचित पूर्वतन एण्ट्रेन्स-पाठ्य बांला ग्रन्थे दन्तस्फुट करिबार चेष्टा करिया देखिबेन। असम्मानित बङ्गभाषाओ तखन अत्यन्त दीन मलिन भावे कालयापन करित। ताहार मध्ये ये कतटा सौन्दर्य, कतटा महिमा प्रच्छन्न छिल ताहा ताहार दारिद्र्य भेद करिया स्फूर्ति पाइत ना। येखाने मातृभाषार एत अवहेला सेखाने मानवजीवनेर शुष्कता शून्यता दैन्य केहइ दूर करिते पारे ना।

एमन समये तखनकार शिक्षितश्रेष्ठ बङ्किमचन्द्र आपनार समस्त शिक्षा, समस्त अनुराग, समस्त प्रतिभा उपहार लइया सेइ संकुचिता बङ्गभाषार चरणे समर्पण करिलेन; तखनकार काले की ये असामान्य काज करिलेन ताहा ताँहारइ प्रसादे आजिकार दिने आमरा सम्पूर्ण अनुमान करिते पारि ना।

तखन ताहार अपेक्षा अनेक अल्पशिक्षित प्रतिभाहीन व्यक्ति इंराजिते दुइ छत्र लिखिया अभिमाने स्फीत हइया उठितेन। इंराजिसमुद्रे ताँहारा ये काठ-बिड़ालिर मतो बालिर बाँध निर्माण करितेछेन सेटुकु बुझिबार शक्तिओ ताँहादेर छिल ना।

बङ्किमचन्द्र ये सेइ अभिमान सेइ ख्यातिर सम्भावना अकातरे परित्याग करिया तखनकार विद्वज्जनेर अवज्ञात विषये आपनार समस्त शक्ति नियोग करिलेन, इहा अपेक्षा वीरत्वेर परिचय आर की हइते पारे? सम्पूर्ण क्षमता सत्वेओ आपन समयोग्य लोकेर उत्साह एवं ताँहादेर निकट प्रतिपत्तिर प्रलोभन परित्याग करिया एकटि अपरीक्षित अपरिचित अनादृत अन्धकार पथे आपन नवीन जीवनेर समस्त आशा-उद्यम-क्षमताके प्रेरण करा कत विश्वास एवं कत साहसेर बले हय ताहार परिमाण करा सहज नहे।

केवल ताहाइ नहे। तिनि आपनार शिक्षागर्वे बङ्गभाषार प्रति अनुग्रह प्रकाश करिलेन ना, एकेबारेइ श्रद्धा प्रकाश करिलेन। यतकिछु आशा आकांक्षा सौन्दर्य प्रेम महत्त्व भक्ति स्वदेशानुराग, शिक्षित परिणत बुद्धिर यत-किछु शिक्षा-लब्ध चिन्ताजात धनरत्न, समस्तइ अकुण्ठितभावे बङ्गभाषार हस्ते अर्पन करिलेन। परम सौभाग्यगर्वे सेइ अनादरमलिन भाषार मुखे सहसा अपूर्व लक्ष्मीश्री प्रस्फुटित हइया उठिल।

तखन, पूर्वे याँहारा अवहेला करियाछिलेन ताँहारा बङ्गभाषार यौवन-सौन्दर्ये आकृष्ट हइया एके एके निकटवर्ती हइते लागिलेन। बङ्गसाहित्य प्रतिदिन गौरवे परिपूर्ण हइया उठिते लागिल।

बङ्किम ये गुरुतर भार लइयाछिलेन ताहा अन्य काहारओ पक्षे दुःसाध्य हइत। प्रथमत, तखन बङ्गभाषा ये अवस्थाय छिल ताहाके ये शिक्षित व्यक्तिर सकलप्रकार भावप्रकाशे नियुक्त करा याइते पारे इहा विश्वास ओ आविष्कार करा विशेष क्षमतार कार्य। द्वितीयत, येखाने साहित्येर मध्ये कोनो आदर्श नाइ, सेखाने पाठक असामान्य उत्कर्षेर प्रत्याशाइ करे ना, येखाने लेखक अवहेला-भावे लेखे एवं पाठक अनुग्रहेर सहित पाठ करे, येखाने अल्प भालो लिखिलेइ बाहबा पाओया याय एवं मन्द लिखिलेओ केह निन्दा करा बाहुल्य विवेचना करे, सेखाने केवल आपनार अन्तरस्थित उन्नत आदर्शके सर्वदा सम्मुखे वर्तमान राखिया, सामान्य परिश्रमे सुलभख्यातिलाभेर प्रलोभन सम्वरण करिया, अश्रान्त यत्ने, अप्रतिहत उद्यमे दुर्गम परिपूर्णतार पथे अग्रसर हओया असाधारण माहात्म्येर कर्म। चतुर्दिक्-व्यापी उत्साहहीन जीवनहीन जड़त्वेर मतो एमन गुरुभार आर-किछुइ नाइ; ताहार नियतप्रबल भाराकर्षणशक्ति अतिक्रम करिया उठा ये कत निरलस चेष्टा ओ बलेर कर्म ताहा एखनकार साहित्यव्यवसायीराओ कतकटा बुझिते पारेन, तखन ये आरओ कत कठिन छिल ताहा कष्टे अनुमान करते हय। सर्वत्रइ यखन शैथिल्य एवं से शैथिल्य यखन निन्दित हय ना तखन आपनाके नियमव्रते बद्ध करा महासत्त्वलोकेर द्वाराइ सम्भव।

बङ्किम आपनार अन्तरेर सेइ आदर्श अवलम्बन करिया प्रतिभाबले ये कार्य करिलेन ताहा अत्याश्चर्य। बङ्गदर्शनेर पूर्ववर्ती एवं ताहार परवर्ती बङ्ग-साहित्येर मध्ये ये उच्चनीचता ताहा अपरिमित। दार्जिलिं हइते याँहारा काञ्चनजङ्घार शिखरमाला देखियाछेन ताँहारा जानेन, सेइ अभ्रभेदी शैल-सम्राटेर उदयरविरश्मिसमुज्ज्वल तुषारकिरीट चतुर्दिकेर निस्तब्ध गिरिपारिषद्-वर्गेर कत ऊर्ध्वे समुत्थित हइयाछे। बङ्किमचन्द्रेर परवर्ती बङ्गसाहित्य सेइरूप आकस्मिक अत्युन्नति लाभ करियाछे; एकबार सेइटि निरीक्षण एवं परिमाण करिया देखिलेइ बङ्किमेर प्रतिभार प्रभूत बल सहजे अनुमान करा याइबे।

बङ्किम निजे बङ्गभाषाके ये श्रद्धा अर्पण करियाछेन अन्येओ ताहाके सेइरूप श्रद्धा करिबे इहाइ तिनि प्रत्याश करितेन। पूर्व-अभ्यासवशत साहित्येर सहित यदि केह छेलेखेला करिते आसित तबे बङ्किम ताहार प्रति एमन दण्ड विधान करितेन ये, द्वितीयबार सेरूप स्पर्धा देखाइते से आर साहस करित ना।

तखन समय आरो कठिन छिल। बङ्किम निजे देशव्यापी एकटि भावेर आन्दोलन उपस्थित करियाछिलेन। सेइ आन्दोलनेर प्रभावे कत चित्त चञ्चल हइया उठियाछिल एवं आपन क्षमतार सीमा उपलब्धि करिते ना पारिया कत लोक ये एक लम्फे लेखक हइबार चेष्टा करियाछिल ताहार संख्या नाइ। लेखार प्रयास जागिया उठियाछे, अथच लेखार उच्च आदर्श तखनो दाँड़ाइया याय नाइ। सेइ समय सव्यसाची बङ्किम एक हस्त गठनकार्ये एक हस्त निवारणकार्ये नियुक्त राखियाछिलेन। एक दिके अग्नि ज्वालाइया राखितेछिलेन, आर-एक दिके धम एवं भस्मराशि दूर करिबार भार निजेइ लइयाछिलेन।

रचना एवं समालोचना एइ उभय कार्येर भार बङ्किम एकाकी ग्रहण करातेइ बङ्गसाहित्य एत सत्वर एमन द्रुत परिणति लाभ करिते सक्षम हइयाछिल।

एइ दुष्कर व्रतानुष्ठानेर ये फल ताहाओ ताँहाके भोग करिते हइयाछिल। मने आछे, बङ्गदर्शने यखन तिनि समालोचक-पदे आसीन छिलेन तखन ताँहार क्षुद्र शत्रुर संख्या अल्प छिल ना। शत शत अयोग्य लोक ताँहाके ईर्षा करित एवं ताँहार श्रेष्ठत्व अप्रमाण करिबार चेष्टा करिते छाड़ित ना।

कण्टक यतइ क्षुद्र हउक ताहार बिद्ध करिबार क्षमता आछे। एवं कल्पना-प्रवण लेखकदिगेर वेदनाबोधओ साधारणेर अपेक्षा किछु अधिक। छोटो छोटो दंशनगुलि ये बङ्किमके लागित ना ताहा नहे, किन्तु किछुतेइ तिनिकर्तव्ये परांङ्मुख हन नाइ। ताँहार अजेय बल, कर्तव्येर प्रति निष्ठा एवं निजेर प्रति विश्वास छिल। तिनि जानितेन, वर्तमानेर कोनो उपद्रव ताँहार महिमाके आच्छन्न करिते पारिबे ना, समस्त क्षुद्र शत्रुर व्यूह हइते तिनि अनायासे निष्क्रमण करिते

पारिवेन। एइजन्य चिरकाल तिनि अम्लानमुखे वीरदर्पे अग्रसर हइयाछेन, कोनोदिन ताँहाके रथवेग खर्व करिते हय नाइ।

साहित्येर मध्येओ दुइ श्रेणीर योगी देखा याय, ध्यानयोगी एवं कर्मयोगी। ध्यानयोगी एकान्तमने विरले भावेर चर्चा करेन, ताँहार रचनागुलि संसारी लोकेर पक्षे येन उपरि-पाओना—येन यथालाभेर मतो।

किन्तु बङ्किम साहित्ये कर्मयोगी छिलेन। ताँहार प्रतिभा आपनाते आपनि स्थिरभावे पर्याप्त छिल ना। साहित्येर येखाने याहा-किछु अभाव छिल सर्वत्रइ तिनि आपनार विपुल बल एवं आनन्द लइया धावमान हइतेन। की काव्य, की विज्ञान, की इतिहास, की धर्मतत्त्व, येखाने यखनइ ताँहाके आवश्यक हइत सेखाने तखनइ तिनि सम्पूर्ण प्रस्तुत हइया देखा दितेन। नवीन बङ्गसाहित्येर मध्ये सकल विषयेइ आदर्श स्थापन करिया याओया ताँहार उद्देश्य छिल। विपन्न बङ्गभाषा आर्तस्वरे येखानेइ ताँहाके आह्वान करियाछे सेइखानेइ तिनि प्रसन्न चतुर्भुज मूर्तिते दर्शन दियाछेन।

किन्तु तिनि ये केवल अभय दितेन, सान्त्वना दितेन, अभाव पूर्ण करितेन ताहा नहे, तिनि दर्पहारीओ छिलेन। एखन याँहारा बङ्गसाहित्येर सारथ्य स्वीकार करिते चान ताँहारा दिने निशीथ बङ्गदेशके अत्युक्तिपूर्ण स्तुतिवाक्ये नियत प्रसन्न राखिते चेष्टा करेन, किन्तु बङ्किमेर वाणी केवल स्तुतिवादिनी छिल ना, खड्गधारिणीओ छिल। बङ्गदेश यदि असाड़ प्राणहीन ना हइत तबे कृष्ण चरित्रे वर्तमान पतित हिन्दुसमाज ओ विकृत हिन्दुधर्मेर उपर ये अस्त्राघात आछे से आघाते वेदनाबोध एवं कथञ्चित् चेतनालाभ करित। बङ्किमेर न्याय तेजस्वी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति व्यतीत आर-केहइ लोकाचार देशाचारेर विरुद्धे एरूप निर्भीक स्पष्ट उच्चारणे आपन मत प्रकाश करिते साहस करित ना। एमन-कि, बङ्किम प्राचीन हिन्दुशास्त्रेर प्रति ऐतिहासिक विचार प्रयोग करिया ताहार सार एवं असार भाग पृथक्करण, ताहार प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य अंशेर विश्लेषण एमन निःसंकोचे करियाछेन ये एखनकार दिने ताहार तुलना पाओया कठिन।

विशेषत दुइ शत्रुर माझखान दिया ताँहाके पथ काटिया चलिते हइयाछे। एक दिके याँहारा अवतार मानेन ना ताँहारा श्रीकृष्णेर प्रति देवत्वारोपे विपक्ष हइया दाँड़ान। अन्य दिके याँहारा शास्त्रेर प्रत्येक अक्षर एवं लोकाचारेर प्रत्येक प्रथाके अभ्रान्त बलिया ज्ञान करेन ताँहाराओ विचारेर लौहास्त्र द्वारा शास्त्रेर मध्य हइते काटिया-काटिया कुँदिया-कुँदिया महत्तम मनुष्येर आदर्श अनुसारे देवतागठन-कार्ये बड़ो प्रसन्न हन नाइ। एरूप अवस्थाय अन्य केह हइले कोनो एक पक्षके सर्वतोभावे आपन दले पाइते इच्छा करितेन। किन्तु साहित्यमहारथी

वङ्किम दक्षिणे बामे उभय पक्षेर प्रतिइ तीक्ष्ण शरचालन करिया अकुण्ठितभावे अग्रसर हइयाछेन---ताँहार निजेर प्रतिभा केवल ताँहार एकमात्र सहाय छिल। तिनि याहा विश्वास करियाछेन ताहा स्पष्ट व्यक्त करियाछेन---वाक्चातुरी-द्वारा आपनाके बा अन्यके वञ्चना करेन नाइ।

कल्पना एवं काल्पनिकता दुइयेर मध्ये एकटा मस्त प्रभेद आछे। यथार्थ कल्पना, युक्ति संयम एवं सत्येर द्वारा सुनिर्दिष्ट आकार-बद्ध---काल्पनिकतार मध्ये सत्येर भान आछे मात्र, किन्तु ताहा अद्भुत आतिशय्ये असंगतरूपे स्फीत-काय। ताहार मध्ये येटुकु आलोकेर लेश आछे धूमेर अंश ताहार शतगुण। याहादेर क्षमता अल्प ताहारा साहित्येर प्राय एइ प्रधूमित काल्पनिकतार आश्रय लइया थाके; कारण, इहा देखिते प्रकाण्ड, किन्तु प्रकृतपक्षे अत्यन्त लघु। एक श्रेणीर पाठकेरा एइरूप भूरिपरिमाण कृत्रिम काल्पनिकतार नैपुण्ये मुग्ध एवं अभिभूत हइया पड़ेन एवं दुर्भाग्यक्रमे बांलाय सेइ श्रेणीर पाठक विरल नहे।

एइरूप अपरिमित असंयत कल्पनार देशे बङ्किमेर न्याय आदर्श आमादेर पक्षे अत्यन्त मूल्यवान। 'कृष्णचरित्रे' उद्दाम भावेर आवेगे ताँहार कल्पना कोथाओ उच्छृङ्खल हइया छुटिया याय नाइ। प्रथम हइते शेष पर्यन्त सर्वत्रइ तिनि पदे पदे आत्मसम्वरण पूर्वक युक्तिर सुनिर्दिष्ट पथ अवलम्बन करिया चलियाछेन। याहा लिखियाछेन ताहाते ताँहार प्रतिभा प्रकाश पाइयाछे, याहा लिखेन नाइ ताहातेओ ताँहार अल्प क्षमता प्रकाश पाय नाइ।

विशेषत विषयटि एमन ये, इहा कोनो साधारण बाङालि लेखकेर हस्ते पड़िले तिनि एइ सुयोगे विस्तर 'हरि-हरि' 'मरि-मरि' 'हाय-हाय' अश्रुपात ओ प्रबल अङ्गभङ्गी करितेन एवं कल्पनार उच्छ्वास, भावेर आवेग एवं हृदयातिशय्य प्रकाश करिबार एमन अनुकूल अवसर कखनोइ छाड़ितेन ना; सुविचारित तर्क-द्वारा, सुकठिन सत्यनिर्णयेर स्पृहा-द्वारा पदे पदे आपन लेखनीके बाधा दितेन ना; सर्वजनगम्य सरल पथ छाड़िया दिया सूक्ष्मबुद्धि द्वारा स्वकपोलकल्पित एकटा नूतन आविष्कारकेइ सर्वप्राधान्य दिया ताहाकेइ वाक्प्राचुर्ये एवं कल्पनाकूहके समाच्छन्न करिया तुलितेन, एवं निजेर विश्वास ओ भाषाके यथासाध्य टानिया बुनिया आशेपाशे दीर्घ करिया अधिक परिमाणे लोकके आपन मतेर जाले आकर्षण करिते चेष्टा करितेन।

वस्तुत आमादेर शास्त्र हइते इतिहास-उद्धारेर दुरूह भार केवल बङ्किम लइते पारितेन। एक दिके हिन्दुशास्त्रेर प्रकृत मर्मग्रहणे युरोपीयगणेर अक्षमता, अन्य दिके शास्त्रगत प्रमाणेर निरपेक्ष विचार सम्बन्धे हिन्दुदिगेर संकोच---एक दिके रीतिमत परिचयेर अभाव, अन्य दिके अतिपरिचयजनित अभ्यास ओ संस्कारेर

अन्धता—यथार्थ इतिहासटिके एइ उभयसंकटेर माझखान हइते उद्धार करिते हइबे। देशानुरागेर साहाय्ये शास्त्रेर अन्तरे प्रवेश करिते हइबे एवं सत्यानुरागेर साहाय्ये ताहार अमूलक अंश परित्याग करिते हइबे। ये बल्गार इङ्गिते लेखनीके वेग दिते हइबे सेइ बल्गार आकर्षणे ताहाके सर्वदा संयत करिते हइबे। एइ-सकल क्षमतासामञ्जस्य बङ्किमेर छिल। सेइजन्य मृत्युर अनतिपूर्वे तिनि यखन प्राचीन वेद पुराण संग्रह करिया प्रस्तुत हइया बसियाछिलेन तखन बङ्गसाहित्येर बड़ो आशार कारण छिल, किन्तु मृत्यु से आशा सफल हइते दिल ना एवं आमादेर भाग्ये याहा असम्पन्न रहिया गेल ताहा ये कबे समाधा हइबे केहइ बलिते पारे ना।

बङ्किम एइ-ये सर्वप्रकार आतिशय्य एवं असंगति हइते आपनाके रक्षा करिया गियाछेन इहा ताँहार प्रतिभार प्रकृतिगत। ये-केह ताँहार रचना पड़ियाछेन सकलेइ जानेन, बङ्किम हास्यरसे सुरसिक छिलेन। ये परिष्कार युक्तिर आलोकेर द्वारा समस्त आतिशय्य ओ असंगति प्रकाश हइया पड़े हास्यरस सेइ किरणेरइ एकटि रश्मि। कत दूर पर्यन्त गेले एकटि व्यापार हास्यजनक हइया उठे ताहा सकले अनुभव करिते पारे ना, किन्तु याँहारा हास्यरसरसिक ताँहादेर अन्तःकरणे एकटि बोधशक्ति आछे यद्द्वारा ताँहारा सकल समये निजेर ना हइलेओ अपरेर कथावार्ता आचारव्यवहार एवं चरित्रेर मध्ये सुसंगतिर सूक्ष्म सीमाटुकु सहजे निर्णय करिते पारेन।

निर्मल शुभ्र संयत हास्य बङ्किमइ सर्वप्रथमे बङ्गसाहित्ये आनयन करेन। तत्पूर्वे बङ्गसाहित्ये हास्यरसके अन्यरसेर सहित एक पङ्क्तिते बसिते देओया हइत ना। से निम्नासने बसिया श्राव्य अश्राव्य भाषाय भाँड़ामि करिया सभा-जनेर मनोरञ्जन करित। आदिरसेरइ सहित येन ताहार कोनो-एकटि सर्व-उपद्रव-सह विशेष कुटुम्बितार सम्पर्क छिल एवं ओ रसटाकेइ सर्वप्रकारे पीड़न ओ आन्दोलन करिया ताहार अधिकांश परिहास-विद्रूप प्रकाश पाइत। एइ प्रगल्भ विदूषकटि यतइ प्रियपात्र थाक्, कखनो सम्मानेर अधिकारी छिल ना। येखाने गम्भीरभावे कोनो विषयेर आलोचना हइत सेखाने हास्येर चपलता सर्वप्रयत्ने परिहार करा हइत।

बङ्किम सर्वप्रथमे हास्यरसके साहित्येर उच्चश्रेणीते उन्नीत करेन। तिनिइ प्रथमे देखाइया देन ये, केवल प्रहसनेर सीमार मध्ये हास्यरस बद्ध नहे; उज्ज्वल शुभ्र हास्य सकल विषयकेइ आलोकित करिया तुलिते पारे। तिनिइ प्रथमे दृष्टान्तेर द्वारा प्रमाण कराइया देन ये एइ हास्यज्योतिर संस्पर्शे कोनो विषयेर गभीरतार गौरव ह्रास हय ना, केवल ताहार सौन्दर्य एवं रमणीयतार वृद्धि हय, ताहार सर्वांशेर प्राण एवं गति येन सुस्पष्टरूपे दीप्यमान हइया उठे। ये बङ्किम

बङ्गसाहित्येर गभीरता हइते अश्रुर उत्स उन्मुक्त करियाछेन सेइ बङ्किम आनन्देर उदयशिखर हइते नवजाग्रत बङ्गसाहित्येर उपर हास्येर आलोक विकीर्ण करिया दियाछेन।

केवल सुसंगति नहे, सुरुचि एवं शिष्टतार सीमा निर्णय करितेओ एकटि स्वाभाविक सूक्ष्म बोधशक्तिर आवश्यक। माझे माझे अनेक बलिष्ठ प्रतिभार मध्ये सेइ बोधशक्तिर अभाव देखा याय। किन्तु बङ्किमेर प्रतिभाय बल एवं सौकुमार्येर एकटि सुन्दर संम्मिश्रण छिल। नारीजातिर प्रति यथार्थ वीरपुरुषेर मने येरूप एकटि ससम्भ्रम सम्मानेर भाव थाके तेमनि सुरुचि एवं शीलतार प्रति बङ्किमेर बलिष्ठ बुद्धिर एकटि भद्रोचित वीरोचित प्रीतिपूर्ण श्रद्धा छिल। बङ्किमेर रचना ताहार साक्ष्य। वर्तमान लेखक येदिन प्रथम बङ्किमके देखियाछिल सेदिन एकटि घटना घटे, याहाते बङ्किमेर एइ स्वाभाविक सुरुचिप्रियतार प्रमाण पाओया याय।

सेदिन लेखकेर आत्मीय पूज्यपाद श्रीयुक्त गौरीन्द्रमोहन ठाकुर महोदयेर निमंत्रणे ताँहादेर मरकतकुञ्जे कलेज-रियुनियन-नामक मिलनसभा बसियाछिल। ठिक कत दिनेर कथा भालो स्मरण नाइ, किन्तु आमि तखन बालक छिलाम। सेदिन सेखाने आमार अपरिचित बहुतर यशस्वी लोकेर समागम हइयाछिल। सेइ बुधमण्डलीर मध्ये एकटि ऋजु दीर्घकाय उज्ज्वलकौतुक-प्रफुल्लमुख गुम्फधारी प्रौढ़ पुरुष चापकान-परिहित वक्षेर उपर दुइ हस्त आबद्ध करिया दाँड़ाइया छिलेन। देखिबामात्रइ येन तांहाके सकलेर हइते स्वतन्त्र एवं आत्मसमाहित बलिया बोध हइल। आर-सकले जनतार अंश, केवल तिनि येन एकाकी एकजन। सेदिन आर-काहारओ परिचय जानिबार जन्य आमार कोनोरूप प्रयास जन्मे नाइ, किन्तु ताँहाके देखिया तत्क्षणात् आमि एवं आमार एकटि आत्मीय सङ्गी एकसङ्गेइ कौतूहली हइया उठिलाम। सन्धान लइया जानिलाम, तिनिइ आमादेर बहु दिनेर अभिलषितदर्शन लोकविश्रुत बङ्किमबाबु। मने आछे, प्रथम दर्शनेइ ताँहार मुखश्रीते प्रतिभार प्रखरता एवं बलिष्ठता एवं सर्वलोक हइते ताँहार एकटि सुदूर स्वातन्त्र्यभाव आमार मने अङ्कितहइया गियाछिल। ताहार पर अनेकवार ताँहार साक्षात्लाभ करियाछि, ताँहार निकट अनेक उत्साह एवं उपदेश प्राप्त हइयाछि एवं ताँहार मुखश्री स्नेहेर कोमल हास्ये अत्यन्त कमनीय हइते देखियाछि, किन्तु प्रथम दर्शने सेइ-ये ताँहार मुखे उद्यत खड्गेर न्याय एकटि उज्ज्वल सुतीक्ष्ण प्रबलता देखिते पाइयाछिलाम ताहा आज पर्यन्त विस्मृत हइ नाइ।

सेइ उत्सव उपलक्षे एकटि घरे एकजन संस्कृतज्ञ पण्डित देशानुरागमूलक

स्वरचित संस्कृत श्लोक पाठ एवं ताहार व्याख्या करितेछिलेन। बङ्किम एक प्रान्ते दाँड़ाइया शुनितेछिलेन। पण्डितमहाशय सहसा एकटि श्लोके पतित भारतसन्तानके लक्ष्य करिया एकटा अत्यन्त सेकेले पण्डिती रसिकता प्रयोग करिलेन, से रस किञ्चित् वीभत्स हइया उठिल। बङ्किम तत्क्षणात् एकान्त संकुचित हइया दक्षिण करतले मुखेर निम्नार्ध ढाकिया पार्श्ववर्ती द्वार दिया द्रुतवेगे अन्य घरे पलायन करिलेन।

बङ्किमेर सेइ ससंकोच पलायनदृश्यटि अद्यावधि आमार मने मुद्रित हइया आछे।

विवेचना करिया देखिते हइबे, ईश्वर गुप्त यखन साहित्यगुरु छिलेन बङ्किम तखन ताँहार शिष्यश्रेणीर मध्ये गण्य छिलेन। से समयकार साहित्य अन्य ये-कोनो प्रकार शिक्षा दिते समर्थ हउक, ठिक सुरुचि शिक्षार उपयोगी छिल ना। से समयकार असंयत वाक्‌युद्ध एवं आन्दोलनेर मध्ये दीक्षित ओ बर्धित हइया इतरतार प्रति विद्वेष, सुरुचिर प्रति श्रद्धा एवं श्लीलता सम्बन्धे अक्षुण्ण वेदना-बोध रक्षा करा ये की आश्चर्य व्यापार ताहा सकलेइ बुझिते पारिबेन। दीनबन्धुओ बङ्किमेर समसामयिक एवं ताँहार बान्धव छिलेन, किन्तु ताँहार लेखाय अन्य क्षमता प्रकाश हइलेओ ताहाते बङ्किमेर प्रतिभार एइ ब्राह्मणोचित शुचिता देखा याय नाइ। ताँहार रचना हइते ईश्वर गुप्तेर समयेर छाप कालक्रमे धौत हइते पारे नाइ।

आमादेर मध्ये याँहारा साहित्यव्यवसायी ताँहारा बङ्किमेर काछे ये की चिरऋणे आवद्ध ताहा येन कोनो काले विस्मृत ना हन। एकदिन आमादेर बङ्गभाषा केवल एकतारा यन्त्रेर मतो एक तारे बाँधा छिल, केवल सहज सुरे धर्मसंकीर्तन करिबार उपयोगी छिल; बङ्किम स्वहस्ते ताहाते एक-एकटि करिया तार चड़ाइया आज ताहाके वीणायन्त्रे परिणत करिया तुलियाछेन। पूर्वे याहाते केवल स्थानीय ग्राम्य सुर बाजित आज ताहा विश्वसभाय शुनाइबार उपयुक्त ध्रुपद अङ्गेर कलावती रागिणी आलाप करिबार योग्य हइया उठियाछे। सेइ ताँहार स्वहस्तसम्पूर्ण स्नेहपालित क्रोड़सङ्गिनी बङ्गभाषा आज बङ्किमेर जन्य अन्तरेर सहित रोदन करिया उठियाछे। किन्तु तिनि एइ शोकोच्छ्वासेर अतीत शान्तिधामे दुष्कर जीवनयज्ञेर अवसाने निर्विकार निरामय विश्राम लाभ करियाछेन। मृत्युर परे ताँहार मुखे एकटि कोमल प्रसन्नता, एकटि सर्वदुःख-तापहीन गभीर प्रशान्ति उद्भासित हइया उठियाछिल—येन जीवनेर मध्याह्न-रौद्रदग्ध कठिन संसारतल हइते मृत्यु ताँहाके स्नेहसुशीतल जननीक्रोड़े तुलिया लइयाछेन। आज आमादेर विलाप परिताप ताँहाके स्पर्श करितेछे ना, आमादेर

भक्ति-उपहार ग्रहण करिबार जन्य एइ प्रतिभाज्योतिर्मय सौम्य प्रसन्नमूर्ति एखाने उपस्थित नाइ। आमादेर एइ शोक एइ भक्ति केवल आमादेरइ कल्याणेर जन्य। बङ्किम साहित्यक्षेत्रे ये आदर्श स्थापन करिया गियाछेन एइ शोके, एइ भक्तिते, सेइ आदर्शप्रतिमा आमादेर अन्तरे उज्ज्वल एवं स्थायी रूपे प्रतिष्ठित हउक। प्रस्तरेर मूर्ति स्थापनेर अर्थ एवं सामर्थ्य आमादेर यदि ना थाके, तबे एकबार ताँहार महत्त्व सर्वतोभावे मनेर मध्ये उपलब्धि करिया ताँहाके आमादेर बङ्गहृदयेर स्मरणस्तम्भे स्थायी करिया राखि। इंरेज एवं इंरेजेर आइन चिरस्थायी नहे; राजनैतिक धर्मनैतिक समाजनैतिक मतामत सहस्रबार परिवर्तित हइते पारे; ये-सकल घटना ये-सकल अनुष्ठान आज सर्वप्रधान बलिया बोध हइतेछे एवं याहार उन्मादनार कोलाहले समाजेर ख्यातिहीन शब्दहीन कर्तव्यगुलिके नगण्य बलिया धारणा हइतेछे, काल ताहार स्मृतिमात्र चिह्नमात्र अवशिष्ट थाकिते ना पारे; किन्तु यिनि आमादेर मातृभाषाके सर्वप्रकार भावप्रकाशेर अनुकूल करिया गियाछेन तिनि एइ हतभाग्य दरिद्र देशके एकटि अमूल्य चिरसम्पद दान करियाछेन। तिनि स्थायी जातीय उन्नतिर एकमात्र मूल उपाय स्थापन करिया गियाछेन। तिनिइ आमादिगेर निकट यथार्थ शोकेर मध्ये सान्त्वना अवनतिर मध्ये आशा, श्रान्तिर मध्ये उत्साह एवं दारिद्र्येर शून्यतार मध्ये चिरसौन्दर्येर अक्षय आकार उद्घाटित करिया दियाछेन। आमादिगेर मध्ये याहा-किछु अमर एवं आमादिगके याहा-किछु अमर करिबे सेइ सकल महाशक्तिके धारण करिबार, पोषण करिबार, प्रकाश करिबार एवं सर्वत्र प्रचार करिबार एकमात्र उपाय ये मातृभाषा ताहाकेइ तिनि बलवती एवं महीयसी करियाछेन।

रचनाविशेषेर समालोचना भ्रान्त हइते पारे—आमादिगेर निकट याह प्रशंसित कालक्रमे शिक्षा रुचि एवं अवस्थार परिवर्तने आमादेर उत्तरपुरुषेर निकट ताहा निन्दित एवं उपेक्षित हइते पारे, किन्तु बङ्किम बङ्गभाषार क्षमता एवं बङ्गसाहित्येर समृद्धि वृद्धि करिया दियाछेन; तिनि भगीरथेर न्याय साधना करिया बङ्गसाहित्ये भावमन्दाकिनीर अवतारण करियाछेन एवं सेइ पुण्यस्रोतस्पर्शे जड़त्व शाप मोचन करिया आमादेर प्राचीन भस्मराशिके सञ्जीवित् करिया तुलियाछेन—इहा केवल सामयिक मत नहे, ए कथा कोनो विशेष तर्क वा रुचिर उपर निर्भर करितेछे ना, इहा एकटि ऐतिहासिक सत्य।

एइ कथा स्मरणे मुद्रित करिया सेइ बांला-लेखकदिगेर गुरु बांलापाठकदिगेर सुहृद् एवं सुजला सुफला मलयजशीतला बङ्गभूमिर मातृवत्सल प्रतिभाशाली सन्तानेर निकट हइते विदाय ग्रहण करि, यिनि जीवनेर सायाह्न आसिबार

पूर्वेइ, नूतन अवकाशे नूतन उद्यमे नूतन कार्ये हस्तक्षेप करिबार प्रारम्भेइ, आपनार अपरिम्लान प्रतिभारश्मि संहरण करिया बङ्गसाहित्याकाश क्षीणतर ज्योतिष्क-मण्डलीर हस्ते समर्पणपूर्वक गत शताब्दीर वर्षशेषेर पश्चिमदिगन्तसीमाय अकाले अस्तमित हइलेन।

वैशाख १३०१

[बंकिमचन्द्र (मृत्यु: ८ अप्रैल १८९९) : रवीन्द्रनाथ ने यह निबन्ध चैतन्य पुस्तकालय की सभा में पढ़ा था। मई १८९९ (वैशाख १३०१) की 'साधना' में प्रकाशित।]

दशम खण्ड

विचित्र प्रबन्ध

लाइब्रेरि

महासमुद्रेर शत वत्सरेर कल्लोल केह यदि एमन करिया बाँधिया राखिते पारित ये, से घुमाइया पड़ा शिशुटिर मतो चुप करिया थाकित, तबे सेइ नीरव महाशब्देर सहित एइ लाइब्रेरिर तुलना हइत। एखाने भाषा चुप करिया आछे, प्रवाह स्थिर हइया आछे, मानवात्मार अमर आलोक कालो अक्षरेर श्रृङ्खले कागजेर कारागारे बाँधा पड़िया आछे। इहारा सहसा यदि विद्रोही हइया उठे, निस्तब्धता भाङिया फेले, अक्षरेर बेड़ा दग्ध करिया एकेबारे बाहिर हइया आसे! हिमालयेर माथार उपरे कठिन बरफेर मध्ये येमन कत कत वन्या बाँधा आछे, तेमनि एइ लाइब्रेरिर मध्ये मानवहृदयेर वन्या के बाँधिया राखियाछे!

विद्युत्‌के मानुष लोहार तार दिया बाँधियाछे, किन्तु के जानित मानुष शब्दके निःशब्देर मध्ये बाँधिते पारिबे। के जानित सङ्गीतके, हृदयेर आशाके, जाग्रत आत्मार आनन्दध्वनिके, आकाशेर दैववाणीके से कागजे मुड़िया राखिबे! के जानित मानुष अतीतके वर्तमाने बन्दी करिबे। अतलस्पर्श कालसमुद्रेर उपर केवल एक-एकखानि बइ दिया साँको बाँधिया दिबे!

लाइब्रेरिर मध्ये आमरा सहस्र पथेर चौमाथार उपरे दाँड़ाइया आछि। कोनो पथ अनन्त समुद्रे गियाछे, कोनो पथ अनन्त शिखरे उठियाछे, कोनो पथ मानवहृदयेर अतलस्पर्शे नामियाछे। ये ये-दिके धावमान हओ, कोथाओ बाधा पाइबे ना। मानुष आपनार परित्राणके एतटुकु जायगार मध्ये बाँधाइया राखियाछे।

शंखेर मध्ये येमन समुद्रेर शब्द शुना याय, तेमनि एइ लाइब्रेरिर मध्य कि हृदयेर उत्थानपतनेर शब्द शुनितेछ। एखाने जीवित ओ मृत व्यक्तिर हृदय पाशापाशि एक पाड़ाय बास करितेछे। वाद ओ प्रतिवाद एखाने दुइ भाइयेर मतो एकसङ्गे थाके। संशय ओ विश्वास, सन्धान ओ आविष्कार एखाने देहे देहे लग्न हइया बास करे। एखाने दीर्घप्राण स्वल्पप्राण परम धैर्य ओ शक्तिर सहित जीवनयात्रा निर्वाह करितेछे, केह काहाकेओ उपेक्षा करितेछे ना।

कत नदी समुद्र पर्वत उल्लङ्घन करिया मानवेर कण्ठ एखाने आसिया

पौँछियाछे——कत शत वत्सरेर प्रान्त हइते एइ स्वर आसितेछे। एसो, एखाने एसो, एखाने आलोकेर जन्मसङ्गीत गान हइतेछे।

अमृतलोक प्रथम आविष्कार करिया ये ये महापुरुष ये-कोनोदिन आपनार चारिदिके मानुषके डाक दिया बलियाछिलेन 'तोमरा सकले अमृतेर पुत्र, तोमरा दिव्यधामे बास करितेछ' सेइ महापुरुषदेर कण्ठेइ सहस्र भाषाय सहस्र वत्सरेर मध्य दिया एइ लाइब्रेरिर मध्ये प्रतिध्वनित हइतेछे।

एइ बङ्गेर प्रान्त हइते आमादेर कि किछु बलिबार नाइ। मानवसमाजके आमादेर कि कोनो संवाद दिबार नाइ। जगतेर एकतान सङ्गीतेर मध्ये बङ्ग-देशइ केवल निस्तब्ध हइया थाकिबे!

आमादेर पदप्रान्तस्थित समुद्र कि आमादिगके किछु बलितेछे ना। आमादेर गङ्गा कि हिमालयेर शिखर हइते कैलासेर कोनो गान वहन करिया आनितेछे ना। आमादेर माथार उपरे कि तबे अनन्त नीलाकाश नाइ। सेखान हइते अनन्तकालेर चिरज्योतिर्मयी नक्षत्रलिपि कि केह मुछिया फेलियाछे।

देश-विदेश हइते, अतीत-वर्तमान हइते, प्रतिदिन आमादेर काछे मानव-जातिर पत्र आसितेछे; आमरा कि ताहार उत्तरे दुटि-चारटि चटि चटि इंरेजि खबरेर कागज लिखिब। सकल देश असीम कालेर पटे निज निज नाम खुदितेछे, बाङालिर नाम कि केवल दरखास्तेर द्वितीय पातेइ लेखा थाकिबे। जड़ अदृष्टेर सहित मानवात्मार संग्राम चलितेछे, सैनिकदिगके आह्वान करिया पृथिवीर दिके दिके श्रृङ्गध्वनि बाजिया उठियाछे, आमरा कि केवल आमादेर उठानेर माचार उपरकार लाउ-कुमड़ा लइया मकद्दमा एवं आपिल चालाइते थाकिब।

बहु वत्सर नीरव थाकिया बङ्गदेशेर प्राण भरिया उठियाछे। ताहाके आपनार भाषाय एकबार आपनार कथाटि बलिते दाओ। बाङालिकण्ठेर सहित मिलिया विश्वसङ्गीत मधुरतर हइया उठिबे।

पौष १२९२

['बलाका' जनवरी १८८६ (पौष १२९२) में प्रकाशित]

रङ्गमञ्च

भरतेर नाट्यशास्त्रे नाट्यमञ्चेर वर्णना आछे। ताहाते दृश्यपटेर कोनो उल्लेख देखिते पाइ ना। ताहाते ये विशेष क्षति हइयाछिल, एरूप आमि बोध करि ना।

कलाविद्या येखाने एकेश्वरी सेइखानेइ ताहार पूर्णगौरव। सतीनेर सङ्गे घर करिते गेले ताहाके खाटो हइतेइ हइबे। विशेषत सतीन यदि प्रबल हय। रामायणके यदि सुर करिया पड़िते हय, तबे आदिकाण्ड हइते उत्तरकाण्ड पर्यन्त से सुरके चिरकाल समान एकघेये हइया थाकिते हय; रागिणी हिसाबे से बेचारार कोनो काले पदोन्नति घटे ना। याहा उच्चदरेर काव्य ताहा आपनार सङ्गीत आपनार नियमेइ योगाइया थाके, बाहिरेर सङ्गीतेर साहाय्य अवज्ञार सङ्गे उपेक्षा करे। याहा उच्च अङ्गेर सङ्गीत ताहा आपनार कथा आपनार नियमेइ बले, ताहा कथार जन्य कालिदास-मिल्टनेर मुखेपेक्षा करे ना—ताहा नितान्त तुच्छ तोम्-ताना-नाना लइयाइ चमत्कार काज चालाइया देय। छविते गानेते कथाय मिशाइया ललितकलार एकटा बारोयारि व्यापार करा याइते पारे; किन्तु से कतकटा खेला हिसाबे, ताहा हाटेर जिनिस, ताहाके राजकीय उत्सवेर उच्च आसन देओया याइते पारे ना।

किन्तु श्राव्यकाव्येर चेये दृश्यकाव्य स्वभावतइ कतकटा पराधीन बटे। बाहिरेर साहाय्येइ निजेके सार्थक करिबार जन्य से विशेषभावे सृष्ट। से ये अभिनयेर जन्य अपेक्षा करिया आछे, ए कथा ताहाके स्वीकार करितेइ हय।

आमरा ए कथा स्वीकार करि ना। साध्वी स्त्री येमन स्वामीके छाड़ा आर काहाकेओ चाय ना, भालो काव्य तेमनि भावुक छाड़ा आर काहारओ अपेक्षा करे ना। साहित्य पाठ करिबार समय आमरा सकलेइ मने मने अभिनय करिया थाकि; से अभिनये ये काव्येर सौन्दर्य खोले ना से काव्य कोनो कवि के यशस्वी करे नाइ।

वरञ्च ए कथा बलिते पार ये, अभिनयविद्या नितान्त पराश्रिता। से अनाथा नाटकेर जन्य पथ चाहिया बसिया थाके। नाटकेर गौरव अवलम्बन करियाइ से आपनार गौरव देखाइते पारे।

स्त्रैण स्वामी येमन लोकेर काछे उपहास पाय, नाटक तेमनि यदि अभिनयेर अपेक्षा करिया आपनाके नाना दिके खर्व करे तबे सेओ सेइरूप उपहासेर योग्य हइया उठे। नाटकेर भावखाना एइरूप हओया उचित ये, 'आमार यदि अभिनय हय तो हउक, ना हय तो अभिनयेर पोड़ाकपाल—आमार कोनोइ क्षति नाइ।'

याहाइ हउक, अभिनयके काव्येर अधीनता स्वीकार करितेइ हय। किन्तु ताइ बलिया सकल कलाविद्यारइ गोलामि ताहाके करिते हइबे, एमन की कथा आछे। यदि से आपनार गौरव राखिते चाय, तबे येटुकु अधीनता ताहार आत्म-प्रकाशेर जन्य नितान्तइ ना हइले नय, सेइटुकु से येन ग्रहण करे, ताहार बेशि से याहा-किछु अवलम्बन करे ताहाते ताहार निजेर अवमानना हय।

इहा बला बाहुल्य, नाटचोक्त कथागुलि अभिनेतार पक्षे नितान्त आवश्यक। कवि ताहाके ये हासिर कथाटि योगान ताहा लइयाइ ताहाके हासिते हय; कवि ताहाके ये कान्नार अवसर देन ताहा लइयाइ काँदिया से दर्शकेर चोखे जल टानिया आने। किन्तु छविटा केन। ताहा अभिनेतार पश्चाते थाके, अभिनेता ताहाके सृष्टि करिया तोले ना; ताहा आँका मात्र; आमार मते ताहाते अभिनेतार अक्षमता कापुरुषता प्रकाश पाय। एइरूपे ये उपाये दर्शकदेर मने विभ्रम उत्पादन करिया से निजेर काजके सहज करिया तोले, ताहा चित्रकरेर काछ हइते भिक्षा करिया आना।

ता छाड़ा, ये दर्शक तोमार अभिनय देखिते आसियाछे ताहार कि निजेर सम्बल काना-कड़ाओ नाइ। से कि शिशु। विश्वास करिया ताहार उपरे कि कोनो विषये निर्भर करिबार जो नाइ। यदि ताहा सत्य हय, तबे डबल दाम दिलेओ एमन-सकल लोकके टिकिट बेचिते नाइ।

ए तो आदालतेर काछे साक्ष्य देओया नय ये प्रत्येक कथाटाके हलफ करिया प्रमाण करिते हइबे। याहारा विश्वास करिबार जन्य, आनन्द करिबार जन्य आसियाछे, ताहादिगके एत ठकाइबार आयोजन केन। ताहारा निजेर कल्पना-शक्ति बाड़िते चाबिबन्ध करिया आसे नाइ। कतक तुमि बोझाइबे, कतक ताहारा बुझिबे, तोमार सहित ताहादेर एइरूप आपोषेर सम्बन्ध।

दुष्यन्त गाछेर गुंड़िर आड़ाले दाँड़ाइया सखीदेर सहित शकुन्तलार कथा-वार्ता शुनितेछेन। अति उत्तम। कथावार्ता बेश रसे जमाइया बलिया याओ। आस्त गाछेर गुंड़िटा आमार सम्मुखे उपस्थित ना थाकिलेओ सेटा आमि धरिया लइते पारि, एतटुकु सृजनशक्ति आमार आछे; दुष्यन्त शकुन्तला अनसूया प्रियंवदार चरित्रानुरूप प्रत्येक हावभाव एवं कण्ठस्वरेर प्रत्येक भङ्गी एकेबारे प्रत्यक्षवत् अनुमान करिया लओया शक्त—सुतरां सेगुलि यखन प्रत्यक्ष वर्तमान

देखिते पाइ तखन हृदय रसे अभिषिक्त हय; किन्तु दुटो गाछ वा एकटा घर वा एकटा नदी कल्पना करिया लओया किछुइ शक्त नय, सेटाओ आमादेर हाते ना राखिया चित्रेर द्वारा उपस्थित करिले आमादेर प्रति घोरतर अविश्वास प्रकाश करा हय।

आमादेर देशर यात्रा आमार एजन्य भालो लागे। यात्रार अभिनये दर्शक ओ अभिनेतार मध्ये एकटा गुरुतर व्यवधान नाइ। परस्परेर विश्वास ओ अनुकूल्येर प्रति निर्भर करिया काजटा बेश सहृदयतार सहित सुसम्पन्न हइया उठे। काव्यरस, येटा आसल जिनिस, सेइटेइ अभिनयेर साहाय्ये फोयारार मतो चारि दिके दर्शकदेर पुलकित चित्तेर उपर छड़ाइया पड़े। मालिनी यखन ताहार पुष्पविरल बागाने फुल खुंजिया बेला करिया दितेछे, तखन सेटाके सप्रमाण करिबार जन्य आसरेर मध्ये आस्त आस्त गाछ आनिया फेलिबार की दरकार आछे। एका मालिनीर मध्ये समस्त बागान आपनि जागिया उठे। ताइ यदि ना हइबे, तबे मालिनीरइ बा की गुण, आर दर्शकगुलोइ बा काठेर मूर्तिर मतो की करिते बसिया आछे ?

शकुन्तलार कविके यदि रङ्गमञ्चे दृश्यपटेर कथा भाबिते हइत, तबे तिनि गोड़ातेइ मृगेर पश्चाते रथ-छोटानो बन्ध करितेन। अवश्य तिनि बड़ो कवि, रथ बन्ध हइलेइ ये ताँहार कलम बन्ध हइत ताहा नहे; किन्तु आमि बलितेछि, येटा तुच्छ ताहार जन्य, याहा बड़ो ताहा केन निजेके कोनो अंशे खर्व करिते याइब। भावुकेर चित्तेर मध्ये रङ्गमञ्च आछे, से रङ्गमञ्चे स्थानाभाव नाइ। सेखाने जादुकरेर हाते दृश्यपट आपनि रचित हइते थाके। सेइ मञ्च, सेइ पटइ नाट्यकारेर लक्ष्यस्थल; कोनो कृत्रिम मञ्च ओ कृत्रिम पट कविकल्पनार उपयुक्त हइते पारे ना।

अतएव यखन दुष्यन्त ओ सारथि एकइ स्थाने स्थिर दाड़ाइया वर्णना ओ अभिनयेर द्वारा रथवेगेर आलोचना करेन, येखाने दर्शक एइ अति सामान्य कथाटुकु अनायासेइ धरिया लन ये, मञ्च छोटो, किन्तु काव्य छोटो नय; अतएव काव्येर खातिरे मञ्चेर एइ अनिवार्य त्रुटिके प्रसन्नचित्ते ताँहारा मर्जना करेन एवं निजेर चित्रक्षेत्रके सेइ क्षुद्रायतनेर मध्ये प्रसारित करिया दिया मञ्चकेइ महीयान करिया तोलेन। किन्तु मञ्चेर खातिरे काव्यके यदि खाटो हइते हइत, तबे ए कयेकटा हतभाग्य काष्ठखण्डके के माप करिते पारित ?

शकुन्तला-नाटक बाहिरेर चित्रपटेर कोनो अपेक्षा राखे नाइ बलिया आपनार चित्रपटगुलिके आपनि सृष्टि करिया लइयाछे। ताहार कण्वाश्रम, ताहार स्वर्गपथेर मेघलोक, ताहार मारीचेर तपोवनेर जन्य से आर काहारओ उपर

कोनो बरात देय नाइ। से निजके निजे सम्पूर्ण करिया तुलियाछे। की चरित्र-सृजन, की स्वभावचित्र, निजेर काव्यसम्पदेर उपरेइ ताहार एकमात्र निर्भर।

आमरा अन्य प्रबन्धे बलियाछि, युरोपीयेर वास्तव सत्य नहिले नय। कल्पना ये केवल ताहादेर चित्तरञ्जन करिबे ताहा नय, काल्पनिकके अविकल वास्तविकेर मतो करिया बालकेर मतो ताहादिगके भुलाइबे। केवल काव्य-रसेर प्राणदायिनी विशल्यकरणीटुकु हइले चलिबे ना, ताहार सङ्गे वास्तविक-तार आस्त गन्धमादनटा पर्यन्त चाइ। एखन कलियुग, सुतरां गन्धमादन टानिया आनिते एञ्जिनियारिं चाइ। ताहार व्ययओ सामान्य नहे। बिलातेर स्टेजे शुद्धमात्र एइ खेलार जन्य ये बाजे खरच हय, भारतवर्षेर कत अभ्रभेदी दुर्भिक्ष ताहार मध्ये तलाइया याइते पारे।

प्राच्यदेशेर क्रिया-कर्म खेला-आनन्द समस्त सरल-सहज। कलापाताय आमादेर भोज सम्पन्न हय बलिया, भोजेर याहा अकृततम आनन्द, अर्थात् विश्वके अवारितभावे निजेर घरटुकुर मध्ये आमन्त्रण करिया आना, सम्भवपर हय। आयोजनेर भार यदि जटिल ओ अतिरिक्त हइत तबे आसल जिनिसटाइ मारायाइत।

बिलातेर नकले आमरा ये थियेटार करियाछि ताहा भाराक्रान्त एकटा स्फीत पदार्थ। ताहाके नड़ानो शक्त, ताहाके आपामार सकलेर द्वारेर काछे आनिया देओया दुःसाध्य; ताहाते लक्ष्मीर पेंचाइ सरस्वतीर पद्मके प्राय आच्छन्न करिया आछे। ताहाते कवि ओ गुणीर प्रतिभार चेये धनीर मूलधन ढेर बेशि थाका चाइ। दर्शक यदि बिलाति छेलेमानुषिते दीक्षित ना हइया थाके एवं अभिनेतार यदि निजेर प्रति ओ काव्येर प्रति यथार्थ विश्वास थाके, तबे अभिनयेर चारि दिक हइते ताहार बहुमूल्य बाजे जञ्जालगुलो झाँट दिया फेलिया ताहाके मुक्तिदान ओ गौरवदान करिलेइ सहृदय हिन्दुसन्तानेर मतो काज हय। बागान-के ये अविकल बागान आकियाइ खाड़ा करिते हइबे एवं स्त्रीचरित्र अकृत्रिम स्त्रीलोकके दियाइ अभिनय कराइते हइबे, एरूप अत्यन्त भूल बिलाति बर्बरता परिहार करिबार समय आसियाछे।

मोटेर उपर बला याइते पारे ये, जटिलता अक्षमतारइ परिचय; वास्त-विकता काँचपोकार मतो आर्टेर मध्ये प्रवेश करिले तेलापोकार मतो ताहार अन्तरेर समस्त रस निःशेष करिया फेले, एवं येखाने अजीर्णवशत यथार्थ रसेर क्षुधार अभाव सेखाने बहुमूल्य बाह्य प्राचुर्य क्रमशइ भीषणरूपे बाड़िया चले—अवशेषे अन्नके सम्पूर्ण आच्छन्न करिया चाटनिइ स्तूपाकार हइया उठे।

पौष १३०९

[बंगदर्शन, जनवरी १९०३ (पौष १३०९) में प्रकाशित ।]

केकाध्वनि

हठात् गृहपालित मयूरेर डाक शुनिया आमार बन्धु बलिया उठिलेन, 'आमि ऐ मयूरेर डाक सह्य करिते पारि ना; कविरा केकारबके केन ये ताँहादेर काव्ये स्थान दियाछेन बुझिबार जो नाइ।'

कवि यखन वसन्तेर कुहुस्वर एवं वर्षार केका, दुटाकेइ समान आदर दियाछेन, तखन हठात् मने हइते पारे, कविर बुझि-बा कैवल्यदशाप्राप्ति हइयाछे—ताँहार काछे भालो ओ मन्द, ललित ओ कर्कशेर भेद लुप्त।

केवल केका केन, व्याङेर डाक एवं झिल्लिर झंकारके केह मधुर बलिते पारे ना। अथच कविरा ए शब्दगुलिकेओ उपेक्षा करेन नाइ। प्रेयसीर कण्ठस्वरेर सहित इहादेर तुलना करिते साहस पान नाइ, किन्तु षड़ऋतुर महासंगीतेर प्रधान अङ्ग बलिया ताँहारा इहादिगके सम्मान दियाछेन।

एक प्रकारेर मिष्टता आछे, ताहा निःसंशय मिष्ट, नितान्तइ मिष्ट। ताहा निजेर लालित्य सप्रमाण करिते मुहूर्तमात्र समय लय ना। इन्द्रियेर असन्दिग्ध साक्ष्य लइया मन ताहार सौन्दर्य स्वीकार करिते किछुमात्र तर्क करे ना। ताहा आमादेर मनेर निजेर आविष्कार नहे, इन्द्रियेर निकट हइते पाओया; एइजन्य मन ताहाके अवज्ञा करे, बले—ओ नितान्तइ मिष्ट, केवलइ मिष्ट। अर्थात्, इहार मिष्टता बुझिते अन्तःकरणेर कोनो प्रयोजन हय ना, केवलमात्र इन्द्रियेर द्वाराइ बोझा याय। याहारा गानेर समजदार एइजन्यइ ताहारा अत्यन्त उपेक्षा प्रकाश करिया बले, अमुक लोक मिष्ट गान करे। भावटा एइ ये, मिष्टगायक गानके आमादेर इन्द्रियसभाय आनिया नितान्त सुलभ प्रशंसार द्वारा अपमानित करे, मार्जित रुचि ओ शिक्षित मनेर दरबारे से प्रवेश करे ना। ये लोक पाटेर अभिज्ञ याचनदार से रससिक्त पाट चाय ना; से बले, 'आमाके शुकनो पाट दाओ, तबेइ आमि ठिक ओजनटा बुझिब।' गानेर उपयुक्त समजदार बले, 'बाजे रस दिया गानेर बाजे गौरव बाड़ाइयो ना; आमाके शुकनो माल दाओ, तबेइ आमि ठिक ओजनटि पाइब, आमि खुशि हइया ठिक दामटि चुकाइया दिब।' बाहिरेर बाजे मिष्टताय आसल जिनिसेर मूल्य नामाइया देय।

याहा सहजेइ मिष्ट ताहाते अतिशीघ्र मनेर आलस्य आने, बेशिक्षण मनोयोग थाके ना। अबिलम्बेइ ताहार सीमाय उत्तीर्ण हइया मन बले, 'आर केन, ढेर हइयाछे।'

एइजन्य ये लोक ये विषये विशेष शिक्षा लाभ करियाछे, से ताहार गोड़ार दिककार नितान्त सहज ओ ललित अंशके आर खातिर करे ना। कारण, सेटुकुर सीमा से जानिया लइयाछ; सेटुकुर दौड़ ये बेशिदूर नहे ताहा से बोझे; एइजन्यइ ताहार अन्तःकरण ताहाते जागे ना। अशिक्षित सेइ सहज अंशटुकुइ बुझिते पारे; अथच तखनओ से ताहार सीमा पाय ना, एइजन्यइ सेइ अगभीर अंशेइ ताहार एकमात्र आनन्द। समजदारेर आनन्दके से एकटा किम्भूत व्यापार बलिया मने करे; अनेक समय ताहाके कपटतार आडम्बर बलियाओ गण्य करिया थाके।

एइजन्यइ सर्वप्रकार कलाविद्या सम्बन्धे शिक्षित ओ अशिक्षितेर आनन्द भिन्न भिन्न पथे याय। तखन एक पक्ष बले, 'तुमि की बुझिबे!' आर-एक पक्ष राग करिया बले, 'याहा बुझिबार ताहा केवल तुमिइ बोझ, जगते आर-केह बुझि बोझे ना!'

एकटि सुगभीर सामञ्जस्येर आनन्द, संस्थान-समावेशेर आनन्द, दूरवर्तीर सहित योग-संयोगर आनन्द, पार्श्ववर्तीर सहित वैचित्र्यसाधनेर आनन्द—एइगुलि मानसिक आनन्द। भितरे प्रवेश ना करिले, ना बुझिले, ए आनन्द भोग करिबार उपाय नाइ। उपर हइते चट् करिया ये सुख पाओया याय इहा ताहा अपेक्षा स्थायी ओ गभीर।

एवं एक हिसाबे ताहा अपेक्षा व्यापक। याहा अगभीर, लोकेर शिक्षाविस्तारेर सङ्गे, अभ्यासेर सङ्गे, क्रमेइ ताहा क्षय हइया ताहार रिक्तता बाहिर हइया पड़े। याहा गभीर ताहा आपातत बहु लोकेर गम्य ना हइलेओ बहूकाल ताहार परमायु थाके, ताहार मध्ये ये-एकटि श्रेष्ठतार आदर्श आछे ताहा सहजे जीर्ण हय ना।

जयदेवेर 'ललितलवङ्गलता' भालो बटे, किन्तु बशिक्षण नहे। इन्द्रिय ताहाके मन-महाराजेर काछे निवेदन करे, मन ताहाके एकबार स्पर्श करियाइ राखिया देय, तखन ताहा इन्द्रियेर भोगेइ शेष हइया याय। 'ललितलवङ्गलता'र पार्श्वे कुमारसम्भवेर एकटा श्लोक धरिया देखा याक—

> आवर्जिता किञ्चिदिव स्तनाभ्यां
> वासो वसाना तरुणार्करागम्।
> पर्याप्तपुष्पस्तवकावनम्रा
> सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव।

छन्द आलुलायित नहे, कथागुलि युक्ताक्षरबहुल, तबु भ्रम हय, एइ श्लोक ललित-लवङ्गलतार अपेक्षा कानेओ मिष्ट शुनाइतेछे। किन्तु ताहा भ्रम। मन निजेर सृजनशक्तिर द्वारा इन्द्रियसुख पूरण करिया दितेछे। येखाने लोलुप इन्द्रियगण भिड़ करिया ना दाड़ाय, सेइखानेइ मन एइरूप सृजनेर अवसर पाय। 'पर्याप्तपुष्पस्तवकावनम्रा' इहार मध्ये लयेर ये उत्थानपतन आछे, कठोरे कोमले यथायथरूपे मिश्रित हइया छन्दके ये दोला दियाछे, ताहा जयदेवी लयेर मतो अतिप्रत्यक्ष नहे--ताहा निगूढ़; मन ताहा आलस्यभरे पड़िया याय ना, निजे आविष्कार करिया लइया खुशि हय। एइ श्लोकेर मध्ये ये-एकटि भावेर सौन्दर्य ताहाओ आमादेर मनेर सहित चक्रान्त करिया अश्रुतिगम्य एकटि सङ्गीत रचना करे, से सङ्गीत समस्त शब्दसङ्गीतके छाड़ाइया चलिया याय, मने हय येन कान जुड़ाइया गेल--किन्तु कान जुड़ाइबार कथा नहे, मानसी मायाय कानके प्रतारित करे।

आमादेर एइ मायावी मनटिके सृजनर अवकाश ना दिले से कोनो मिष्टताकेइ बेशिक्षण मिष्ट बलिया गण्य करे ना। से उपयुक्त उपकरण पाइले कठोर छन्दके ललित, कठिन शब्दके कोमल करिया तुलिते पारे। सेइ शक्ति खाटाइबार जन्य से कविदेर काछे अनुरोध प्रेरण करितेछे।

केकारव काने शुनिते मिष्ट नहे, किन्तु अवस्थाविशषे समयविशेषे मन ताहाके मिष्ट करिया शुनिते पारे, मनेर सेइ क्षमता आछे। सेइ मिष्टतार स्वरूप कुहुतानेर मिष्टता हइते स्वतंत्र, नववर्षागमे गिरिपादमूले लताजटिल प्राचीन महारण्येर मध्ये ये मत्तता उपस्थित हय, केकारव ताहारइ गान। आषाढ़े श्यामायमान तमालतालीवनेर द्विगुणतरघनायित अन्धकारे, मातृस्तन्यपिपासु ऊर्ध्ववाहु शतसहस्र शिशुर मतो अगण्य शाखा-प्रशाखार आन्दोलित मर्मरमुखर महोल्लासेर मध्ये रहिया-रहिया केका तारस्वरे ये एकटि कांस्यक्रेङ्कारध्वनि उत्थित करे, ताहाते प्रवीन वनस्पतिमण्डलीर मध्ये आरण्य महोत्सवेर प्राण जागिया उठे। कविर केकारव सेइ वर्षार गान; कान ताहार माधुर्य जाने ना, मनई जाने। सेइजन्यइ मन ताहाते अधिक मुग्ध हय। मन ताहार सङ्गे सङ्गे आरओ अनेकखानि पाय, समस्त मेघावृत्त आकाश, छायावृत्त अरण्य, नीलिमाच्छन्न गिरि-शिखर, विपुल मूढ़ प्रकृतिर अव्यक्त अन्ध आनन्दराशि।

विरहीणीर विरहवेदनार सङ्गे कविर केकारव एइजन्यइ जड़ित। ताहा श्रुतिमधुर बलिया पथिकबधूके व्याकुल करे ना--ताहा समस्त वर्षार मर्मोद्घाटन करिया देय। नरनारीर प्रेमेर मध्ये एकटि अत्यन्त आदिम प्राथमिक भाब आछे, ताहा बहिःप्रकृतिर अत्यन्त निकटवर्ती, ताहा जलस्थल-आकाशेर गाये

संलग्न। षड्ऋतु आपन पुष्पपर्यायेर सङ्गे सङ्गे एइ प्रेमके नाना रङे राङाइया दिया याय। याहाते पल्लवके स्पन्दित, नदीके तरङ्गित, शस्यशीर्षके हिल्लोलित करे, ताहा इहाकेओ अपूर्व चाञ्चल्ये आन्दोलित करिते थाके। पूर्णिमार कोटाल इहाके स्फीत करे एवं सन्ध्याभ्रेर रक्तिमाय इहाके लज्जा-मण्डित बधूवेश पराइया देय। एक-एकटि ऋतु यखन आपन सोनार काठि लइया प्रेमके स्पर्श करे तखन से रोमाञ्चकलेवरे ना जागिया थाकिते पारे ना। से अरण्येर पुष्पपल्लवेरइ मतो प्रकृतिर निगूढ़स्पर्शाधीन। सेइजन्य यौवना-वेशविधुर कालिदास छय ऋतुर छय तारे नरनारीर प्रेम की की सुरे बाजिते थाके ताहाइ वर्णना करियाछेन; तिनि बुझियाछेन, जगते ऋतु-आवर्तनेर सर्व-प्रधान काज प्रेम-जागानो; फुल-फुटानो प्रभृति अन्य समस्तइ ताहार आनुषङ्गिक। ताइ ये केकारव वर्षाऋतुर निखाद सुर, ताहार आघात विरहवेदनार ठिक उपरे गियाइ पड़े।

विद्यापति लिखियाछेन—

मत्त दादुरी, डाके डाहुकी,
फाटि याओत छातिया।

एइ ब्याङेर डाक नववर्षार मत्त भावेर सङ्गे नहे, घनवर्षार निविड़ भावेर सङ्गे बड़ो चमत्कार खाप खाय। मेघेर मध्ये आज कोनो वर्णवैचित्र्य नाइ, स्तर विन्यास नाइ; शचीर कोन प्राचीन किङ्करी आकाशेर प्राङ्गण मेघ दिया समान करिया लेपिया दियाछे, समस्तइ कृष्णधूसरवर्ण। नानाशस्य विचित्रा पृथिवीर उपरे उज्ज्वल आलोकेर तुलिया पड़े नाइ बलिया वैचित्र्य फुटिया उठे नाइ। धानेर कोमल मसृण सबुज, पाटेर गाढ़ वर्ण एवं इक्षुर हरिद्राभा एकटि विश्वव्यापी कालिमाय मिशिया आछे। बातास नाइ। आसन्न वृष्टिर आशङ्काय पङ्किल पथे लोक बाहिर हय नाइ। माठे बहुदिन पूर्वे खेतेर काज समस्त शेष हइया गछे। पुकुरे पाड़िर समान जल। एइरूप ज्योतिर्हीन, गतिहीन, कर्महीन वैचित्र्यहीन, कालिमालिप्त एकाकारेर दिने ब्याङेर डाक ठीक सुरटि लागाइया थाके। ताहार सुर ऐ वर्णहीन मेघेर मतो, एइ दीप्तिशून्य आलोकेर मतो, निस्तब्ध निविड़ वर्षाके व्याप्त करिया दितेछे; वर्षार गण्डीके आरओ घन करिया चारि दिके टानिया दितेछे। ताहा नीरवतार अपेक्षाओ एकघेये। ताहा निभृत कोलाहल। इहार सङ्गे झिल्लिरव भालोरूप मेशे; कारण, येमन

मेघ येमन छाया, तेमनि झिल्लिरवओ आर-एकटा आच्छादन विशेष--ताहा स्वर-मण्डले अन्धकारेर प्रतिरूप, ताहा वर्षानिशीथिनीके सम्पूर्णता दान करे।

भाद्र १३०८

['बंगदर्शन' अगस्त-सितम्बर १९०२ (भाद्र १३०८) में प्रकाशित ।]

बाजे कथा

अन्य खरचेर चेये बाजे खरचेइ मानुषके यथार्थ चेना याय। कारण, मानुष व्यय करे बाधा नियम-अनुसारे, अपव्यय करे निजेर खेयाले।

येमन बाजे खरच, तेमनि बाजे कथा। बाजे कथातेइ मानुष आपनाके, धरा देय। उपदेशेर कथा ये रास्ता दिया चले मनुर आमल हइते ताहा बाँधा ; काजेर कथा ये पथे आपनार गोयान टानिया आने से पथ केजो सम्प्रदायेर पाये पाये तृणपुष्पशून्य चिह्नित हइया गेछे। बाजे कथा निजेर मतो करियाइ बलिते हय।

एइजन्य चाणक्य व्यक्तिविशेषके ये एकेबारेइ चुप करिया याइते बलियाछेन, सेइ कठोर बिधानेर किछु परिवर्तन करा याइते पारे। आमादेर विवेचनाय चाणक्यकथित उक्त भद्रलोक 'तावच्च शोभते' यावत् तिनि उच्च अङ्गेर कथा बलेन, यावत् तिनि आवहमान कालेर परीक्षित सर्वजनविदित सत्य घोषणाय प्रवृत्त थाकेन; किन्तु तखनइ ताँहार विपद यखनइ तिनि सहज कथा निजेर भाषाय बलिबार चेष्टा करेन।

ये लोक एकटा बलिबार विशेष कथा ना थाकिले कानो कथाइ बलिते पारे ना, हय वेदवाक्य बले नय चुप करिया थाके, हे चतुरानन, ताहार कुटुम्बिता, ताहार साहचर्य, ताहार प्रतिवेश,—शिरसि मा लिख, मा लिख, मा लिख।

पृथिवीते जिनिसमात्रइ प्रकाशधर्मी नय। कयला आगुन ना पाइले ज्वले ना, स्फटिक अकारणे झक्झक् करे। कयलाय बिस्तर कल चले, स्फटिक हार गाँथिया प्रियजनेर गलाय पराइबार जन्य। कयला आवश्यक, स्फटिक मूल्यबान।

एक-एकटि दुर्लभ मानुष एइरूप स्फटिकेर मतो अकारण झल्मल् करिते पारे। से सहजेइ आपनाके प्रकाश करिया थाके—ताहार कोनो विशेष उपलक्षेर आवश्यक हय ना। ताहार निकट हइते कोनो विशेष प्रयोजन सिद्ध करिया लइबार गरज काहारओ थाके ना; से अनायासे आपनाके आपनि देदीप्यमान करे, इहा देखियाइ आनन्द। मानुष प्रकाश एत भालोबासे, आलोक ताहार

एत प्रिय ये, आवश्यक के विसर्जन दिया, पेटेर अन्न फेलियाओ, उज्ज्वलतार जन्य लालायित हइया उठे। एइ गुणटि देखिले, मानुष ये पतङ्गश्रेष्ठ से सम्बन्धे सन्देह थाके ना। उज्ज्वल चक्षु देखिया ये जाति अकारणे प्राण दिते पारे ताहार परिचय विस्तारित करिया देओया बाहुल्य।

किन्तु सकलेइ पतङ्गेर डाना लइया जन्माय नाइ। ज्योतिर मोह सकलेर नाइ। अनेकेइ बुद्धिमान, विवेचक। गुहा देखिले ताँहारा गभीरतार मध्ये तलाइते चेष्टा करेन, किन्तु आलो देखिले उपरे उड़िबार व्यर्थ उद्यममात्रओ करेन ना। काव्य देखिले इँहारा प्रश्न करेन इहार मध्ये लाभ करिबार विषय की आछे, गल्प शुनिले अष्टादश संहितार सहित मिलाइया इँहारा भयसी गवेषणार सहित बिशुद्ध धर्ममते दुयो बा बाहवा .दिबार जन्य प्रस्तुत हइया बसेन। याहा अकारण, याहा अनावश्यक, ताहार प्रति इँहादेर कोनो लोभ नाइ।

याहारा आलोक-उपासक ताहारा एइ सम्प्रदायेर प्रति अनुराग प्रकाश करे नाइ। ताहारा इँहादिगके ये-सकल नामे अभिहित करियाछे आमरा ताहार अनुमोदन करि ना। बररुचि इँहादिगके अरसिक बलियाछेन, आमादेर मते इहा रुचिर्गहित। आमरा इँहादिगके याहा मने करि ताहा मनेइ राखिया दिइ। किन्तु प्राचीनेरा मुख सामलाइया कथा कहितेन ना, ताहार परिचय एकटि संस्कृत श्लोके पाइ। इहाते बला हइयाछे—सिंहनखेर द्वारा उत्पाटित एकटि गज-मुक्ता बनेर मध्ये पड़िया छिल, कोनो भीलरमणी दूर हइते देखिया छुटिया गिया ताहा तुलिया लइल, यखन टिपिया देखिल ताहा पाका कुल नहे, ताहा मुक्ता-मात्र, तखन दूरे छुंड़िया फेलिल। स्पष्टइ बुझा याइतेछे, प्रयोजनीयता-विवेचनाय याँहारा सकल जिनिसेर मुल्य निर्धारण करेन, शुद्धमात्र सौन्दर्य ओ उज्ज्वलतार विकाश याँहादिगके लेशमात्र विचलित करिते पारे ना, कवि बर्बरनारीर सहित ताँहादेर तुलना दितेछेन। आमादेर विवेचनाय कवि इँहादेर सम्बन्धे नीरव थाकिलेइ भालो करितेन; कारण, इँहारा क्षमताशाली लोक, विशेषत, बिचारेर भार प्राय इँहादेरइ हाते। इँहारा गुरुमहाशयेर काज करेन। याँहारा सरस्वतीर काव्यकमलवने बास करेन ताँहारा तटवर्ती बेत्रबनवासीदिगके उद्वेजित ना करुन, एइ आमार प्रार्थना।

साहित्येर यथार्थ बाजे रचनागुलि कोनो विशष कथा बलिबार स्पर्धा राखे ना। संस्कृतसाहित्य मेघदूत ताहार उज्ज्वल दृष्टान्त। ताहा धर्मेर कथा नहे, कर्मेर कथा नहे, पुराण नहे, इतिहास नहे। ये अवस्थाय मानुषेर चेतन-अचेतनेर विचार लोप पाइया याय इहा सेइ अवस्थार प्रलाप। इहाके यदि

केह बदरीफल मन करिया पेट भराइबार आश्वासे तुलिया लन तबे तखनइ फेलिया दिबेन। इहाते प्रयोजनेर कथा किछुइ नाइ। इहा निटोल मुक्ता, एवं इहाते बिरहीर बिदीर्ण हृदयेर रक्तचिह्न किछु लागियाछे, किन्तु सेटुकु मुछिया फेलिलेओ इहार मूल्य कमिबे ना।

इहार कोनो उद्देश्य नाइ बलियाइ ए काव्यखानि एमन स्वच्छ, एमन उज्ज्वल। इहा एकटि मायातरी; कल्पनार हाओयाय इहार सजल मेघनिर्मीत पाल फुलिया उठियाछे एवं एकटि बिरहीहृदयेर कामना वहन करिया इहा अवारित वेगे एकटि अपरूप निरुद्देशेर अभिमुखे छुटिया चलियाछे—आर-कोनो बोझा इहाते नाइ।

टेनिसन ये idle tears, ये अकारण अश्रुबिन्दुर कथा बलियाछेन, मेघदूत सेइ बाजे चोखेर जलेर काव्य। एइ कथा शुनिया अनेके आमार सङ्गे तर्क करिते उद्यत हइबेन। अनेके बलिबेन, यक्ष यखन प्रभुशापे ताहार प्रेयसीर निकट हइते बिच्छिन्न हइयाछे तखन मेघदूतेर अश्रुधाराके अकारण बलितेछेन केन। आमि तर्क करिते चाइ ना, ए-सकल कथार आमि कोनो उत्तर दिब ना। आमि जोर करिया बलिते पारि, ऐ ये यक्षेर निर्वासन प्रभृति व्यापार, ओ-समस्तइ कालिदासेर बानानो, काव्यरचनार ओ एकटा उपलक्ष्यमात्र। ऐ भारा बाँधिया तिनि एइ इमारत गड़ियाछेन; एखन आमरा ए भाराटा फेलिया दिब। आसल कथा, 'रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्' मन अकारण विरहे विकल हइया उठे, कालिदास अन्यत्र ताहा स्वीकार करियाछेन; आषाढ़ेर प्रथम दिने अकस्मात् घनमेघेर घटा देखिले आमादेर मने एक सृष्टिछाड़ा विरह जागिया उठे, मेघदूत सेइ अकारण विरहेर अमूलक प्रलाप। ता यदि ना हइत, तबे विरही मेघके छाड़िया विद्युत्के दूत पाठाइत। तबे पूर्वमेघ एत रहिया बसिया, एत घुरिया फिरिया, एत यूथीवन प्रफुल्ल करिया, एत जनपदवधूर उत्क्षिप्त दृष्टिर कृष्णकटाक्षपात लुटिया लइया चलित ना।

काव्य पड़िबार समयेओ यदि हिसाबेर खाता खुलिया राखितेइ हय, यदि की लाभ करिलाम हाते हाते ताहार निकाश चुकाइया लइतेइ हय, तबे स्वीकार करिब, मेघदूत हइते आमरा एकटि तथ्य लाभ करिया विस्मये पुलकित हइयाछि। सेटि एइ ये, तखनओ मानुष छिल एवं तखनओ आषाढ़ेर प्रथम दिन यथानियमे आसित।

किन्तु असहिष्णु बररुचि याँहादेर प्रति अशिष्ठ विशेषण प्रयोग करियाछेन ताँहारा कि एरूप लाभके लाभ बलियाइ गण्य करिबेन। इहाते कि ज्ञानेर बिस्तार, देशेर उन्नति, चरित्रेर संशोधन घटिबे। अतएव याहा अकारण, याहा

अनावश्यक, हे चतुरानन, ताहा रसेर काव्ये रसिकदेर जन्यइ ढाका थाकुक— याहा आवश्यक, याहा हितकर, ताहार घोषणार बिरति ओ ताहार खरिद्दारेर अभाव हइबे ना।

आश्विन १३०९

['बंगदर्शन', मार्च १९०२ (आश्विन १३०९) में प्रकाशित।]

बसन्तयापन

एइ माठेर पारे शालवनेर नूतन कचि पातार मध्य दिया बसन्तेर हाओया दियाछे।

अभिव्यक्तिर इतिहासे मानुषेर एकटा अंश तो गाछपालार सङ्गे जड़ानो आछे। कोनो-एक समये आमरा ये शाखामृग छिलाम आमादेर प्रकृतिते ताहार यथेष्ट परिचय पाओया याय। किन्तु ताहारओ अनेक आगे कोनो-एक आदि युगे आमरा निश्चयइ शाखी छिलाम, ताहा कि भुलिते पारियाछि। सेइ आदि-कालेर जनहीन मध्याह्ने आमादेर डालपालार मध्ये वसन्तेर बातास काहाकेओ कोनो खबर ना दिया यखन हठात् हूहु करिया आसिया पड़ित, तखन कि आमरा प्रबन्ध लिखियाछि ना देशेर उपकार करिते बाहिर हइयाछि। तखन आमरा समस्त दिन खाड़ा दाँड़ाइया मूकेर मतो मूढ़ेर मतो काँपियाछि, आमादेर सर्वाङ्ग झर्झर् मर्मर् करिया पागलेर मतो गान गाहियाछे, आमादेर शिकड़ हइते आरम्भ करिया प्रशाखागुलिर कचि डगा पर्यन्त रसप्रवाहे भितरे भितरे चञ्चल हइया उठियाछे। सेइ आदिकालेर फाल्गुन-चैत्र एमनितरो रसे-भरा आलस्ये एवं अर्थहीन प्रलापेइ काटिया याइत। सेजन्य काहारओ काछे कोनो जबाबदिहि छिल ना।

यदि बल अनुतापेर दिन ताहार परे आसित, वैशाख-ज्येष्ठेर खरा चुप करिया माथा पातिया लइते हइत, से कथा मानि। ये दिनकार याहा सेदिनकार ताहा एमनि करियाइ ग्रहण करिते हय। रसेर दिने भोग, दाहेर दिने धैर्य यदि सहजे आश्रय करा याय, तबे सान्त्वनार वर्षाधारा यखन दश दिक पूर्ण करिया झरिते आरम्भ करे तखन ताहा मज्जाय मज्जाय पुरापुरि टानिया लइबार सामर्थ्य थाके।

किन्तु ए-सब कथा बलिबार अभिप्राय आमार छिल ना। लोके सन्देह करिते पारे, रूपक आश्रय करिया आमि उपदेश दिते बसियाछि। सन्देह एके-बारेइ अमूलक बला याय ना। अभ्यास खाराप हइया गेछे।

आमि एइ बलितेछिलाम ये, अभिव्यक्तिर शेष कोठाय आसिया पड़ाते मानुषेर मध्ये अनेक भाग घटियाछे। जड़भाग, उद्भिद्भाग, पशुभाग, बर्बर-भाग, सभ्यभाग, देवभाग इत्यादि। एइ भिन्न भिन्न भागेर एक-एकटा विशेष जन्मऋतु आछे। कोन् ऋतुते कोन् भाग पड़े ताहा निर्णय करिबार भार आमि

लइब ना। एकटा सिद्धान्तके शेष पर्यन्त मिलाइया दिब पण करिले बिस्तर मिथ्या बलिते हय। बलिते राजि आछि; किन्तु एत परिश्रम आज पारिब ना।

आज, पड़िया पड़िया, समुखे चाहिया चाहिया, येटुकु सहजे मने आसितेछे सेइटुकुइ लिखिते बसियाछि।

दीर्घ शीतेर पर आज मध्याह्ने प्रान्तरेर मध्ये नववसन्त निश्वासित हइया उठितेइ निजेर मध्ये मनुष्यजीवनेर भारी एकटा असामञ्जस्य अनुभव करितेछि। विपुलेर सहित, समग्रेर सहित ताहार सुर मिलितेछे ना। शीतकाले आमार उपरे पृथिवीर ये-समस्त तागिद छिल, आजओ ठिक सेइ-सब तागिदइ चलितेछि। ऋतु विचित्र, किन्तु काज सेइ एकइ। मनटाके ऋतुपरिवर्तनेर उपरे जयी करिया ताहाके असाड़ करिया येन मस्त एकटा की बाहादुरि आछे। मन मस्त लोक, से की ना पारे। से दक्षिणे हाओयाकेओ सम्पूर्ण अग्राह्य करिया हन्‌हन् करिया बड़ोबाजारे छुटिया चलिया याइते पारे। पारे स्वीकार करिलाम, किन्तु ताइ बलियाइ कि सेटा ताहाके करितेइ हइबे। ताहाते दक्षिणे बातास बासाय गिया मरिया थाकिबे ना, किन्तु क्षतिटा काहार हइबे।

एइ तो अल्प दिन हइल, आमादेर आमलकी मउल ओ शालेर डाल हइते खस्‌खस् करिया केवलइ पाता खसिया पड़ितेछिल—फाल्गुन दूरागत पथिकेर मतो येमन द्वारेर काछे आसिया एकटा हाँफ छाड़िया बसियाछे मात्र, अमनि आमादेर वनश्रेणी पाता खसानोर काज बन्ध करिया दिया एकेवारे रातारातिइ किसलय गजाइते शुरु करिया दियाछे।

आमरा मानुष, आमादेर सेटि हइबार जो नाइ। बाहिरे चारि दिकेइ यखन हाओया-बदल, पाता बदल, रङ-बदल, आमरा तखनओ गोरुर गाड़िर बाहनटार मतो पश्चाते पुरातनेर भाराक्रान्त जेर समानभावे टानिया लइया एकटाना रास्तार धुला उड़ाइया चलियाछि। बाहक तखनओ ये लड़ि लइया पाँजरे ठेलितेछिल एखनओ सेइ लड़ि।

हातेर काछे पञ्जिका नाइ—अनुमाने बोध हइतेछे, आज फाल्गुनेर प्राय पनेरोइ कि षोलोइ हइबे, वसन्तलक्ष्मी आज षोड़शी किशोरी। किन्तु तबु आजओ हप्ताय खबरेर कागज बाहिर हइतेछे; पड़िया देखि, आमादेर कर्तृपक्ष आमादेर हितेर जन्य आइन तैरि करिते समानइ व्यस्त एवं अपर पक्ष ताहारइ तन्नतन्न बिचारे प्रवृत्त। विश्व जगते एइगुलाइ ये सर्वोच्च व्यापार नय, बड़ो-लाट-छोटोलाट सम्पादक ओ सहकारी-सम्पादकेर उत्कट व्यस्तताके किछुमात्र गण्य ना करिया दक्षिणसमुद्रेर तरङ्गोत्सवसभा हइते प्रति वत्सरेर सेइ चिरन्तन वार्तावह नवजीवनेर आनन्दसमाचार लइया धरातले अक्षय प्राणेर आश्वास नूतन

करिया प्रचार करिते बाहिर हय—एटा मानुषेर पक्षे कम कथा नय, किन्तु ए-सब कथा भाविबार जन्य आमादेर छुटि नाइ।

सेकाले आमादेर मेघ डाकिले अनध्याय छिल; वर्षार समय प्रवासीरा बाड़ि फिरिया आसितेन। बादलार दिने ये पड़ा याय ना, बा वर्षार समय विदेशे काज करा असम्भव, ए कथा बलिते पारि ना—मानुष स्वाधीन स्वतन्त्र, मानुष जड़प्रकृतिर आँचल-धरा नय। किन्तु जोर आछे बलियाइ विपुल प्रकृतिर सङ्गे क्रमागत विद्रोह करियाइ चलिते हइबे, एमन की कथा आछे। विश्वेर सहित मानुष निजेर कुटुम्बिता स्वीकार करिले, आकाशे नवनीलाञ्जन मेघोदयेर खातिरे पड़ा बन्ध ओ काज बन्ध करिले, दक्षिणाहाओयार प्रति एकटुखानि श्रद्धा रक्षा करिया आइनेर समालोचना बन्ध राखिले, मानुष जगत्चराचरेर मध्ये एकटा बेसुरेर मतो बाजिते थाके ना। पाँजिते तिथिविशेषे बेगुन शिम कुष्माण्ड निषिद्ध आछे; आरओ कतकगुलि निषेध थाका दरकार—कोन् ऋतुते खबरेर कागज पड़ा अबैध, कोन् ऋतुते आपिस कामाइ ना करा महापातक, अरसिकेर निज-बुद्धिर उपर ताहा निर्णय करिबार भार ना दिया शास्त्रकारदेर ताहा एकेबारे बाधिया देओया उचित।

वसन्तेर दिने-ये विरहिणीर प्राण हा हा करे, ए कथा आमरा प्राचीन काव्येइ पड़ियाछि—एखन ए कथा लिखिते आमादेर संकोच बोध हय, पाछ लोके हासे। प्रकृतिर सङ्गे आमादेर मनेर सम्पर्क आमरा एमनि करियाइ छेदन करियाछि। वसन्तेर समस्त वने-उपवने फुल फुटिबार समय उपस्थित हय; तखन ताहादेर प्राणेर अजस्रता, विकाशेर उत्सव। तखन आत्मदानेर उच्छ्वासे तरुलता पागल हइया उठे; तखन ताहादेर हिसाबेर बोधमात्र थाके ना; येखाने दुटो फल धरिबे सेखाने पँचिशटा मुकुल धराइया बसे। मानुषइ कि केवल एइ अजस्रतार स्रोत रोध करिबे। से आपनाके फुटाइबे ना, फलाइबे ना, दान करिते चाहिबे ना; केवलइ कि घर निकाइबे, बासन माजिबे, ओ याहादेर से बालाइ नाइ ताहारा बेला चारटा पर्यन्त पशमेर गलाबन्ध बुनिबे। आमरा कि एतइ एकान्त मानुष। आमरा कि वसन्तेर निगूढ़ रससञ्चार-विकसित तरुलतापुष्पपल्लवेर केहइ नइ? ताहारा ये आमादेर घरेर आङिनाके छायाय ढाकिया, गन्धे भरिया, बाहु दिया घेरिया दाँड़ाइया आछे, ताहारा कि आमादेर एतइ पर ये, ताहारा यखन फुले फुटिया उठिबे आमरा तखन चापकान परिया आपिसे याइब—कोनो अनिर्वचनीय वेदनाय आमादेर हृत्पिण्ड तरुपल्लवेर मतो काँपिया उठिबे ना?

आमि तो आज गाछपालार सङ्गे बहु प्राचीनकालेर आत्मीयता स्वीकार करिब। व्यस्त हइया काज करिया बेड़ानोइ ये जीवनेर अद्वितीय सार्थकता,

ए कथा आज आमि किछुतेइ मानिब ना। आज आमादेर सेइ युगान्तरेर बड़दिदि वनलक्ष्मीर घरे भाइफोँटार निमन्त्रण। सेखाने आज तरुलतार सङ्गे नितान्त घरेर लोकेर मतो मिशिते हइबे; आज छायाय पड़िया समस्तदिन काटिबे, माटिके आज दुइ हात छड़ाइया आँकड़ाइया धरिते हइबे; वसन्तेर हाओया यखन बहिबे तखन ताहार आनन्दके येन आमार बुकेर पाँजरगुलार मध्य दिया अनायासे हुहु करिया बहिया याइते दिइ, सेखाने से येन एमनतरो कोनो ध्वनि ना जागाइया तोले गाछपालार ये भाषा ना बोझे। एमनि करिया चैत्रर शेष पर्यन्त माटि बातास ओ आकाशेर मध्ये जीवनटाके काँचा करिया, सवुज करिया छड़ाइया दिब; आलोते-छायाते चुप करिया पड़िया थाकिब।

किन्तु हाय, कोनो काजइ बन्ध हय नाइ, हिसाबेर खाता समानइ खोला रहियाछ। नियमेर कलेर मध्ये, कर्मेर फाँदेर मध्ये पड़िया गेछि—एखन वसन्त आसिलेइ की आर गलेइ की।

मनुष्यसमाजेर काछे आमार सविनय निवेदन एइ ये, ए अवस्थाटा ठिक नहे। इहार संशोधन दरकार। विश्वेर सहित स्वतंत्र बलियाइ ये मानुषेर गौरव ताहा नहे। मानुषेर मध्ये विश्वेर सकल वैचित्र्यइ आछे बलिया मानुष बड़ो। मानुष जड़ेर सहित जड़, तरुलतार सङ्गे तरुलता, मृगपक्षीर सङ्गे मृग-पक्षी। प्रकृति-राजबाड़िर नाना महलेर नाना दरजाइ ताहार काछे खोला। किन्तु खोला थाकिले की हइबे। एक-एक ऋतुते एक-एक महल हइते यखन उत्सवेर निमन्त्रण आसे, तखन मानुष यदि ग्राह्य ना करिया आपन आड़तेर गदितेइ पड़िया थाके तबे एमन बृहत् अधिकार से केन पाइल। पुरा मानुष हइते हइले ताहाके सबइ हइते हइबे, ए कथा ना मने करिया मानुष मनुष्यत्वके विश्वविद्रोहेर एकटा संकीर्णध्वजास्वरूप खाड़ा करिया तुलिया राखियाछे केन? केन से दम्भ करिया बारबार ए कथा बलितेछ 'आमि जड़ नहि, उद्‌भिद नहि, पशु नहि, आमि मानुष—आमि केवल काज करि ओ समालोचना करि, शासन करि ओ विद्रोह करि'। केन से ए कथा बले ना' आमि समस्तइ, सकलेर सङ्गेइ आमरा अवारित योग आछे—स्वातन्त्र्येर ध्वजा आमार नहे'।

हाय रे समाज—दाँड़ेर पाखि! आकाशेर नील आज विरहिणीर चोख-दुटिर मतो स्वप्नाविष्ट, पातार सबुज आज तरुणीर कपोलेर मतो नवीन, वसन्तेर बातास आज मिलनेर आग्रहेर मतो चञ्चल, तबु तोर पाखा दुटा आज बन्ध, तबु तोर पाय आज कर्मेर शिकल झनुझन् करिया बाजितेछे—एइ कि मानवजन्म।

चैत्र १३०९

['बंग दर्शन', मार्च १९०३ (चैत्र १३०९) में प्रकाशित।]

एकादश खण्ड

पंचभूत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मन

एइ ये मध्याह्नकाले नदीर धारे पाड़ागाँयेर एकटि एकतला घरे बसिया आछि; टिक्टिकि घरेर कोणे टिक्टिक् करितेछे; देयाले पाखा टानिबार छिद्रेर मध्ये एकजोड़ा चड़ुइ पाखि बासा तैरि करिबार अभिप्राये बाहिर हइते कुटा संग्रह करिया किच्मिच् शब्दे महाव्यस्त भावे क्रमागत यातायात करितेछे; नदीर मध्ये नौका भासिया चलियाछे, उच्चतटेर अन्तराले नीलाकाशे ताहादेर मास्तुल एवं स्फीत पालेर कियदंश देखा याइतेछे; बातासटि स्निग्ध, आकाशटि परिष्कार, परपारेर अतिदुर तीररेखा हइते आर आमार बारान्दार सम्मुखवर्ती बेड़ादेओया छोटो बागानटि पर्यन्त उज्ज्वल रौद्र एकखण्ड छबिर मतो देखाइतेछे—एइ तो बेश आछि। मायेर कोलेर मध्ये सन्तान येमन एकटि उत्ताप, एकटि आराम, एकटि स्नेह पाय, तेमनि एइ पुरातन प्रकृतिर कोल घेँषिया बसिया एकटि जीवन-पूर्ण आदरपूर्ण मृदु उत्ताप चतुर्दिक हइते आमार सर्वाङ्गे प्रवेश करितेछे। तबे एइ भावे थाकिया गेले क्षति की। कागज कलम लइया बसिवार जन्य के तोमाके खोँचाइतेछिल ? कोन् विषये तोमार की मत, किसे तोमार सम्मति वा असम्मति, से कथा लइया हठात् धुमधाम करिया कोमर बाँधिया बसिवार की दरकार छिल। ऐ देखो, माठेर माझखाने, कोथाओ किछु नाइ, एकटा घूर्णाबातास खानिकटा धुला एवं शुकनो पातार ओड़ना उड़ाइया केमन चमत्कार भावे घुरिया नाचिया गेल। पदांगुलिमात्रेर उपर भर करिया दीर्घ सरल हइया केमन भङ्गिटि करिया मुहूर्तकाल दाँड़ाइल, ताहार पर हुस्हास् करिया समस्त उड़ाइया छड़ाइया दिया कोथाय चलिया गेल ताहार ठिकाना नाइ। सम्बल तो भारी ! गोटाकतक खड़कुटा धुलाबालि सुविधामतो याहा हातेर काछे आसे ताहाइ लइया बेश एकटु भावभङ्गि करिया केमन एकटि खेला खेलिया लइल ! एमनि करिया जनहीन मध्याह्ने समस्त माठमय नाचिया बेड़ाय। ना आछे ताहार कोनो उद्देश्य, ना आछे ताहार केह दर्शक—ना आछे ताहार मत, ना आछे ताहार तत्त्व, ना आछे समाज एवं इतिहास सम्बन्धे अति समीचीन उपदेश। पृथिवीते याहा किछु सर्वापेक्षा अनावश्यक, सेइ समस्त विस्मृत परित्यक्त पदार्थगुलिर मध्ये एकटि उत्तप्त फुत्कार दिया ताहादिगके मुहूर्तकालेर जन्य जीवित जाग्रत सुन्दर करिया तोले।

अमनि यदि अत्यन्त सहजे एक निश्वासे कतकगुला याहा-ताहा खाड़ा करिया, सुन्दर करिया घुराइया उड़ाइया, लाटिम खेलाइया चलिया याइते पारिताम! अमनि अवलीलाक्रमे सृजन करिताम, अमनि फूं दिया भाङ्गिया फेलिताम। चिन्ता नाइ, चेष्टा नाइ, लक्ष्य नाइ; शुधु एकटा नृत्येर आनन्द, शुधु एकटा सौन्दर्येर आवेग, शुधु एकटा जीवनेर घूर्णा! अबधारित प्रान्तर, अनावृत आकाश, परिव्याप्त सूर्यालोक––ताहारइ माझखाने मुठा मुठा धूलि लइया इन्द्रजाल निर्माण करा, से केवल खेपा हृदयेर उदार उल्लासे।

ए हइले तो बुझा याय। किन्तु बसिया बसिया पाथरेर उपर पाथर चापाइया गलद्घर्म लइया कतकगुला निश्चल मतामत उच्च करिया तोला! ताहार मध्ये ना आछे गति, ना आछे प्रीति, ना आछे प्राण। केवल एकटा कठिन कीर्ति। ताहाके केह बा हाँ करिया देखे, केह बा पा दिया ठेले––योग्यता येम्नि थाक्।

किन्तु इच्छा करिलेओ ए काजे क्षान्त हइते पारि कइ। सभ्यतार खातिरे मानुष मन-नामक आपनार एक अंशके अपरिमित प्रश्रय दिया अत्यन्त बाड़ाइया तुलियाछे; एखन तुमि यदि ताहाके छाड़िते चाओ, से तोमाके छाड़े ना।

लिखिते लिखिते आमि बाहिरे चाहिया देखितेछि, ऐ एकटि लोक रौद्र-निवारणेर जन्य माथाय एकटि चादर चापाइया दक्षिणहस्ते शालपातेर ठोङाय खानिकटा दहि लइया रन्धनशाला अभिमुखे चलियाछे। ओटि आमार भृत्य, नाम नारायणसिं। दिव्य हृष्टपुष्ट, निश्चिन्त, प्रफुल्लचित्त, उपयुक्त-सारप्राप्त पर्याप्तपल्लवपूर्ण मसृण चिक्कण काँठाल गाछटिर मतो। एइरूप मानुष एइ बहिःप्रकृतिर सहित ठिक मिश खाय। प्रकृति एवं इहार माझखाने बड़ो एकटा विच्छेदचिह्न नाइ। एइ जीवधात्री शस्यशालिनी बृहत् वसुन्धरार अङ्गसंलग्न हइया ए लोकटि बेश सहजे बास करितेछे, इहार निजेर मध्ये निजेर तिलमात्र विरोध-विसम्वाद नाइ। ऐ गाछटि येमन शिकड़ हइते पल्लवाग्र पर्यन्त केवल एकटि आता गाछ हइया उठियाछे, ताहार आर किछुर जन्य कोनो माथाव्यथा नाइ, आमार हृष्टपुष्ट नारायणसिं तेमनि आद्योपान्त केवलमात्र एकखानि आस्त नारायणसिं।

कोनो कौतुकप्रिय शिशु-देवता यदि दुष्टामि करिया ए आता गाछटिर माझखान केवल एकटि फोंटा मन फेलिया देय! तबे ए सरस श्यामल दारुजीवनेर मध्ये की एक विषम उपद्रव बाधिया याय। तबे चिन्ताय उहार चिकन सबुज पातागुलि भूर्जपत्रेर मतो पाण्डुवर्ण हइया याय, एवं गुंड़ि हइते प्रशाखा पर्यन्त वृद्धेर ललाटेर मतो कुञ्चित हइया आसे। तखन वसन्तकाले आर कि अमन

दुइ-चारि दिनेर मध्ये सर्वाङ्ग कचि पाताय पुलकित हइया उठे। ओ गुंटि-आँका गोल गोल गुच्छ गुच्छ फले प्रत्येक शाखा भरिया याय? तखन समस्त दिन एक पायेर उपर दाँड़ाइया दाँड़ाइया भाबिते थाके, 'आमार केवल कतकगुला पाता हइल केन, पाखा हइल ना केन। प्राणपणे सिधा हइया एत उँचु हइया दाँड़ाइया आछि, तबु केन यथेष्ट परिमाणे देखिते पाइतेछि ना। ऐ दिगन्तेर परपारे की आछे। ऐ आकाशेर तारागुलि ये गाछेर शाखाय फुटिया आछे, से गाछ केमन करिया नागाल पाइब। आमि कोथा हइते आसिलाम, कोथाय याइब, ए कथा यत क्षण ना स्थिर हइबे तत क्षण आमि पाता झराइया, डाल शुकाइया, काठ हइया, दाँड़ाइया ध्यान करिते थाकिब। आमि आछि अथवा आमि नाइ, अथवा आमि आछिओ बटे नाइओ बटे, ए प्रश्नेर यत क्षण मीमांसा ना हय तत क्षण आमार जीवने कोनो सुख नाइ। दीर्घ वर्षार पर ये दिन प्रातःकाले प्रथम सूर्य उठे से दिन आमार मज्जार मध्ये ये एकटि पुलकसञ्चार हय सेटा आमि ठिक केमन करिया प्रकाश करिब, एवं शीतान्ते फाल्गुनेर माझामाझि ये दिन हठात् सायंकाले एकटा दक्षिणेर बातास उठे से दिन इच्छा करे--की इच्छा करे के आमाके बुझाइया दिबे।'

एइ समस्त काण्ड! गेल बेचारार फुल फोटानो रसशस्यपूर्ण आताफल पाकानो। याहा आछे ताहा अपेक्षा बेशि हइबार चेष्टा करिया, ये रकम आछे आर एक रकम हइबार इच्छा करिया, ना हय ए दिक, ना हय ओ दिक। अवशेषे एक दिन हठात् अन्तर्वेदनाय गुँड़ि हइते अग्रशाखा पर्यन्त विदीर्ण हइया बाहिर हय एकटा सामयिक पत्रेर प्रबन्ध, एकटा समालोचना, आरण्य समाज सम्बन्धे एकटा असामयिक तत्त्वोपदेश। ताहार मध्ये ना थाके सेइ पल्लवमर्मर, ना थाके सेइ छाया, ना थाके सर्वाङ्गव्याप्त सरस सम्पूर्णता।

यदि कोनो प्रबल शयतान सरीसृपेर मतो लुकाइया माटिर नीचे प्रवेश करिया, शतलक्ष आँकाबाँका शिकड़ेर भितर दिया पृथिवीर समस्त तरुलता तृणगुल्मेर मध्ये मनःसञ्चार करिया देय, ताहा हइले पृथिवीते कोथाय जुड़ाइबार स्थान थाके! भाग्ये बागाने आसिया पाखिर गानेर मध्ये कोनो अर्थ पाओया याय ना एवं अक्षरहीन सबुज पत्रेर परिवर्ते शाखाय शाखाय शुष्क श्वेतवर्ण मासिकपत्र संवादपत्र एवं विज्ञापन झुलिते देखा याय ना!

भाग्ये गाछेदेर मध्ये चिन्ताशीलता नाइ! भाग्ये धुतुरा गाछ कामिनी गाछके समालोचना करिया बले ना 'तोमार फुलेर मध्ये कोमलता आछे किन्तु ओजस्विता नाइ' एवं कुलफल काँठालके बले ना 'तुमि आपनाके बड़ो मने कर किन्तु आमि तोमा अपेक्षा कुष्माण्डके ढेर उच्च आसन दिइ'। कदली बले

२५

ना 'आमि सर्वापेक्षा अल्प मूल्ये सर्वापेक्षा बृहत् पत्र प्रचार करि', एवं कचु ताहार प्रतियोगिता करिया तदपेक्षा सुलभ मूल्ये तदपेक्षा बृहत् पत्रेर आयोजन करे ना !

तर्कताड़ित चिन्तातापित वक्तृताश्रान्त मानुष उदार उन्मुक्त आकाशेर चिन्तारेखाहीन ज्योतिर्मय प्रशस्त ललाट देखिया, अरण्येर भाषाहीन मर्मर ओ तरङ्गेर अर्थहीन कलध्वनि शुनिया, एइ मनोविहीन अगाध प्रशान्त प्रकृतिर मध्ये अवगाहन करिया, तबे कतकटा स्निग्ध ओ संयत हइया आछे। ऐ एकटुखानि मनःस्फुलिङ्गेर दाह-निवृत्ति करिबार जन्य एइ अनन्तप्रसारित अमनःसमुद्रेर प्रशान्त नीलाम्बुराशिर आवश्यक हइया पड़ियाछे।

आसल कथा पूर्वेइ बलियाछि, आमादेर भितरकार समस्त सामञ्जस्य नष्ट करिया आमादेर मनटा अत्यन्त बृहत् हइया पड़ियाछे। ताहाके कोथाओ आर कुलाइया उठितेछे ना। खाइबार परिबार जीवनधारण करिबार, सुख स्वच्छन्दे थाकिबार पक्षे यतखानि आवश्यक, मनटा ताहार अपेक्षा ढेर बेशि बड़ो हइया पड़ियाछे। एइ जन्य, प्रयोजनीय समस्त काज सारिया फेलियाओ चतुर्दिके अनेकखानि मन बाकि थाके। काजेइ से बसिया बसिया डायारि लेखे, तर्क करे, संवादपत्रेर संवाददाता हय, याहाके सहजे बोझा याय ताहाके कठिन करिया तुले, याहाके एक भावे बोझा उचित ताहाके आर एक भावे दाँड़ कराय, याहा कोनो काले किछुतेइ बोझा याय ना अन्य समस्त फेलिया ताहा लइयाइ लागिया थाके, एमन कि, ए सकल अपेक्षाओ अनेक गुरुतर गर्हित कार्य करे।

किन्तु आमार ऐ अनतिसभ्य नारायणसिंहेर मनटि उहार शरीरेर मापे उहार आवश्यकेर गाये गाये ठिक फिट करिया लागिया आछे। उहार मनटि उहार जीवनके शीतातप असुख अस्वास्थ्य एवं लज्जा हइते रक्षा करे किन्तु यखन-तखन ऊनपञ्चाश वायुवेगे चतुर्दिके उड़-उड़ु करे ना। एक आधटा बोतामेर छिद्र दिया बाहिरेर चोरा हाओया उहार मानस-आवरणेर भितरे प्रवेश करिया ताहाके ये कखनो एकटु-आधटु स्फीत करिया तोले ना ताहा बलिते पारि ना, किन्तु ततटुकु मनश्चाञ्चल्य ताहार जीवनेर स्वास्थ्येर पक्षेइ विशेष आवश्यक।

ज्यैष्ठ १३००

['साधना' जून १८९३ (ज्यैष्ठ १३००) में प्रकाशित]

अखण्डता

दीप्ति कहिल, 'सत्य कथा बलितेछि, आमार तो मने हय, आजकाल प्रकृतिर स्तव लइया तोमरा सकले किछु बाड़ाबाड़ि आरम्भ करियाछ।'

आमि कहिलाम, 'देवी, आर काहारओ स्तव बुझि तोमादेर गाये सहे ना ?'

दीप्ति कहिल, 'यखन स्तव छाड़ा आर बेशि किछु पाओया याय ना तखन ओटार अपव्यय देखिते पारि ना।'

समीर अत्यन्त विनम्रमनोहर हास्ये ग्रीवा आनमित करिया कहिल, 'भगवती, प्रकृतिर स्तव एवं तोमादेर स्तवे बड़ो एकटा प्रभेद नाइ। इहा बोध हय लक्ष्य करिया देखिया थाकिबे, याहारा प्रकृतिर स्तवगान रचना करिया थाके ताहारा तोमादेरइ मन्दिरेर प्रधान पूजारि।'

दीप्ति अभिमानभरे कहिल, 'अर्थात् याहारा जड़ेर उपासना करे ताहाराइ आमादेर भक्त।'

समीर कहिल, 'एत बड़ो भुलटा बुझिले, काजेइ एकटा सुदीर्घ कैफियत दिते हय। आमादेर भूतसभार वर्त्तमान सभापति श्रद्धास्पद श्रीयुक्त भूतनाथबाबु ताँर डायारिते मन-नामक एकटा दुरन्त पदार्थेर उपद्रवेर कथा वर्णना करिया ये एकटि प्रबन्ध लिखियाछेन, से तोमरा सकलेइ पाठ करियाछ। आमि ताहार नीचेइ गुटिकतक कथा लिखिया राखियाछि, यदि सभ्यगण अनुमति करेन तबे पाठ करि—आमार मनेर भावटा ताहाते परिष्कार हइबे।'

क्षिति करजोड़े कहिल, 'देखो भाइ समीरण, लेखक एवं पाठके ये सम्पर्क सेइटेइ स्वाभाविक सम्पर्क—तुमि इच्छा करिया लिखिले, आमि इच्छा करिया पड़िलाम, कोनो पक्षे किछु बलिबार रहिल ना। येन खापेर सहित तरबारि मिलिया गेल। किन्तु तरबारि यदि अनिच्छुक अस्थिचर्मेर मध्ये सेइ प्रकार सुगभीर आत्मीयता स्थापने प्रवृत्त हय, तबे सेटा तेमन बेश स्वाभाविक एवं मनोहर-रूपे सम्पन्न हय ना। लेखक एवं श्रोतार सम्पर्कटाओ सेइरूप अस्वाभाविक, असदृश। हे चतुरानन, पापेर येमन शास्तिइ विधान कर येन आर जन्मे डाक्तरेर घोड़ा, मातालेर स्त्री एवं प्रबन्धलेखकेर बन्धु हइया जन्मग्रहण ना करि।'

व्योम एकटा परिहास करिते चेष्टा करिल; कहिल, 'एके तो बन्धु अर्थेइ

बन्धन, ताहार उपरे प्रबन्ध-बन्धन हइले फाँसेर उपरे फाँस हय––गण्डुस्योपरि विस्फोटकम्।'

दीप्ति कहिल, 'हासिबार जन्य दुइटि बत्सर समय प्रार्थना करि; इतिमध्ये पाणिनि अमरकोष एवं धातुपाठ आयत्त करिया लइते हइबे।'

शुनिया व्योम अयन्त कौतुक लाभ करिल। हासिते हासिते कहिल, 'बड़ो चमत्कार बलियाछ। आमार एकटा गल्प मने पड़ितेछे––'

स्रोतस्विनी कहिल, 'तोमरा समीरेर लेखाटा आज आर शुनिते दिबे ना देखिते छि। समीर, तुमि पड़ो, उहादेर कथाय कर्णपात करियो ना।'

स्रोतस्विनीर आदेशेर विरुद्धे केह आर आपत्ति करिल ना। एमन कि, स्वयं क्षिति शेल्फेर उपर हइते डायारिर खाताटि पाड़िया आनिल एवं नितान्त निरीह निरुपायेर मतो संयत हइया बसिया रहिल।

समीर पड़िते लागिल, 'मानुषके बाध्य हइया पदे पदे मनेर साहाय्य लइते हय, एइ जन्य भितरे भितरे आमरा सेटाके देखिते पारि ना। मन आमादेर अनेक उपकार करे किन्तु ताहार स्वभाव एमनइ ये, आमादेर सङ्गे किछुतेइ से सम्पूर्ण मिलिया मिशिया थाकिते पारे ना। सर्वदा खिट्खिट् करे, परामर्श देय, उपदेश दिते आसे, सकल काजेइ हस्तक्षेप करे। से येन एक जन बाहिरेर लोक घरेर हइया पड़ियाछे––ताहाके त्याग कराओ कठिन, ताहाके भालोबासाओ दुःसाध्य।

'से येन नेकटा बाङालिर देशे इंरेजेर गवर्मेण्टेर मतो। आमादेर सरल दिशि रकमेर भाव, आर ताहार जटिल विदेशी रकमेर आइन। उपकार करे, किन्तु आत्मीय मने करे ना। सेओ आमादेर बुझिते पारे ना, आमराओ ताहाके बुझिते पारि ना। आमादेर ये सकल स्वाभाविक सहज क्षमता छिल ताहार शिक्षाय सेगुलि नष्ट हइया गेछे, एखन उठिते बसिते ताहार साहाय्य व्यतीत आर चले ना।

'इंराजेर सहित आमादेर मनेर आरो कतकगुलि मिल आछे। एत काल से आमादेर मध्ये बास करितेछे तबू से बासिन्दा हइल ना, तबु से सर्वदा उड़ु-उड़ु करे। येन कोनो सुयोगे एकटा फर्लो पाइलेइ, महासमुद्रपारे ताहार जन्मभूमिते पाड़ि दिते पारिलेइ बाँचे। सब चेये आश्चर्य सादृश्य एइ ये, तुमि यतइ ताहार काछे नरम हइबे, यतइ 'यो हुजुर खोदाबन्द' बलिया हात जोड़ करिबे ततइ ताहार प्रताप बाड़िया उठिबे; आर तुमि यदि फस् करिया हातेर आस्तिन गुटाइया घुषि उँचाइते पार, खृस्टान शास्त्रेर अनुशासन अग्राह्य करिया चड़टिर परिवर्ते चापड़टि प्रयोग करिते पार, तबे से जल हइया याइबे।

'मनेर उपर आमादेर विद्वेष एतइ सुगभीर ये, ये काजे ताहार हात कम देखा याय ताहाकेइ आमरा सब चेये अधिक प्रशंसा करि। नीतिग्रन्थे हठकारितार निन्दा आछे बटे, किन्तु प्रकृतपक्षे ताहार प्रति आमादेर आन्तरिक अनुराग देखिते पाइ। ये व्यक्ति अत्यन्त विवेचनापूर्वक अग्रपश्चात् भाविया अतिसतर्क भावे काज करे, ताहाके आमरा भालोबासि ना; किन्तु ये व्यक्ति सर्वदा निश्चिन्त, अम्लानबदने बेफाँस कथा बलिया बसे एवं अवलीलाक्रमे बेयाड़ा काज करिया फेले, लोके ताहाके भालोबासे। ये व्यक्ति भविष्यतेर हिसाब करिया वड़ो सावधाने अर्थसञ्चय करे, लोके ऋणेर आवश्यक हइले ताहार निकट गमन करे एवं ताहाके मने मने अपराधी करे; आर, ये निर्बोध निजेर ओ परिवारेर भविष्यत शुभाशुभ गणनामात्र ना करिया याहा पाय तत्क्षणात् मुक्तहस्ते व्यय करिया बसे, लोके अग्रसर हइया ताहाके ऋणदान करे एवं सकल समय परिशोधेर प्रत्याशा राखे ना। अनेक समय अविवेचना अर्थात् मनोविहीनताकेइ आमरा उदारता बलि एवं ये मनस्वी हिताहितज्ञानेर अनुदेश-क्रमे युक्तिर लण्ठन हाते लइया अत्यन्त कठिन संकल्पेर सहित नियमेर चुल-चेरा पथ धरिया चले, ताहाके लोके हिसाबि, विषयी, संकीर्णमना प्रभृति अपवादसूचक कथा बलिया थाके।

'मनटा ये आछे एइटुकु ये भलाइते पारे ताहाकेइ बलि मनोहर। मनेर बोझाटा ये अवस्थाय अनुभव करि ना सेइ अवस्थाटाके बलि आनन्द। नेशा करिया वरं पशुर मतो हइया याइ, निजेर सर्वनाश करि, सेओ स्वीकार, तबु किछु क्षणेर जन्य खानार मध्ये पड़ियाओ से उल्लास संवरण करिते पारि ना। मन यदि यथार्थ आमादेर आत्मीय हइत एवं आत्मीयेर मतो व्यवहार करित तबे कि एमन उपकारी लोकटार प्रति एतटा दूर अकृतज्ञतार उदय हइत।

'बुद्धिर अपेक्षा प्रतिभाके आमरा उच्चासन केन दिइ। बुद्धि प्रतिदिन प्रति मुहूर्ते आमादेर सहस्र काज करिया दितेछे, से ना हइले आमादेर जीवन रक्षा करा दुःसाध्य हइत; आर प्रतिभा कालेभद्रे आमादेर काजे आसे एवं अनेक समय अकाजेओ आसे। किन्तु बुद्धिटा हइल मनेर, ताहाके पदक्षेप गणना करिया चलिते हय; आर प्रतिभा मनेर नियमावली रक्षा ना करिया हाओयार मतो आसे, काहारओ आह्वानओ माने ना, निषेधओ अग्राह्य करे।

'प्रकृतिर मध्ये सेइ मन नाइ, एइ जन्य प्रकृति आमादेर काछे एमन मनोहर। प्रकृतिते एकटार भितरे आर एकटा नाइ। आरसोलार स्कन्धे काँचपोका बसिया ताहाके शुषिया खाइतेछे ना। मृत्तिका हइते आर ए ज्योतिःसिञ्चित आकाश पर्यन्त ताहार एइ प्रकाण्ड घरकन्नार मध्ये एकटा भिन्नदेशी परेर छेले प्रवेश लाभ करिया दौरात्म्य करितेछे ना।

'से एकाकी, अखण्डसम्पूर्ण, निश्चिन्त, निरुद्विग्न। ताहार असीम नील ललाटे बुद्धिर रेखामात्र नाइ, केवल प्रतिभार ज्योति चिरदीप्यमान। येमन अनायासे एकटि सर्वाङ्गसुन्दरी पुष्पमञ्जरी विकसित हइया उठितेछे, तेमनि अवहेले एकटा दुर्दान्त झड़ आसिया सुखस्वप्नेर मतो समस्त भाङिया दिया चलिया याइतेछे। सकलइ येन इच्छाय हइतेछे, चेष्टाय हइतेछे ना। से इच्छा कखनो आदर करे, कखनो आघात करे; कखनो प्रेयसी अप्सरीर मतो गान करे, कखनो क्षुधित राक्षसीर न्याय गर्जन करे।

'चिन्तापीड़ित संशयापन्न मानुषेर काछे एइ द्विधाशून्य अव्यवस्थित इच्छा-शक्तिर बड़ो एकटा प्रचण्ड आकर्षण आछे। राजभक्ति प्रभुभक्ति ताहार एकटा निदर्शन। ये राजा इच्छा करिलेइ प्राण दिते एवं प्राण लइते पारे ताहार जन्य यत लोक इच्छा करिया प्राण दियाछे, वर्तमान युगेर नियमपाशवद्ध राजार जन्य एत लोक स्वेच्छापूर्वक आत्मविसर्जने उद्यत हय ना।

'याहारा मनुष्यजातिर नेता हइया जन्मियाछे ताहादेर मन देखा याय ना। ताहारा केन, की भाबिया, की युक्ति अनुसारे की काज करितेछे तत्क्षणात् ताहा किछुइ बुझा याय ना; एवं मानुष निजेर संशयतिमिराच्छन्न क्षुद्र गह्वर हइते बाहिर हइया पतङ्गेर मतो झाँके झाँके ताहादेर महत्त्वशिखार मध्ये आत्मघाती हइया झाँप देय।

'रमणीओ प्रकृतिर मतो। मन आसिया ताहाके माझखान हइते दुइ भाग करिया देय नाइ। से पुष्पेर मतो आगागोड़ा एकखानि। एइ जन्य ताहार गतिबिधि आचार-व्यवहार एमन सहजसम्पूर्ण। एइ जन्य द्विधान्दोलित पुरुषेर पक्षे रमणी 'मरणं ध्रुवं'।

'प्रकृतिर न्याय रमणीरओ केवल इच्छाशक्ति, ताहार मध्ये युक्तितर्क बिचार-आलोचना केन की-वृत्तान्त नाइ। कखनो से चारि हस्ते अन्न वितरण करे कखनो से प्रलयमूर्तिते संहार करिते उद्यत हय। भक्तेरा करजोड़े बले, 'तुमि महामाया, तुमि इच्छामयी, तुमि प्रकृति, तुमि शक्ति।"

समीर हाँप छाड़िबार जन्य एकटु थामिबामात्र क्षिति गम्भीर मुख करिया कहिल, 'बाः! चमत्कार! किन्तु तोमार गा छुंइया बलितेछि, एक वर्ण यदि बुझिया थाकि! बोध करि तुमि याहाके मन ओ बुद्धि बलितेछ प्रकृतिर मतो आमार मध्येओं से जिनिसटार अभाव आछे, किन्तु तत्परिवर्तें प्रतिभार जन्यओ काहारओ निकट हइते प्रशंसा पाइ नाइ एवं आकर्षणशक्तिओ ये अधिक आछे ताहार कोनो प्रत्यक्ष प्रमाण पाओया याय ना।'

दीप्ति समीरके कहिल, 'तुमि ये मुसलमानेर मतो कथा कहिले, ताहादेर शास्त्रेइ तो बले मेयेदेर आत्मा नाइ।'

स्रोतस्विनी चिन्तान्वित भावे कहिल, 'मन एवं बुद्धि शब्दटा यदि तुमि एकइ अर्थे व्यवहार कर आर यदि बल, आमरा ताहा हइते बञ्चित, तबे तोमार सहित आमार मतेर मिल हइल ना।'

समीर कहिल, 'आमि ये कथाटा बलियाछि ताहा रीतिमतो तर्केर योग्य नहे। प्रथम वर्षाय पद्मा ये चरटा गड़िया दिया गेल ताहा बालि, ताहार उपरे लाङल लइया पड़िया ताहाके छिन्नबिछिन्न करिले कोनो फल पाओया याय ना। क्रमे क्रमे दुइ-तिन वर्षाय स्तरे स्तरे यखन ताहार उपर माटि पड़िबे तखन से कर्षण सहिबे। आमिओ तेमनि चलिते चलिते स्रोतोवेगे एकटा कथाके केवल प्रथम दाँड़ कराइलाम मात्र। हयतो द्वितीय स्रोते एकेबारे भाङितेओ पारे, अथवा पलि पड़िया उर्बरा हइतेओ आटक नाइ। याहा हउक, आसामिर समस्त कथाटा शुनिया तार पर बिचार करा हउक।—

'मानुषेर अन्तःकरणेर दुइ अंश आछे। एकटा अचेतन बृहत् गुप्त एवं निश्चेष्ट, आर एकटा सचेतन सक्रिय चञ्चल परिवर्तनशील। येमन महादेश एवं समुद्र। समुद्र चञ्चल भावे याहा किछु सञ्चय करितेछे, त्याग करितेछे, गोपन तलदेशे ताहाइ दृढ़ निश्चल आकारे उत्तरोत्तर राशीकृत हइया उठितेछे। सेइरूप आमादेर चेतना प्रतिदिन याहा किछु आनितेछे फेलितेछे, सेइ समस्त क्रमे संस्कार स्मृति अभ्यास-आकारे एकटि बृहत् गोपन आधारे अचेतन भावे सञ्चित हइया उठितेछे। ताहाइ आमादेर जीवनेर ओ चरित्रेर स्थायी भित्ति। सम्पूर्ण तलाइया ताहार समस्त स्तरपर्याय केह आविष्कार करिते पारे ना। उपर हइते यतटा दृश्यमान हइया उठे, अथवा आकस्मिक भूमिकम्पवेगे ये निगूढ़ अंश उर्ध्वे उत्क्षिप्त हय ताहाइ आमरा देखिते पाइ।

'एइ महादेशेइ शस्य पुष्प फल सौन्दर्य ओ जीवन अति सहजे उद्भिन्न हइया उठे। इहा दृश्यतः स्थिर ओ निष्क्रिय; किन्तु इहार भितरे एकटि अनायास नैपुण्य, एकटि गोपन जीवनीशक्ति निगूढ़ भावे काज करितेछे। समुद्र केवल फुलितेछे एवं दुलितेछे, वाणिज्यतरी भासाइतेछे एवं डुबाइतेछे, अनेक आहरण एवं संहरण करितेछे, ताहार बलेर सीमा नाइ, किन्तु ताहार मध्ये जीवनीशक्ति ओ धारणीशक्ति नाइ, से किछुइ जन्म दिते ओ पालन करिते पारे ना।

'रूपके यदि काहारओ आपत्ति ना थाके तबे आमि बलि, आमादेर एइ चञ्चल बहिरंश पुरुष, एवं एइ बृहत् गोपन अचेतन अन्तरंश नारी।

'एइ स्थिति एवं गति, समाजे स्त्री ओ पुरुषेर मध्ये भाग हइया गियाछे।

समाजेर समस्त आहरण उपार्जन ज्ञान ओ शिक्षा स्त्रीलोकेर मध्ये गिया निश्चल स्थिति लाभ करितेछे। एइ जन्य ताहार एमन सहज बुद्धि, सहज शोभा, अशिक्षितपटुता। मनुष्यसमाजे स्त्रीलोक बहुकालेर रचित; एइ जन्य ताहार संस्कारगुलि एमन दृढ़ ओ पुरातन, ताहार सकल कर्त्तव्य एमन चिराभ्यस्त सहज-साध्येर मतो हइया चलितेछे। पुरुष उपस्थित आवश्यकेर सन्धाने समयस्रोते अनुक्षण परिवर्तित हइया चलितेछे; किन्तु सेइ समुदय चञ्चल प्राचीन परिवर्तनेर इतिहास स्त्रीलोकेर मध्ये स्तरे स्तरे नित्य भावे सञ्चित हइतेछे।

'पुरुष आंशिक, विच्छिन्न, सामञ्जस्यविहीन। आर स्त्रीलोक एमन एकटि संगीत याहा समे आसिया सुन्दर सुगोल भावे सम्पूर्ण हइतेछे; ताहाते उत्तरोत्तर यतइ पद संयोग ओ नव नव तान योजना कर ना केन, सेइ समटि आसिया समस्तटि-के एकटि सुगोल सम्पूर्ण गण्डि दिया घिरिया लय। माझखाने एकटि स्थिर केन्द्र अवलम्बन करिया आवर्त आपनार परिधि विस्तार करे, सेइ जन्य हातेर काछे याहा आछे ताहा से एमन सुनिपुण सुन्दर भावे टानिया आपनार करिया लइते पारे।

'एइ ये केन्द्रटि इहा बुद्धि नहे, इहा एकटि सहज आकर्षणशक्ति। इहा एकटि ऐक्यबिन्दु। मनःपदार्थटि येखाने आसिया उँकि मारेन सेखाने एइ सुन्दर ऐक्य शतधा विक्षिप्त हइया याय।'

व्योम अधीरेर मतो हइया हठात् आरम्भ करिया दिल, 'तुमि याहाके ऐक्य बलितेछ आमि ताहाके आत्मा बलि; ताहार धर्मइ एइ, से पाँचटा वस्तुके आपनार चारि दिके टानिया आनिया एकटा गठन दिया गड़िया तोले। आर याहाके मन बलितेछ से पाँचटा वस्तुर प्रति आकृष्ट हइया आपनाके एवं ताहादिगके भाङिया भाङिया फेले। सेइ जन्य आत्मयोगेर प्रधान सोपान हइतेछे मनटाके अवरुद्ध करा।

इंराजेर सहित समीर मनेर ये तुलना करियाछेन एखानेओ ताहा खाटे। इंराज सकल जिनिसकेइ अग्रसर हइया ताड़ाइया खेदाइया धरे। ताहार 'आशावधि को गतः', शुनियाछि सूर्यदेवओ नहेन—तिनि ताहार राज्ये उदय हइया ए पर्यन्त अस्त हइते पारिलेन ना। आर आमरा आत्मार न्याय केन्द्रगत हइया आछि; किछु हरण करिते चाहि ना, चतुर्दिके याहा आछे ताहाके घनिष्ठ भावे आकृष्ट करिया गठन करिया तुलिते चाइ। एइ जन्य आमादेर समाजेर मध्ये, गृहेर मध्ये, व्यक्तिगत जीवनयात्रार मध्ये, एमन एकटा रचनार निविड़ता देखिते पाओया याय। आहरण करे मन, आर सृजन करे आत्मा।

'योगेर सकल तथ्य जानि ना; किन्तु शुना याय, योगबले योगीरा सृष्टि

करिते पारितेन। प्रतिभार सृष्टिओ सेइरूप। कविरा सहज क्षमता-बले मनटाके निरस्त करिया दिया अर्ध-अचेतन भावे येन एकटा आत्मार आकर्षणे भाव रसदृश्य वर्ण ध्वनि केमन करिया सञ्चित करिया, जीवने सुगठने मण्डित करिया खाड़ा करिया तुलेन।

'बड़ो बड़ो लोकेरा ये बड़ो बड़ो काज करेन, सेओ एइ भावे। येखानकार येटि से येन एकटि दैवशक्ति-प्रभावे आकृष्ट हइया रेखाय रेखाय वर्णे वर्णे मिलिया याय, एकटि सुसम्पन्न सुसम्पूर्ण कार्यरूपे दाँड़ाइया याय। प्रकृतिर सर्वकनिष्ठ-जात मन-नामक दुरन्त बालकटि ये एके बारे तिरस्कृत बहिष्कृत हय ताहा नहे, किन्तु से तदपेक्षा उच्चतर महत्तर प्रतिभार अमोघ मायामन्त्रबले मुग्धेर मतो काज करिया याय; मने हय, समस्तइ येन जादुते हइतेछे; येन समस्त घटना, येन बाह्य अवस्थागुलिओ, योगबले यथेच्छामतो यथास्थाने विन्यस्त हइया याइतेछे—गारिबाल्डि एमनि करिया भाङाचोरा इटालिके नूतन करिया प्रतिष्ठा करेन—ओयाशिंटन अरण्यपर्वतविक्षिप्त आमेरिकाके आपनार चारि दिके टानिया आनिया एकटि साम्राज्यरूपे गड़िया दिया यान।

'एइ समस्त कार्य एक-एकटि योगसाधन।

'कवि येमन काव्य गठन करेन, तानसेन येमन तान लय छन्दे एक-एकटि गान सृष्टि करितेन, रमणी तेमनि आपनार जीवनटि रचना करिया तोले। तेमनि अचेतन भावे, तेमनि मायामन्त्रबले। पितापुत्र भ्राताभग्नी अतिथि-अभ्यागतके सुन्दर बन्धने बाँधिया से आपनार चारि दिके गठित सज्जित करिया तोले; विचित्र उपादान लइया बड़ो सुनिपुण हस्ते एकखानि गृह निर्माण करे; केवल गृह केन, रमणी येखाने याय आपनार चारि दिकके एकटि सौन्दर्यसंयमे बाँधिया आने। निजेर चलाफेरा बेशभूषा कथावार्ता आकार-इङ्गितके एकटि अनिर्वचनीय गठन दान करे। ताहाके बले श्री। इहा तो बुद्धिर काज नहे, अनिर्देश्य प्रतिभार काज; मनेर शक्ति नहे, आत्मार अभ्रान्त निगूढ़ शक्ति। एइ ये ठिक सुरटि ठिक जायगाय गिया लागे, ठिक कथाटि ठिक जायगाय आसिया बसे, ठिक काजटि ठिक समये निष्पन्न हय, इहा एकटि महारहस्यमय निखिल-जगत्केन्द्रभूमि हइते स्वाभाविक स्फटिकधारार न्याय उच्छ्वसित उत्स। सेइ केन्द्रभूमिटिके अचेतन ना बलिया अतिचेतन नाम देओया उचित।

'प्रकृतिते याहा सौन्दर्य, महत् ओ गुणी लोके ताहाइ प्रतिभा, एवं नारीते ताहाइ श्री, ताहाइ नारीत्व। इहा केवल पात्रभेदे भिन्न विकाश।'

अतःपर व्योम समीरेर मुखेर दिके चाहिया कहिल, 'तार परे? तोमार लेखाटा शेष करिया फेलो।'

समीर कहिल, 'आर आवश्यक की। आमि याहा आरम्भ करियाछि तुमि तो ताहार एक प्रकार उपसंहार करिया दियाछ।'

क्षिति कहिल, 'कविराज महाशय शुरू करियाछिलेन, डाक्तार महाशय साङ्ग करिया गेलेन, एखन आमरा हरि हरि बलिया बिदाय दइ। मन की, बुद्धि की, आत्मा की, सौन्दर्य की एवं प्रतिभाइ बा काहाके बले, ए सकल तत्त्व कस्मिन् काले बुझि नाइ किन्तु बुझिबार आशा छिल; आज सेटुकुओ जलाञ्जलि दिया गेलाम।'

पशमेर गुटिते जटा पाकाइया गेले येमन नतमुखे सतर्क अंगुलिते धीरे धीरे खुलिते हय, स्रोतस्विनी चुप करिया बसिया येन तेमनि भावे मने मने कथागुलिके बहु यत्ने छाड़ाइते लागिल।

दीप्तिओ मौनभावे छिल; समीर ताहाके जिज्ञासा करिल, 'की भावितेछ।'

दीप्ति कहिल, 'बाङालिर मेयेदेर प्रतिभाबले बाङालिर छेलेदेर मतो एमन अपरूप सृष्टि की करिया हइल ताइ भावितेछि।'

आमि कहिलाम, 'माटिर गुणे सकल समये शिव गड़िते कृतकार्य हओया याय ना।'

श्रावण १३००

['साधना' अगस्त १८९३ (श्रावण १३००) मैं प्रकाशित।]

प्राञ्जलता

स्रोतस्विनी कोनो एक विख्यात इंराज कविर उल्लेख करिया बलिलेन, 'के जाने, ताँहार रचना आमार काछे भालो लागे ना।'

दीप्ति आरो प्रबलतर भावे स्रोतस्विनीर मत समर्थन करिलेन।

समीर कखनो पारतपक्षे मेयेदेर कोनो कथार स्पष्ट प्रतिवाद करे ना। ताइ से एकटु हासिया इतस्तत करिया कहिल, 'किन्तु अनेक बड़ो बड़ो समालोचक ताँहाके खुब उच्च आसन दिया थाकेन।'

दीप्ति कहिलेन, 'आगुन ये पोड़ाय ताहा भालो करिया बुझिबार जन्य कोनो समालोचकेर साहाय्य आवश्यक करे ना, ताहा निजेर बाम हस्तेर कड़े आङुलेर डगार द्वाराओ बोझा याय--भालो कवितार भालोत्व यदि तेमनि अवहेले ना बुझिते पारि तबे आमि ताहार समालोचना पड़ा आवश्यक बोध करि ना।'

आगुनेर ये पोड़ाइबार क्षमता आछे समीर ताहा जानित, एइ जन्य से चुप करिया रहिल; किन्तु व्योम बेचारार से सकल विषये कोनोरूप काण्डज्ञान छिल ना, एइ जन्य से उच्चस्वरे आपन स्वगतउक्ति आरम्भ करिया दिल।

से बलिल, 'मानुषेर मन मानुषके छाड़ाइया चले, अनेक समये ताहाके नागाल पाओया याय ना--'

क्षिति ताहाके बाधा दिया कहिल, 'त्रेतायुगे हनुमानेर शतयोजन लांगुल श्रीमान हनुमानजिउके छाड़ाइया बहु दूरे गिया पौंछित; लांगुलेर डगाटुकुते यदि उकुन बसित तबे ताहा चुलकाइया आसिबार जन्य घोड़ार डाक बसाइते हइत। मानुषेर मन हनुमानेर लांगुलेर अपेक्षाओ सुदीर्घ, सेइ जन्य एक-एक समये मन येखाने गिया पौंछाय, समालोचकेर घोड़ार डाक व्यतीत सेखाने हात पौंछे ना। लेजेर सङ्गे मनेर प्रभेद एइ ये, मनटा आगे आगे चले एवं लेजटा पश्चाते पड़िया थाके--एइ जन्यइ जगते लेजेर एत लाञ्छना एवं मनेर एत माहात्म्य।'

क्षितिर कथा शेष हइले व्योम पुनश्च आरम्भ करिल, 'विज्ञानेर उद्देश्य जाना, एवं दर्शनेर उद्देश्य बोझा। किन्तु काण्डटि एमनि हइया दाँड़ाइयाछे ये, विज्ञानटि जाना एवं दर्शनटि बोझाइ अन्य सकल जाना एवं अन्य सकल बोझार अपेक्षा शक्त हइया उठियाछे; इहार जन्य कत इस्कुल, कत केताब, कत आयोजन

आवश्यक हइयाछे। साहित्येर उद्देश्य आनन्द दान करा, किन्तु सेइ आनन्दटि ग्रहण कराओ नितान्त सहज नहे--ताहार जन्यओ विविध प्रकार शिक्षा एवं साहाय्येर प्रयोजन। सेइ जन्यइ बलितेछिलाम, देखिते देखिते मन एतटा अग्रसर हइया याय ये, ताहार नागाल पाइबार जन्य सिंड़ि लागाइते हय। यदि केह अभिमान करिया बलेन, याहा बिना शिक्षाय ना जाना याय जाहा विज्ञान नहे, याहा बिना चेष्टाय ना बोझा याय ताहा दर्शन नहे, एवं जाहा बिना साधनाय आनन्द दान ना करे ताहा साहित्य नहे, तबे केवल खनार बचन, प्रवादवाक्य एवं पाँचालि अवलम्बन करिया ताँहाके अनेक पश्चाते पड़िया थाकिते हइबे।'

समीर कहिल, 'मानुषेर हाते सब जिनिसइ क्रमश कठिन हइया उठे। असभ्येरा येमन-तेमन चीत्कार करियाइ उत्तेजना अनुभव करे। अथच आमादेर एमनि ग्रह ये, विशेष अभ्याससाध्य शिक्षासाध्य संगीत व्यतीत आमादेर सुख नाइ। आरो ग्रह एइ ये, भालो गान कराओ येमन शिक्षासाध्य भालो गान हइते सुख अनुभव कराओ तेमनि शिक्षा-साध्य। ताहार फल हय एइ ये, एक समये याहा साधारणेर छिल क्रमेइ ताहा साधकेर हइया आसे। चीत्कार सकलेइ करिते पारे, एवं चीत्कार करिया असभ्यसाधारणे सकलेइ उत्तेजनासुख अनुभव करे, किन्तु गान सकले करिते पारे ना एवं गाने सकले सुखओ पाय ना। काजेइ समाज यतइ अग्रसर हय ततइ अधिकारी एवं अनधिकारी, रसिक एवं अरसिक, एइ दुइ सम्प्रदायेर सृष्टि हइते थाके।'

क्षिति कहिल, 'मानुष बेचाराके एमनि करिया गड़ा हइयाछे ये, से यतइ सहज उपाय अवलम्बन करिते याय ततइ दुरूहतार मध्ये जड़ीभूत हइया पड़े। से सहजे काज करिबार जन्य कल तैरि करे किन्तु कल जिनिसटा निजे एक विषय दुरूह व्यापार। से सहजे समस्त प्राकृत ज्ञानके विधिबद्ध करिबार जन्य विज्ञान सृष्टि करे, किन्तु सेइ विज्ञानटाइ आयत्त करा कठिन काज; सुबिचार करिबार सहज प्रणाली बाहिर करिते गिया आइन बाहिर हइल, शेषकाले आइनटा भालो करिया बुझितेइ दीर्घजीवी लोकेर बारो आना जीवन दान करा आवश्यक हइया पड़े; सहजे आदान-प्रदान चालाइबार जन्य टाकार सृष्टि हइल, शेषकाले टाकार समस्या एमनि एकटा समस्या हइया उठियाछे ये मीमांसा करे काहार साध्य। समस्त सहज करिते हइबे, एइ चेष्टाय मानुषेर जानाशोना खाओया-दाओया आमोदप्रमोद समस्तइ असम्भव शक्त हइया उठियाछे।'

स्रोतस्विनी कहिलेन, 'सेइ हिसाबे कविताओ शक्त हइया उठियाछे। एखन मानुष खुब स्पष्टतः दुइ भाग हइया गियाछे। एखन अल्प लोक धनी एवं अनेक निर्धन, अल्प लोक गुणी एवं अनेक निर्गुण। एखन कविताओ सर्वसाधारणेर

नहे, ताहा विशेष लोकेर। सकलइ बुझिलाम। किन्तु कथाटा एइ ये, आमरा ये विशेष कवितार प्रसङ्गे एइ कथाटा तुलियाछि से कविताटा कोनो अंशेइ शक्त नहे; ताहार मध्ये एमन किछुइ नाइ याहा आमादेर मतो लोकओ बुझिते ना पारे—ताहा नितान्तइ सरल। अतएव ताहा यदि भालो ना लागे, तबे से आमादेर बुझिबार दोषे नहे।'

क्षिति एवं समीर इहार परे आर कोनो कथा बलिते इच्छा करिल ना। किन्तु व्योम अम्लान मुखे बलिते लागिल, 'याहा सरल ताहाइ ये सहज एमन कोनो कथा नाइ। अनेक समय ताहाइ अत्यन्त कठिन; कारण, से निजेके बुझाइ-बार जन्य कोनो प्रकार बाजे उपाय अवलम्बन करे ना, से चुप करिया दाँड़ाइया थाके, ताहाके ना बुझिया चलिया गेले से कोनो रूप कौशल करिया फिरिया डाके ना। प्राञ्जलतार प्रधान गुण एइ ये, से एकेबारे अव्यवहित भावे मनेर सहित सम्बन्ध स्थापन करे, ताहार कोनो मध्यस्थ नाइ। किन्तु ये सकल मन मध्यस्थेर साहाय्य व्यतीत किछु ग्रहण करिते पारे ना, याहादिगके भुलाइया आकर्षण करिते हय, प्राञ्जलता ताहादेर निकट बड़ोइ दुर्बोध। कृष्णनगरेर कारिगरेर रचित भिस्ति ताहार समस्त रङचङ मशक एवं अङ्गभङ्गि द्वारा आमादेर इन्द्रिय एवं अभ्यासेर साहाय्ये चट करिया आमादेर मनेर मध्ये प्रवेश करिते पारे; किन्तु ग्रीक प्रस्तरमूर्तिते रङचङ रकम-सकम नाइ—ताहा प्राञ्जल एवं सर्वप्रकार प्रयास-विहीन। किन्तु ताइ बलिया सहज नहे। से कोनोप्रकार तुच्छ बाह्य कौशल अवलम्बन करे ना बलियाइ, भावसम्पद ताहार अधिक थाका चाइ।'

दीप्ति विशेष एकटु विरक्त हइया कहिल, 'तोमार ग्रीक प्रस्तरमूर्तिर कथा छाड़िया दाओ। ओ सम्बन्धे अनेक कथा शुनियाछि एवं बाँचिया थाकिले आरो अनेक कथा शुनिते हइबे। भालो जिनिसेर दोष एइ ये, ताहाके सर्वदाइ पृथिवीर चोखेर सामने थाकिते हय, सकलेइ ताहार सम्बन्धे कथा कहे, ताहार आर पर्दा नाइ, आब्रु नाइ; ताहाके आर काहारओ आविष्कार करिते हय ना, बुझिते हय ना, भालो करिया चोख मेलिया ताहार प्रति ताकाइतेओ हय ना, केवल ताहार सम्बन्धे बाँधि गत् शुनिते एवं बलिते हय। सूर्येर येमन माझे माझे मेघग्रस्त थाका उचित, नतुबा मेघयुक्त सूर्येर गौरव बुझा याय ना, आमार बोध हय पृथिवीर बड़ो बड़ो ख्यातिर उपरे माझे माझे सेइरूप अवहेलार आड़ाल पड़ा उचित—माझे माझे ग्रीक मूर्तिर निन्दा करा फेशान हओया भालो, माझे माझे सर्वलोकेर निकट प्रमाण हओया उचित ये कालिदास अपेक्षा चाणक्य बड़ो कवि। नतुबा आर सह्य हय ना। याहा हउक, ओटा एकटा अप्रासङ्गिक कथा। आमार वक्तव्य एइ ये, अनेक समये भावेर दारिद्र्यके, आचारेर वर्वरताके सरलता बलिया

भ्रम हय—अनेक समय प्रकाशक्षमतार अभावके भावाधिक्येर परिचय बलिया कल्पना करा हय—से कथाटाओ मने राखा कर्तव्य।'

आमि कहिलाम, 'कलाविद्याय सरलता उच्च अङ्गेर मानसिक उन्नतिर सहचर। बर्बरतार सरलता नहे। बर्बरतार आडम्बर आयोजन अत्यन्त बेशि। सभ्यता अपेक्षाकृत निरलंकार। अधिक अलंकार आमादेर दृष्टि आकर्षण करे किन्तु मनके प्रतिहत करिया देय। आमादेर बांला भाषाय कि खबरेर कागजे कि उच्चश्रेणीर साहित्ये सरलता एवं अप्रमत्ततार अभाव देखा याय—सकलेइ अधिक करिया, चीत्कार करिया, एवं भङ्गिमा करिया बलिते भालोबासे; बिना आडम्बरे सत्य कथाटि परिष्कार करिया बलिते काहारओ प्रवृत्ति हय ना। कारण, एखनो आमादेर मध्ये एकटा आदिम बर्बरता आछे; सत्य प्राञ्जल बेशे आसिले ताहार गभीरता एवं असामान्यता आमरा देखिते पाइ ना, भावेर सौन्दर्य कृत्रिम भूषणे एवं सर्वप्रकार आतिशय्ये भाराक्रान्त हइया ना आसिले आमादेर निकट ताहार मर्यादा नष्ट हय।'

समीर कहिल, 'संयम भद्रतार एकटि प्रधान लक्षण। भद्रलोकेरा कोनो प्रकार गाये-पड़ा आतिशय्य द्वारा आपन अस्तित्व उत्कट भावे प्रचार करे ना; विनय एवं संयमेर द्वारा ताहारा आपन मर्यादा रक्षा करिया थाके। अनेक समये साधारण लोकेर निकट संयत सुसमाहित भद्रतार अपेक्षा आडम्बर एवं अतिशय्येर भङ्गिमा अधिकतर आकर्षणजनक हय, किन्तु सेटा भद्रतार दुर्भाग्य नहे—से साधारणेर भाग्यदोष। साहित्ये संयम एवं आचारव्यवहारे संयम उन्नतिर लक्षण—आतिशय्येर द्वारा दृष्टि आकर्षणेर चेष्टाइ बर्बरता।'

आमि कहिलाम, 'एक-आधटा इंराजि कथा माप करिते हइबे। येमन भद्रलोकेर मध्ये तेमनि भद्र साहित्येओ म्यानार आछे, किन्तु म्यानारिज्‌म् नाइ। भालो साहित्येर विशेष एकटि आकृतिप्रकृति आछे सन्देह नाइ, किन्तु ताहार एमन एकटि परिमित सुषमा ये आकृतिप्रकृतिर विशेषत्वटाइ विशेष करिया चोखे पड़े ना। ताहार मध्ये एकटा भाव थाके, एकटा गूढ़ अभाव थाके, किन्तु कोनो अपूर्व भङ्गिमा थाके ना। तरङ्गभङ्गेर अभावे अनेक समये परिपूर्णताओ लोकेर दृष्टि एड़ाइया याय, आबार परिपूर्णतार अभावे अनेक समये तरङ्गभङ्गओ लोकके विचलित करे। किन्तु ताइ बलिया ए भ्रम येन काहारओ ना हय ये, परिपूर्णतार प्राञ्जलताइ सहज एवं अगभीरतार भङ्गिमाइ दुरूह।'

स्रोतस्विनीर दिके फिरिया कहिलाम, 'उच्चश्रेणीर सरल साहित्य बुझा अनेक समय एइ जन्य कठिन ये, मन ताहाके बुझिया लय किन्तु से आपनाके बुझाइते थाके ना।'

दीप्ति कहिल, 'नमस्कार करि! आज आमादेर यथेष्ट शिक्षा हइयाछे। आर कखनो उच्च अङ्गेर पण्डितदिगेर निकट उच्च अङ्गेर साहित्य सम्बन्धे मत व्यक्त करिया बर्बरता प्रकाश करिब ना।'

स्रोतस्विनी सेइ इंराज कविर नाम करिया कहिल, 'तोमरा यतइ तर्क कर एवं यतइ गालि दाओ, से कविर कविता आमार किछुतेइ भालो लागे ना।'

चैत्र १३०१

['साधना', अप्रैल १८९५ (चैत्र १३०१) में प्रकाशित।]

कौतुकहास्येर मात्रा

से दिन मोटेर उपरे आमरा प्रश्नटा एइ तुलियाछिलाम ये, येमन दुःखेर ा तेमनि सुखेर हासि आछे, किन्तु माझे हइते कौतुकेर हासिटा कोथा हइते आसिल। कौतुक जिनिसटा किछु रहस्यमय। जन्तुराओ सुखदुःख अनुभव करे, किन्तु कौतुक अनुभव करे ना। अलंकारशास्त्रे ये क'टा रसेर उल्लेख आछे सब रसइ जन्तुदेर अपरिणत अपरिस्फुट साहित्येर मध्ये आछे, केवल हास्यरसटा नाइ। हयतो बानरेर प्रकृतिर मध्ये एइ रसेर कथञ्चित् आभास देखा याय, किन्तु बानरेर सहित मानुषेर आरो अनेक विषयेइ सादृश्य आछे।

याहा असंगत ताहाते मानुषेर दुःख पाओया उचित छिल, हासि पाइबार कोनो अर्थइ नाइ। पश्चाते यखन चौकि नाइ तखन चौकिते बसितेछि मने करिया केह यदि माटिते पड़िया याय तबे ताहाते दर्शकबृन्देर सुखानुभव करिबार कोनो युक्तिसंगत कारण देखा याय ना। एमन एकटा उदाहरण केन, कौतुक-मात्रेरइ मध्ये एमन एकटा पदार्थ आछे याहाते मानुषेर सुख ना हइया दुःख हओया उचित।

आमरा कथाय कथाय से दिन इहार एकटा कारण निर्देश करियाछिलाम। आमरा बलियाछिलाम, कौतुकेर हासि एवं आमोदेर हासि एकजातीय—उभय हास्येर मध्येइ एकटा प्रबलता आछे। ताइ आमादेर सन्देह हइयाछिल ये, हयतो आमोद एवं कौतुकेर मध्ये एकटा प्रकृतिगत सादृश्य आछे; सेइटे बाहिर करिते पारिलेइ कौतुकहास्येर रहस्य-भेद हइते पारे।

साधारण भाबेर सुखेर सहित आमोदेर एकटा प्रभेद आछे। नियमभङ्गे ये एकटु पीड़ा आछे सेइ पीड़ाटुकु ना थाकिले आमोद हइते पारे ना। आमोद जिनिसटा नित्यनैमित्तिक सहज नियम-संगत नहे; ताहा माझे माझे एक-एक दिनेर, ताहाते प्रयासेर आवश्यक। सेइ पीड़न एवं प्रयासेर संघर्षे मनेर ये एकटा उत्तेजना हय सेइ उत्तेजनाइ आमोदेर प्रधान उपकरण।

आमरा बलियाछिलाम, कौतुकेर मध्येओ नियमभङ्गजनित एकटा पीड़ा आछे; सेइ पीड़ाटा अति अधिक मात्राय ना गेले अमादेर मने ये एकटा सुखकर उत्तेजनार उद्रेक करे, सेइ आकस्मिक उत्तेजनार आघाते आमरा हासिया उठि।

याहा सुसंगत ताहा चिरदिनेर नियमसम्मत, याहा असंगत ताहा क्षणकालेर नियमभङ्ग। येखाने याहा हओया उचित सेखाने ताहा हइले ताहाते आमादेर मनेर कोनो उत्तेजना नाइ। हठात्, ना हइले किंबा आर एक-रूप हइले सेइ आकस्मिक अनतिप्रबल उत्पीड़ने मनटा विशेष चेतना अनुभव करिया सुख पाय एवं आमरा हासिया उठि।

से दिन आमरा एइ पर्यन्त गियाछिलाम, आर बेशि दूर याइ नाइ। किन्तु ताइ बलिया आर ये याओया याय ना ताहा नहे। आरो बलिबार कथा आछे।

श्रीमती दीप्ति प्रश्न करियाछेन ये, आमादेर चार पण्डितेर सिद्धान्त यदि सत्य हय तबे चलिते चलिते हठात् अल्प हूँचट खाइले किंबा रास्ताय याइते अकस्मात् अल्प मात्राय दुर्गन्ध नाके आसिले आमादेर हासि पाओया, अन्तत उत्तेजनाजनित सुख अनुभव करा उचित।

ए प्रश्नेर द्वारा आमादेर मीमांसा खण्डित हइतेछे ना, सीमाबद्ध हइतेछे मात्र। इहाते केवल एइटुकु देखा याइतेछे ये, पीड़नमात्रेइ कौतुकजनक उत्तेजना जन्माय ना। अतएव एक्षणे देखा आवश्यक, कौतुकपीड़नेर विशेष उपकरणटा की।

जड़प्रकृतिर मध्ये करुणरसओ नाइ, हास्यरसओ नाइ। एकटा बड़ो पाथर छोटो पाथरके गुंड़ाइया फेलिलेओ आमादेर चोखे जल आसे ना, एवं समतल क्षेत्रेर मध्ये चलिते चलिते हठात् एकटा खापछाड़ा गिरिशृङ्ग देखिते पाइले ताहाते आमादेर हासि पाय ना। नदी-निर्झर पर्वत-समुद्रेर मध्ये माझे माझे आकस्मिक असामञ्जस्य देखिते पाओया याय—ताहा बाधाजनक, बिरक्तिजनक, पीड़ाजनक हइते पारे, किन्तु कोनो स्थानेइ कौतुकजनक हय ना। सचेतन पदार्थ-सम्बंधीय खापछाड़ा व्यापार व्यतीत शुद्ध जड़पदार्थे आमादेर हासि आनिते पारे ना।

केन, ताहा ठिक करिया बला शक्त किन्तु आलोचना करिया देखिते दोष नाइ।

आमादेर भाषाय कौतुक एवं कौतूहल शब्देर अर्थेर योग आछे। संस्कृत-साहित्ये अनेक स्थले एकइ अर्थे विकल्पे उभय शब्देरइ प्रयोग हइया थाके। इहा हइते अनुमान करि, कौतूहलवृत्तिर सहित कौतुकेर विशेष सम्बन्ध आछे।

कौतूहलेर एकटा प्रधान अङ्ग नूतनत्वेर लालसा, कौतुकेरओ एकटा प्रधान उपादान नूतनत्व। असंगतेर मध्ये येमन निछक विशुद्ध नूतनत्व आछे, सङ्गतेर मध्ये तेमन नाइ।

किन्तु प्रकृत असङ्गति इच्छाशक्तिर सहित जड़ित, ताहा जड़पदार्थेर मध्ये नाइ। आमि यदि परिष्कार पथे चलिते चलिते हठात् दुर्गन्ध पाइ तबे आमि

निश्चय जानि, निकटे कोथाओ एक जायगाय दुर्गन्ध वस्तु आछे ताइ एइरूप घटिल; इहाते कोनोरूप नियमेर व्यतिक्रम नाइ, इहा अवश्यम्भावी। जड़प्रकृतिते ये कारणे याहा हइतेछे ताहा छाड़ा आर किछु हइबार जो नाइ, इहा निश्चय।

किन्तु पथे चलिते चलिते यदि हठात् देखि एक जन मान्य बृद्ध व्यक्ति खेमटा नाच नाचितेछे, तबे सेटा प्रकृतइ असङ्गत ठेके; कारण, ताहा अनिवार्य नियम-संगत नहे। आमरा वृद्धेर निकट किछुतेइ एरूप आचरण प्रत्याशा करि ना; कारण से इच्छाशक्तिसम्पन्न लोक, से इच्छा करिया नाचितेछे, इच्छा करिले ना नाचिते पारित। जड़ेर नाकि निजेर इच्छामतो किछु हय ना, एइ जन्य जड़ेर पक्षे किछुइ असङ्गत कौतुकावह हइते पारे ना। एइ जन्य अनपेक्षित हुँचट बा दुर्गन्ध हास्यजनक नहे। चायेर चामच यदि दैवात् चायेर पेयाला हइते च्युत हइया दोयातेर कालिर मध्ये पड़िया याय, तबे सेटा चामचेर पक्षे हास्यकर नहे—भाराकर्षणेर नियम ताहार लङ्घन करिबार जो नाइ। किन्तु अन्यमनस्क लेखक यदि ताँहार चायेर चामच दोयातेर मध्ये डुबाइया चा खाइबार चेष्टा करेन, तबे सेटा कौतुकेर विषय बटे। नीति येमन जड़े नाइ, असंगतिओ सेइरूप जड़े नाइ। मनःपदार्थ प्रवेश करिया येखाने द्विधा जन्माइया दियाछे सेइखानेइ उचित एवं अनुचित, सङ्गत एवं अद्भुत।

कौतूहल जिनिसटा अनेक स्थले निष्ठुर; कौतुकेर मध्येओ निष्ठुरता आछे। सिराजउद्दौला दुइ जनेर दाड़िते दाड़िते बाँधिया उभयेर नाके नस्य पूरिया दितेन एइरूप प्रवाद शुना याय—उभये यखन हाँचिते आरम्भ करित तखन सिराजउद्दौला आमोद अनुभव करितेन। इहार मध्ये असङ्गति कोन्खाने। नाके नस्य दिले तो हाँचि आसिबारइ कथा। किन्तु एखानेओ इच्छार सहित कार्येर असङ्गति। याहादेर नाके नस्य देओया हइतेछे ताहादेर इच्छा नय ये ताहारा हाँचे, कारण हाँचिलेइ ताहादेर दाड़िते अकस्मात् टान पड़िबे, किन्तु तथापि ताहादिगके हाँचितेइ हइतेछे।

एइरूप इच्छार सहित अवस्थार असङ्गति, उद्देश्येर सहित उपायेर असङ्गति, कथार सहित कार्येर असङ्गति—एगुलोर मध्ये निष्ठुरता आछे। अनेक समय आमरा याहाके लइया हासि से निजेर अवस्थाके हास्येर विषय ज्ञान करे ना। एइ जन्यइ पाञ्चभौतिक सभाय व्योम बलियाछिलेन ये, कमेडि एवं ट्र्याजेडि केवल पीड़नेर मात्रा-भेद मात्र। कमेडिते यतटुकु निष्ठुरता प्रकाश हय ताहाते आमादेर हासि पाय एवं ट्र्याजेडिते यत दूर पर्यन्त याय ताहाते आमादेर चोखे जल आसे। गर्दभर निकट अनेक टाइटिनिया अपूर्व मोह-वशतः ये आत्मविसर्जन करिया थाके ताहा मात्राभेदे एवं पात्रभेदे मर्मभेदी शोकेर कारण हइया उठे।

असङ्गति कमेडिरओ विषय, असङ्गति ट्र्याजेडिरओ विषय। कमेडितेओ इच्छार सहित अवस्थार असङ्गति प्रकाश पाय। फल्स्टाफ उइण्ड्सर-बासिनी रङ्गिणीर प्रेम-लालसाय विश्वस्तचित्ते अग्रसर हइलेन, किन्तु दुर्गतिर एकशेष लाभ करिया बाहिर हइया आसिलेन; रामचन्द्र यखन रावणबध करिया, बनवासप्रतिज्ञा पूरण करिया, राज्ये फिरिया आसिया दाम्पत्यसुखेर चरम शिखरे आरोहण करियाछेन, एमन समय अकस्मात् बिना मेघे बज्राघात हइल--गर्भवती सीताके अरण्ये निर्वासित करिते बाध्य हइलेन। उभय स्थलेइ आशार सहित फलेर, इच्छार सहित अवस्थार असङ्गति प्रकाश पाइतेछे। अतएव स्पष्ट देखा याइतेछे, असङ्गति दुइ श्रेणीर आछे--एकटा हास्यजनक, आर एकटा दुःखजनक। विरक्तिजनक, विस्मयजनक, रोषजनकके ओ आमरा शेष श्रेणीते फेलितेछि।

अर्थात्, असङ्गति यखन आमादेर मनेर अनतिगभीर स्तरे आघात करे तखनि आमादेर कौतुक बोध हय, गभीरतर स्तरे आघात करिले आमादेर दुःख बोध हय। शिकारि यखन अनेक क्षण अनेक ताक करिया हंसभ्रमे एकटा दूरस्थ श्वेत पदार्थेर प्रति गुलिवर्षण करे एवं छुटिया काछे गिया देखे सेटा एकटा छिन्न वस्त्रखण्ड, तखन ताहार सेइ नैराश्ये आमादेर हासि पाय। किन्तु कोनो लोक याहाके आपन जीवनेर परम पदार्थ मने करिया एकाग्रचित्ते एकान्त चेष्टाय आजन्मकाल अनुसरण करियाछे एवं अवशेषे सिद्धकाम हइया ताहाके हाते लइया देखियाछे से तुच्छ प्रवञ्चनामात्र तखन ताहार सेइ नैराश्ये अन्तःकरण व्यथित हय।

दुर्भिक्षे यखन दले दले मानुष मरितेछे तखन सेटाके प्रहसनेर विषय बलिया काहारओ मने हय ना। किन्तु आमरा अनायासे कल्पना करिते पारि, एकटा रसिक शयतानेर निकट इहा परम कौतुकावह दृश्य। से तखन एइ सकल अमर-आत्मा-धारी जीर्णकलेबरगुलिर प्रति सहास्य कटाक्षपात करिया बलिते पारे, 'ओ तो तोमादेर षड्दर्शन, तोमादेर कालिदासेर काव्य, तोमादेर तेत्रिश कोटि देवता पड़िया आछे; नाइ शुधु दुइ मुष्टि तुच्छ तण्डुलकणा, अमनि तोमादेर अमर आत्मा, तोमादेर जगद्विजयी मनुष्यत्व एकेबारे कण्ठेर काछटिते आसिया धुक्धुक् करितेछे!'

स्थूल कथाटा एइ ये, असङ्गतिर तार अल्पे अल्पे चड़ाइते चड़ाइते विस्मय क्रमे हास्ये एवं हास्य क्रमे अश्रुजले परिणत हइते थाके।

['साधना' मार्च १८९१ (फाल्गुन १३०१) में प्रकाशित।]

अपूर्व रामायण

बाड़िते एकटा शुभकार्य छिल, ताइ बिकालेर दिके अदूरवर्ती मञ्चेर उपर हइते बारोयाँ रागिणीते नहबत बाजितेछिल। व्योम अनेक क्षण मुद्रितचक्षे थाकिया हठात् चक्षु खुलिया बलिते आरम्भ करिल, 'आमादेर एइ सकल देशीय रागिणीर मध्ये एकटा परिव्याप्त मृत्युशोकेर भाव आछे; सुरगुलि काँदिया काँदिया बलितेछे, संसारे किछुइ स्थायी हय ना। संसारे सकलइ अस्थायी, ए कथाटा संसारीर पक्षे नूतन नहे, प्रियओ नहे, इहा एकटा अटल कठिन सत्य। किन्तु तबु एटा बाँशिर मुखे शुनिते एत भालो लागितेछे केन। कारण, बाँशिते जगतेर एइ सर्वापेक्षा सुकठोर सत्यटाके सर्वापेक्षा सुमधुर करिया बलितेछे। मने हइतेछे मृत्युटा एइ रागिणीर मतो सकरुण बटे, किन्तु एइ रागिणीर मतोइ सुन्दर। जगत्संसारेर वक्षेर उपरे गुरुतम ये जगद्दल पाथरटा चापिया आछे, एइ गानेर सुरे सेइटाके की एक मन्त्रबले लघु करिया दितेछे। एक जनेर हृदयकुहर हइते उच्छ्वसित हइया उठिले ये वेदना चीत्कार हइया बाजिया उठित, क्रन्दन हइया फाटिया पड़ित, बांशि ताहाइ समस्त जगतेर मुख हइते ध्वनित करिया तुलिया एमन अगाध करुणापूर्ण अथच अनन्तसान्त्वनामय रागिणीर सृष्टि करितेछे।'

दीप्ति एवं स्रोतस्विनी आतिथ्येर काज सारिया सबेमात्र आसिया बसियाछिल, एमन समय आजिकार एइ मङ्गलकार्येर दिने व्योमेर मुखे मृत्युसम्बन्धीय आलोचनाय अत्यन्त विरक्त हइया उठिया गेल। व्योम ताहादेर विरक्ति ना बुझिते पारिया अविचलित अम्लानमुखे बलिया याइते लागिल। नहबतटा बेश लागितेछिल, आमरा आर से दिन बड़ो तर्क करिलाम ना।

व्योम कहिल, 'आजिकार एइ बाँशि शुनिते शुनिते एकटा कथा विशेष करिया आमार मने उदय हइतेछे। प्रत्येक कवितार मध्ये एकटि विशेष रस थाके—अलंकारशास्त्रे याहाके आदि करुण शान्ति-नामक भिन्न भिन्न नामे भाग करियाछे। आमार मने हइतेछे, जगत् रचनाके यदि काव्यहिसाबे देखा याय तबे मृत्युइ ताहार सेइ प्रधान रस, मृत्युइ ताहाके यथार्थ कवित्व अर्पण करियाछे। यदि मृत्यु ना थाकित, जगतेर येखानकार याहा ताहा चिरकाल सेखानेइ यदि अविकृत भावे दाँड़ाइया थाकित, तबे जगत्टा एकटा चिरस्थायी समाधिमन्दिरेर मतो अत्यन्त संकीर्ण, अत्यन्त कठिन, बद्ध हइया रहित। एइ अनन्त निश्चलतार चिरस्थायी

भार वहन करा प्राणीदेर पक्षे बड़ो दुरूह हइत। मृत्यु एइ अस्तित्वेर भीषण भारके सर्वदा लघु करिया राखियाछे, एवं जगत्के विचरण करिबार असीम क्षेत्र दियाछे। ये दिके मृत्यु सेइ दिकेइ जगतेर असीमता। सेइ अनन्त रहस्य-भूमिर दिकेइ मानुषेर समस्त कविता, समस्त सङ्गीत, समस्त धर्मतन्त्र, समस्त तृप्तिहीन वासना समुद्रपारगामी पक्षीर मतो नीड़-अन्वेषणे उड़िया चलियाछे। एके याहा प्रत्यक्ष, याहा वर्तमान, ताहा आमादेर पक्षे अत्यन्त प्रबल, आबार ताहाइ यदि चिरस्थायी हइत तबे ताहार एकेश्वर दौरात्म्येर आर शेष थाकित ना—तबे ताहार उपरे आर आपिल चलित कोथाय। तबे के निर्देश करिया दित इहार बाहिरेओ असीमता आछे। अनन्तेर भार ए जगत् केमन करिया वहन करित मृत्यु यदि सेइ अनन्तके आपनार चिरप्रवाहे नित्यकाल भासमान करिया ना राखित।'

समीर कहिल, 'मरिते ना हइले बाँचिया थाकिबार कोनो मर्यादाइ थाकित ना। एखन जगत्सुद्ध लोक याहाके अवज्ञा करे सेओ मृत्यु आछे बलियाइ जीवनेर गौरवे गौरवान्वित।'

क्षिति कहिल, 'आमि से जन्य बेशि चिन्तित नहि; आमार मते मृत्युर अभावे कोनो विषये कोथाओ दाँड़ि दिबार जो थाकित ना, सेइटाइ सब चेये चिन्तार कारण। से अवस्थाय व्योम यदि अद्वैततत्त्व सम्बन्धे आलोचना उत्थापन करित केह जोड़हात करिया ए कथा बलिते पारित ना ये, 'भाइ, एखन आर समय नाइ, अतएव क्षयन्त हओ।' मृत्यु ना थाकिले अवसरेर अन्त थाकित ना। एखन मानुष निदेन सात-आट बत्सर वयसे अध्ययन आरम्भ करिया पँचिश बत्सर वयसेर मध्ये कलेजेर डिग्रि लइया अथवा दिव्य फेल करिया निश्चिन्त हय; तखन कोनो विशेष वयसे आरम्भ करारओ कारण थाकित ना, कोनो विशेष वयसे शेष करिबार-ओ ताड़ा थाकित ना। सकल प्रकार काजकर्म ओ जीवनयात्रार कमा सेमिकोलन दाँड़ि एकेबारेइ उठिया याइत।'

व्योम ए सकल कथाय यथेष्ट कर्णपात ना करिया निजेर चिन्तासूत्र अनुसरण करिया बलिया गेल, 'जगतेर मध्ये मृत्युइ केवल चिरस्थायी, सेइ जन्य आमादेर समस्त चिरस्थायी आशा ओ वासनाके सेइ मृत्युर मध्येइ प्रतिष्ठित करियाछि। आमादेर स्वर्ग, आमादेर पुण्य, आमादेर अमरता सब सेइखाने। ये सब जिनिस आमादेर एत प्रिय ये कखनो ताहादेर विनाश कल्पनाओ करिते पारि ना, सेगुलिके मत्युर हस्ते समर्पण करिया दिया जीवनान्तकाल अपेक्षा करिया थाकि। पृथिवीते बिचार नाइ, सुबिचार मृत्युर परे; पृथिवीते प्राणपण वासना निष्फल हय, सफलता मृत्युर कल्पतरुतले। जगतेर आर सकल दिकेइ कठिन स्थूल वस्तुराशि आमादेर

मानस आदर्शके प्रतिहत करे, आमादेर अमरता असीमताके अप्रमाण करे--जगतेर ये सीमाय मृत्यु, येखाने समस्त वस्तुर अवसान, सेइखानेइ आमादेर प्रियतम प्रबलतम वासनार, आमादेर शुचितम सुन्दरतम कल्पनार कोनो प्रतिबन्धक नाइ। आमादेर शिव श्मशानवासी--आमादेर सर्वोच्च मङ्गलेर आदर्श मृत्युनिकेतन।'

मुलतान बारोयाँ शेष करिया सूर्यास्तकालेर स्वर्णाभ अन्धकारेर मध्ये नहबते पुरबी बाजिते लागिल। समीर बलिल, 'मानुष मृत्युर पारे ये सकल आशा-आकांक्षाके निर्वासित करिया दियाछे, एइ बाँशिर सुरे सेइ सकल चिराश्रुसजल हृदयेर धनगुलिके पुनर्बार मनुष्यलोके फिराइया आनितेछे। साहित्य एवं सङ्गीत एवं समस्त ललितकला, मनुष्यहृदयेर समस्त नित्य पदार्थके मृत्युर परकाल-प्रान्त हइते इहजीवनेर माझखाने आनिया प्रतिष्ठित करितेछे। बलितेछे, पृथिवीके स्वर्ग, वास्तवके सुन्दर एवं एइ क्षणिक जीवनकेइ अमर करिते हइबे। मृत्यु येमन जगतेर असीम रूप व्यक्त करिया दियाछे, ताहाके एक अनन्त वासर-शय्याय एक परमरहस्येर सहित परिणयपाशे बद्ध करिया राखियाछे, सेइ रुद्धद्वार वासरगृहेर गोपन वातायन पथ हइते अनन्त सौन्दर्येर सौगन्ध एवं संगीत आसिया आमादिगके स्पर्श करितेछे, तेमनि साहित्यरस एवं कलारस आमादेर जड़भार-ग्रस्त विक्षिप्त प्रात्यहिक जीवनेर मध्ये प्रत्यक्षेर सहित अप्रत्यक्षेर, अनित्येर सहित नित्येर, तुच्छेर सहित सुन्दरेर, व्यक्तिगत क्षुद्र सुखदुःखेर सहित विश्वव्यापी बृहत् रागिणीर योगसाधन करिया तुलियाछे। आमादेर समस्त प्रेमके पृथिवी हइते प्रत्याहरण करिया मृत्युर पारे पाठाइया दिब ना एइ पृथिवीतेइ राखिब, इहा लइयाइ तर्क। आमादेर प्राचीन वैराग्यधर्म बलितेछे, परकालेर मध्येइ प्रकृत प्रेमेर स्थान; नवीन साहित्य एवं ललितकला बलितेछे, 'इहलोकेइ आमरा ताहार स्थान देखाइया दितेछि।''

क्षिति कहिल, 'एइ प्रसङ्गे आमि एक अपूर्व रामायण-कथा बलिया सभा भङ्ग करिते इच्छा करि।--

'राजा रामचन्द्र--अर्थात् मानुष—प्रेम-नामक सीताके नाना राक्षसेर हात हइते रक्षा करिया आनिया निजेर अयोध्यापुरीते परमसुखे बास करिते-छिलेन। एमन समय कतकगुलि धर्मशास्त्र दल बाँधिया एइ प्रेमेर नामे कलङ्क रटना करिया दिल। बलिल, उनि अनित्य पदार्थेर सहित एकत्र वास करिया-छेन, उहाँके परित्याग करिते हइबे। वास्तविक अनित्येर घरे रुद्ध थाकियाओ एइ देवांशजाता राजकुमारीके ये कलङ्क स्पर्श करिते पारे नाइ से कथा एखन के प्रमाण करिबे। एक, अग्निपरीक्षा आछे, से तो देखा हइयाछे—अग्निते इँहाके नष्ट ना करिया आरो उज्ज्वल करिया दियाछे। तबु शास्त्रेर काना-

कानिते अवशेषे एइ राजा प्रेमके एक दिन मृत्यु-तमसार तीरे निर्वासित करिया दिलेन। इतिमध्ये महाकवि एवं ताँहार शिष्यवृन्देर आश्रये थाकिया एइ अनाथिनी, कुश एवं लव, काव्य एवं ललितकला-नामक युगलसन्तान प्रसव करियाछे। सेइ दुटि शिशुइ कविर काछे रागिणी शिक्षा करिया राजसभाय आज ताहादेर परित्यक्ता जननीर यशोगान करिते आसियाछे। एइ नवीन गायकेर गाने विरही राजार चित्त चञ्चल एवं ताँहार चक्षु अश्रुसिक्त हइया उठियाछे। एखनो उत्तरकाण्ड सम्पूर्ण शेष हय नाइ। एखनो देखिबार आछे——जय हय त्याग-प्रचारक प्रवीण वैराग्यधर्मेर ना प्रेममङ्गलगायक दुटि अमर शिशुर।'

आषाढ़ १३०२

['साधना' सितम्बर १८९५ (भाद्र १३०२) में प्रकाशित ।]

वैज्ञानिक कौतूहल

विज्ञानेर आदिम उत्पत्ति एवं चरम लक्ष्य लइया व्योम एवं क्षितिर मध्ये महा तर्क बाधिया गियाछिल। तदुपलक्षे व्योम कहलि, 'यदिओ आमादेर कौतूहलवृत्ति हइतेइ विज्ञानेर उत्पत्ति तथापि आमार विश्वास, आमादेर कौतूहल-टा ठिक विज्ञानेर तल्लाश करिते बाहिर हय नाइ; बरञ्च ताहार आकांक्षाटा सम्पूर्ण अवैज्ञानिक। से खूंजिते याय परशपाथर, बाहिर पड़े एकटा प्राचीन जीवेर जीर्ण वृद्धाङ्गुष्ठ; से चाय आलादिनेर आश्चर्य प्रदीप, पाय देशालाइयेर बाक्स। आल्‌किमिटाइ ताहार मनोगत उद्देश्य, केमेस्ट्रि ताहार अप्रार्थित सिद्धि; अय्‌ास्ट्रलजिर जन्य से आकाश घिरिया जाल फेले, किन्तु हाते उठिया आसे अय्‌ा-स्ट्रनमि। से नियम खोंजे ना, से कार्यकारणशृङ्खलेर नव नव अंगुरि गणना करिते चाय ना; से खोंजे नियमेर विच्छेद; से मने करे कोन् समये एक जायगाय आसिया हठात् देखिते पाइबे, सेखाने कार्यकारणेर अनन्त पुनरुक्ति नाइ। से चाय अभूतपूर्व नूतनत्व—किन्तु वृद्ध विज्ञान निःशब्दे ताहार पश्चात् पश्चात् आसिया ताहार समस्त नूतनके पुरातन करिया देय, ताहार इन्द्रधनुके परकला-विच्छुरित वर्णमालार परिवर्धित संस्करण एवं पृथिवीर गतिके पक्वतालफल-पतनेर समश्रेणीय बलिया प्रमाण करे।

'ये नियम आमादेर धूलिकणार मध्ये, अनन्त आकाशओ अनन्त कालेर सर्वत्रइ सेइ एक नियम प्रसारित; एइ आविष्कारटि लइया आमरा आजकाल आनन्द ओ विस्मय प्रकाश करिया थाकि। किन्तु एइ आनन्द, एइ विस्मय मानुषेर यथार्थ स्वाभाविक नहे। से अनन्त आकाशे ज्योतिष्कराज्येर मध्ये यखन अनुसन्धानदूत प्रेरण करियाछिल तखन बड़ो आशा करियाछिल ये, ऐ ज्योतिर्मय अन्धकारमय धामे धूलिकणार नियम नाइ, सेखाने अत्याश्चर्य एकटा स्वर्गीय अनियमेर उत्सव; किन्तु एखन देखितेछे ऐ चन्द्रसूर्य ग्रहनक्षत्र, ऐ सप्तर्षि-मण्डल, ऐ अश्विनी भरणी कृत्तिका आमादेर एइ धूलिकणारइ ज्येष्ठ कनिष्ठ सहोदर-सहोदरा। एइ नूतन तथ्यटि लइया आमरा ये आनन्द प्रकाश करि ताहा आमादेर एकटा नूतन कृत्रिम अभ्यास, ताहा आमादेर आदिम-प्रकृति-गत नहे।'

समीर कहिल, 'से कथा बड़ो मिथ्या नहे। परशपाथर एवं आलादिनेर प्रदीपेर प्रति प्रकृतिस्थ मानुष-मात्रेइ एकटा निगूढ़ आकर्षण आछे। छेलेबेलाय कथामालार एक गल्प पड़ियाछिलाम ये कोनो कृषक मरिबार समय ताहार पुत्रके बलिया गियाछिल ये, अमुक क्षेत्रे तोमार जन्य आमि गुप्तधन राखिया गेलाम। से बेचारा बिस्तर खुंड़िया गुप्तधन पाइल ना, किन्तु प्रचुर खननेर गुणे से जमिते एत शस्य जन्मिल ये ताहार आर अभाव रहिल ना। बालकप्रकृति बालक-मात्रेइ ए गल्पटि पड़िया कष्ट बोध हइया थाके। चाष करिया शस्य तो पृथिवी-सुद्ध सकल चाषाइ पाइतेछे, किन्तु गुप्तधनटा गुप्त बलियाइ पाय ना—ताहा विश्वव्यापी नियमेर एकटा व्यभिचार, ताहा आकस्मिक, सेइ जन्यइ ताहा स्वभावतः मानुषेर काछे एत बेशि प्रार्थनीय। कथामाला याहाइ बलुन, कृषकेर पुत्र ताहार पितार प्रति कृतज्ञ हय नाइ से विषये कोनो सन्देह नाइ। वैज्ञानिक नियमेर प्रति अवज्ञा मानुषेर पक्षे कत स्वाभाविक आमरा प्रतिदिनइ ताहार प्रमाण पाइ। ये डाक्तार निपुण चिकित्सार द्वारा अनेक रोगीर आरोग्य करिया थाकेन ताँहार सम्बन्धे आमरा बलि लोकटार 'हातयश' आछे। शास्त्रसंगत चिकित्सार नियमे डाक्तार रोग आराम करितेछे, ए कथाय आमादेर आन्तरिक तृप्ति नाइ; उहार मध्ये साधारण नियमेर व्यतिक्रम-स्वरूप एकटा रहस्य आरोप करिया तबे आमरा सन्तुष्ट थाकि।'

आमि कहिलाम, 'ताहार कारण एइ ये, नियम अनन्त काल ओ अनन्त देशे प्रसारित हइलेओ ताहा सीमाबद्ध से आपन चिह्नित रेखा हइते अणुपरिमाण इतस्तत करिते पारे ना—सेइ जन्यइ ताहार नाम नियम एवं सेइ जन्यइ मानुषेर कल्पनाके से पीड़ा देय। शास्त्रसंगत चिकित्सार काछे आमरा अधिक आशा करिते पारि ना—एमन रोग आछे याहा चिकित्सार असाध्य। किन्तु ए पर्यन्त हात-यश-नामक एकटा रहस्यमय व्यापारेर ठिक सीमानिर्णय हय नाइ; एइ जन्य से आमादेर आशाके कल्पनाके कोथाओ कठिन बाधा देय ना। एइ जन्यइ डाक्तारि औषधेर चेये अवधौतिक औषधेर आकर्षण अधिक। ताहार फल ये कत दूर पर्यन्त हइते पारे तत्सम्बन्धे आमादेर प्रत्याशा सीमाबद्ध नहे। मानुषेर यत अभिज्ञतावृद्धि हइते थाके, अमोघ नियमेर लौहप्राचीरे यतइ से आघात प्राप्त हय, ततइ मानुष निजेर स्वाभाविक अनन्त आशाके सीमाबद्ध करिया आने, कौतूहलवृत्तिर स्वाभाविक नूतनत्वेर आकाङ्क्षा संयत करिया आने, नियमके राजपदेप्रतिष्ठित करे, एवं प्रथमे अनिच्छाक्रमे परे अभ्यासक्रमे ताहार प्रति एकटा राजभक्तिर उद्रेक करिया तोले।'

व्योम कहिल, 'किन्तु से भक्ति यथार्थ अन्तरेर भक्ति नहे, ताहा काज आदायेर

भक्ति। यखन नितान्त निश्चय जाना याय ये जगत्कार्य अपरिवर्तनीय नियमे बद्ध, तखन काजेइ पेटेर दाये, प्राणेर दाये, ताहार निकट घाड़ हेंट करिते हय। तखन विज्ञानेर बाहिरे अनिश्चयेर हस्ते आत्मसमर्पण करिते साहस हय ना; तखन मादुलि तागा जल पड़ा प्रकृतिके ग्रहण करिते हइले इलेक्ट्रिसिटि म्याग्नेटिज्म् हिप्नटिजम् प्रभृति विज्ञानेर जाल मार्का देखिया आपनाके भुलाइते हय। आमरा नियम अपेक्षा अनियमके ये भालोबासि ताहार एकटा गोड़ार कारण आछे। आमादेर निजेर मध्ये एक जायगाय आमरा नियमेर विच्छेद देखिते पाइ। आमादेर इच्छाशक्ति सकल नियमेर बाहिरे, से स्वाधीन——अन्तत आमरा सेइरूप अनुभव करि। आमादेर अन्तरप्रकृतिगत सेइ स्वाधीनतार सादृश्य बाह्यप्रकृतिर मध्ये उपलब्धि करिते स्वभावतःइ आमादेर आनन्द हय। इच्छार प्रति इच्छार आकर्षण अत्यन्त प्रबल; इच्छार सहित ये दान आमरा प्राप्त हइ से दान आमादेर काछे अधिकतर प्रिय, सेवा यतइ पाइ ताहार सहित इच्छार योग ना थाकिले ताहा आमादेर निकट रुचिकर बोध हय ना। सेइ जन्य यखन जानिताम ये इन्द्र आमादिगके वृष्टि दितेछेन, मरुत आमादिगके वायु जोगाइतेछेन, अग्नि आमादिगके दीप्ति दान करितेछेन, तखन सेइ ज्ञानेर मध्ये आमादेर एकटा आन्तरिक तृप्ति छिल। एखन जानि रौद्रवृष्टिवायुर मध्ये इच्छा-अनिच्छा नाइ, ताहारा योग्य-अयोग्य प्रिय-अप्रिय बिचार ना करिया निर्बिकारे यथानियमे काज करे, आकाशे जलीय अणु शीतल वायु-संयोगे संहत हइलेइ साधुर पवित्र मस्तके वर्षित हइया सर्दि उत्पादन करिबे एवं असाधुर कुष्माण्डमञ्चे जलसिञ्चन करिते कुण्ठित हइबे ना——विज्ञान आलोचना करिते करिते इहा आमादेर क्रमे एकरूप सह्य हइया आसे, किन्तु वस्तुत इहा आमादेर भालोइ लागे ना।'

आमि कहिलाम, 'पूर्वे आमरा येखाने स्वाधीन इच्छार कर्तृत्व अनुमान करियाछिलाम एखन सेखाने नियमेर अन्ध शासन देखिते पाइ, सेइ जन्य विज्ञान आलोचना करिले जगत्के निरानन्द इच्छासम्पर्क विहीन बलिया मने हय। किन्तु इच्छा एवं आनन्द यत क्षण आमार अन्तरे आछे तत क्षण जगतेर अन्तरे ताहाके अनुभव करितेइ हइबे——पूर्वे ताहाके येखाने कल्पना करियाछिलाम सेखाने ना हउक ताहार अन्तरतर अन्तरतम स्थाने ताहाके प्रतिष्ठित ना जानिले आमादेर अन्तरतम प्रकृतिर प्रति व्यभिचार करा हय। आमार मध्ये समस्त विश्वनियमेर ये एकटि व्यतिक्रम आछे जगते कोथाओ ताहार एकटा मूल आदर्श नाइ, इहा आमादेर अन्तरात्मा स्वीकार करिते चाहे ना। एइ जन्य आमादेर इच्छा एकटा विश्व-इच्छार, आमादेर प्रेम एकटा विश्वप्रेमेर निगूढ़ अपेक्षा ना राखिया बाँचिते पारे ना।'

समीर कहिल, 'जड़प्रकृतिर सर्वत्रइ नियमेर प्राचीर चीनदेशेर प्राचीरेर अपेक्षा दृढ़ प्रशस्त ओ अभ्रभेदी, हठात् मानवप्रकृतिर मध्ये एकटा क्षुद्र छिद्र बाहिर हइयाछे। सेइखाने चक्षु दियाइ आमरा एक आश्चर्य आविष्कार करियाछि। देखियाछि प्राचीरेर परपारे एक अनन्त अनियम रहियाछे; एइ छिद्रपथे ताहार सहित आमादेर योग; सेइखान हइतेइ समस्त सौन्दर्य' स्वाधीनता प्रेम आनन्द प्रवाहित हइया आसितेछे। सेइ जन्य एइ सौन्दर्य ओ प्रेमके कोनो विज्ञानेर नियमे बाँधिते पारिल ना।'

एमन समये स्रोतस्विनी गृहे प्रवेश करिया समीरके कहिल, 'से दिन दीप्तिर पियानो बाजाइबार स्वरलिपि-बइखाना तोमरा एत करिया खुंजितेछिले, सेटार की दशा हइयाछे जान?'

समीर कहिल, 'ना।'

स्रोतस्विनी कहिल, 'रात्रे इँदुरे ताहा कुटि कुटि करिया काटिया पियानोर तारेर मध्ये छड़ाइया राखियाछे। एरूप अनावश्यक क्षति करिबार तो कोनो उद्देश्य खुंजिया पाओया याय ना।'

समीर कहिल, 'उक्त इन्दुरटि बोध करि इन्दुरवंशे एकटि विशेषक्षमता-सम्पन्न वैज्ञानिक। बिस्तर गवेष्णाय से बाजनार बहिर सहित बाजनार तारेर एकटा सम्बन्ध अनुमान करिते पारियाछे। एखन समस्त रात धरिया परीक्षा चालाइतेछे। विचित्र ऐक्यतानपूर्ण संगीतेर आश्चर्य रहस्य भेद करिबार चेष्टा करितेछे। तीक्ष्ण दन्ताग्रभाग द्वारा बाजनार बहिर क्रमागत विश्लेषण करितेछे। पियानोर तारेर सहित ताहाके नाना भावे एकत्र करिया देखितेछे। एखन बाजनार बइ काटिते शुरु करियाछे; क्रमे बाजनार तार काटिबे, काठ काटिबे, बाजनाटाके शत छिद्र करिया सेइ छिद्रपथे आपन सूक्ष्म नासिका ओ चञ्चल कौतूहल प्रवेश कराइया दिबे—माझे हइते संगीतओ ततइ उत्तरोत्तर सुदूरपराहत हइबे। आमार मने एइ तर्क उदय हइतेछे ये, इन्दुरकुलतिलक ये उपाय अवलम्बन करियाछे ताहाते तार एवं कागजेर उपादान सम्बन्धे नूतन तत्त्व आविष्कृत हइते पारे, किन्तु उक्त कागजेर सहित उक्त तारेर यथार्थ ये सम्बन्ध ताहा कि शतसहस्र वत्सरेओ बाहिर हइबे। अवशेषे कि संशयपरायण नव्य इन्दुरदिगेर मने एइरूप एकटा वितर्क उपस्थित हइबे ना ये, कागज केवल कागज-मात्र, एवं तार केवल तार—कोनो ज्ञानबान जीव-कर्तृक उहादेर मध्ये ये एकटा आनन्दजनक उद्देश्यबन्धन बद्ध हइयाछे ताहा केवल प्राचीन इन्दुरदिगेर युक्तिहीन संस्कार, एइ संस्कारेर केवल एकटा एइ शुभफल देखा याइतेछे ये ताहारइ प्रवर्तनाय

अनुसन्धाने प्रवृत्त हइया तार एवं कागजेर आपेक्षिक कठिनता सम्बन्धे अनेक परीक्षा सम्पन्न हइयाछे।

'किन्तु एक-एक दिन गह्वरेर गभीरतले दन्तचालनकार्ये नियुक्त थाकिया माझे माझे अपूर्व सङ्गीतध्वनि कर्णकुहरे प्रवेश करे एवं अन्तःकरणके क्षणकालेर जन्य मोहाविष्ट करियो देय। सेटा व्यापारटा की। से एकटा रहस्य बटे। किन्तु से रहस्य निश्चयइ कागज एवं तार सम्बन्धे अनुसन्धान करिते करिते क्रमश शतछिद्र आकारे उद्घाटित हइया याइबे।'

भाद्र-कार्तिक १३०२

['साधना' सितम्बर १८९५ (भाद्र १३०२) में प्रकाशित।]

बंगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की यह 'निबंधमाला' नागराक्षरों में प्रकाशित हो रही है। मूल बंगला ग्रंथ को ज्यों का त्यों हिन्दी में लिख दिया गया है। लेकिन बंगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बंगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बंगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है।

(१) बंगला में 'अ' का उचारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अँग्रेजी के 'not' में 'o'। बंगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो' जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बंगला में काफी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व जैसा होता है। जैसे 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है। जैसे बंगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उचारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है। जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला—बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चारित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है। जैसे 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बंगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा। जैसे, क्षिति—खिति ; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा। जैसे लक्षण—लक्खण।

(८) बंगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बंगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा जाएगा 'बिबश'।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिए बंगला में 'ओय' लिखते हैं। जैसे 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है। जैसे, यात्रा--जात्रा; योग--जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम--नियम; नयन--नयन; समय--समय।

(१२) बंगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है। जैसे, स्तब्ध--स्तब्ध; स्निग्ध--स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व होकर मकार का लोप कर देता है। जैसे, छद्म--छद्दँ; पद्म--पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता। जैसे, स्मरण--सँरण, स्मृति--सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा। जैसे, भृत्य--भृत्त; नित्य--नित्त; वाद्य--वाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है। जैसे, द्वार-दार; ज्वाला--जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है। जैसे, सूर्य्य--सूर्ज्ज; धैर्य्य--धर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत ग्रंथ में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए। जैसे, पाओया--पावा; खाओया--खावा; याओया--जावा।

बंगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बंगला शब्दों की उच्चारण-सम्बन्धी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बंगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बंगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है। जैसे आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बंगला भाषा के दो रूप हैं (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा', 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बंगला में क्रिया के दो भेद और हैं: समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत्' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिए बंगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बंगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती। जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं: भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बंगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बंगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं: प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं। जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं। जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है। जैसे आमि करि (मैं करता हूँ)।

बंगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बंगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गये हैं। सहज तरीके से समझने के लिए उनका नामकरण निम्नलिखित ढंग से किया जाता है:

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छिं
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उंन	अ	—	—
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछे	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इतेछिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इयाछिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

'काट' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटलिछ, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि, तथा काटछिलाम

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि, तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार से 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में समकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है। जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया), तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) **कारक**

बंगला में कारक सात हैं : कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आनेवाली कई विभक्तियाँ मुख्यतः कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं। जैसे के, र, ते क्रमशः कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं :

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिगे, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
ए ते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है। जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये, आदि करण कारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है। जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्धकारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादर-सूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक। जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (कागज)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिए होता है। जैसे देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'एरु' 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है: अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है। जैसें छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त-शब्द हो तो 'तें' का

व्यवहार होता है। जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है। जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है। जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं। जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (यरा) का प्रयोग होता है। जसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है। जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिसपर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, डाक्तार डाक (डाक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है। कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता। जैसे, भगवान के डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है। जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजन कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)।

बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके का प्रयोग होता है। जैसे देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते। जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग पर कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है। जैसे जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है। जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थ-वाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्तिवाचक शब्दों के वहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता। जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है। जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये जोड़ा जाता है। जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है। जैसे, दरिद्रके धन दाओ (दरिद्र को ('के लिये') धन दो)।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है। जैसे सत्पात्रे, देव-सेवाय आदि।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते), थेके, अपेक्षा आदि हैं। जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है। जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुंह से ऐसी बात नहीं निकलेगी)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है। जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं। जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है। जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है।)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधरणतः शब्दों के अन्त में 'र' योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों। जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का)। 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो। जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का)। लेकिन शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चारित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' योग करते हैं। जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिए)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं। जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं। जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है। जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का)। जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सबेरे में हमलोग टहला करते हैं।) यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार अधिकरण तीन तरह के हैं--ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक--ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

बैषयिक--आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक--तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते। जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था) ; ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है। जैसे, दिने घुमाइयो ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमगार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती। जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो) ; कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में) ; जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बंगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम--आमि (मैं), तुमि (तुम) ; से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम--ताहा (तद्) ; इहा (यह) ; उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम--कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम--ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम--केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम--निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम––उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं––उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य पुरुष कहते हैं।

कर्ता कारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये))
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक––तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक––से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक––ए. ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक––ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुलिंग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की बिभक्ति सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष :

आमि (मैं)

(पुंलिग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके,आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके,आमादेर,आमा-देरके,मोदिगके,मोदिगेरे,मोदेर

	एकवचन	बहुवचन
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग(-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक ; आमादेर दिया, द्वारा
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादन	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मुझ), मम	आमादिगेर, आमादेर मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

मध्यम पुरुष :

तुमि (तुम)

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा,
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे, तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
आपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के सम्बोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना (श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी)।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा सम्बन्ध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

प्रथम पुरुष :

तिनि (वे)

	चलित		साधु	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके,ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिये जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर,इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँरा	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

आपनि (आप)

चलित रूप		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिगके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर,-देर
आपनाते	——	आपनाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से,ता	तारा	से,ताहा	ताहारा
ताके	तादिके,तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, (ताहा)–जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय', (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे', केवल पदार्थवाचक है।

'किन' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।

रवीन्द्र-शताब्दी-समारोह के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की समस्त कृतियों में से विशिष्ट रचनाओं का संकलन देवनागरी लिपि में निम्न प्रकार से प्रकाशित करने का आयोजन किया है :

(१) एकोत्तरशती (१०१ कविताएं) ; (२) गीत-पंचशती (५०० गीत) ; (३) एकविंशती (२१ कहानियां) ; (४) नाट्य-सप्तक (सात नाटक : विसर्जन, चित्रांगदा, चिरकुमार-सभा, राजा, डाकघर, मुक्तधारा तथा रक्तकरबी) ; (५) तीन उपन्यास (गोरा, चोखेर बालि तथा योगायोग) ; (६) निबन्धमाला खण्ड १ (दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सामयिक विषयों पर निबन्ध) ; (७) निबन्धमाला खण्ड २ (साहित्यिक विषयों पर निबन्ध, संस्मरण, यात्रावर्णन एवं पत्र आदि) ; (८) बालसाहित्य (बालोपयोगी चुनी हुई रचनाओं का संकलन) ।

यह संकलन कई खण्डों में प्रकाशित होगा । अब तक इनमें से 'एकोत्तरशती', 'गीत-पंचशती', 'एकविंशती', 'नाट्य सप्तक' (प्रथम खण्ड), 'गोरा', 'चोखेर बालि', 'योगायोग' तथा 'बाल साहित्य' प्रकाशित हो चुके हैं ।

प्रस्तुत खण्ड में रवीन्द्रनाथ के साहित्य-विषयक निबन्ध संकलित हैं । कवि के रूप में रवीन्द्रनाथ की महानता तो विश्व-विख्यात है पर साहित्य की अन्य विधाओं में उनका अनुपम अवदान बंगाल से बाहर उतना परिचित नहीं है । सच तो यह है कि गद्य-लेखन में भी रवीन्द्रनाथ उतने ही सिद्धहस्त थे जितने पद्य-रचना में । एक प्रकार से आधुनिक बंगला गद्य के विकास में उनका योगदान काव्य-क्षेत्र में उनके अवदान से भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि जहां तक कविता का प्रश्न है, समस्त भारतीय भाषाओं में उसकी एक सम्पन्न परम्परा दीर्घकाल से चली आती है, यद्यपि रवीन्द्रनाथ ने उसे नया रूप प्रदान किया था । किन्तु उनके आविर्भाव के समय तक उपन्यास एवं उपदेश के अतिरिक्त शायद ही किसी विधा में गद्य का विकास हुआ हो । यह रवीन्द्रनाथ की ही प्रतिभा थी कि उन्होंने गद्य को महान् साहित्य के माध्यम के रूप में स्थापित किया, और कठिन एवं दुरूह साहित्यिक शब्दावली एवं साधारण बोलचाल की जन-भाषा के बीच सेतु बांधा ।

रवीन्द्रनाथ की गद्य रचनाओं का यह संकलन हिन्दी के पाठकों को निबन्ध, आत्मकथा, साहित्य-समीक्षा एवं चारुलेख की विधाओं में उनके योगदान का परिचय दे सकेगा । प्रस्तुत खण्ड निबन्धमाला (खण्ड १) का पूरक ग्रन्थ है जिसके अन्तर्गत धर्म, दर्शन, शिक्षा, समाज एवं राजनीति सम्बन्धी उनकी गद्य रचनाएं संकलित की गई थीं ।

इस रचना का नागरी लिप्यन्तर द्विजराम यादव ने किया है । पुस्तक के अन्त में पाठकों के लाभार्थ परिशिष्ट रूप से बंगला भाषा के उच्चारण और व्याकरण-वैशिष्ट्य पर एक टिप्पणी भी दी गई है, जिसका सम्पादन डा० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय तथा डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मिलकर किया है ।

इस शृंखला के अन्य खण्ड तैयार किये जा रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे । इस ग्रन्थमाला में संकलित सभी रचनाओं का प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी प्रस्तुत किया जा रहा है ।